[illegible] वर्ष की भविष्यवाणी, ज्योतिष के चमत्कार, आसमानी, मुल्की व्योपारी और भाग्य का हाल बताने वाली प्राचीन यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रों सहित

श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जंत्री 1984

1936 की स्थापित, विश्वविख्यात, चिर-परिचित, पुराना प्रकाशन और पुराना ही नाम

देहाती पुस्तक भण्डार, (Regd.)
चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006

ESTABLISHED 1936
स्थापित 1936

जन्त्री के द्वितीय संस्करण में बढ़ाये गये मैटर का विवरण

श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री, सन् 1984 के इस द्वितीय संस्करण में पुस्तकों के नाम वाले 16 पेज हटाकर 201 से 216 तक जनता के लिए उपयोगी नया मैटर और बढ़ा दिया गया है, जिसका पृष्ठानुसार विवरण निम्नलिखित है—

● पृष्ठ 201—श्राद्धादि निर्णयः, ग्रहण दिने श्राद्ध निर्णयः, श्राद्ध विघ्ने निर्णयः, अशौच मध्ये श्राद्ध दिन निर्णयः, श्राद्ध करने के अधिकारी क्रमशः, श्राद्धकाल (समय) निर्णयः, नान्दी श्राद्धकाल, गया श्राद्धकाल, गया श्राद्ध निषेध, श्राद्धे निषिद्ध पदार्थाः, सपिण्डादि विचार, अशौच भेदाः, गर्भस्रावादौ अशौचम्, अशौच सम्पाते निर्णयः, मृतोत्पत्तौ विचारः, मृताशौच निर्णयः ।

● पृष्ठ 202—दशाह मध्ये दर्शपाते निर्णयः, दौहित्र जन्मनी निर्णयः, बन्धु त्रय मरणे अशौचम्, अन्य सम्बन्धी मरणे अशौच निर्णयः, पंचक मरण में क्या करना चाहिए, पंचक मरण शान्ति, अग्निवास, शिववास विचार, शिववास फलम्, एक नक्षत्र जनन दोष, परिवित्ति निर्णयः, त्रिबल जन्म फल, अशुभ प्रसव मास, सौर सिंह (भाद्रपद) मास में गाय आदि के प्रसूति पर विचार ।

● पृष्ठ 203—विवाह के पश्चात् एक वर्ष तक त्याज्य, कन्यादान करने के अधिकारी क्रमशः, वाग्दान होने पर दोनों कुलों में किसी की मृत्यु हो जाय, विवाह में रजोदर्शन, विवाह-काल में यदि कन्या रजस्वला हो, विवाह से प्रथम वर्ष पिता व पति के घर रहने में वर्ज्य मास, उपवास निषेध, मन्त्र तिथियों में वर्ज्य पदार्थ, गोपी चन्दन धारण निषेध काल, देव विशेष से प्रतिष्ठा में ग्राह्य मास, देवमूर्ति मुखास्थिति, देव विशेष से दक्षिणायन में प्रतिष्ठा, प्रदक्षिणा विचार, दीप निर्वापणादि दोष, देवताओं के अतिप्रिय पत्र पुष्प, हवन कुण्ड में विकृत दोष ।

● पृष्ठ 204—ज्येष्ठ परिहार, नित्योपयोगी आवश्यक नियम, मूत्र व मल त्याग तालाब व नदी से कितनी दूर करें । शौच मन्त्र, शुद्धि क्रमः, कुल्ला बायीं ओर करें ।

● पृष्ठ 205—भारत के प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ—चार धाम, सप्त पुरियां ।

● पृष्ठ 206—पंच केदार, सप्त बदरी ।

● पृष्ठ 207—पंच नाथ, पंच काशी, सप्त सरस्वती, सप्त गंगा, सप्त पुण्य नदियां, सप्त क्षेत्र, पंच सरोवर, नौ अरण्य, चतुर्दश प्रयाग, श्राद्ध के लिए प्रधान तीर्थ स्थान ।

● पृष्ठ 208—विवाह के बाद अपने कुल में मुण्डनादि का निषेध ।

● पृष्ठ 209— प्रश्न एवं दोषावली विचार ।

● 210 — दोषावली (पंचाक्षरियां) विचार ।

● पृष्ठ 211-212 — श्री महालक्ष्मी यन्त्र व श्री यन्त्र की गोपनीयता ।

● पृष्ठ 213—पुत्र सन्तान प्राप्ति के लिए मन्त्र प्रयोग ।

● पृष्ठ 214 से 216—श्री यन्त्र समृद्धि एवं धनवृद्धि के लिए ।

प्रकाशकः—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला दिल्ली-6




समस्त भारत की 80,00,00,000 (अस्सी करोड़) जनता के साथ-साथ 5,00,00,00,000 (पांच अरब) विदेशी पब्लिक में लोकप्रिय

श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री

राजा : चन्द्रमा **(सन् 1984 ई०, संवत् 2040-41 वि०)** मंत्री : शुक्र

पृष्ठ 312 (शुरू के बिना नम्बरवाले 4 पृष्ठ+1 से 304+4 पृष्ठ टाइटिल=312)

इस वर्ष जन्त्री में बढ़ाये गये मैटर का विवरण

पाठक बन्धुओं ! इस नये वर्ष की जन्त्री में पुस्तकों का विवरण कम करके 62 पृष्ठ का मैटर जनता के लाभार्थ और बढ़ा दिया गया है, साथ ही जन्त्री का टाइटिल भी अत्यन्त चित्ताकर्षक तीन रंग का है। इतना सब कुछ होने पर भी मूल्य गत वर्ष जितना अर्थात् दस रुपये ही रखा है। बढ़ाये गये मैटर का पृष्ठानुसार विवरण इस प्रकार है :—

नोट—'यह श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री' भारत की जन्त्रियों में सबसे बड़ी तथा विशेष महत्वपूर्ण है। इसमें ज्योतिष, कर्मकाण्ड, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, वैद्यक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी आदि जितना मैटर है, उतना लगभग 1000 पुस्तकों में होगा।

सावधान ! इस जन्त्री में दिये गये यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का प्रयोग किसी का अनिष्ट करने के लिए कदापि न करें। **'कर भला, अन्त भले का भला'**।



देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)



चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

विदेश में : £2 पौंड या $4 डालर] फोन : 261030 [स्वदेश में, : मूल्य 10/- (दस रुपये)

सन् 1984

III




इस जन्त्री में किस पृष्ठ पर क्या है





देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली-6



देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

नक्कालों से सावधान ! देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली द्वारा प्रकाशित 312 पृष्ठ (304+4+4 पेज टाइटिल) की असली जन्त्री स्वर्गीय पं० रतीराम शास्त्री का फोटो देखकर ही खरीदें।

सब चिन्ताओं को हरनेवाली सन् 1984 ई० ★जयहिन्द★ सं० 2040-41 वि० मनवांछित फल देनेवाली
मनोकामना सिद्ध करने वाली ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ विश्व-विख्यात

श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जंत्री

1984 — 1984

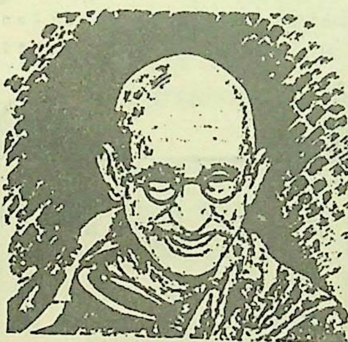
सन् 1984 ई०, वि० संवत् 2040-41, गांधी संवत् 37, कृष्ण संवत् 5210

राजा चन्द्रमा — मन्त्री शुक्र

ज्योतिर्वितन्वन् धरणी पवित्रं, कीर्ति तथा पुण्ययशोधराणाम् ।
विध्वंसयन् पापतमः समूलं, राष्ट्रीय पंचांग रविश्चकास्तु ॥

सत्य अहिंसा के पालक युगावतार पूज्यमहापुरुष ● ज्योतिषभूषण पंचांगकर्त्ता स्व० पं० रतीराम शास्त्री

शुभ कामनाओं सहित



राष्ट्रपिता महात्मा गांधी
जन्म : 2 अक्टूबर, सन् 1869 ई०
निर्वाण : 30 जनवरी, 1948 ई०

दो शब्द

ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ एवं जन्त्री प्रवर्तक, स्वर्गीय पं० रतीराम शास्त्री की यह हार्दिक इच्छा थी कि श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री विश्व के प्रत्येक परिवार में पहुंचे और इसके द्वारा वह परिवार लाभ उठाकर सुख शान्ति से परिपूर्ण हो । उनकी इसी भावना का समादर करते हुए हम वह कष्टहरण, संकटहरण, चिन्ताहरण, दु:खहरण करने वाली श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री उनके पौत्र पंचांगकर्त्ता पं० मुकट बिहारी सु.स्व. श्री रामगोपाल शास्त्री से निर्मित कराकर हार्दिक प्रसन्नता अनुभव करते हुए जनता जनार्दन को सप्रेम भेंट कर रहे हैं । —प्रकाशक



पं० रतीराम शर्मा शास्त्री
जन्म : 18 मई सन् 1903 ई०
निर्वाण : 9 अक्टूबर सन् 1967 ई०

समर्पण

● सदियों से परतन्त्र, पीड़ित एवं पदाक्रान्त भारत को स्वतंत्रता दिलाने में जिनके सर्वतोमुखी प्रयत्नों ने चमत्कार कर दिखाया । ● दासता की चिरसंचित, दृढ़ होती हुई शृंखलाओं को जिनके सफल पथ-प्रदर्शन ने दूर किया । ● जिनकी सत्यनिष्ठा तथा अहिंसा-प्रेम ने केवल भारत के ही सम्मुख नहीं, बल्कि विश्व के आगे अनुकरणीय आदर्श रखा । ● जिनकी क्रियात्मक सहानुभूति ने पद-दलितों के प्रति भूली-भटकी भारतीय जनता की आँखें खोलीं । ● जिनका प्रत्येक क्षण अपने देश के हित-चिंतन और हित-साधन में लगा । ● जिनके जीवन की आहुति भी उसी पवित्र ध्येय की बलिवेदी पर हुई । ● जिनके शुद्ध एवं सत्य भगवत्प्रेम ने लाखों धर्म-पिपासु आत्माओं को शान्ति प्रदान की । उन्हीं महापुरुष महामहिम अमरकीर्ति पूज्य बापू के करकमलों में उनकी पावन स्मृति स्वरूप यह जन्त्री सादर समर्पित है ।

गाँधी संवत्—यों तो समय शाश्वत और अनादि है बांटा नहीं जा सकता, फिर भी हम अपनी सुविधा के लिये युग, शताब्दी, वर्ष और मास, दिन तथा रात आदि के रूप में बांट लेते हैं—संवत् आदि के रूप में इसकी अवधि रख लेते हैं । संवत् किसी सामयिक महापुरुष के नाम पर रख लिया जाता है । जैसे—युधिष्ठिर, विक्रम आदि संवत् ।

वर्तमान युग के सर्वगुण-सम्पन्न महापुरुष महात्मा गांधी हैं । उन्हीं के नाम से गांधी-संवत् चलाया जाना सर्वथा उचित एवं सुविधाजनक है । गांधी संवत् का प्रारम्भ ३० जनवरी, अर्थात् स्वर्गारोहण मास से होता है । ज्योतिष के हिसाब से भी यह तारीख उपयुक्त बैठती है । जनता से अनुरोध है कि गांधी-संवत् का स्मरण रखें और इस श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री को ही अपनायें ।

पंचांगकर्त्ता—स्व० ज्योतिषभूषण पं० रतीराम शर्मा शास्त्री, मु० पोस्ट पैगांव, जिला मथुरा (उ० प्र०)

प्रकाशक—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6

मूल्य स्वदेश में 10/- दस रु०] फोन -261030, रेजीडेन्स-224289 [मूल्य-विदेश में £2 पौंड या $4 डालर

आर्य आफसैट प्रेस शहजादा बाग देहली-35 द्वारा मुद्रित

1984 चतुर्युग वर्णन

कार्तिक वदी ९ नवमी को सतयुग का जन्म हुआ । इस युग में मत्स्य, बाराह, कर्म और नृसिंह—ये चार अवतार हुए । इस युग में सभी मनुष्य अपने-अपने धर्म में तत्पर थे । वैशाख सुदी तृतीया को त्रेता युग का जन्म हुआ । इस युग में वामन, परशुराम और रामचन्द्र ये तीन अवतार हुए । इस युग में धर्म पन्द्रह विस्वे और पाप पांच विस्वे था । माघ वदी अमावस्या को द्वापर युग का जन्म हुआ । इस युग में श्री कृष्णचन्द्र तथा बलदेव— ये दो अवतार हुए । इस युग में धर्म और पाप बराबर अर्थात् दस-दस विस्वे हुआ । भाद्रपद वदी त्रयोदशी को कलियुग का जन्म हुआ । इस युग में धर्म पांच विस्वे और पाप पन्द्रह विस्वे हुआ । इस समय पाप बढ़ते-बढ़ते अठारह विस्वे, सत्य आधा विस्वे और धर्म १½ डेढ़ विस्वे रह गया है । इस युग में बौद्ध और श्री कल्कि—ये अवतार हैं । इनमें श्री बुद्ध देव का अवतार हो चुका है । सम्भल ग्राम में विष्णु यश ब्राह्मण के घर में श्री कल्कि भगवान का अवतार कलियुग के अन्त में होगा । इस युग में तीर्थ गंगा जी हैं । अब तक ब्रह्मा के पचास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । इक्यावनवे वर्ष का प्रवेश है । कलियुग के प्रथम चरण में द्वितीय प्रहर दिन चढ़ा है । अब तक सृष्टि के १९५५८८५०८४ (एक अरब पिच्चानवे करोड़ अट्ठावन लाख पिच्यासी हजार चौरासी) वर्ष व्यतीत हो चुके हैं । चारों युगों का वर्ष प्रमाण इस प्रकार है : सतयुग प्रमाण—१७२८००० वर्ष, त्रेता युग प्रमाण—१२९६००० वर्ष, द्वापर युग प्रमाण—८६४०००, कलियुग प्रमाण-४३२००० वर्ष है । वर्तमान काल में कलियुग का प्रथम चरण चल रहा है । इसमें ५०८५ वर्ष व्यतीत हो चुके है और ४२६९१५ वर्ष बाकी रहे है ।



● विविध सम्वत्सराणि ●





नाम संवत्	विक्रमी	शाक	ईसवी	हिजरी	फसली	रोमी	ईरानी	मिश्री	यूनानी	फारसी	बौद्ध	सिकन्दरी	नानक शाही	श्रीकृष्ण सम्वत्	गांधी
सम्वत् संख्या	२०४१	१९०६	१९८४	१४०४	१३९२	२७३४	५९९२	२७५८७०	२७६०	१९९३५४	२५२८	२३३५	५०१२	५२१०	३७

॥ अथ आकाशी परिषद् के दश पदाधिकारी ग्रह सम्वत् २०४१ विक्रमी वष शकाब्द १९०६ ॥

राजा	मन्त्री	सस्येशः	धन्येशः	मेघेशः	रसेश	निरसेश	फलेश	धनेश	दुर्गेश
चन्द्र	शुक्र	सूर्यः	शनिः	गुरुः	मंगल	सूर्यः	गुरुः	रविः	गुरुः

॥ अथ वर्षादि के विस्वा ॥

वर्षा आदि के नाम	वर्षा	उत्पत्तिः	खपत	तृण	शीत	तेज	वायु	वृद्धिः	क्षय	विग्रह	सत्य	धर्म	पाप	प्रीति वृद्धि	वर्ष स्तम्भ	समय निवास	रोहिणी निवास	समय वाहन	वर्ष नाम	धान्य
विस्वा	१७	१३	८४	१३	१७	४	१३	१४	१४	११	½	१½	१५	पश्चिमे	आसाढ़	मालाकार गृहे	समुद्रे	मृग	२	१५

विंशोत्तरी मत के अनुसार लाभ खर्च चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
खर्च	२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११
फल	विजय	सुख	सुख	रोग	लाभ	सुख	सुख	हानि	निंदा	सुख	सुख	रोग

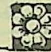
नोट—'कलौ पाराशरीस्मृता', कलयुग में पाराशरी मत श्रेष्ठ होता है, अष्टोत्तरी तो लाभ खर्च में उपयुक्त नहीं होता । यहाँ लाभ खर्च के विंशोत्तरी पाराशरी अंकों को जोड़कर १ घटायें तथा ८ का भाग दें, यदि १ बचे लाभ, २ बचे सुख, ३ सुख, ४ से रोग, ५ से निन्दा, ६ सम्मान, ७ विजय, शून्य से हानि, मान लेनी चाहिये ।



देहाती पुस्तक भण्डार (REGD.) चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन-261030



अथ दशाधिकारी फल



(१) **राजा चन्द्र फल**—वर्षारम्भ से ही शुभ मंगल कार्य, अधिकांश में जनता में सम्पन्न होंगे। अच्छी वर्षा के होने से धान्य की उत्पति भी अच्छी होगी। जनता में सुख समृद्धि बढ़ेगी। राजाओं का उदय होगा। मनुष्यों में व्याधि रोगोपद्रव शान्त होंगे।

(२) **मंत्री शुक्र फल**—धान्य भाव मन्दे हों। जल की सुविधा सुभिक्ष, संचार की व्यवस्था ठीक रहेगी।

(३) **सस्येश रवि फलम्**—धान्य भाव मन्दा होवे। चोर भीति रहे। राजाओं में युद्ध की भावना बढ़े। मेघ समय के अनुसार वर्षा करें। घास तथा पेड़ों पर फल-फूल बढ़ेंगे।

(४) **धान्येश शनि फलम्**—जनता में रोग का संचार हो। राजा भी अशान्त होवे। धान्योत्पति में क्षति होवे।

(५) **मेघेश गुरु फलम्**—बृहस्पति वर्षा के संयोग ठीक देगा। भूमि पर जनता के सुख होने के योग बनेंगे। राजाओं में भी सद्-बुद्धि आवेगी। मनुष्य भी रसादि पदार्थों की समृद्धि प्राप्त करेंगे।

(६) **रसेश मंगल ग्रहफल**—मंगल अवश्य रसादि की समृद्धि में कुछ रुकावट करता है। राजाओं में भी वैमनस्य बढ़ जाता है। मेघ बादल भी वर्षा में कमी करते हैं।

(७) **नीरसेश सूर्य फलम्**—यह धातु रत्नादिकों में तेजी का वातावरण बनाता है। अन्य चीजों में भी तेजियां लाता है।

(८) **फलेश गुरु फल**—फलेश गुरु का होना अच्छा है। जनता में धार्मिक भावना जागृत हो। शास्त्र चर्चा हो। फलों की उत्पत्ति बढ़ेगी।

(९) **धनेश रवि फलम्**—व्यापार से, कृषि से भी देश में धन समृद्धि बढ़ेगी। क्रय-विक्रय की वृद्धि से लाभ होगा।

(१०) **दुर्गेश गुरु फल**—राजा न्याय प्रिय बने, सुरक्षा के साधन सुलभ होंगे। प्रजा में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

● **वर्ष नाम, आषाढ स्तन्फलम्**—मुद्रा स्फीति बढ़ेगी। धान्य भाव सम रहेंगे। आषाढ़ मास में वृष्टि कम होगी। चावल, धान्य की महंगाई बढ़ेगी।

● **सन्धि रोहिणी निवास फलम्**—रोहिणी का वासा समुद्र में है। समुद्र में वासा रहते वर्षा आवश्यकतानुसार सही होगी। समुद्रे तुमहावृष्टि ऐसा लिखा है।

● **मेघनाम आवर्तः**—यह खण्ड वृष्टि का संकेत देता है। आवर्ते खण्ड वृष्टिः स्थान।

● **समय निवासोमालाकार गृहे**—मालिनः प्रचुरा वृष्टिः माली के घर समय का वर्ष अच्छी वर्षा का संकेत देता हैं।



● **शनि दृष्टि फलम्**—शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों के वास्ते दोषकारक रहेगी।



● **ब्रह्म विंशति का में** ईश्वर नाम का यह सम्वत्सर है।

● **भूमि पर सुभिक्ष बढ़े**—अन्न की उत्पति अच्छी होवे, धार्मिक भावना जागृत होगी

● **भूमि वर्षा आढक प्रमाण**—इस वर्ष भी ८० आढक की वर्षा होगी। आषाढ़ में कुछ कमी रहेगी। आगे ठीक होगी। पर्वत पर ४० आढक -२० आढक वर्षा वायु -२० आढक भूमि पर जानो।

वर्ष लग्नम् ५/७

श ७, ५, मं ८ के, ६, ४, ९ बृ, ३, १० चं सू, रा २, ११, १२, १ बु

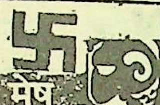
ग्रह फल सारांश

ग्रहयोग से फल परिणाम में बहुत अच्छा है। प्रजा में सुख-शान्ति बनी रहेगी। उत्तर पश्चिमी प्रान्तों में वर्षा की कमी, अन्न के भावों में तेजी रहेगी। अन्न संग्रह से लाभ होगा। सरसों अलसी, अरंडी आदि तिलहनों की जिन्सों में शनि की वक्री चाल के दौरान अच्छी तेजियां आवेंगी। खरीद कर माल बेचें। व्यापार में लाभ होगा।

वर्षेश लग्नम्

६, ४, श ७, ५ चं, ३, ८ मं के, रा २, ९ गु, ११, सू १ बु, १०, शु १२

सन् 1984 ई० में आपकी राशि का भविष्यफल



मेष

Aries चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ = मेष

बृहस्पति ग्रह आपकी राशि से भाग्य भाव में इस वर्ष गतिशील रहेगा। धन-धान्य की वृद्धि होगी। शनि सातवें ही रहता है। स्त्री के स्वास्थ्य में त्रुटि लाता है, तो भी राजपक्ष रोजगार ठीक रहेगा। आपकी राशि का अधिकारी ग्रह मंगल है। काफी समय तक हितकारी रहेगा। जायदाद भूमि सम्बन्धि लाभ में सहयोग देगा।

वृष

Taurus ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वु, वे, वो = वृष

आपकी राशि का स्वामी गृह शुक्र है, वह स्वभावतः ठीक फल देगा। शनि ग्रह हर्ष स्थान में शत्रु पर, रोग पर विजय करायेगा। राजपक्ष से हित ही होगा। बृहस्पति गृह धन राशि में अष्टमस्थ गोचर में रहने से विशेष मददगार नहीं रहता है, हानि नहीं करेगा। राहु, वृष राशि में गमनशील रहने से कुछ अशान्तियाँ रहेगी।

मिथुन

Gemini का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा = मिथुन

गुरु से स्त्री पक्ष उत्तम है। सन्तान पक्ष में शनि गृह कुछ रोगोपद्रव करेगा। राहु कुछ खर्चा अधिक करायेगा। मिथुन का स्वामी ग्रह बुध वजनदार ग्रह नहीं है? फिर भी राजपक्ष के वास्ते बृहस्पति का बल श्रेष्ठ है। यशमान प्रतिष्ठा ठीक रहेगी। व्यापार में क्रय-विक्रय से लाभ होगा।

कर्क

Cancer हि, हु, हे, हो, डा, डि, डु, डे, डो = कर्क

आपकी राशि का अधिकारी चन्द्रमा है। बृहस्पति ग्रह इस वर्ष उत्तम गोचर में रहेगा, जो आपको राजपक्ष में रोजगार में बहुत बड़ी मदद करेगा। शनि की अढ़ैय्या का प्रभाव बृहस्पति के अच्छा रहने से कोई अर्थ नहीं रखेगा। वर्ष आपका श्रेष्ठ है। नवम्बर, दिसम्बर मासों में शनि का प्रभाव नहीं रहेगा। राजपक्ष से हित रहेगा।

सिंह

Leo मा, मी, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे = सिंह

आपकी राशि का स्वामी सूर्य है। प्रतापी ग्रह है। बृहस्पति ग्रह की चाल आपके इस वर्ष बहुत हित में है। शनि भी हर्ष स्थान में पारिवारिक तथा आर्थिक सुख-शान्ति देगा। राजपक्ष से हित, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वर्ष का पूर्वार्ध विशेष हितकारी रहेगा।

कन्या

Virgo टो, पा, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो = कन्या

आपकी राशि का स्वामी बुध ठीक है। साढ़े साती का दौर इस वर्ष समाप्त हो रहा है। बृहस्पति गृह केन्द्र में अच्छा ही रहेगा। व्यापार से अर्थ लाभ के संयोग प्राप्त होंगे। स्त्री पक्ष उत्तम रहेगा। यात्रा से लाभ होगा। क्रय-विक्रय में बुध गृह मदद ज्यादा करेगा। वर्ष का पूर्वार्ध जून मास के अन्त तक आर्थिक लाभ उत्तम दे देगा।

तुला

Libra रा, री, रु, रे, रो, ता, ति, तू, ते = तुला

आपकी राशि का स्वामी शुक्र है। पारिवारिक सुख सुविधा अच्छी रहेगी। बृहस्पति ग्रह भाग्य वृद्धि, धर्म में प्रवृत्ति करेगा। शनि राजपक्ष के वास्ते ठीक है। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राहु मानसिक स्वास्थ्य खराब रखेगा। हानि नहीं होगी। सूर्य, बुध, शुक्र आपको भी जून मास के अन्त तक हितकारी रहेंगे।

वृश्चिक

Scorpio तो, ना, नि, नु, ने, नो, या, यि, यु = वृश्चिक

आपकी राशि का स्वामी ग्रह मंगल है। इसकी चाल बारहवें शनि के कारण व्ययकारक ज्यादा रहेगी। आमदनी भी खजाने में, बृहस्पति धन में करता ही रहेगा। राजपक्ष से हित होगा। साढे साती का दौर वर्ष के अन्त में रास्ता देगा।

धनु

Sagittarius ये, यो, भा, भि, भु, ध, फ, ढ, भे = धनु

बृहस्पति ग्रह स्वयं मालिक होकर अपनी राशि में गतिशील है। धर्म-कर्म में प्रवृत्ति, धन लाभ, भाग्य वृद्धि, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। राजपक्ष से हितकारी समय रहेगा। महापुरुषों के संयोग से आर्थिक उन्नति होने के योग प्राप्त होंगे। शत्रु पर, रोग पर विजय। गृह दशा वर्ष भर श्रेष्ठ रहेगी। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मकर

Copricorn भो, जा, जि, जु, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, ग, गी = मकर

इस राशि का मालिक शनि है, राजपक्ष से हित करने वाला है। लाभ घर से बृहस्पति हटकर व्यय भाव में चला गया है। शुभ कार्यों में व्यय काफी करायेगा। सन्तान के वास्ते राहु सामान्य है, फिर भी वर्ष का पूर्वार्ध लाभकारी भी जून तक अच्छा रहेगा।

कुंभ

Aquarius गु, गे, गो, सा, सि, सु, से, सो, दा = कुंभ

इस राशि का भी अधिकारी शनि ग्रह है। भाग्य भाव में गतिशील है। पारिवारिक सुख उत्तम देता है। लाभ घर में बृहस्पति उत्तम लाभ, वर्ष के अन्त तक देता रहेगा। मशीनरी से, लोहे की शनि की वस्तुओं से इस वर्ष शनि लाभ देगा। यात्रा से भी वर्ष के उत्तरार्ध में लाभ होगा।

मीन

Pisces दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि = मीन

इस राशि का स्वामी ग्रह बृहस्पति है जो कि राजपक्ष में अपने घर का गतिशील है। उत्तम लाभ के संयोग देता है। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। अष्टमस्थ शनि की अढैय्या मानसिक चिन्ता परेशानी अवश्य रखेगी; परन्तु शनि की राजपक्ष पर दृष्टि शुभ रहेगी। मुकदमे में जीत होगी। वर्ष का पूर्वार्ध उत्तम रहेगा।



सन् 1984 ई०का वार्षिक व्यापार भविष्य
व्यापारिक जिन्सों की मन्दी तेजी की लाइनों का ब्योरा



लेखक—विशुद्धानन्द गौड़, ज्योतिषाचार्य विज्ञान ज्योति, कार्यालय, खुरजा (उ० प्र०)

जनवरी

जनवरी सन् १९८४ का समय मिति पौष वदी १३ रविवार से आरम्भ होकर माघ वदी १४ मंगलवार तक रहता है। ता० ५ गुरुवार को मकर राशि में चन्द्रोदय रसादि पदार्थों में, घृत, तेल वेजिटेबिल आयल में अच्छी तेजी करेगा। अनाज, रुई भी तेज होंगे। ६ ता० को ज्येष्ठ में शुक्र का प्रवेश भी गुड़, चीनी, शक्कर, घृत तेज हों, चाँदी सोना में मन्दी का रियेक्शन १४ ता० तक आवेगा, तुरन्त धातुबाना खरीदें, १६ ता० से १९ ता० तक अच्छी तेजी होगी। सोने में ५, ६ चाँदी में ४, ५ गेहूं, चना में ३, ४ अलसी, सरसों में ३, ४, रु० की तेजी होगी। सूत पाट, बारदाना तेज हो, किराना की वस्तुओं में मन्दापन होवे, सो खरीद करें। १९ जनवरी से ३१ जनवरी तक माघ कृष्ण पक्ष में ग्रहों की मार्गी चाल का प्रभाव हर वस्तु में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ मन्दी का रुख रहेगा। जबकि यहां गुड़, शक्कर, देशी खाण्ड, घी, तेल, वेजिटेबिल आयल आदि जिंसों के तैयार माल की खरीद करना अच्छा है। सोना, चाँदी, धातुबाने में भी घटा-बढ़ी के साथ मन्दी के रुख रहेंगे। यह मन्दी का जोर २३ ता० से ३१ ता० तक ज्यादा है।

फरवरी

फरवरी का महीना मिति माघवदी अमावस्या बुद्धवार से आरम्भ होकर मिति फागुनवदी १३ बुद्धवार शिवरात्रि तक जाता है। इस मास में गुरु, शुक्र का योग तथा शनि, मंगल का योग है। दुतर्फा घटा-बढ़ी मार्केटों में रहेगी। गल्ला तिलहन तथा रुई, सन १३ ता० तक अच्छी तेजी में जायेंगे। रसादि पदार्थ गुड़, शक्कर, घृत, वेजिटेबिल आयल में मन्दापन होगा। मन्दी में माल की खरीद एवं स्टाक करें। १३ ता० से १६ ता० तक सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, जस्ता तेज होंगे। दिनांक १७ ता० से २९ ता० तक फागुन कृष्ण पक्ष में जहां तहां आकाशी लक्षण वर्षा आदि के योग बुधास्त के समय में बनेंगे, सुभिक्ष का संचार होगा, मन्दी जिन्सें खरीदें। विशेषकर रसादि पदार्थों का स्टाक यहां भी करें।

मार्च

यह महीना मिति फागुनवदी १४ गुरुवार से लेकर मिति चैत्रवदी १४ शनिवार तक रहता है। ७ ता० को वृश्चिक राशि में मंगल का प्रवेश हो रहा है। "यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घ सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोयमादिशेत्" ग्रह चाल से सभी द्रव्यों में तेजी की ग्रह दशा का संचार होगा, अतः इसी पक्ष में रसादि पदार्थ धातुबाना की खरीद अच्छी रहेगी। ९ ता० को कुम्भ राशि में शुक्र आ जाता है। यह यहां १ सप्ताह में अनेक व्यापारिक जिन्सों में मन्दी का अच्छा रियेक्शन ला देगा। यहाँ मन्दी में बनी जिन्सें खरीद करें। "कुम्भ राशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरम् जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः। यहां सुभिक्ष का संचार योग है ता० १२ से १७ ता० तक सोना, चांदी धातुबाना तेज होगा। १८ ता० बाद चैत मास में जनता में रोगोपद्रव बढ़ेगा, शनि की वक्री चाल लोहा, सरसों अलसी, अरण्डी, तेल घृत में घटा-बढ़ी के साथ तेजी के योग बढ़ायेगी।

अप्रैल

अप्रैल का महीना मिति चैत्रवदी मावस से लेकर मिति वैशाखवदी १४ दिन सोमवार सम्वत्सर २०४१



विक्रमी तक जायेगा। इस मास में ग्रह चाल में मंगल, केतु का योग तथा वक्री मंगल, बुद्ध, शनि की चाल का प्रभाव समस्त व्यापारिक जिन्सों में घटा-बढ़ी के साथ तेजी के योग में जायेगा। मन्दीवनी वस्तुओं का संग्रह करना अच्छा है। गल्ला, तिलहन का स्टाक यहां कर लेना शुभ रहेगा। ११ से १६ ता० तक सोना, चांदी धातुबाने में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख रहेगा। वैशाख कृष्ण पक्ष में ग्रह चाल का प्रभाव बहुत सी जिन्सों में मन्दी का रहेगा, जिनका स्टाक करना अच्छा है, विशेष रूप से गल्ला, तिलहन घृत तथा तेल, गुड़, शक्कर, देशी खाण्ड का भाव यहां अच्छी तेजी पकड़ेगा। पाट, बारदाना, सन, रुई भी तेज होगी।

मई

मई का महीना मिति वैशाख वदी मावस दिन मंगलवार से आरम्भ होकर मिति ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा गुरुवार तक जायेगा। इस मास में घृत, तेल, वेजिटेबिल आयल, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे, तेजी में माल बेचना अच्छा है। मंगल वक्री होकर शनि के साथ यहां इस मास में तुला में योग बना रहा है। अतः रसादि पदार्थों की तेजी से व्यापारियों को लाभ उठाना चाहिये तथा बृहस्पति, मंगल, शनि की वक्री चाल में बनी तेजी के योग में नफा कमा लेना बुद्धिमानी होगी। यह तेजियां जून मास में भी रहेंगी। मई की २१ ता० से ३१ ता० तक मार्केटों में बहुत ही घटा-बढ़ी रहनी है। तेजी का रुख रहेगा। हर प्रकार का गल्ला, मोटा अनाज, तेल, तिलहन एवं सभी रसादि पदार्थों में तेजियां बनी रहेंगी। तेजी में माल बेचने का पूरा अवसर व्यापारियों को प्राप्त होगा।

जून

जून का महीना मिति ज्येष्ठ सुदी दोज शुक्रवार से लेकर मिति आषाढ़ सुदी प्रतिपदा तक जाता है। १४ ता० तक तो ग्रह चाल का प्रभाव हर जिन्सों में प्रायः तेजी का रहना है। ९ ता० से १४ ता० तक सोना, चाँदी, धातुबाना तो काफी तेजी पकड़ेगा। गुड़, शक्कर, चीनी, घृत, तेल भी तेजी में यहाँ बेच लेने अच्छे हैं। १४ ता० को मिथुन की संक्रान्ति बृहस्पतिवार की लगती है, सुभिक्ष का संचार यह करेगी। लेकिन यहाँ मन्दी के झोकों में गल्ले, तिलहनों, का स्टाक अवश्य कर लेना चाहिये, जो १० जून से १४ ता० तक शुभ रहेगा। यहाँ शुक्र, बुद्ध, सूर्य का योग तेजी कारक चलेगा, जैसा कि शास्त्र में कहा है "मिथुने च यदा शुक्रो महर्घ तत्र जायते। यव गोधूम चणकाः शालिश्चैव विशेषतः" गेहूं, जौ, चना तो तेज होंगे ही, चावलों में भी अच्छी तेजी की संभावना बनेगी। यह तेजी जून के मध्य, से धीरे-धीरे बढ़ेगी। २१ ता० को आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश शुभ है। अच्छी घटा-बढ़ी मार्केटों में जाती है, लोट पलट करना अच्छा है।

जुलाई

जुलाई मास का आरम्भ मिति आषाढ़ सुदी ३ रविवार से आरम्भ होकर मिति श्रावण शुक्ला तीज मंगलवार तक जायेगा। इस मास में केवल बृहस्पति ग्रह वक्री है, यह कुछ तेजी चाहता है। तथा शनि, मंगल का योग भी कुछ तेजी चाहता है, बाकी अन्य ग्रहों का प्रभाव सुभिक्षकारक, मन्दी कारक है। आषाढ़ शुक्ल पक्ष में ग्रहदशा सुभिक्ष कारक मन्दी कारक होगी। वृष्टि के योग बनेंगे, शनिमार्गी, तिलहन, सरसों, अलसी, अरण्डी, घृत, तेलों में मन्दी का



रियेक्शन देगा। गल्ले में भी मन्दी के झोंके भावों में होंगे, १० ता० से १४ ता० तक सोना, चांदी, तांबा, पीतल के भाव तेज होंगे। दिनांक १५ जुलाई को कर्क संक्रान्ति रविवार में मार्केटों के भावों में तेजी का रूख करेगी, १५ ता० से २८।२६ जुलाई तक हर वस्तु का मार्केट तेजी पकड़ेगा, खरीद कर माल बेचें। ४) ५) ६) जैसी जो वस्तु होगी तेजियां अवश्य लेगी ग्रह चाल यहां तेजी की है।

अगस्त

यह महीना मिति श्रावण सुदी पंचमी बुद्धवार से आरम्भ होकर भाद्रपद शुक्ल पक्ष पंचमी शुक्रवार तक जायेगा। २ ता० को सिंह राशि में शुक्र जायेगा। हवा ज्यादा चलेगी, वर्षा की खेंच होगी, फलतः तेजियां गल्ला, तिलहन के मार्केटों में बढ़ेगी।-५ ता० से १२ ता० तक सोना, चांदी, धातुबाने में तेजियों के योग हैं, ता० १६ सिंह की संक्रान्ति यह भी घटा-बढ़ी के साथ मार्केटों में तेजी कारक रहेगी। फलतः रुई, पाट, बारदाना, सन, गल्ला, तिलहनों के भावों में घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख रहेगा। १६ ता० से २६ ता० तक मार्केट में हर वस्तु में अच्छी तेजियां बढ़ेगी, घृत, तेल, वेजिटेबिल आयल तेज होंगे। २६ ता० से ३१ ता० तक दुतर्फा घटा-बढ़ी है।

सितम्बर

यह मास मिति भाद्रपद शुक्ला सप्तमी शनिवार से आरम्भ होकर मिति आश्विन सुदी षष्टी रविवार तक जायेगा। इस मास में ग्रह दशा का प्रभाव ज्यादातर मंदी की तरफ मार्केटों में जायेगा। सभी ग्रह मार्गी हैं, सुभिक्ष चाहते हैं। यहां इस मास में मन्दी बनी जिन्सें खरीदनी अच्छी रहेगी। सोना, चांदी की खरीद १ ता० में करके ११ ता० सायंकाल ४ बजे के आस-पास में बेचने से लाभ होगा। १ ता० से १६ ता० तक गल्ला, तिलहनों में मन्दी रहेगी। १७ ता० से २५ ता० तक ग्रह दशा हर घटे भाव हर जिन्स खरीद का अवसर देगी। मंगलवारी मावस तेजी कारक है। २५ ता० को धन का मंगल ग्रह मूल द्रव्य, घास, काष्ट, घृत, कपास, रुई, चौपाओं में तेजी कारक है। २५ ता० से ३० ता० तक तेजी बढ़ेगी।

अक्टूबर

यह मास मिति आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि से लेकर मिति कार्तिक सुदी अष्टमी बुद्धवार तक जायेगा।



दीपावली पूजन लक्ष्मी जी का २४ ता० को है इस मास में भी ग्रहदशा का प्रभाव दुतर्फा घटा-बढ़ी का चलेगा। अनेक व्यापारिक जिन्सों में दीपावली पर मन्दियों के योग बनेंगे। जहां मन्दी बने, जिन्सें खरीद कर लेनी चाहिए। १६ ता० को मंगलवार में १५ मुहूर्ती तुला की संक्रान्ति यह संकेत देती है कि हर वस्तु की मांग बढ़ेगी। गल्ला, तिलहन, रुई, कपास, सूती कपड़ा तेज होगा। यद्यपि तेजी की मजबूत ग्रह चाल अक्टूबर में नहीं है। सभी ग्रह मार्गी चाल में हैं मन्दी की स्थिति में खरीद की राय है।

नवम्बर

नवम्बर का महीना मिति कार्तिक सुदी अष्टमी गुरुवार से चलकर मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष अष्टमी तक जाना है। इस मास में भी १ ता० से ६ ता० तक सोना, चाँदी, धातुबाने में तेजी का योग रहेगा। ६ ता० को मकर राशि में मंगल ग्रह घृत, तेल में तेजी, गेहूं, चना, जौ, मटरा, आदि धान्य मन्दे हों। १५ ता० तक हर घटे भाव गल्ला, तिलहनों का यहां भी स्टाक करना अच्छा है। १५ मुहूर्ती वृश्चिक की संक्रान्ति से व्यापारिक जिन्सों में घटा-बढ़ी के साथ तेजियों का रूख रहेगा। २४ ता० को शनिवार में १५ मुहूर्ती चन्द्रदर्शन तेजी को भड़का देगा, यहां ३० ता० तक मार्केटों में अच्छी तेजियां बन जायेंगी, तेजी से लाभ उठावें। रुई, कपास तथा ऊनी, सूती, रेशमी वस्त्रों में भी तेजियां बनेंगी। २२ ता० को शनि का उदय, लोहा इन्डस्ट्रीयल शेयर्स तेज होंगे। ग्रह दशा तेजी में जायेगी।

दिसम्बर

यह दिसम्बर का महीना मिति मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी शनिवार से आरम्भ होकर मिति पौष शुक्ला नवमी सोम० तक जायेगा। यहां भी मासारम्भ में १ ता० से ६ ता० तक धातुबाने, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल में तेजियां बनेगी। ६ ता० से १५ ता० तक मन्दियां, बाद में तेजियां हों, १३ ता० को बुद्ध वक्री हो रहा है। मार्केटों में तेजी का रूख रहेगा। २० ता० तक शनि ग्रह वृश्चिक में जायेगा यह तेजी कारक ग्रह यहां जनता में पीड़ा, धातुबाने में तेजी, रसादि पदार्थों में तथा विभिन्न व्यापारिक जिन्सों में तेजियां लायेगा, फलतः १६ ता० से ३१ ता० तक अनेक व्यापारिक जिन्सों में गल्ला, तिलहन, किराने की वस्तुएं रुई, सूत, कपास, पाट, बारदाने में आशातीत तेजियां बढ़ेगी।

सन् 1984 ई० का विभिन्न जिन्सों की तेजी मन्दी की लाइनें

(१) सोना चांदी—आजकल दिल्ली में चाँदी का सिक्का ३४००) रु० से ऊपर चला गया है, तेजाबी चाँदी, डिलिवरी ३१.६ के आस पास है, ९९९ चाँदी ३२७१ के आस पास भावों में है, सोना बिठूर १० ग्राम १९२०) रु०, स्टैंण्डर्ड १७६० रु० का भाव है। हम लोग बृहस्पति तथा चन्द्रमा ग्रहों को चाँदी के विषय में विशेष घटा-बढ़ी में महत्व देते हैं। शनि, सूर्य, मंगल का प्रभाव सोने पर ज्यादा धारते हैं। इन ग्रहों के संयोग वियोग से दृष्टि सम्बन्ध से सोने, चाँदी, धातुबाने की लम्बी लाइन तथा व्यावहारिक अनुमान में नीचे से नीचे भाव कब तथा ऊँचे से ऊँचे भाव ग्रह दशा से कब कैसे संभव हो सकते हैं, विचारते हैं। व्यापारिक बन्धुओं को ज्ञात है कि चांदी, सोना का बाजार सन् १९८० में ऊंचे से ऊंचे भावो में जनवरी सन् १९८० में चाँदी ५८००) रु० प्रति किलो तक तथा सोना २२५०) तक ऊचे में गया था इसके बाद मंदी की लाईन लम्बी में १८००), २०००) के भावों तक भी गई। अब ऊपर के भावों में सोना, चांदी के भाव चल रहे हैं। जनवरी सन् ८० के आस पास में ऊंचे तेजी के उपर्युक्त भावों में ग्रहों के प्रभाव की जानकारी में आधुनिक विद्वानों का मत हर्षल के तुला राशि में जाना



है। मगर प्राचीन विद्वान राहु तथा मंगल एवं बृहस्पति को ही सिंह राशि में अतिचार ही मुख्य मानते हैं। यह लेख हम अप्रेल सन् १९८३ के माध्यम में ग्रह चाल के आधार कल्पना से सन् १९८४ के विषय में दे रहे हैं। व्यापारिक बन्धु इस पर इतने आगे के समय की समीक्षा पर ध्यान दें।

(२) जनवरी सन् १९८४ से लेकर दिनांक ७ मार्च सन् १९८४ तक शनि, मंगल का अतिचार सोने, चांदी के मार्केटों में एक अच्छी तेजी का योग देगा। वृहस्पति धन राशि में कर्क राशि नवांश में रहेगा शनि से वेध प्राप्त करेगा, यहां अचानक मार्केटों में ज्वार-भाटा सा सोने, चांदी धातुबाने में आ जाना पाया जाता है। २५ फरवरी सन् ८४ से शनि की वक्री चाल का प्रभाव १२/१३ ता० जुलाई तक बना रहता है। भावों का स्तर ऊंचा ही सोने, चाँदी में बनी रहेगी, क्रमिक मन्दी की लाईन रहेगी। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जहां शनि की वक्री चाल हटती है, वहां बृहस्पति ग्रह की वक्री चालू बन जाती है। तो भी सोने, चाँदी की तेजी की लाईन भावों का ऊंचा स्तर दिनांक २५ मई सन् १९८४ तक ग्रह चाल द्वारा

बना ही रहेगा।

(3) २५ मई सन् १९८४ से लगभग १६ अगस्त तक ग्रह चाल द्वारा एक मंदी की लाईन बनेगी। यहाँ तक काफी मन्दी आ जानी पाई जाती है। १६ अगस्त से २५ सितम्बर तक दुतर्फा घटा-बढी रहकर मन्दी के नीचे स्तर को मार्केट छोड़ देगा और धीरे-धीरे शुक्र, शनि, मंगल, गुरु के योग में तेजी का प्रभाव चालू हो जायेगा। दीपावली २४ अक्टूबर तक काफी भाव ऊंचे स्तर पर ही पुनः आ जायेंगे। बाद में दिसम्बर सन् ८४ के अन्त तक ४०), ५०) रु० की घटा-बढ़ी में सोने, चांदी के भाव चलते रहेंगे।



सन 1984 का तिलहन मार्केट का भविष्य

(1) तिलहन मार्केटों की जिन्सों में सरसों, अलसी, एरण्डा, वेजिटेबिल आयल, सींग दाना आदि अनेक जिन्सें हैं। उपर्युक्त जिन्सों के तेलों में जब ग्रह चाल का प्रभाव चलता है तो ऊपर की जिन्सें भी तेजी लेती हैं। जब ऊपर की जिन्सों में मन्दी का प्रभाव चलता है। देश की पैदावारी खपत एवं ग्रह चाल के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए सन् १९८४ ई० की साल हमें उपर्युक्त तिलहन मार्केट में काफी घटा-बढ़ी की ग्रह चाल द्वारा ज्ञात होती है।

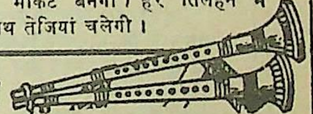
(२) शनिग्रह राहु तथा मंगल, सूर्य, बुद्ध सभी के संयोग-वियोग अतिचार वक्री मार्गी की चाल से हम तिलहन के विषय में कुछ संकेत दे रहे हैं। जनवरी सन् १९८४ में शनि, मंगल का तुला राशि में योग तथा अतिचार समस्त तिलहन की जिन्सों में कमी बेशी के साथ तेजी का संकेत देता है। सूर्य, बुद्ध, गुरु का योग भी उस दौरान धन राशि में रहता है। शनि, मंगल का वेध भी इन पर रहता है। फलतः तिलहन तथा तेलों में अच्छी घटा-बढ़ी रहते दिनांक १४ जनवरी से मांग तथा खपत को भी ध्यान में रखते तिलहनों में तथा तेलों में सामान्य घटा बढ़ी ही सीमित दायरे में बनी रहेगी। फरवरी के अन्तिम सप्ताह तक शनि ग्रह की मार्गी चाल का प्रभाव मन्दी के स्तर का ही रहेगा। यहाँ तक लाईन ग्रह चाल की मन्दी की जाननी चाहिए, मन्दे भावों के रियक्शनों में तैयार तथा वायदा तिलहन की जिन्सें खरीदनी अच्छी है।



(३) दिनांक २५ फरवरी को शनि ग्रह अपनी वक्री चाल पकड़ेगा। मंगल भी साथ में अतिचारी है तिलहन तथा तेल के मार्केटों में अच्छा घटा-बढ़ी की चाल रहेगी। रुख तेजी का बन जायेगा। तेजी की लाईन मार्केटों में जानें, यद्यपि १३ जुलाई सन् १९८४ तक तेजी का प्रभाव रहेगा, तो भी १२ जून से १३ जुलाई के बीच के समय तक हर चढ़े भाव तेजी में, तेल की जिन्सां की तैयारी माल बेच लेना ही सार रहेगा।

(४) १३ जुलाई सन् १९८४ से दिनांक १५ नवम्बर सन् १९८४ तक मार्केटों में मांग, खपत एवं ग्रह चाल प्रभाव से कोई ऊंची तेजी अथवा नीची मन्दी की लाईन की ग्रह चाल नहीं है। मन्दी का स्वर बना रहना तो संभव होगा, तेजी का नहीं।

(५) दिनांक ६ नवम्बर से मकर राशि का मंगल हो जाने पर शनि से वेध होगा। वहाँ से मार्केटों में दिसम्बर के अन्त तक तेजी का मार्केट बनेगा। हर तिलहन में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां चलेगी।



गल्ला गेहूँ, चना, जौ, मटर आदि धान्य

यह रिपोर्ट सन् १९८४ ई० के गल्ले तथा धान्य चावल एवं दालों के सम्बन्ध की ग्रह चाल द्वारा संकेत में दी जा रही है। सन् १९८३ ई० की गेहूं का फसल का वसूल मूल्य भारत सरकार ने १५१) रु० क्विंटल घोषित कर दिया है। राशन में भी १२) रु० क्विंटल भाव बढ़ाये हैं। सन् १९८४ में पैदावार मांग खपत को ध्यान में रखते हुए भावी ग्रह चाल को भी समझते हुए हमारा ख्याल इस वर्ष सम्वत्सर २०४० विक्रमी में सुभिक्ष का साल भी हमें ज्ञात होता है कि १९८४ का सन् काफी सम्वत्सर २०४० में हो गुजरेगा तथा सम्वत्सर २०४१ विक्रमी में भी मिति पौष सुदी नवमी सोमवार तक यह सन् १९८४ का समय बना रहता है। सम्वत्सर २०४१ विक्रमी का राजा चन्द्रमा होगा। मंत्री ग्रह शुक्र रहेगा, अन्य ग्रह भी अपने-अपने अधिकार से सम्वत्सर २०४१ विक्रमी को भी उत्तम खाद्यान्न तथा धान्यों के भावों में देश को आत्म निर्भर बनायेंगे। फलतः आगामी गेहूं के फसल का वसूल मूल्य १५०) १६०) रु० के बीच के ही स्तर का रहेगा। विशेष ग्रह चाल धन राशि के बृहस्पति के रहते हुए सन् १९८४ के अन्त तक भी ऊंची तेजी की धान्यों के भावों में हमें नहीं जचती है।



रुई, पाट, बारदाना, जूट आदि का सन् 1984 का भविष्य

(१) रुई का देश सबसे बड़ा अमेरिका है। भारत में भी मांग खपत के हिसाब से पैदावार चलती है। तुला राशि रुई की है। शनि, बृहस्पति, मंगल, राहु का प्रभाव रुई, कपास, पाट, बारदाना आदि पर पड़ता है। इस वर्ष शनि, तुला राशि पर वर्ष भर तक गमनशील रहेगा। काफी समय तक मंगल के साथ शनि का योग अतिचार भी रहता ही है जो अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी को ही बढ़ाता है। फलतः जनवरी सन् १९८४ से दिनांक ६ मार्च तक जब तक मंगल शनि के साथ बना रहता है। ग्रह चाल का प्रभाव रुई, पाट, बारदाने पर विशेष तेजी का प्रभाव है इसके बाद भी ऊंची तेजियां तो नहीं बनेंगी, मगर धीरे-धीरे मार्केटों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ नीचे का स्तर भावों का बनते रहना संभव होगा जो प्रायः जुलाई के अन्त तक जानें। यहाँ बारदाना ज्यादा नीचा नहीं होगा। रुई, कपास के भाव कुछ नीचे स्तर पर जाने पाये जाते हैं।



(२) अगस्त सन् १९८४ के प्रथम सप्ताह से धीरे-धीरे दिसम्बर सन् १९८४ के अन्त तक रुई, कपास, पाट, बारदाना, जूट के भावों में हर घटे भाव खरीद कर माल बेचने की दृष्टि रखने वाले व्यापारी ग्रह चाल द्वारा तेजी का कार्य करते रहने से ही लाभ प्राप्त कर सकेंगे।



(१) इस वर्ष सन् १९८४ ई में जनवरी मास में शनि ग्रह तुला राशि की २१ डिग्री अंश पर गतिशील हैं। मेष राशि के नवांश में इसकी चाल है और दिनांक २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक तुला राशि में ही गतिशील रहेगा। मन्द गति ग्रह शनि होता है अतः १ जनवरी सन् १९८४ से २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० का प्रायः ९ दिन कम समय तक यह तुला राशि में ही गतिशील रहना है। वृश्चिक राशि वालों की उतरती हुई ढैया यह यहाँ रहती है। तुला राशि वालों को यह जन्म राशि की उतरती हुई साढ़े साती की उतरती हुई ढैया कहलायेगी, जो दिसम्बर २१ ता० सन् १९८४ को उतर जायेगी। कर्क राशि वालों की चौथी तथा मीन राशि वालों की आठवीं ढैया उतरती हुई ढैया रहती है। यह प्रायः अशुभ ही परेशानी-कारक चलती है।

(२) दिनांक २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० को जब शनि ग्रह वृश्चिक राशि में पहुंच जायेगा तो तुला राशि वालों की साढ़े साती की चाल में बारहवें शनि हटकर २॥ वर्ष की व्ययकारक शनि की गति बदल जायेगी, यद्यपि तुला राशि वालों की यह साढ़े साती ताम्बे के पाये से चालू है, जो समफल रखती है तो भी २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक तुला राशि वालों को साढ़े साती का दौर बना रहेगा और जनवरी सन् १९८५ में शनि वृश्चिक राशि में आगे चलेगा जिसका विवरण हम अगली जंत्री मे देंगे। यहां सन् १९८४ ई० में तुला के शनि की चाल के रहते अभी वृश्चिक राशि वालों को बारहवें शनि की व्यय की अधिकता का सामना करना ही पड़ेगा।

(३) इस स्थल में यह भी स्मरण रखना चाहिए कि शास्त्र के नियमानुसार किसी की जन्म कुण्डली मे शनि का शुभ ग्रह से सम्बंध योग हो अथवा विंशोत्तरी महा-दशा अथवा अन्तर काल में शुभ ग्रहों का दौर चल रहा हो तो शनि की ढैया और साढ़े साती का अशुभ फल बहुत कम रह जाता है, जैसा कि इस वर्ष सन् १९८४ई० के दौरान में तथा गत १९८३ के दौरान में बृहस्पति वृश्चिक राशि में गतिशील था, ८४ में धन में रहेगा तथा ताम्बे के पाये पर साढ़े साती है, तुला वालों को, सो यह विशेष अशुभ फलकारक नहीं है और न कर्क राशि वालों को चौथी अढ़ैया और न मीन राशि वालों को आठवीं अढ़ैया ज्यादा दोषकारक ही होगी। यह संशोधन शास्त्र दृष्टि से माना ही जायेगा।

(४) अढ़ैया अथवा साढ़े साती चन्द्र ग्रह पर ज्यादा आधारित होती है, यदि चन्द्रमा ग्रह कुण्डली में जिसको शनि के साथ हो, उसी व्यक्ति को साढ़े साती अथवा अढ़ैया कुछ चिन्ता कारक, कष्टकारक, अधिक व्यय कारक रहा करती है। अष्टमेष तथा मार्केश शनि के साथ चंद्रमा शारीरिक अरिष्ट कारक होता है, बाकी लग्नेश, पंचमेश, नवमेश, शनि ३, ६, ११ स्थान में गया हो तो सभी अढ़ैया साढ़े साती के अरिष्ट नेष्ठ दोषों को हटाकर सुख सम्पत्ति को देता है।

(५) सन् १९८४ ई० में २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक तुला राशि में जबकि शनि गतिशील रहता है तो इस तुला के शनि का मेषादि राशि वालों को शुभ और अशुभ फल इस प्रकार गुजरेगा। विशेषकर कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक तथा मीन इन पांच राशियों को ही प्रभावित करेगा, वह भी इस प्रकार रहेगा।

कर्क—(ढैया) ताम्बे के पाये से ही २१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक रहेगी, समान फल जानें कोई हानि नहीं होगी। तो भी कभी-कभी ढैया का सम्बन्ध रहने के निवृति हेतु सरसों के तेल में मुख देख कर छाया दान शनिवार को कर देना उत्तम तथा पर्याप्त है।

कन्या – साढ़े साती दौर में शनि कन्या से हट चुका है, खर्चा भी अब व्ययकारक परेशानी का इस वर्ष नहीं रहेगा तो भी जब तक वृश्चिक में शनि नहीं जाता है



साढ़े साती की सत्ता कन्या राशि में लोहे के पाये सम्बन्धी रहेगी, जो नाम मात्र लोहे के पाये की है। आय व्यय का संतुलन कन्या राशि वालों का ठीक ही रहेगा।

तुला—शनि तुला में ही सन् १९८४ में रहेगा ताम्बे के पाये की साढ़े साती है इसके साथ-साथ धन का गुरू भी हितकारी गोचर मे रहेगा। यह भी शुभ फल का संकेत ही है।

वृश्चिक – साढ़े साती सोने के पाये में सन् १९८४ में रहेगी। यह हानिकारक व्यय की अधिकता तथा अशान्ति कारक रहेगी। छायादान, तुलादान भी कराना शुभ होता है।

मीन —आठवें शनि की ढैया शारीरिक कष्टकारक ज्यादा होती है परन्तु यह तुला के शनि की ढैया वृश्चिक राशि वालों को चाँदी के पाये की है, सर्वथा शुभ रहेगी।

बाकी सब राशियाँ साढ़े साती अथवा ढैया से सन् ८४ ई० में कोई प्रभावित नहीं है।

बृहस्पति ग्रह की चार व्यवस्था तथा फल

(१) बृहस्पति ग्रह एक राशि पर १ वर्ष अथवा १३ मास तक ही गतिशील रहता है। सन् १९८४ ई० में आरम्भ से ही धनराशि में यह ग्रह गतिशील रहता है। और दिसम्बर सन् १९८४ ई० के अन्त तक धन राशि में चलता रहेगा। कन्या, वृष तथा मकर राशि वालों को यह ४, ८, १२ स्थान में रहने के कारण कुछ अशान्ति कारक, व्ययकारक एवं चिंताकारक रहना है। यदि बृहस्पति ग्रह अशुभ फल कम देता है जब कभी चौथे, आठवें, बारहवें आ जाता है तो शुभ फल देने में असमर्थ हो जाता है। इस वास्ते ४, ८, १२ रहते बृहस्पति को भी नेष्ट ही मान लिया जाता है।



(२) अन्य राशिवालों को बृहस्पति श्रेष्ठफल सन् १९८४ में करेगा। जिन तीन कन्या, वृष, मकर राशियों के विषय में बृहस्पति ग्रह गोचर विचार गणना में शुभ फल देने में सन् ८४ में असमर्थ रहता है उसके उपचार के वास्ते इन राशि वालों को चाहिए, कि वे बृहस्पतिवार का व्रत किया करें। पीली वस्तु के खाद्य का सेवन एक समय करें, बेसन, चना, हल्दी, मिठाई का सेवन करें। नमक का इसमें सेवन न करें तो अच्छा है एक दिन का व्रत बृहस्पति का होता है आठ दिन में पीले केशरी, चावल भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं। दिसम्बर सन् १९८४ के अन्त तक जब बृहस्पति मकर राशि में चला जायेगा तो फिर व्रत की आवश्यकता कन्या, वृष, मकर राशि वाले व्यक्तियों को भी नहीं रहेगी।

नोट—राहु, केतु उपग्रह हैं। विशेष महत्व शनि तथा बृहस्पति ग्रह का ही होता है। सामान्यतः राहु केतु को भी चौथे, आठवें, बारहवें ही अपनी राशि से देखना चाहिए।

अतः यहां शनि तथा बृहस्पति की ही गोचर विचार गणना सन् १९८४ की दे दी गई है।

राहु केतु गोचर विचार फल

राहु ग्रह एक राशि में डेढ़ वर्ष वक्री चाल में गतिशील रहता है। दिनांक १३ जुलाई सन् १९८३ ई० को यह वक्री चाल से वृष राशि तथा केतु वृश्चिक राशि में गतिशील था डेढ़ वर्ष तक प्रायः सन् १९८३ के दिसम्बर मास तथा सन् १९८४ के साल भर को भी पार करके दिनांक २६ जनवरी स्वतन्त्रता दिवस तक वृष राशि में ही वक्री चाल से चलता रहेगा। दिनांक २६ जनवरी को कृति १ चरण में राहु मेष राशि में विशाखा ३ चरण में केतु तुला राशि में आ जायेगा। स्पष्ट है कि सन् १९८४ ई० में राहु तथा वृश्चिक में केतु की चाल बनी रहेगी, अतः सन् १९८४ में कुम्भ, तुला, मिथुन राशि वालों को राहु ४, ८, १२ स्थान में तथा कर्क राशि वालों को ६ स्थान में कुछ नेष्ठ रहेगा, छठे स्थान में ज्यादा नेष्ठ नहीं है। ४, ८, १२वें नेष्ठ समझना चाहिये।



सन् 1984 ई० के व्रत, त्यौहार व विवाह आदि के शुभ मुहूर्त

वार्षिक छुट्टियाँ सन् १९८४ ई०



नाम त्यौहार	ता० अं० म०	वार
मकर संक्रान्ति पुण्य दिन	१४ जनवरी	शनिवार
बसन्त पंचमी	७ फरवरी	मंगलवार
भारतीय गणतन्त्र दिवस	२६ जनवरी	गुरुवार
महाशिव रात्रि व्रत	२९ फरवरी	बुद्धवार
होली	१६ मार्च	शुक्रवार
धुलैंडी	१७ मार्च	शनिवार
दुर्गाष्टमी	९ अप्रैल	सोमवार
राम नवमी	१० अप्रैल	मंगलवार
अक्षय तृतीया	४ मई	शुक्रवार
ईद	१ जून	शुक्रवार
गंगा दशहरा	८ जून	शुक्रवार
देवशयनी एकादशी	९ जौलाई	सोमवार
व्यास पूर्णिमा	१३ जौलाई	शुक्रवार
तीजों का मेला	३१ जौलाई	मंगलवार
नाग पंचमी	१ अगस्त	बुद्धवार
रक्षाबंधन (सलूनो)	११ अगस्त	शनिवार
भारतीय स्वतन्त्रता दिवस	१५ अगस्त	बुद्धवार
जन्माष्टमी व्रत	२० अगस्त	सोमवार
गणेश चतुर्थी	२९ अगस्त	बुद्धवार
गाँधी व शास्त्री जयन्ती	२ अक्टूबर	मंगलवार
दुर्गाष्टमी	२ अक्टूबर	मंगलवार
विजयादशमी	४ अक्टूबर	गुरुवार
ताजिया	६ अक्टूबर	शनिवार
शरद पूर्णिमा	९ अक्टूबर	मंगलवार
करक चतुर्थी	१४ अक्टूबर	शनिवार
अहोई अष्टमी	१७ अक्टूबर	बुद्धवार
दीपावली	२४ अक्टूबर	बुद्धवार
गोवर्धन पूजा (अन्नकूट)	२५ अक्टूबर	गुरुवार
भैयादौज	२६ अक्टूबर	शुक्रवार
गोपाष्टमी	३१ अक्टूबर	बुद्धवार
अक्षय नवमी	२ नवम्बर	शुक्रवार
देव उत्थानी एकादशी	४ नवम्बर	रविवार
गंगा स्नान कार्तिकी	८ नवम्बर	गुरुवार
ईद-ए-मीलाद	६ दिसम्बर	गुरुवार



नोट—सन् १९८४ की वार्षिक छुट्टियों में गलती या भूल रह गई हो तो प्रदेश तालिका से सुधार लें। हम किसी गलती के जिम्मेवार नहीं हैं।

स०२०४०(सन् १९८४)मध्ये शुभ विवाह मुहूर्त

महीना	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न
माघ	कृष्ण	२	शुक्रवार	मघा	गोधूलि
माघ	कृष्ण	६	सोम०	हस्त	गोधूलि
माघ	कृष्ण	१	शुक्र०	अनु०	लग्न ६ कन्या
माघ	कृष्ण	१२	रवि०	मूल	लग्न १०।११



माघ	शुक्ल	३	रवि०	उ-भाद्रपद	६ कन्या
माघ	शुक्ल	४	सोम०	उ-भाद्रपद	गोधूलि
माघ	शुक्ल	४	सोम०	रेवती	धन लग्न
माघ	शुक्ल	५	मंगल	रेवती	गोधूलि ६
माघ	शुक्ल	१४	गुरु०	मघा	लग्न धन
फागुन	कृष्ण	१	शुक्र०	मघा	आ० के दिवाल ४
फागुन	कृष्ण	२	शनि०	उ.फा.	ल ६।९
फागुन	कृष्ण	६	शनि०	मूल	गोधूलि
फागुन	कृष्ण	११	सोम०	उ० पा०	लग्न ६
फागुन	शुक्ल	२	रवि०	उ० भा०	लग्न ६
फागुन	शुक्ल	३	सोम०	रेवती	लग्न ६

सम्वत्सर २०४१ वि॰ तदनुसार १९८४ के अन्तर्गत विवाह मुहूर्त:

मास	पक्ष	तिथि	वार	नक्षत्र	लग्न
चैत्र	शुक्ल	१२	शुक्र०	उ०फा०	लग्न ६।१०
चैत्र	शुक्ल	१३	शनि०	उ०फा०	दिवा लग्न ३
वैशाख	कृष्ण	१	सोम०	स्वाति	लग्न ६।१०
वैशाख	कृष्ण	४	गुरु०	मूल	लग्न १२
वैशाख	कृष्ण	५	शुक्र०	मूल	गोधूलि
वैशाख	कृष्ण	६	शनि०	उ.पा.	लग्न १२
वैशाख	कृष्ण	७	रवि०	उ.पा.	गोधूलि ६।१२
वैशाख	शुक्ल	३	शुक्र०	मृगशिरा	गोधूलि
वैशाख	शुक्ल	८	मंगल	मघा	११
वैशाख	शुक्ल	९	बुद्ध०	मघा	गोधूलि ९
मार्गशीर्ष	कृष्ण	८	शुक्र०	मघा	११ गोधूलि
मार्गशीर्ष	कृष्ण	११	सोम०	हस्त	६ गोधूलि
मार्गशीर्ष	शुक्ल	२	शनि०	मूल	५।६
मार्गशीर्ष	शुक्ल	३	रवि०	मूल	११।१२
मार्गशीर्ष	शुक्ल	४	सोम०	उ. पा.	६
मार्गशीर्ष	शुक्ल	५	मंगल	उ-पा.	११।१२
मार्गशीर्ष	शुक्ल	१०	रवि०	उ. भा.	गोधूलि ६
मार्गशीर्ष	शुक्ल	१५	शनि०	रोहिणी	११।१२
मार्गशीर्ष	शुक्ल	१५	शनि०	मृगे	६
पौष	कृष्ण	१	रवि०	मृगशिरा	११।१२

द्विरागमन मुहूर्त सन् १९८४ ई० मध्य

फागुन सुदी २ रविवार उत्तराभाद्रपद ४ मार्च
फागुन सुदी ५ गुरुवार भरणी भे ८ मार्च,
वैशाख वदी ३ बुद्धवार अनुराधा भे १८ अप्रैल
वैशाख वदी पंचमी शुक्रवार मूल भे २०अप्रैल
वैशाख शुक्ल २ गुरुवार रोहिणी भे ३ मई
वैशाख शुक्ल ३ शुक्रवार मृगशीरा ४ मई।

गृहारम्भ मुहूर्त	वैशाख शुक्ल २ गुरुवार रोहणी ३ मई। वैशाख शुक्ल ३ शुक्रवार मृगशिरा ४ मई।
गृह प्रवेश मुहूर्त	फागुन सुदी ३ सोमवार उत्तराभद्र, ४ मार्च। वैशाख सुदी २ गुरुवार रोहिणी ३ मई।



भैरव भवानी संवाद 1984



भैरव प्रश्न

जय माता जय भगवती, मैं पूछत हूं तोय।
इकतालीस की साल का, कैसा सम्वत् होय॥

भवानी उत्तर

सुन ले भैरव-लाडले, सुनो हाल चितलाय।
राजा शशि-मंत्री मृगु, दोनों शुभ मिल जाय ॥१॥

वर्षा ऋतु उतरे सही, जग में सुख संचार।
खाद्यों में मन्दी चले, होवे हर्ष अपार ॥२॥

मंगल का अतिचार हो, तुला शनि के साथ।
ज्येष्ठ मास में गृहदशा, प्रजा कष्ट के साथ ॥३॥

अन्न जल के स्तम्भ दो, सम्वत् मालाकार।
सिन्धु में बसी रोहिणी, होवे शुभ संचार ॥४॥

धान्य पति शशि धान्य में, तेजी की गृह चाल।
शनि मंगल का योग भी, तेजी करे विशाल ॥५॥
श्रावण भादों तक चले, तेजी की गृह चाल।
मन्दी में संग्रह करो, होय सवाया लाभ ॥६॥
फल सम्वत्सर का कहा, गृहदशा का हाल।
सुभिक्ष का यह वर्ष है, भली करें गोपाल ॥७॥

सदुपदेश

१. सदा ही दूसरों के गुण तथा अपने दोष देखो।
२. संसार में विजय एकाग्रता से होती है।
३. जो व्यवहार तुम्हें दुख देता है उसे दूसरों के साथ मत करो।
४. यदि तुम किसी का आदर करोगे तो दूसरे तुम्हारा करेंगे।
५. परलोक-गमन में धर्म ही अपना साथ देता है।

नोटः—हमारे ज्योतिष कार्यालय से अनुष्ठान जैसे किसी की जन्म कुन्डली में दरिद्रता का योग हो, अल्प भय होय, बीमारी का प्रकोप, मुकद्दमा, लक्ष्मी का अभाव तथा संतान प्राप्ति का योग न हो, उसके अनुष्ठान के लिए महामृत्युजंय १२५००० सवा लाख, लक्ष्मी स्त्रोत, दुर्गा सप्तशती, श्रीमद् भागवत कथा, सन्तान गोपाल तथा सम्पूर्ण ग्रहादि की शान्ति निवारणार्थ पंडित एवं विज्ञजन भेजे जाते हैं। पत्र डालकर या स्वयं मिलकर निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें। समय निश्चित करा लें।



ज्योतिष का अदभुत चमत्कार

हमारे कार्यालय में ज्योतिष सम्बन्धी समस्त बातें परिश्रम से बताई जाती हैं। जन्म पत्र, वर्ष फल, मूक प्रश्न, सन्तान योग, मुकद्दमा में हार जीत का योग, धनी योग, विवाह योग आदि अनेकों योग शास्त्रानुसार बताये जाते हैं। जिनकी फीस इस प्रकार है—जन्म पत्री की ३१) से १०००) रुपये तक है। फीस के अनुसार ही परिश्रम किया जाता है। साधारण जन्मपत्री की फीस ३१) रुपये है जिसमें आयु निर्णय, संतान, धन लाभ व विवाह निर्णय, भाग्योदय निर्णय आदि हिन्दी भाषा में स्पष्ट रूप से लिखे जाते हैं। जीवन में घटित होने वाली घटनाओं के वर्ष भी लिखे जाते हैं। वर्षफल की फीस नं० १ की ११) रुपये, नं० २ की फीस २१) रुपये, नं ३ की फीस ३१) रुपये है। वर्षफल में साल में होने वाले लाभ-हानि का विवरण, सन्तान योग, विवाह योग आदि का वर्णन सविस्तार लिखा जाता है। केवल सन्तान आदि योगों के जानने के लिए ११) रुपये प्रति योग के हिसाब से फीस आने पर जिस योग के बारे में पूछा जाएगा उसका निर्णय भेज दिया जायेगा। सन्तान आदि योग जानने के लिए जन्म कुण्डली भेजना आवश्यक है। इसके अलावा वर-कन्या की कुण्डली का मिलान शास्त्रानुसार किया जाता है, जिसकी फीस ११) रुपये है।

व्यापारियों के लिए खास सूचना

व्यापारियों के लिए प्रत्येक वस्तु की तेजी-मंदी के मासिक व त्रैमासिक, वार्षिक चांस अनुभव व शास्त्रानुसार तैयार किये जाते हैं। जिनके एकतरफा लाइन के खास रूप से चांस लिखे जाते हैं। प्रत्येक वस्तु की मासिक चांस की फीस ११) रुपये प्रति वस्तु, त्रैमासिक की फीस ३१) रुपये प्रति वस्तु तथा वार्षिक की १०१) रुपये प्रति वस्तु है। मंगाकर लाभ उठायें।

विशेष नोट—जो सज्जन पंचांगकर्ता से प्रत्यक्ष मिलना चाहें उन्हें पत्र डालकर पहले समय निश्चित कर लेना चाहिए। प्रत्यक्ष मिलकर प्रश्नोतर जानने की फीस २१) रुपये है। इसके अलावा जैसा भी उपाय आदि होगा, उसकी दक्षिणा अलग से देनी होगी। पैगांव आने के लिए देहली-मथुरा रोड पर कोसीकलाँ बड़ा रेलवे स्टेशन है। कोसीकलाँ उत्तर प्रदेश की मानी हुई मंडी है। सभी जगह से कोसीकलाँ को बस आदि की भी सुविधा है। कोसीकलाँ से पूर्व में ६ मील कोसी शेरगढ़ वाली सड़क पर पैगांव, जिला मथुरा में है। कोसी से पैगांव को ताँगा आदि की व्यवस्था भी है।

पंचागकर्ता—पं. मुकट बिहारी शर्मा, मु० पो०—पैगांव, जिला—मथुरा (उ० प्र०)


देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

मनोकामना सिद्धि के लिये साधन (मनवांछित फल की प्राप्ति)

प्रत्येक प्राणी की कोई-न-कोई कामना होती ही है वह उस कामना की पूर्ति हेतु बुद्धि में अनेकों प्रकार की कल्पना करता है। और पूर्ति का लक्ष्य पूर्ण होता न देखकर भगवान की शरण में जाता है और सोचता है कि किसी भी उपाय से मेरी कामना पूर्ण हो जाए। ऐसे समय के लिए धार्मिक ग्रन्थों में धार्मिक उपाय बतलाये गये हैं। इसी आधार को मानकर नीचे अलग अलग कार्य सिद्धि के लिए अलग-अलग उपाय स्वरूप मन्त्र आदि लिखे गये हैं। जिनको विधि पूर्वक करने से प्राणी की मनोकामना सिद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। हम यह स्तंभ पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं। यदि इसे पाठकों ने अपनाया तो हम प्रतिवर्ष प्रयोग देते रहेंगे।

अतुल निधि दायक मन्त्र

जिन्हें सदैव व्यापार में हानि उठानी पड़ी हो और भोजन वस्त्र भी समय पर न मिल पाते हों, उन्हें नीचे लिखे अन्नपूर्णा मन्त्र का जप करना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवती माहेश्वरी अन्नपूर्णा स्वाहा॥

मन्त्र जपने से पूर्व मन्त्र का नीचे लिखा विनियोग करें।

विनियोग:-- ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णेश्वरी मंत्रस्य द्रुहिण ऋषिः कृति-कृति छन्दः अन्न पूर्णेशो देवता ममाखिल कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग॥

इस प्रकार विनियोग करने के पश्चात् मूलमन्त्र से अगन्यास करके नीचे लिखे प्रकार से ध्यान करना चाहिए।

ध्यान

तप्त स्वर्ण निभा शशांक मुकुटा रत्न स्वरा भासुरा। नाना रत्न विराजिता त्रिनयना भूमि रमाभ्यां युता॥
दर्वी हारक भाजनं च दधती रम्योच्च पीतस्तनी। नृत्यन्तं शिवमा कलय्य मुदिता ध्येयान्न पूर्णेश्वरी॥

नियम—इस प्रकार ध्यान करके एकाग्र चित्त होकर मूल मन्त्र का ५,००,००० (पाँच लाख) जप करना चाहिये। मन्त्र जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण और तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। अथवा दशांश का दुगुना मन्त्र जप करना चाहिए। जिस समय मन्त्र का जप चल रहा हो उस समय जितने दिन में मन्त्र पूर्ण हो उतने दिन पृथ्वी पर सोना चाहिए। एक समय भोजन करना चाहिए। सत्य बोलना चाहिए। ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। बाल नहीं बनवाने चाहिए। जप के पश्चात् रोजाना अन्नपूर्णा देवी का भोग लगाना चाहिए। इस प्रकार पाँच लाख का पुरश्चरण करने के उपरांत मूल मन्त्र का जप १००० (एक हजार) नियम पूर्वक करते रहना चाहिए। इसके करने से निश्चय ही साधक को धनधान्य की प्राप्ति होगी। घर अन्न धन से परिपूर्ण होगा और निर्धनता का पता भी न लगेगा।

विघ्न विनाशक प्रयोग

जिनके प्रत्येक कार्य में विघ्न बाधा उपस्थित होती हो और किसी भी कार्य में सफलता न मिलती हो, उन्हें नीचे लिखी चौपाई का १,२५,००० (एक लाख पच्चीस हजार) सवा लाख सविधान जप करना चाहिए।

चौपाई—सकल विघ्न व्यापहिं नहीं ताही। राम सुकृपा बिलोकहिं जाही॥

बेरोजगारी दूर करने का प्रयोग

बेरोजगार व्यक्ति को सविधान १,२५,००० (सवा लक्ष) जप नीचे लिखी चौपाई का करना चाहिए। इससे बेरोजगारी दूर होगी तथा अन्न धन की कमी न रहेगी।

चौ०—विश्वभरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।
गई बहोरि गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥

निर्धनता नाशक मन्त्र

जिनके यहाँ निर्धनता का वास हो वे किसी योग्य गुरु से दीक्षा लेकर निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें।

ॐ रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं क्षुत्पिपासा मलां ज्येष्ठाय लक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात्—रं ह्रीं श्रीं ह्रीं रं ॐ।

गुरु से दीक्षा लेकर इस मन्त्र का ५,००,००० (पांच लाख) जप करना चाहिए। जप के पश्चात् दशांश हवन तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार करने से कुल परम्परागत चली आई निर्धनता का नाश अवश्य हो जाएगा और शीघ्र ही घर धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाएगा।

जो इसे न कर सकें वे हमारे कार्यालय से 31/- रु० भेजकर यन्त्र धारण करें, निर्धनता दूर होकर घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी। मंगाने का पता—व्यवस्थापक ज्योतिष भवन, पैगांव, मु०पो० पैगांव, जि० मथुरा (उ.प्र.)



रमल प्रश्नावली



इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ा का चौकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४ और खुदवा लें. फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें. उसका जो नंबर बने, उसी नंबर पर फल देखें. यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका रखवा कर उसका फल देखें.

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनो कामना थारी

११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे.

११३ होत काम में हुआ अंधेरा, वैरी पहुंच गया है तेरा.

११४ झटपट करो देर नहि लाओ, यह अवसर फेर नहि पाओ.

१२१ जो तुम सन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई.

१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी.

१२३ संकट हटे सर्व सुख आया, दिन-दिन दुगुनी बढ़ माया.

१२४ वा शभ काम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती.

१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके.

१३२ होगी फतह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ.

१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरु गोविंद से ध्यान लगाओ.

१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहि म्हाने.

१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आवेगें आछे.



१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है वैरी.

१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई.

१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये थारी.

२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवै.

२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई.

२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, तिगरी लाग रही है थारी.

२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा.

२२१ कितना ही गुणकर मनमाहीं, यश तुमको मिलने का नाहीं.

२२२ होगी फतह देर नहि लाओ, रविवार को व्रत बनाओ.

२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई.

२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ.

२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई.

२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन देके निर्भय सोवो.

२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धनी धनी बना वही नाथ.

२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं.

२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले.

२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गयी वस्तु घर आवे नाहीं.

२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई.

२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे.

३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है वैरी.

३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, करले जाप नही दुख भरना.

३१३ जो तुम मन में गई उपाई, होगा काम ढाल से भाई.

३१४ करि कछु दान बचन सुन मेरा, संकट दूर हो गया तेरा.

३२१ यह तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई.

३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटे होय सुखदाई.

३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए.

३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई.

३३१ जस तुम का मिलना नहि भाई, चाहे जितनी करो भलाई.

३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना.

३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे. नित नये मंगल मोद भरोगे.

३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वास.

३४१ तुम जानो अपना सा मनकी, बुद्धि बदलि रही उस तन की.

३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, घात ग्रह बिन होता नाहीं.

३४३ करिले यतन काम है नीका, अब तो फिकर मिटेगा जीका.

३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई.

४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं.

४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई.

४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई.

४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई.

४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई.

४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो वेगि संभारो

४२३ ये हैं दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई.

४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया.

४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना.

४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा.

४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होय सुखदाई.

४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो.

४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे.

४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा.

४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकी करो मनुहारी.

४४४ ठहर-ठहर कर जागे जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती.

✳ विक्रमी संवत् से विविध सन्-संवत निकालना ✳

- **अंग्रेजी सन्**—विक्रमी संवत् में से 57 घटाने पर अंग्रेजी सन् निकल आता है, जैसे वर्तमान विक्रमी संवत् 2041 में से 57 घटाने पर 2041 – 57 = 1984 अंग्रेजी (ईस्वी) सन् हुआ।
- **राष्ट्रीय शक संवत्**—विक्रमी संवत् में से 135 घटाने पर राष्ट्रीय शक संवत् ज्ञात हो जाता है।
- **फसली**—विक्रमी संवत् में से 649 घटाने पर फसली सन् ज्ञात हो जाता है।
- **बंगला**—विक्रमी संवत् में से 640 घटाने पर बंगला सन् निकल आता है।
- **मुसलमानी (हिजरी)**—विक्रमी संवत् में से 638 घटाने पर मुसलमानी (हिजरी) सन् निकल आता है।
- **रोमी**—विक्रमी संवत् में 693 जोड़ने पर रोमी सन् निकल आता है।
- **यूनानी**—विक्रमी सवत् में 719 जोड़ने से यूनानी सन् ज्ञात हो जाता है।
- **फारसी**—विक्रमी संवत् में 17,913 जोड़ने पर फारसी सन् निकल आता है।
- **ईरानी**—विक्रमी संवत् में 3951 जोड़ने पर ईरानी सन् जाना जा सकता है।
- **मिश्री**—विक्रमी संवत् में 2,73,829 जोड़ने पर मिश्री सन् ज्ञात होता है।
- **बौद्ध**—विक्रमी संवत् में 517 जोड़ने पर बौद्ध सन् निकल आता है।
- **नानकशाही**—विक्रमी संवत् में से 1,229 घटाने पर नानकशाही सन् ज्ञात हो जाता है।
- **श्रीकृष्ण संवत्**—विक्रमी संवत् में 3,178 जोड़ने पर श्रीकृष्ण संवत् ज्ञात होता है।
- **सृष्टि संवत्**—अब तक सृष्टि संवत् के 1,95,58,85,085 (एक अरब पिच्यानवे करोड़ अट्ठावन लाख पिच्यासी हजार पिच्यासी) वर्ष व्यतीत हो चुके हैं।



वर्ष भर के समस्त त्यौहार व्रत एवं पर्वों का यथा मास विवरण सन् 1984 ई०



1 जनवरी JANUARY

पित्रकार्यो अमा० ता० २ जनवरी पौष वदी १४ सोमवार
देव कार्यो अमा० ता० ३-जनवरी पौष वदी ३० मंगलवार
मकरसंक्रान्ति ता० १४ जनवरी पौष सुदी ११ शनिवार
एकादशी व्रत वैष्णावानाम् ता० १५ जनवरी पौष सुदी १२ रविवार
प्रदोषव्रतं ता० १६ जनवरी पौष सुदी १३ सोमवार
पूर्णिमा व्रतं ता० १८ जनवरी पौष सुदी १५ बुधवार
चतुर्थी व्रतं ता० २१ जनवरी माघ वदी ३
गणतंत्र दिवस ता० २६ जनवरी माघ वदी ९ गुरुवार
एकादशी व्रतं ता० २८ जनवरी माघ वदी ११ शनिवार
षट्तिला, प्रदोष व्रतं ता० ३० जन० माघ वदी १३ सोम.

2 फरवरी FEBRUARY

अमावस्या ता० १ फरवरी माघ वदी ३० बुधवार
बसंत पंचमी ता० ७ फरवरी माघ सुदी ५ मंगलवार
भीष्माष्टमी व्रतं ता० १० फरवरी माघ सुदी ८ शुक्रवार
एकादशी व्रतं ता० १३ फरवरी माघ सुदी ११ सोमवार
प्रदोष व्रतं ता० १४ फरवरी माघ सुदी १३ बुधवार
मेला कासन बाबा बिसाह पूर्ण भक्त ता० १६ फरवरी माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार
पूर्णिमा व्रतं ता० १६ फरवरी माघ सुदी १५ गुरुवार
चतुर्थी व्रतं ता० १९ फरवरी फाल्गुन वदी ३ रविवार
एकादशी व्रतं विजया ता० २७ फरवरी फाल्गुन वदी ११ सोमवार
प्रदोष व्रतं ता० २९ फरवरी फाल्गुन वदी १३ बुधवार महाशिवरात्रिव्रतं स्मार्तानाम्

3 मार्च MARCH

महाशिवरात्रि व्रतं वैष्णवानां ता० १ मार्च फाल्गुन वदी १४ गुरुवार
अमावस्या ता० २ मार्च फाल्गुन वदी ३० शुक्रवार
फुलरिया दौज ता० ४ मार्च फाल्गुन सुदी २ रविवार
आमल एकादशी व्रतं ता० १३ मार्च फाल्गुन सुदी ११ मंगलवार स्मार्तानाम्
आमल एकादशी व्रतं ता० १४ मार्च फाल्गुन सुदी १२ बु०
प्रदोष व्रतं ता० १५ मार्च फाल्गुन सुदी १३ गुरुवार
होली व्रतं ता० १६ मार्च फाल्गुन सुदी १४ शुक्रवार
पूर्णिमा ता० १७ मार्च फाल्गुन सुदी १५ शनिवार
चतुर्थी व्रतं ता० २० मार्च चैत्र वदी ४ मंगलवार
शीतलाष्टमी ता० २३ मार्च चैत्र वदी ७ शुक्रवार
एकादशी ता० २७ मार्च चैत्र वदी ११ मंगल. स्मार्तानाम्
एका० ता० २८ मार्च चैत्र वदी ११ बुधवार वैष्णवानाम्
प्रदोष व्रतं ता० २९ मार्च चैत्र वदी १२ गुरुवार

4 अप्रैल APRIL

अमावस्या ता० १ अप्रैल चैत्र वदी ३० रविवार
मत्स्य जयन्ती ता० ४ अप्रैल चैत्र सुदी ३ बुधवार
श्री राम नवमी व्रतं ता० १० अप्रैल चैत्र सुदी ९ मंगलवार
एकादशी व्रतं ता० १२ अप्रैल चैत्र सुदी ११ गुरुवार
प्रदोष व्रतं ता० १३ अप्रैल चैत्र सुदी १२ शुक्रवार
हनुमज्जयन्ती पूर्णिमा व्रतं ता० १५ अप्रैल चैत्र सुदी १५ रविवार।
चतुर्थी व्रतं ता० १८ अप्रैल वैशाख वदी ३ बुधवार
एका० व्रतं बरुथनी ता० २६ अप्रैल वैशाख वदी ११ गुरु०

5 मई MAY

अमावस्या ता० १ मई वैशाख वदी ३० मंगलवार
परशुराम जयन्ती ता० ३ मई वैशाख सुदी २ गुरुवार
अक्षय तृतीया ता० ४ मई वैशाख सुदी ३ शुक्रवार
मोहनी एकादशी व्रतं ता० ११ मई वैशाख सुदी ११ शुक्र०
प्रदोष व्रतं ता० १२ मई वैशाख सुदी १२ शनिवार
पूर्णिमायां व्रतं ता० १५ मई वैशाखसुदी १५ मंगलवार यमाय सान्न जलकुम्भ दानं
(सबरात) महोत्सव पवनो का ता. १६ मई ज्येष्ठ वदी १ बु.
चतुर्थी व्रतं ता० १८ मई ज्येष्ठ वदी ४ शुक्रवार
एकादशी व्रतं ता० २६ मई ज्येष्ठ वदी ११ शनिवार
प्रदोष व्रतं ता० २८ मई ज्येष्ठ वदी १३ सोमवार
अमावस्या व्रतं ता० ३० मई ज्येष्ठ वदी ३० बुधवार वट पूजन

6 जून JUNE

गंगादशमी व्रतं ता० ८ जून ज्येष्ठ सुदी १० शुक्रवार.
निर्जला एकादशी व्रतं ता० ९ जून ज्येष्ठ सुदी ११ शनि०
निर्जला एकादशी व्रतं वैष्णवानां ता० १० जून ज्येष्ठ सुदी १२ रविवार
प्रदोष व्रतं ता० ११ जून ज्येष्ठ सुदी १३ सोमवार
पूर्णिमा व्रतं ता० १३ जून ज्येष्ठ सुदी १५ बुधवार (गुर्जरावट सावित्री व्रतं)
चतुर्थी व्रतं ता० १६ जून आषाढ़ वदी ३ शनिवार

योगिनी व्रतं एका० ता० २५ जून आषाढ़ वदी ११ सोम०
प्रदोष व्रतं ता० २६ जून आषाढ़ वदी १२ मंगलवार
अमावस्या ता० २६ जून आषाढ़ वदी ३० शुक्रवार
रथयात्रा ता० ३० जून आषाढ़ सुदी १ शनिवार



7 जुलाई JULY

एकादशी व्रतं ता० ६ जुलाई आषाढ़ सुदी ११ सोमवार
प्रदोष व्रतं ता० १० जुलाई आषाढ़ सुदी १२ मंगलवार
पूर्णिमा व्रतं ता० १३ जुलाई आषाढ़ सुदी १५ शुक्रवार
चतुर्थी व्रतं ता० १५ जुलाई श्रावण वदी २ रविवार
नागपंचमी मरुस्थले व्रतं, ता० १८ जुलाई श्रावण वदी ५ बुधवार
कामिका एकादशी व्रतं ता० २४ जु० श्रावण वदी ११ मं.
प्रदोष व्रतं ता० २६ जुलाई श्रावण वदी १३ बुधवार
हरियाली अमा० ता० २८ जुलाई श्रावण वदी ३० शनि०
हरियाली तीज ता० ३१ जुलाई श्रावण सुदी ३ मंगलवार

8 अगस्त AUGUST

नागपंचमी ता० १ अगस्त श्रावण सुदी ५ बुधवार
पवित्रा एकादशी व्रतं ता० ७ अगस्त श्रावण सुदी ११ मं०
पूर्णिमा व्रतं रक्षा बन्धनम् ता० ११ अगस्त श्रावण सुदी १५ शनिवार
चतुर्थी व्रतं (राष्ट्रीय पर्व)ता० १५ अगस्त भाद्रपद वदी ४ बुधवार
चन्द्रषष्ठी व्रतं ता० १७ अगस्त भाद्रपद वदी ५ शुक्रवार
श्री कृष्णजन्माष्टमी व्रतं स्मार्तानाम् ता० १६ अगस्त भाद्रपद वदी ७ रविवार
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं वैष्णवानाम् ता० २० अगस्त भाद्रपद वदी ८ सोमवार
अजा एका० व्रतं ता० २३ अगस्त भाद्रपद वदी ११ गुरु०
प्रदोष व्रतं ता० २४ अगस्त भाद्रपद वदी १२ शुक्रवार
अमावस्या ता० २६ अगस्त भाद्रपद वदी ३० रविवार
गणेश चतुर्थी व्रतं ता० २६ अगस्त भाद्रपद सुदी ३ बुध०

9 सितम्बर SEPTEMBER

जल झूलनी एकादशी व्रतं ता० ५ सितम्बर भाद्रपद सुदी ११ बुधवार
बामन जयन्ति (हज्ज) ता० ६ सि० भाद्रपद सुदी १२ गु.
मेला पूर्ण भक्त (कासन गुडगांव) ता० ६, ७, ८ सितम्बर भाद्रपद सुदी १२, १३, १४
प्रदोष व्रतं ता० ७ सितम्बर भाद्रपद सुदी १३ शुक्रवार (ईद-उल-जुहा) बकरीद
पूर्णिमायां व्रतं महालयाश्राद्धारम्भ ता० १० सितम्बर भाद्रपद सुदी १५ सोमवार
चतुर्थी व्रतं ता० १४ सितम्बर आश्विन वदी ४ शुक्रवार
मातृनवमी ता० १६ सितम्बर आश्विन वदी ६ बुधवार

इन्दिरा एका० व्रतं ता०२१ सि० आश्विन वदी ११ शु०
श्राद्धसर्व पितृ अमा० ता० २४ सितम्बर आश्विन वदी अमा० १४ सोमवार
नवरात्रि आरम्भ ता० २६ सितम्बर आश्विन सुदी २ बु०

10 अक्टूबर OCTOBER

सरस्वती पूजनं ता० २ अक्टूबर आश्विन सुदी ८ मंगलवार (गांधी जयन्ति)
विजय दशमी ता० ४ अक्टूबर आश्विन सुदी १० गुरुवार
पापांकुशा एकादशी व्रत ता० ५ अक्टूबर आश्विन सुदी ११ शुक्रवार
प्रदोष व्रतं ता० ७ अक्टूबर आश्विन सुदी १३ रविवार
शरदपूर्णिमा व्रतं कोजागरी ता० ६ अक्टूबर आश्विन सुदी १५ मंगलवार
चतुर्थी व्रतं ता० १४ अक्टूबर कार्तिक वदी ३ शनिवार
रमा एकादशी व्रतं कार्तिक वदी ११ रविवार
प्रदोष व्रतं कार्तिक वदी १३ सोमवार
अहोई अष्टमी ता० १७ अक्टूबर कार्तिक वदी ७ बुधवार
दीपमालिका महालक्ष्मी पूजन ता० २४ अक्टूबर कार्तिक वदी ३० बुधवार
अन्नकूट गोवर्धन पूजा ता० २५ अक्टूबर कार्तिक सुदी २ गुरुवार
भैयादूज २६ अक्टूबर कार्तिक सुदी २ शुक्रवार
गोपाष्टमी ता० ३१ अक्टूबर कार्तिक सुदी ८ बुधवार

11 नवम्बर NOVEMBER

देव प्रबोधनी एकादशी व्रतं ता० ४ नवम्बर कार्तिक सुदी ११ रविवार
प्रदोष ता० ६ नवम्बर कार्तिक सुदी १३ मंगलवार
पूर्णिमा व्रतं ता० ८ नवम्बर कार्तिक सुदी १५ गुरुवार (चन्द्र ग्रहण)
चतुर्थी व्रतं ता० १२ नवम्बर मार्गशीर्ष वदी ४ सोमवार
उत्पत्ति एकादशी व्रतं ता० १६ नवम्बर मार्गशीर्ष वदी ११ सोमवार
प्रदोष व्रतं ता० २० नवम्बर मार्गशीर्ष वदी १२ मंगलवार
अमावस्या ता० २२ नवम्बर मार्गशीर्ष वदी ३० गुरुवार

12 दिसम्बर DECEMBER

भाक्षदा एकादशी व्रतं ता० ४ दिसम्बर मार्गशीर्ष सुदी ११ मंगलवार
प्रदोष व्रतं ता० ५ दिसम्बर मार्गशीर्ष सुदी १२ बुधवार
दत्तजन्यती ता० ७ दिसम्बर मार्गशीर्ष सुदी १४ शुक्रवार
पूर्णिमा व्रतं ता० ८ दिसम्बर मार्गशीर्ष सुदी १५ शनिवार
चतुर्थी व्रतं ता० ११ दिसम्बर पौष वदी ३ मंगलवार
सफला एका. व्रतं ता० १८ दिसम्बर पौष वदी ११ मंगल
अमावस्या ता० २२ दिसम्बर पौष वदी ३० शनिवार



जनवरी सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—

मकर संक्रान्ति १४ जनवरी शनिवार
गणतंत्र दिवस २६ जनवरी गुरुवार



मिति पौष वदी १३ रविवार संवत् २०४० वि० से माघ वदी १४ मंगलवार सवत् २०४० वि० तक । शकाब्द: १६०५ ।
रविअव्वल २६ से रविलाख्खर २६ सन् १४०४ हि० तक । भारतीय पौष ११ से भारतीय माघ ११ तक ।

वार	जनवरी सन् १९८४	रविअव्वल १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय पौष-माघ	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्योहार-व्रत गृह संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	आरंभ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
रवि	१	२६	१६	११	१३	५	३२	ज्ये	४१	४१	गं	२६	४५	ध	४१/४१	५/३२	३६/११	२५	४०	६	५२	५	७	वक्री मूले बुधः ३६।४१
सोम	२	२७	१७	१२	१४	६	५१	मू	४५	२०	वृ	२५	४०	ध	—	—	—	२५	४१	६	५३	५	८	पितृ कार्ये अमावस्या
मंगल	३	२८	१८	१३	३०	९	४१	पू	५०	५	ध्रु	२४	५०	ध	—	—	—	२५	४१	६	५२	५	८	
बुध	४	२९	१९	१४	१	१३	३३	उ	५५	५८	व्या	२५	१६	म	६/३४	—	—	२५	४२	६	५१	५	९	
गुरु	५	३०	२०	१५	२	१८	४३	श्र	६०	०	ह	२६	२९	म	—	५७/५०	—	२५	४४	६	५०	५	८	मूले २ गुरुः २४।१८ ∴
शुक्र	६	१	२१	१६	३	२४	२५	श्र	२	३	व	२८	१८	कुं	३६/९	—	—	२५	४५	६	५१	५	९	रवि लाखर %
शनि	७	२	२२	१७	४	३०	५५	ध	९	५०	सि	३०	९	कुं	—	—	३०/५४	२५	४७	६	५१	५	९	
रवि	८	३	२३	१८	५	३७	२८	श	१७	३४	व्या	३२	४५	कुं	—	—	—	२५	४८	६	५०	५	१०	
सोम	९	४	२४	१९	६	४३	५६	पू	२५	१६	व	३५	०	मी	८/२०	—	—	२५	४९	६	५०	५	१०	पञ्चक समाप्त ८।८१ ∠
मंगल	१०	५	२५	२०	७	४८	२६	उ	३२	७	ध	३६	४१	मी	—	४८/२७	—	२५	५०	६	५०	५	१०	
बुध	११	६	२६	२१	८	५३	५७	रे	३७	४१	शि	३७	१६	मेष	३७/४१	—	२१/१३	२५	५१	६	५०	५	१०	उत्तराषाढायां रविः ↑
गुरु	१२	७	२७	२२	९	५६	३२	अ	४२	२६	सि	३६	४५	मेष	—	—	—	२५	५२	६	४९	५	११	स्त्रात्यां भौम १०।२८
शुक्र	१३	८	२८	२३	१०	४७	२९	म	४५	६	सा	३४	५६	मेष	—	—	—	२५	५३	६	४९	५	११	
शनि	१४	९	२९	२४	११	५६	१२	कृ	४५	३५	शु	३१	२५	वृषं	१/२	२६/१	५६/१३	२६	०	६	४८	५	१२	मकरेऽर्क ३१।२२ ×
रवि	१५	१०	३०	२५	१२	५२	५०	रो	४४	८	शु	२६	१८	वृषे	—	—	—	२६	०	६	४७	५	१३	
सोम	१६	११	१	२६	१३	४७	३५	मृ	४०	४१	ब्र	१९	३५	मि	१२/२६	—	—	२६	४	६	४७	५	१३	
मंगल	१७	१२	२	२७	१४	४०	४२	आ	३५	१९	ऐं	११	२५	मि	—	४०/४१	—	२६	७	६	४७	५	१३	रोहिणी ३ राहु ज्येष्ठा ‖
बुध	१८	१३	३	२८	१५	३२	४५	पु	२९	३०	वै	२/९	५०/९	कर्क	१८/०	—	४/१३	२६	१०	६	४६	५	१४	विष्कुम्भ योगक्षय ५०।८ ⇑
गुरु	१९	१४	४	२९	१	२४	१०	पु	२२	३९	प्री	४२	०	कर्क	—	—	—	२६	११	६	४६	५	१४	
शुक्र	२०	१५	५	३०	२	१५	२०	श्ले	१५	५५	आ	३१	४२	सिं	१५/५५	४१/२	—	२६	१४	६	४५	६	१५	मूलेधनुषि शुक्रः ३१।५८ +
शनि	२१	१६	६	१	३	६	४६	म	९	१०	सौ	२१	५१	सिं	—	—	६/४६	२६	१८	६	४५	६	१५	अभिजित प्रवृतो रविः ⊁
रवि	२२	१७	७	२	५	५२	१०	पू	३/१९	५५/५	शो	१२	३५	कं	१७/४	—	—	२६	२१	६	४४	५	१६	पूषायां बुध ४३।१३ उ ♌
सोम	२३	१८	८	३	६	६	४०	ह	५४	४७	अ	४/१४	५२/५०	कं	—	४६/४०	—	२६	२२	६	४४	५	१६	सुकर्मा योगक्षय ५२।४८
मंगल	२४	१९	९	४	७	४२	२६	वि	५२	५२	धृ	५१	०	तु	२३/४८	—	१५/२	२६	२६	६	४४	५	१६	श्रवणेरविः २०।४० ÷
बुध	२५	२०	१०	५	८	३९	४६	स्वा	५१	४६	शू	४५	४५	तु	—	—	—	२६	२७	६	४३	५	१७	अभिजित निर्गतो रविः Ʒ
गुरु	२६	२१	११	६	९	३८	२०	वि	५१	१५	ग	४१	५९	वृ	३७/९	—	—	२६	३१	६	४३	५	१७	पातस्पर्शः ५५।४५ ⇐
शुक्र	२७	२२	१२	७	१०	३८	२०	अ	५४	६	वृ	३९	७	वृ	—	८/२०	३५/१९	२६	३३	६	४२	५	१८	पातमोक्षः ११ ५।५८
शनि	२८	२३	१३	८	११	३९	२४	ज्ये	५७	२०	ध्रु	३७	२५	ध	५७/२०	—	—	२६	३६	६	४१	५	१९	षट्तिला एकादशी व्रतम्
रवि	२९	२४	१४	९	१२	४१	४९	मू	५९	४०	व्या	३६	४०	ध	—	४६/२	—	२६	४०	६	४०	५	२०	
सोम	३०	२५	१५	१०	१३	४६	०	मू	१	५०	ह	३६	५६	ध	—	—	—	२६	४१	६	४०	५	२०	प्रदोष व्रतम्
मंगल	३१	२६	१६	११	१४	५१	२६	पू	६	५१	व	३७	३०	म	२३/२९	—	१५/४३	२६	४६	६	३९	५	२२	पूषायां शुक्रः ११।२८।!

आकाशी शकुन विचार—ता० १ को बादल हो तो वर्षाऋतु में उत्तम वर्षा होगी जौ गेहूं चना की उपज बढ़ेगी, १४ जनवरी को मृगशिरा नक्षत्र है अतः उत्तम वर्षा के योग बनेंगे, सुभिक्ष का संचार बढ़ेगा, गल्ला धान्य मन्दे होंगे गुड़ खाण्ड, शक्कर का भाव तेजी में जायेगा स्टाक करना अच्छा है। फसल में आगे चलकर धान्यों का भी संग्रह करना अच्छा है।

आकाशी लक्षण—सर्दी का प्रकोप बढ़ेगा। पहाड़ी प्रान्तों में बर्फ पड़ेगी ठंडी का संचार होगा। वर्षा के योग संक्रान्ति पर संभव होंगे। फसलों को लाभ पहुंचायेगा। सर्दी को बढ़ावा ज्यादा मिलेगा बर्फ पड़ेगी।

∴ चन्द्रदर्शन, बुधोदय पूर्वस्यां ३१/२८, % पंचकारम्भ २/३९, ∠ ज्येष्ठायां शुक्रः ३०।७, ↑ १५।८ मार्गी बुधः ३१।१४ (सौर ३५/४१) × (सौर ४१।९) पुत्रदा ११ व्रतं स्मार्तानां मन्वादि ‖ १ केतु ३८।२० ⇑ पूर्णिमा व्रतं माघस्नानारम्भः + मूले ३ गुरुः ३८।५० ⊁ ४।१७ सौर (१२।३१ राष्ट्रीय माघारम्भ चतुर्थी व्रतम् ♌ फाल्गुनीक्षय ५५।५ ÷ (सौर २८।२८) Ʒ सौर (२०।४४) ⇐ गणतंत्र दिवसः।

इस मास का फल १४, १५ जनवरी के बाद का उत्तम नहीं है। कहीं वृष्टि का प्रभाव होगा, कहीं वृष्टि कम होगी। सर्दी का, वायु का प्रकोप बढ़ेगा। सूखी सर्दी, वायु का प्रकोप ज्यादा रहेगा। बीमारी, जनता में शीत ज्वर बढ़ेगा। शनि, मंगल दोनों पाप ग्रहों का योग राजनैतिक अस्थिरता देता है, अशान्ति लाता है। राक्षसी संज्ञा वाली संक्रान्ति गेहूं, चना, जौ, मटर, खाण्ड, गुड़, शक्कर में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ रुख तेजी में जायेगा। रुई, कपास, बिनौला, तिलहन की जिन्सें तेज होंगी। सोना, चांदी पीतल, तांबा, लोहा, जस्त भी घटा-बढ़ी के साथ तेजी में जायेगा। खरीद कर माल बेचना अच्छा है। वर्षा की कमी शनि, मंगल के योग में संभव होगी। राज विग्रह, प्रजा में पीड़ा, रोगोपद्रव संभव हो, वायु प्रकोप से भी तेजियों का वातावरण बनेगा। गेहूं, चना, जौ, बाजरा, मक्का में ४) ५) रु० की तेजी होगी। १५ तक सामान्य भाव रहकर १५ ता० के बाद तेजियां बढ़ेगी। सरसों, अलसी, अरंडी में ६) ७) रु० की तेजी होगी। ३० मुहूर्ती संक्रान्ति रहने पर भी राक्षसी संज्ञा होने से तेजियां १५ ता० बाद होंगी।

१४ जनवरी शनिवार ८४ ई.

- ११
- सू. १०
- बु ९ गु शु
- १२
- ८ के
- श ७ सं
- १
- ६
- रा. २ चं
- ४
- ३
- ५

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति पौष सुदी ११ शनौ मकरेऽर्कः ३१ घ० २२ प० समये प्रविष्टः वारात् २ नक्षत्रात् ३ वृद्धावस्था बैठी मुहूर्ती ३० धान्यादि भावे समता, शनिवार में सक्रमण से राक्षसी संज्ञा होती है, वणिजकरण में भी अशुभफल करती है तथा अग्नि मण्डल में स्थिति इस सक्रान्ति की है सो भी अच्छी घटा-बढ़ी व्यापारिक जिन्सोंमेंरखकर तेजी करेगी। मिश्रा संज्ञक होने से कुछ हितकारी है। उत्तरदिशा में गमन है। श्वेतफल है, व्याघ्र वाहन, अश्व उपवाहन, कस्तूरी लेपन, श्वेत कंचुकी, चम्पा पुष्प धारण, पायस भक्षण।

मास भाग्यांक

बारह, पन्द्रह, बीस का,
नौ से करके भाग ॥
सात, एक और आठ हति,
जोड़ो देखो भाग्य ॥

१२ + १५ + २० ÷ ९
७ × १ × ८ ÷ २
२३ १२

भाग्यांक—०, ३, ४, १

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्त्री को वात रोग हो। राजपक्ष से हित हो। लाभ अच्छा प्राप्त होगा। यात्रा मे लाभ प्राप्त होगा। २, ५, १२, १३, २१, २६, २७ ता० नेष्ट हैं।

वृष शत्रु पर, रोग पर विजय। आमदनी अच्छी। व्यापार से लाभ। सन्तान सुख उत्तम। स्त्री सुख उत्तम। यात्रा से लाभ। शुभ काम में व्यय। ७, १६, १७, २२, २६, ८, २९ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन स्त्री सुख उत्तम। मानसिक स्वास्थ्य खराब। सन्तान से कष्ट। आर्थिक लाभ शुभ। राजपक्ष से हित। व्यय की अधिकता। ८, ९, १९, २०, २४, २५, ३० ता० नेष्ट हैं।

कर्क मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। ग्रह कलह हो। सन्तान के स्वास्थ्य में त्रुटि, फिर भी शत्रु पर विजय। यात्रा से हानि। ग्रह कलह से बचें। १, ३, ७, १०, ११, १३, १७ ता० नेष्ट हैं।

सिंह शत्रु पर, रोग पर विजय। भाई बन्धुओं से कलह। जमीन जायदाद से हित। सन्तान सुख उत्तम। आर्थिक लाभ उत्तम। यात्रा से लाभ। १२, १४, १५, १९, २२, २८, २९ ता० नेष्ट हैं।

कन्या शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम। धन लाभ हो। परिवार सुख उत्तम। सन्तान से हित हो। भाग्योदय हो। राजपक्ष से हित हो। यात्रा में लाभ। २, ४, ८, १२, १९, २३, २९ ता० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक स्वास्थ्य में त्रुटि। मानसिक चिन्ता अधिक। सन्तान सुख उत्तम। हानि कम, लाभ अधिक। राजपक्ष से हित। यात्रा से लाभ। ३, ५, ७, १३, १८, २७, २८ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक स्त्री स्वास्थ्य में त्रुटि, स्वयं का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सन्तान से सुख। राजपक्ष से हित हो। व्यापार रोजगार में लाभ हो। २, ६, ८, १४, १५, १९ ता० नेष्ट।

धन शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम। धन लाभ उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय। सन्तान से हित हो। राजपक्ष से भी हित हो। १, ४, ५, १६, २०, २२, २८ ता० नेष्ट हैं।

मकर शुभ कामों में व्यय की अधिकता हो। शारीरिक स्वास्थ्य कुछ खराब। सन्तान की तरफ से चिन्ता। राजपक्ष में झंझट होवे। यात्रा में लाभ। ३, ६, १३, १७, १८, २६, ३० ता० नेष्ट हैं।

कुंभ व्यय सामान्य हो। आमदनी अच्छी हो। राजपक्ष से हित हो तो भी चिन्ता बनी रहे। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। १, ३, १२, १५, २२, २३ ता० नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष से हित हो। मुकदमें में जीत हो। धन लाभ सही हो। रोग पर, शत्रु पर विजय होगी। पारिवारिक सुख उत्तम। मित्रों से हित हो। २, ४, ५, ७, ११, १४, २५, २६ ता० नेष्ट हैं।

फरवरी सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—

वसन्त पंचमी ७ ता० में, महा शिवरात्री व्रतम् २९ ता० को। मेला पूर्ण भक्त कासन ता० १६ को।

मिति माघ वदी मावस बुधवार संवत् २०४० वि० से फागुन वदी १३ बुधवार संवत् २०४० वि० तक। शकाब्दः १९०५, मुसलमानी २७ रविलाखर से २६ जमादिलावल सन् १४०४ हि० तक। भारतीय माघ १२ से फागुन १० तक।



वार २९	फरवरी सन् १९८४	रविलाखर १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय माघ	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिन-मान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त	
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	प्रारम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट
बुध	१	२७	१७	१२	३०	५५	५५	उ	१३	३	सि	३८	५५	म	५३/३०	—	—	२६	५०	६	३८	५	२२
गुरु	२	२८	१८	१३	१	५९	१०	श्र	१६	५०	व्य	४०	३६	कुं	—	—	—	२६	५१	६	३८	५	२१
शुक्र	३	२९	१९	१४	१	२	००	ध	२७	१४	व	४२	४५	कु	—	—	—	२६	५४	६	३७	५	२२
शनि	४	१	२०	१५	२	८	१८	श	३४	४६	प	४५	१०	कु	—	—	—	२६	५६	६	३६	५	२३
रवि	५	२	२१	१६	३	१४	५६	पू	४२	२७	शि	४७	१५	मी	२५/३१	४५/१०	—	२७	१	६	३५	५	२४
सोम	६	३	२२	१७	४	२१	२६	उ	५०	०१	सि	१८	१६	मी	—	—	२१/२५	२७	६	६	३५	५	२५
मंगल	७	४	२३	१८	५	२७	११	रे	५६	८	सा	५०	४४	मेषे	५३/८	—	—	२७	८	६	३४	५	२६
बुध	८	५	२४	१९	६	३२	४	अ	५९	५९	शु	५१	१४	मेषे	—	—	—	२७	१२	६	३३	५	२७
गुरु	९	६	२५	२०	७	३५	३०	अ	१	५०	शु	५०	३८	मेषे	—	३५/३१	—	२७	१६	६	३३	५	२७
शुक्र	१०	७	२६	२१	८	३७	३०	भ	५	४८	ब्र	४८	३९	वृषे	२१/२१	—	६/३१	२७	२०	६	३२	५	२८
शनि	११	८	२७	२२	९	३७	३१	कृ	७	५७	ऐं	४५	५	वृषे	—	—	—	२७	२३	६	३१	५	२९
रवि	१२	९	२८	२३	१०	३५	३२	रो	८	१५	वै	३९	४५	मि	३७/०	—	—	२७	२६	६	३२	५	३०
सोम	१३	१०	२९	२४	११	३१	३७	मृ	५	५०	वि	३३	१	मि	—	३/३४	३१/३६	२७	३०	६	३०	५	३०
मंगल	१४	११	३०	२५	१२	२५	३०	आ	२/५५	५४/३१	प्री	२४	५८	कर्क	४४/०	—	—	२७	३५	६	२९	५	३१
बुध	१५	१२	१	२६	१३	१८	६	पु	५०	५७	आ	१५	२१	कर्क	—	—	—	२७	३८	६	२८	५	३२
गुरु	१६	१३	२	२७	१४	९	१५	श्ले	४३	२५	सौ	४/५५	४९/६	सिं	४३/२५	६/१६	३४/२७	२७	४२	६	२७	५	३३
शुक्र	१७	१४	३	२८	१५/१	५०/४९	३५/४९	म	३५	२६	अ	४८	५५	सिं	—	—	—	२७	४५	६	२७	५	३३
शनि	१८	१५	४	२९	२	४०	१८	पू	२७	५५	सु	३२	६	कं	४१/६	—	—	२७	५०	६	२६	५	३४
रवि	१९	१६	५	३०	३	३१	३९	उ	२०	४६	धृ	२२	००	कं	—	५/५८	३१/४०	२७	५५	६	२५	५	३५
सोम	२०	१७	६	१	४	२४	१	ह	१५	५	शू	१२	५१	तु	४३/०	—	—	२७	५७	६	२४	५	३३
मंगल	२१	१८	७	२	५	१८	२	चि	१०	५४	गं	४/५५	५३/३२	तु	—	—	—	२७	५९	६	२४	५	३६
बुध	२२	१९	८	३	६	१३	५६	स्वा	८	२१	ध्रु	५३	३०	वृ	५२/४८	१३/२४	४२/३५	२८	५	६	२३	५	३७
गुरु	२३	२०	९	४	७	११	३५	वि	७	३६	व्या	५०	११	वृ	—	—	—	२८	१०	६	२२	५	३८
शुक्र	२४	२१	१०	५	८	११	५	अ	७	५३	ह	४८	५	वृ	—	—	—	२८	१४	६	२१	५	३९
शनि	२५	२२	११	६	९	१२	२९	ज्ये	११	५१	व	४७	१७	ध	११/५१	४३/५१	—	२८	१९	६	२०	५	४०
रवि	२६	२३	१२	७	१०	१५	१५	मू	१६	१८	सि	४७	५६	ध	—	—	१५/१५	२८	२१	६	२०	५	००
सोम	२७	२४	१३	८	११	१९	३०	पू	२१	५८	व्य	४८	५३	मेषे	३२/२६	—	—	२८	२५	६	१९	५	४१
मंगल	२८	२५	१४	९	१२	२४	३९	उ	२८	१५	व	५०	३२	म	—	—	—	२८	३०	६	१७	५	४३
बुध	२९	२६	१५	१०	१३	३०	४५	श्र	३५	३१	घ	५२	३२	म	—	३०/४४	—	२८	३५	६	१७	५	४६

त्यौहार व्रत

उत्सवादि ग्रह संचार व्यवस्था

- देव पितृ कार्य अमावस्या ×
- उपायां बुधः ७।५
- चन्द्र दर्शनम् पंचकारम्भः +
- मकरे बुधः ३७।१५ जमा-∠
- मूले ४ गुरुः ५५।३४
- धनिष्ठायां रविः २९।१ Ω
- बसन्त पंचमी
- विशाखायां भौमः १७।५७ ⇐
- श्रवणे बुधः ५४।७ →
- उपायां शुक्रः १५।३९
- कुम्भेऽर्कः ४।१६ (सौर ⊥
- मेला पूर्ण भक्त कासन
- शोभनयोगक्षयः ४६।१८ ∵
- गते रविः ४०।३७ △
- धनिष्ठायां बुधः ८।२३ ◻
- बुधास्तः पूर्वस्याम् %
- श्रवणे शुक्रः ३।२
- कुम्भे बुधः ५७।५८
- पूपा १ गुरुः १२।१७
- वक्री शनिः ६।५०
- विजया ११ व्रतं
- शते बुधः ११।४०
- प्रदोष व्रतं महा शिव-⇔

आकाशी शकुन विचार—७ ता० फरवरी बसन्त पंचमी में वर्षा होने से श्रावण में वर्षा की कमी होगी, मौसम साफ रहने से सुभिक्ष बनेगा वर्षा ऋतु में चौमासा अच्छा वर्षेगा। ता० १५ फरवरी में बुध पुष्य योग में वर्षा होने से चौमासा अच्छा वर्षेगा। सुभिक्ष का संचार बढ़ेगा। २१ ता० को बुधास्त होने के समय यदि औला वृष्टि हो तो १४१ दिन बाद की वर्षा ऋतु में बाधा पड़ेगी। वर्षा का गर्भ खण्डित हो जायेगा।

आकाशी लक्षण—बादल वर्षा के जहां-तहां योग अच्छे बनेंगे बुधास्त के समय बिना उपद्रव हुवे वर्षा की संभावना कम रहेगी।

× द्वापरयुगादि, + १३।२३, ∠ दिलावल ५, Ω (सौर ३४।१९), ⇐ भानुसप्तमी-पातस्पर्श ३/३ पातमोक्षः ५७।१७ मन्वादि, ← भीष्माष्टमी, ⊥ ८।१६) मकरे शुक्रः ४/५ जया ११ व्रत संक्रान्ति पुण्यम् ∵ माघ स्नान पूर्ति पूर्णिमा व्रतं, मेला पूर्ण भक्त कासन △ (सौर ४३।३८) चतुर्थी व्रतम्, राष्ट्रीय फाल्गुनारम्भः, % १३।३७ वृद्धि योगक्षयः ५३।३३, ⇔ रात्री व्रत स्यातनां।



फरवरी सन् 1984 ई० का मासिक भविष्यफल

इस मास का फल ग्रह दशा के हिसाब से शुभ सूचक है। बुध ग्रह शनि क्षेत्र में शनि मंगल के योग से व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा-बढ़ी होगी। दक्षिणी प्रान्तों में विग्रह होवे। राजनैतिक गतिविधि नेष्ट होवे। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर आदि धान्य अच्छी घटा-बढ़ी के साथ मन्दी का रुख बनावेंगे। प्राय: सभी धान्यों में ४) ५) रु० की मन्दी बन जानी संभव होगी। सरसों, अलसी, अरंडी में भी रुख मन्दी का होवे। तिल, तेल. घृत में घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख रहेगा। किराना की जिन्सों में जीरा, धनिया, हल्दी, मुनक्का, मसाले के भावों में भी घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख रहेगा। शनि मंगल के योग का प्रभाव वर्षा, वायु, प्रकोप संभव है। संक्रान्ति का प्रभाव कुछ हित में जायेगा। १४ ता० से १७ ता० तक सोना, चांदी, धातुबाने में बहुत अच्छी तेजी की ग्रह चाल है। मकर राशि में शुक्र कहीं-कहीं फसल को हानि करेगा (मकरे च यदा शुक्र: सर्वसस्यविनाश कृत। जायतेऽन्न महर्घाणि नाऽत्र कार्या विचारणा) अत: मकर के शुक्र का प्रभाव कुछ खेती को जहां तहां हानिकारक रह सकता है।

संक्रान्ति प्रवेश फल

१३ फरवरी सोमवार ८४ ई.

१२ | १० बु. शु | ११ सू. | १ | गु ९ | २ रा. | ८ के | ३ चं. | ५ | ७ श मं | ४ | ६

मिति माघ शुक्ल ११ सोमवार ता० १३ फरवरी कुम्भेऽर्क: ४ घ० १६ प० समये प्रविष्टा प्रथम वारात् ३ नक्षत्रात् ३ वृद्धावस्था (बैठी) मुहूर्ती ३० धान्याभाव सम रखती है किराना तेज हो, रोग व्याधि का नाश हो, मृगशिरा नक्षत्र फल शुभ है। विष्कुम्भ योग होने से सुवृष्टि बने, विष्टिकरण से कहीं-कहीं रोगोपद्रव हो। दिन के प्रथम पहर में संक्रान्ति लगी है, राजाओं में विग्रह का डर हो। वायु मण्डल की यह संक्रान्ति है। आंधी, तूफान, वायु प्रकोप होवे। ध्वांक्षी संज्ञा है। दक्षिण दिशा में भय हो। अन्य देशों में हित करे, उत्तर दिशा में गमन शुभ है। श्वेत फल हस्ता, व्याघ्रवाहन, अश्व उपवाहन, पींतवस्त्र, गुलाबी कंचुकी पायस भक्षणं।

मास भाग्यांक

चौदह तेरह तेईस के,
जोड़ में बारह भाग।
छक्के दो के तीन गुणन,
जोड़ो बनेगा भाग्य ॥

१४ + १३ + २३ ÷ १२

६ × २ × ३ + २

= ३५ — २३

भाग्यांक १, ३, ५, २

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम। पारिवारिक सुख उत्तम। यात्रा से लाभ। रोजगार से हित होगा। सन्तान से दुख। १, ५, ७, १८, १९, २५, २६, ता० नेष्ट हैं।

वृष राजपक्ष से हित हो। धन-लाभ के संयोग बढ़े। शत्रु पर, रोग पर विजय होवे। स्त्री सुख उत्तम हो। रोजगार से हित हो। ग्रह कलह से बचें। २, ४, ८, १६, १७, २३, २८ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन आर्थिक लाभ अच्छा हो। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा हो। परिवार सुख उत्तम हो। स्त्री सुख ठीक, सन्तात स्वास्थ्य से चिन्ता। ३, ५, ६, १३, १४, १८, २२ ता० नेष्ट हैं।

कर्क खर्चा अधिक हो। जमीन जायदाद में झंझट हो। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। यात्रा से लाभ हो। स्त्री सुख, परिवार सुख उत्तम। १, ४, ७, १७, १९. २३, ता० नेष्ट हैं।

सिंह स्त्री के स्वास्थ्य में खराबी। स्वयं का स्वास्थ्य मध्यम। परिवार सुख उत्तम। व्यापार से लाभ। राजपक्ष में विजय। गुप्त चिन्ता बनी रहे। ३, ६, १०, ११, १८, २३ ता० नेष्ट हैं।

कन्या सन्तान की तरफ से हित हो। स्त्री सुख उत्तम रहे। स्वास्थ्य ठीक रहे। मुकदमें में जीत। यात्रा में बाधा। आर्थिक लाभ में रुकावट। २, ७, १३, १७, २३, २६, २७ ता० नेष्ट।

तुला शनि मंगल का योग स्वास्थ्य में खराबी करे। मानसिक चिन्ता बनी रहे, फिर भी सुख में कोई बाधा न हो। बृहस्पति शुभ है। शत्रु पर विजय हो। १, ८, १२, २२, २६ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक खर्चा ज्यादा हो। व्यर्थ में व्यय होवे। चिन्ता बनी रहे। परिवार में हित हो। लाभ बना रहे। रोजगार से हित हो। २, ३, ५, १४, २५ ता० नेष्ट हैं।

धन स्वास्थ्य उत्तम रहे। धन लाभ भी ठीक हो। स्त्री सुख उत्तम रहे। मुकदमें में जीत [illegible] सन्तान से हित। बृहस्पति का [illegible] श्रेष्ठ है। यात्रा से लाभ हो। ४, [illegible] ८, १३, २२, २३ ता० नेष्ट हैं।

मकर शुक्र बुध का योग स्वास्थ्य ठीक रखेगा। शुभ कार्यों में व्यय अवश्य ही होगा। स्त्री सुख, सन्तान सुख उत्तम है। राजपक्ष से हित हो। २, ५, ७, १४, २१, २८ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ भाग्य वृद्धि हो। आर्थिक लाभ रहेगा। राज से हित हो। लाभ के सयोग ठीक बने रहेंगे। काली वस्तु, रसादि पदार्थ लाभ देंगे। यात्रा से हित होगा। २, ६, ८, १३, २० २६ ता० नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष से बृहस्पति ग्रह बहुत हितकारी है। आमदनी ठीक रहेगी। पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। शारीरिक तथा मानस्वास्थ्य उत्तम रहेगा। २, ७, ९, १०, १४, १५, २२, २३ ता० नेष्ट।

मार्च सन् 1984 ई० मुख्य त्योहार — महाशिव रात्रि व्रत ता० १ मार्च गुरुवार, होलिका दहन ता० १६ मार्च शुक्रवार,

मिति फाल्गुन वदी १४ गुरुवार संवत् २०४० वि० से चैत वदी १४ शनिवार सवंत् २०४० वि० तक। शकाब्द: १९०५। जमादिलावल २७ से जमादिलाखर २७ सन् १४०४ हि० तक। भारतीय फाल्गुन ११ से भारतीय चैत्र ११ तक।

वार ॥	मार्च सन् १९८४	जमादिलाखर १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय फाल्गुन	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्योहार-व्रत गृह संचारादि व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	आरम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
गुरु	१	२७	१७	११	१४	३६	३९	ध	४२	४८	शि	५४	३५	कुं	६/१२	—	३/४२	२८	३८	६	१६	५	४४	महाशिव रात्रि व्रतं वैष्णवानां
शुक्र	२	२८	१८	१२	३०	४३	१२	श	५०	३२	सि	६०	०	कुं	—	—	—	२८	४३	६	१६	५	४४	देव पितृ कार्येऽमावस्या
शनि	३	२९	१९	१३	१	४९	२७	पू	५७	५६	सा	५९	१८	मी	४१/५	—	—	२८	४५	६	१५	५	४५	पूभाया रविः ५६।४२→
रवि	४	३०	२०	१४	२	५५	३५	उ	५९	५९	शु	५९	५९	मी	—	—	—	२८	५१	६	१५	५	४५	चन्द्रदर्शन फुलरिया २
सोम	५	१	२१	१५	३	५९	५९	उ	५	६	शु	१	३	मी	—	—	—	२८	५५	६	१३	५	४७	जमादिलाखर
मंगल	६	२	२२	१६	३	१	९	रे	११	३२	शु	२	६	मेषे	१२/०	३३/३०	—	२८	५८	६	१२	५	४८	पूभायां बुधः १५।१ पात +
बुध	७	३	२३	१७	४	५	५४	अ	१७	२०	वृ	३	२२	मेषे	—	—	५/१३	२९	१	६	१२	५	४८	वृश्चिके भौमः ५४।३३
गुरु	८	४	२४	१८	५	९	२७	भ	२२	०	ऐं	४	२७	वृषे	३७/५१	—	—	२९	५	६	११	५	४९	
शुक्र	९	५	२५	१९	६	११	५६	कृ	२५	२४	व	२	२९	वृषे	—	—	—	२९	१०	६	१०	५	५०	कुम्भे शुक्रः १७।३
शनि	१०	६	२६	२०	७	१३	०	रो	२७	६	वि	१/०	५५/४२	मि	५७/१५	१३/४८	४२/२८	२९	१५	६	९	५	५१	प्रीतियोगक्षयः ५५।४१
रवि	११	७	२७	२१	८	१२	८	मृ	२७	२०	आ	५१	४७	मि	—	—	—	२९	२०	६	८	५	५२	मीने बुधः २४।३३ ×
सोम	१२	८	२८	२२	९	५	३९	आ	२६	०	सौ	४५	१६	मि	—	—	—	२९	२३	६	७	५	५३	
मंगल	१३	९	२९	२३	१०/११	४२/४५	१६/४५	पु	२२	४२	शो	३७	३९	कर्के	८/२९	—	—	२९	२६	६	७	५	५३	मीनेऽर्क ५७।५८ (सौर ÷
बुध	१४	१०	३०	२४	१२	५१	५५	पु	१७	३६	अ	२८	३२	कर्के	—	—	—	२९	३२	६	६	५	५४	आंवलो ११ व्रत वैष्णवानाम्
गुरु	१५	११	१	२५	१३	४३	१८	श्ले	११	१५	सु	१८	३९	सिं	११/१५	—	—	२९	३५	६	५	५	५५	शते शुक्रः २६।२ प्रदोष व्रतम्
शुक्र	१६	१२	२	२६	१४	३३	४३	म	४/९	५२/९	धृ	७/५५	४९/१	सिं	—	३३/४२	४५/४४	२९	४०	६	४	५	५६	होलिका दहन भद्रा उपः∵
शनि	१७	१३	३	२७	१५	२३	४५	उ	४८	२३	गं	४५	५५	कं	९/१९	—	—	२९	४३	६	३	५	५७	उभायां रविः १८।४३ ∠
रवि	१८	१४	४	२८	१	१४	६	ह	४१	६	वृ	३५	४०	कं	—	—	—	२९	४९	६	२	५	५८	वसन्त १
सोम	१९	१५	५	२९	२/३	५/५२	१९/२०	चि	३५	०	ध्रु	२६	२	तु	८/३७	३१/२३	५१/३३	२९	५०	६	१	५	५९	रेवत्यां बुधः ४५।२६
मंगल	२०	१६	६	३०	४	५१	२९	स्वा	३०	३१	व्या	१७	५१	तु	—	—	—	२९	५८	६	०	६	०	चतुर्थी व्रतं रोहिणी २△
बुध	२१	१७	६	१	५	४७	३२	वि	२७	५५	ह	१०	१०	वृ	१३/३४	—	—	३०	१	६	०	६	०	राष्ट्रीय चैत्रारम्भः
गुरु	२२	१८	७	२	६	४५	३९	अ	२६	८	व	६	१०	वृ	--	४५/३८	—	३०	६	६	५९	५	१	बुधोदयःपश्चिमायां ३।३८
शुक्र	२३	१९	८	३	७	४६	०	ज्ये	२८	५०	सि	२	४८	ध	२/५०	---	१५/४८	३०	१०	६	५८	५	२	अनुराधायां भौमः १७।५८∅
शनि	२४	२०	९	४	८	४८	७	मू	३२	१५	व्या	१	०	ध	—	—	—	३०	१४	६	५७	५	३	
रवि	२५	२१	१०	५	९	५२	१	पू	३७	१८	व	१	६	म	५१/५३	—	—	३०	१८	६	५६	५	४	पूभायां बुधः ३।५०
सोम	२६	२२	११	६	१०	५७	९	उ	४३	१६	ध	१	३८	म	—	२४/३४	४७/८	३०	२३	६	५५	५	५	
मंगल	२७	२३	१२	७	११	५९	५९	श्र	५१	०	शि	३	२६	म	—	—	—	३०	२६	६	५५	५	५	अश्विनी मेषे बुधः ८।४⇐
बुध	२८	२४	१३	८	११	३	२०	ध	५८	२४	सि	५	४२	कुं	३४/४२	—	—	३०	३०	६	५४	५	६	पापमोचनी व्रतं वैष्णवानाम्
गुरु	२९	२५	१४	९	१२	९	३३	श	५९	५९	सा	८	१३	कुं	—	१९/२	२६/३०	३०	३६	६	५३	५	७	प्रदोष व्रतं
शुक्र	३०	२६	१५	१०	१३	१६	१	श	६	८	शु	१०	३०	मी	३६/३२	—	—	३०	३९	६	५२	५	८	रेवत्यां रविः ४६/२६ %
शनि	३१	२७	१६	११	१४	२३	०	पू	१३	३०	ब्र	१४	२२	मी	—	—	—	३०	४५	६	५१	८	९	

आकाशी शकुन विचार—ता० ५ मार्च सोमवार में उत्तराषाढ़नक्षत्र का होना सुभिक्षकारी है। वर्षा ऋतु में वर्षा के योग अच्छे बनेंगे। १० मार्च रोहिणी में वर्षा का गर्भ होना श्रेष्ठ होगा। १६ मार्च शुक्रवार को दिन होलीका दहन शुभ है। १८ मार्च से लेकर ३१ मार्च तक पवन शुभ सामान्य रहनी चाहिए। "मृदुल शुभपवनाः शस्ताः" शुभ मृदुल वायु का विचार सुभिक्ष करेगा। आंधी कंकड का आना अशुभ शकुन जाने।

आकाशी लक्षण—चैत्र वदी पक्ष में वायु का वेग ज्यादा बढ़ेगा, कहीं कहीं वर्षा बादल भी संचार में आवेंगे। ओला कंकरी भी कहीं-कहीं संभव होगी यदि ऐसा हुआ तो कुछ सुभिक्ष में बाधा पड़ेगी।

←(सौर ५८।२५) धनिष्ठायां शुक्र ४३/४५, +स्पर्शः ४/१३ पातमोक्षः १९/४, ×होलाष्टकम्, ÷४८/५५) उभायां बुधः १३/२६ आमला ११ व्रतं स्मार्तानाम्, Σसंक्रान्ति पुण्यम्, ∵पूर्वाफाल्गुनीक्षयः ५२/५ मूल योग क्षयः ४९/०, ∠(सौर १९।२१) पूषायां २ गुरुः ३७।३८। △राहु अनुराधा ४ केतुः ३५/१०, ∅शीतलाष्टमी. ⇐पापमोचनी ११ व्रतं स्मार्तानाम्, %(सौर ४६।२६) वक्रीभौमः ३२/२९,

मार्च सन् 1984 ई० का मासिक भविष्यफल

यह मास सामान्यतः तेजीकारक, त्रुटिकारक रहेगा। मंगलवार को पूर्ण संक्रान्ति का फल तेजीकारक ही होता है। "भौम यदा संक्रमते हिभानु:। तदा महर्घं कुरुते पृथिव्याम्, क्षारं तिलास्तैल-रसास्तथर्वे धूम्रं भण्डानि महर्घ-तांच" अतः रसादि पदार्थों में गल्ला तिलहनों में तेजी के योग बनेंगे। खाण्ड, गुड़, शक्कर, घृत, तेल वेजिटेबिल आयल तेज हो जायेगा। गेहूं, चना, मोटे अनाज में ४) ५) रु० गुड़, शक्कर, देशी खाण्ड में भी ५) ६) रु० की तेजी आयेगी सरसों, अलसी, अरण्डी में ५) ६) रु० की तेजी होवे। संक्रान्ति के बाद सोना, चांदी, धातुवाने में तेजी अच्छी हो। किराने की वस्तुओं में बादाम, मुनक्का, चिरौंजी वगैरह में भी अच्छी तेजी हल्दी में हो, पीतल, जस्ता, तांबा, लोहा भी तेज होवे। १४, १५ ता० तक ऊपर की सभी जिन्सों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ मन्दी का रुख बनेगा। मन्दी में माल खरीद करना अच्छा रहेगा। संक्रान्ति लगने पर तेजी की ग्रह चाल बनेगी। दुर्भिक्षदा विविध विग्रहकारिकाऽपि, धान्या-दिकं भवति पूर्णतया महर्घम्। यह संक्रान्ति इस मास में सभी प्रकार की व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ परिणाम तेजी में ही लावेगी। रसादि पदार्थों का स्टाक लाभकारी रहेगा। १५ ता० तक स्टाक करें बाद में लाभ हो।

१३ मार्च मंगलवार ८४ई

१ | सू. | ११ शु. | २ रा. | १२ बु. | १० | ३ | ९ गु. | ४ च. | ६ | ८ के. सं. | ५ | ७ श.

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति फाल्गुन शुक्ल दशमी मंगलवार मीन संक्रान्ति प्रथम वारात् ३ नक्षत्रात् ४ वृद्धावस्था (बैठी) ३० मुहूर्ती का धान्य भाव सम रखती है। प्रातःकाल भूखी बैठी है। मंगलवार में बैसे लगी है अतिगण्ड में भयङ्कर उपद्रव कराती है। प्रातःकाल के समय भूखी संक्रान्ति रोग शोककारी प्रजा में हो, मंहगाई बढ़ावे। अग्नि मण्डल में संक्रान्ति का बासा है। धान्य, तिल, तेल तेज हो। महोदरी संज्ञा है, कष्टकारी तेजी कारक है, गमन पश्चिम दिशा में, संक्रान्ति के हाथ में लाल फल है, क्षति पहुंचाता है। महिष वाहन उष्ट्र उपवाहन भय नहीं, श्याम वस्त्र कंचुकी, गोरोचन लेपन गोमेद भूषण धारण है, पायस भक्षण रसादि पदार्थ तेज।

मास भाग्यांक

उन्नीस, अठारह तीन के,
जोड़ में तेरह भाग ॥
छक्का, तीजा दो गुणा।
चार जोड़ से भाग्य ॥

१९ + १८ + ३ ÷ १३

६ × ३ × २ ÷ ४

६५ — १४

भाग्यांक ३, ४, ५, ६

मेष शुभ कामों में व्यय की अधिकता। आमदनी भी अच्छी होगी। वायु विकार हो। मानसिक चिन्ता बनी रहे। राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ। १, ७, ९, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह शारीरिक स्वास्थ्य में बाधा। स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहे। सन्तान से हित बुद्धि शुद्ध रहेगी। शत्रु, रोग पर विजय होगी। रोजगार से हित होगा। ३, ७, १२, १८ ता० नेष्ट हैं।

धन धन में बृहस्पति गृह शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रखेगा। धन लाभ उत्तम। परिवार सुख उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। लाभ के संयोग रहे। ५, ८, १२, १९, २१ ता० नेष्ट हैं।

वृष आमदनी अच्छी हो शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। राजपक्ष से हित हो। शत्रु पर रोग पर विजय हो। स्त्री के स्वास्थ्य में त्रुटि हो। २, ६, १०, १४, २४ ता० नेष्ट हैं।

कन्या स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य में कुछ त्रुटि हो। सन्तान सुख उत्तम। पारिवारिक झंझट हो। गृह कलह से बचें। २, ६, १३, १९, २३ ता० नेष्ट हैं।

मकर शनि ग्रह उच्च का है राजपक्ष में हितकारी है। बारहवें बृहस्पति शुभ कामों में अधिक व्यय करायेगा। आमदनी होती रहेगी। ६, ९, १६, २२, २६ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन व्यापार से लाभ, शारीरिक स्वास्थ्य ठीक। स्त्री सुख उत्तम। सन्तान से हित। आमदनी अच्छी हो। शत्रु पर, रोग पर विजय। यात्रा से लाभ। ३, ५, ७, ११ १५ २७ ता० नेष्ट हैं।

तुला तुला में शनि वात दोष करेगा। धन लाभ में कुछ विलम्ब हो। मित्रों से लाभ हो। सन्तान से हित होगा। शत्रु पर, रोग पर विजय होगी। रोजगार ठीक चलेगा। ता० ३, ८, १४, २२ नेष्ट।

कुंभ कुंभ का भी मालिक है। राजपक्ष से हित। भाग्य वृद्धि करे। बृहस्पति आमदनी अच्छी देगा। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। वायु विकार संभव होगा। ४, ७, १०, १३, २१, २३ ता० नेष्ट हैं।

कर्क शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम। जमीन जायदाद में कुछ झंझट। सन्तान के स्वास्थ्य में त्रुटि। शत्रु पर, रोग पर विजय। भाग्योदय ठीक रहेगा। २, ६, ८, १२, १६, २८ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। धन लाभ बराबर होता रहेगा। सुख सुविधा ठीक रहे। सन्तान से भी हित हो। ४, ९, ११, २२ ता० नेष्ट हैं।

मीन मीन का ग्रह बृहस्पति राजपक्ष से हितकारी है। रोजगार उत्तम रहेगा। अष्टम शनि कुछ चिंता भी करेगा। सन्तान से हित होगा। आमदनी ठीक रहेगी। ५, ८, ९, १३, २१ ता० नेष्ट हैं।

अप्रैल सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—

सिंधारा ता० ३ मंगलवार, श्रीरामनवमी ता० १० मंगलवार, हनुमान जयन्ती ता० १५ दिन रविवार को।

मिति चैत्र कृष्णा ३० रविवार सम्वत् २०४० वि० से वैशाख कृष्णा १४ सोमवार सम्वत् २०४१ वि० तक, शकाब्दः १९०६; जमादिलाखर २८ हि० से रज्जब २७ हि० सन् १४०४ हि० तक। भारतीय चैत्र १२ से भारतीय वैशाख १० तक।

वार	अप्रैल सन् १९८४	रज्जब हि० १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय चैत्र	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्यौहार व्रत / उत्सवादि ग्रह संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	प्रारम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
रवि	१	२८	१७	१२	३०	२८	३८	उ	२०	२५	ब्र	१४	२०	मी	—	—	—	३०	४९	६	५०	६	१०	मन्वादि केतकी अहगर्णः ४/१४
सोम	२	२९	१८	१३	१	३३	३४	रे	२६	३१	ऐं	१६	३९	मेषे	२६/३१	—	—	३०	५३	६	२५	६	३५	नूतन ईश्वरनाम +
मंगल	३	३०	१९	१४	२	३७	३९	अ	३२	५०	वै	१६	१०	मेषे	—	—	—	३०	५६	६	२१	६	४३	सिंधारा चन्द्र दर्शनं
बुध	४	१	२०	१५	३	४०	३५	भ	३६	१५	वि	१६	०	वृषे	२७/१७	—	—	३०	३१	६	२०	६	४५	मत्स्यजयन्ती गणगौरी △
गुरु	५	२	२१	१६	४	४२	३४	कृ	३९	३१	प्री	१४	५०	वृषे	—	११/७	२३/३०	३१	३	६	१९	६	४५	उभायां शुक्रः १४।१८
शुक्र	६	३	२२	१७	५	४३	११	रो	४१	५२	आ	१३	१	वृषे	—	—	—	३१	८	६	१८	६	४५	
शनि	७	४	२३	१८	६	४२	४६	मृ	४२	४१	सौ	१०	२२	मि	११/२६	—		३१	१३	६	१७	६	४४	
रवि	८	५	२४	१९	७	४०	५२	आ	४२	४२	शो	६	२४	मिं	—	२२/५०	—	३१	१६	६	१६	६	४६	भरण्यां बुधः ९।४६
सोम	९	६	२५	२०	८	३७	३९	पु	४१	२६	अ	२/५६	३५/३२	कर्कं	१७/१०	—	१०/१७	३१	२०	६	१५	६	४७	
मंगल	१०	७	२६	२१	९	३३	१४	पु	३८	५५	धृ	४८	२०	कर्कं	—	—	—	३१	२५	६	१५	६	४८	श्री रामनवमी
बुध	११	८	२७	२२	१०	२७	२९	श्ले	३३	२०	शू	४०	३०	सिं	३३/२०	२७/३	—	३१	२७	६	१४	६	४७	
गुरु	१२	९	२८	२३	११	२०	२०	म	२८	४१	गं	३१	३०	सिं	—	—	१४/३७	३१	३२	६	१३	६	४९	वक्री अश्वि भे बुधः %
शुक्र	१३	१०	२९	२४	१२	१२	२८	पू	२२	३६	वृ	२१	५०	कं	२७/५४	—	—	३१	३७	६	११	६	४९	अश्विने मेषेऽर्कः १४।२२ ♌
शनि	१४	११	३०	२५	१३/१४	४/५५	२५/२१	उ	१६	१५	ध्रु	११	४०	कं	—	२८/३८	—	३१	४०	६	१०	६	४९	
रवि	१५	१२	१	२६	१५	४६	२७	ह	८	५०	व्या	१/५२	१६/४७	तु	२०/४५	—	१४/५३	३१	४३	६	८	६	५०	हनुमज्जयन्ती पूर्णिमाव्रतम्
सोम	१६	१३	२	२७	१	३८	२०	चि	२/५७	२३/९	व	४२	५०	तु	—	—	—	३१	४६	६	८	६	५०	रेवत्यां शुक्रः १०।३ ∠
मंगल	१७	१४	३	२८	२	३१	२५	वि	५२	४२	सि	३४	५३	वृ	२२/०	२६/५४	—	३१	५२	६	८	५	५२	
बुध	१८	१५	४	२९	३	२६	०	अ	५०	२०	व्य	२८	२३	वृ	—	—	१५/४३	३१	५५	६	५	६	५१	चतुर्थी व्रतं
गुरु	१९	१६	५	३०	४	२२	२१	ज्ये	४९	३	व	२३	३९	ध	४९/३	—	—	३१	५९	६	५	६	५२	सायन वृषेऽर्कः २७।३२ ⇐
शुक्र	२०	१७	६	३१	५	२१	१०	मू	५१	४६	प	२०	२४	ध्र	—	—	—	३२	३	६	४	६	५३	वक्रीविशाखायांभौमः १०।२७
शनि	२१	१८	७	१	६	२२	०	पू	५५	४२	शि	१९	४	ध	—	१५/११	१७/५७	३२	७	६	४	६	५३	राष्ट्रीय वैशाखमासारम्भः
रवि	२२	१९	८	२	७	२५	०	उ	५९	५९	सि	२०	२९	म	११/२९	—	—	३२	१०	६	२	६	५३	
सोम	२३	२०	९	३	८	२९	२५	उ	१	१०	सा	२०	४८	म	—	—	—	३२	१५	६	०	६	५५	पंचकारम्भः २३।२०
मंगल	२४	२१	१०	४	९	३५	१०	श्र	८	३०	शु	२२	११	कुं	२३/२१	—	—	३२	१७	०	०	६	५५	
बुध	२५	२२	११	५	१०	४१	११	ध	१५	४७	शु	२४	२८	कुं	—	९/४५	२२/५६	३२	२१	५	५९	६	५५	
गुरु	२६	२३	१२	६	११	४७	४५	श	२३	३५	ब्र	२७	६	कुं	—	—	—	३२	२६	५	५८	६	५७	वरुथिनी एकादशी व्रत ⇔
शुक्र	२७	२४	१३	७	१२	५३	४०	पू	३०	५८	ऐं	२९	२५	मी	१२/८	—	—	३२	२९	५	५७	६	५७	भरण्यां रविः ६।१६ △
शनि	२८	२५	१४	८	१३	५९	२०	उ	२७	५०	वै	३१	१८	मी	—	३०/१२	—	३२	३३	५	५६	६	५७	वक्री गुरुः २४।४८ प्रदोषव्रतं
रवि	२९	२६	१५	९	१४	५९	५९	रे	४३	४०	वि	३२	१५	मेषे	४३/४८	—	१९/२	३२	३७	५	५५	६	५८	पंचक समाप्त २३।५६
सोम	३०	२७	१६	१०	१४	३	२८	अ	४८	२५	प्री	३२	२५	मेषे	—	—	—	३२	४१	५	५४	६	५८	पूर्वोदयं बुधः २०।१२

आकाशी शकुन विचार—अप्रैल मास नवरात्रों में बादल वर्षा की संभावना कम है। सूर्य शुक्र का योग महा शुभ चल रहा है। १२, १३ अप्रैल को बुध अस्त हो रहा है। बिना उपद्रव किये अस्त नहीं होगा। बादल वर्षा की संभावना है। सोना, चांदी धातुवाले में तेजियां बनेंगी। धान्य भाव सम रहेंगे। १६ ता० रेवती में शुक्र वर्षा का योग देगा। कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी।

आकाशी लक्षण—१ ता० से १५ ता० तक कहीं-कहीं बादल होंगे। वर्षा की संभावना कम होगी। वायु वेग रहेगा। मेष की संक्रान्ति में वायु ज्यादा चलेगी। मौसम परिवर्तित होगा।

+ सम्वत्सरारम्भः नवरात्रारम्भः घटस्थापनम्, ⊥ मु.मास रज्जब ७, % १८।५८ कामदा ११ व्रतं सर्वेषाम्, ♌ (सौर ४/१४) बुधास्तः पश्चिमे १९/१६ प्रदोषव्रतं पात १०।१२, ∠ जन्म दिन हजरतअली, ⇐ ग्रीष्म ऋतुरारम्भः ⇔ सर्वेषाम्, △ (सौर ७।१२) अश्विनी मेषे शुक्रः ४/३।

इस मास में २ ता० को नया सम्वत्सर २०४१ का श्री गणेश सोमवार दिन से हो रहा है। राजा चन्द्रमा तथा मंत्री शुक्र ये अधिकारी सम्वत्सर के उत्तम अधिकारी बन रहे हैं। सुभिक्ष का संचार रहेगा। राजनैतिक वातावरण ठीक रहेगा। गेहूं, चना, जौ, मटरा, मोटा अनाज मन्दा होगा। ५) ६) रु० की मन्दी बन जानी संभव है। सरसों, अलसी, अरण्डी, पाट, बारदाना तेज होगा, खरीदना अच्छा है। सोना, चांदी, धातुवाने में अच्छी तेजी के योग हैं। रुई, कपास, सूत, वस्त्रादि तेज होंगे। किराने की वस्तुओं में बादाम, हल्दी, छुआरे, किशमिश की मांग बढ़ेगी, रुख तेजी का होगा। संक्रान्ति लगने तक १३ अप्रैल तक मन्दी के झोकों में ऊपर की जिन्सें खरीदनी अच्छी हैं। मास के उत्तरार्ध में तेजियां बढ़ेंगी, "यदा मेषे स्थितो भानुः फलं तूलतिलादिकं। ईक्ष्वादि तिल तेलादिस्तदा चैव महर्घता" खांड, गुड़, शक्कर, चीनी भी तेज होंगी। व्यापारिक जिन्सों में अच्छे लाभ के संयोग बनेंगे। शनि ग्रह लोहे की वस्तुओं में स्टील एवं सरिया वगैरह में तेजी का योग लायेगा।

नोट – धातुवाना, लोहा, स्टील, इण्डस्ट्रियल आयरन, शेयर्स तेज हो जायेंगे। खरीदकर बेचने वाले व्यापारी लाभ उठावेंगे। गल्ला, तिलहन भी हर घटे भाव खरीद करें, वर्ष में उत्तम लाभ होगा।

१३ अप्रैल शुक्रवार ८४ ई.

रा २ | १२ शु | बु १ सू | ३ | ११ | ४ | १० | चं ५ | ७ श. | ९ बृ | ६ | ८ के मं

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति चैत्र शुक्ल १२ शुक्र दिने मेष संक्रान्ति प्रवेश कालः, वार ३ नक्षत्र ४ वारनाम मिश्रा, पशु पालकान् सुखदा, नक्षत्र नामघोरा, शूद्राणां सुखकरी, मध्याह्न व्यापिनी, विप्रान् कष्टदा, कौलव करणे प्रविष्ठाद्यतः अतोऽस्यावाहनं वराहः, हरित्वस्त्रम्, खड्गायुधम्, भिक्षान्न-भक्षणम्, चन्दन लेपनम्, सर्प जातिः, मौलसरी पुष्पम्, ताम्र पात्रम्, किशोरी-अवस्था (ऊभी) मूहूर्ती ३० शुक्रोदय पूर्वे।

मास भाग्यांक

तेरह-ग्यारह सात में
राम-राम का भाग।
वसुनेत्र-पंचम गुणा—
जानो भाग्य का राग ॥

१३ × ११ × ७ ÷ २३
---
८ × २ × ५
= ६३ – १४
भाग्यांक ४, ५, ७, ८

मेष मंगल ग्रह अपने घर का है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सूर्य बली है, यश बढ़ेगा। शुभ कार्यों में खर्च होगा। आमदनी अच्छी होगी। सन्तान से हित होगा। मास की १, ४, ८, १०, २२, २८ ता० नेष्ट हैं।

सिंह शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारिक सुख सामान्य, सन्तान का हित रहेगा। शत्रु पर, रोग पर विजय रहेगी। यात्रा से लाभ। मास की ३, ८, १३, २३, २६ ता० नेष्ट हैं।

धन बृहस्पति स्वास्थ्य उत्तम रखेगा। यश मान प्रतिष्ठा भी देगा, खर्चा भी काफी होगा, राज पक्ष बहुत उत्तम है। सन्तान से हित हो। यात्रा से लाभ। मास की १, ६, ८, १३, २३, १७ ता० नेष्ट है।

वृष स्वास्थ्य उत्तम, स्त्री के स्वास्थ्य में बाधा। भाग्योदय श्रेष्ठ। रोजगार लाभकारी। शत्रु पर रोग पर विजय, सन्तान से हित, यात्रा से लाभ। मास की २, ६, ९, १३, २३, २८ ता० नेष्ट हैं।

कन्या शारीरिक स्वास्थ्य में बुध ग्रह सूर्य के साथ अष्टम घर में त्रुटि लायेगा सावधानी रखें। धन लाभ में भी बाधा हो। सन्तान सुख उत्तम है। मास की ४, ९, १२, २४ २६, २८ ता० नेष्ट हैं।

मकर शनि ग्रह राज पक्ष के लिये काफी हितकारी है। स्वास्थ्य में सुधार हो। व्यय की अधिकता शुभ कार्यों में हो, सुख-सुविधाएँ प्राप्त हों। मास की ३, ७, ९, १४, २४ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन आर्थिक लाभ अच्छा, खर्चा भी काफी हो। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे, जमीन-जायदाद से हित हो। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। मास की ३, ८, ११, १४, २४ ता० नेष्ट हैं।

तुला वायु विकार शनि करेगा। धन लाभ में झंझट होने पर भी लाभ होगा। भाई-बन्धुओं से हित होगा। सन्तान से भी हित होगा, स्त्री से सुख होवे। मास की ५, ७, १३, २५, २७ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ शनि की चाल उत्तम है, भाग्य वृद्धि करेगा, लाभ में गुरु ग्रह उत्तम लाभ देगा। धन वृद्धि होगी। कैश में वृद्धि खूब है। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। मास की ४, ५, ६, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

कर्क धन लाभ उत्तम। परिवार सुख उत्तम। शत्रु, रोग पर विजय, जमीन-जायदाद गृह सुख उत्तम। सन्तान से हित हो। यात्रा से लाभ हो। मास की २, ७, १२, १६, २६ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक मंगल ग्रह अपने घर का ठीक है। धन लाभ गुरु ग्रह देगा। खर्चा भी शनि ग्रह खूब करायेगा। यश मान प्रतिष्ठा उत्तम रहेगी। मास की ४, ६, ८, १४, २३ ता० नेष्ट हैं।

मीन राशि में शुक्र उच्च का यश मान प्रतिष्ठा बढ़ायेगा, खजाने में उच्च का सूर्य धन देगा। परिवार के सुख उत्तम। स्त्री सुख उत्तम। मास की २, ८, १२, १३, १८, २७ ता० नेष्ट हैं।

मई सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—अक्षय तृतीयापरशुराम जयन्ती ४ मई शुक्रवार।

मिति वैशाख बदी ३० मंगलवार संवत् २०४१ वि० से ज्येष्ठ सुदी १ गुरुवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्दः १९०६। रज्जब २८ हि० से शाबान २९ सन् १४०४ हि० तक। भारतीय वैशाख ११ से भारतीय ज्येष्ठ १० तक।

वार १९	मई सन् १९८४	सावान १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय वैशाख	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्यौहार-व्रत गृह संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	आरम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
मंगल	१	२८	१७	११	३०	६	५०	अ	५२	३	आ	३१	४५	मषे	—	—	—	३२	४३	५	५३	६	५९	
बुध	२	२९	१८	१२	१	८	५१	कृ	५४	३०	सौ	२९	५९	वृषे	९/३४	—	—	३२	४६	५	५२	६	५९	चन्द्रदर्शनं ३० मुहूर्ती
गुरु	३	१	१९	१३	२	९	४०	रो	५५	५५	शो	२७	३८	वृषे	—	—	—	३२	५०	५	५१	७	०	वक्री तुलायां भौमः √
शुक्र	४	२	२०	१४	३	९	२६	मृ	५६	२६	अ	२४	१८	मि	१९/५८	२२/७	—	३२	५५	५	५१	७	१	अक्षय तृतीया
शनि	५	३	२१	१५	४	८	१५	आ	५७	८	सु	२०	१८	मि	—	—	९/४६	३२	५८	५	५०	७	२	
रवि	६	४	२२	१६	५	६	२१	पु	५४	४८	धृ	१५	५५	कर्क	२२/३०	—	—	३३	०	५	४९	७	२	
सोम	७	५	२३	१७	६/७	३/५९	३३/४२	पु	५२	५०	शू	१	१८	कर्क	—	३०/२१	—	३३	४	५	४८	७	२	भरण्यां शुक्र २७।१९ ∠
मंगल	८	६	२४	१८	८	५५	११	श्ले	५०	५	गं	४/५०	२१/४२	सिं	५०/५	—	१७/२७	३३	७	५	४८	७	२	पात स्पर्शः २९।३४
बुध	९	७	२४	१९	९	५१	०	म	४६	३६	धृ	५०	३५	सिं	—	—	—	३३	९	५	४७	७	३	पात मोक्षः १०।४५
गुरु	१०	८	२५	२०	१०	४३	४३	पू	४२	४३	व्या	४२	४०	कं	२८/५७	—	—	३३	१४	५	४७	७	३	कृतिकायां रविः २४।२७←
शुक्र	११	९	२६	२१	११	३६	०	उ	३७	२१	ह	३४	२७	कं	—	१०/३८	८१/१८	३३	१५	५	४६	७	४	मोहिनी एकादशीव्रतम्
शनि	१२	१०	२७	२२	१२	२९	४५	ह	३२	१५	व	२५	५१	तु	३०/७	—	—	३३	२०	५	४६	७	४	प्रदोष व्रतम्
रवि	१३	११	२८	२३	१३	२२	२८	चि	२७	०	सि	१७	१५	तु	--	—	—	३३	२२	५	४५	७	५	पूर्वस्यां दिशि शुक्रास्त ∴
सोम	१४	१२	२९	२४	१४	१५	८	स्वा	२२	३५	व्या	८	४०	तु	—	१२/३२	२३/१५	३३	२६	५	४५	७	६	वृषेऽर्क ११।१८ (सौर ∞
मंगल	१५	१३	३०	२५	१५	८	४०	वि	१२	२६	व	०/५५	५१/९	वृ	८/१५	—	—	३३	२८	५	४३	७	७	यमाय जल कुम्भदानम्
बुध	१६	१४	१	२६	१/२	३/५९	२५/३५	अ	१५	२५	शि	४९	५०	वृ	—	—	—	३३	३०	५	४३	७	७	(सवरात) महोत्सवो ÷
गुरु	१७	१५	२	२७	३	७५	२८	ज्ये	१४	११	सि	४४	३०	ध	१४/१२	१७/५१	२९/२५	३३	३४	५	४२	७	८	तृतीयामाक्षयः
शुक्र	१८	१६	३	२८	४	७५	५	मू	१४	४७	सा	४१	५२	ध	—	—	—	३३	३७	५	४२	७	८	कृतिकायां शुक्रः∝
शनि	१९	१७	४	२९	५	८५	३	पू	१७	५	शु	४०	५१	म	१९/४५	—	—	३३	४०	५	४०	७	९	रोहिण्यां प्रथम चर्णे राहुः×
रवि	२०	१८	५	३०	६	८५	५९	उ	२१	३८	शु	४०	५९	म	--	—	—	३३	४१	५	४१	७	९	सायन मिथुनार्कः २६।५०
सोम	२१	१९	६	३१	६	२	४९	श्र	२७	२५	ब्र	४२	२५	म	—	७/३५	२०/२५	३३	४४	५	४०	७	१०	वृषे-शुक्रः१६।४५
मंगल	२२	२०	७	१	७	७	०	ध	३४	१८	ऐं	४४	२६	कुं	७/०	—	—	३३	४६	५	४०	७	१०	राष्ट्रीय ज्येष्ठ मासारम्भः +
बुध	२३	२१	८	२	८	३१	१९	श	४१	५२	वै	४६	५०	कुं	—	—	—	३३	४८	५	४०	७	११	भरण्यां बुधः १०।५४
गुरु	२४	२२	९	३	९	२०	१	पू	४९	२२	वि	४९	१८	मी	१९/४०	२७/४१	—	३३	५१	५	४०	७	१२	रोहिण्यां रविः २०।४० =
शुक्र	२५	२३	१०	४	१०	२५	५९	उ	५६	२७	प्री	५१	२५	मी	—	—	१९/५२	३३	५२	५	४०	७	१२	
शनि	२६	२४	११	५	११	३१	२६	रे	५९	५९	आ	४२	४५	मी	—	—	—	३३	५५	५	३९	७	१३	अपरा ११ व्रतम्
रवि	२७	२५	१२	६	१२	३५	२५	रे	२	४०	सौ	५२	३८	मेष	२/४०	—	—	३३	५६	५	३९	७	१३	पंचक समाप्ति ७।३२
सोम	२८	२६	१३	७	१३	३८	२५	अ	७	२०	शो	५२	१	मेषे	—	२१/५०	—	३३	५८	५	३८	७	१४	प्रदोष व्रतम्
मंगल	२९	२७	१४	८	१४	३९	३८	भ	१०	४२	अ	५०	५८	वृ	१९/५९	—	१०/८	३४	०	५	३८	७	१४	रोहियां शुक्र १९।५० ⇐
बुध	३०	२८	१५	९	३०	३९	२९	कृ	१२	४०	सु	४६	५१	वृ	—	—	—	३४	२	५	३८	७	१४	वट् पूजनम्
गुरु	३१	२९	१६	१०	१	३७	४५	रो	१३	२१	धृ	४२	४५	मि	२३/४२	—	—	३४	४	५	३८	७	१५	

आकाशी शकुन विचार—आखा तीज शुक्रवार का होना शुभ लक्षण है वक्री तुला राशि में मंगल शनि के साथ योग बनाकर क्षति पहुंचावेगा। १४ ता० को स्वाति नक्षत्र सोमवार में बादल वर्षा सामान्य कहीं-कहीं होगी वह शुभ रहेगी। शुक्रास्त भी वहां हो रहा है वर्षा के योग जहां-तहां होंगे।

आकाशी लक्षण—जहां-तहां बादल वर्षा के साथ वायु तेज चलेगी, रोगोपद्रव होने की संभावना है, १६ ता. बाद गर्मी की अधिकता बढ़ेगी, संक्रान्ति का प्रभाव तेजी में जायेगा, शनि मंगल का योग कुछ उपद्रव करेगा।

√ १६।५१ परशुराम जयन्ती सावान मु-मास ८ ∠ मार्गी बुधः ६।१२ ← (सौर २६।२) ∴ २४।४३ नृसिंह जयन्ती १४ (शु. अ. पर्वे) ∞ १३।७ ÷ यवनानाम् ∝ २२।३९ चतुर्थी व्रतम् × अनुराधा 3 केतुः २०।१४ + पंचकारम्भः ६।५० = (सौर ३३/३८) ⇐ बुधास्तः पूर्वे ३/०।

मई मास का आरम्भ वैशाख अमावस्या से होता है। इस मास की ग्रह चाल सामान्य से अच्छी है। ३ ता० को तुला राशि में मंगल वक्री हो जायेगा। शनि के साथ यह वक्री चाल में अनेक व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां लायेगा। सरसों, अलसी, अरण्डी, गुड़, शक्कर, देशी खाण्ड, रसादि पदार्थों में अच्छी तेजियां बनेगी, खरीद कर माल बेचें। घृत, तेल, वेजिटेबिल आयल तेज होगा। संक्रान्ति का रुख भी गेहूं, चना, जौ, मटरा में तेजी करेगा। ५) ६) रु० की तेजी बन जाना संभव है। सोना, चांदी, धातुबाना, पीतल, तांबा तेज होंगे। शनि मंगल के योग में लोहा आयरन, शेयर्स तेज हो जायेंगे। व्यापार में अच्छी घटा-बढ़ी चलेगी। "तुलायां वक्रि भौमश्चेत् सर्वधान्य महर्घता, माषा मुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः" धान्य तो तेज होंगे ही, परन्तु उदड़, मूंग, मसूर, मोठ, रुई, पाट, बारदाना, कपास वस्त्रादि भी तेज होंगे। किराने की जिन्सें जीरा, धनिया, काली मिर्च, बादाम तेज होंगे। रसादि पदार्थों में अच्छी तेजियां बनेंगी। गृह चाल-शनि मंगल की वक्री चाल ही तेजी को देगी, खरीद कर माल बेचने से लाभ होगा।

१४ मई सोमवार ८४ ई.

३	रा.	शु. १ बु.
४	२ सू.	१२
५		११
६	८ के	१०
चं. श ७ मं.		९ गु.

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति वैशाख शुक्ला १४ सोमवार वृष की संक्रान्ति पिछली संक्रान्ति से चौथे वार पांचवे नक्षत्र में प्रविष्ठ होती है। वार नाम ध्वांक्षी वैश्यसुसुखकरी मध्यान्हव्यापिनी है। विप्रानुहन्ति, वणिजकरणे प्रविष्ठा अतः वाहन महिष है। कृष्ण वस्त्रम्, तोमर आयुध है। दधि भक्षण मदार पुष्प, मृगज जाति, रांगा पात्रम्, प्रगल्यावस्था में (बैठी) मुहूर्ती १५ है, शुक्रोदय पूर्वे तेजी कारक योग बनायेगी।

मास भाग्यांक

नौ, बारह, तेईस में,
छप्पन का कर भाग।
चव्वन, तेईस पक्ष में,
बन जाये भाग्यांक ॥

९ + १२ + २३ ÷ ५६
५४ ÷ २३ × १५
= २३ — १४
भाग्यांक १, ५, ७, ९

मेष शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ उत्तम। स्त्री के स्वास्थ्य में त्रुटि। सन्तान से हित। रोजगार लाभ का रहेगा। १, ३, ७, १२, १८, २३, २४ ता० नेष्ट हैं।

वृष मानसिक स्वास्थ्य कुछ खराब हो। व्यय की अधिकता बढ़े। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। यशमान बढ़े। सन्तान से हित हो। ग्रह कलह से बचें। २, ४, ६, १४ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन व्यय की अधिकता, लाभ भी उत्तम। स्वास्थ्य उत्तम। परिवार सुख ठीक। शत्रु पर, रोग पर विजय। यात्रा से लाभ। ३, ५, ७, १३, १८ ता० नेष्ट हैं।

कर्क मानसिक स्वास्थ्य में त्रुटियां हो। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक चले। आर्थिक लाभ ठीक हो। सन्तान सुख उत्तम। ग्रह कलह से बचें। २, ४, ६, १४, ता० नेष्ट हैं।

सिंह लाभ के संयोग उत्तम व्यय भी काफी। परिवार सुख उत्तम। भाई बन्धुओं से हित। सन्तान से हित। राजपक्ष से हित। यात्रा से लाभ। ३, ५, ७, १६, २६ ता० नेष्ट हैं।

कन्या धन लाभ में झंझट तथा शारीरिक स्वास्थ्य ठीक। मानसिक चिन्ता बनी रहे। राजपक्ष से हित हो। शत्रु से, रोग से भी विजय। यात्रा से लाभ। ४, ६, १८, २७ ता० नेष्ट हैं।

तुला शनि मंगल का योग कुछ अशान्ति लायेगा। हानि कोई नहीं होगी। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य, व्यापार रोजगार उत्तम। यश बढ़ेगा। ३, ७, १६, २८ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक स्त्री का स्वास्थ्य सामान्य, आर्थिक लाभ उत्तम। खर्चा बहुत हो। आमदनी भी ठीक रहेगी। राजपक्ष से हित होगा। ग्रह कलह से बचें। २, ६, १७, २६ ता० नेष्ट हैं।

धन बृहस्पति ग्रह अनुकूल। स्वास्थ्य ठीक चलेगा। आमदनी अच्छी होगी। राजपक्ष उत्तम। स्त्री का स्वास्थ्य साधारण रहेगा। परिवार में झंझट। ३, ७, ११, २३, २६, २८ ता० नेष्ट हैं।

मकर राजपक्ष से हित होगा। आमदनी ठीक रहेगी। शुभ कार्यों में व्यय अधिक। स्त्री सुख उत्तम। सन्तान से हित। यात्रा से लाभ। शत्रु पर, रोग पर विजय। ४, ५, ८, २०, २१ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ शनि मंगल का योग भाग्य वृद्धि में कुछ रुकावट देगा। लाभ बराबर होगा। पारिवारिक सुख उत्तम है। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ६, ८, ११, १३, १८, २७ ता० नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष उत्तम है। मुकदमें में जीत होगी। यशमान बढ़ेगा। यात्रा से लाभ होगा। रोजगार में हित होगा। सन्तान से सुख प्राप्त होगा। ७, ८, १२, १४, २३, २४ ता० नेष्ट हैं।

जून सन् 1984 ई० मुख्य त्योहार— गंगा दशहरा ८ जून शुक्रवार

मिति ज्येष्ठ बदी २ शुक्रवार सम्वत् २०४१ वि० से आषाढ़ बदी १ शनिवार सम्वत् २०४१ वि० तक। शकाब्दः १९०६, साबान ३० हि० से रमजान २९ हि० सन् १४०४ हि० तक। भारतीय ज्येष्ठ ११ से भारतीय आषाढ़ ९ तक।

वार ई०	जून सन् १९८४	रमजान १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय ज्येष्ठ	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्योहार व्रत
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	प्रारम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	उत्सवादि ग्रह संचार व्यवस्था
शुक्र	१	३०	१७	११	२	३५	८	मू	१२	४६	शू	३७	५१	मि	—	—	—	३४	६	५	३९	७	१७	कृतिकायां बुधः २६।८×
शनि	२	१	१८	१२	३	३१	४०	आ	११	२५	गं	३२	१६	कर्क	२५/२०	३०/१९	—	३४	६	५	३८	७	१६	मु० मासारम्भः रमजान+
रवि	३	२	१९	१३	४	२७	३१	पु	९	५	वृ	२९	०	कर्क	—	—	१७/३०	३४	८	५	३८	७	१७	वक्री स्वात्यां भौमः १९।८
सोम	४	३	१९	१४	५	२२	५९	पु	६	३०	ध्रु	१९	४९	कर्क	—	—	—	३४	१०	५	३७	७	१७	वृषे बुधः ८।४
मंगल	५	४	२०	१५	६	१२	१	श्ले	३	३०	व्या	१३	११	सिं	—	३/३०	११/३९	३४	११	५	३७	७	१८	×चन्द्रदर्शनम् मु० १९
बुध	६	५	२१	१६	७	१२	५५	म	५०/७	२४/११	ह	५६/८	२५/५२	सिं	—	—	१५/३६	३४	१२	५	३७	७	१८	+रोजारम्भः
गुरु	७	६	२२	१७	८	७	३९	उ	५३	४३	सि	५२	२८	कं	११/०	—	—	३४	१४	५	३७	७	१९	मृगे रविः १८।३६ (सौर=
शुक्र	८	७	२३	१८	९ ८/०	५ २/६	१/१ ६/७	ह	५०	६	व्य	४५	१२	कं	—	—	—	३४	१५	५	३७	७	१९	गंगादशमी दशहरा
शनि	९	८	२४	१९	११	५१	८	चि	४६	३६	व	३८	१२	तु	१३/५८	१५/५८	२६/५६	३४	१६	५	३७	७	१९	मृगे शुक्रः १२।२ रोहिण्यां%
रवि	१०	९	२५	२०	१२	५५	३०	स्वा	४३	१२	प	३१	२२	तु	—	—	—	३४	१७	५	३६	७	२०	निर्जला एकादशी व्रतं∠
सोम	११	१०	२६	२१	१३	४०	४१	वि	४०	२०	शि	३४	३८	वृ	१६/५५	—	—	३४	१८	५	३६	७	२०	प्रदोष व्रतम्
मंगल	१२	११	२७	२२	१४	३६	४२	अ	३२	६	सि	१८	३५	वृ	—	—	—	३४	१९	५	३७	७	२१	वक्री पूषायां १ गुरुः△
बुध	१३	१२	२८	२३	१५	३३	०१	ज्ये	३७	१५	सा	१३	२६	ध	३७/१५	२१/२	—	३४	२१	५	३७	७	२१	गुर्जरा बट् सावित्री व्रतम्
गुरु	१४	१३	२९	२४	१	३१	२८	मू	३६	४१	शु	९	२०	ध	—	—	५/२३	३४	२१	५	३७	७	२०	मिथुनेऽर्कः १८।३ (सौर÷
शुक्र	१५	१४	३०	२५	२	३१	९	पू	३९	३२	शु	६	१६	म	३५/४०	—	—	३४	२२	५	३७	७	२१	∠वैष्णवानाम्
शनि	१६	१५	१	२६	३	३२	४०	उ	४३	८	ब्र	४	४५	म	—	—	—	३४	२२	५	३७	७	२१	मृगे बुधः १२।२४ मार्गी→
रवि	१७	१६	२	२७	४	३५	४६	श्र	४८	९	ऐं	४	११	म	—	७/१५	१९/३३	३४	२३	५	३७	७	२२	स्वाति ३ शनिः २०।५३
सोम	१८	१७	३	२८	५	४०	३६	ध	५४	३०	वै	४	५९	कुं	१५/१	—	—	३४	२३	५	३७	७	२३	पञ्चकारम्भः
मंगल	१९	१८	४	२९	६	४५	५६	श	५९	५९	वि	६	३५	कुं	—	—	—	३४	२४	५	३७	७	२३	मिथुने बुधः १२।११
बुध	२०	१९	५	३०	७	५२	८	श	२	३८	प्री	८	५१	मी	२७/२६	२४/५१	—	३४	२४	५	३८	७	२४	आद्रायां शुक्रः १८।१
गुरु	२१	२०	६	३१	८	५८	१३	पू	९	१५	आ	११	१६	मी	—	—	१४/५	३४	२५	५	३८	७	२४	आर्द्रायां सूर्यः १७।४४
शुक्र	२२	२१	७	१	९	५९	५९	उ	१६	३९	सौ	१३	३६	मी	—	—	—	३४	२४	५	३८	७	२४	आर्द्रायां बुधः १४।४४=
शनि	२३	२२	८	२	९	३	४९	रे	२३	२१	शो	१५	२६	मेषे	२३/२१	२०/५३	—	३४	२४	५	३८	७	२४	पञ्चक समाप्त १५।५०
रवि	२४	२३	९	३	१०	८	१६	अ	२२	४०	अ	१६	१८	मेषे	—	—	६/४९	३४	२४	५	३८	७	२४	←भौमः ५०/६ चतुर्थी व्रतम्
सोम	२५	२४	१०	४	११	११	१०	भ	३२	२२	सु	१५	४५	वृषे	२५/४१	—	—	३४	२३	५	३९	७	२५	योगिनी एकादशी व्रतम्
मंगल	२६	२५	१०	५	१२	१२	३०	कृ	३४	३४	धृ	१४	१०	वृषे	—	—	—	३४	२३	५	३९	७	२५	प्रदोष व्रतम्
बुध	२७	२६	११	६	१३	११	५६	रो	३५	३	शू	१०	५९	वृषे	—	११/१५	२२/४४	३४	२३	५	३९	७	२५	
गुरु	२८	२७	१२	७	१४	९	२५	मृ	३३	५३	गं	६	२९	मि	८/१५	—	—	३४	२२	५	४०	७	२४	पुनर्वसो बुधः १७।५८
शुक्र	२९	२८	१३	८	३०	५	३६	आ	३१	१०	वृ	५०/३	४६/२	मि	—	—	—	३४	२२	५	४०	७	२४	जुमात उल विदा
शनि	३०	२९	१४	९	१/२	१	०	पु	२७	४५	स्वा	४६	३१	कर्क	११/५९	—	—	३४	२१	५	४०	७	२४	चन्द्र दर्शनम्

आकाशी शकुन विचार—८ ता० को गंगा दशहरा पर जहां-तहां वायु का प्रकोप, आंधी, तूफान आदि की संभावना शनि; मंगल का प्रभाव दोष कारक है जहां-तहां बूंदा-बादी वर्षा सामान्य होगी। धान्यों के अनाजों के तथा तिलहनों के भाव तेज जायेंगे।

आकाशी लक्षण—१० ता० से १४ ता० तक शुकन यह देखना है कि यदि द्वादशी स्वाती में वर्षा हो गई तो श्रावण मास अनावृष्टि में जायेगा वर्षा नहीं होगी। यदि विशाखा में त्रयोदशी में वर्षा हो गई तो भादों में सूखा पड़ जायेगा। यदि १४ अनुराधा में वर्षा हो गई तो आश्विन में वर्षा नहीं होगी। यदि ज्येष्ठ सुदी १५ को १३ ता० में वर्षा हो गई तो ७२ दिन तक वर्षा गर्भ खण्डित हो जायेगा ये शुकन मिलाने चाहिये।

=२२।५८), %बुधः २६।३ निर्जला ११ व्रत स्मार्तानाम्, △१२।१४, ÷२३।१८) मिथुने शुक्रः ३५/३३, ⇒राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भः

जून का महीना मिति ज्येष्ठ सुदी २ शुक्रवार से आरम्भ होता है। चन्द्र दर्शन १५ मुहूर्त व्यापारिक जिन्सों में कुछ तेजी चाहता है। गेहूं, चना, जौ, मटर, मोटे अनाजों में मांग खरीद बढ़ेगी। फलत: ४) ५) रु० की तेजी बन जानी संभव है। सरसों, अलसी, अरण्डी में भी ५) ६) रु० की तेजी संभव है। मंगल, गुरु, शनि, तीनों ग्रह वक्री हैं। तिहलन, तेलों में, घृत, गुड़, शक्कर, खाण्ड में अच्छी तेजी बनेगी, खरीद कर माल बेचें। १० ता० से १३ ता० तक सोना, चांदी, ताम्बा में अच्छी तेजी के योग बनेंगे। १४ ता० को मिथुन की संक्रान्ति, यद्यपि धान्य भाव सम रखती है, तो भी गृह दशा का प्रभाव तेजी कारक रहेगा। २१ ता० आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश वृहस्पतिवार में शुभ है। आगे चलकर सुभिक्ष का संचार होगा। १४ ता० के आसपास में बुध, शुक्र, सूर्य का योग मिथुन राशि में होता है। चावल, गेहूं, जौ का स्टाक करें। "मिथुने च यदा शुक्रो-महर्घः तत्र जायते, यवगोधूमचणकाः शान्तिश्चैव विशेषतः" फलतः सभी धान्यों में तेजियां बनेंगी, स्टाक करना अच्छा है। २० ता० से २४ ता० तक सोना, चांदी में तेजी हो।

१४ जून गुरुवार ८४ई

४	२ श. बु	१
५	सू ३ शु	
६		१२
श. ७ मं	चं ८ बृ	११
८ के		१०

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति आषाढ़ कृ १ गुरुवासरे मिथुनेऽर्क प्रवेशः। यह संक्रान्ति पिछली संक्रान्ति से चौथे नक्षत्र प्रथम वार में लगी है, वारनाम मन्दा विप्रसुखी नक्षत्र नाम राक्षसी, अन्त्जसुखी, अपराह्न व्यापिनी, वैश्यान् हन्ति, कौलव करणे प्रविष्ठा वाहनंवराहः हरित वस्त्रं, खड्गायुधं, भिक्षान्न भक्षणम्, चन्दन लेपनं, सर्प जाति, मौलसरी पुष्पम्, ताम्र पात्रम्। किशोरी अवस्था (ऊभी) मु० ३० धान्य भाव सम।

मास भाग्यांक

सात, सत्तर मेल से,
गुणक गुणन में आठ।
पंच आठ से भाग कर,
जानो भाग्य का ठाट॥

७ × ७७ × ८ ÷ ८५
८६ ÷ ८ × ६२
= २३—६
भाग्यांक ३, ६, ८, ६

मेष स्त्री के स्वास्थ्य में त्रुटि। स्वयं का स्वास्थ्य अच्छा। लाभ के संयोग उत्तम। राज्य पक्ष से हित। यात्रा से लाभ। भाग्योदय के योग हैं। मास की १, ३, १२, २२, २५ ता० नेष्ट हैं।

वृष शत्रु पर, रोग पर विजय हो। स्वास्थ्य ठीक चले। धन लाभ रहेगा। अरिष्ठ भंग होगा। सन्तान सुख ठीक रहेगा। यात्रा से लाभ होगा। मास की ४, ६, ११, २३ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन खर्चा काफी हो। आमदनी भी रहेगी। सन्तान की तरफ से चिन्ता हो। स्त्री स्वास्थ्य ठीक हो। राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ हो। मास की ५, ८, १२, २२ ता० नेष्ट हैं।

कर्क गुरु चन्द्रमा का योग हितकारी है। शत्रु पर, रोग पर विजय होगी। धन लाभ भी होगा। सफर में लाभ प्राप्त होगा। व्यापार से हित होगा। ६, ७, ९: १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह सूर्य लाभ देगा। कई मार्गों से लाभ के संयोग है। सन्तान की उन्नति होगी। राजपक्ष से हित होगा। मित्रों से लाभ होगा। गृह कलह से बचें। ५, ८, १२, १८, २३ ता० नेष्ट हैं।

कन्या रोजगार से हित हो। व्यापार से हित. भाग्य वृद्धि हो। धन सम्पत्ति तथा सुख सुविधा भी बढ़ेगी। राजपक्ष से लाभ। सन्तान से सुख। ४, ७, १२, २२, २४ ता० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक स्वास्थ्य में शनि मंगल का योग कुछ नेष्ट है। पारिवारिक सुख उत्तम है। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम रहेगा। राजपक्ष से हित है। ८, ९, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक धन धान्य की वृद्धि होगी। व्यय भी काफी होगा। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। सन्तान से हित। व्यापार से हित। यात्रा में लाभ हो। १, ७, ११, १५ ता० नेष्ट हैं।

धन गुरु चांदी योग से उत्तम। शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम। धन धान्य की वृद्धि हो। यशमान की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राजपक्ष से हित होगा। स्त्री सुख उत्तम है। ३, ८, १३, २३, २६ ता० नेष्ट हैं।

मकर राजपक्ष से हित हो। सन्तान से हित होगा। रोजगार से लाभ हो। व्यापार, नौकरी से लाभ। किसी अजनबी से मुलाकात होगी। गृह कलह से बचें। ४, ९, १४, २८ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ सन्तान से हित हो। लाभ के संयोग उत्तम हो। राजपक्ष से हित हो। मुकदमें में जीत होगी। पारिवारिक सुख उत्तम हो। यात्रा में लाभ प्राप्त होगा। २, ३, ७, ११, १३ ता० नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष में गुरु चन्द्रमा योग अच्छा हित करेगा। मुकदमें में जीत हो। व्यापार से लाभ हो। यात्रा से लाभ। परिवार सुख उत्तम। मित्रों से सहयोग हो। २, ६, ९, १२ ता० नेष्ट हैं।

3l-02
17-11
12-492

जुलाई सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा व्रत १३ जुलाई शुक्रवार हरियाली तीज ता० ३१ जुलाई मंगलवार



मिति आषाढ़ सुदी ३ रविवार संवत् २०४१ वि० से श्रावण सुदी ३ मंगलवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्द: १९०६। सव्वाल १ हि० से जिल्काद २ सन् १४०४ हि० तक। भारतीय आषाढ़ १० से भारतीय श्रावण ९ तक।

वार ३१	जुलाई सन् १९८४	सव्वाल १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय आषाढ़	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिन-मान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्यौहार-व्रत व ग्रह संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	आरम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
रवि	१	१	१५	१०	३	४८	१९	पु	२३	२६	ह	३८	५९	कर्क	—	—	—	३४	२०	५	४१	७	२५	पुनवसु ४ शुक्रः ७।१५...
सोम	२	२	१६	११	४	४१	५२	श्ले	२८	५९	व	३२	१	सिं	१८/५३	१२/६२	२३/२४	३४	१९	५	४१	७	२५	
मंगल	३	३	१७	१२	५	३५	३५	म	१४	३९	सि	२३	१२	सिं	—	—	—	३४	१८	५	४१	७	२५	कर्के बुधः १५।३६
बुध	४	४	१८	१३	६	२९	२५	पू	१०	२८	व्या	१५	५१	क	१६/१८	—	—	३४	१७	५	४२	७	२४	वुधोदयः पश्चिमायां ७।८
गुरु	५	५	१९	१४	७	२३	५६	उ	६	४८	व	८	४९	क	—	१७/३	२७/२	३४	१५	५	४	७	२४	पुनर्वसु रविः १७।१३ ÷
शुक्र	६	६	२०	१५	८	२८	५१	ह	३	४८	प	२/५५	३/३६	तु	१६/२७	—	—	३४	४	५	४३	७	२४	
शनि	७	७	२१	१६	९	१४	११	चि	५०/८	३३/२७	शि	४९	४	तु	—	—	—	३४	१६	५	४३	७	२४	
रवि	८	८	२२	१७	१०	१०	६	वि	५७	०	सा	४३	४८	वृ	२३/२५	२१/५७	—	३४	११	५	४४	७	२४	वक्री मूले ४ गुरुः २३।५८
सोम	९	९	२३	१८	११	६	४२	अ	५५	१५	शु	३८	५२	वृ	—	—	६/१०	३४	१०	५	४४	७	२४	कर्के शुक्रः ९।४३ देव +
मंगल	१०	१०	२४	१९	१२	३	५१	ज्ये	५६	७	शु	३४	४१	ध	५६/५०	—	—	३४	८	५	४४	७	२४	प्रदोष व्रतम्
बुध	११	११	२५	२०	१३	२	४	मू	२६	२४	ब्र	३१	२५	ध.	—	—	—	३४	७	५	४५	७	२३	पुष्ये शुक्रः २८।१४
गुरु	१२	१२	२६	२१	१४	२	३४	पू	५९	३९	ऐं	२८	५०	ध	—	—	—	३४	५	५	४६	७	२३	श्लेषायां बुधः १९।५४ →
शुक्र	१३	१३	२७	२२	१५	१	५५	उ	५९	५९	वै	२७	३५	म	१२/४३	—	—	३४	४	५	४६	७	२३	मार्गी शनिः १०।२ गुरु √
शनि	१४	१४	२८	२३	१	३	५२	उ	३	१९	वि	२६	४५	म	—	—	—	३४	२	५	४७	७	२३	
रवि	१५	१५	२९	२४	२	७	९	श्र	८	०	प्री	२७	१४	कु	२२/५५	२२/२८	—	३४	१	५	४७	७	२३	कर्केऽर्कः २९।५ पंच ⊥
सोम	१६	१६	३०	२५	३	११	५०	ध	१४	९	आ	२८	३८	कु	—	—	११/१३	३३	५८	५	४७	७	२३	कर्केऽर्कः (सौरः १४।४६)
मंगल	१७	१७	१	२६	४	२६	५७	श	२१	३	सौ	३०	४०	कु	—	—	—	३३	५६	५	४८	७	२२	
बुध	१८	१८	१	२७	५	२३	६	पू	२८	३०	शो	३३	२	मी	१२/२३	—	—	३३	५४	५	४८	७	२२	नागपंचमी मुरुस्थले
गुरु	१९	१९	२	२८	६	२९	२१	उ	३५	१५	अ	३५	३६	मी	—	१५/३४	—	३३	५२	५	४९	७	२१	पुष्ये रविः १६।५० (सौर ⇐
शुक्र	२०	२०	३	२९	७	३५	२३	रे	४३	१६	सु	३७	४८	मेष	४६/१६	—	७/२६	३३	५०	५	४९	७	२१	शुक्रोदयः पश्चिमायां २६/३६ ⋗
शनि	२१	२१	४	३०	८	४०	२९	अ	४९	३१	धृ	३९	३३	मेषे	—	—	—	३३	४७	५	५०	७	२०	मघायां सिंहे बुधः १२।४३ Ω
रवि	२२	२२	५	३१	९	४४	०	भ	५४	३०	शू	४०	०	मेषे	—	—	—	३३	४५	५	५०	७	२०	श्लेषायां शुक्रः २३।३६ ×
सोम	२३	२३	६	१	१०	४५	४९	कृ	५७	४२	गं	३९	७	वृ	१०/३७	१२/२८	२४/४२	३३	४२	५	५१	७	१९	श्रावण मासारम्भः
मंगल	२४	२४	७	२	११	४५	५६	रो	५९	४	वृ	३६	५७	वृ	—	—	—	३३	४०	५	५१	७	१९	कामिका ११ व्रतम्
बुध	२५	२५	८	३	१२	४३	४२	मृ	५८	१९	ध्रु	३२	५९	मि	१७/०८	—	—	३३	५७	५	५२	७	१८	
गुरु	२६	२६	९	४	१३	४०	५५	आ	५५	४७	व्या	२७	४१	मि	—	२२/५७	—	३३	३५	५	५२	७	१८	प्रदोष व्रतम्
शुक्र	२७	२७	१०	५	१४	३४	७	पु	५१	३२	ह	२०	२६	क	२१/३२	—	८/३०	३३	३२	५	५३	७	१७	
शनि	२८	२८	११	६	३०	२७	७	पु	४६	१८	व	१२	४५	कर्के	—	—	—	३३	२९	५	५३	७	१७	हरियाली ३०
रवि	२९	२९	१२	७	१	२८	९	श्ले	४०	२०	सि	६/५४	४६/६६	सिं	४०/२०	—	—	३३	[illegible]	५	५४	७	१६	चन्द्र दर्शनम्
सोम	३०	१	१३	८	२	१०	५४	म	३४	२	व	४४	११	सिं	—	—	—	३३	२४	५	५४	७	१६	सिन्धारा जिल्काद मु० +
मंगल	३१	२	१४	९	३	२	४५	पू	२८	०	प	३५	५२	क	२३/१०	१५/०	२५/२७	३३	२१	५	५५	७	१५	हरियाली तीज

आकाशी शकुन विचार—४ ता० आषाढ़ सुदी ६ बुधवार में बुधोदय हो रहा है जहां-तहां वर्षा अच्छी होगी १३ ता० को शनि मार्गी हो रहा है। आषाढ़ सुदी १५ शुक्रवार में वायु का बहना सुभिक्षकारी है दक्षिण की वायु खराब होती है वैसे पा चाल द्वारा शकुन अच्छे ही प्रतीत होते है' शनि मार्गी यहां सुभिक्ष करेगा वर्षा के योग उत्तम ही बनेंगे, गल्ला तथा तिलहनों मंदियां संभव हो सकती है।

आकाशी लक्षण—आषाढ़ सुदी १५ में जहां तहां देश के सभी प्रान्तों में व्यापक वर्षा का योग ज्ञात होता है फसल की उत्तम बनने की संभावना रहेगी शनि मंगल अन्न वृद्धि चाहते हैं मगर बृहस्पति ग्रह का संचार श्रेष्ठ चल रहा है।

...मुमासारम्भ सव्वाल १०, ÷(सौर २५।३६) ईदुल-उल फितर, + शयिनी ११ व्रतम्, ← वायु परीक्षा, √ पूर्णिमा व्यास पूजा, ⊥ कारम्भः २२।५४ चौयवृतं, ⇐ २७।४), ⋗ पञ्चक समाप्त २३/१०, Ω कृतिका ४ राहुः अनुराधा २ केतुः ८।२२, × सायन सिंहे २७/३८, ÷ माशारम्भः ११।

यह मास आषाढ़ शुक्ला तृतीया रविवार से आरम्भ होता है। इसका फल सामान्य से उत्तम है। १ ता० से ८ ता० तक व्यापारिक जिन्सों के मार्केट में अच्छी घटा-बढ़ी होगी। रुख तेजी की तरफ होगा। ८ ता० को कर्क राशि में शुक्र का प्रवेश हो रहा है। "यदा दैत्य गुरु कर्के रसानां वैमहर्घता, सर्व धान्य समर्घत्वं-मेघाश्च प्रबला भुवि" वर्षा के योग बनेंगे। खाण्ड, गुड़, शक्कर, घृत, तेल में तेजियाँ होंगी। धान्य भाव सम रहेंगे। ११ ता० से १४ ता० तक सोना, चांदी, धातुखाने में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियाँ बनेंगी। १५ ता० से कर्क संक्रान्ति का प्रभाव व्यापारिक जिन्सों पर पड़ेगा। सरसों, लाहा, अलसी, अरण्डी के भावों में ५) ६) रु० की तेजियाँ बनेंगी। घृतादि में भी इसी प्रकार तेजियां होंगी। किराने की जिन्सों में गोला, बादाम, किशमिश, छुआरे में तेजियां होंगी। शनि-मंगल के योग का प्रभाव यहाँ भी लोहा, मशीनरी, कोयला, इण्डस्ट्रियल-आयरन में भी तेजियां होंगी। १९ ता० से २८ ता० तक मार्केटों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बनेंगी। खरीद कर माल बेचना अच्छा है। शनिवारी मावस है। तेजी का रुख प्रबल होगा।

१५ जुलाई रविवार ८४

५ सू ३ ६ बु ४ शु २ रा श मं ७ १ ८ के १० १२ ९ गु च. ११

संक्रान्ति प्रवेश फल

ता० १५ जुलाई को कर्क की संक्रान्ति श्रावण कृ. 2 रविवार को लगती है पिछली संक्रान्ति से चौथे वार पांचवे नक्षत्र में प्रवेश करती है। वारनाम् घोरा, शूद्र सुखी, नक्षत्र नाम महोदरी, चौर सुखी, अपराङ्ग व्यापिनी, वैश्यान् हन्ति, विष्टिकरणे प्रविष्ठा वाहन अश्व, असित वस्त्र, कुंतायुधं, मिश्रितान्न खिचड़ी भक्षणम्, शूद्र जाति दूर्वा, पुष्पं, कांस्य पात्रं, वृद्धावस्था (बैठी) ३० मुहूर्तो धान्य भाव सम।

मास भाग्यांक

छ छप्पन चौंतीस में,
करके तेईस भाग ॥
चौवन अठतीस तीस के,
योग में बनेगा भाग्य ॥

५६ + ६ ÷ २३ × ३४

५४ + ३८ × २७ + ३०
= ३६—४३

भाग्यांक ०, ५, ७, ९

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खराब रहेगा। धन लाभ सामान्य रहेगा। व्यापार की गति सामान्य रहेगी। सन्तान से हित होगा। १, ५. ७, ११, १८, २८ ता० नेष्ट है।

सिंह शारीरिक स्वास्थ्य में बाधा। किसी शुभ कार्य में धन अधिक खर्च होगा। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। स्त्री पक्ष ठीक है। ६, ९, १३, २२ ता० नेष्ट हैं।

धन शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ ठीक होता रहेगा। स्त्री सुख व सन्तान सुख उत्तम रहेगा राजपक्ष से हित होगा। यात्रा से लाभ होगा। ६. ८. १२, १८. २८ ता० नेष्ट हैं।

वृष शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। शत्रु पर, रोग पर विजय होगी। स्त्री का स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। गृह कलह से बचें। ३, ६, १३, १८, २८ ता० नेष्ट हैं।

कन्या आमदनी अच्छी होगी। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। आर्थिक लाभ भी होगा। जमीन जायदाद गृह, सुख उत्तम है। ७, १० १२ १६ २३ ता० नेष्ट हैं।

मकर शनि मंगल का योग राजपक्ष में अच्छा है। मुकदमें में जीत हो। यात्रा से लाभ हो। रोजगार बना रहेगा। स्त्री सुख उत्तम। सन्तान से हित। ५, ७, १३, १९, २७ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ होता रहेगा। सन्तान सुख उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय। ४, ९, १४, २०, ३० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खराब रहेगा। धन-धान्य की वृद्धि होगी। स्त्री पक्ष ठीक है। सन्तान से हित हो। राजपक्ष से लाभ होगा। ८ ९ १४ १७ २४ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य में सामान्य त्रुटि हो। स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सन्तान का हित होगा। राजपक्ष से हित होगा। यात्रा से लाभ हो। ६, ८, १४, १८, २३ ता० नेष्ट हैं।

कर्क शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जमीन जायदाद में झंझट का योग है। सन्तान से सुख हो। राजपक्ष से हित हो। ५, ८, ११ १२, २६ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। मानसिक चिन्ता ज्यादा होगी। लाभ भी होता रहेगा। स्त्री व सन्तान सुख उत्तम है। यात्रा से लाभ होगा। ५ ७ १२ १८ ता० नेष्ट हैं।

मीन बृहस्पति ग्रह राजपक्ष से हितकारी है। शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ भी होता रहेगा। पारिवारिक सुख उत्तम है। ७, ९, १५ १८, २४ ता० नेष्ट हैं।

अगस्त सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—नागपंचमी १ अग० बुधवार, स्वतंत्रता दिवस १५ अग० बुध०; रक्षाबंधन ११ अगस्त शनिवार, जन्माष्टमी १९ अगस्त रवि०

मिति श्रावण बदी ५ बुधवार संवत् २०४१ वि० से भाद्रपद सुदी ५ शुक्रवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्द: १९०६। जिल्काद ३ हि० से जिल्हेज ३ सन् १४०४ हि० तक। भारतीय श्रावण १० से भारतीय भाद्रपद ९ तक।

वार	अगस्त सन् १९८४	जिल्काद १४०४	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय श्रावण	दैनिक तिथि: तिथि	घड़ी	पल	दैनिक नक्षत्र: नक्षत्र	घड़ी	पल	दैनिक योग: योग	घड़ी	पल	चन्द्र राशि प्रवेश: राशि	घं.प.	भद्रा: आरंभ	समाप्त	दिनमान: घड़ी	पल	सूर्य उदय: घण्टा	मिनट	सूर्य अस्त: घण्टा	मिनट
बुध	१	३	१५	१०	५	४७	५१	उ	२२	३५	शि	२७	१	क	—	—	—	३३	१८	५	५५	७	१५
गुरु	२	४	१६	११	६	४१	३६	ह	१८	०	सि	१९	७	तु	२४/५६	—	—	३३	१५	५	५६	७	१४
शुक्र	३	५	१७	१२	७	३६	३०	चि	१४	१५	सा	११	४३	तु	—	२७/४	—	३३	१२	५	५७	७	१३
शनि	४	६	१८	१३	८	३२	३०	स्वा	११	३६	शु	५/५६	२३/५८	वृ	२५/४३	—	८/१७	३३	९	५	५७	७	१३
रवि	५	७	१९	१४	९	२९	४०	वि	१०	१५	ब्र	४५	३६	वृ	—	—	—	३३	४	५	५७	७	१३
सोम	६	८	२०	१५	१०	२७	५०	अ	१०	९	ऐं	५१	५१	वृ	—	२९/३१	—	३३	३	५	५७	७	१२
मंगल	७	९	२१	१६	११	२७	२०	ज्ये	१०	५७	वै	४९	१५	ध	१०/५७	—	१७/२५	३३	०	५	५८	७	११
बुध	८	१०	२२	१७	१२	२७	५९	मू	१३	१	वि	४७	३०	ध	—	—	—	३२	५७	५	५९	७	१०
गुरु	९	११	२३	१८	१३	२९	३२	पू	१६	६	प्री	४५	३९	म	१९/२०	—	—	३२	५३	५	५९	७	१०
शुक्र	१०	१२	२४	१९	१४	३२	३९	उ	२०	२६	आ	४६	३५	म	—	१९/२८	—	३२	५०	५	६	७	९
शनि	११	१३	२५	२०	१५	३६	१५	श्र	२५	२५	सौ	४७	१०	कु	३९/४३	—	८/१३	३२	४७	५	६	७	८
रवि	१२	१४	२६	२१	१	४१	१५	ध	३१	४०	शो	४८	३६	कु	—	—	—	३२	४३	६	१	७	७
सोम	१३	१५	२७	२२	२	४६	३९	श	३८	३०	अ	५०	२०	कु	—	—	—	३२	४०	६	१	७	६
मंगल	१४	१६	२८	२३	३	५२	४८	पू	४५	५५	सु	५२	४२	मी	१५/७	१४/२१	२६/३९	३२	३६	६	२	७	५
बुध	१५	१७	२९	२४	४	५८	५९	उ	५३	२५	धृ	५५	२०	मी	—	—	—	३२	३३	६	३	७	४
गुरु	१६	१८	३०	२५	५	५९	५९	रे	५९	५९	शू	५७	५०	मी	—	—	—	३२	२९	६	३	७	३
शुक्र	१७	१९	१	२६	५	५	१०	रे	१	४	गं	५९	५५	मेष	०/५९	—	—	३२	२६	६	४	७	२
शनि	१८	२०	१	२७	६	१०	३६	अ	८	०	वृ	५९	५९	मेषे	—	१०/४३	२३/३७	३२	२२	६	४	७	१
रवि	१९	२१	२	२८	७	१५	५	भ	१४	२	वृ	१	८	वृ	१८/३२	—	—	३२	१९	६	४	७	०
सोम	२०	२२	३	२९	८	१८	०	कृ	१८	३०	ध्रु	१	२५	वृ	—	—	—	३२	१५	६	५	६	५८
मंगल	२१	२३	४	३०	९	१९	२०	रो	२२	१०	व्या	५८	३४/५१	मि	२७/५१	२६/०	—	३२	११	६	५	६	५८
बुध	२२	२४	५	३१	१०	१८	१८	मृ	२२	४	व	५३	५१	मि	—	—	१३/४८	३२	८	६	६	६	५७
गुरु	२३	२५	६	१	११	१५	२२	आ	२०	५५	सि	४९	१	मि	—	—	—	३२	४	६	६	६	५६
शुक्र	२४	२६	७	२	१२	१०	२९	पु	१७	५१	व्या	४०	४५	व कर्क	७/५५	—	—	३२	०	६	७	७	५५
शनि	२५	२७	८	३	१३/१४	३/५५	३५/१६	पु	१२	५५	व	३२	३	कर्क	—	७/५४	१५/१५	३१	५७	६	८	७	५४
रवि	२६	२८	९	४	३०	४६	२१	श्ले	६/५९	१/३६	प	२२	२०	सिं	५८/३८	—	—	३१	५२	६	८	७	५३
सोम	२७	२९	१०	५	१	३६	४५	पू	५२	११	शि	१२	२५	सिं	—	—	—	३१	४८	६	९	६	५३
मंगल	२८	३०	११	६	२	२७	११	उ	४४	४५	सि	५/५१	३४/५	क	८/३७	—	—	३१	४४	६	०	६	५२
बुध	२९	१	१२	७	३	१८	१५	ह	३८	०	शु	४१	११	क	—	२४/१७	—	३१	४०	६	१०	६	५०
गुरु	३०	२	१३	८	४	१०	१५	चि	३२	१५	शु	३२	७	तु	८/३२	—	१२/३५	३१	३७	६	१०	६	४९
शुक्र	३१	३	१४	९	५/६	३/५८	३५/२२	स्वा	२५	१०	ऐ	१७	१०	तु	—	—	—	३१	३२	६	११	६	४८

त्यौहार-व्रत / ग्रह संचार व्यवस्था

नाग पञ्चमी
श्लेषायां रविः १५।४६→
वृश्चिके भौमः २९।५२



पवित्रा एकादशी व्रतम्
प्रदोष व्रतम् स्वाती ४∠

अनुराधायां भौमः ७।२३ ∵
वक्री मूले ३ गुरुः २१।४५ ···
वक्री बुधः ७।५४
पू० फा० शुक्रः १५।४२
चतुर्थी व्रतम्
मघायां सिंहेऽर्कः १३।२८ ÷
चन्द्र षष्ठी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं %
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रतं ⇐
बुधास्त्रः पश्चिमे २२।१२ ×
राष्ट्रीय भाद्र मासारम्भः =
अजा: एकादशी व्रतम् +
उ० फा० शुक्रः १२।५० ✓

कन्यायां शुक्रः २९।४१ ⇐

चन्द्र दर्शनम् मु० ४५
हरितालिका ३ गणेश △
पू० फा० रवि ६/२५ ∝

आकाशी शकुन विचार—१ ता० नाग पंचमी में बादल वर्षा का योग शुभ शकुन जानना चाहिये। ८ ता० को स्वाती शनि बादल वर्षा सुभिक्ष में बाधा कारक रहेगा। परन्तु बृहस्पति ग्रह का संचार शुभ है इस वास्ते हानि बचेगी। प्रजा में सुख शान्ति का योग बन जायेगा। श्रवण नक्षत्र में श्रावण कीर्ति में वर्षा बादल होना अच्छा है।

आकाशी लक्षण—इस मास में जहां-तहां वर्षा के योग अच्छे बनेंगे फलतः बादल वर्षा अच्छी होने से लक्षण भ्रमबन जायेंगे। बीमारी का योग शनि मंगल करेगा। मगर ज्यादातर भ्रम फल ही करेगा।

←(सौर ३०/३१) मघामे सिंह शुक्रः २०/१५, ∠शनिः ८।३१, ∵श्रावण कर्म-रक्षा बन्धन, ···पञ्चकारम्भः २९।४२, ÷(सौर २९।१४). %स्मार्तानाम्, ⇐वैष्णवानाम्, ×गोगा ९, =सायन कन्यार्क २५/२९, +शरद ऋतु आरम्भः, ⅰ वत्स १२ प्रदोषः, ⇐वक्री मघा मे बुधः २४/१७ कुशाग्रहणी मावस, △चौथ, जिल्हेज मु० मा० १२, ∝(२५।४१) मार्गी गुरु १६/११ ऋषि पञ्चमी।

अगस्त का यह महीना मिति श्रावण सुदी पंचमी बुधवार से आरम्भ होता है। २ ता० में सिंह राशि में शुक्र का प्रवेश हो रहा है। वर्षा की कमी, वायु का प्रकोप हो। राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा। १२ ता० को वृश्चिक में मंगल आ रहा है "यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः।महर्घं सर्वं द्रव्याणां-नृपाणां कोपमा दिशेत" अतः राजनैतिक गतिविधि खराब है। सभी जिन्सों में तेजियों के योग हैं गेहूं, चना, जौ, मटरा आदि धान्यों में ४) ५) रु० की तेजियां संभव हैं। चावलों में दालों में भी तेजियां होंगी। गुड़, शक्कर, चीनी, घृत, वेजिटेबिल आयल के भाव तेज होंगे। ७ ता० से १२ ता० तक सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, धातुवाने में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बनेंगी। खरीद कर माल बेचें। १६ ता० को सिंह की संक्रान्ति का प्रभाव कुछ सामान्य रहेगा। बृहस्पति में संक्रान्ति लग रही है। ३० मुहूर्ती है, कुछ शुभफल देगी। वर्षा के योग मासान्त में अच्छे बनते नजर आते हैं।

नोट—मास के आरम्भ में मन्दा, मध्य में तेजी, अन्त में फिर मन्दा, अधिकांश जिन्सों में संभव है। संक्रान्ति का प्रभाव हितकारी रहेगा। वर्षा के योग मासान्त में ठीक हैं।

१६ अगस्त गुरुवार २४

६ बु. ४
७ श. ५ शु ३
८ सू.
के. मं. रा. २
९ गु. ११ १
१० १२ चं.

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति भादोवदी पंचमी गुरुवारे सिंह संक्रान्तिः प्रविष्ठा। यह पिछली संक्रान्ति से पांचवे वार पांचवे नक्षत्र में लगती है। अभी ३० मुहूर्ती है, वैश्य नर्तकादिको को हानिकारक है। योग तथा वार का फल इस मास में शुभ है। कौलव करण में प्रविष्ठ कुछ तेजियां बढ़ायेगी। वरुण मण्डल में वासा है अच्छी वर्षा के योग बनाती है। वारनाम मन्दा, मन्दायां मन्दताज्ञेया सर्वं धान्येषु सर्वदा, शुभ है, अग्निकोण में दृष्टि है। शूकर वाहन, बैल उप वाहन है।

मास भाग्यांक

दो, पांच, नौ, सात में,
बाईस को दो जोड़ ॥
बारह, चौदह में सजे,
भाग्य अंक का योग ॥
२×५+६÷७+२२
१२×१४÷१२
=२३—११
भाग्यांक २, ५, ६, ७

मेष मंगल अपने घर का है। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्त्री का स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। सन्तान सुख उत्तम। राजपक्ष से उत्तम लाभ। १, ७, ११, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खराब रहेगा। भाई बन्धुओं से झंझट हो। सुख में बाधा हो। सन्तान से हित हो। स्त्री सुख ठीक रहेगा। ४, ६, ८, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

धन शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। पारिवारिक सुख ठीक। व्यापार से हित हो। राजपक्ष से भी हित हो। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। ८, ११, १३, २२ ता० नेष्ट हैं।

वृष शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सन्तान के घर में शनि कुछ स्वास्थ्य में चिन्ता कारक है। शत्रु पर, रोग पर विजय होगी। राजपक्ष से हित होगा। २, ३, ८, १२, १५, २३ ता० नेष्ट हैं।

कन्या व्यय की अधिकता रहेगी। धन लाभ में बाधा होगी। स्त्री सुख, सन्तान सुख ठीक है। राजपक्ष से हित हो। व्यापार से लाभ हो। ५, ७, १०, १४ ता० नेष्ट हैं।

मकर शनि गृह वात दोष करेगा, बाकी पारिवारिक सुख उत्तम। मानसिक चिन्ता भी रहेगी। लाभ बराबर रहेगा। राजपक्ष से हित है। ४, ८, १२, २१, २३ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन पारिवारिक सुख उत्तम है। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम है। जमीन जायदाद, गृह सुख में बाधा है, झंझट हो। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। ४, ७, १०, १३, १६ ता० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक स्वास्थ्य में बात रोग बढ़े। मानसिक चिन्ता बढ़ी रहे। स्त्री, सन्तान से हित हो। व्यापार से लाभ हो। राजपक्ष से हित हो। ६, ८, ११, १२ २२ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ राजपक्ष से लाभ हितकारी होगा। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राजपक्ष से हित होगा। सन्तान से भी हित होगा। यात्रा से लाभ होवे। ५, ८, ११, २२ ता० नेष्ट हैं।

कर्क शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्त्री पक्ष ठीक है। सन्तान से हित हो। रोजगार ठीक रहेगा। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। ५, ८, ११, १४, १७ ता० नेष्ट हैं।

बृश्चिक शारीरिक स्वास्थ्य में त्रुटि, मानसिक चिन्ता बनी रहे। स्त्री सुख ठीक है। सन्तान से हित हो। रोजगार भी ठीक है। यात्रा से लाभ। ७, ९, १३, २१, २३ ता० नेष्ट हैं।

मीन बृहस्पति बराबर लाभ देगा। रोजगार ठीक रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राजपक्ष से हित होगा। ६, ८, १८, २३, २६ ता० नेष्ट हैं।

सितम्बर सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—वामन जयंती ६ गुरुवार, अनन्त चतुर्दशी ९ सितम्बर रविवार।

मिति भाद्रपद सुदी ७ शनिवार संवत् २०४१ वि० से आश्विन (क्वार) सुदी ६ रविवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्दः १९०६, जिल्हेज ४ हि० से मोहर्रम ४ हि० सन् १४०५ हि० तक। भारतीय भाद्रपद १० से भारतीय आश्विन ८ तक।

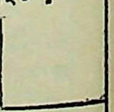


वार १०	सितम्बर सन् १९८४	जिल्हेज	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय भाद्रपद	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्यौहार व्रत उत्सवादि ग्रह संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	प्रारम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
शनि	१	४	१५	१०	७	५४	४२	वि	२५	१०	ऐं	१७	१०	वृ	१०/४०	२८/२२	—	३१	२८	६	११	६	४७	
रवि	२	५	१६	११	८	५२	४१	अ	२४	१२	वै	२२	३६	वृ	—	—	११/५७	३१	२५	६	१२	६	४६	
सोम	३	६	१७	१२	९	५२	२०	ज्ये	२४	३८	वि	७	२७	ध	३४/३८	—	—	३१	२१	६	१२	६	४४	
मंगल	४	७	१८	१३	१०	५३	४२	मू	२६	४८	प्री	४	४०	ध	—	—	—	३१	१७	६	१३	६	४२	हस्ते शुक्रः ९।३२—
बुध	५	८	१९	१४	११	५५	४	पू	३०	१२	आ	३	६	म	२५/३	१६/२७	२८/३१	३१	१३	६	१३	६	४२	पूर्वस्यां बुधोदयः १३।२३···
गुरु	६	९	१९	१५	१२	५९	५०	उ	३५	०	सो	२	३५	म	—	—	—	३१	१०	६	१३	६	४०	मार्गीबुधः १८।१७ वामन ×
शुक्र	७	१०	२०	१६	१३	५९	५९	श्र	४०	३९	शो	३	१०	म	—	—	—	३१	६	६	१४	६	४०	प्रदोष व्रतम् (ईदुलजुहा)+
शनि	८	११	२१	१७	१३	४	२०	ध	४७	२०	अ	४	१	कुं	५२/४	—	—	३१	१	६	१५	६	३९	पञ्चकारम्भः १२।५
रवि	९	१२	२२	१८	१४	९	५६	श	५४	७	सु	५	४८	कुं	—	१०/२७	२३/३४	३०	५७	६	१५	६	३८	अनन्त १४ व्रतम्
सोम	१०	१३	२३	१९	१५	१५	३२	पू	५९	५९	धृ	७	४०	मी	२८/२१	—	—	३०	५३	६	१५	६	३७	महालय श्राद्धारम्भः
मंगल	११	१४	२४	२०	१	२१	४९	पू	१	२४	शू	१०	०	मी	—	—	—	३०	४८	५	५०	६	३६	
बुध	१२	१५	२५	२१	२	२८	३	उ	८	५८	गं	१२	१५	मी	—	—	—	३०	४४	५	५१	६	३४	उत्तरा फाल्गुनी में रविः=
गुरु	१३	१६	२६	२२	३	३४	४	रे	१६	३९	वृ	१४	३०	मेषे	१६/३९	६/५४	२०/७	३०	४०	५	५२	६	३३	उतारा फा० भे रवि सौरः∠
शुक्र	१४	१७	२७	२३	४	३९	३५	अ	२३	३८	ध्रु	१६	३१	मेषे	—	—	—	३०	३६	५	५३	६	३२	चित्राभे शुक्रः ३०।१०%
शनि	१५	१८	२८	२४	५	४४	१४	भ	२९	५१	व्या	१८	१०	वृषे	२४/५९	—	—	३०	३२	५	५४	६	३०	
रवि	१६	१९	२९	२५	६	४७	५१	कृ	३५	२४	ह	१९	८	वृषे	—	२५/३७	—	३०	२८	५	५४	६	२९	कन्यायामर्कः १३।२६∞
सोम	१७	२०	३०	२६	७	५०	४	रो	२९	२४	व	१८	५७	वृषे	—	—	१४/४	३०	२४	५	५५	६	२८	पूर्वाफाल्गुनी भे बुधः ९।८
मंगल	१८	२१	१	२७	८	५०	२८	मृ	४१	५३	सि	१७	४५	मि	१०/५५	—	—	३०	२०	५	५६	६	२७	
बुध	१९	२२	२	२८	९	३९	११	आ	४२	३६	व्य	१५	०	मि	—	—	—	३०	१७	५	५७	६	२६	मातृ नवमी
गुरु	२०	२३	३	२९	१०	४५	४४	पु	४१	२९	व	१०	५७	कर्क	१७/१०	१३/२८	२४/४७	३०	१२	५	५८	६	२४	तुलायां शुक्रः १६।२६
शुक्र	२१	२४	४	३०	११	४०	२५	पु	३८	१८	प	५/५८	१२/५३	कर्क	—	—	—	३०	८	५	५८	६	२३	इन्दिरा ११ व्रतम्
शनि	२२	२५	५	३१	१२	३३	२२	श्ले	३३	२६	सि	४९	२५	सिं	२६/२८	—	—	३०	४	५	५९	६	२२	कृ० ३ राहुः अनुराधा⇐
रवि	२३	२६	६	१	१३	२५	१६	म	२७	१५	सा	३९	५५	सिं	—	१६/२५	२६/४१	३०	०	६	०	६	२१	विशाखा १ शनिः १०।१९
सोम	२४	२७	७	२	१४	१५	४५	पू	२९	५३	शु	२९	२५	कं	२९/३९	—	—	२९	५५	६	१	६	२०	बुधास्तः पूर्वे २६।२० ♌
मंगल	२५	२८	८	३	१	५५/४९	५७/२७	उ	१२	११	शु	१८	२१	कं	—	—	—	२९	५१	६	२	३	१९	स्वात्यां शुक्रः २९।४५∈
बुध	२६	२९	९	४	२	५७	२७	ह	४/५७	१३/४८	वृ	७/५७	२२/४०	तु	१५/४१	—	—	२९	४७	६	२३	६	१८	हस्ते रविः १८।४६√
गुरु	२७	१	१०	५	३	३८	५	स्वा	५०	३९	वै	४७	५	तु	—	—	—	२९	४३	६	२३	६	१७	हस्तेरविः सौरः ७।५०∴
शुक्र	२८	२	११	६	४	३१	०	वि	४५	३९	वि	३८	१	वृ	१९/२०	१५/१२	१५/५२	२९	३८	६	२४	६	१६	
शनि	२९	३	१२	७	५	२५	५९	अ	४२	३९	प्री	३०	४५	वृ	—	—	—	२९	३४	६	२४	६	१४	
रवि	३०	४	१३	८	६	२२	३९	ज्ये	४१	१५	आ	२५	१५	ध	४१/२५	—	—	२९	३०	६	२५	६	१३	









आकाशी शकुन विचार—६ ता० में बुध मार्गी हो रहा है। सिंह राशि सूर्य शुक्र का योग १६ ता० तक इस मास में वायु का प्रकोप होगा। "सिंह शुक्र जो होय भवानी चले पवन वर्षे नहीं पानी," शनि मंगल तथा सूर्य शुक्रन जानने चाहियें। वायु का संचार रहेगा। तेजी हर व्यापार की जिन्सों में बढ़ेंगी।

आकाशी लक्षण—बादल का संचार जहाँ-तहाँ होगा। वर्षा कहीं ज्यादा हो जायेगी, कहीं नहीं होगी। यह भी लक्षण शुभ ज्ञात नहीं होते हैं। बीमारी पशुओं में भी सम्भव है।

—ज्येष्ठायां भौमः ११।३२, ···जलझूलिनी ११ व्रतम्, ×जयन्ती, +बकरा ईद, =२७।१६, ∠१६।३८, %चतुर्थी व्रतम्, ∞(सौर ३९/४५) मू० भे ४ गुरुः ११/१, ⇐१ केतु १५/८ सायन तुलायामर्कः ३६/१२, ♌ शस्त्रादि हतानां श्राद्धम्, ∈ उ० फा० भे बुधः १७।८ मूलेधनुषि भौमः २३/८, √चन्द्रदर्शनं, मु ३०, ∴ कन्यायां बुधः १३/३५ मोहर्रम मु० मास सन् १४०५ हिजरी।



सितम्बर सन् 1984 ई० का मासिक भविष्यफल

महीना मिति भादों सुदी सप्तमी शनिवार से आरम्भ होता है। ग्रह दशा से ता० १६ तक व्यापारिक जिन्सों में घटा-बढी के साथ मन्दी का योग बने, जबकि मन्दी में खरीद करना व्यापारिक जिन्सों मे अच्छा है। १६ ता० बाद धीरे-धीरे तेजियां बनेंगी। गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का हर प्रकार की दालों में तेजियां बनेंगी। संक्रान्ति भी तेजी कारक है। राजनैतिक वातावरण अनिश्चित और विक्षुब्ध ही बना रहेगा। प्रजा मे पीड़ा हो रोगोपद्रव बढ़े। गुड़, शक्कर, चीनी रसादि पदार्थ तेज रहेंगे, ४) ५) रु० की तेजी गुड़, शक्कर, गल्ला में भी ३) ४) रु० की तेजियां बनेगी। ६ ता० से १२ ता० तक सोना, चादी में ७) ८) रु० की तेजियाँ बनेगी, खरीद कर माल बेचें। किराना की वस्तुओं में भी अच्छी घटा-बढी के साथ १५ ता० तक मन्दियों का रुख रहेगा। मन्दी के झोको में हर वस्तु किराने की खरीद करें आगे तेजियों के योग बनेंगे, द्राक्षा, छुवारे, बादाम की खरीद करें हल्दी, धनिया भी। राजाओं में विग्रह हो। गज संक्रान्ति का वाहन है। घटा-बढ़ी के साथ व्यापार में १५ ता० बाद मासान्त तक तेजियों का रुख बनेगा।'

१६ सितम्बर शनिवार ८४६.

शु. ७ श. | ५ बु | के. ट मं. | सू. ६ | ४ | ८ गु | ३ | चं | १० | १२ | २ रा | ११ | १

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति आसोज वदी ६ रविवार ता० १६ सितम्बर को कन्या की संक्रान्ति पहली सक्रान्ति से चौथे वार, चौथे नक्षत्र पर लगती है। प्रगल्भावस्था। (बैठी) मु० ३० है। पित्त, वायु प्रकोप करती है। उपद्रव कारक है। अग्नि मण्डल में संक्रान्ति का वास है। यह धान्यादिकों में तेजी का सूचक है। प्रजा में पीड़ा हो, वार नाम घोरा मंहगाई बढ़े, दक्षिण दिशा में संक्रान्ति का गमन है। दक्षिण देशों में प्रजा मे पीड़ा ज्यादा हो। नैऋति दिशा में भी दोष बढ़े। गज वाहन, रक्त वस्त्र, भोजपत्र कंचुकी, गो रोचन लेपनं, विल्व पुष्प धारण।

मास भाग्यांक

ग्यारह, तेईस, नौ के साथ
बत्तीस से बन जावे भाग्य,
तरेपन, छियासठ जोड़ो
सात, इक्यासी ठाईस,
पकड़ो भाग्य।

११ + ९ ÷ २३ × ३२
५३ + ६६ × २८ + ८१
= ३३ — ३६

भाग्यांक— ०, ३, ६, ८

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्त्री पक्ष से चिन्ता होगी। सन्तान से हित होगा। राज पक्ष से हित होगा। स्त्री पक्ष से कष्ट। ता० १, ६, १०, १८, २४ नेष्ट हैं।

सिंह उदर विकृति का दोष रहे। मानसिक चिंता बनी रहे। परिवारिक चिंता भी रहेगी। जमीन, जायदाद, गृह सुख उत्तम हो। शत्रु पर विजय हो। ता० ६, ८, ९, १२, २२ नेष्ट हैं।

धन वृहस्पति धन में ही है। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। रोजगार से हित होगा। राजपक्ष से भी हित होगा। यात्रा से लाभ होगा। ता० ८, ११, १३, १७, २८ नेष्ट हैं।

वृष मानसिक चिंता बनी रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यापार से लाभ होगा। पुत्र से लाभ होगा। स्त्री से कष्ट। व्यापार में उन्नति होगी। ता० ३, ७, ११, १५, २३ नेष्ट हैं।

कन्या शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम। मानसिक स्वास्थ्य श्रेष्ठ। धन लाभ में बाधा' भाई बन्धुओं से हित। जमीन, जायदाद, गृह सुख प्राप्त हो। ता० ७, ९, ११, १४, २८ नेष्ट हैं।

मकर शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जमीन, जायदाद गृह सुख उत्तम रहेगा। राज पक्ष से हित हो। रोजगार सही रहे। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। ता० ६, १२, १४, १६, २६, २७ नेष्ट हैं।

मिथुन शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सन्तान सुख उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। रोजगार ठीक बना रहेगा। या यात्रा से लाभ होगा। ता० ४, ८, १२, २२, २४ नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। धन लाभ बराबर होता रहेगा। यात्रा से लाभ होगा। यशमान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। रोजगार ठीक रहेगा। ता० ८, १६, २३ नेष्ट हैं।

कुंभ शनि शुक्र का योग आठवें स्वास्थ्य में खराबी लाता है। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य खराब रहेगा। सतान का हित होगा। रोजगार ठीक रहेगा। ता० ८, १०, १३, २५ नेष्ट है।

कर्क धन लाभ उत्तम। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। स्त्री पक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ हो। ग्रह कलह से बचें। ता० ५, ७, ९, १३, २३ नेष्ट हैं।

वृश्चिक शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यय की अधिकता बनी रहेगी। यात्रा से लाभ होगा। रोजगार उत्तम रहेगा। शत्रु, रोग पर विजय होगी। ता० ६, १०, १४, २४ नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष से हित हो। शारीरिक स्वास्थ्य में त्रुटियां बनें। सन्तान सुख उत्तम। यात्रा से हित हो। धन व्यय में कमी तथा लाभ अधिक होगा। ता० ६, ११, १४, २४, २६ नेष्ट हैं।

अक्टूबर सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—

विजया दशमी ता० ४ गुरुवार दीपावली लक्ष्मी पूजन २४ ता० अक्टूबर बुद्धवार, २५ ता० गोवर्धन अन्नकूट।

मिति आसोज सुदी १७ सोमवार से कातिक सुदी ८ बुधवार संवत् २०४१ तक। शकाब्द: १९०६। मुसलमानी मास ५ मुहर्रम हि० से ५ सफर १४०५। तक। ——भारतीय आश्विन ९ सोमवार से, भारतीय कार्तिक ९ बुद्धवार तक।

वार	अक्टूबर सन् १९८४	मुहर्रम १४०५	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय आश्विन	दैनिक तिथि: तिथि	घड़ी	पल	दैनिक नक्षत्र: नक्षत्र	घड़ी	पल	दैनिक योग: योग	घड़ी	पल	चन्द्र राशि प्रवेश: राशि	घ.प.	भद्रा: आरम्भ	समाप्त	दिनमान: घड़ी	पल	सूर्य उदय: घण्टा	मिनट	सूर्य अस्त: घण्टा	मिनट	त्यौहार-व्रत ग्रह नक्षत्रादि संचार व्यवस्था
सोम	१	५	१४	९	७	२१	२९	मू	४२	२५	सौ	२०	५९	ध	—	१२/४	२७/१५	२९	२६	६	२६	६	१२	सरस्वती आवाहन
मंगल	२	६	१५	१०	८	२२	१९	पू	४५	१०	शो	१८	२५	ध	—	—	—	२९	२२	६	२६	६	११	हस्ते बुधः २६।४६ सर ÷
बुध	३	७	१६	११	९	२४	४६	उ	४९	४१	अ	१७	१७	म	७/०	—	—	२९	१८	६	२६	६	१०	सरस्वती बलिदानम्
गुरु	४	८	१७	१२	१०	२८	५०	श्र	५५	२१	सु	१७	५०	म	—	—	—	२९	१४	६	२७	६	९	विजया दशमी १० सर ♌
शुक्र	५	९	१८	१३	११	३३	५५	ध	५९	५९	प्र	१८	४१	कुं	१७/५९	७/२	२०/२	२९	१०	६	२७	६	८	पापांकुशा ११ व्रतम् ∴
शनि	६	१०	१९	१४	१२	३९	५५	थ	२	४	शू	२०	२०	कुं	—	—	—	२९	०६	६	२८	६	६	विशाखायां शुक्रः २४।३४ △
रवि	७	११	२०	१५	१३	४५	५५	श	८	२६	ग	२२	३०	कुं	—	—	—	२९	०२	६	२९	६	५	प्रदोष व्रतम्
सोम	८	१२	२१	१६	१४	५२	१९	पू	१६	५५	वृ	२४	५५	मी	३८/०	२७/२४	—	२८	५७	६	२९	६	४	
मंगल	९	१३	२२	१७	१५	५८	२५	उ	२४	२०	ध्रु	२७	१५	मी	—	—	१९/३७	२८	५४	६	२९	६	३	शरद् पूर्णिमा को जागरी ⊥
बुध	१०	१४	२३	१८	१	५९	५९	रे	३१	३८	व्या	२९	१९	मेषे	३१/३८	—	—	२८	५०	६	३०	६	२	चित्रा भे रविः ७।४० ∠
गुरु	११	१५	२४	१९	१	४	१२	अ	३८	२९	ह	२१	७	मेषे	—	—	—	२८	४६	६	३१	६	१	
शुक्र	१२	१६	२५	२०	२	९	२०	भ	४४	२०	व	३२	२५	मेषे	—	२३/५	—	२८	४२	६	३१	६	०	
शनि	१३	१७	२६	२१	३	१३	३९	कृ	४९	५५	सि	३३	६	वृषे	६/४८	—	११/५९	२८	३८	६	३२	५	५९	चतुर्थी व्रतम्
रवि	१४	१८	२७	२२	४	१६	५१	रो	५४	१	व्या	३३	४	वृषे	—	—	—	२८	३४	६	३२	५	५८	वृश्चिके शुक्र : २९।५ ×
सोम	१५	१९	२८	२३	५	१९	१२	मृ	५७	१५	व	५१	५५	मि	१६/४५	—	—	२८	३०	६	३३	५	५७	
मंगल	१६	२०	२९	२४	६	२०	१३	आ	५९	७	प	३०	७	मि	—	१४/३४	२६/२१	२८	२६	६	३३	५	५६	तुलायामर्कः २५।१४
बुध	१७	२१	३०	२५	७	१९	५८	पु	५९	३०	शि	२७	९	कर्के	२४/१५	—	—	२८	२२	६	३४	५	५५	तुलायामर्कः सौर १३।२०
गुरु	१८	२२	१	२६	८	१८	०४	पु	१८	१५	सि	२२	२६	कर्के	—	—	—	२८	१८	६	३४	५	५४	स्वात्यां बुध : १३।२६
शुक्र	१९	२३	२	२७	९	१४	३३	श्ले	५६	३३	सा	१९	२६	सिं	४५/३३	२३/१८	—	२८	१४	६	३५	५	५३	पूषायां १ गुरु : १७।२८
शनि	२०	२४	३	२८	१०	९	३५	म	५१	२६	शु	१०	४१	सिं	—	—	१९/१९	२८	१०	६	३५	५	५२	
रवि	२१	२५	४	२९	११/१२	३४/५५	३२/२२	पू	४५	५६	शु	२४/५८	४६/४९	कं	३०/१२	—	—	२८	६	६	३६	५	५१	एकादशी रमा व्रतम्
सोम	२२	२६	५	३०	१३	४६	३६	उ	३९	२१	ऐं	४७	५१	कं	—	३५/७	—	२८	२	६	३६	५	५०	प्रदोष व्रतम् १३ धन १३
मंगल	२३	२७	६	१	१४	३७	१७	ह	३२	१०	वै	३३	३५	तु	३९/२२	—	११/१४	२७	५७	६	३७	५	४९	स्वात्यां रविः १८ →
बुध	२४	२८	७	२	३०	२८	००	चि	२४	४८	वि	२२	५३	तु	—	—	—	२७	५४	६	३८	५	४८	दीपावली लक्ष्मी पूजन ⇐
गुरु	२५	२९	८	३	१	१८	५१	स्वा	१७	४३	प्री	१२	२६	वृ	३९/४३	—	—	२७	५०	६	३९	५	४७	अस्तं शनिः १३।४२ Σ
शुक्र	२६	३०	९	४	२	१०	५३	वि	११	३०	आ	२५/३	३६/३	वृ	—	—	—	२७	४६	६	४०	५	४६	विशाखभे बुधः १९।४० +
शनि	२७	१	१०	५	३/४	४/४९	३६/४७	अ	६	४५	शो	४६	४५	वृ	—	१९/२०	३०/२४	२७	४२	६	४१	५	४५	सफर मु० मासारम्भः २
रवि	२८	२	११	६	५	५७	१२	ज्ये	३	३५	अ	४०	१८	ध	३/३५	—	—	२७	४०	६	४१	५	४५	ज्येष्ठायां शुक्रः २१।३८
सोम	२९	३	१२	७	६	५६	५७	मू	२	४९	सु	३६	१५	ध	—	—	—	२७	३५	६	४२	५	४४	
मंगल	३०	४	१३	८	७	५८	२९	पू	४	०	धृ	३३	४९	म	१४/२५	२९/५२	—	२७	३१	६	४३	५	४३	
बुध	३१	५	१४	९	८	५९	५९	उ	७	१०	शू	३३	१८	म	—	—	१५/८	२७	२७	६	४५	५	४२	बुधोदयः पश्चिमे २३।४२ ♌

आकाशी शकुन विचार—ता० ६ को बादल आवे, गर्जना करे, कहीं-कहीं वर्षा भी हो तो यह शकुन अच्छा है। १५ ता० सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र होना शुभ है। १६ ता० तुला की संक्रान्ति मंगलवारी दुर्भिक्षकारी है फसलों को नुकसान का डर है। २१ ता० से २४ ता तक बादल वर्षा का होना शुभ नहीं होगा।

आकाशी लक्षण—यहां मौसम साफ रहेगा ग्रह चाल सुधर रही है वृहस्पति के साथ मंगल का योग आकाश में उत्तम रहेगा यह मित्र ग्रह योग जनता के वास्ते हितकारी है।

÷स्वती पूजनम्, ♌स्वती विसर्जनम्, ∴पंचकारम्भः १७।५८, △मुहर्रम ताँजिया, ⊥ व्रतम्, ∠(सौर २०।११) चित्राभे बुधः १९/१८ पंचक समाप्त् १९।८, × तुलायां बुधः १९/४० भूषाभे भौमः ३५/२६, → (सौरः ३६/४८) राष्ट्रीय कातिकारम्भः, ⇐सायनं वृश्चिकेऽर्कः २१/२१ हेमन्त ऋतु आरम्भ : विशाखा २ शनिः १०/१३, Σअन्नकूट गोवर्धन पूजा, ∓ चन्द्र दर्शन ३० भ्रातृ २, ♌ गोपाष्टमी।

यह मास मिति आसोज सुदी सप्तमी सोमवार से आरम्भ होता है। १ ता० से ६ ता० तक सोना, चांदी, धातुबाने में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ ५) ६) रु० की तेजी आवेगी। गेहूं, चना, जौ, मटरा, मक्का, बाजरा भी तेज होगा। ४) ५) रु० की मन्दी का झोका मोटे अनाज में यहां संभव है, तुरन्त माल खरीद करें। देशी मास यहां आसोज पड़ता है। पांच मंगलवार इसमें पड़ते हैं। हर व्यापारिक जिन्सों में तेजी का रुख रहेगा। हर प्रकार की दालें उड़द, मूंग, मोठ, चावलों की खरीद अच्छी रहेगी। धातुबाना, सोना, चांदी में संक्रान्ति का प्रभाव तेजी का पड़ता है। गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी में भी अच्छी घटा-बढ़ी के साथ ४) ५) रु० की तेजी के बनने के योग पाये जाते हैं। किराने की वस्तुओं में काली मिर्च, हल्दी, बादाम, छुआरा, पिस्ता, चिरौंजी में अच्छी तेजी बनेगी। हर घटे भाव खरीद करना अच्छा है। सरसों, अलसी, अरण्डी, तिल, तेल वेजिटेबिल आयल के भावों में घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बनेंगी। ५) ६) रु० की तेजियां आ जाना सामान्य बात है। ग्रह दशा में शनि सूर्य का का योग, मंगल वाली संक्रान्ति तेजी अवश्य लायेगी। १४ ता० से २४ ता० तक हर घटे भाव दीपावली तक ऊपर की जिन्सों की खरीद अच्छी है।

१६ अक्टूबर मंगलवार ८४

(कुण्डली: शु ट के ६; सू बु ७ श; मं ८ गु; ५; १० ; ४; ११; १; ३ चं; १२; २ रा)

संक्रान्ति प्रवेश फल

कार्तिक वदी षष्टी मंगलवार में तुला की संक्रान्ति पिछली संक्रान्ति से तीसरे वार चौथे नक्षत्र में वृद्धावस्था (बैठी) १५ मुहूर्ती संक्रान्ति धान्य भाव तेज करती है। वरुण मण्डल में संक्रान्ति का वासा है। धातुबाने में तेजी बढ़े, महोदरी संज्ञा संक्रान्ति की है। जनता में कष्ट भय हो। धान्यों में तेजी लावे, पश्चिम दिशा में गमन है अतः पश्चिमी देशों में कष्ट हो, वायव्य कोण में दृष्टि है। वायव्य दिशा में हित हो। अश्व वाहन, सिंह उप वाहन असित वस्त्र, चर्म कंचुकी, स्वर्ण भूषणं, खिचड़ी भक्षणं, ब्राह्मण जाति है।

मास भाग्यांक

तीन, चार के गुणन में,
देवो छः का भाग।
चौदह जोड़ो पांच गुणो,
दडे में देखो भाग्य॥

३ × ४ ÷ ६ + १४ × ५

११ × १४ ÷ १०
= २५ — १२
भाग्यांक १, ५, ८, ४

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। रोजगार ठीक रहे। स्त्री के स्वास्थ्य में बाधा। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। ग्रह कलह से बचें। १, ७, ६, १२, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह भाई बन्धु परिवार मे चिन्ता हो। गृह सुख उत्तम हो। सन्तान सुख भी ठीक रहे। स्त्री पक्ष, राजपक्ष ठीक रहेंगे। रोजगार ठीक रहेगा। ५, ७, ६, ११, १५, २२ ता० नेष्ट हैं।

धन वृहस्पति मंगल का योग शारीरिक स्वास्थ्य ठीक बनाये रखेगा। व्यय की अधिकता बनी रहेगी। आमदनी भी ठीक चलेगी। सन्तान से हित। १२, १३, २२, २८ ता० नेष्ट हैं।

वृष शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे। मानसिक चिन्ता बनी रहे। राजपक्ष से हित हो। रोजगार ठीक रहे। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। २, ६, १०, १३, २४ ता० नेष्ट हैं।

कन्या धन लाभ में बाधा हो। पारिवारिक सुख सामान्य रहे। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम। सन्तान सुख उत्तम। राजपक्ष से हित हो। ६, ८, १०, १२, १४, २३ ता० नेष्ट हैं।

मकर शनि ग्रह सूर्य के साथ राजपक्ष में उतार चढ़ाव लायेगा। सूर्य नीच का है, शनि उच्च का है। इसमें उत्थान पतन ज्यादा होगा। यात्रा से लाभ। ८, ६, १३, २३ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन सन्तान के स्वास्थ्य में बाधा। स्वयं का स्वास्थ्य ठीक रहे। रोजगार से हित हो। राजपक्ष से हित हो। यात्रा में लाभ प्राप्त होगा। ३, ७, ६, १२, २५ ता० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य में बाधाएँ हों। धन लाभ बराबर होता रहेगा। पारिवारिक सुख सुविधा बनी रहेगी। यात्रा से लाभ। ६, १३, १५, २४, २७ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ भाग्य चक्र में उथल पुथल है तो भी शनि हित करेगा। मानसिक चिन्ताएँ रहेंगी। सन्तान से हित होगा। स्त्री पक्ष ठीक है। यात्रा में लाभ होगा। १०, १४, २१, २४, २५ ता० नेष्ट हैं।

कर्क जमीन जायदाद, गृह सुख में बाधा हो। सन्तान सुख उत्तम रहे। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। व्यय की अधिकता बनी रहे। यात्रा में हानि होगी। ४, ८, १०, १४, २३ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक व्यय की अधिकता बनी रहेगी। आमदनी भी होती रहेगी। राजपक्ष से हित होगा। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। सन्तान से हित होगा। १०, ११, १४, २५, २८ ता० नेष्ट हैं।

मीन राजपक्ष में वृहस्पति मंगल का योग उन्नति तथा हित करेगा। स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा। सन्तान से हित होगा। राज मार्ग बहुत प्रशस्त है। ११, १३, २३, २६, २८ ता० नेष्ट हैं।

नवम्बर सन् 1984 ई० मुख्य त्योहार— देवउठानी एकादशी ४ नवम्बर रविवार। चन्द्रग्रहण ता. ८ गुरुवार

मिति कार्तिक सुदी ८ गुरुवार संवत् २०४१ वि० से मार्गशीर्ष (अगहन) सुदी ८ शुक्रवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्दा १९०६, सफर ६ हि० से रबिलावल ६ हि० सन् १४०४ हि० तक। भारतीय कार्तिक १० से भारतीय मार्गशीर्ष ९ तक।

वार १०	नवम्बर सन् १९८४	सफर	विक्रमी कृष्णपक्ष	भारतीय कार्तिक	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिनमान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्योहार व्रत / ग्रह नक्षत्रादिनां संचार व्यवस्था
					तिथि	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	राशि	घ.प.	प्रारम्भ	समाप्त	घड़ी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
बुध	१	६	१५	१०	८	२	६	श्र	१२	४	गं	३३	१०	कु	३४/३२	—	—	२७	२४	६	४४	५	४२	पञ्चकारम्भः २४।३४
शुक्र	२	७	१६	११	९	७	०	ध	१८	१८	वृ	३४	४१	कु	—	—	—	२७	२०	६	४५	५	४१	वृश्चिके बुधः ८।९—
शनि	३	८	१७	१२	१०	१३	१२	श	२५	३९	ध्रु	१६	४४	कु	—	२५/२	—	२७	१६	६	४६	५	४०	
रवि	४	९	१८	१३	११	१९	३१	:	३६	७		२९	०	मी	१३/०	—	१४/१८	२७	१३	६	४६	५	४०	अनुराधायां बुधः ११।१२...
सोम	५	१०	१९	१४	१२	२५	५५	उ	४१	०		४१	३	"	—	—	—	२७	९	६	४७	५	४०	विशाखायां रविः २५।२६
मंगल	६	११	२०	१५	१३	३२	१	रे	४७	५६	व	४३	३५	मेषे	४७/५९	—	—	२७	६	६	४८	५	३९	विशाखायां रविः सौरः +
बुध	७	१२	२१	१६	१४	३७	४०	अ	५४	३५	सि	४५	१८	मेषे	—	२१/३२	—	२७	२	६	४९	५	३७	वैकुण्ठ १४
गुरु	८	१३	२२	१७	१५	४२	१५	भ	५९	५९	व्य	४६	१६	मे।	—	—	१०/२८	२६	५८	६	४९	५	३७	मूल धनुषि शुक्रः =
शुक्र	९	१४	२३	१८	१	४५	५६	भ	०	१९	व	४६	११	वृषे	१/२	—	—	२६	५६	६	५०	५	३६	पूषायां २ गुरुः ८।२८
शनि	१०	१५	२४	१९	२	४७	५९	कृ	९	०	प	४५	४५	वृषे	—	—	—	२६	५३	६	५०	५	३६	
रवि	११	१६	२५	२०	३	५०	०	रो	८	३६	शि	४४	१०	।	१४/१०	१४/१०	२६/२८	२६	५०	६	५१	५	३५	
सोम	१२	१७	२६	२१	४	५०	२५	मृ	११	१८	सि	४१	५५	मि	—	—	—	२६	४५	६	५२	५	३४	चतुर्थी व्रतम्
मंगल	१३	१८	२७	२२	५	४९	४३	आ	१३	१०	सा	३९	२५	कर्के	३६/३०	—	—	२६	४४	६	५२	५	३४	
बुध	१४	१९	२८	२३	६	४८	१९	पु	१३	४६	शु	३४	५९	कर्के	—	२५/४६	—	२६	४०	६	५३	५	३३	
गुरु	१५	२०	२९	२४	७	४५	३५	पु	१२	२६	शु	३०	९	कर्के	—	—	१३/१६	२६	३७	६	५५	५	३३	वृश्चिकेऽर्कः २५।५८
शुक्र	१६	२१	३०	२५	८	४२	०	श्ले	११	५५	ब्र	२४	३०	सिं	११/५५	—	—	२६	३४	६	५५	५	३३	वृश्चिकेऽर्कं सौरः ×
शनि	१७	२२	१	२६	९	३७	१९	म	९	२५	ऐं	१८	१३	सिं	—	—	—	२६	३१	६	५६	५	३२	
रवि	१८	२३	२	२७	१०	३१	२५		५	५८	वै	१०	५०	कं	१४/२५	८/१३	१९/३	२६	२९	६	५६	५	३२	
सोम	१९	२४	३	२८	११	२४	५०	।	१/५६	३३/१७	वि	१/५३	४९/५७	कं	—	—	—	२६	२६	६	५७	५	३२	अनुराधायां रविः ८/२१ %
मंगल	२०	२५	४	२९	१२	१७	२५	चि	५०	३०	आ	४४	४१	तु	१५/५२	—	—	२६	२४	६	५८	५	३१	श्रवणे भौमः १०।८ ∵
बुध	२१	२६	५	३०	१३	९	१०	स्वा	४४	२१	सौ	३५	१४	तु	—	१६/१७	२/४०	२६	२१	६	५९	५	३१	विशाखायां ३ शनिः १५/२२
गुरु	२२	२७	६	१	१४/३०	१/५७	[illegible]	वि	३८	३५	शो	२५	४५	वृ	१५/३०	—	—	२६	२९	६	५९	५	३२	राष्ट्रीय मार्गशीर्ष ∈
शुक्र	२३	२८	७	२	१	४७	२५	अ	३३	२५	अ	१७	०	वृ	—	—	—	२६	१६	७	०	५	३१	मूलधनुषि बुधः २७।४८
शनि	२४	२९	८	३	२	४३	११	ज्ये	३९	३५	शु	८	५४	ध	२८/३५	—	—	२६	१३	७		५	३१	क्रांति २ राहु विशाखा √
रवि	२५	१	९	४	३	३८	४	मू	२७	१९	शु	१/५६	५१/१३		—	—	—	२६	११	७	२	५	३१	रबिलावल मु मासारम्भ
सोम	२६	२	१०	५	४	३७	३०	पू	२६	५९	ग	५:	१६		२३/२७	६/४३	२१/२८	२६	८	७	३	५	३०	पूषायां ३ गुरुः १४।३२
मंगल	२७	३	११	६	५	३७	५९		२८	४०	वृ	५०	१०		—	—	—	२६	६	७	४	५	३०	
बुध	२८	४	१२	७	६	४०	४५	श्र	३२	२५	ध्रु	४९	४५	म	—	—	—	२६	३	७	४	५	३०	उदय शनिः ९।२२ Ω
गुरु	२९	५	१३	८	७	४५	०	ध	३७	३८	या	५०	०	कु	८/३०	२४/३०	—	२६	१	७	५	५	३०	पंचकारम्भः ८।३०
शुक्र	३०	६	१४	९	८	५०	५८	श	४४	२८	ह	५१	३८	कुं	—	—	१३/३८	२५	५८	७	६	५	३०	उ.षाठायां शुक्रः २७।१५

आकाशी शकुन विचार—१ ता० से १४ ता० तक मौसम साफ रहेगा। १५ ता० को वृश्चिक की संक्रान्ति बृहस्पति वार में शुभ फल देगी सुभिक्षकारी है तो भी समभाव रहेगी पैदावारी बढ़ेगी २१ ता० को स्वाति नक्षत्र होना अच्छा है। २३ ता० से ३० ता० तक जहां-तहां बादल वर्षा के योग चालू होंगे जो भावी वर्षा ऋतु के गर्भाधान कहलावेंगे। २८ ता० के आस-पास में शनि उदय हो रहा है जहां-तहां वर्षा के योग बनेंगे। यहां बादल वर्षा के शकुन शुभ रहेंगे।

आकाशी लक्षण—१२ ता० नवम्बर के बाद ही ये गर्भाधान वर्षा के बनेंगे ये सभी शुभ योग माने जायेंगे। गुरु शुक्र का योग यहां श्रेष्ठ है।

—उषायां भौम १३/२४ अक्षय ९, ...देवबोधिनी ११, +(१२।५६) मकरेभौमः ३३/२८ प्रदोष व्रतम् पञ्चक समाप्त २२।४८, = ११।३८ चन्द्रग्रहणम्, × १०।४६ पात स्पर्शः ५/२४ मोक्षः १३/२३, % (सौरः १७/५६) पूषांया शुक्र २४/२५ एकादशी व्रतम् ∵ प्रदोष व्रतम् ∈ मासारम्भः सायनधनुषि-सूर्यं ६/१ √ केतु १२।३६ चन्द्रदर्शन मु० १५, Ω पात स्पर्शः १२।२५ मोक्षः १/३६ चम्पा ६।



नवम्बर सन् 1984 ई० का मासिक भविष्यफल

यह मास मिति कातिक सुदी ८ बृहस्पतिवार से आरम्भ होता है। सम्वत्सर २०४१ है। २ ता० को वृश्चिक राशि में बुध का प्रवेश हो रहा है। ६ ता० को मकर में मंगल हो जायेगा। बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महर्घता, सुभिक्षंसर्वधान्यानां-लोकानां शुभ भवेत्॥१॥ मकरे च स्थिते भौमे घृत तैल महर्घता, सुभिक्षं सर्वं धान्यानां-लोकनांदुःखः पीडनम् ॥२॥ अतः रसादिक पदार्थ इस मास में अच्छे तेज हों। गल्ला भी ज्यादा मन्दा नहीं होगा। गेहूं, चना, जौ, मटरा आदि धान्यों में ४) ५) रु० की तेजी बने। सरसों, लाहा, अलसी, अरण्डी में भी ६) ७) रु० की तेजी हो। रुई, कपास, पाट बारदाना में भी तेजी हो। १४ ता० से २८ ता० तक सोना, चांदी, धातुवाने में ८) १०) रु० की तेजियां बननी संभव होगी। १६ ता० बाद कुछ मन्दे की ग्रह चाल है। रसादि पदार्थ घृत, वेजिटेबिल आयल, तेल आदि तेज हों। वृश्चिक की संक्रान्ति लगने के बाद हर वस्तु के मार्केट में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियों का वातावरण बनेगा। वस्त्रादिकों में भी तेजियां बनेंगी। पूर्व प्रान्तों में राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध होगा।

१५ नवम्बर गुरुवार ८४

बु.हृ.शु. गु. १० मं.	के ८ सू.	७ श ६
११	५ चं	
१२	रा २	४
१		३

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति मार्गशीर्ष कृ.७ गुरौ वृश्चिकेऽर्कः, पिछली संक्रान्ति से तीसरे वार चौथे नक्षत्र में प्रविष्ट होती है। बालावस्था (बैठी) १५ मुहूर्ती है, तेजी सूचक है, अग्नि मण्डल में संक्रान्ति का वासा है, दुर्भिक्ष कारक अनावृष्टि सूचक फल होता है, गुरुवार में लगने से विशेष तेजियां नहीं जायेंगी। वारनाम मन्दा कहलाती है। पूर्व दिशा में गमन होगा। श्वेत वस्त्र, भुशुण्डी आयुध, सिंह वाहन, गज उपवाहन, श्वेत कंचुकी, कस्तूरी लेपन, चंपक पुष्प धारण शाली भक्षण स्वर्ण पात्र हस्त हैं।

मास भाग्यांक

पांच, पन्द्रह, सात में,
लगे जो बीसा भाग ॥
अठाईस, चौंतीस योग में,
इक्कीस भाग से भाग्य ॥

५+१५×७÷२०

२८+३४÷२१
=४५—३६

भाग्यांक १, ५, ६, ६

मेष शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। भाग्य वृद्धि हो। रोजगार ठीक; राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ हो। मास की १, २, ८, १६, २२ ता० नेष्ट हैं।

वृष शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय। रोजगार से लाभ। यात्रा से हित। पारिवारिक सुख उत्तम। राजपक्ष से हित हो। मास की २, ४, ६, १५, २२ ता० नेष्ट हैं।

मिथुन सन्तान सुख उत्तम। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे। स्त्री सुख उत्तम। मंगलवार का व्रत करें, जिससे रोगोपद्रव न हो। यात्रा से लाभ। मास की ३, ८, १६, २४ ता० नेष्ट हैं।

कर्क शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे। स्त्री के स्वास्थ्य में खराबी मंगल करता है। राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ। सन्तान से सुख। मास की ४, ६, १२, १८, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह जमीन जयदाद, गृह सुख उत्तम रहे। सन्तान सुख उत्तम। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम। यशमान प्रतिष्ठा बढ़े। यात्रा से लाभ। मास की १, ५, ८, १३, २१ ता० नेष्ट हैं।

कन्या धन लाभ उत्तम। भाई बन्धुओं का सुख उत्तम। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम। स्त्री पक्ष से लाभ हो। यशमान प्रतिष्ठा बढ़े। यात्रा से लाभ। मास की ७, ६, ११ २२, २६ ता० नेष्ट हैं।

तुला शारीरिक स्वास्थ्य में बाधा। मानसिक चिन्ता बनी रहे। यशमान प्रतिष्ठा ठीक रहे। व्यवसाय से हित हो। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम हो। मास की ८, १०, २१, २३ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक राजपक्ष से यश मान प्रतिष्ठा बढ़े। यात्रा से लाभ हो। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। स्त्री व सन्तान से सुख। मास की ६, ७, ६, १३, १४, २४ ता० नेष्ट है।

धन शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। धन लाभ हो। पारिवारिक सुख उत्तम हो। यशमान प्रतिष्ठा बढ़े। राज पक्ष से हित हो। मास की ५, ८, १०, १५, २३, २६ ता० नेष्ट हैं।

मकर शारीरिक स्वास्थ्य में मंगल बाधक है। मानसिक चिन्ता भी रहेगी। आर्थिक लाभ होता रहेगा। स्त्री स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मास की ७, ११, १३, २३, २४ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पारिवारिक सुख हो। संतान से हित हो। रोजगार से लाभ। शत्रु पर, रोग पर विजय। मास की ८, १०, १४, १६, १८ ता० नेष्ट हैं।

मीन भाग्योदय होवे। उत्तम लाभ होवे। यशमान प्रतिष्ठा बढे। यात्रा से हित हो। सन्तान सुख उत्तम हो। राजपक्ष से हित हो। मास की ६, ११, १३, १७ ता० नेष्ट हैं।

दिसम्बर सन् 1984 ई० मुख्य त्यौहार—

गीता जयन्ती ४ दिसम्बर मंगलवार
बड़ा दिन २५ दिसम्बर मंगलवार

तिथि मार्गशीर्ष (अगहन) सुदी ९ शनिवार संवत् २०४१ वि० से पौष सुदी ९ सोमवार संवत् २०४१ वि० तक। शकाब्दः १९०६। रविमासक ७ हि० से रविमासक ७ सन् १४०५ हि० तक। भारतीय मार्गशीर्ष १० से भारतीय पौष १० तक।

वार १९	दिसम्बर सन् १९८४	रविमासक १४०५	विक्रमी प्रविष्टा	भारतीय मार्गशीर्ष	दैनिक तिथि			दैनिक नक्षत्र			दैनिक योग			चन्द्र राशि प्रवेश		भद्रा		दिन-मान		सूर्य उदय		सूर्य अस्त		त्यौहार-व्रत ग्रह नक्षत्रादिनां गृह संचार व्यवस्था
					तिथि	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	राशि	घं.प.	आरंभ	समाप्त	घटी	पल	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	
शनि	१	७	१५	१०	९	५४	५९	पू	५१	३५	व	५३	३६	मी	२०/२४	—	—	२५	५५	७	७	५	२९	
रवि	२	८	१६	११	१०	५९	५९	उ	५९	२०	सि	५६	४	मी	—	—	—	२५	५८	७	७	५	२९	ज्येष्ठायां रविः १२।३४=
सोम	३	९	१७	१२	१०	३	३८	रे	५९	५९	व्य	५८	९	मी	—	३१/३७	—	२५	५३	७	८	५	३०	मकरे शुक्रः २३।४२
मंगल	४	१०	१८	१३	११	९	५०	रे	६	४०	व	५९	५७	मेष	९/४०	—	१०/२४	२५	५१	७	९	५	३०	वक्री बुधः १३।४८ ✕
बुध	५	११	१९	१४	१२	१५	२६	अ	१३	२५	प	५९	५०	मेष	—	—	—	२५	४८	७	१०	५	३०	प्रदोष व्रतम्
गुरु	६	१२	२०	१५	१३	१९	४५	भ	१९	०	प	००	४६	वृ	२०/३३	—	—	२५	४८	७	१०	५	३०	ईद-ए-मिलाद
शुक्र	७	१३	२१	१६	१४	२२	५३	कृ	२३	२६	शिं	५०/२६	४०/३६	वृ	—	१५/३६	२७/८	२५	४६	७	११	५	३०	धनिष्ठायां भौमः +
शनि	८	१४	२२	१७	१५	२४	२९	रो	२६	२८	सा	५७	२९	मि	२६/२८	—	—	२५	४५	७	१२	५	३०	बुधास्तः पश्चिमायाम् ⇐
रवि	९	१५	२३	१८	१	२८	५०	मृ	२८	१४	शु	५४	२५	मि	—	—	—	२५	४४	७	१२	५	३०	
सोम	१०	१६	२४	१९	२	२४	१०	आ	२८	५५	शु	५०	२५	मि	—	३७/४८	—	२५	४२	७	१३	५	३०	
मंगल	११	१७	२५	२०	३	२२	२८	पु	२८	३६	ब्र	४४	५५	व कर्क	११/५०	—	१५/२८	२५	४१	७	१४	५	३०	पूषायां ४ गुरुः २६।४० Ω
बुध	१२	१८	२६	२१	४	१९	५५	पु	२७	२५	ऐं	४०	२५	कर्क	—	—	—	२५	४०	७	१५	५	३०	श्रवणे शुक्रः ८।५८
गुरु	१३	१९	२७	२२	५	१६	३५	श्ले	२५	५०	वै	३४	३०	स	२५/५०	—	—	२५	३९	७	१५	५	३१	वक्री ज्येष्ठायां बुधः ∝
शुक्र	१४	२०	२८	२३	६	१२	५३	म	२३	४०	वि	२८	१९	स	--	११/३८	३०/४७	२५	३८	७	१६	५	३१	
शनि	१५	२१	२९	२४	७	७	४०	पू	२०	५३	प्री	२२	३	क	२०/३१	—	—	२५	३८	७	१६	५	३२	मूलेधनुषिअर्कः १५।३६ ✓
रवि	१६	२२	३०	२५	८/९	३/५९	५५/१०	उ	१७	४५	आ	१४	५०	क	—	—	—	२५	३७	७	१७	५	३२	कुम्भे भौमः २६।५६
सोम	१७	२३	१	२६	१०	५४	४	ह	१४	००	सौ	७/५८	३०/३७	तु	३०/१९	१७/८	२८/७	२५	३७	७	१८	५	३२	
मंगल	१८	२४	२	२७	११	४०	१६	चि	१०	४	अ	५१	३८	तु	—	—	—	२५	३७	७	१९	५	३३	सफला ११ व्रतम्
बुध	१९	२५	३	२८	१२	४१	७	स्वा	५	४६	सु	४३	४६	वृ	२५/२०	—	—	२५	३६	७	१९	५	३३	
गुरु	२०	२६	४	२९	१३	३५	१५	वि	१/५८	३२/४५	घ	३५	५६	वृ	—	२०/३५	—	२५	३६	७	२०	५	३४	विशाखायां ४ वृश्चिके ÷
शुक्र	२१	२७	५	३०	१४	२९	५६	ज्ये	५४	३०	शू	२८	३०	ध	५४/३०	—	७/३१	२५	३६	७	२०	५	३४	सायन मकरेऽर्कः ८।५६ ⌞
शनि	२२	२८	६	१	३०	२५	२३	मू	५२	१०	गं	२१	५५	ध	--	—	—	२५	३६	७	२१	५	३५	राष्ट्रीय पौष मासारम्भः
रवि	२३	२९	७	२	१	२२	९	पू	५१	२९	वृ	१६	१०	ध	—	—	—	२५	३६	७	२१	५	३५	धनिष्ठायां शुक्रः २३।३८
सोम	२४	३०	८	३	२	२०	३५	उ	५२	१५	ध्रु	११	५३	म	९/१०	—	—	२५	३७	७	२२	५	३६	चन्द्र दर्शनम् मु० ४५
मंगल	२५	१	९	४	३	२०	४५	श्र	५५	१	व्या	८	४५	म	—	२७/१४	—	२५	३७	७	२२	५	३६	मार्गी बुधः १६।११ शने
बुध	२६	२	१०	५	४	२३	००	ध	५९	२९	ह	७	४	कु	१७/२३	—	१५/४०	२५	३७	७	२३	५	३७	
गुरु	२७	३	११	६	५	२६	३९	श	५९	५९	व	६	३०	कु	—	—	—	२५	३८	७	२३	५	३८	
शुक्र	२८	४	१२	७	६	३१	५५	भ	६	१२	सि	७	३९	मी	३८/४४	—	—	२५	३८	७	२३	५	३९	पूषायां रविः १७।४०%
शनि	२९	५	१३	८	७	३७	५५	पू	१२	०	व्या	९	९	मी	—	३१/३९	—	२५	३९	७	२३	५	३९	कुम्भे शुक्रः १९।५४
रवि	३०	६	१४	९	८	४४	२५	उ	१९	३२	व	११	१९	मी	—	—	१०/२६	२५	४०	७	२४	५	४०	
सोम	३१	७	१५	१०	९	५०	२१	रे	२७	२१	प	१३	१५	मेष	२७/३	—	—	२५	४०	७	२४	५	४०	पञ्चक समाप्त १७।१६







आकाशी शकुन विचार—१२ ता० बुधवार को पूष्य नक्षत्र का होना शुभ शकुन है। १६ ता० को कुम्भ राशि में मंगल का आना—बादल वर्षा जहाँ-तहाँ होगी, बुधोदय भी यहाँ हो रहा है, कुछ ओला कंकरी का भी डर है। शनि यहाँ वृश्चिक में २० ता० को आयेगा। यह भी वर्षा की स्थिति में बाधक है यदि यहाँ वर्षा होगी और ओला कंकरी पड़ी तो वर्षा ऋतु भादों में वर्षा की कमी रहेगी।

आकाशी लक्षण—मौसम प्रायः शुष्क ही रहेगा यही लक्षण अच्छे समझने चाहिए। कुछ प्रान्तों में ही सामान्य उपद्रव संभव है।

=(सौरः २०।५८, ✕ मोक्षदा ११ व्रतम् गीता जयन्ती पञ्चक समाप्त, + १०।२० दत्त जयन्ती, ⇐ २७।४५, Ω चतुर्थी व्रतम् ∝ वृश्चिके २१।२६, ✓(सौरः २१।३२, ÷ शनिः ३५/३३, ⌞ उत्तरायणः, → भौमः १५/४ रविमासक ४, %(सौरः २३।१४ः)



दिसम्बर सन् 1984 ई० का मासिक भविष्यफल

यह मास मिति मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी शनिवार से आरम्भ हो रहा है। १ ता० से ९ तक सोना, चांदी, धातु-बाने में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बनेगी। गेहूं, चना, जौ, मटरा आदि मोटे अनाज तेज होंगे। ४) ५) रु० की तेजियां बनेगी। रुई, कपास, पाट, बारदाना, वस्त्रादिकों में तेजियां हों। सरसों, अलसी, अरण्डी, तिलहन के भावों में ५) ६) रु० की तेजी बने। घृत तेल वेजटेबिल आयल मन्दे के झटकों में खरीद करें। किराने की वस्तुओं में भी अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी का वातावरण बनेगा। मकर राशि में शुक्र ३ ता० से ही खेती में नुकसान करेगा, फलतः तेजियां बढ़ेगी। "मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाश कृत्। जायन्तेऽत्र महर्घाणि नात्रकार्या विचारणा" फलतः ग्रह चाल तेजी की ही है। खरीदकर माल बेचने से लाभ होगा। कुम्भ का मंगल भी रसादि पदार्थों को तेज करेगा। राजनैतिक वातावरण भी विक्षुब्ध हो सकता है। सूर्य गुरु का योग १५ ता० से अच्छी घटा-बढ़ी में कुछ जिन्सों में मन्दी के झोके देगा, वहां खरीद करना अच्छा है।

१५ दिसम्बर शनिवार ८८६

शु १० म | के ८ श बु | बृ ९ सू | ११ | ७ | १२ | ६ | १ | ३ | चं ५ | २ रा | ४

संक्रान्ति प्रवेश फल

मिति पौष कृ. ७ सप्तमी शनौ० धनुष्यर्कः, यह संक्रान्ति पिछली संक्रान्ति से तीसरे वार तीसरे नक्षत्र पर लगती है। वारनाम राक्षसी, चाण्डालान् सुखदा, नक्षत्रनाम मन्दा, विप्रानपि सुखदा, अपराह्ण व्यापिनी, वैश्यान् हन्ति, बालवकर्णे. प्रविष्टा वाहनं व्याघ्रः, पीत वस्त्रं, गदायुधं पायस भक्षणम्, कंकुम लेपनं, रौप्यपात्रम्, कुमारी अवस्था अभो मुहूर्ती ३०, धान्य भाव सम।

मास भाग्यांक

चौदह, चव्वन नौ के साथ,
भाग पिचहतर का हाथ।
बावन का हर में भाग,
दो के साथ गुणन से भाग्य॥

$$\frac{९ + १४ \times ५४ \div १५}{२ \times ७ \div ५२} = ३५—५१$$

भाग्यांक ०, ६, ८, ९

मेष शारीरिक तथा मानसिक चिन्ताएँ बढ़ेगी। राजपक्ष में सूर्य गुरु का योग उत्तम लाभ देगा। परिवार सुख उत्तम रहेगा। स्त्री सुख उत्तम है। १, ५, ७, १०, १४, २३ ता० नेष्ट हैं।

सिंह शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। धन लाभ होवे। परिवार सुख उत्तम। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय हो। यात्रा से लाभ होगा। ५, ७, ९, १०, १४ ता० नेष्ट हैं।

धन खर्च बहुत होगा। पारिवारिक सुख सुविधा होगी। राजपक्ष से हित होगा। स्त्री पक्ष ठीक रहेगा। व्यापार में उन्नति प्राप्त होगी। ४, ६, १०, १३, २४ ता० नेष्ट हैं।

वृष शत्रु पर, रोग पर विजय होगी। मानसिक चिन्ताएँ बनी रहेंगी। राजपक्ष से हित होगा। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। रोजगार से हित होगा। २, ४, ६, ११, १६ ता० नेष्ट हैं।

कन्या शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम। मानसिक चिन्ता बनी रहे। राजपक्ष से हित हो। यात्रा में लाभ हो। स्त्री सुख उत्तम। किसी अजनबी व्यक्ति से मुलाकात। ४, ८, ११, १५, १६ ता० नेष्ट हैं।

मकर शुभ कामों में व्यय अधिक हो। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। राजपक्ष से हित हो। यात्रा में लाभ हो। परिवार सुख उत्तम। ५, ८, १४, २४, २९, ३० ता० नेष्ट हैं।

मिथुन सन्तान के स्वास्थ्य में चिन्ता, स्वयं का स्वास्थ्य उत्तम। स्त्री पक्ष उत्तम। शत्रु पर, रोग पर विजय। राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ। ३, ५, ८, १२, १७, १७ ता० नेष्ट हैं।

तुला धन लाभ होगा। परिवार सुख श्रेष्ट। जमीन जायदाद, गृह सुख उत्तम हो। राजपक्ष से हित हो। यात्रा से लाभ हो। ग्रह कलह से बचें। ५, ९, ११, १४, १७ ता० नेष्ट हैं।

कुंभ राजपक्ष से हित हो। रोजगार उत्तम रहे। यश मान प्रतिष्ठा बढ़े। शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहे। यात्रा से लाभ प्राप्त होगा। ६, ९, ११, १५, २३, २६ ता० नेष्ट हैं।

कर्क शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रु पर, रोग पर विजय। राजपक्ष से हित। रोजगार से हित। यात्रा से हानि प्राप्त होगी। ४, ६, ९, १३, १८, २८ ता० नेष्ट हैं।

वृश्चिक शारीरिक स्वास्थ्य में वायु बाधा। मानसिक चिन्ता बनी रहे। सन्तान से हित हो। यात्रा से लाभ हो। गृह कलह से बचें। १, ३, ९, ८, १३, २३, २८ ता० नेष्ट हैं।

मीन बृहस्पति सूर्य का योग राजपक्ष में मान बढ़ाता है। आर्थिक लाभ ठीक रहेगा। रोजगार सही। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। ६, ९, ११, १५, २३ ता० नेष्ट हैं।



भारत का वर्चस्व तथा भारत का संसार पर प्रभाव सन 1984




भारतीय कांग्रेस की जन्म कुण्डली

यहां यह विषय विचारणीय है कि हमारे देश भारत की राशि धन है और सन् १९८४ ई० में धन राशि में बृहस्पति ग्रह का संचार चलेगा जो कि बृहस्पति ग्रह धन राशि का मालिक है तथा भारत की सत्ता भारतीय कांग्रेस के हाथों में है। भारतीय कांग्रेस की जन्म-कुण्डली मीन लग्न की ग्रह स्थिति से भी बृहस्पति ग्रहों को अधिकार देती है। अतः भारत का वर्चस्व संसार की दृष्टि में विशेष महत्वपूर्ण हो जाने वाला है। सुरक्षा परिषद् में अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस व ब्रिटेन इन पांच महाशक्तियों का अधिकार है। ये देश स्थायी सदस्य हैं दस देश अस्थायी सदस्य होते हैं वे बदलते रहते हैं। पिछले दिनों भारत में गुट-निरपेक्ष देशों का शिखर सम्मेलन हुआ था। यह विश्व के देशों को ज्ञात है कि इसका अधिकार प्रमुख रूप से भारत को ही प्राप्त हो गया है। वृश्चिक राशि में बृहस्पति की चाल यद्यपि भारतीय कांग्रेस कुण्डली में भाग्य भाव में नवम्बर सन् १९८२ ई० में ही आ गई थी और दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक बृहस्पति धन राशि में जब तक रहेगा भारतवर्ष का वर्चस्व बढ़ता ही जायेगा। गुट-निरपेक्ष देशों को एक-वाक्यता नैतिक बल में भारत के नेतृत्व को हित पहुंचायेगी। ग्रहदशा में बृहस्पति स्वयं नैतिक बल भारत को देगा और भारत की मान्यता बढ़ेगी। सुरक्षा परिषद् की सदस्यता भी भारत को सुलभ हो जायेगी।

(२) गुट-निरपेक्ष देशों के शिखर सम्मेलन के भारत में सफल होने के कारण भी बृहस्पति ग्रह के बली योग द्वारा भारत का वर्चस्व संसार में बढ़ गया है और बढ़ेगा भी, सन् १९८४ ई० भारत के वास्ते महत्वपूर्ण काल होगा। १०१ राष्ट्रों की एक-वाक्यता बहुमत के साथ भारत विश्वशान्ति, सौहार्द, परस्पर स्नेह बढ़ाने में अपनी भूमिका सही अदा करेगा और सक्रिय योग से यश का भागी होगा। गुट-निरपेक्ष देशों के सहयोग के आन्दोलन द्वारा भारत संसार के घटना चक्र में अच्छा भागी बनेगा। धन राशि का बृहस्पति इसमें भारत की राशि का स्वामी ग्रह अपने घर का सन् १९८४ ई० में बना रहेगा। यह उच्च बलशाली ग्रहदशा स्वतः भारत को निकट भविष्य में सुरक्षा परिषद् में भी उत्तम स्थान दिलाने में सफलता देगी ऐसा हमारा विश्वास है।

(३) दुनिया में संघर्ष का बोलबाला है जो हानि का ही द्योतक है। इस दिशा में भारतीय कांग्रेस की जन्म-कुण्डली का स्वामी बृहस्पति स्पष्ट रूप से सन् १९८४ ई० को भारत के हित में ला देता है। सुरक्षा परिषद् में भी शनि का प्रवेश अथवा पहुंचना संभव हो जाने से भारत का इतिहास क्रमशः बढ़ेगा और समस्त विश्व के विद्वेषपूर्ण तनाव में अन्तर होकर अच्छाई तथा अच्छेपन की लहर व्याप्त हो जायेगी। ऐसी ग्रहदशा में धन के बृहस्पति तथा तुला के शनि में संभव पाई जाती है।

गुट-निरपेक्ष देशों की एक-वाक्यता से आन्दोलन को नया मार्ग बृहस्पति ग्रह के द्वारा भारतवर्ष अवश्य देगा। इस सम्वत्सर २०४० के अन्दर मंगल शनि का योग भारतीय कांग्रेस की जन्म कुण्डली के अष्टम भाव में तुला राशि में कुछ दिनों तक चलेगा। यह जहां उत्तम प्रतिष्ठा तथा विशेषता का द्योतक है वहां अन्दरुनी दोष, कुछ देशों की वैमनस्य भावना हानि को भी देगी परन्तु शनि बराबर हित करेगा और धन राशि का बृहस्पति ज्योंहि सन् १९८३ के अन्त में होगा वहां से दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक एक वर्ष निरन्तर भारत की प्रभावशाली स्थिति को बना देगा और भारत का वर्चस्व तथा प्रभाव समस्त देशों में बढ़ेगा।

पंचागकर्ता—पं. मुकट बिहारी शर्मा, मु० पो०—पैगांव, जिला—मथुरा (उ० प्र०)

'अवसि देखिये देखन जोगू । मन इच्छा फल पावै लोगू '

भाग्योदय, मनोकामना-सिद्धि, लक्ष्मी-प्राप्ति आदि के अद्भुत चमत्कारिक यन्त्र

हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिए साधन बतलाए हैं। यदि श्रद्धा एवं विश्वास के साथ उन साधनों को प्रयोग में लाया जाय तो अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है। क्योंकि श्रद्धा और विश्वास से किया गया कार्य फलदायक होता है। जैसा कि प्रमाण है "विश्वासः फलदायक." विश्वास ही फलदायक है। इन साधनों की उन्होंने विधियां भी बतलाई हैं। बिना विधि के भी सिद्धि नहीं मिलती। इसलिए विधिपूर्वक होना अति आवश्यक माना गया है। इसमें जो कठिनाइयां आती हैं उनको पार करना पड़ता है और तब कहीं सिद्धि मिल पाती है। श्रद्धा, विश्वास और विधिपूर्वक किए बिना कोई भी साधन सफल नहीं हो सकता है। कोई कहते हैं कि जो भाग्य में लिखा होगा वही होगा क्या कोई भाग्य को भी पलट सकता है? इसका उत्तर इस प्रकार जानना चाहिए जब भाग्य पलटने वाला होता है तभी भाग्य पलटने के साधन प्राप्त हो सकते हैं अन्यथा नहीं। जैसीकि गोस्वामी तुलसीदासजी की उक्ति है—'तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिलै सहाय। आपु न आवै ताहि पै, ताहि तहां लै जाय।' इससे स्पष्ट है जब तक भाग्य पलटने वाला नहीं होगा तब तक कोई साधन मिल ही नहीं सकता। इसके अलावा मन्त्र-शक्ति में भी अद्भुत प्रभाव होता है। वह भाग्य के कठिन अंक को भी मिटाने में समर्थ होता है, जैसा कि लिखा है—"मन्त्र महामणि विषय व्याल के, मेटत कठिन कुअंक भाल के ।। इससे स्पष्ट है कि हमारे पूर्वजों ने कार्य की सिद्धि के लिए जो साधन बताए हैं, वे यदि सविधान, श्रद्धा एवं विश्वास के साथ किए जायं तो निष्फल नहीं होंगे। परन्तु उनको सुसमय पर प्रत्येक के लिए करना बड़ा ही दुष्कर कार्य है। इसी कारण से सभी के लिए समान रूप से प्रयोग में लाने के लिए निम्नलिखित यन्त्र हमारे कार्यालय में सविधान श्रद्धा एवं विश्वास के साथ सुसमय पर तैयार किए जाते हैं जिनको श्रद्धा एवं विश्वास के साथ धारण करने से तत्तत्फल मिलता है। अपनी कार्य-सिद्धि के लिए जो भी यन्त्र मंगाना चाहें, नियत फीस भेज कर मंगायें।

● **सिद्ध बीसा यन्त्र**—इस यन्त्र के पास होने से सभी प्रकार की मनोकामना पूरी हो जाती है और किसी भी प्रकार के अनिष्ट की आशंका नहीं रहती है। यह यन्त्र व्यापारियों की तो जान है। गल्ले में रखने व गद्दी पर दीवार में टांगने से व्यापार में अत्यन्त लाभ मिलता है। दीवार पर टांगने वाले, व गल्ले में रखने वाले तांबे के ताबीज में भरे गये यन्त्र का मूल्य: स्वदेश में 21) इक्कीस रुपये, विदेश में 3 पौंड। चांदी के ताबीज में मूल्य: स्वदेश में 51/ इक्यावन। विदेश में, 7 पौंड अष्टधातु के ताबीज में मूल्य- 101/-एक सौ एक रु. विदेश में, 14 पौंड। सोने के ताबीज में मूल्य-151/-रु० एक सौ इक्यावन रुपया विदेश में 22 पौंड/

● **सिद्धिदाता भाग्योदय यन्त्र**—जिन का भाग्य विपरीत चल रहा है। बहुत प्रयत्न करने पर भी नौकरी या रोजगार का जरिया ठीक न बन रहा हो, मन में चिन्ता व्याप्त हो और समय भी खोटा दीख पड रहा हो उस समय यह यन्त्र मंगाकर धारण करें, भाग्योदय होगा। फीस मय डाक-खर्च 21/- इक्कीस रुपया मात्र।

● **सर्व मनोकामना यन्त्र**—इस यन्त्र के धारण करने से आपकी मनोकामना पूरी होगी। परीक्षा में पास होना, मुकदमे में विजय, खेती या व्यापार से लाभ आदि की प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होगी, और आपका भाग्य चमकेगा। ११) ग्यारह- खर्च ११) ग्यारह मात्र।

● **व्यापार सिद्धि यन्त्र**—व्यापार में जिन्हें लाभ न मिल रहा हो और व्यापार करने में नुकसान ही हाथ लग रहा हो, उनके लिए यह यन्त्र धारण करना चाहिए। इससे व्यापार में लाभ के साथ व्यापार की उन्नति होगी और व्यापार में यश भी प्राप्त होगा। फीस मय डाक-खर्च ११) ग्यारह मात्र।

● **सर्व-चिन्ता-हरण यन्त्र**—यह यन्त्र अपने नाम के अनुसार ही गुणकारी है। इससे प्रत्येक प्रकार की चिन्ता का हरण होता है अर्थात् इससे सब तरह की चिन्ता नष्ट हो जाती हैं, और जीवन में सफलता प्राप्त होती है ११) ग्यारह रु०

● **सर्व विघ्न विनाशक यन्त्र**—जिन को प्रत्येक कार्य में बाधा आती हो अर्थात् जिस कार्य को शुरू करें उसी में रोड़ा अटक जाता हो। अथवा जिनकी दुकान न चल रही हो उन्हें यह यन्त्र मंगाकर धारण करना चाहिए। मूल्य ११) रुपया

● **लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र**—जो ऋण से ग्रसित हों, अथवा जिनको बहुत प्रयत्न करने पर भी लक्ष्मी प्राप्त न हो रही हो, जो भी काम करें उसमें लक्ष्मी का अभाव रहता हो, उनके लिए इस यन्त्र को धारण करना चाहिए। उनकी गरीबी दूर होगी। ऋण से छुटकारा मिलेगा। फीस ११·०० रु० ग्यारह रुपया मय डाक-खर्च।

● **विशेष नोट**—लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र के साथ "सिद्धिदाता भाग्योदय यन्त्र" अवश्य मंगाना चाहिए तभी प्रसन्नता प्राप्त होगी, अथवा लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए 31/रु० का मनीआर्डर भेज कर तांत्रिक अंगूठी मंगायें।

पता— व्यवस्थापक, ज्योतिष भवन, मु०पो० पैगांव, जि०मथुरा, उ०प्र०(भारत)

विशेष सूचना — व्यापारिक हल-चलें इस वर्ष में बहुत ही अच्छी रहेंगी। इस लिए इस वर्ष के खास-खास चान्स हमारे कार्यालय में तैयार किये गए हैं। जिन से समय-समय पर व्यापार की गति जानी जा सकती है और व्यापार में लाभ उठाया जा सकता है। स्पेशल मासिक चान्स की प्रत्येक वस्तु की फीस **21/-** रु० इक्कीस रुपये तथा स्पेशल त्रैमासिक चान्स की प्रत्येक वस्तु की फीस **51/-** इक्यावन रुपये तथा वार्षिक स्पेशल चान्स की फीस **151/—** रुपयें है। प्रत्येक चान्स मंगाने से पूर्व मनीआर्डर द्वारा फीस भेजनी चाहिए, ताकि समय से चान्स मिल सके। मनी आर्डर भेजने वालों के चान्स पहले भेजे जाते हैं। वी. पी. द्वारा चान्स नहीं भेजे जाते

द्रव्य-प्राप्ति के अमोघ साधन

जिन्हें व्यापार में लाभ न मिलता हो, जिन की जन्म-कुण्डली में दरिद्रता का योग हो, जिन्हें कोशिश करने पर भी लाभ हाथ न लगा हो, जिनके जीवन में धन का अभाव रहता हो, पैसे की कमी हो अथवा ऋण बढ़ गया हो, उनको निम्न चौपाई का सविधान निरंतर जाप करना चाहिए। पैसे की कमी अवश्य दूर होगी और लाभ मिलेगा—

विश्व भरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥
गई बहोरि गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

इस का सवा लाख १२५००० जप सविधान होना चाहिए। जो इसे न कर सकें उनके लिए हमारे कार्यालय में तांत्रिक अंगूठी तैयार की गई है। जिसके धारण करने से महा दरिद्री योग भी दूर हो जाता है तथा नुकसान की जगह लाभ ही हाथ आता है। इस अंगूठी के अनेकों प्रशंसा के पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। विदेशों तक में यह अंगूठी अपने कार्य के लिए प्रसिद्ध है। फीस स्पेशल नं० १ तांत्रिक अंगूठी की **31/-** रु०, नं० २ की **21/-** रु०।

मनोकामना-सिद्धि यन्त्र — इस यन्त्र को हम अपने कार्यालय में दीपावली के शुभ अवसर पर सिद्ध करके बनाते हैं। इस यन्त्र के द्वारा आपकी मनोकामना, जैसे व्यापार में लाभ, मुकदमे में विजय पाना आदि सभी कामनाएं इस यन्त्र के धारण करने से पूरी होंगी तथा सभी प्रकार का जादू, टोना, भूत-प्रेत का लगना आदि सभी व्याधियां भी दूर होंगी। और शुभ फल प्राप्त होगा। अपनी मनोकामना सिद्धि के लिए मंगाइए। फीस **11/-** ग्यारह रुपया सिर्फ मय डाक-खर्च।

पता— व्यवस्थापक, ज्योतिष भवन मु०पो० पैगांव, जिला मथुरा उत्तर प्रदेश (भारत)

राशि तथा नक्षत्र देखने की विधि

● जिस पुरुष को अपने राशि तथा नक्षत्र देखने की इच्छा हो उसे चाहिए कि अपने नाम का पहला अक्षर निम्नलिखित सारणी में देखें, जहां यह अक्षर मिले उसके ऊपर जो राशि लिखी है, बस, जातक की वही राशि होगी और जो नक्षत्र इसकी बाईं ओर है, उसका वही नक्षत्र होगा।

उदाहरण—किसी जातक का नाम रणसिंह भारद्वाज है, उसकी राशि और नक्षत्र देखने के लिए उसके नाम का पहला अक्षर 'र' सारणी में देखो। वह अक्षर तुला राशि के नीचे पड़ा है और उसकी बाईं ओर चित्रा नक्षत्र लिखा है। इस रणजीतसिंह भारद्वाज की राशि तुला और नक्षत्र चित्रा हमें प्रतीत हुआ।

मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धन		मकर		कुम्भ		मीन	
नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर	नक्षत्र	अक्षर
अश्वि	चु	२	इ	३	क	४	हि	मघा	म	२	टो	३	र	४	तो	मूला	ये	२	भो	३	गु	४	दि
२	चे	३	उ	४	कि	पुष्य	हु	२	मि	३	प	४	रि	अनु	न	२	यो	३	ज जि	४	गे	उभा	दु
३	चो	४	ए	आर्द्रा	कु	२	हे	३	मु	४	पि	स्वा	रु	२	नि	३	भ	अभि	जू	शत	गो	२	थ
	ल	रोहि	ओ	२	घ	३	हो	४	मे	हस्त	पु	२	रे	३	नु	४	भि	[illegible]	जे जो	२	स	३	झ
भर	लि	२	व	३	ङ	४	ड	पूफा	मो	२	ष	३	रो	४	ने	पूषा	भु	४	ख	३	सि	४	ञ
२	लु	३	वि	४	छ	आश्ले	डि	२	ट	३	ण	४	त	ज्ये	नो	२	ध	श्रवण	खि खु	४	सु	रेव	दे
३	ले	४	वु	पुन	के	२	डु	३	टि	४	ठ	विशा	ति	२	य	३	फ	[illegible]	खे खो	पूभा	से	२	दो
४	लो	मृग	वे	२	को	३	डे	४	टु	चि	पे	२	तु	३	यि	४	ढ	धनि	ग	२	सो	३	च
कृत्ति	अ	२	वो	३	ह	४	डो	उफा	टे	२	पो	३	ते	४	यु	उषा	भे	२	गि	३	द	४	चि

जन्त्री कैसे देखनी चाहिए?

राशियों का आपके जीवन पर प्रभाव

इस जन्त्री के कालम इस तरह बनाये गए हैं कि देखने में तनिक भी परेशानी न हो। पहले कालम में वार, दूसरे में अंग्रेजी महीने की तारीख, तीसरे में इस्लामी तारीख, चौथे में विक्रमी तारीख, पांचवें में राष्ट्रीय, अर्थात् शक तारीख; छठे में तिथि, घड़ी-पल; सातवें में नक्षत्र, घड़ी-पल; आठवें में योग, घड़ी-पल; नवें में चन्द्रमा-राशि-प्रवेश, घड़ी-पल; दसवें में भद्रा प्रारम्भ व समाप्त, घड़ी, पल; ग्यारहवें में दिनमान सूर्योदय से अस्त तक कितने घड़ी-पल हैं; बारहवें में कितने बजकर कितने मिनट पर सूर्योदय होगा, तेरहवें में सूर्यास्त होने का समय घण्टा-मिनट में, चौदहवें में त्यौहार व व्रतोत्सवादि दिये गए हैं।

● ऋतु व राशि सम्बन्ध—मीन १२ मेष १ का सूर्य होने से बसन्त ऋतु, वृष २ मिथुन ३ के सूर्य से ग्रीष्म ऋतु और कर्क ४ सिंह ५ के सूर्य से वर्षा ऋतु होती है, कन्या ६ तुला ७ के सूर्य से शरद ऋतु, वृश्चिक ८ धन ९ के सूर्य से हेमन्त ऋतु, मकर १० कुम्भ ११ के सूर्य होने से शिशिर ऋतु होती है।

● देशी महीनों के नाम—१. चैत्र, २. बैसाख, ३. ज्येष्ठ, ४. आषाढ़, ५. श्रावण, ६. भाद्रपद, ७. आश्विन, ८. कार्तिक, ९. मार्गशीर्ष, १०. पौष, ११. माघ और १२. फाल्गुन ये बारह मास हैं।

नोट—विशेष जानकारी के लिए 'सरल सुगम ज्योतिष' मंगाएं। मूल्य 15.00

जन्त्री की परिभाषा और उसका ज्ञातव्य विवरण

प्राचीन पद्धति के अनुसार हमारे यहां पंचांग प्रचलित है। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण जिसमें ये पांच लगे होते हैं; अर्थात् तिथ्यादि पांच अंगों वाला ही पंचांग है। इसी का दूसरा रूप जन्त्री है। विदेशी लोगों की सहायतार्थ पंचांग को यह रूप दिया गया था। अंग्रेजी शासन के समय सभी अदालत आदि के कार्य अंग्रेजी तारीखों व अंग्रेजी सनों में होने लगे थे। अतः अंग्रेजी तारीखें अधिक प्रचलित हो गईं और सारे भारतवासी भी उन्हीं तारीखों से कार्य करने लगे। अंग्रेजी-शासन के पहले मुसलमानी तारीखों से कार्य होते थे और भारत में जो मुसलमान बसे हुए हैं वे अभी भी अपनी उन्हीं मुसलमानी तारीखों से अपने उत्सव मनाते हैं। हिन्दी तारीखें भी संक्रान्तियों से शुरू होती हैं, लेकिन ये संक्रान्तियों के हिसाब से पंचांग की तिथियों से भिन्न हैं। उनको मानकर भी बहुत-से हिन्दू अपने कार्य कर रहे हैं। उपर्युक्त इन सभी अंग्रेजी तारीखों आदि का समावेश हिन्दू मुसलमान आदि प्रत्येक की सुविधा के लिए जन्त्री में किया गया है और अंग्रेजी तारीख के अधिक प्रचलित होने के कारण अंग्रेजी तारीख, महीना और सन् से ही यह प्रारम्भ की जाने लगी, जिसका पूर्ण विवरण निम्न प्रकार है—

● **अंग्रेजी सन्**—विक्रम संवत् में से ५७ घटाने पर अंग्रेजी सन् निकल आता है, जैसे संवत् २०२९ में से ५७ घटाने पर २०२९—५७ = १९७२ अंग्रेजी सन् हुआ।

● **अंग्रेजी तारीख व महीना**—अंग्रेजी तारीखें महीनों के सामने लिखी जाती हैं, क्योंकि ये तारीखें प्रत्येक महीनों की अलग-अलग होती हैं। अंग्रेजी वर्ष जनवरी मास से शुरू होता है। यहां बारहों महीनों के नाम क्रमशः तारीखों सहित लिखे जाते हैं। जनवरी ३१, फरवरी २८ व २९ (यदि सन् की संख्या ४ से पूरी-पूरी विभाजित हो जाये तो फरवरी २९ और पूर्णांक न बटे तो २८ की होती है), मार्च ३१, अप्रैल ३०, मई ३१, जून ३०, जुलाई ३१, अगस्त ३१, सितम्बर ३०, अक्टूबर ३१, नवम्बर ३० और दिसम्बर ३१ तारीखों (दिन) का होता है।

● **मुसलमानी सन्**—विक्रमी संवत् में से ६३८ घटाने पर मुसलमानी (हिजरी) सन् होता है।

● **मुसलमानी तारीख**—शुक्ल पक्ष में चन्द्र-दर्शन (द्वितिया या दौज) को महीना पूरा हो जाता है और चन्द्र-दर्शन के दूसरे दिन तृतीया (तीज) से १ तारीख शुरू होती है।

● **मुसलमानी महीनों के नाम**—१ मुहर्रम, २ सफर, ३ रविलावल, ४ रविलाखर, ५ जमादी लावल, ६ जमादी लाखर, ७ रज्जब, ८ शाबान, ९ रमजान, १० शव्वाल, ११ जिल्काद, १२ जिल्हेज। मुसलमानी त्यौहार हर मास में समय-समय पर लिख दिये गए हैं।

● **हिन्दी तारीख**—प्रविष्टा (हिन्दी) तारीख मेष की संक्रान्ति से शुरू होती है। इसके महीने बैसाख आदि होते हैं। मेष की संक्रान्ति जिस दिन लगेगी, उस दिन प्रविष्टा (हिन्दी) की पहली तारीख बैसाख मास की होगी। इसी प्रकार प्रत्येक संक्रान्ति लगने के दिन प्रत्येक महीने की पहली तारीख जाननी चाहिए।

● **बंगला**—विक्रमी संवत् में से ६४० घटाने पर बंगला सन् निकल आता है।

● अब पंचांग का विवरण लिखते हैं। जैसे ऊपर तिथ्यादि पांच अंग लिखे हैं, उनको तथा भद्रा आदि को, जो पंचांग में हैं, उनको समझाते हैं। इस समय हमारा पंचांग विक्रमी संवत् और शालिवाहन शाके की गणना से हर वर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है।

● **तिथियों के नाम**—१ प्रतिपदा (पड़वा), २ द्वितीया (दौज), ३ तृतीया (तीज), ४ चतुर्थी (चौथ), ५ पंचमी (पांचें), ६ षष्ठी (छठ), ७ सप्तमी (सातें), ८ अष्टमी (आठें), ९ नवमी (नौमी), १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी (तेरस), १४ चतुर्दशी (चौदस), १५ पूर्णिमा (शुक्ल पक्ष में), ३० अमावस्या (कृष्ण पक्ष में)।

● **वार नाम**—१ रविवार, २ सोमवार, ३ मंगलवार, ४ बुधवार, ५ बृहस्पतिवार, ६ शुक्रवार, ७ शनिवार—ये सात वार हैं। ये अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से आधी रात तक रहते हैं और हिन्दी पंचांग में सूर्योदय से दूसरा वार होता है।

● **नक्षत्र नाम**—१ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाति, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़ा, २१ उत्तराषाढ़ा, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वाभाद्रपदा, २६ उत्तराभाद्रपदा २७ रेवती—ये सत्ताईस नक्षत्र हैं। २८वां अभिजित् नक्षत्र उत्तराषाढ़ के 'चतुर्थ' (चौथे) चरण तथा श्रवण के पहले १५वें भाग में ही सम्मिलित है।

● **योग नाम**—१ विष्कुम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगंड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल १० गंड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरियान, १९ परिघ २० शिव, २१ सिद्ध, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र और २७ वैधृति—ये सत्ताईस योग हैं।

● करण—एक तिथि में दो करण रहते हैं ! तिथि के पूर्वार्द्ध में एक करण और तिथि के उत्तरार्द्ध में दूसरा करण होता है। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के हिसाब से तिथियों में उनका पृथक पृथक भोगकाल रहता है। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध से शकुनि आदि चार स्थिर करण होते हैं। यथा—चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनि, अमावस के पूर्वार्द्ध में चतुष्पाद, उत्तरार्द्ध में नाग और प्रतिपदा में किंस्तुघ्न रहता है।

● शुक्ल पक्ष की तिथियों के करण—प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंस्तुघ्न, उत्तरार्द्ध में बव, द्वितीया के पूर्वार्द्ध में बालव, उत्तरार्द्ध में कौलव, तृतीया के पूर्वार्द्ध में तैतिल, उत्तरार्द्ध में गर, चतुर्थी के पूर्वार्द्ध में वणिज, उत्तरार्द्ध में विष्टि, पंचमी के पूर्वार्द्ध में बव, उत्तरार्द्ध में बालव, षष्ठी के पूर्वार्द्ध में कौलव, उत्तरार्द्ध में तैतिल, सप्तमी के पूर्वार्द्ध में गर, उत्तरार्द्ध में वणिज, अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विष्टि, नवमी के पूर्वार्द्ध में बालव, उत्तरार्द्ध में कौलव, दशमी के पूर्वार्द्ध में तैतिल, उत्तरार्द्ध में गर, एकादशी के पूर्वार्द्ध में वणिज, उत्तरार्द्ध में विष्टि, द्वादशी के पूर्वार्द्ध में बव, उत्तरार्द्ध में बालव, त्रयोदशी के पूर्वार्द्ध में कौलव, उत्तरार्द्ध में तैतिल, चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में गर, उत्तरार्द्ध में वणिज, पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में विष्टि, उत्तरार्द्ध में बव जानना चाहिए। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष के करणों को भी यथाक्रम जान लेना चाहिए।

● भद्रा का तिथियों में निवास—कृष्ण पक्ष में तृतीया और दशमी के उत्तरार्द्ध में तथा सप्तमी व चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है। शुक्ल पक्ष में अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में तथा एकादशी और चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में भद्रा होती है।

● चन्द्रमा का राशि-निवास—नक्षत्रों की गणना पीछे लिखी जा चुकी है। ये नक्षत्र २७ हैं और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण हैं, तो २७ नक्षत्रों को चार से गुणा करने पर कुल १०८ चरण होते हैं। राशियां १२ होती हैं तो इन १०८ चरणों को १२ राशियों में बांटा गया तो ९ बार भाग गया। इससे स्पष्ट हुआ कि राशि स्थित चन्द्रमा नक्षत्रों के ९ चरणों को भोगता है। यथा मेष के चन्द्रमा का निवास अश्विनी के चार चरण, भरणी के चार चरण और कृत्तिका के पहले चरण तक रहा। इसी प्रकार वृष के चन्द्रमा का निवास कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी के चार चरण और मृगशिरा के दो चरण तक रहा। इसी तरह क्रम से अन्य राशियों के चन्द्रमा का निवास नक्षत्रों के चरणों में प्रतिदिन जानना चाहिए।

● दिनमान तथा रात्रिमान—सूर्योदय के समय से सूर्यास्त के समय तक जितनी घड़ी तथा पल हों, वह दिनमान कहा जाता है और ६० घड़ी में दिनमान के घड़ी और पलों को घटाने से शेष रात्रिमान कहलाता है।

● घड़ी-पल और घण्टा-मिनट की परिभाषा—६ श्वास का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का एक दिन-रात होता है। २॥ पल का १ मिनट और २॥ घड़ी का एक घण्टा होता है। ६० मिनट का एक घण्टा होता है। उपर्युक्त क्रम से २४ घण्टे का एक दिन-रात होता है।

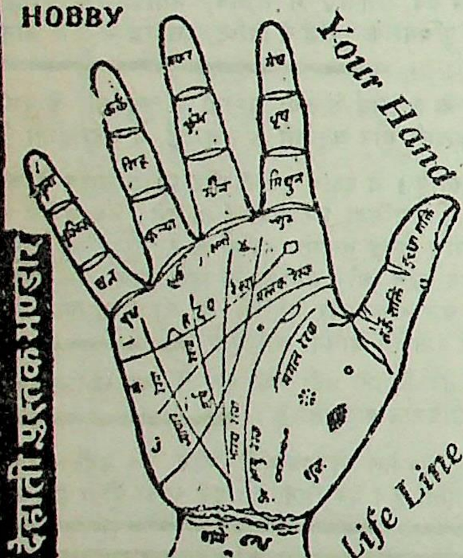
ग्रहों के शत्रु-सम-मित्र उच्च-नीच बोधक चक्रम्

ग्रह	सू.	चं	मं.	बु.	बृ	शु.	श.
शत्रु	शु. श.	००	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं मं
सम	बृ.	मं. बृ. शु. श	श. शु	मं. बृ. श.	श.	म. बु.	बृ.
मित्र	च. मं. बृ.	बु.सू.	सू. बु.च.	सू. शु.	सू च. मं.	बृ.श.	बु. शु.
उच्च-राशि	१	२	१०	६	४	१२	७
नीच-राशि	७	८	४	११	१०	६	१

विवाह वर्जित योग—सक्रान्ति के अन्त का एक दिन तथा तिथि के अन्त की दो घड़ी और नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी ये योग विवाह में वर्जित हैं, क्योंकि मास के अंत में भांवर पड़ें तो कन्या की मृत्यु हो, यदि तिथि के अंत में भांवर पड़ें तो सन्तान न हो, यदि नक्षत्र के अन्त में भांवर पड़ें अथवा भद्रा में पड़ें तो वर-कन्या दोनों की मृत्यु होवे। इसी कारण ब्याह के नक्षत्र आदि के अंत की घड़ियों में भांवरें नहीं पड़ती हैं, अन्यथा वर कन्या में अनबन रहती है, अनेक दुखद घटनाएं पैदा होती हैं और दोष पंडित का बतलाया जाता है। सोचने की बात है ब्याह के समय में नाना प्रकार के कलह पैदा हो जाते हैं। लेन-देन, खाने पीने की उलझनें पड़ जाया करती हैं। मुहूर्त १२ बजे रात का है पर भांवरें दूसरे दिन ७॥ बजे होती हैं, तब खुद सोचें कुशल कैसे, अतः ब्याह ठीक मुहूर्त में होना चाहिए।

हस्त-रेखा ज्ञान

हाथ देखने से पहले यह ध्यान रखना आवश्यक है कि पुरुष का दाहिना (सीधा) हाथ तथा स्त्री का बायां (टेढ़ा) हाथ देखना चाहिए। यदि हाथ में मत्स्य-रेखा हो तो धनवान, बहुसंततिवान्, बुद्धिमान तथा सुख भोगने वाला होता है। यदि तुला (तराजू), ग्राम गांव तथा वज्र में से कोई चिह्न हो तो व्यापार में सिद्धि मिलती है। कमल धपुष, तलवार तथा अष्टकोण में से कोई चिह्न हो तो धनवान् तथा सुख-समृद्धि से सम्पन्न होता है। त्रिशूल, छत्र, शक्ति बाण, रथ, चक्र और ध्वजा का चिह्न हो तो राजा या राजा के समान वैभव वाला होता है। गिरि, कंकण, योनि, नर-मुंड आदि चिह्न हों तो राजा का मन्त्री होता है। सूर्य, चन्द्र, नेत्र, मन्दिर, हाथी और घोड़ा में से कोई चिह्न हों तो धनवान् तथा सुखी होता है। यदि अंगूठा के मध्य में यव (जौ) का चिह्न हो तो वह अपनी उत्पन्न वस्तुओं का भोक्ता तथा सुखी होता है। तर्जनी व मध्यमा उंगलियों में से किसी के बीच में यव (जौ) हो तो वह स्त्री-पुत्र, घर, धन-धान्य से पूर्ण सुखी होता है।



अंगूठे या हाथ में कहीं भी सूप का चिह्न हो तो अत्यंत दरिद्री होता है। अंगूठे के मूल से लेकर पौंचे के मोड़ तक के उभरे हुए भाग में जितनी रेखाएं दीख पड़ें, उतने ही भाई-बहिन जानने चाहिएं। कनिष्ठा उंगली की जड़ के समीप जितनी रेखाएं हों, उतने ही विवाह या उतनी ही स्त्रियों का सुख जाने। अंगूठे के पीछे के बीच के मोड़ पर जो तीन रेखाएं हैं उनमें से एक से बचपन, दूसरी से जवानी तथा तीसरी से बुढ़ापे का सुख-दुःख जानना चाहिए। इस सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी के लिए हमारी **'आपका हाथ'** पुस्तक मंगाएं। **मूल्य 18/- (अठारह रुपये)**।

● **भाग्य रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध (पौंचा) के मूल से लेकर मध्यमा अथवा तर्जनी उंगली के मूल तक जाती है। यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खंडित न हो तो व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है और यदि मध्यमा उंगली के मूल पर समाप्त हो तो उसे सोने के व्यापार से बहुत लाभ होता है। यदि रेखा कटी हो तो ऐसा व्यक्ति निरन्तर अधिक लाभ नहीं कर पाता है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा बिल्कुल न हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य सूर्य-रेखा, जीवन रेखा तथा मस्तक रेखाओं की स्थिति से जानना चाहिए। विशेष जानकारी के लिए हमारी **'भाग्य-रेखा'** नामक पुस्तक मगाएं मू० 10-50

● **जीवन-रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली तथा अंगूठे के बीच से मणिबन्ध (पौंचे) की ओर शुक्र-क्षेत्र को घेरती हुई जाती है। यह रेखा सभी हाथों में समान रूप से नहीं होती। यदि यह रेखा स्पष्ट, उठी हुई तथा लम्बाई में पूर्ण हो तो वह व्यक्ति प्राण-शक्ति धारण करने वाला होता है। जिन हाथों में स्पष्ट, पतली तथा लम्बाई में पूर्ण रेखा हो तो उनमें प्राण-शक्ति कम ही रहती है। यदि यह रेखा बीच में किसी स्थान पर टूटी हुई हो और साथ ही टूटे हुए स्थान से किसी अन्य रेखा का सम्बन्ध न हो, तो उसी आयु में दुर्घटना घटित होती है। यदि अन्य लक्षण भी इसके द्योतक हों तो मृत्यु जाननी चाहिए। यह रेखा लम्बाई में पूर्ण होती हुई भी अन्य रेखाओं से कट रही हो अथवा स्वयं ही कटी हुई हो तो कष्ट, दुर्घटना, एक्सीडेंट आदि या मृत्यु के समान दुःख होता है। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए हमारी **'जीवन-रेखा'** नामक पुस्तक मंगाएं। मूल्य 10-50

● **हृदय-रेखा**—कनिष्ठा उंगली के नीचे से चलकर तर्जनी या मध्यमा उंगली के नीचे के क्षेत्र तक जाने वाली रेखा हृदय-रेखा कहलाती है। भारतीय विद्वान् इस रेखा को आयु-रेखा भी कहते हैं परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत में यह हृदय-रेखा है। इस रेखा से मन, हृदय तथा प्रेम-सम्बन्ध के बारे में देखा जाता है। यदि यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व तक चली आये तो ऐसे व्यक्ति का प्रेम-सम्बन्ध समाज में चर्चा का विषय बन जाता है।

यदि यह रेखा मध्यमा उंगली तक जाय तो ऐसा व्यक्ति छल-कपट का व्यवहार करने वाला, स्वार्थी, आत्मलोलुप, धूर्त, कपटी तथा आडम्बर-प्रिय होता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेमी को भी धोखा देने में नहीं चूकते। इन्हीं कारणों से इन्हें समाज में विशेष आदर नहीं मिलता। विशेष जानकारी के लिए हमारी **'हृदय-रेखा'** नामक पुस्तक मंगवाकर देखें। मूल्य 10-50

● **मस्तक-रेखा**—यह रेखा तर्जनी उंगली और अंगूठे के मध्य भाग से जीवन-रेखा से मिलती हुई अथवा उससे कुछ दूर होकर हथेली के मध्य भाग में चन्द्र अथवा राहु-क्षेत्र की ओर जाती है। प्राचीन भारतीय विद्वानों के अनुसार इसे 'धन-रेखा' या **'वैभव-रेखा'** बताया गया है परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इसे 'मस्तक-रेखा' बताते हैं। इससे शिक्षा, विद्या, बुद्धि का विचार किया जाता है। यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा निकलने के स्थान से जीवन-रेखा को काटती हुई आगे जाये तो ऐसा व्यक्ति ईर्ष्यालु, झगड़ालू, विवेकशून्य तथा खोटी बुद्धि वाला होता है। बाल्यकाल में वह प्रायः किसी दुर्घटना का शिकार होता है। यदि यह रेखा जीवन रेखा को छूती हुई आगे बढ़े तो ऐसा व्यक्ति विवेकशील, बुद्धिमान, अवसरवादी तथा सतर्कता एवं सावधानी से काम करने वाला होता है। इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए हमारी **'मस्तक-रेखा'** नामक पुस्तक मंगवाकर अध्ययन करें। मू० 10-50

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली

सूर्य-रेखा—यह रेखा मणिबन्ध, चंद्र व राहु-क्षेत्र, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा अथवा अन्य किसी स्थान स प्रारम्भ होकर अनामिका उंगली के नीचे सूर्य-क्षेत्र की ओर जाती है। यह रेखा प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है, वे व्यक्ति भाग्योन्नति, आदर-सत्कार तथा यश के धनी होते हैं। इसे 'यश-रेखा' भी कहा जाता है। यदि यह रेखा जीवन-रेखा से निकल कर सीधी सूर्य-क्षेत्र तक जाय तो ऐसा व्यक्ति यंत्र-तंत्र-मंत्र-वेत्ता, कलाकार, यशस्वी, चित्रकार तथा समाज में प्रतिष्ठा-प्राप्त होता है। यदि मंगल-क्षेत्र से निकल कर सूर्य-क्षेत्र पर जाय तो ऐसा व्यक्ति विद्रोही, परिश्रमी, बहादुर और आत्म-विश्वासी तथा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि रेखा कहीं खंडित हो तो यह अपयश की सूचक होती है। विशेष जानकारी के लिए हमारी सूर्य-रेखा नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मू० 10-50

स्वास्थ्य-रेखा—यह रेखा हथेली के मध्य-भाग से, जीवन-रेखा से, चन्द्र-क्षेत्र से अथवा अन्य किसी स्थान से निकल कर कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र तक जाती है। इस रेखा से भारतीय विद्वान् भाग्य के बारे में भी विचार करते हैं, परन्तु पाश्चात्य विद्वान इसे स्वास्थ्य की दशा समझने में प्रयुक्त करते हैं। यह रेखा प्रायः बहुतों के हाथ में नहीं पाई जाती। विशेष रूप से जिनके हाथ में यह रेखा पाई जाती है, उनके स्वास्थ्य पर यह अपना शुभ या अशुभ प्रभाव अवश्य डालती है। जिनके हाथ में यह रेखा नहीं होती, वे व्यक्ति प्रायः स्वस्थ, दीर्घजीवी एवं प्रसन्नात्मा होते हैं। यदि यह रेखा मस्तक तथा हृदय-रेखा को काटती हुई जाती है, तो ऐसा व्यक्ति मस्तिष्क एवं हृदय दोनों से कमजोर होता है। यह रेखा जितनी स्पष्ट होगी, स्वास्थ्य उतना ही उत्तम होगा और जितनी टेढ़ी, कटी एवं टूटी होगी, स्वास्थ्य उतना ही कमजोर होगा। विशेष जानकारी के लिए हमारी 'स्वास्थ्य-रेखा' नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 10-50

विवाह-रेखा—यह रेखा कनिष्ठा उंगली के नीचे होती है। जितनी रेखाएं होती हैं, उतने ही विवाह अथवा उतनी स्त्रियों का संसर्ग-सुख भोगने वाला होता है। यदि विवाह-रेखा पर द्वीप का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी स्त्री से कलह करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। यदि यह रेखा शुद्ध हो और एक हो तो ऐसा व्यक्ति एकपत्नी-व्रती होता है।

विवाह-रेखा के ऊपर-नीचे छोटी-छोटी रेखाएं, जो बहुत ही सूक्ष्म होती हैं, उनसे सन्तान के बारे में विचार करना चाहिए। ये छोटी-छोटी रेखाएं यदि टूटी-फूटी हों तो सन्तान की मृत्यु अथवा गर्भ-पात की सूचक जाननी चाहिए। संतान के विषय में अंगूठे के मूल से लेकर मणिबन्ध (पौंचे) के मोड़ तक की रेखाओं से भी विचार किया जाता है। सन्तान एवं विवाह-सम्बन्धी विस्तृत जानकारी के लिए हमारी **'विवाह-रेखा'** नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य 10-50

प्रभाव रेखा—ऊपर लिखी गई रेखाओं के अलावा हाथ में और भी छोटी-छोटी रेखाएं होती हैं। उनका भी हाथ में पर्याप्त महत्व होता है जिनकी जानकारी इस प्रकार है—

१. **गुरु-रेखा**—यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगलियों के बीच के भाग से शुरू होकर अंगूठी की तरह बृहस्पति के क्षेत्र पेर स्थित होती है। इस रेखा वाला व्यक्ति मन्त्र-तन्त्र, जादूगरी, मैस्मेरिज्म आदि का विशेष ज्ञाता होता है।

२. **मंगल-रेखा**—यह रेखा शुक्र-स्थान में बनती है। यह जीवन-रेखा की सहायक रेखा होने से जीवन-रेखा को बल देती रहती है।

३. **शनि-रेखा**—यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगली के बीच से चल कर शनि-क्षेत्र को गोलाई में घेरती है। इस रेखा वाला व्यक्ति विरक्त, आत्म-ज्ञानी एवं भगवद्भजन में लीन रहता है।

४. **शुक्र-रेखा**—तर्जनी एवं मध्यमा उंगली के नीचे से चलकर यह रेखा अनामिका एवं कनिष्ठा उंगली के नीचे अर्धवृत्ताकार स्थित होती है। इस रेखा वाला व्यक्ति कामुकता का अधिक शिकार होता है।

इसके अलावा और भी छोटी-बड़ी कई तरह की रेखाएं हथेली के किसी भी स्थान से शुरू होकर भाग्य, मस्तक, जीवन आदि पर अपना असर करती हैं। जो रेखाएं भाग्य आदि की रेखाओं में से, जिस रेखा के साथ लम्बाई में चलती हैं, उनके फल में वृद्धि करती है। जिस रेखा को ये काटती हैं, उसके फल में ये कमी कर देती हैं। विशेष जानकारी के लिए हमारी **'प्रभाव-रेखाएं'** नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। मूल्य **18/-**

हाथ के चिह्न-विचार—हाथ में चतुष्कोण, त्रिकोण, क्रास, विन्दु, द्वीप आदि अनेकों चिह्न होते हैं। ये भी हाथ में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हाथ में त्रिभुज का चिह्न प्रायः शुभ फलसूचक होता है और चतुर्भुज का चिह्न दुर्घटनाओं को टालने का सूचक होता है। क्रास का चिह्न यदि गुरु-क्षेत्र के अलावा कहीं और जगह पर हो, तो अशुभ-सूचक ही होता है। कोण का चिह्न शुभ फलदायी होता है। यदि हाथ में काले रंग का बिन्दु हो तो प्रायः अशुभ और लाल रंग का हो, तो शुभ जानना चाहिए। द्वीप-चिह्न शुभ फलसूचक ही है। इसके अलावा हाथ में और भी चिह्न होते हैं जिनकी विस्तृत जानकारी के लिए हमारी **'हस्तचिह्न विज्ञान'** नामक पुस्तक मंगाकर पढ़ें। **मूल्य 18/-** (अठारह रु०

शरीर के चिह्न—केवल हाथ की रेखाओं स ही किसी के चरित्र की ठीक-ठीक परीक्षा ठीक नहीं हो सकती। इसके लिए उसके शरीर के अंगों की बनावट भी जाननी चाहिए। जिनकी आकृति पशुओं व पक्षियों की आकृतियों से मिलती-जुलती होती है, उनमें उसी पशु-पक्षी के प्राकृतिक गुण तथा स्वभाव मिलते हैं। आंख की पुतली का रंग, आंख की बनावट, हाथ-पांव की उंगलियों की बनावट, शरीर की त्वचा का रंग आदि शरीर के सभी अंगों से जीवन के सुख-दुख का हाल जाना जाता है। बिना इसके हस्त-रेखा से विचार करना प्रायः अपूर्ण रहता है। इसलिए शरीर के अंगों की बनावट आदि की विस्तृत जानकारी करना भी परम आवश्यक है। व्यापक जानकारी के लिए पढ़िए **'शरीर-लक्षण-विज्ञान'** मूल्य **18/-**

स्त्री सामुद्रिक—शरीर के विभिन्न अंगों की बनावट आदि के द्वारा स्त्री के स्वभाव, चरित्र, रुचि एवं जीवन में घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराने वाली पुस्तक। **मूल्य 18/-** (अठारह रुपये)

वी०पी०पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली—६ फोन : 261030

वर-कन्या की कुण्डली मिलाने का तरीका

वर की कुण्डली में यदि मंगल १, ४, ७, ८, १२ स्थान में हो या चन्द्रमा अथवा शुक्र से ऊपरी खानों में मंगल हो तो स्त्री का नाश करता है। ऐसे ही लड़की की कुण्डली में भी विचारें। इसको ही मंगली योग कहते हैं।

मङ्गलीनाशक योग

यह कुण्डली में मंगली योग बनता हो और उसी कुण्डली में शनि १, ४, ७, ६, १२ इन स्थानों में हो तो मंगल का दोष दूर हो जाता है। यदि एक कुण्डली में मंगली और दूसरे में मंगली न हो, परन्तु उस कुण्डली में मंगली के सप्तम घर का स्वामी ६, ८, १२ खाने में से किसी एक में हो तो मंगली दोष नष्ट हो जाता है। जन्म लग्न का स्वामी बली होकर सातवें स्थान में बैठा हो तो भी मंगली के बराबर फल देता है। यदि कुण्डलियों का मिलान ठीक न मिले तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। मंगल नीच राशि ४ का हो या हीन बली हो तो भी मंगल दोषकारक नहीं होता। मेलापक सारणी में यदि वर-वधू के गण अच्छे मिल जायें और कुण्डली से योग अच्छे न बनें तो भी सम्बन्ध करना उचित नहीं है। यदि लग्न और चन्द्रमा से पूर्व स्थान पर पाप-ग्रह स्थित हों तो भी सम्बन्ध ठीक नहीं।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं० (१) अश्लेषा नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं० (२) तिथि ७ शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १२ कृत्तिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

(१) जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ६ मंगल १ शनि ५ सूर्य हो।

(२) ८, १२ मंगल क्रूर से मिला हो, १ राहु हो।

(३) १ सूर्य मंगल हो नं० (४) १ सू० मं० रा०। ये योग जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में एक भी हो, वह कन्या निश्चय ही विधवा होती है।

जिन कन्याओं को इन योगों में कोई योग बने, उसका मुहूर्त गणपति में लिखा है कि वह कन्या सावित्री व्रत कर अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) से अथवा विष्णु परमात्मा से पहले विवाह करके फिर दीर्घायु वाले पुरुष से विवाह करे।

ग्रहयोगों से उपर्युक्त कुयोगों का परिहार

१—जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में लग्न से या चन्द्रमा से सातवें स्थान में शुभ ग्रह उच्च व मित्र राशि का या स्वक्षेत्री होकर बैठा हो तो विधवा दोष, निःसन्तान दोष, विषांगना दोष नष्ट हो जाता है।

२—लग्न व चन्द्र से सातवें शुभ ग्रह हों।

३—लग्न से चन्द्रमा से सप्तम पति सातवें हों तो भी विधवा योगनाशक हैं।

स्त्री के बांझ होने के योग

१—जिस स्त्री के जन्म-लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

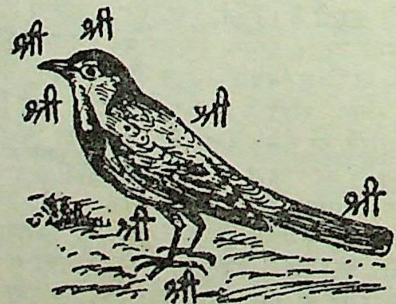
३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के एक ही प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्नकर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरे। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

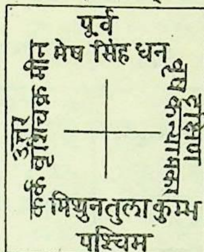
चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह, बुधजन करें विचार॥



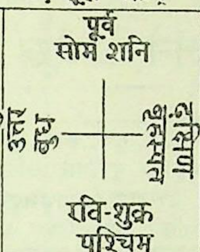
यात्रा-मुहूर्त में दिशाशूल, योगिनी, कालराहु, चन्द्रविचार, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र आदि का विचार

पहले चक्र में जिस दिशा में जो राशियां दर्ज हैं, उन राशियों का चन्द्रमा उन-उन दिशाओं में रहता है। यात्रा के समय यदि चन्द्रमा सामने आये तो धन-लाभ, पीछे हो तो धन-हानि, दाहिने आवे तो सुख, वाम (बायें) हो तो मृत्यु।

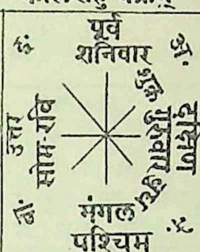
चन्द्रवास चक्रम्



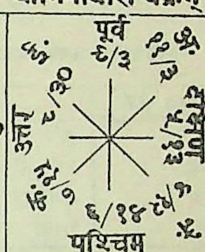
दिग्शूल चक्रम्



कालराहु चक्रम्



योगिनीवास चक्रम्



चन्द्र-फलम्—चन्द्रमा सामने तथा दायें हाथ का शुभ है। तीर्थ-यात्रा आदि में घात चन्द्र विचार-तीर्थ-यात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन (यज्ञोपवीत) आदि शुभ कार्यों में घात चन्द्र का विचार नहीं होता। घात तिथि, घात वार, घात नक्षत्र इनका अशुभ फल केवल यात्रा में माना गया है, अन्य शुभ कार्यों में कोई दोष नहीं होता।

जिस-जिस दिशा में ऊपर जो-जो वार लिखे गए हैं ये वार उस-उस दिशा में जाने को मना हैं, इसी को दिग्शूल कहते हैं।

ऊपर कालचक्र का विचार भी यात्रा में अवश्य करना चाहिए। इसका फल चक्र के नाम तुल्य होता है।

इस चक्र में जो-जो तिथि जिस-जिस दिशा में लिखी हैं, उनकी योगिनी उसी दिशा में रहती हैं। बांये शुभ, पीछे लाभ, दाहिने धन-नाश, सामने मृत्यु।

दिन का चौघड़िया

र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	घ०
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	३॥।
च	का	उ	अ	रो	ला	उ	३॥।
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	३॥।
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३॥।
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं	३॥।
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३॥।
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ	३॥।
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३॥।

रात्रि का चौघड़िया

र	चं	म	बु	बृ	शु	श	घ०
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	३॥।
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३॥।
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	३॥।
रो	ला	शु	च	का	उ	अ	३॥।
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं	३॥।
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो	३॥।
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का	३॥।
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	३॥।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

● चक्रम् ●

वार	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चन्दन	गुड़	तिल	दही	दूध	तिल

● यात्रा के नक्षत्र ●

अ० अनु० ज्ये० मू० हु० म० पुन० पु० र० रो० इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ-पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

● यात्रा में शकुन ●

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, सिंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

● यात्रा में अपशकुन ●

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, संन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

● यात्रा आदि में शुक्र-विचार ●

गांव-से-गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रेवती, अश्विनी, भरणी व कृत्तिका के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के तीन दिन पहले व तीन दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

नक्षत्रों की सुलोचन आदि संज्ञा से चोरी गये पशु या माल के मिलने-न-मिलने के देखने का‍ं चक्र

नक्षत्र संज्ञा	नक्षत्र नाम	दिशा जिसमें पशु या माल गया	फल
सुलोचन	कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वांति, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद	उत्तर दिशा में	नहीं मिले
अन्ध	रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, घनिष्ठा, रेवती,	पूर्व दिशा में	शीघ्र ही मिले
काण	मृगशिरा, श्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़, शतभिषा, अश्विनी,	दक्षिण दिशा में	तीन दिन में मिले
मन्द	आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद, भरणी	पश्चिम दिशा में	पता लगाने पर नहीं मिले

ग्रहों द्वारा नित्यप्रति का शुभ-अशुभ फल देखने का चक्र

सूर्य

नक्षत्र	वासस्थान	फल
३	मुख	कष्ट
४	दायां हाथ	लाभ
६	पैर	यात्रा
४	बायां हाथ	बन्धन
५	हृदय	लाभ
४	नेत्र	श्री.प्रा.
१	मस्तक	मान
१	गुदा	कष्ट

जन्मनक्षत्र से सूर्यनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

चन्द्र

नक्षत्र	वासस्थान	फल
६	मस्तक	लाभ
१	मुख	श्री.प्रा.
[illegible]	दायां हाथ	हानि
६	हृदय	सुख
३	बायां हाथ	कष्ट
६	कुक्षि	चिन्ता
१	दायां पैर	हानि
१	बायां पैर	कष्ट

जन्मनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शभाशभ फल जानें।

मंगल (भौम)

नक्षत्र	वासस्थान	फल
६	मस्तक	विजय
३	मुख	कष्ट
३	दायां हाथ	लाभ
६	बायां हाथ	यात्रा
३	पैर	भय
१	गुदा	मृत्यु
१	नेत्र	भय
४	हृदय	खुशी

जन्म नक्षत्र से मंगल के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभा-शुभ फल जानें।

बुध

नक्षत्र	वासस्थान	फल
३	मस्तक	मान
१	मुख	श्री.प्रा.
२	नेत्र	प्रेमबढ़े
५	नाभि	लाभ
६	पैर	यात्रा
४	बायां हाथ	श्री.प्रा.
४	दायां हाथ	श्री.प्रा.
२	गुदा	बंधन

जन्म नक्षत्र से बुध के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवें उससे शुभाशुभ फल जानें।

बृहस्पति

नक्षत्र	वासस्थान	फल
४	मस्तक	मान
४	दायां हाथ	श्री.प्रा.
१	गला (कंठ)	श्री.प्रा.
५	मुख	कष्ट
६	पैर	यात्रा
४	बायां हाथ	सुख
३	नेत्र	सुख

जन्म नक्षत्र से गुरु के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

शुक्र

नक्षत्र	वास स्थान	फल
३	मुख	लाभ
५	मस्तक	शुभ
३	दायां पैर	दुःख
५	बायां पैर	दुःख
२	हृदय	श्री प्राप्ति
८	बायां हाथ	सुख
१	गुदा	श्री प्राप्ति
१	दायां हाथ	स्त्री लाभ

जन्म नक्षत्र से शुक्र नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

शनि

नक्षत्र	वास स्थान	फल
[illegible]	मुख	हानि
४	दायां हाथ	विजय
६	पैर	यात्रा
५	उदर	लाभ
४	बायां हाथ	दुःख
३	मस्तक	राज्य पद
२	नेत्र	सुख
२	गुदा	दुख

जन्म नक्षत्र से शनि नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

राहु

नक्षत्र	वास स्थान	फल
३	मस्तक	मान
४	दायां हाथ	नुकसान
६	पैर	यात्रा
५	बायां हाथ	मृत्यु
३	हृदय	लाभ
१	कंठ (गला)	दुःख
२	मुख	विजय
३	नेत्र	सुख

जन्म नक्षत्र से राहु नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

केतु

नक्षत्र	वास स्थान	फल
४	मस्तक	विजय
१	दायां हाथ	विजय
५	मुख	मान
४	बायां हाथ	विजय
६	पैर	सुख
२	हृदय	चिन्ता
४	गला (कंठ)	कष्ट
१	गुदा	अतिभय

जन्म नक्षत्र से केतु के नक्षत्र तक गिनने से जो संख्या आवे उससे शुभाशुभ फल जानें।

हवन में अग्निवास देखना

शुक्ल पक्ष (सुदी) की एक प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक गिनकर जो संख्या आवे उसमें वार की संख्या जोड़कर १ और जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ४ का भाग दें। यदि शेष ०।३ बचे तो अग्निवास पृथ्वी में, श्रेष्ठ, इसमें हवन करने से सुख प्राप्त होता है। यदि शेष १ बचे तो अग्निवास स्वर्ग में, नेष्ट, इसमें हवन करने से दुःख प्राप्त होता है। यदि शेष २ बचे तो अग्नि का वास पाताल में, नेष्ट, इसमें हवन करने से धन की हानि होती है।

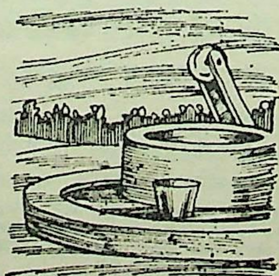
ग्रहों के मुख में होमाहुति देखना

सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। जो संख्या आवे उससे नीचे के चक्र से देखें कि किस ग्रह के मुख में आहुति जा रही है। यदि पाप ग्रह के मुख में जाय तो अशुभ और शुभ ग्रह के मुख में जाय तो शुभ जानना चाहिए।

— चक्रम् —

सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक की संख्या	ग्रह का नाम जिसके मुख में आहुति जायगी	फल
३	सूर्य	अशुभ
३	बुध	शुभ
३	शुक्र	शुभ
३	शनि	अशुभ
३	चंद्र	शुभ
३	मंगल	अशुभ
३	गुरु	शुभ
३	राहु	अशुभ
३	केतु	अशुभ

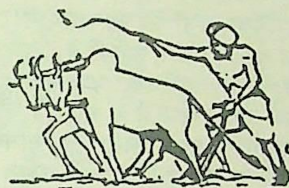
कूप-आरम्भ (कुआं बनाने) का मुहूर्त



हस्त, चित्रा, स्वांति, घनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा मघा, उत्तरा३, रोहिणी, इन नक्षत्रों में; २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ इन तिथियों में; चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र—इन वारों में; मेष, वृष, कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीन इन लग्नों में कूप-आरम्भ अर्थात् कुआं बनाना शुभ है।

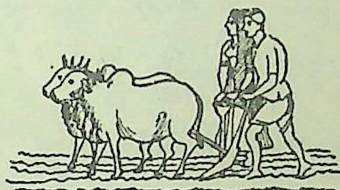
हल चलाने का मुहूर्त

अश्विनि, रोहिणी, मृग०, पुन० पुष्य०, मघा, उत्त०३, ह०, अभि०, चि० स्वा०, वि, अनु० पू०, श्र०, ध०, श०,



रे०, इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र इन वारों में; १, ५, ७, १०, ११, १३, १५ इन तिथियों में तथा २, ३. ६, १२ इन लग्नों में हल चलाना शुभ है।

बीजारोपण (बीज बावनी) मुहूर्त



अश्वि०, रो०, मृग०, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, ह०, चि०, स्वा, अनु०, मू० ध०, रे०, इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, इन वारों में; ४, ६, ९, १४, ३० इन तिथियों को छोड़ अन्य शुभ तिथियों में बीज बोना शुभ है।

लावणी करने (फसल काटने) का मुहूर्त

भरणी, कृत्ति०, मृग० आर्द्रा, पुष्य, श्ले०, मघा, उत्तरा ३, हस्त०,चि०, स्वा०, ज्ये०, मू०, पू० षा०, श्रव० ध०, पू० भा० इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४ इन तिथियों को छोड़ अन्य शुभ तिथियों में; शुभ वारों में तथा २, ५, ८, ११ इन लग्नों में लावणी करना (फसल काटना) शुभ है।

नवीन शकट (गाड़ी) चलाने का मुहूर्त







अश्वि०, मृग०, पुन०, पुष्य, हस्त, चित्रा, ज्येष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बृहस्पति, शुक्रवार-इन वारों में; शुभ तिथियों में गाड़ी, मोटर, साईकिल, स्कूटर, हिंडोला, रहट, आदि का चलाना शुभ होता है।

चूड़ा-मुहूर्त

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वांति, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में; चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र इन वारों में; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ इन तिथियों में; विषम वर्षों में; उत्तरायण में; चैत्र तथा ज्येष्ठ महीना को छोड़कर अन्य महीनों में; अष्टम भाव के शुद्ध रहते मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ इन लग्नों में चूड़ा कर्म करना श्रेष्ठ है। बहुत से लोग अपनी कुल-प्रथा के अनुसार इष्ट देवता के सामने चूड़ाकर्म (मंडन) तथा कर्ण-वेध कराते हैं, यह भी सर्वथा शुद्ध है।

द्विरागमन (मुकलावा) मुहूर्त



बैसाख, मार्गशीर्ष (अगहन), फाल्गुन इन महीनों में; मेष, वृश्चिक, कुंभ की संक्रान्ति में; अश्विनी, रोहणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वांति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती इन नक्षत्रों में; ४, ६, ६, १२, १४, ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में; ३, ६, ७, ६, १०, १२ इन लग्नों में द्विरागमन (मुकलावा) करना शुभ है।

चोरी गया या खोया पशु मिलेगा या नहीं

जिस समय पशु चोरी गया हो या खो गया हो, उस समय की लग्न देखना। यदि उस समय मेष, मकर, वृष, कर्क, लग्न होय तो पशु घर बैठे ही आ जायगा। यदि कन्या, मिथुन, तुला, धन लग्न होय तो किसी ने पकड़ लिया है, अतः धन खर्च करने पर मिलेगा। यदि कुम्भ, मीन, वृश्चिक, सिंह लग्न होय तो नहीं मिलेगा, चाहे कितना ही यत्न करो।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

दूसरी विधि—४५ की संख्या में गर्भिणी के नाम के अक्षर तथा वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर आई हुई संख्या में से १ घटाकर ६ का भाग दें। यदि १, ३, ५, ७, ० शेष रहें तो लड़का और २, ४, ६, ८ शेष रहें तो लड़की होगी।

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हो उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें। यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

दैनिक उपयोग की विविध ज्ञातव्य बातें

प्रस्थान का ज्ञान

यदि यात्रा में देर होवे तो प्रस्थान में ब्राह्मण जनेऊ धरे, क्षत्रिय हथियार धरे, वैश्य वस्त्र धरे, शूद्र फल धरे, जो वस्तु प्रिय हो सो सर्व वर्ण प्रस्थान में धरे। प्रस्थान पूर्व में सात, दक्षिण में पांच, पश्चिम में तीन, उत्तर में दो दिन तक रखें।

[illegible]शुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, परवा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म-लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास, मीन लग्न यात्रा में वर्जित है। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-६ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-६-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी—तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

श्रेष्ठ मुहूर्त या साइत

नोट—हिन्दू दर्शन के अनुसार शास्त्रोक्त मुहूर्त देखकर कार्य करना ही धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षप्रद होता है

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि मास	श्रेष्ठ वार तथा मास	शुभ नक्षत्र	ग्राह्य लग्न	वर्जित तिथ्यादि
गर्भादान	२, ३, ५, ७, १०, १३	सोम, गुरु बुध, शुक्र	उ. ३ह. मू. ऽनु. रो. स्वा. श्र. श्र. ध.	२, ३, ४, ५, ६, ९, १२	श्राद्ध दिन सख्या समय भद्रा संक्रांति पर्व दिन
ना ना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३	सोम. बुध. गुरु. शुक्र	मृरेची. ऽनु. उ. ३रो ह. पुष्य पु. श्र. ध. श्र. स्वा. श.	३, ४, ६, ७, ९, १२	जन्म लग्न से ८वां दिन और ८ में कोई ग्रह
निष्क्रमण बालक पहले बाहर निकालना	१२ दिन ४ मास में शुभ विधि	रवि. चं. बुध. वृ. शु.	श्र. पुष्य ह. मू. ऽनु श्र. ध. रो.		४, ९, १४, ३० तिथि
अन्नप्राशन	६, ८, १०, १२मास पुत्र को ५, ७, ११ में कन्या को २, ३, ५, ७, १०, १३, १५	च. बु. वृ	रो. श्र. पु. चि. रे. स्वा. ह. ऽनु. उ. ३श्र ध. श. मृ	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११	जन्म-लग्न से ८ वें लग्न १० घर में ग्रह
चूड़ाकर्म मुण्डन जन्म १, ३, ५, ७ वर्ष में उत्तरायण	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	—	ज्ये. मू. रे. चि. पुन. पु. अश्वि. श्र. ध. श. ह. स्वा	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२	चैत्र पौष देवशयनी ११ से बदल राशि से ८, ५ मास के अन्दर माता को गर्भ हो
कर्ण वेध	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३	चं. बु. बृ. शु.	श्र. ध. पु. प्र. चि. ऽनु मृ. रे. अश्वि. ह.	२, ७, ९, ३, ४, ८, १२	सम वर्ष चैत्र जन्म वार नक्षत्र देवशयनी ११ के जन्म लग्न से ८वें।
यज्ञोपवीत (जनेऊ)	२, ३, ५, १०, ११ १३ कृष्णपक्ष की २, ३, ५	मा. फा. चैत्र उत्तरायण रवि चं. बुध बृ. शु. वारों में	श्र. ह. पुन. उ. र. रो. स्वा. श्र. ध. मू. मृ. ऽनु. चि. पू. ३श्रा.	२, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, १२	१, ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां रोगबाण १, ६, ८, १२ चं. लग्नेश ६, ८।
बालक को स्कूल में बैठाना	२, ३, ५, ६, ९, १० ११, १२	उदाहरण में ५, ७ वर्ष में रवि बृ. शु.	पु. पू. ह. श्र. स्वा. रे. चि. श्रा.	२, ३, ४, ६, ७, ९, १२	लग्न से अष्टम की ग्रह
दुकान खोलना	२, ३, ५, ६, ७, ८, ११ १२, १३	सू. चं. बु. बृ.	चि. ऽनु. मृ. रे. उ३ रो. ह. अ पुष्य.	२, ३, ५, ६, ८, ९, १२	कुम्भ लग्न मंगलवार
जेवर बनवाना	२, ३, ५, ७, १३,	बृ० शु० रवि	ह. अ. श. पुष्य पू.		४, ९, १० तिथि अक्षय
दरवाजा लगाना	२, ३, ५, ७, १० ११, १३	चं० बु० बृ० शु०	स्वा. श्र. ध. उ३. रो. मृ. पुष्य	५, ८, ११	अग्नि बाण
सीना-पिरोना सीखना	२, ३, ५, ६, ८, १० १२, १३	सू. बु. व. शु.	ह. स्वा. श्र. अ. पु. चि. ऽनु. ध.	२, ३, ५, ६, ८, ११, १२	
घर बनाना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ बदी १	वै. श्रा. मार्ग. फा. चं. बृ. शु. श.	रो. म. चि. स्वा. ३ ऽनु. ध. श. रे.	२, ५, ८, ११, उ३ ९, १, १२ म०	भूमिशयन अग्निबाण आठवें ग्रह नक्षत्र वेध
नये घर में प्रवेश करना	शुभ तिथियों में	वै. ज्ये. श्रा. आ. आश्वि. मा. फा. उत्तरायण में चं. बु. वृ. शु.	उ. ऽनु. रो. म. चि	२, १, ४, ११, १२	तिथि ४, ९, १०, ३० रवि. मं. श. वार ४, ८ वें कोई ग्रह
बावड़ी का बनाना	शुभ तिथियां	चं. बु बृ. शु.	ऽनु. ह. उ३. रो. ध. श. म. पू. षा. रे. पु.		शुभ ग्रह निर्बल ताप ग्रह बाल रवि में मंगल शनिवार

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि मास	श्रेष्ठ वार तथा मास	शुभ नक्षत्र	ग्राह्य लग्न	वर्जित तिथ्यादि
वस्तु पाने का मुहूर्त	शुभ तिथियां	चं. बु. बृ. शु. मा. फा. बै. ज्ये.	स्वा ध. श. म. ऽनु. ह. चि. रे. अश्वि. उ. ३	२, ५, ८, ११	४, ६, १४, ३० तिथि अर्थात् आठवां ग्रह
हल चलाना	शुभ तिथियां	चं. बु. बृ. शु.	अपू. ३चि वि.ध.श. सूर्यनक्षत्रसेदिन नक्षत्र तकगिनें, पहले३हानि ५ वृद्धि ३ हानि ५ वृद्धि ३हा. ५वृ ३हा. १ वृद्धि	—	वि. मंगल शनि ४, ६, १२, १४, ३०, १५ तिथि पर्व दिन
अनाज भरना	३, ५, ७, १३	रवि. गु. शु.	अ.रो.पुन.पु.मृ.चि. स्वा.अनु.श्र.व.ध.श. कृ. उ ३ रे.	२, ५, ८, ११	मगल शनि १, ४, ६, १४, ३० तिथि
बीमारी से उठे का स्नान	६, ४, १४	रवि. मंगल	अ.ह.चि ऽनु.ध.श.	—	—
पशु खरीदना	शुभ तिथियां	चं. बु. बृ. शु. श.	उ.३पू.षा पुन.पु.रो.	२, ५, ८, ११	तिथि ४, ६, १४ रवि मंगल
अर्जी दायर करना	६, ४, १४	मंगल, शनि	आ.भा.वृ.अश्वि.म. ज्ये. वि मू. पू. ३	भद्रा हो	—
नौकरी करना	२, ३,५,६,७,१० ११, १२, ८	रवि. बु. बृ. शु. स्वामी सेवक की राशि मंत्री देखकर	अ.ऽनु.चि.ह.पुष्य रे.	शुभ लग्न	४, ६, १४, ३० तिथि
नववधू का घर में आना	शुभ तिथियां	चं. बु. शु. श.	ह.चि.स्वा.रो.मृ. पुष्य. ध. मू. श्र. ऽनु. उ. ३अ. रे.	२, १, ५, ८, ६	ति. ४, ६, १४, ३० सू० मंगल बुधवार १, ७, १०

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6















स्वप्न देखने का शुभ-अशुभ फल

स्वप्न	उनका फल
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आकाश की ओर उड़ान	लम्बी यात्रा करनी पड़े
आकाश से गिरना	खराबी व कष्ट
आम खाना	धन मिले
अनार खाना	धन काफी मिले
ऊंट को देखना	धन लाभ
ऊंट पर चढ़ना	रोगी होवे
सूर्य को देखना	बड़े आदमी के दर्शन
सुरमा लगाना	बीमारी से कष्ट
बादल देखना	तरक्की होवे
घनघोर घटा	राजा के दर्शन से लाभ
आग उठा लेना	हराम का माल मिले
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में उन्नति
घोड़े से गिरना	हानि होवे
आंधी देखना	सफर में कष्ट हो
शीशे में मुंह देखना	स्त्री से प्रेम
जलती आग देखना	स्त्री से प्रेम
ऊंचे से गिरना	परेशानी व हानि हो
बाजू कटा देखना	भाई की मृत्यु हो
बाग-फुलवारी देखना	खुशी प्राप्त हो
सूखा बाग देखना	रंज-दुःख मिले
बारात देखना	रंज हो, स्त्री देखें तो उसको खुशी हो
पानी बरसता देखना	अनाज महंगा हो
सिर के कटे बाल	कर्ज से छुट्टी मिले
बर्फ देखना	मौसम खराब हो
बांसुरी बजाना	परेशानी होना
अपने को बीमार देखना	कष्ट मिले
मोटा बैल देखना	अनाज मंदा हो
पतला बैल देखना	अनाज महंगा हो
बाल बिखरे देखना	धन की हानि हो
सुअर देखना	रंज हो, उम्र कम हो
बिस्तर बिछाना	धन लाभ, दीर्घायु हो
बुलबुल देखना	विद्वान से लाभ हो

स्वप्न	उनका फल
हंस देखना	प्रतिष्ठा होगी
भैंस देखना	मुसीबत पेश हो
भेड़िया देखना	हाकिम से भय हो
बादाम खाना	धन प्राप्त हो
बादशाह मरण	देश में खराबी
मुर्गी के अण्डे खाना	लड़का हो
सफेद बाल देखना	आयु बढ़े
बिच्छू देखना	इज्जत प्राप्त हो
पहाड़ पर चढ़ना	तरक्की मिले
पहाड़ हिलते देखना	बीमारी फैलना
शरीर में पाखाना	दौलत प्राप्त हो
पाखाना खाना	मालामाल हो
पंजा कटा देखना	परेशानी हो
पाखाना फिरना	धन व्यय हो
खून का पेशाब	स्त्री देखे तो सुख पुरुष देखे तो दुःख
फल पाना	पुत्र हो
फूल देखना	प्रेमी मिले
पिंजड़ा देखना	कैद में कष्ट हो
छाती देखना	स्त्री मिले, खुशी हो
प्यास लगना	लोभ अधिक हो
पूड़ी खाना	प्रसन्नता प्राप्त हो
पुल पर चढ़ना	नेक काम करे
पान खाना	सुन्दर स्त्री मिले
पानी में डूबना	शुभ कार्य; लाभ हो
तैरना	धन मिले
तांबा देखना	हैरानी हो
नंगी तलवार देखना	शत्रु पर विजय
हरी तरकारी देखना	खुशी प्राप्त हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तेल पीना	कुष्ठ रोग से भय
तिल चबाना	कलंक लगे
तोप देखना	शत्रु नष्ट हो
तीर चलाना	आशा पूर्ण हो

स्वप्न	उनका फल
तख्त पर चढ़ना	इज्जत मिले
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	व्यय बढ़ेगा
तीतर देखना	खुशी मिले
हँसता देखे	रंज प्राप्त हो
रोते देखना	खुशी मिले
तार खींचना	परेशानी मिले
ताबीज देखना	आपत्ति में फंसे
तरबूज खाना	रंज प्राप्त होवे
पानी देखना	दूसरे की धरोहर मिले
तालाब में नहाना	धन प्राप्त हो
पानी स्पर्श	साधारण लाभ
जहाज देखना	दूर का सफर हो
झण्डा देखना	धर्म की वृद्धि हो
हरा जंगल देखना	खुशी मिले
सूखा जंगल देखना	परेशानी हो
जंगल में उड़ना	मुसीबत दूर हो
मुरदा देखना	बीमारी से आराम
जोड़ा तंग पहनना	स्त्री से झगड़ा हो
जवाहरात देखना	आशाएं पूर्ण हों
स्त्री-प्रसंग करना	धन प्राप्त हो
लड़ाई करना	खुशी हो
लड़ाई में मारे जाना	हुकूमत मिले
जामुन खाना	तकलीफ दूर हो
बाल बनवाना	उम्र कम हो
जानवर पकड़ना	नया काम करना
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा प्राप्त हो
चांद टूटा देखना	तकलीफ हो
चन्द्र-ग्रहण देखना	हाकिम पर आफत
चीज देखना	रंज पैदा हो
कसीदा काढ़ना	पति से झगड़ा
चींटी देखना	मुसीबत पेश हो
चक्की देखना	मुसीबत में फंसे
चांद देखना	माल मिले
चावल देखना	रंज दूर हो

स्वप्न-समय-फल—रात्रि के चार पहर होते हैं, जिनमें प्रायः प्रथम पहर में स्वप्न कम दीखते हैं, फिर भी रात्रि के प्रत्येक पहर का देखा हुआ स्वप्न इस प्रकार है—यदि रात्रि के पहले पहर में स्वप्न दीखे तो उसका फल एक साल के अन्दर मिलेगा। यदि दूसरे पहर में दीखे तो ६ मास में फल प्राप्त हो; इसी प्रकार तीसरे पहर का फल है। चौथे पहर में दीखे हुए स्वप्न का फल एक माह में मिलेगा। अरुणोदय के काल में देखे हुए स्वप्न का फल १० दिन में और सूर्योदय के समय में देखे हुए स्वप्न का फल शीघ्र ही मिलेगा—ऐसा जानना चाहिए। खोटा स्वप्न देखने पर उसकी शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय जाप, हवन, सोना तथा जौ का दान और विष्णु सहस्रनाम, गोपाल सहस्रनाम आदि शुभ कार्य कराने चाहिए।



अंग फड़कना विचार





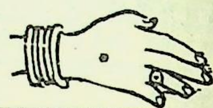
फड़कन वाले अंग	उनका फल
सिर पीछे	आशाएं पूर्ण हों
सिर	यात्रा होना संभव
दाहिना मत्था	सफर व तकलीफ संभव
बायां मत्था	खुशी होगी
बीच भौंह	प्रेम मिलता है
दाहिनी आंख	अच्छी है, खुशी होगी
बाईं आंख	स्त्री से दुःख या वियोग हो
दाहिना पलक	खुशी हो
बाईं पलक	दुःख व कष्ट मिले
दाहिनी आंख के नीचे	सम्मान मिले
बाईं आंख के नीचे	धन का व्यय
दाहिनी गाल	लाभ होना
बायां गाल	व्यय और हानि
दाहिनी भौंह	आदर व धन मिले
बाईं भौंह	प्रसन्नता या पुत्र सुख हो
दाहिना कान	पद बढ़े
बायां कान	परेशानी होगी
गर्दन	लाभ, स्त्री मिले
जीभ	लड़ाई-झगड़ा हो
ऊपर का होठ	पद बढ़े
आंख के नीचे पलक	प्रेमी मिलेगा
दाहिना कन्धा	चिन्ता हो
बायां कन्धा	शत्रु पर विजय होगी
माथे पर	धनवान् होना
दाहिना बाजू	अच्छा है, लाभ होगा
बायां बाजू	रंज होगा
दाहिनी बगल	ऐश्वर्य बढ़े
बाईं बगल	ऐश्वर्य घटे
नाक	खुशी होती है
पीठ	बुरा समाचार मिले
पेट	प्रसन्नता मिले
कमर	सफर हो
दाहिना हाथ	प्रतिष्ठा हो
बांया हाथ	वियोग होना संभव
दाहिना हथेली	लाभ होगा
बाईं हथेली	हानि होगी
दाहिना अंगूठा	शुभ समाचार
बांया अंगूठा	दुःख पहुंचे
पिंडली	शत्रु से भय होगा
पैर का अंगूठा	लाभ होगा
दाहिना पैर	रंज दूर होगा
बायां पैर	दूर की यात्रा
अण्डकोष	आनन्द हो
दाहिना बाजू	अकस्मात् दुःख हो
बायां घुटना	प्रेम मिलेगा
दांत का ऊपरी भाग	प्रसन्नता हो







तिल विचार



तिल वाले अंग	तिल वाले अंग का फल
माथे के दाहिनी ओर	माल बढ़ता जायगा
माथे के बाईं ओर	परेशानी से जीवन बीते
ठुड्डी पर	स्त्री से मेल न रहेगा
दोनों भौंहों पर	यात्रा होती रहेगी
सीधी आंख पर	स्त्री से प्रेम रहेगा
बाईं आंख पर	चिन्ता बनी रहे
दाहिने गाल पर	धनवान् होगा
बायें गाल पर	निर्धन रहेगा
होंठ पर	कामी होगा
होंठ के नीचे	निर्धनता बनी रहे
कान पर	अल्पायु होगा
गर्दन पर	आराम मिले
सीधी भुजा पर	आदर मिलेगा
बाईं भुजा पर	लड़का हो
नाक पर	यात्रा होती है
दाहिनी छाती पर	स्त्री से प्रेम रहे
बाईं छाती पर	स्त्री से लड़ाई हो
दांतों के नीचे	लज्जित होना पड़ेगा
कमर पर	परेशानी में जीवन बीतेगा
बगल में	अन्य को हानि पहुंचावे
दाहिनी छाती पर	परेशान न रहे
बाईं छाती पर	कामी होगा
छातियों के बीच	आराम से निर्वाह हो
हृदय पर	बुद्धिमान होगा
पसली पर	भीरु होगा
पेट पर	उत्तम भोजन चाहेगा
पेट के बीच में	भीरु हो
पीठ पर	यात्रा करता रहे
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
दाहिने हाथ पर	कोष वाला हो
बाईं हथेली पर	व्यर्थ व्यय हो
बाएं हाथ की पीठ पर	व्यय कम हो
दाहिने हाथ की पीठ पर	बुद्धिमान् हो
दाहिने पैर में	बहुत बुद्धिमान् हो
बाएं पैर में	व्यय अधिक करे
स्त्री की भग पर	विधवा या धनरहित या पुत्र हीन





अथ स्वरों द्वारा मनोवांछित फल ज्ञात करना



● स्वरशास्त्र के प्रथम तत्वों का जानना आवश्यक है। कारण कि बिना तत्वों के जाने कार्य का होना या न होना निश्चित नहीं होता है। इसलिये इन पांच तत्वों को अवश्य जानना। तत्व—पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश—ये पांच तत्व हैं। पृथ्वी तत्व ५० पल २० मिनट तक रहता है। जल तत्व ४० पल १६ मिनट। अग्नि तत्व ३० पल १२ मिनट। वायु तत्व २० पल ८ मिनट। आकाश तत्व १० पल ४ मिनट तक रहता है। तत्वों का रंग व आकृति—पृथ्वी तत्व का रंग पीला और चतुष्कोण है। जल तत्व का रंग सफेद और अर्द्ध चन्द्र है। अग्नि तत्व का रंग रक्त और त्रिकोण है। वायु तत्व का रंग नीला और गोल है। आकाश तत्व का रंग अनेक प्रकार का और आकृति शून्य है।

● **श्वास द्वारा तत्वों की पहचान**—नाक के मध्य में श्वास आवे तो पृथ्वी तत्व, नीचे के भाग में होकर आवे तो जल तत्व, ऊपर के भाग में होकर आवे तो अग्नि तत्व और दोनों ओर होकर चले तो वायु तत्व और घूमकर चले तो आकाश तत्व का उदय जानो।

● **मुख द्वारा तत्व का ज्ञान**—जब मुख मीठा-मीठा हो तो पृथ्वी तत्व जानना। अगर मुख का स्वाद कसैला हो तो जल तत्व। अगर चरपरा हो तो अग्नि तत्व। खट्टा हो तो वायु तत्व। कड़वा हो तो आकाश तत्व जानना।

● **गति से तत्व ज्ञान**—नासिका से श्वास निकलते समय वायु ८ अंगुल लम्बी हो तो वायु तत्व, ४ अंगुल हो तो अग्नि तत्व, १२ अंगुल हो तो पृथ्वी तत्व और १६ अंगुल हो तो जल तत्व जानना।

● **किस-किस तत्व में क्या करे**—पृथ्वी तत्व में स्थिर कार्य, जल तत्व में चर कार्य, अग्नि तत्व में क्रूर कार्य, आकाश-तत्व में मारण उच्चाटनादि करना। सारी बात यह है कि जिस वक्त पृथ्वी या जल तत्व चल रहा हो उस समय जो कार्य करोगे अवश्य सिद्ध होगा और अग्नि तत्व में करने से मरण या मृत्यु समान कष्ट, वायु तत्व में हानि, आकाश तत्व में कार्य निष्फल जानना।

● **दाहिने स्वर से इतने कार्य करे**—गति अभ्यास, स्त्री संग और मंत्रों की सिद्धि, राज-दर्शन, औषधि-सेवन, जहाज में बैठना, लिपि लिखना, यन्त्र बनाना, क्रय-विक्रय, नदी पार स्नान, भोजन-व्यायाम, तलवार हाथ में लेना, दुर्ग-प्रवेश, हाथी, घोड़ा, गधे, भैंसे पर चढ़ना, जुआ खेलना, मारण मोहन, उच्चाटन, स्तम्भन, यक्षिणी यज्ञ और क्रूर कर्म करने से कार्य सिद्ध हो।

● **बायें स्वर से इतने कार्य करें**—स्थिर कर्म, वस्त्र-गहने पहनना, दूर देश को जाना, घर बनाना, राजमहल में प्रवेश करना, कुआं बावड़ी तालाब खुदवाना, आवश्यक वस्तुओं को संग्रह करना, देव-प्रतिष्ठा, यात्रा हानि, विवाह, गृह-प्रवेश, व्यापार, धन-संग्रह, खेती करना, बीज बोना, धर्म कार्य, गुरु से दीक्षा लेना, मंत्र-सिद्धि, पशु घर में लाना, विद्या आरम्भ करना शुभ है परंतु वायु, आकाश तत्व के चलने पर कदापि न करे। मुकद्दमा में जीत हो, जिस समय दाहिना स्वर चलता हो उस वक्त घर से चले और चलते समय पहले बायां पैर रखे। ऐसा करने से अवश्य जीत होगी। जब हाकिम के सामने जाओ तब अपना जो स्वर चलता हो उस स्वर की तरफ हाकिम को रखो जो बन्द हो उसकी तरफ स्वयं को रखो तो जीत होगी।



अथ प्रश्न देखना



● **चोरी का प्रश्न**—जिस वक्त कोई आकर प्रश्न करे उस वक्त की लग्न निकालो और जो लग्न के अंश हों उनसे नवांश निकालो। जो राशि नवांश की हो और उस राशि का जो स्वामी हो उसके मुताबिक फल कहो। अगर नवांश की राशि सूर्य हो तो पीतल की वस्तु सोना, लाल धातु की वस्तु और पदार्थ कहना। अगर चंद्र का हो तो चांदी-मोती कहना। अगर मंगल हो तो शस्त्र या लाल वस्तु। अगर शुक्र हो तो सफेद रंग की वस्तु, अगर शनि हो तो काले रंग की भैंस, लोहा आदि कहो।

● **माल मिलेगा या नहीं**—प्रथम पंचांग में देखना कि चीज कौन से नक्षत्र में गई है। अगर वह वस्तु कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा में गई है तो वह नहीं मिलेगी। मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी में गई है तो मिल जायगी। अगर हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा में गई है तो नहीं मिलेगी; परंतु पता लग जायगा। शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी में गई है तो वस्तु का घर में ढूंढने से पता लग जायेगा, चिंता मत करो।

● **संतान होगी या नहीं**—पंचम भाव के स्वामी के साथ चंद्रमा हो तो संतान होगी। परंतु पंचम भाव स्वामी उच्च का या मित्र-क्षेत्री या स्वक्षेत्री होना चाहिए और अपने भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो और शुभ स्थान में बैठा हो जैसे १,२,३,४,५,९,१०,११ स्थान में हो तो अवश्य संतान होगी। अगर वही पंचम भाव का स्वामी अस्त हो या नीच का हो या शत्रु क्षेत्री हो या अशुभ स्थान में बैठा हो तो संतान नहीं होगी।

● **विवाह होगा या नहीं**—अगर सप्तम घर को शुभ ग्रह देखते हों और सप्तम भाव का स्वामी उच्च या मित्र-क्षेत्री या स्वक्षेत्री या शुभ स्थान में हो या सप्तम भाव में शुभ ग्रह में बैठा हो तो विवाह हो जायेगा, अन्यथा नहीं होगा।

● **मुकद्दमे का प्रश्न**—सप्तम भाव के स्वामी से लग्न का स्वामी बलवान् हो तो मुकद्दमा अवश्य जीतेगा। अगर लग्न में सूर्य, मंगल, शनि बलवान् हो तो हार होगी।

★ अथ भाग्य परीक्षा चक्रम् ★

चक्रनं०१ ध्रुवनं०१				चक्र नं०२ ध्रुवनं२				चक्र नं०३ ध्रुवनं०४				चक्रनं०४ ध्रुवनं०८				चक्रनं०५ ध्रुवनं०१६			
१	३	५	७	२	१८	१४	१५	४	७	१४	२३	८	११	३१	२७	१६	२४	२८	२७
६	१७	१६	११	१	२७	३०	२२	१२	२०	६	३०	५	१०	१३	२५	२०	२२	२३	१८
१३	१५	२५	२२	३१	१६	२३	१०	२८	२२	५	३१	२६	२६	१२	१४	६	१७	२५	२६
२६	२०	३१	२१	६	७	२६	३	१३	२१	१५	२०	२८	२४	६	३०	२१	३०	२६	३१

(१) लाभ होगा। (२) अभी देर है (३) परिश्रम से सफलता मिल सकेगी। (४) बिना इष्टदेव की पूजा के लाभ प्राप्त नहीं होगा। (५) भाग्य का सितारा चमकने वाला है। (६) सावधान रहना, धोखा खा जाओगे। (७) सभी कठिनाइयां शीघ्र दूर होवेंगी (८) प्रत्येक कार्य से मुसीबत उठानी पड़ेगी। (९) रुपये की चिन्ता न करो, शीघ्र मिलेगा। (१०) मित्र की सहायता से कार्य बनेगा। (११) तुम्हारे दिल की मुराद पूरी होगी। (१२) भाग्य पर भरोसा करो, भगवान् अवश्य मदद करेंगे। (१३) तुम्हारे कार्य में जो दिक्कतें हैं वे दूसरों की सलाह से और भी जटिल बन जायेंगी। (१४) व्यापार से लाभ होगा, शीघ्र ही सब आपत्तियां दूर होवेंगी। (१७) चिन्ता करना व्यर्थ है, भाग्य तुम्हारा टेढ़ा है। (१८) तुम काफी दिन से परेशान हो और परेशानी अभी बढ़ेगी, इसलिए आप शिव का पूजन करो सफलता मिलेगी। (१९) भाग्योदय अभी देर से होगा। (२०) भाग्य का सितारा शीघ्र ही चमकेगा, चिन्ता मत करो। (२१) धैर्य से काम करो, दिन खोटे हैं, हनुमानजी का पूजन करो। (२२) तुम्हारी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी। (२३) तुमने जो कार्य सोचा है उसके होने में सन्देह है। (२४) सम्पूर्ण इच्छाएं पूरी होंगी, साधु सेवा करो। (२५) किसी दूसरे की राय लेकर काम करने से हानि होगी। (२६) भाग्य तुम्हारे साथ है, सफलता अवश्य मिलेगी। (२७) खोटे दिनों में अपने भी पराये हो जाते हैं। (२८) मनोकामना पूरी होगी, उमा की पूजा करो। (२९) कार्य की पूर्ति होने में सन्देह है। (३०) लाभ का समय निकट भविष्य में आ रहा है। (३१) किसी की सहायता से सभी कठिनाइयों पर काबू पाओगे, गाय को लोआ खिलाओ।

व्यापार में लाभदाता यंत्र

१	९	१०
१४	७ ऐँ२ श्री ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	६
५	११	४

'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का १२५००० सवालाख जप करें। इस मंत्र को लिखकर जप के समय पूजा करके सामने रखें। जब जाप पूर्ण हो जाय तब इसको भोज-पत्र पर अष्टगंध से लिखकर काम में लावें, कार्य सिद्ध होगा।

मन्त्रों का चमत्कार

संतानदाता यंत्र				लाटरी एवं सट्टा में विजय प्राप्ति का यंत्र				परदेशी को वापस बुलाने का यन्त्र				जेल से छुटकारा पाने का यन्त्र			
८०५	८१८	८१५	८१२	६०	६७	२	७	२४६	२५४	२५७	२४२	या हाफिज	३३०	३३८	३[illegible]
८१६	८११	८०६	८१७	७	३	६४	६३	२५६	२५३	२४८	२५३	या हाफिज	३२२	३३४	३[illegible]
८१०	८१३	८२०	८०७	६६	६१	८	१	२४[illegible]	२५६	२५०	२४७	६०	३३७	३३०	३[illegible]
८११	८०८	८०९	८१४	४	५	६[illegible]	६५	२५१	२४६	२४५	२५५	जेली का नाम मां का नाम	६६	या हाफिज	या हाफिज
यह यंत्र पूर्णमासी के दिन अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें। फिर १२५००० जप करें, गाय में पूजा करें फिर धारण करें। संतान होगी जिनके लड़की-ही-लड़की हों, वह धारण करें। पुत्र होगा। संतान दाता मंत्र इसी जंत्री में देखें।				अष्टधातु से अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखे, अष्टधातु यंत्र में रख गूगलकी धूनी दे ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मंत्र को ११ दिन जपे, इसे सामने रखे रोजाना गूगल की धूनी देने केव द दाहिनी भुजा या गले में बांधे।				जबकोई सगासंबंधी चला गया हो और बहुत दिन बीतने पर भी पता न लगे या न आवे तो इस मंत्र को लिखकर चर्खे से बांध दे और चर्खा को उलटा चलावे। यह ध्यान रहे चर्खा का सूत क्वारी कन्या के हाथ से कता हो।				इस नक्शे को दीवार ... लिखकर जंगली क... के गले में बांधकर उड़ा दे! जेल से शी... ही छुटकारा मिलेगा। विशेष नोट—सिद्धि सि... कर्ता पर निर्भर है, श्र... भावव सत्यतापूर्वक विध... के साथ सिद्धि की जाये... तभी संभव है अन्यथा ...			

अथ वार, ग्रह तथा राशियों से तेजी-मन्दी जानना

● ग्रहों की वस्तुएं—सूर्य—सुवर्ण, गुड़, चौपाए, लकड़ी, सरसों तथा रस पदार्थ। चन्द्र—चांदी, कपास, चावल, सफेद वस्त्र तथा सफेद रंग की सर्व वस्तु। मंगल—सोना, तांबा, लोहा तथा सर्व धातु, चौपाये, मशीनरी, चना, गुड़, हल्दी, धनिया, गेहूं। बुध—चांदी, मूंगा, रेशम, शक्कर, रुई, तांबा, सर्व रस गुड़। गुरु—चांदी, सोना, जवाहरात, हरड़, जस्त, टीन, कुष्टा, पाट, तमाखू शेयर, गुड़, खांड। शुक्र—चांदी, रुई, बारदाना, सोना, वस्त्र, कपास। शनि—अलसी, सरसों, तिल, तेल, कोयला, ऊन, यव, गेहूं, सीसा। राहु—वायरलैस, तार, फोन तथा बिजली का सामान।

● अथ मेषादि राशियों की वस्तुएं—मेष—गेहूं, यव, सोना, कम्बल, पशमीना, राल, मलूरा। वृष—सरसों, गेहूं, वस्त्र, यव, फूल, महिष, तेल। मिथुन—रुई, कपास, ग्वार, बाजरा, कमल कन्द। कर्क—दालचीनी, जायफल, केला, दूध, तमालपत्र, कोधा। सिंह—मृगछाला, चावल, गुड़, खांड, षटरस। कन्या—अलसी, गेहूं, कुलथी, जवासा, मूंग, बटला, सफेद गेहूं। तुला—सरसों, उड़द, नारियल, लाल गेहूं, मटर, अरण्ड। वृश्चिक—गुड़, खांड, शक्कर, लोहा, मेंढ़ा, नागर मोथा। धन—घोड़ा, हाथी, रस, लवण, शस्त्र, वस्त्र, चित्रपट। मकर—जिमीकन्द, मजीठ, कूठ, कनेर। कुम्भ—टिन, विचित्र वस्तु, पोस्त, रत्न, रस। मीन—सीप, मोती, हीरा, सीसा, समुद्रफेन, मोचरस।

अथ वार, ग्रह व राशियों से तेजी-मन्दी का ज्ञान

वस्तुओं की राशि तथा सूर्यादि ग्रहों का वस्तुओं पर प्रभाव लिखा चुका है। उसी के आधार पर यह तेजी-मन्दी देखना लिखा जाता है। वस्तु की राशि से बृहस्पति २, ४, ५,७, ६, १०, ११ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु का मन्दा जानना और बृहस्पति १, ३, ६, ८, १२ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु की तेजी जानना। वस्तु की राशि से बुध २, ५, ७, १०, ११ वें स्थान पर हो तो उस वस्तु का मन्दा और १, ३, ४, ६, ७, ६, १३ वें स्थान पर बुध हो तो उस वस्तु की तेजी करता है। वस्तु की राशि से शुक्र ६, ७वें स्थान पर हो तो तेजी जानना और १ से ५ तक और ६ से १३ तक के स्थान पर शुक्र हो तो मन्दा जानना। शनि, राहु, मंगल, सूर्य, केतु वस्तु की राशि से ३, ६, १०, ११वें स्थान पर हो तो मन्दा जानना और १, २, ४, ७, ८, ६वें स्थान पर वस्तु की राशि से ये पांचों में से कोई-सा ग्रह हो तो तेजी जानना और पूर्ण चन्द्रमा का फल बृहस्पति के समान जानना।

● क्रूर तथा सौम्य ग्रहों से तेजी-मन्दी का ज्ञान—क्रूर ग्रह जब सम राशि पर आता है तब १२ अंश से लेकर १६ व २० अंश तक मंदा करता है। इसके बाद तेजी। क्रूर ग्रह जब विषम राशि पर चलता है तब १२ अंश से १६-२० तक तेजी, बाद में मन्दा करता है। क्रूर ग्रह जब सौम्य ग्रह की राशि पर आता है तब १२ अंश से २० अंश तक मन्दा करता है। क्रूर ग्रह जब मित्र सौम्य ग्रह की राशि पर हो तब मन्दा जानना।

● वार से तेजी-मन्दी का ज्ञान—सोमवार को यदि कोई वस्तु मन्दी हो जाय तो मंगलवार को तेज। यदि सोमवार को तेज हो तो मंगल को मन्दा जानना। यदि वस्तु मंगलवार को तेज हो तो बुधवार को मन्दा जानना। बृहस्पति के दिन बाजार में भी तेजी-मन्दी चलेगी, वह शनिवार तक रहेगी। शुक्रवार को तेजी चलेगी, बाद में मन्दी और यदि मन्दी चले तो बाद में तेजी जानना। शनिवार को तेजी या मन्दी चले तो वह बाजार में एक सप्ताह तेज असर दिखाएगी। यदि तेजी-मन्दी दोनों चलें तो मन्दी जानना। रविवार को जो वस्तु मंदी होगी वह सोमवार को तेज होगी और जो रविवार को तेज होगी वह सोमवार को मंदी होगी। यदि किसी प्रकार सोमवार को मन्दी न आवे तो मंगलवार का बाजार देखकर व्यापार करना चाहिए। बुधवार के दिन जो वस्तु मन्दी होगी उस वस्तु की तेजी बृहस्पति को अवश्य आ जायेगी।

अथ सूर्यादि नवग्रहों के जप के लिए मन्त्र जपसंख्या व दान की वस्तु

सूर्यदेव — रवि

दान-वस्तु	जप-संख्या
१ माणिक्य	मध्य
२ गेहूं	वर्तुलमण्डल
३ धेनु	अंगुल १२
४ रक्तवस्त्र	कलिंग देश
५ गुड़	काश्यपगोत्र
६ हेम	रक्तवर्ण
७ ताम्र	सिंहका स्वामी
८ रक्तचंदन	जपसंख्या
९ रक्तकमल	७०००

जप-मन्त्र—ओ३म् घृणि सूर्याय नमः
दान-समय—अरुणोदय (सूर्योदय के समय)
शान्त्यर्थ धारण मणि—माणिक्य या विद्रुम

चन्द्रदेव — चन्द्र

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि
१ वंशपात्र	आग्नेय्यांचतु-
२ तंदुल	रस्रमंडल अं-
३ कर्पूर	गुल ४ यमु
४ मौक्तिक	-नातीर देश
५ श्वेतवस्त्र	आत्रेयसगोत्र
६ वृषभ	श्वेतवर्ण
७ रौप्य	कर्कका स्वामी
८ घृतकुंभ	जप
९ शंख	११०००

जप-मन्त्र—ओ३म् सों सोमाय नमः
दान-समय—संध्या समय
शान्त्यर्थ धारण मणि—मोती, चांदी

मंगलदेव — मंगल

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि
१ प्रवाल	दक्षिणे
२ गेहूं	त्रिकोणमंडल
३ मसूर	अंगुल ३ अ-
४ रक्तवृष	वंतिदेशोद्भव
५ गुड	भारद्वाजगोत्र
६ सुवर्ण	रक्तवर्ण
७ रक्तवस्त्र	वृश्चिकमेषका
८ करवीरपु	स्वामी जप
९ ताम्र	१००००

जप मन्त्र—ओ३म् अगारकाय नमः
दान-समय—सूर्योदय से दो घड़ी।
शान्त्यर्थ धारणमणि-मूंगा

सर्व ग्रहों की शांति के लिए स्नानार्थ औषधियां

सरसों	जौ	देवदारु
हल्दी	कोथ	कूट
धान		
लावा	कांगनी	लाज-
खील		वंती
तीर्थ	नागर	
का	मोथा	सर्वौ-
जल		षधि

इन औषधियों से स्नान करने से साधारणतया ग्रहों की शांति होती है।

बुधदेव — बुध

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि
१ मूंग	ईशान्यां बा-
२ नीलवस्त्र	ण.कारमंडल
३ सुवर्ण	अंगुल ४
४ कांस्य	मगधदेश
५ कस्तूरी	आत्रेय गोत्र
६ आज्य	पीतवर्ण मि-
७ पंचरत्न	थुन कन्याका
८ दासी	स्वामी
९ हस्ती	जप ४०००

जप-मन्त्र—ओ३म् बुं बुधाय: नमः
दान-समय—सूर्योदय से ५ घड़ी पर्यंत
शान्त्यर्थ धारण मणि—पन्ना या सोना

गुरु-देव — गुरु

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि
१ शर्करा	उत्तरेदीर्घच-
२ हल्द	तुरस्रमंडल
३ अश्व	अंगुल ६ सि-
४ पीतवस्त्र	न्धुदेशोद्भव
५ पीतधान्य	आंगिरसगोत्र
६ पुष्कराज	पीतवर्ण
७ लवण	धन मीनका
८ कांचन	स्वामी जप
९ पीतपु.	१९०००

जप-मन्त्र—ओ३म् बृं बृहस्पतये नमः
दान-समय—सन्ध्या समय
शान्त्यर्थ धारण मणि—पुष्पराग या मोती

शुक्रदेव — शुक्र

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि
१ चित्राम्बर	पूर्वेपंचकोण
२ श्वेताश्व	मंडल अंगुल
३ धेनु	९ वृष तुला-
४ हीरा	का स्वामी
५ रौप्य	भोजकटदेश
६ सुवर्ण	भार्गवसगोत्र
७ तंदुल	श्वेतवर्ण
८ सुगंध	जप
९ घृत	१६०००

जप-मन्त्र—ओ३म् शुं शुक्राय नमः
दान-समय—अरुणोदय (सूर्योदय समय)
शान्त्यर्थ धारण मणि—मणि व चांदी

बृहत्स्तोत्र रत्नाकर मू० 18/-

होम में ग्रहों की समिधा

ग्रह	समिधा
सूर्य	आक
चन्द्र	ढाक
मंगल	कत्था
बुध	अपामार्ग
बृह.	पीपल
शुक्र	गूलर
शनि	शमी छोकर
राहु	दूब
केतु	कुशा

दान-वस्तु	जप संख्या आदि	शनिदेव
१ माष २ तिल ३ तेल ४ कुलित्थ ५ महिषी ६ लोह ७ श्यामधेनु ८ इन्द्रनील ९ श्यामवस्त्र	पश्चिमे धनु- षाकार मंडल अंगुल २ सौराष्ट्र देश काश्यपगोत्र मकर कुम्भ- का स्वामी कृ- ष्णवर्ण जप २३०००	शनि

जप-मन्त्र—ओ३म् शं शनैश्चराय नमः
दान-समय—दिन के १२ बजे
शांत्यर्थधारण मणि नीलम या लोहा

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि	राहुदेव
१ गेहूं २ रत्न ३ अश्व ४ नीलवस्त्र ५ कंबल ६ तिल ७ तेल ८ लोह ९ [illegible]	नैर्ऋत्यां शूर्पा- कारमंडल अंगुल १२ राठिन देश पैठीनस गोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००	राहु

जप-मन्त्र—ओ३म् रं राहवे नमः
दान-समय—रात्रि के १२ बजे
शांत्यर्थधारण मणि—गोमेद या लाजवंती

दान-वस्तु	जप-संख्या आदि	केतुदेव
१ वैडूर्य २ तिल ३ कंबल ४ कस्तूरी ५ शस्त्र ६ कृष्णव० ७ तेल ८ कृष्णपु० ९ छाग०	वायव्ये ध्व- जाकारमंडल केतु अंगुल ६ अवन्ति देश जैमिनि गोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००	केतु

जप-मन्त्र—ओ३म् कं केतवे नमः
दान-समय—रात्रि १२ बजे।
शांत्यर्थधारण मणि—गोमेद या लाजवंती

वर्ष पात्र में अनिष्ट स्थान गत मुन्था शांत्यर्थ दान वस्तु			
चावल	सोना	कांसा	बरतन
घी	सफेद वस्त्र	वर्ण	

मुन्था वर्ष में जिस स्थान में हो, उसका स्वामी जो ग्रह हो उसी समय के अनुसार करना चाहिए।

● स्थिर कारक ग्रह—सूर्य आत्मा पिता का कारक है। चन्द्रमा मन माता का, मंगल सत्व-भ्राता का, बुध वाणी मातुल का, गुरु ज्ञान सुख और पुत्र का, शुक्र मद दारा का, शनि दुःख और मृत्यु कारक होता है।

अथ लग्न आदि बारह भावों के स्थिरकारक ग्रह

● लग्न कारक रवि—धन भाव का गुरु। मातृ भाव का मंगल। माता भाव चन्द्र-बुध है। पंचम भाव का गुरु। छठे भाव का शनि, मंगल। सप्तम भाव का शुक्र। अष्टम भाव का शनि। नवम भाव का सूर्य, गुरु। दशम भाव का बुध, सूर्य, गुरु। एकादश भाव का गुरु। बारहवें भाव का शनि स्थिर ग्रह रहता है।

अथ नैसर्गिक स्थिरकारक ग्रह

● सूर्य—राज्य, विद्रुम, रक्त वस्त्र, माणिक्य, वन, पर्वत, क्षेत्र, पिता का सुखःदुख, पवित्रता, पराक्रम, आरोग्य, शक्ति, सम्पत्ति, मनोरुचि, ज्ञानोदय, आत्मकारक रवि है। अतः इन बातों का विचार रवि से करना, इसी प्रकार सभी ग्रहों को समझना चाहिए।

● चन्द्र—श्वेत चामर, यशोवृद्धि, आमोद, कांति, मुखलावण्यता पुष्टि, सुगन्ध-द्रव्य और माता का सुख-दुख, मन की प्रसन्नता, रस, ईख, गेहूं, क्षार, कुल द्विज शक्ति, कार्य शस्य, चांदी, बुद्धि, राजकृपा धनादि सम्पत्ति का कारक चन्द्रमा है।

● मंगल—पराक्रम, शुद्ध का शील, शौर्य, व्रण, अग्नि, राज विजय, प्रशंसा, युद्ध, साहस सेनापतित्व, दण्ड देने के अधिक तलवार आदि सभी अस्त्र-शस्त्र गम्भीरता, काम, क्रोध, बैरी, बुद्धि, आग्रह, अवग्रह, दूसरे की निंदा, स्वतन्त्रता, जमीन, जायदाद, भाई व बहिन, रोग, विद्या, धाय, साला, छोटा भाई, जमाता (जमाई) इन सबका कारक मंगल जानना चाहिए।

● बुध—विद्या, बुद्धि, विवेक, मातुल, मित्र, वक्तव्य, वार्ता, संतति, शांति, विनय, भक्ति, ज्ञाति, गोत्र समृद्धि भातृ, भगिनी, बांधव, मातृ, सजाति, सम्पन्न व ज्योति विद्या, इतिहास, भय, लक्ष्मी, शिल्प, वेदान्त विद्या का कारक बुध है।

● गुरु—ज्ञान, सम्पत्ति, शरीर, सौख्य, संतति, बुद्धि, वाणी, धारणा, मंत्र, राजतन्त्र, नैतिकता, गज, तुरंगादि, वाहन, निगमबोध, स्वकर्म, योग, सिंहासन, यज्ञ, देव, ब्राह्मण, तीर्थ, धन, ग्रह, कांचन वस्त्र, पुत्र, मित्र, आंदोलन, पिता, हार्दिक का कारक गुरु है।

● शुक्र—स्त्री वाहन, अलंकार, रति. सुख, व्यापार, विचित्र जड़ाऊ वस्त्र, कारचोबी के कपड़े, सुख, गायन, शास्त्र, काव्य, सुकुमारता, आमरण यौवन, चांदी, एवं लोकमत, मौक्तिक, विभव, कविता, संगीत, साहित्य, रस-क्रीड़ा, विलास, चित्र, कान्ति, सौंदर्य, राजा, राज-पुरुष, वशीकरण, वारुणी, विद्या, काव्य, रचना बीड़ा या छोटा होना आदि अणिमादि, ज्योतिष, विद्या, मातृ-पितृ, श्वसुर, मातामहादिक का विचार शुक्र से करना चाहिए।

● शनि—महिष, अश्व, गज, तेल, वस्त्र, श्रृंगार, प्रयाण, आयुष्य, जीवन का उपाय, दारिद्रय, मृत्यु, सर्व-राज, मद्य, आयुध ग्रह, युद्ध, संचार, शूद्र, नीलमणि, विप्र, केश, शल्य, शूल, रोग, दासी, जन, लोभ, मोह, विष-मता, पर पीड़ा, निर्धारित, शब्दादि निष्ठुरता, दुर्मति, दुर्दशा, रोग, वात, जौ, गेहूं, अफीम, काला धान्य, लोहादि का विचार शनि से करना चाहिए।

● राहु—प्रयाण के समय सर्प रात्रि, शकल सुमार्ग कर्ता, यश, प्रतिष्ठा, छत्र दाता का विचार राहु से करना चाहिए।

● केतु—वर्ण रोग, धर्म रोग, अतिशूल रोग, फोड़ा, स्वाति आदि का विचार केतु से करना चाहिए।

सौ वर्षों का श्री गणेश कैलेण्डर

(सन् १९५६ से २०५५)

(ख)

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

महीना							
जनवरी, अक्टूबर	श्री	ग	णे	शा	य	न	म
फरवरी, मार्च, नवम्बर	शा	य	न	ग	णे	मः	श्री
अप्रैल, जुलाई, जनवरी (लीप)	ग	णे	म	य	न	श्री	शा
मई	न	श्री	ग	मः	शा	य	णे
जून	मः	शा	य	श्री	ग	णे	न
अगस्त, फरवरी (लीप)	य	न	श्री	णे	मः	शा	ग
सितम्बर, दिसम्बर	णे	मः	शा	न	श्री	ग	य

(ग)

१	८	१५	२२	२९	मंगल	बुध	गुरु	शनि	रवि	सोम	शुक्र
२	९	१६	२३	३०	बुध	गुरु	शुक्र	रवि	सोम	मंगल	शनि
३	१०	१७	२४	३१	गुरु	शुक्र	शनि	सोम	मंगल	बुध	रवि
४	११	१८	२५	*	शुक्र	शनि	रवि	मंगल	बुध	गुरु	सोम
५	१२	१९	२६	*	शनि	रवि	सोम	बुध	गुरु	शुक्र	मंगल
६	१३	२०	२७	*	रवि	सोम	मंगल	गुरु	शुक्र	शनि	बुध
७	१४	२१	२८	*	सोम	मंगल	बुध	शुक्र	शनि	रवि	गुरु

हस्तचिह्न विचार मू० 18/..

(क)

न	१९५६	१९८४	२०१२	२०४०
श्री	५७	८५	१३	४१
ग	५८	८६	१४	४२
णे	५९	८७	१५	४३
शा	१९६०	८८	१६	४४
य	६१	८९	१७	४५
न	६२	१९९०	१८	४६
श्री	६३	९१	१९	४७
णे	६४	९२	२०२०	४८
मः	६५	९३	२१	४९
शा	६६	९४	२२	२०५०
य	६७	९५	२३	५१
श्री	६८	९६	२४	५२
ग	६९	९७	२५	५३
णे	१९७०	९८	२६	५४
मः	७१	९९	२७	२०५५
य	७२	२०००	२८	श्री
न	७३	१	२९	
श्री	७४	२	२०३०	
ग	७५	३	३१	
म	७६	४	३२	
शा	७७	५	३३	
य	७८	६	३४	
न	७९	७	३५	
ग	१९८०	८	३६	
णे	८१	९	३७	
मः	८२	२०१०	३८	
णे	८३	११	३९	

कैलेण्डर देखने का उदाहरण

मान लीजिए आपको सन् १९५६ के जनवरी माह की तारीखों का ज्ञान करना है। चूँकि यह लीप वर्ष है इसलिए जहाँ जनवरी के आगे लीप लिखा हुआ है उसीके अनुसार देखा जायगा। सर्व प्रथम (क) चक्र में १९५६ की बाईं ओर 'न' अक्षर है। जनवरी लीप के सामने पाँचवें खाने में यह अक्षर है। उसके ठीक नीचे (ग) चक्र में पहला दिन रविवार है। इसलिये पहली (१) तारीख उसी दिन को पड़ेगी। इसी क्रम से अन्य तारीखों का भी बोध हो जायगा।

नोट—१९७६ के (क) चक्र में 'म' है (ख) चक्र में जनवरीके (लीप) सामने वाले 'म' के ठीक नीचे 'ग' चक्र में 'गुरु' है, अतः १९७६ की पहली जनवरी को गुरुवार होगा।

कैलेण्डर देखने की विधिः—

ईसवी सन् जिस की तारीख देखनी हो उस सन् को (क) के नीचे वाले चक्र में ढूँढ़िये इसके उपरान्त उसी चक्रमें बाईं ओर जो अक्षर हो उसी अक्षर को जिस महीने की तारीख देखना हो उसकी दाहिनी ओर (ख) चक्र में ढूँढ़िये। उसी अक्षर के ठीक नीचे जो पहला दिन (ग) चक्र में मिले उसी दिन को आपके अभीष्ट महीने की पहली तारीख होगी। लीप वर्ष (Leap-year) [अर्थात् जिस सन् में ४ से भाग देने पर शेष शून्य हो] की जनवरी और फरवरी की तारीखें निर्दिष्ट स्थान के अनुसार ही देखिये।

मेष—मेष लग्न में जन्म लेने वाला चुस्त-चालाक तथा चंचल नेत्रों वाला, सर्वदा रोगी, धर्म के कुछ नियम करने वाला, कृतघ्न, राज से सम्मानप्राप्त, स्वस्त्री-निरत तथा दान देने वाला होता है। नदी-तालाब आदि से डरने वाला और कठिन काम कर्ता होता है। इस पुरुष को जन्म से पहले मास में कष्ट, वर्ष १३ में अल्प, १८ में जल से कष्ट, ५० में अंग-रोग, वर्ष ६ में कठिन बीमारी, इसके पश्चात् ७५ वर्ष तक जीवित रहता है। अपनी जिन्दगी में उन्नति के साधनों की तरफ झगड़ा करके ही तरक्की करता है। भ्रात्र-सुख और पित्र-सुख पूर्ण नहीं होता है। प्रत्येक कार्य को हिम्मत के साथ कर लेने वाला होता है।

वृष—वृष लग्न में जन्म लेने वाला रणधीर, बली, धनिक, तेजस्वी, दान-दाता तथा विलास के सुखों को भोगने वाला होता है। अपनी जिंदगी में अच्छे-अच्छे मित्र इसे मिलते हैं। पुत्र और विद्या दोनों उत्तम प्राप्त करता है। विलासिता के कारण पर-दारा-चोरी में मस्त रहता है। वर्ष ३, ६, ८, ३३, ५२, ६२ व ६३ में अल्प भय होता है। यदि इन वर्षों में अपने जीवन को पार करे तो वर्ष ८५ की आयु होती है। अपने हठ पर दृढ़ रहता है। लड़ाई-झगड़े तथा मुकद्दमों में दिक्कतें उठाना, आराम से रहना इसके स्वभाविक कर्म हैं।

मिथुन—मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला चंचल नेत्र वाला, गायक, यशवान, गुणी और चतुर, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, न्यायप्रिय और मीठा शब्द कहने वाला होता है। कष्ट महीना ६, १०, ११, १८, २४, ५३, ६३ में अल्प भय होता है। इसके पश्चात् ७५ वर्ष की आयु होती है। यह स्वभाव का नरम परन्तु दिल का मजबूत होता है। जहां यह प्रत्येक कार्य ईमानदारी से करता है वहां अपने प्रत्येक भाव को दूसरे पर जाहिर भी नहीं करता। विद्या द्वारा इसे सम्मान प्राप्त होता है और यह प्रायः सुख-दुःख में समान भाव से रहता है। सन्तान-सुख मध्यम और आपसी विवाद इसको हर समय घेरे रहते हैं।

कर्क—कर्क लग्न में जन्म लेने वाला शूरवीर, धनी, गुरु-सेवक, परम चतुर, पतले शरीर वाला, विदेश में रहने वाला, क्रोधी, दुःखी, श्रेष्ठ मित्रों वाला, अपने घर के मनुष्यों की बजाय श्रेष्ठ बुद्धि वाला तथा मस्तक का रोगी होता है। कष्ट दिन ११ मास, ६ वर्ष १, ७, ६, १३, १६, २०, २७, ३५, ४५, ५५, ६१ में अल्प भय। इसके पश्चात् वर्ष ७० की आयु होती है। यह अपनी जिन्दगी में कभी चंचलता और कभी शांत स्वभाव के कारण पहेलियों में उलझा हुआ रहता है।

सिंह—सिंह लग्न में जन्म लेने वाला क्षमा-शील, मांस-भक्षी, देश-देशान्तर घूमने वाला, श्रेष्ठ मित्रों वाला, शीघ्र क्रोधित होने वाला, पिता का प्रिय, व्यसनी, प्रत्येक कार्य में चतुर और संसार में प्रसिद्ध होता है। कष्ट वर्ष १, १०, १५, २५, ४५, ५१, ६१ में अल्प भय, इसके बाद यह ६५ वर्ष तक जीता है। यह मनुष्य अपने बल-भरोसे तथा गर्व से छोटे कार्यों की तरफ ध्यान न देकर बड़े-बड़े कामों के करने में सफल होता है। यह खाद्य सामग्री तथा वस्त्रादि के व्यापार से अपने जीवन में उन्नति करने वाला होता है।

कन्या—कन्या लग्न में जन्म लेने वाला विलासी, धनी, सुन्दर, चतुर, दानी, कवि, सज्जन-प्रिय, विदेश में रहने वाला तथा धर्मनिष्ठ होता है। कष्ट मास ३ वर्ष ३, १३, २६, ३३, ४३ में अल्प भय, इसके अनन्तर वर्ष ८४ तक जीता है। यह पुरुष अपनी जिन्दगी में जहां अच्छा सम्मान प्राप्त करता है वहां अनेक कोशिशें करने पर भी धन एकत्र नहीं करने पाता। उसका व्यापार आम बैंक आदि से सम्बन्धित रहता है। इसकी पवित्र आत्मा होते हुए भी यह किसी से विशेष प्रेम नहीं करता।

तुला—तुला लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य दयाशील, चंचल नेत्र वाला, देव-पूजक, प्रवासी, मित्रों का प्रिय और बिना किसी कारण क्रोध करने वाला होता है। कष्ट मास ४, वर्ष १, ४, २१, ३३, ४१, ५१, ६१ में अल्प भय। इसके पश्चात् वर्ष ८५ तक जीवित रहता है। यह पुरुष अपनी जिन्दगी में कभी सुखी नहीं रहता है। प्रतिदिन इसे नवीन घटनाएं पार करनी होती हैं, परन्तु मानसिक शक्ति प्रबल होने के कारण प्रत्येक समस्या को शान्तिपूर्वक एवं न्याय के द्वारा सुलझा लेता है।

वृश्चिक—वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाला पापी, पीले नेत्र वाला, दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला, अभिमानी, अपने कुटुम्ब के लिए कठोर, माता-पिता को दुःख देने वाला, ठगी और चोरी की विद्या में निपुण और बाल्यावस्था से ही परदेश में रहने वाला होता है। कष्ट मास २, वर्ष ३, ७, ८, १३, ३२, ३५, ४५ में अल्प भय। पूर्ण आयु ७५ वर्ष दो माह की होती है। यह मनुष्य अपनी जिंदगी में बहादुरी से धन एकत्र करता है। ससुराल पक्ष से तथा नातेदारों और कानूनी कामों से भी यह धन प्राप्त करता है।

धन—धन लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्वगुण वाला, सत्यवक्ता, शूरवीर, धनी, सुन्दर स्त्री वाला, मीठा बोलने वाला, साइन्स और चित्रकला में प्रवीण और स्थूल शरीर वाला होता है कष्ट मास ५, वर्ष ३, ६, ११, १६, २४, ३६, ४७, ५७,६६ में अल्प भय। इसके बाद वर्ष ८५ जीता है। यह मनुष्य गुप्त रहस्यों को जानने वाला, भविष्यवेत्ता, विश्वासपात्र और शांत स्वभाव का होता है।

यह मनुष्य २२ साल से पहले भी विशेष सुखी नहीं रहता। इसके बाद अपने परिश्रम से धन इकट्ठा करके सुख भोगने वाला होता है।

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली

मकर—मकर लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य पंडित, संगीत-प्रिय, मातृ-भक्त, दयाशील, दानी, अधिक कुटुम्ब वाला, अपने कुल में हीन और स्त्रियों के वश में रहने वाला होता है। कष्ट मास ३ वर्ष, १,३,१०,३२,४३,५१,५७ में अल्प भय होता है। इसके अनन्तर वर्ष ७३ तक जीवित रहता है। यह आदमी अपनी शूरवीरता, दृढ़ता और परिश्रम से बड़े से बड़े काम को करने में समर्थ होता है। जीवन के प्रत्येक रास्ते में शंका करता है,जिसके कारण दिल प्रसन्न नहीं रहता है। शत्रु भी सदा इसको दबाने की ताक में रहते हैं।

कुम्भ—कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य आलसी, दानी, हाथी घोड़ा आदि का स्वामी, सरल स्वभाव, पुण्यवान, निडर, प्रेम से यश प्राप्त करने वाला, धन और विद्या में परिश्रम करने वाला और दूसरों के उपकार को मानने वाला होता है। कष्ट दिन ७, कष्ट वर्ष १, ६, १८, ३२ में अल्प भय। पूर्ण आयु ६१ वर्ष की होती है। यह आदमी चंचल स्वभाव के कारण अनेक फरेबबाजियों से धन एकत्र करने तथा अपना हौंसला बढ़ाने के लिए अनेक तरकीबें सोचता है, परन्तु शत्रुओं की गुप्त चालों के कारण यह किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

मीन—मीन लग्न में जन्म लेने वाला आदमी गम्भीर, शूरवीर, लोभी, अपने वंश की वृद्धि करने वाला, देव-पूजक, संगीत में चतुर एवं अपने कुटुम्बियों से प्रेम करने वाला होता है। कष्ट वर्ष १, ६, १८, ३३, ४० में होता है। पूर्ण वर्ष ६१ तक जीता है। यह आदमी जिन्दगी में विशेष सम्मान प्राप्त करने वाला तथा बहुत ही सरल स्वभाव का होता है। संगीत, साहित्य, कला-कौशल की विद्वता के साथ उच्च लेखक भी होता है। यह प्रत्येक कारोबार में धन कमाने में लगा रहता है।

नोट—विशेष भाग्य का समस्त जिन्दगी का हाल जानने के लिए 'आपका भविष्य' पुस्तक मंगावें। मूल्य 24/-

जन्म के वार से फल जानना

● १. रविवार—रविवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति तेज होती है। यह चतुर, दान करने वाला तथा प्रेमी होता है। पित्त की बीमारी के रोग इसे लगते हैं। इसे १, ६ महीने में तथा १३, २३वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ५० वर्ष की होती है।

● २. सोमवार—सोमवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शान्त होती है। यह सुख-दुःख दोनों में समान रहने वाला, चतुर, बुद्धिमान् तथा धैर्यवान् होता है। राजकीय नौकरी करने वाला होता है अर्थात् राज्य कर्मचारी होता है। इसे ८, ११ वें महीना तथा १६, २७ वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

● ३. मंगलवार—मंगलवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति गरम होती है। यह पराक्रमी, वीर, साहसी एवं संग्राम में विजय प्राप्त करने वाला होता है। इसकी बुद्धि विशेष अच्छी नहीं होती, इसी से यह बौद्धिक कार्यों से अलग रहना पसन्द करता है, परन्तु वीरता के कार्यों में आगे बढ़ने वाला होता है। इसे २, ३२ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ७४ वर्ष की होती है।

● ४. बुधवार—बुधवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शांत होती है। यह मीठा बोलने वाला, पंडित, धनी, बौद्धिक कार्य करने वाला, लेखक, कवि या मुहर्रिरी करने वाला होता है। इसे ८ वें महीना या ८ वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ६४ वर्ष की होती है।

● ५. बृहस्पतिवार—बृहस्पतिवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति शांत होती है। यह चतुर, विद्वान, राजा का मन्त्री, प्रतिष्ठित नेता, वकील, जज एवं ग्रन्थ-लेखक होता है। इसे ७ वें महीना में तथा १३ व १६ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु ८४ वर्ष की होती है।

● ६. शुक्रवार—शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति कुछ गर्म होती है। देवताओं की पूजा न करने वाला, क्रोधी, चंचल चित्त वाला, बुद्धिमान्, रूपवान् तथा खेल में मस्त रहने वाला होता है। इसकी बोलने की शक्ति अच्छी होती जिससे समाज में आदर प्राप्त करता है। इसकी पूर्णायु ६० वर्ष की होती है।

● ७. शनिवार—शनिवार के दिन जन्म लेने वाले बालक की प्रकृति तेज होती है। यह दृढ़-प्रतिज्ञ, कामी एवं साहसी होता है। शरीर की स्थिति विशेष अच्छी नहीं होती फिर भी इसका पराक्रम सराहनीय होता है। इसके बाल लम्बे होते हैं। इसे १ महीने में तथा १३ वें वर्ष में कष्ट होता है तथा पूर्णायु १०० वर्ष की होती है।

अथ सन्तानदाता मंत्र और उसकी जप-विधि

सन्तान का इच्छुक यजमान पत्नी सहित स्नान करके और नवीन वस्त्र पहनकर सन्ध्योपासनादि नित्य-कर्म से निवृत्त होकर जप-स्थान में पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके बैठे और यथाविधि श्री गणेशादि देवताओं की पूजा करे। तत्पश्चात् जपार्थ देशकाल के अनन्तर "अमुकगोत्रोत्पन्नो अमुकशर्माहं स्वधर्मपत्न्या चिरंजिव शुभ श्री सन्तान प्राप्त्यर्थं सपादलक्षं सन्तानगोपाल मन्त्रस्य जपं करिष्ये"—यह संकल्प करके विनियोग करे—"ॐअस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारदऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवता ग्लौं बीजम् नमः शक्ति पुत्रा जपेर्थे विनियोगः।" फिर न्यास करे—"देवकी सुत गोविन्दे हृदयाय नमः वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। देहि मे तनयो कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐनमः अस्त्राय फट्।" इसके पश्चात् ध्यान करे—"विजयेन युतो रथस्थितः सममानीय समुद्रनध्यतः। प्रददत तनयाने द्विजन्मसे स्मरणीवो वसुदेव-नन्दनः।" अथ मन्त्र—"देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनय कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।" सवा लक्ष जाप करने के पश्चात् दशांश हवन, दशांश तर्पण, ब्रह्म-भोज यथाविधि करना चाहिए।

कुछ रोगों पर महात्माओं की अनुभूत औषधें

● (१) खांसी—काकड़ासिंगी, अतीस, मुलहठी ये तीनों चीजें बराबर लेकर चूर्ण कर लें। शहद से मिलाकर चाटें तो खांसी बन्द हो जाय।

● (२) घाव मरहम—तिल का तेल दो तोला, मोम देशी छह माशे, कत्था छह माशे, सिन्दूर छह माशे, मुरदासंग छह माशे, छोटी इलायची के बीज छह माशे, सफेदा काशगरी छह माशे इन सब चीजों का मरहम बनाकर लगाने से घाव ठीक हो जाता है।

● (३) स्तनों में दूध बढ़ाना—कमलगट्टे की खीर से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। (२) बिनौले की गिरी के दो तोले चूर्ण की दूध में खीर बनाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

● (४) रक्त प्रदर—नीम का तेल गाय के दूध में पीने से स्त्री का रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

● (५) उन्माद—ईख कुटकी सम भाग दूध और शक्कर मिलाकर नासिका में डालकर नस्य लेने से सब प्रकार के उन्माद नष्ट होते हैं।

● (६) गर्भ प्राप्त—बिजौरे नीबू के बीजों को दूध में पकाकर घी के साथ पीने से स्त्री को गर्भ प्राप्त होता है।

● (७) ज्वरातिसार—असगन्ध, दालचीनी, नागरमोथा, बाराहीकन्द, धाय के फूल और कुड़ा इनसे सिद्ध जल क्वाथ चार-पांच दिन में ज्वरातिसार की शान्ति करता है।

● (८) अर्श—हरड़ और लहसन चार माशे और हाड़जोड़ आठ माशे, कुछ तेल और नमक मिलाकर लगाने से अर्श रोग का नाश होता है।

● (९) बवासीर—अगर बवासीर को जड़ से खोना है तो एक मास तक अन्न नहीं खाना चाहिए। केवल जिमीकन्द का सेवन सुख पूर्वक करने से बवासीर नष्ट होता है।

● (१०) बिच्छू का जहर—हुलहुल की जड़ बिच्छू काटे मनुष्य को सात बार सुंघाने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

● (११) पुराने दस्त—साढ़े चार माशे रीठा को आधा पाव पानी में भिगोकर झाग उठायें। फिर उस पानी को छानकर रोगी को पिला दें। कुछ दिन पिलाने से पुराने दस्त ठीक हो जाते हैं।

● (१२) जूएं—धतूरे के पत्तों का अर्क कूटकर निकाल लें। इस अर्क को सिर में लगाने से जुएं मर जाती हैं।

● (१३) आंख दुखना—बबूल के पत्तों को रात के समय कूटकर टिकियां बना लें। इन टिकियों को दुखती आंखों पर रखकर ऊपर से पट्टी बांध कर सो जायं, सुबह तक आंखों की लाली तथा पीड़ा दूर हो जायेगी।

● (१४) पेट का दर्द—पीपल के दो पत्तों को पीसकर गुड़ में मिलाकर खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

● (१५) गंज—बरगद के पत्तों को अलसी के तेल में भूनकर प्रातः सायं गज पर मलने से कुछ दिनों में गंजे सिर पर बाल उग आते हैं।

● (१६) तुतलाना—प्रतिदिन सत्यानाशी की एक नई डाली को तोड़कर जीभ पर लगायें, फिर उसके दूध को उंगली से जीभ पर मलें। कुछ दिन तक यह क्रिया करने से तुतलाना ठीक हो जाता है।

● (१७) पेट के कीड़े—इन्द्रायण की जड़ को महीन पीसकर कपड़छान कर लें। ३ माशा चूर्ण में १ तोला पुराना गुड़ मिलाकर खूब कूटें फिर गुलाब जल के छींटे देकर नरम करके ६ गोलियां बना लें। प्रतिदिन २ गोली गरम पानी के साथ सेवन करने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

● (१८) दाद—ढाक के बीज तथा कत्था दोनों को बराबर लें, पानी में पीसकर लेप करने से दाद कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

● (१९) मुंह के दाग—तुलसी के पत्तों के रस में नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से झांई, मुंहासे आदि चेहरे के दाग दूर होते हैं।

● (२०) उदर-विकार—१ पाव गुलाब जल में १ पाव अनारदाना भिगोकर रात भर रख दें, सुबह उसे मलकर छानकर पी जायं। इससे हर प्रकार के उदर-विकार, आधा सीसी तथा नेत्र रोगों को लाभ होता है।

● (२१) हैजा—ढाई तोला प्याज तथा ७ काली मिर्च को सिल या खरल में डालकर इतना पीसें कि छानने की जरूरत न रहे, फिर उसमें उतना पानी मिला दें जितना रोगी पी सके। इसे पिलाते ही हैजा की घबराहट, प्यास, कै तथा दस्तों को लाभ होता है।

● (२२) काली खांसी—छोटे बच्चों के गले में लहसुन की कलियों को गूंथकर माला बनाकर पहना देने से ही उनकी काली खांसी ठीक हो जाती है।

● (२३) जुलाब—ढाई तोला अण्डी का साफ किया हुआ तेल रात्रि के समय दूध के साथ पीने से प्रातः साफ दस्त आता है।

● (२४) पेचिश—सौंफ ५ तोला, बेलगिरी ५ तोला और मिश्री १० तोला—तीनों को कूट-पीस कर ६-६ माशे चूर्ण को ताजा पानी के साथ सुबह-शाम लेने से पेचिश दूर होती है।

● (२५) प्लीहा—कच्ची मूली का सेवन करना यकृत् तथा पीलिया रोग में लाभ करता है।

● (२६) मृगी—दो माशे तम्बाकू के पत्तों को एक पाव खौलते हुए पानी में एक घंटे तक डाले रक्खें। फिर पानी को छानकर आधी छटांक की मात्रा में प्रातः सायं पिलायें। एक सप्ताह के प्रयोग से मृगी रोग पूरी तरह ठीक हो जाता है।

● (२७) कण्ठ माला—काशीफल के टुकड़ों को पानी में गर्म करें। उस गर्म पानी के गरारे करने से कण्ठ माला रोग में लाभ होता है।

● (२८) दाढ़ का दर्द—एक लाल मिर्च को पानी में महीन पीसकर छान लें। उस पानी को थोड़ा-सा गरम करके जिस ओर की दाढ़ में दर्द हो उसके दूसरी ओर के कान में डाल दे तो दाढ़ का दर्द तुरंत बन्द हो जाता है। इस प्रयोग से कान में दर्द होने लगे तो थोड़ा-सा शुद्ध घी गरम करके कान में डाल देना चाहिए तो उससे कान का दर्द दूर हो जाता है।

श्री रामशलाका प्रश्नावली

यहां नीचे श्री रामशलाका प्रश्नोत्तर विधि दी जाती है। अभीष्ट प्रश्न का उत्तर चाहने वाले सज्जन पहले भगवान् श्री रामचन्द्रजी का ध्यान करें, फिर श्रद्धापूर्वक किसी भी कोष्ठ में उंगली या शलाका रखें और उस अक्षर को कोरे कागज या स्लेट पर लिख लें। अब इसके आगे पढ़ें और नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़, उसे भी लिख लें। इस प्रकार प्रत्येक नवें अक्षर को गिनकर लिखते जाने से चौपाई तैयार होगी, जो आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा।



सु	प्र	उ	वि	हो	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रें	बस	है	मं	ल	ण	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
ति	र	त	र	श	ईं	ह	ब	ब	प	चि	स	इ	स	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्र	का	फ	खा	जि	ई	र	रा	पू	द	ल
णि	को	मि	गो	ण	म	ज	य	ने	मणि	क	ज	प	स	ल
हिं	रा	मि	स	रि	ग	द	न्	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	ण	न	को	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	ण	ब	ती	न	रि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	हु	सु	म्ह	रा	र	स	हि	र	त	न	ख	ा	जा	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	ज	हू	हीं	खा	जू	ई	रा	रे

उदाहरण—पहले कोष्ठक पर उंगली या शलाका रखने से अक्षर 'सु' आया 'सु' के बाद नवां अक्षर गिनकर लिखते गये तो चौपाई बनी:

१—सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।
फल—प्रश्न उत्तम है, कार्य की सिद्धि होगी।

इसी प्रकार बनने वाली आठ अन्य चौपाइयां और उनका फल इस प्रकार है—

२—होईहै सोई जो राम रचि राखा। को करि तरक बढ़ावहि साखा।।
फल—कार्य होने में सन्देह है। अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है।

३—प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा।।
फल—भगवान् का स्मरण करके कार्य आरम्भ करो, सफलता मिलेगी।

४—उघरें अन्त न होई निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू।।
फल—इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य पूरा होने में सन्देह है।

५—बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनिसम निज गुन अनुसरहीं।
फल—खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूरा होने में विलम्ब है।

६—मुद मंगलमय सन्त समाजू। जिमि जग जंगम तीरथराजू।।
फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

७—गरल सुधा रिपु करिय मिताई। गोपद सिन्धु अनल सितलाई।।
फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है। कार्य सफल होगा।

८—बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहु न धीरा।।
फल—कार्य पूरा होने में सन्देह है।

९—सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे। राम लखन सुनि भए सुखारे।।
फल—प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।

देहाती पुस्तक भण्डार

श्रीकृष्णशलाका प्रश्नावली



यहां नीचे कृष्णशलाका प्रश्नोत्तर विधि दी जाती है। अभीष्ट प्रश्न का उत्तर चाहने वाले सज्जन पहले भगवान् श्री कृष्णचन्द्र का ध्यान करें। फिर श्रद्धापूर्वक किसी भी कोष्ठ में उंगली या शलाका रखें और उस अक्षर को कोरे कागज या स्लेट पर लिख लें। अब इसके आगे पढ़ें और बारहवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लें। इस प्रकार प्रत्येक बारहवें अक्षर को लिखते जाने से चौपाई तैयार होगी जो आपके अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगा।

मि	भ	प्र	ह	हो	प्र	त	वि	फि	क	का	म्ब	लि	ा	न	रि	इ	स
न	खि	ये	हु	प्र	ल	हृ	गि	अ	इ	ह	फ	म	वि	सु	घ	न	त
हि	तु	नु	च्छा	हु	ल	न	धा	कृ	मं	हो	न	तु	म्हा	कू	ह	स	हो
फ	न	त	अ	ह	शा	म	रि	ल	र	फ	इ	र	फ	ब	जे	प्र	न्ति
हि	न	स	स	ल	नि	वं	र	हु	हि	स	कु	थि	जा	वा	न	स	र
हृ	उ	पा	प	म	स	अ	य	हो	न	दा	ा	में	ल	व	र	भ	ङ्ग
घ	व	ह	हि	स	श	ल	ट	त	तू	व	ति	र	ख	ज	पू	व	न
न	म	म	य	को	म	न	ा	ा	छ	ठ	ह	हो	ह	ा	वा	ई	ा
म	भी	ई	ा	ा	ो	ई	ा	हीं	या	स	ही	ा	थ	वि	हो	हीं	ई
व	रा	प	स	ा	नि	हीं	न्ध	धि	इ	न	स	न	न	ह	ह	हु	त
जी	न	धि	ह	हीं	फ	त	हि	ग	ज	स	न	ति	को	धा	हु	त	ल
म	स	ति	हिं	फ	व	न	उ	न	अ	नि	ह	क	म	द	सु	र	व्या
स	तु	मं	प	क	ो	ा	थं	ो	ल	इ	धि	फ	म	ह	शि	सं	त
अ	को	न	भ	ल	प	त	स	य	म	श	लं	क	उ	धु	वि	हृ	इ
इ	म	ह	नो	य	श	हृ	य	ा	ज	इ	त	न्द्र	ज	न	र	य	य
त	हि	बु	य	फ	न	हू	ग	हि	प	हि	न	स	सं	तो	य	ल	र
प	प्र	भ	छू	म	हि	ब	स	हि	दु	स	फ	ा	ा	ा	छ	ा	को
को	ा	का	रा	ो	ा	ही	नो	ई	ा	हीं	ई	ई	रा	हीं	था	ई	हीं

उदाहरण—हमने श्रीकृष्णशलाका प्रश्नावली में 'र' पर उंगली या शलाका रखी, इससे अगला अक्षर 'क' है। अतः 'क' को एक मानकर उससे आगे गिनने पर बारहवां अङ्क 'ज' मिला। इसी प्रकार गिनते रहने पर निम्न चौपाई बनी। ऐसी जो अन्य चौपाइयां बनती हैं, वे फल सहित यहां दी गई हैं।

तन मन कर जहं मेल न होई। बनत न काज कहत सब कोई।।

फल—भारतकाण्ड में गांधारी अपने पुत्र को समझा रही है। फल उत्तम नहीं। कार्य में पूर्ण रूप से मन नहीं लग रहा है। इससे अभीष्ट कार्य के सिद्ध होने में सन्देह है।

मन अनुकूल सदा होइ जाई। विधि विधान में यह नहिं भाई।।

फल—द्वारका काण्ड में जरासन्ध शिशुपाल को रुकमणी स्वयम्वर के समय हार जाने पर समझा रहा है। इसका फल मध्यम है। किसी अभीष्ट की आशंका तो नहीं है, परन्तु अभीष्ट कार्य की सिद्धि भी नहीं होगी।

हरि इच्छा हरिसन नहिं पूछा। होइहहु अवसि मनोरथ छूछा।।

फल—स्वर्गारोहण काण्ड में बिना भगवान् कृष्ण के पूछे ऋषियों के शाप से साम्ब के पेट से निकले मूसल को चूर्ण करके समुद्र में फेंक दिया था। इसका फल खराब है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि कभी भी नहीं होगी।

होइहहु सफल सदा सब ठांहीं। नहीं तनिक संशय यहि माहीं।।

फल—यह चौपाई भीष्मजी के राजनीतिक उपदेश के ज्ञान-काण्ड में से है। प्रश्न-फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य होगी।

असफल होय निराश न होई। सफल होत संशय नहिं कोई।।

फल—यह चौपाई उस समय की है जब श्रीकृष्ण ने अपने सखाओं को समझाकर व्रजकाण्ड में भोजन के हेतु द्विज पत्नियों के पास भेजा था। फल सामान्य है। निरन्तर प्रयत्न करने से ही फल मिलना संभव है।

भागि तुम्हारि न जाय बखानी। धन्य न कोउ तुम सम जग प्रानी।।

फल—भारत-काण्ड में इसको सूर्य-ग्रहण के अवसर पर इकट्ठे हुए राजा-महाराजा उग्रसेन से कहते हैं। इसका फल उत्तम है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी

विधि विधान कर उलटन हारा। नहिं समर्थ कोउ यहि संसारा।।

फल—मथुरा-काण्ड में अक्रूरजी के समझाने पर धृतराष्ट्र का कथन है। प्रश्न फल सामान्यतया उत्तम नहीं है और अभीष्ट कार्य की सिद्धि पाना संदेहास्पद जान पड़ता है।

किये सुकृत बहु पावत नाहीं। वह गति दीन आजु तोहि काहीं।।

फल—स्वर्गारोहण काण्ड में भगवान् कृष्ण अपने पैर के तलवे में बाण मारने वाले व्याध को शुभ गति दे रहे हैं। प्रश्न-फल अतीव श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि शीघ्र ही मिलेगी।

कह धर्मज जेहि पर तव दाया। सहजहिं सुलभ विजय यदुराया।।

फल—भारतकाण्ड में भीष्मपितामह के रथ से गिर जाने पर युधिष्ठिर भगवान श्रीकृष्ण से कह रहे हैं। प्रश्नफल श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य सिद्ध होगा।

काम न होइ असम्भव कोई। साहस करइ लहइ फल सोई।।

फल—व्रजकाण्ड में भगवान् कृष्ण वृजवासियों से वृषभासुर द्वारा भयभीत होने पर कह रहे हैं। प्रश्नफल सामान्यतया उत्तम है। साहसपूर्वक निरन्तर प्रयत्न करने पर ही अभीष्ट कार्य की सिद्धि होगी।

मिलत न शांति कुसंगति माहीं। नितनव व्याधि ग्रसत नर काहीं।।

फल—भारतकाण्ड में धृतराष्ट्र के दरबार में जाकर भगवान् श्रीकृष्ण सुयोधन को सन्धि के लिए समझा रहे हैं। प्रश्नफल अत्यन्त नेष्ट है। अभीष्ट कार्य के अतिरिक्त अनिष्ट होने की सम्भावना भी है।

मिलिहहि तुमहि विजय रन माहीं। जीत न सकत इन्द्रहू चाहीं।।

फल—युद्ध के लिए तैयार अर्जुन ने जब भगवती दुर्गा देवी की स्तुति की तो भगवती दुर्गा ने उन्हें यह आशीर्वाद दिया। यह उसी समय की चौपाई है। प्रश्नफल अत्यन्त श्रेष्ठ है। अभीष्ट कार्य की सिद्धि अवश्य ही शीघ्र प्राप्त होगी।

भविष्य-ज्ञान प्रश्नावली

यह प्रश्नावली चौंतीस यन्त्र के आधार पर बनाई गई है। इससे प्रश्न का उत्तर जानने की क्रिया निम्न प्रकार है :

यंत्र से प्रश्न का उत्तर जानने की क्रिया

प्रश्न करने वाला श्री सच्चिदानन्द-स्वरूप भगवान का स्मरण कर दाईं ओर लिखे प्रश्नों में से अपने प्रश्न का उच्चारण करे। नीचे लिखे चौंतीसा यन्त्र के कोठों में से किसी एक कोठे में अंगुली रखे। इसके पश्चात् प्रश्न की संख्या तथा जिस कोठे में अंगुली रखी थी उस कोठे के अंक को जोड़े और फिर उसमें से एक घटावे। जो शेष बचे उस संख्या के प्रश्न के सामने जिस देवता का नाम लिखा हो, उसी देवता के प्रश्न-फल में चौंतीसा यन्त्र में अंगुली रखे हुए कोठे के अंक पर अपने प्रश्न का उत्तर देखे तो इच्छित उत्तर प्राप्त होगा।

उदाहरण १—जैसे कि प्रश्न करने वाले ने भगवान का स्मरण कर १५ संख्या वाले प्रश्न को बोला कि 'स्वप्न का फल कैसा है।' यह प्रश्न करने के पश्चात् उससे चौंतीसा यन्त्र के कोठों में से किसी एक पर अंगुली रखने को कहा तो उसने तेरह अंक वाले कोठे पर अंगुली रखी। इसके पश्चात् कोठे के अंक १३ और प्रश्न की संख्या १५ को जोड़ा तो १३+१५=२८ हुए। इनमें से १ घटाया तो २८—१=२७ शेष रहे। अब सत्ताईसवें प्रश्न के सामने देवता का नाम देखा तो कुबेर मिला। अब कुबेर प्रश्न-फल में चौंतीसा यन्त्र में अंगुली रखे, कोठे के अंक १३ पर प्रश्न का उत्तर देखा तो 'स्वप्न का फल शुभ नहीं है' यह उत्तर मिला।

उदाहरण २—उपर्युक्त प्रकार से प्रश्न करने वाले ने २९ संख्या वाले प्रश्न, 'मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं' को बोला और चौंतीसा यन्त्र में १६ अंक वाले कोठे में अंगुली रखी तो प्रश्न-संख्या २९ और चौंतीसा यन्त्र के कोठे के १६ को जोड़ा तो २९+१६=४५ हुए। इनमें से १ घटाया तो ४५—१=४४ शेष रहे। ये ३४ से अधिक हैं इसलिए ४४ में से ३४ घटाये तो १० शेष रहे। अब १० संख्या वाले प्रश्न के सामने 'वसुदेव' का नाम मिला। अब वसु प्रश्न-फल में चौंतीसा यंत्र में अंगुली रखे हुए कोठे के १६ अंक पर प्रश्न का उत्तर देखा तो 'इच्छा पूरी होगी' यह उत्तर मिला। इस प्रकार सभी प्रश्नों का उत्तर जानना चाहिए।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४



प्रश्न



क्रम	प्रश्न	देव का नाम
१	सन्तान सुख होगा या नहीं	गणेश
२	मुकद्मा में हार होगी या जीत	ब्रह्मा
३	भाग्योदय कब होगा	विष्णु
४	नौकरी मिलेगी या नहीं	शिव
५	तरक्की का योग है या नहीं	इन्द्र
६	खेती में लाभ होगा या हानि	अग्नि
७	मकान बनेगा या नहीं	वायु
८	पास होऊंगा या फेल	सूर्य
९	विद्या प्राप्त होगी या नहीं	चन्द्रमा
१०	मेरा जीवन कैसा व्यतीत होगा	वसु
११	जीवन में सफलता मिलेगी या नहीं	वरुण
१२	गड़ा धन मिलेगा या नहीं	पृथ्वी
१३	विवाह होगा या नहीं	अश्विनीकुमार
१४	बीमार अच्छा होगा या नहीं	मंगल
१५	स्वप्न-फल कैसा है	बुध
१६	तबादला होगा या नहीं	बृहस्पति
१७	व्यापार से लाभ रहेगा या हानि	शुक्र
१८	मेरी चिंता दूर होगी या नहीं	शनि
१९	मित्र के साथ कैसी बनेगी	राहु
२०	कर्ज मिलेगा या नहीं	केतु
२१	खोई वस्तु मिलेगी या नहीं	ध्रुव
२२	परदेशी कब आयेगा	यम
२३	यात्रा से लाभ मिलेगा या हानि	विश्वेदेवा
२४	भाइयों से कैसी बनेगी	यक्ष
२५	कुआं बनेगा या नहीं	भैरव
२६	यह वर्ष कैसा रहेगा	वासुकि
२७	आज का दिन कैसा रहेगा	कुबेर
२८	पुत्र होगा या कन्या	मित्र
२९	मेरी इच्छा पूरी होगी या नहीं	जयन्त
३०	स्त्री कैसे स्वभाव की मिलेगी	तक्षक
३१	सम्बन्धी धोखा तो नहीं देगा	शेष
३२	अमुक स्त्री मुझसे प्रेम करती है या नहीं	काम
३३	तीर्थ-यात्रा को जाना होगा या नहीं	काल
३४	मन्दिर बनेगा या नहीं	अनन्त

गणेश-प्रश्न-फल

१ सन्तान को सुख मिलेगा।
२ किसी की सहायता से मन्दिर बनेगा।
३ तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
४ शुद्ध प्रेम करती है।
५ सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
६ स्त्री का स्वभाव गरम रहेगा।
७ इच्छा पूरी होने में देरी है।
८ कन्या होगी।
९ दिन मध्यम रहेगा।
१० यह वर्ष उत्तम है।
११ कूप-निर्माण नहीं होगा।
१२ भाइयों में अच्छी बन जाएगी।
१३ यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१४ परदेशी शीघ्र ही आयेगा।
१५ खोई वस्तु शीघ्र मिल जाएगी।
१६ कर्ज कठिनाई से मिलेगा।

शिव-प्रश्न-फल

१ नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२ भाग्योदय में देर है।
३ मुकदमे में हार होगी।
४ संतान सुख की आशा पूरी होगी।
५ मन्दिर नहीं बन सकेगा।
६ तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
७ प्रेम करती है।
८ सम्बन्धी धोखा दे। सावधान।
९ स्त्री के स्वभाव से मेल मिल जायगा।
१० इच्छा पूरी होगी।
११ पुत्र होगा।
१२ दिन शुभ है।
१३ यह वर्ष उत्तम नहीं बीतेगा।
१४ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।
१५ भाइयों से बननी कठिन है।
१६ यात्रा से लाभ मिलेगा।

वायु-प्रश्न-फल

१ मकान बनाने की कामना पूरी होगी।
२ खेती से लाभ कम होगा।
३ तरक्की का योग नहीं है।
४ नौकरी काफी प्रयत्न से ही मिलेगी।
५ भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
६ मुकदमे में जीत पाना कठिन है।
७ संतान का सुख मिलेगा।
८ मंदिर बनाने की कामना पूरी होगी।
९ विघ्न के कारण तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
१० प्रेम करती है।
११ संबंधी धोखा देने में नहीं चूकेगा।
१२ स्त्री का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा है।
१३ इच्छा पूरी होगी।
१४ कन्या होगी।
१५ दिन अच्छा नहीं है।
१६ यह वर्ष मध्यम रहेगा।

ब्रह्मा-प्रश्न-फल

१ मुकदमे में जीत होगी।
२ संतान हेतु गृह देवता की पूजा करो।
३ मन्दिर अभी नहीं बनेगा।
४ तीर्थ-यात्रा की आशा पूरी होगी।
५ इस समय वह प्रेम नहीं करती है।
६ सम्बन्धी धोखा देगा।
७ स्त्री का स्वभाव सरल रहेगा।
८ इच्छा पूरी नहीं हो सकेगी।
९ पुत्र होगा।
१० दिन शुभ रहेगा।
११ यह वर्ष उत्तम नहीं है।
१२ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।
१३ भाइयों से बननी बहुत कठिन है।
१४ यात्रा से लाभ होगा।
१५ परदेशी अभी नहीं आ रहा है।
१६ खोई वस्तु नहीं मिलेगी।

इंद्र-प्रश्न-फल

१ तरक्की के योग अच्छे हैं।
२ नौकरी प्रयत्न से मिलेगी।
३ भाग्योदय अभी नहीं हो सकेगा।
४ मुकदमे में जीत होगी।
५ संतान-सुख उपाय से मिलेगा।
६ मन्दिर की आशा पूरी होगी।
७ तीर्थ यात्रा कर सकोगे।
८ प्रेम नहीं करती, दिखावटी प्रेम है।
९ सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा।
१० स्त्री का स्वभाव अच्छा रहेगा।
११ इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२ कन्या होगी।
१३ दिन मध्यम है।
१४ यह वर्ष कठिनाई के साथ बीतेगा।
१५ कूप-निर्माण देरी से होगा।
१६ भाइयों से अच्छा मेल रहेगा।

सूर्य-प्रश्न-फल

१ पास हो जाओगे।
२ मकान के बनने में देर है।
३ खेती से लाभ नहीं होगा।
४ तरक्की शीघ्र होगी।
५ नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
६ भाग्योदय अभी देर से होगा।
७ मुकदमा जीत जाओगे।
८ संतान-सुख में बाधा, गोपालजप कराओ
९ मन्दिर निर्माण देर से होगा।
१० तीर्थ-यात्रा सकुशल होगी।
११ प्रेम दिखावटी है।
१२ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१३ स्त्री का स्वभाव उत्तम रहेगा।
१४ इच्छा पूरी नहीं होगी।
१५ पुत्र होगा।
१६ दिन शुभ है।

विष्णु-प्रश्न-फल

१ भाग्योदय शीघ्र ही होगा।
२ मुकदमे के जीतने में सन्देह है।
३ सन्तान-सुख उपाय से होगा।
४ मन्दिर बनाने की आशा पूरी होगी।
५ तीर्थ-यात्रा नहीं होगी।
६ गुप्त प्रेम करती है।
७ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
८ स्त्री का स्वभाव उत्तम रहेगा।
९ इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१० कन्या होगी।
११ दिन शुभ नहीं रहेगा।
१२ यह वर्ष शुभ रहेगा।
१३ कूप निर्माण नहीं होगा।
१४ भाइयों से नहीं बनेगी।
१५ यात्रा से लाभ पाना कठिन है।
१६ परदेशी देर से आयेगा। चिन्ता न करें



अग्नि-प्रश्न-फल

१ खेती से लाभ होगा।
२ तरक्की के योग में देर है।
३ नौकरी नहीं मिलेगी।
४ भाग्योदय शीघ्र ही होगा।
५ मुकदमे की जीत में सन्देह है।
६ सन्तान-सुख देर से होगा।
७ मन्दिर मित्र की सहायता से बनेगा।
८ तीर्थ-यात्रा होने में सन्देह है।
९ प्रेम का दिखावा ही अच्छा है।
१० सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
११ स्त्री का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
१२ इच्छा पूरी नहीं हो सकेगी।
१३ पुत्र होगा।
१४ दिन उत्तम है।
१५ यह वर्ष उत्तम है।
१६ कूप-निर्माण की आशा पूरी होगी।

चंद्रमा-प्रश्न-फल

१ विद्या प्राप्त करोगे।
२ पास होने में सन्देह है।
३ मकान नहीं बन सकेगा।
४ खेती से लाभ मिलेगा।
५ तरक्की का योग अभी नहीं है।
६ नौकरी मिल जायेगी।
७ भाग्य का सितारा शीघ्र चमकेगा।
८ मुकदमा जीतने में संदेह है।
९ संतान-सुख देरी से होगा।
१० मन्दिर नहीं बन सकेगा।
११ तीर्थ-यात्रा नहीं कर सकोगे।
१२ प्रेम का चक्कर हानिकारक है।
१३ सम्बन्धी धोखा दे। सावधान।
१४ स्त्री का स्वभाव अच्छा नहीं है।
१५ इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१६ कन्या होगी।

वसु-प्रश्न-फल

१ जीवन-सुखपूर्वक व्यतीत होगा ।
२ विद्या थोड़ी प्राप्त कर सकोगे ।
३ फेल हो जाओगे ।
४ मकान की आशा पूरी नहीं होगी ।
५ खेती से लाभ कम होगा ।
६ तरक्की का योग बन रहा है ।
७ नौकरी मिलने में देर है ।
८ भाग्योदय का समय नजदीक है ।
९ मुकद्दमे में जीत निश्चित है ।
१० सन्तान-सुख नहीं मिलेगा ।
११ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।
१२ तीर्थयात्रा की आशा पूरी नहीं होगी ।
१३ शुद्ध प्रेम करती है ।
१४ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा ।
१५ स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी ।
१६ इच्छा पूरी होगी ।

अश्विनी-प्रश्न-फल

१ विवाह हो जाएगा ।
२ गड़ा धन विशेष उपाय द्वारा मिले ।
३ जीवन में सफलता पाना कठिन है ।
४ जीवन उत्तम प्रकार से बीतेगा ।
५ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे ।
६ पास नहीं हो सकोगे ।
७ मकान की कामना देर से पूरी होगी ।
८ खेती से लाभ नहीं होगा ।
९ तरक्की के योग में देरी है ।
१० नौकरी मिल जायेगी ।
११ भाग्योदय निकट-भविष्य में होगा ।
१२ मुकद्दमे में जीत होगी ।
१३ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१४ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।
१५ तीर्थ यात्रा नहीं हो सकेगी ।
१६ शुद्ध प्रेम करती है ।

बृहस्पति-प्रश्न-फल

१. तबादला शीघ्र हो जायेगा ।
२. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है
३. बीमार के ठीक होने में सन्देह है ।
४ विवाह हो जायेगा ।
५ गड़ा धन उपाय से मिलेगा ।
६ जीवन में सफलता कम मिलेगी ।
७ जीवन अच्छी तरह से बीतेगा ।
८ विद्या प्राप्त होना कठिन है ।
९ पास हो जाओगे, शिव-पूजा करो ।
१० मकान की कामना पूरी होगी ।
११ खेती से पूरा लाभ नहीं मिलेगा ।
१२ तरक्की शीघ्र ही होगी ।
१३ नौकरी मिल जायेगी ।
१४ भाग्योदय अभी देर से होगा ।
१५ मुकदमे की जीत में सन्देह है ।
१६ संतान-सुख नहीं मिलेगा ।

वरुण-प्रश्न-फल

१ जीवन में सफलता प्राप्त होगी ।
२ जीवन संघर्षमय बीतेगा ।
३ पूरी विद्या प्राप्त न कर सकोगे ।
४ पास हो जाओगे ।
५ मकान नहीं बन सकेगा ।
६ खेती से लाभ नहीं होगा ।
७ तरक्की होने में सन्देह है ।
८ नौकरी मिलने के अभी आसार नहीं हैं ।
९ भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है ।
१० मुकद्दमे में जीत होने में संदेह है ।
११ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१२ मन्दिर-निर्माण की कामना पूरी हो ।
१३ तीर्थ-यात्रा कर सकोगे ।
१४ गुप्त प्रेम करती है ।
१५ सम्बन्धी का धोखा देना कठिन है ।
१६ स्त्री का स्वभाव मिलनसार होगा ।

मगल-प्रश्न-फल

१ बीमार अच्छा हो जाएगा ।
२ विवाह होने में सन्देह है ।
३ गड़ा धन गृह-देव की पूजा से मिले ।
४ जीवन में सफलता मिलेगी ।
५ जीवन मध्यम श्रेणी में बीतेगा ।
६ विद्या प्राप्त कर लोगे ।
७ पास हो जाओगे ।
८ मकान शीघ्र बनेगा ।
९ खेती में लाभ मिलेगा ।
१० तरक्की अभी नहीं हो सकेगी ।
११ नौकरी मिलने में सन्देह है ।
१२ भाग्योदय अभी नहीं होगा ।
१३ मुकद्दमे की जीत में सन्देह है ।
१४ संतान-सुख मिलेगा, चिन्ता छोड़ दो
१५ मन्दिर निर्माण शीघ्र होगा ।
१६ तीर्थ-यात्रा की आशा पूरी होगी ।

शुक्र-प्रश्न-फल

१ व्यापार में सावधानी से लाभ मिले ।
२ तबादले का योग चल रहा है ।
३ स्वप्न का फल उत्तम है ।
४ बीमार अच्छा हो जायेगा ।
५ विवाह उपाय से होगा ।
६ गड़ा धन मिलेगा ।
७ जीवन में सफलता पाना कठिन है ।
८ जीवन में कठिनाइयां अधिक आयें ।
९ विद्या थोड़ी प्राप्त होगी ।
१० पास हो जाओगे ।
११ मकान अभी देर से बनेगा ।
१२ खेती से लाभ मिलने में सन्देह है
१३ तरक्की अभी नहीं हो सकेगी ।
१४ नौकरी मिलने में सन्देह है ।
१५ भाग्योदय होने वाला है ।
१६ मुकद्दमे में जीत होगी ।

पृथ्वी-प्रश्न-फल

१ गड़ा धन प्राप्त करोगे ।
२ सफलता मिल जाएगी ।
३ जीवन काफी कठिनाइयों से बीतेगा ।
४ विद्या प्राप्त करोगे ।
५ पास होने में सन्देह है ।
६ मकान अभी देरी से बनेगा ।
७ खेती से लाभ मिलेगा ।
८ तरक्की अभी न हो सकेगी ।
९ नौकरी मिल जाएगी ।
१० आपके सितारे चमकने में देर है ।
११ मुकद्दमे में हार की संभावना है ।
१२ सन्तान-सुख होगा ।
१३ मन्दिर अभी नहीं बन पायेगा ।
१४ तीर्थ-यात्रा नहीं हो सकेगी ।
१५ दिखावटी प्रेम करती है ।
१६ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा ।

बुध-प्रश्न-फल

१ स्वप्न का फल उत्तम है ।
२ बीमार देर से अच्छा होगा ।
३ विवाह हो जायेगा उपाय से ।
४ गड़ा धन प्राप्त होगा ।
५ जीवन में सफलता नहीं मिलेगी ।
६ जीवन में कठिनाइयां विशेष रहेंगी ।
७ विद्या प्राप्त शिव की पूजा से होगी ।
८ पास होने में सन्देह है ।
९ मकान अभी नहीं बनेगा ।
१० खेती से लाभ मिलेगा ।
११ तरक्की तो होगी, परन्तु देर से ।
१२ नौकरी अभी नहीं मिलेगी ।
१३ भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है ।
१४ मुकद्दमे में जीत होगी ।
१५ सन्तान-सुख उपाय से होगा ।
१६ मन्दिर अभी नहीं बनेगा ।

शनि-प्रश्न-फल

१ चिन्ता अभी देर से मिटेगी ।
२ व्यापार में लाभ होगा ।
३ तबादला नहीं होगा ।
४ स्वप्न का फल उत्तम है ।
५ बीमार ठीक होने में सन्देह है ।
६ विवाह होने में सन्देह है ।
७ गड़ा धन आसुरी सिद्धि द्वारा मिले ।
८ जीवन में सफलता प्राप्त करोगे ।
९ जीवन सुखमय व्यतीत होगा ।
१० विद्या प्राप्त कर सकोगे ।
११ पास होना मुश्किल है ।
१२ मकान अभी नहीं बन सकेगा ।
१३ खेती से लाभ नहीं मिलेगा ।
१४ तरक्की का योग अभी नहीं बनता ।
१५ नौकरी मिल जायेगी ।
१६ भाग्योदय शीघ्र होगा ।

राहु-प्रश्न-फल

१ मित्र धोखा देगा, सावधान रहना।
२ चिंता शीघ्र ही मिट जायेगी।
३ व्यापार से लाभ नहीं होगा।
४ तबादला हो जाएगा।
५ स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
६ बीमार अच्छा हो जाएगा।
७ विवाह हो जायेगा।
८ गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९ जीवन में सफलता कम मिलेगी।
१० जीवन बाधाओं से युक्त बीते।
११ विद्या प्राप्त नहीं हो सकेगी।
१२ पास होने में सन्देह है।
१३ मकान की आशा पूरी होगी।
१४ खेती में लाभ मिलेगा।
१५ तरक्की का योग प्रयत्न से है।
१६ नौकरी अभी देर से मिलेगी।

यम-प्रश्न-फल

१ परदेशी रास्ते में चल रहा है।
२ खोई वस्तु मिल जायेगी।
३ कर्ज इस समय मिलना मुश्किल है।
४ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
५ चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६ व्यापार से लाभ रहेगा।
७ तबादला हो जायेगा।
८ स्वप्न का फल मध्यम है।
९ बीमारी अच्छी हो जायेगी।
१० विवाह हो जायेगा।
११ गड़ा धन प्राप्त होगा।
१२ जीवन में सफल होना कठिन है।
१३ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करोगे।
१४ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।
१५ पास नहीं होगे।
१६ तरक्की में बाधा है।

भैरव-प्रश्न-फल

१ कूप-निर्माण की कामना पूरी हो।
२ भाइयों से अच्छी बन जाएगी।
३ यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।
४ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
५ खोयी वस्तु प्रयत्न से मिले।
६ कर्ज मिल सकेगा।
७ मित्र से बननी कठिन है।
८ चिन्ता मिटेगी, देव-पूजा करो।
९ व्यापार में लाभ पाना मुश्किल है।
१० तबादला प्रयत्न से होगा।
११ स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
१२ बीमार अच्छा होना कठिन है।
१३ विवाह होगा, चिंता करना व्यर्थ है।
१४ गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५ जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।
१६ जीवन में बाधाएं विशेष आयेंगी।

केतु-प्रश्न-फल

१ कर्ज तो मिलेगा, पर अभी देर है।
२ मित्र से सतर्क रहें।
३ चिंता हनुमान की पूजा से मिटेगी।
४ व्यापार में लाभ होगा।
५ तबादला रुक जायेगा।
६ स्वप्न का फल मध्यम होगा।
७ बीमार अच्छा हो जायेगा।
८ विवाह उपाय से होगा।
९ गड़ा धन पितृ-पूजा से मिलेगा।
१० जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११ जीवन में सफलता कम मिलेगी।
१२ विद्या कठिन परिश्रम से प्राप्त होगी।
१३ पास हो जाओगे।
१४ विद्या प्राप्त नहीं कर सकोगे।
१५ पास नहीं होगे।
१६ तरक्की में बाधा है।

विश्वेदेवा-प्रश्न-फल

१ यात्रा लाभदायी रहेगी।
२ परदेसी अभी नहीं आ रहा है।
३ खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४ कर्ज देर से मिलेगा।
५ मित्र के साथ नहीं बन सकेगी।
६ चिन्ता सब दूर हो जाएगी।
७ व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८ तबादला नहीं हो सकेगा।
९ स्वप्न का फल अशुभ है।
१० बीमार अच्छा नहीं होगा।
११ विवाह होने में सन्देह है।
१२ गड़ा धन नहीं मिलेगा
१३ जीवन में अच्छी सफलता मिले।
१४ जीवन में कष्ट अधिक मिले।
१५ शिक्षा प्राप्त करोगे।
१६ पास हो जाओगे।

वासुकि-प्रश्न-फल

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२ कुआं बन जायेगा।
३ भाइयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा में लाभ मिलेगा
५. परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।
६. खोई वस्तु मिलेगी।
७. कर्ज मिलेगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान रहना।
९. चिन्ता मिट जायेगी।
१०. व्यापार से लाभ मिलेगा।
११. तबादला हो जायेगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छे होने में सन्देह है।
१४ विवाह उपाय से हो सकेगा।
१५ गड़ा धन पितृ-पूजा से मिल सकेगा।
१६ जीवन में सफलता कम मिलेगी।

ध्रुव-प्रश्न-फल

१ खोई वस्तु प्रयत्न से मिल सकेगी।
२ कर्ज मिल जायेगा।
३ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
४ चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
५ व्यापार से लाभ नहीं हो सकेगा।
६ तबादला नहीं होगा।
७ स्वप्न का फल उत्तम है।
८ बीमार के अच्छे होने में सन्देह है।
९ विवाह देर से होगा।
१० गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११ जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२ जीवन में सुख नहीं मिलेगा।
१३ विद्या प्राप्त करोगे।
१४ पास होने में सन्देह है।
१५ मकान अभी नहीं बन पायेगा।
१६ खेती से लाभ मिलेगा।

यक्ष-प्रश्न-फल

१ भाइयों से बननी मुश्किल है।
२ यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३ परदेशी शीघ्र ही आ जायेगा।
४ खोई वस्तु मिल जायेगी।
५ कर्जा नहीं मिलेगा।
६ मित्र के साथ अच्छा मेल होगा।
७ चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८ व्यापार से लाभ मिलेगा।
९ तबादला होने के योग हैं।
१० स्वप्न का फल शुभ है।
११ बीमार अच्छा हो जायेगा।
१२ विवाह उपाय से होगा।
१३ गड़ा धन शीघ्र प्राप्त होगा।
१४ जीवन में सफल होना मुश्किल है।
१५ जीवन सुखपूर्वक बीतेगा।
१६ विद्या पूजा से प्राप्त होगी।

कुबेर-प्रश्न-फल



१ दिन शुभ नहीं है।
२ यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३ कुआं नहीं बन सकेगा।
४ भाइयों से अच्छी बन जायेगी।
५ यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
६ परदेशी बीमार है, अभी नहीं आयेगा।
७ खोयी वस्तु मिलने में संदेह है।
८ कर्ज नहीं मिलेगा।
९ मित्र के साथ सावधानी से कार्य करो।
१० चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
११ व्यापार से लाभ मिलना कठिन है।
१२ तबादला नहीं होगा।
१३ स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४ बीमार अच्छा हो जाएगा।
१५ विवाह उपाय से होगा।
१६ गड़ा धन शीघ्र प्राप्त हो जायेगा।

मित्र-प्रश्न फल



१ पुत्र होगा।
२ दिन शुभ है।
३ यह वर्ष उत्तम है।
४ कुम्रां बन जायेगा।
५ भाइयों से बिगाड़ होगा।
६ यात्रा से लाभ कम है।
७ परदेशी लौट रहा है।
८ खोयी वस्तु नहीं मिलेगी।
९ क़र्ज कठिनाई से मिलेगा।
१० मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
११ चिन्ता मिट जायेगी।
१२ व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३ तबादला हो जायेगा।
१४ स्वप्न का फल शुभ है।
१५ बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१६ विवाह शीघ्र ही हो जायगा।

शेष-प्रश्न-फल

१ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२ स्त्री तेज स्वभाव की मिलेगी।
३ इच्छा पूरी होने में संदेह है।
४ कन्या होगी।
५ दिन मध्यम रहेगा।
६ यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७ कुम्रां बनाने में अचानक बाधा पड़े।
८ भाइयों से बननी मुश्किल है।
९ यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१० परदेशी शीघ्र घर आ जायेगा।
११ खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१२ कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
१४ चिंता अभी दूर नहीं होगी।
१५ व्यापार से लाभ मिलेगा।
१६ तबादले की आशा देर से पूरी होगी।

काम-प्रश्न-फल

१ गुप्त प्रेम करती है।
२ सम्बन्धी से धोखे की उम्मीद कम है।
३ स्त्री सरल स्वभाव की मिलेगी।
४ इच्छा पूरी होगी।
५ पुत्र होगा।
६ दिन शुभ नहीं हैं।
७ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
८ गृह-निर्माण की कामना पूरी होगी।
९ भाइयों से साधारण प्रेम रहे।
१० यात्रा से लाभ होगा।
११ परदेशी अभी नहीं आ रहा है।
१२ खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३ कर्ज मिल जायेगा।
१४ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१५ चिंता शीघ्र मिट जायेगी।
१६ व्यापार से हानि होगी।

जयन्त-प्रश्न-फल

१ इच्छा देर से पूरी होगी।
२ कन्या होगी।
३ दिन मध्यम रहेगा।
४ यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५ कुम्रां बनने में रुकावटें ज्यादा हैं।
६ भाइयों से मेल-मिलाप रहेगा।
७ यात्रा से लाभ रहेगा।
८ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
९ खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१० कर्ज नहीं मिलेगा।
११ मित्र के साथ बनना कठिन है।
१२ चिन्ता बढ़ जायेगी।
१३ व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४ तबादला होने में संदेह है।
१५ स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१६ बीमार शीघ्र ही अच्छा होगा।

तक्षक-प्रश्न-फल

१ स्त्री सरल स्वभाव की मिलेगी।
२ इच्छा पूरी होगी।
३ पुत्र होगा।
४ दिन शुभ है।
५ यह वर्ष अच्छा रहेगा।
६ कुम्रां बन जायेगा।
७ भाइयों से अनबन रहेगी।
८ यात्रा में लाभ मिलना कठिन है।
९ परदेशी अभी देर से आयेगा।
१० खोयी वस्तु देर से मिलेगी।
११ कर्ज देर से मिलेगा।
१२ मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३ चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४ व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५ तबादले की आशा पूरी होगी।
१६ स्वप्न का फल उत्तम होगा।

काल-प्रश्न-फल

१ तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२ शुद्ध प्रेम करती है।
३ सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४ स्त्री अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
५ इच्छा पूरी होने में देरी है।
६ कन्या होगी।
७ दिन शुभ रहेगा।
८ यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।
९ कूप अभी देरी से बनेगा।
१० भाइयों से मेल कम रहेगा।
११ यात्रा से लाभ नहीं रहेगा।
१२ परदेशी अभी नहीं आयेगा।
१३ खोयी वस्तु मिलना कठिन है।
१४ कर्ज मिलने में संदेह है।
१५ मित्र के साथ अच्छी बन जायेगी।
१६ चिंता कुछ समय बाद मिटेगी।

अनन्त-प्रश्न-फल

१ मन्दिर बनवाने की आशा पूरी होगी।
२ तीर्थ-यात्रा कर सकोगे।
३ प्रेम नहीं करती है।
४ सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
५ स्त्री उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
६ इच्छा पूरी होगी।
७ पुत्र होगा।
८ दिन शुभ नहीं हैं।
९ यह वर्ष मध्यम है।
१० कूप-निर्माण की आशा शीघ्र पूरी हो।
११ भाइयों से नहीं बनेगी।
१२ यात्रा से लाभ मिलेगा।
१३ परदेशी आ रहा है।
१४ खोयी वस्तु नहीं मिल सकेगी।
१५ कर्ज शीघ्र ही मिल जायेगा।
१६ मित्र से बनना मुश्किल है, सावधान।

भाग्य की हालत देखने की उत्तम प्रश्नावली

रमल प्रश्नावली

सज्जनों ! 'श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री' में हर वर्ष परिश्रम करके फलादेश बढ़ाया जाता है। यह प्रश्नावली नीचे लिखी जाती है। यह अति उत्तम विधि बहुत समय से परीक्षा की हुई है और ठीक निकली है। हर मनुष्य बिना दूसरे की सहायता के अपना भला-बुरा, जो होनहार है देख सकता है। इसमें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। यह पुराने ग्रन्थों से ली हुई ऋषि-प्रणीत है। इसके देखने की रीति यह है कि चौकोर लकड़ी या हाथीदांत का पासा बनवा लें। इसमें हर तरफ **क च ट त** अक्षर खुदवा लें। जब प्रश्न करना हो तो शुद्ध होकर नीचे लिखे प्रश्न को पढ़कर पासा डालें, किसी देवता का स्मरण करें, फिर मन्त्र पढ़ें—"ओं अर्हंत महावीराय नमः।" पासे को हिला कर डालें। जो अक्षर ऊपर आवे उसे याद रखें। इस प्रकार तीन बार डालें और अक्षर याद करके फिर फल में देखें। जैसे किसी ने पासा डाला तो प्रथम **त** आया, फिर **क**, फिर **च** आया, अतः **तकच** में जो फल है वही आपका है। इसी प्रकार देखने का फल है।

● **क क क**—तुम्हें एक मास से इस कार्य की चिन्ता है, मगर हुआ नहीं है। अब तुम्हारे शत्रु मित्र बन जायेंगे, व्यापार उत्तम होगा, लक्ष्मी का लाभ होगा, राजा से मान्यता प्राप्त होगी, स्त्री का भरोसा मत करना।

● **क क च**—जो बात विचारते हो, वह शीघ्र ही बिना प्रयत्न पूरी होगी। शत्रु शरण आवेंगे, लाभ का समय आ गया है, कार्य सिद्ध होंगे, दो दिन से चिन्ता है।

● **क च च**—जो काम विचारा है देरी से होगा। किसी मित्र से भेंट होगी, रुपया जो गया है वह प्राप्त होगा। इच्छा डेढ़ मास बाद पूरी होगी, पेट में दर्द रहता होगा।

● **क ट ट**—आपका विचार व्यापार करने का है, कुछ चिन्ता भी है। सब चिन्ता शीघ्र ही मिटेगी। १५ दिन बाद स्वतः विचार में काम आवेगा, लाभ होगा। पेट में गड़बड़ रहती है।

● **क ट क**—आपके काम अति हैं। रुपयों का लाभ होगा। चिन्ता जो है जाती रहेगी। भूमि धन की चिन्ता शीघ्र ही पूरी होगी। मित्रों से भेंट व लाभ होगा।

● **क च क**—काम तो अति परिश्रम से करते हो, मगर होता नहीं। किसी सहायता से कुछ समय पीछे बनेगा। अवश्य किसी की सहायता प्राप्त होगी, तभी काम होगा। स्त्री से क्लेश मत करो।

● **क च ट**—आपके सब काम पूरे बनेंगे। मित्रों से भेंट हो, व्यापार में लाभ हो। कुटुम्ब बढ़े, सफर के कार्य पूरे हों, बाहर जाते समय पूजा कर के जाना।

● **क ट च**—जिस काम को विचारते हो वह अति दूर है। अति कष्ट है। काम पूरा नहीं होगा। यदि हठ करोगे तो कष्ट व हानि है। ४ मास पीछे समय उत्तम आवेगा, तब होगा।

● **क त त**—तुमको अति शीघ्र लाभ होगा, लगभग एक मास तक इच्छा पूरी होगी। समय आपका उत्तम है, अच्छा काम मिलेगा। स्वप्न में हरे वृक्ष दीखते हैं।

● **क क त**—काम कुछ समय पीछे होगा। चिन्ता जो है जाती रहेगी। जो काम करोगे लाभ होगा। किसी से भेंट होगी। भाई तुमसे क्लेश रखते हैं, ध्यान रखो।

● **क च त**—मित्र आपके प्रतिकूल हैं, मित्र धोखा देते हैं और अपना काम निकालते हैं। उनकी राय से काम मत करो। विचारा हुआ काम कुछ समय पीछे होगा।

● **क ट त**—आपका कार्य अति कठिन है, शत्रु बहुत हैं, इस कारण इस काम को छोड़ दो। अपने विचार व्यापार में लगाओ जिससे लाभ हो। हठ करोगे तो हानि होगी। भूख तुमको कम लगती है।

● **क त च**—जिस काय का बार-बार विचार करते हो शीघ्र पूरा होगा। खुशी होगी। सन्तान से आराम मिलेगा। धन का लाभ होगा, काम उत्तम रहेगा।

● **क त ट**—आपकी इच्छा पूरी होगी। लाभ भी होगा। शरीर से सुख, कुटुम्ब में वृद्धि होगी। पूजा दान करो। जो विचार है पूरे होंगे। पशु से लाभ होगा; देखो, मकान तीन मंजिला है।

● **क त क**—चित में जो चिन्ता है शीघ्र जाती रहेगी। इच्छा पूरी होगी। व्यापार से लाभ होगा। विचार सब पूरे होंगे। मित्रों से भेंट होगी, गुप्त स्थान पर देखो, तिल है।

● **क क ट**—जो काम विचारते हो, अकेले से न होगा किसी की सहायता से होगा, बाधा होगा। शत्रु शत्रुता करते हैं। उनसे सावधान रहो। देखो, तुम्हारे माथे पर निशान है।

● **च च च**—अभी समय साधारण है। जो काम विचारते हो उस वास्ते इष्ट देवता की पूजा करो। काम पूरा होगा, किसी झगड़े में जीत होगी। स्त्री से कहा-सुनी रहती है।

● **च च क**—आपका काम अति कठिन है। धर्म के सहारे से ही हो सकता है। साधु के बताये मार्ग से लाभ होगा व काम पूरा होगा। दान-पूजा व भगवान् का भजन करो। चित्त में स्त्री के विचार हैं।

● **च क क**—नेष्ट है जो भी काम करते हो, हानि उठाते हो। कुछ समय और रुको, कार्य पूरा होगा। इस समय बाहर जाने से लाभ है।

● **च क च**—तुम्हारे भाई तुमसे प्रतिकूल हैं। तुम अपनी आदत नहीं छोड़ते इससे कष्ट उठाते हो। अब पुण्य का जोर है, समय आ गया है। सब काम पूरे होंगे। तुम्हारे मिजाज में देखो, क्रोध है।

● **च ट ट**—तुमको एक मास से धन की चिन्ता है। अब तक शुभ काम नहीं होने देते। एक मास पीछे शत्रु

दब जावेंगे। उस समय काम पूरा होगा, लाभ भी होगा। व्यापार अच्छा होगा, मान बढ़ेगा।

● च च च—आपका समय अब उत्तम आ रहा है। जो काम विचार रहे हो, पूरा होगा। व्यापार में लाभ होगा, मुकदमे में जीत होगी। किसी का भरोसा न करना, धोखे का ख्याल है।

● च ट च—तुमको व्यापार की बराबर चिन्ता है सो देरी से पूरी होगी। सहायता लेनी पड़ेगी। लोग मुंह पर बड़ाई पीछे बुराई करते हैं। थोड़ा समय जाने पर शत्रु दब जायेंगे, तब काम होगा।

● च त क—काम नहीं होगा; बल्कि बीमारी का भय है। रुपये की हानि है। विचार से काम करो। कोई धोखा देगा। भरोसा किसी का भी मत करना। शान्ति से समय बिताओ, तीन मास पीछे काम होगा।

● च त त—काम तुम्हारा अति कठिन है और दूर से लाभ भी नहीं है; बल्कि हानि की शंका है। सुख मिलना कठिन है। आगे चलकर सुख होगा। देखो, मकान का दरवाजा उत्तर में है।

● च च त—आपको एक चिंता है। अपने शत्रु को नष्ट करना चाहते हो। कुछ समय पीछे होगा। कुछ हानि हो गई थी। अब समय उत्तम है, कार्य पूरे होंगे तुम्हें खांसी रहती है।

● च त च—शत्रु दब जायेंगे। काम ऐसे होता दीखेगा, जैसे रोजाना चन्द्रमा बढ़ता रहता है। तुमसे जो प्रतिकूल रहेंगे कष्ट पावेंगे। तुम अपने देव की पूजा करो। तुम्हारा चित्त घबराहट में है।

● च क त—तुम बहुत समय से चिंता में रहते हो अब आपका समय अति उत्तम आ रहा है। काम पूरे होंगे। घबराओ नहीं। किसी सम्बन्धी से सहायता मिलेगी। देखो, तुम्हारे माथे में दर्द रहता है।

● च क क—अब चिंता मत करो। किसी उत्तम मनुष्य से भेंट होगी। सब कष्ट दूर होने का समय आ गया है। डेढ़ मास तक कष्ट दूर होंगे, दिल के अरमान पूरे होंगे।

● च च क—आपको किसी परदेसी की चिन्ता है। बलवान है, इस कारण अभी काम नहीं होगा। कुछ समय बाद होगा। देखो, पेट में दर्द रहता है।

● च क च—अभी आपका समय नेष्ट है। कुछ समय में काम होगा, लाभ भी होगा। कष्ट सब जाते रहेंगे, चित्त में चिन्ता मत करो। उत्तम मनुष्य से भेंट होगी और काम पूरा होगा, इज्जत बढ़ेगी।

● च त क—आपको रुपये की चिंता है। आप चित्त के नरम हो, जल्दी कर जाते हो, शत्रु गालिब हो जाते हैं। मित्र भी पूरी सहायता नहीं देते। नरमी छोड़ दो लाभ होगा। शत्रु शरण में आवेंगे।

● ट ट ट—विवाह की आपको चिंता है। लाभ के लिए बाहर भी जाना चाहते हो। सोचा हुआ कार्य शीघ्र ही पूरा होगा, इज्जत बढ़ेगी। सफर के काम पूरे होंगे, चिंता मिट जायेगी।

● ट ट क—आपका विचार बाहर जाने का है। कोई अच्छी जगह मिलेगी या नहीं सो अपने इष्ट देवता की पूजा दान करके जाओ और गुरु से आज्ञा लो आपको अति लाभ होगा। सब काम पूरे होंगे, स्वप्न से ऊंचे चढ़ते दीखते हो।

● ट क क—आपका रोग-कष्ट शीघ्र दूर होगा। नेष्ट दिन गए, उत्तम आगए। सब काम पूरे होंगे, मन की इच्छाएं पूरी होंगी। सब चिंता मिटकर शान्ति मिलेगी। शत्रु मित्र बनेंगे, शरीर में मस्से हैं।

● ट क ट—आप कहीं जाना चाहते हो। वहां जाने से आपका काम पूरा होगा। नेष्ट समय गया, अच्छा आ गया है। जो काम चाहोगे पूरा होगा। किसी मित्र की सहायता करनी होगी।

● ट च च—तुमको रोजगार की चिंता है, व्यापार में किसी की सहायता चाहते हो। सहायता वाला समय नष्ट कर रहा है। तुम किसी का भरोसा मत करो, लाभ होगा। काम को स्वयं करो।

● ट ट च—आपको शीघ्र ही लक्ष्मी का लाभ होगा। एक मास तक जो काम विचार रहे हो, सब पूरे होंगे। अच्छा लाभ होगा। रिश्तेदारी से कुछ समाचार प्राप्त होंगे, स्त्री से प्रीति होगी।

● ट च ट—जो काम विचारते हो कठिन है, दूर है लाभ होगा। क्रोध करोगे तो कष्ट उठाओगे। इस कारण वह काम छोड़ दो और काम करो। मित्र से भेंट होगी, तीन मास पीछे लाभ होगा।

● ट क च—जो काम विचार रहे हो, शीघ्रता करो। देरी मत करो। काम से हर प्रकार का लाभ होगा। मान्यता बढ़ेगी। साधु के दर्शन का लाभ होगा, सफर के काम पूरे होंगे, पुराना रुपया आयेगा बिना आशा के।

● ट त त—तुम बिना सबब औरों के लिए चिंता में रहते हो। इससे क्या लाभ है? तुमको अपना काम करना चाहिए दूसरों की बाबत चिंता मत करो, इससे लाभ नहीं होगा। किसी साधु दर्शन का लाभ होगा और उसके बताये काम से लाभ होगा।

● ट त ट—जो काम विचार रहे हो, नहीं होगा। इसलिए उसे छोड़ दो, और विचारो। देखो, आपको रात में बुरे स्वप्न दीखते हैं। देवता का पूजन करके दूसरा काम शुरू करो, काम पूरा होगा।

● ट ट त—तुम जो काम विचारते हो अति कठिन है। कारण, आपमें उसे करने की ताकत नहीं है। परिश्रम करना बेकार है। और विचारो, उसमें आपको लाभ होगा। चित्त का विचार पूरा होगा। दाहिनी तरफ देखो, तिल है।

● ट क ट—आप दूसरों के काम की बिना कारण चिंता करते हो। इससे कोई लाभ नहीं। अपना काम सोचो और करो, लाभ होगा। किसी का बुरा करने का विचार छोड़ दो। उसका बुरा न होगा, शर्मिन्दगी होगी आपको कहीं जाने का विचार बराबर बना रहता है। सो यदि जाना चाहते हो, जाओ। रहना चाहते हो, रहो। जो काम बिचारा है, छोड़ दो। और विचारो, वह पूरा होगा। पैर में दर्द रहता है।

● ट त त—आपको रंज व चिंता बराबर रहती है। प्रायः बीमारी की चिन्ता रहती है। विचार करो, नेष्ट समय से भला नहीं हो सकता। समय सावधानी से व्यतीत करो। अभी सुख कम हैं।

● त त ट—आप दूसरों के धन से अपना काम पूरा [illegible]

करोगे तो लाभ अवश्य होगा। बुरे विचार छोड़ दो। काम में चित्त लगाओ, जिससे काम पूरा हो।

टतब—आपका विचार किसी से भेंट करने का है। सो करो या न करो, काम बिना सहायता के ही पूरा होगा। यदि सहायता दी तो देरी से होगा। सफर के विचार बने रहेंगे, देखो, अक्सर पेट में दर्द रहता है।

ततत—आपका समय उत्तम आ गया है। यदि सफर के विचार हैं तो अवश्य करो। लाभ अवश्य होगा, काम करने से व्यापार में लाभ होगा। किसी मामले में जीत होगी, भूमि या जेवर का लाभ है।

ततक—तुम उन्नति के वास्ते हर समय चिन्ता में रहते हो समय आ गया है प्रयत्न करते हो, मगर नेष्ट समय अभी है इससे नहीं होता, ७ मास पीछे पूरे होंगे और लाभ भी होगा।

तकत—आपके शरीर में दुःख रहता है, किसी काम की भी चिंता रहती है, शरीर कमजोर हो गया, इलाज से कोई लाभ नहीं, कष्ट का समय है चित्त में घबराओ नहीं, भगवान का भरोसा रखो।

ततट—आपकी भाइयों से शीघ्र ही भेंट होगी। लोग बड़ाई करेंगे, सब काम ठीक होंगे। इज्जत बढ़ेगी, पूजा-भजन अवश्य करो, धर्म करने से ही सब काम होंगे। देखो, कान में पीड़ा रहती होगी।

तकक—आपको किसी स्त्री की चिन्ता रहती है वह बहुत समय से आपको कष्ट दे रही है। तुम इधर-उधर घूमते रहते हो लड़ाई झगड़ा करने वाले रहते हैं। ४ मास बाद कष्ट दूर होगा, किसी मित्र से मिलाप होगा।

तचच—आपको रोजगार व रुपया की चिन्ता है जिसके वास्ते परेशान हो दान पूजा जाप करो, जिससे शीघ्र इच्छा पूरी हो लाभ भी हो। रुपया हाथ में आवे, मित्रों से लाभ हो भेंट हो।

ततब—आपने अपने चित्त में एक बड़ा काम विचारा है। धन की चिंता है सो अब समय अच्छा आ गया है। अच्छा होगा, भाई से मिलाप होगा, काम पूरे होंगे; स्वप्न में मकान पर चढ़ना दीखता होगा

तचत—आपका चित्त बेचैनी में है। दुविधा रहती है। जो काम सोचा है इससे लाभ है। कुटुम्ब से कुछ फायदा करना चाहते हो। वह पूरा होगा, इष्टदेवता को याद करो, सब काम होंगे।

तटट—आपके सब काम पूरे होंगे। नये काम के विचार करते हो तो शीघ्रता न करो, काम होगा लाभ होगा, मित्रों से भेंट होगी विचारे हुए सब कार्य तीन मास में पूरे होंगे।

तटच—आपका काम ऐसा है कि जैसे जब तक तेल है लैम्प जलता है उसमें बहुत शक्ति है। उनकी शान्ति के वास्ते देवता का भजन करो, जिससे सब काम पूरे हों। दिल को सम्भालो।

तटत—समय ऐसा नहीं है किसी का भरोसा करो, आप भरोसे पर ही काम करते हो, आपको भोलेपन ने हानि पहुंचाई है। धैर्य रखो, चिंता अवश्य नष्ट होगी।

तकक—आपके भाई ही आपके प्रतिकूल हैं। तुम अपना स्वभाव छोड़ते नहीं, कष्ट उठा रहे हो। अब तुम्हारे पुण्य का जोर है सो आपके सब काम पूरे होंगे।

ततक—आपका जो काम बिगड़ चुका है और नुकसान हो चुका या जिसने धोखा किया है उन सबको भूल जाओ। यहां से बाहर जाने से लाभ होगा। नेक मनुष्य से भेंट होगी।

तटक—आपने किसी स्त्री के ख्याल में हानि उठाई है। व्यापार कम हो गया है। अब आपका समय उत्तम आ गया है व्यापार उत्तम रहेगा, रुपया हाथ में आवेगा, कार्य पूरे होंगे।

तचक—जो काम आपने विचारा है, कुछ समय बाद पूरा होगा। जल्दी मत करो, धैर्य से काम लो, काम पूरा होगा, लाभ होगा, नाम भी होगा। देखो आपको स्त्री से प्रीति अधिक है।

तकट—जो काम आप विचार रहे हैं इससे अति कष्ट है। यदि पूरा हुआ भी तो बहुत देरी और कष्ट उठाने से होगा। इससे इसे छोड़ दो भगवान् पर भरोसा करो, चिंता सब मिट जायेगी।

● शिव प्रश्नावली ●

प्रश्नावली देखने की विधि—प्रश्न करने वाला भगवान् शिव का ध्यान करके और 'ओ३म् नमः शिवाय' यह मंत्र बोलकर शिव शंकर प्रश्नावली में किसी भी अंक पर अंगुली रखे और अपने प्रश्न का फल इस प्रकार जाने।

फल १—धन लाभ श्रेष्ठ, कार्य सिद्ध हो। २—कष्ट मिटें। धन लाभ। ३—उत्तम कार्य सिद्धि हो। ४—शत्रु

१	२३	२१	२०	६
२४	२	२२	७	१६
११	१२	३	८	१८
१३	६	२५	४	१७
१०	१४	१५	१६	५

D.P.B.

से बचो। कार्य सिद्ध होगा। ५—उत्तम धन लाभ श्रेष्ट। ६—मनोकामना सिद्ध होगी। ७—मित्रों के सहयोग से कार्य बने। ८—अभी देर। ९—इच्छा पूरी होगी। १०—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। ११—कार्य की सिद्धि कुछ देर से होगी। १२—कार्य सिद्धि होने में संदेह है। १३—कार्य-सिद्धि नहीं होगी। १४—दक्षिण-पश्चिमी से लाभ हो। कार्य सिद्धि हो। १५—प्रेमी के सहयोग से कार्य बनेगा। १६—कार्य के पूरे होने में संदेह है। १७—प्रसन्नता व धन लाभ हो। १८—परिश्रम से ही कार्य सिद्धि सम्भव है। १९—तीन माह में कार्य सिद्धि संभव है। २०—उत्तम धन का लाभ व कार्य सिद्धि हो। २१—कार्य पूरा होने में संदेह है। २२—कार्य सिद्धि होगी। २३—उत्तम धन लाभ। कार्य सिद्धि हो। २४—इच्छा पूरी होगी। २५—मित्रों के सहयोग से कार्य सिद्धि हो।

● मनोकामना सिद्धि प्रश्नावली ●

卐

अ	च	इ
क	प	ट
उ	त	रा

卐

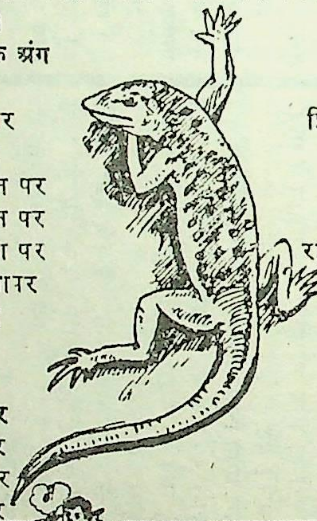
प्रश्न करने वाला अपने इष्ट देव का ध्यान धर कर प्रश्नावली में अंगुली रखें। फल अ—उत्तम है। धन-प्राप्ति कार्य सिद्ध हो। च—कार्य पूरा होने में सन्देह है। इ—कार्य सिद्ध नहीं होगा। क—धन लाभ, कार्य सिद्ध हो। प—श्रेष्ठ फल है। धन लाभ, कार्य सिद्ध। ट—कार्य पूरा नहीं होगा। उ—सफलता प्राप्त होगी। त—अभी कार्य-सिद्धि में देरी है। रा—कार्य सिद्ध होगा। प्रश्न उत्तम है।

● शुभ-अशुभ शकुन-विचार ●

छिपकली गिरने का विचार

मनुष्य के किस अंग पर छिपकली गिरने का क्या फल होता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। जो फल छिपकली के गिरने का होता है, वही फल विभिन्न शारीरिक अंगों पर गिरगिट के चढ़ने का होता है।

नीचे छिपकली गिरने का जो फल लिखा है, वह पुरुष के दायें अंग पर तथा स्त्री के बायें अंग पर गिरने का समझना चाहिए।



शारीरिक अंग	फल
सिर पर	प्रतिष्ठा मिले
ललाट पर	प्रियजनों का दर्शन
नाक पर	बीमारी
दायें कान पर	आयु में वृद्धि
बायें कान पर	विशेष लाभ
दाईं भुजा पर	राज्य द्वारा सम्मान
बाईं भुजा पर	राज्य द्वारा भय
कण्ठ पर	शत्रु नाश
पेट पर	सुख, भूषण-लाभ
पीठ पर	बुद्धि-नाश
जांघ पर	शुभदायक
हाथों पर	वस्त्र-लाभ
नाभि पर	विशेष लाभ
कंधों पर	विजय-प्राप्ति



छींक-विचार

चलते समय अपनी पीठ के पीछे अथवा बाईं ओर को छींक हो तो वह शुभ फल देती है।

चलते समय यदि सामने की ओर कोई छींके तो झगड़ा होता है।

चलते समय दाईं ओर छींक हो तो धन की हानि होती है।

चलते समय ऊंचाई पर छींक हो तो विजय प्राप्त होती है।

यदि एक साथ दो छींकें हों तो वे शुभ फलदायक होती हैं।

मार्ग में जाते समय छींक होना शुभ फलदायक होता है।

आसन, शयन, शौच, दान, भोजन, औषध-सेवन, विद्यारम्भ, बीज बोने का समय, युद्ध अथवा विवाह के लिए जाते समय छींक होना शुभ फलदायक होता है।

कन्या, विधवा, वेश्या, रजस्वला, मालिन, धोबिन तथा हरिजन स्त्री की छींक अशुभ फल देने वाली होती है। इनके छींकने पर यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए तथा किसी कार्य को प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

लाटरी या सट्टा से धन मिलेगा या नहीं

लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन प्राप्त करने की इच्छा वाले व्यक्तियों को अपनी जन्म-कुंडली में नीचे लिखे योग मिलाकर पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि जीवन में कभी लाटरी या सट्टा से धन मिलने का योग है या नहीं। यदि योग है तो जिस ग्रह से योग बन रहा है उसके शुभ सम्बन्ध की दशा या गोचर भ्रमण वश जब भी धन-लाभ का समय जीवन में बन रहा हो उसी समय लाटरी व सट्टे का काम करना चाहिए ताकि लाभ मिल सके अन्यथा हानि ही उठानी पड़ेगी।

१—जिसकी जन्म-कुंडली में जन्म लग्न या चंद्र लग्न से ३, ६, १०, ११ स्थान में शुभ ग्रह हों और भाग्येश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हो तो वह ३० वर्ष की अवस्था तक लखपति बन जाता है।

२—धनेश, लग्नेश या धनेश, लाभेश या भाग्येश, लाभेश या भाग्येश, दशमेश या धुनेश, पंचमेश का योग नीच या नीचांश रहित १, २, ५, ६, १०, ११ स्थान में हो तो उसे लाटरी या सट्टा के लाभ से योग के बलाबलानुसार दस हजार से ५० हजार तक अनायास ही धन लाभ होता है।

३—मीन लग्न हो, पांचवें बुध व ग्यारहवें शनि हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

४—केन्द्र स्थान १, ४, ७, १० स्थान में शुभ ग्रह बली हों तो ६० हजार का लाभ होता है।

५—मेष लग्न में गुरु और पांचवें सूर्य हो या मेष लग्न से चतुर्थ गुरु, सप्तम शनि, अष्टम शुक्र हो या मेष लग्न से नवम गुरु, दशम मंगल, पांचवें चन्द्र हो तो ६० हजार से २ लाख तक अनायास ही धन लाभ होता है।

६—अष्टम स्थान में कुंभ राशि में बुध-शुक्र हों और शुभ स्थान में चंद्र-मंगल की युति हो तो ४० हजार का लाभ होता है।

७—लग्न से सभी ग्रह १, २, ५, ७, ८, १०, ११ स्थान में हों और किसी भी स्थान में दो से अधिक ग्रह न हों तो अनायास ही महाधनी होता है।

८—पंचम भाव में चंद्रमा और उसे शुक्र देख रहा हो तो अनायास धनी होता है।

९—पंचम भाव में बृहस्पति हो और लग्नेश बलवान हो तो अनायास ही धनी होता है।

१०—मकर का सूर्य रहित चंद्रमा लग्न में हो, चौथे या सातवें स्थान में गुरु हो तथा अस्त नीच और नीचांश रहित शनि शुभ स्थान में हो तो अनायास ही धनी होता है।

११—लग्न सिंह हो और उसमें पूर्ण चन्द्रमा विराजमान हो तथा सप्तम भाव में शनि, ग्यारहवें भाव में गुरु, मंगल का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१२—लग्नेश बली हो और राहु बुध कारक हो तो अनायास ही धनी होता है।

१३—पंचमेश और लग्नेश का योग हो तो अनायास ही धनी होता है।

१४—धनेश और लाभेश चतुर्थ में हों और चतुर्थेश शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो अनायास ही धनी होता है।

नोट—दो ग्रहों का एक राशि में योग ५ अंश से जितना कम हो वहीं उत्तम योग होता है।

लाटरी व सट्टा से धन लाभ का समय

यदि जन्म-कुंडली में लाटरी या सट्टा से धन-लाभ के योग बन रहे हों तो लाभकर्ता ग्रहों में से जो ग्रह बली हो उसकी या उसके सम्बन्धी की दशा अन्तर्दशा में प्रायः लाभ होता है। या जन्म-कुंडली में सम्पत्तिदायक १, २, ४, ५, ७, ९, १०, ११ भाव के स्वामी गोचर में स्वगृही होकर अपने-अपने स्थान में आवें या सम्पत्तिदायक स्थान के स्वामियों की किसी भी सम्पत्तिदायक स्थान में युति होय तो उस समय में लाटरी या सट्टा से अनायास ही धन लाभ होता है।

विशेष नोट—उपरोक्त योग जन्म कुंडली से देखें जिनकी जन्म-कुंडली न हो उनको प्रश्न-लग्न से देखना चाहिए। जिस समय यह प्रश्न देखना चाहें उसी समय की लग्न बनाकर योग देखें। विशेष के लिए पंचांगकर्ता को २१) रु० व जन्म-कुंडली, यदि जन्म-कुंडली न हो तो पत्र लिखने का समय भेजकर लाटरी के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें।

पता—पंचांगकर्ता पं० रामगोपाल शास्त्री, मु०, पो०—पैगांव (वाया छाता) मथुरा उ० प्र०, (भारत)

जन्म की तारीख के आधार पर मानव-स्वभाव एवं शुभ-अशुभ घटनाओं का काल-ज्ञान

अंक-विद्या (Numerology) के अनुसार मनुष्य जिन तारीखों में जन्म लेता है, उनके अनुसार ही उसके स्वभाव तथा भाग्य का निर्माण होता है।

अंक-विद्या के आधार पर मानव-स्वभाव एवं उसके भविष्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले 'मूल-अंक' को जान लेने की आवश्यकता पड़ती है।

१ से लेकर ९ तक की तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों का 'मूल-अंक' वही होता है, जो उस तारीख का अंक हो; परन्तु १० से ३१ तारीख के बीच किसी तारीख में जन्म लेने वाले जातक के 'मूल अंक' को नीचे लिखे नियम के अनुसार निकाला जाता है—

१०—१+०=१	२०—२+०=२
११—१+१=२	२१—२+१=३
१२—१+१=३	२२—२+२=४
१३—१+३=४	२३—२+३=५
१४—१+४=५	२४—२+४=६
१५—१+५=६	२५—२+५=७
१६—१+६=७	२६—२+६=८
१७—१+७=८	२७—२+७=९
१८—१+८=९	

१९ तथा २८ तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों के मूल अंक नीचे लिखे अनुसार निकाले जाते हैं—

१९—१+९=१०
२८—२+८=१०

अर्थात् १९ और २८ तारीखों में जन्म लेने वाले जातकों का अंक १० बनता है, परन्तु चूंकि 'शून्य' को मूल अंकों में सम्मिलित नहीं किया जाता, इसलिए १० में से शून्य को हटा दिया जाता है, फलतः जिस प्रकार १० तारीख में जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' १ माना जाता है उसी प्रकार १९ तथा २८ तारीख में जन्म लेने वाले जातकों का 'मूल अंक' भी १० के स्थान पर १ ही माला जाता है।

१०—१+०=१
१९—१+९=१०—१+०=१
२८—२+८=१०—१+०=१

इसी नियम के अनुसार २९ तारीख को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' २ होता है। उदाहरणार्थ—

२९—२+९=११—१+१=२

इसी नियम के अनुसार ३० तारीख को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' ३ होता है। उदाहरणार्थ—

३०—३+०=३

इसी नियम के अनुसार ३१ ता० को जन्म लेने वाले जातक का 'मूल अंक' ४ होता है। उदाहरणार्थ—

३१—३+१=४

● उपर्युक्त नियमों के अनुसार १ से लेकर ३१ तारीखों में जन्म होने वाले जातकों के जो 'मूल अंक' बनते हैं, उन्हें एक दृष्टि में नीचे लिखे अनुसार समझा जा सकता है—

जन्म की तारीखें	मूल अंक	जन्म की तारीखें	मूल अंक
१, १०, १९, २८	१	१५, २४	६
११, २०, २९	२	१६, २५	७
१२, २१, ३०	३	१७, २६	८
१३, २२, ३१	४	१८, २६	९
१४, २३	५		

विभिन्न मूल अंकों वाले जातकों के जीवन पर उनके अंक का क्या प्रभाव पड़ता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

● मूल अंक १ ●

● इस अंक का स्वामी 'सूर्य' है। १ मूल अंक वाले व्यक्ति अपने संकल्पों, विचारों एवं सिद्धान्तों पर दृढ़ रहने वाले होते हैं। ये एक बार जिस निश्चय को कर लेते हैं, उस पर अन्त तक स्थिर बने रहते हैं। कोई भी प्रयोजन अथवा आकर्षण उन्हें अपने निश्चय से डिगा पाने में असमर्थ रहता है।

● इस अंक वाले व्यक्ति किसी के अनुशासन में रहना पसन्द नहीं करते। वे या तो स्वतन्त्र व्यवसाय करते हैं अन्यथा नौकरी में किसी ऐसे पद को प्राप्त करते हैं जहां विभागाध्यक्ष के रूप में उन्हें काम करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो। ऐसे लोग अपने ऊपर किसी की हुकूमत, अनुशासन अथवा रौब को स्वीकार नहीं करते। नौकरी करते समय यदि ऐसी कोई घटना घटित हो तो या तो ये लोग अपनी ही बात रखने में सफलता प्राप्त करते हैं, अन्यथा ऐसी जगह से स्वयं ही हट जाते हैं।

● ऐसे लोगों को यदि स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने दिया जाय तो इस अंक वाले लोग बड़े योजनाकार, कुशल प्रशासक तथा योग्य संचालक सिद्ध होते हैं। इन लोगों में नेतृत्व एवं हुकूमत करने का गुण जन्मजात होता है। किसी के लिए भी इन्हें अपने अधीन रख पाना बहुत कठिन होता है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४ तथा ७३ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें १, १०, १९ तथा २८ होती हैं। रविवार तथा सोमवार के दिन इनके लिए बहुत अच्छे सिद्ध होते हैं। हरा, भूरा, पीला अथवा सुनहरी रंग इनके लिए शुभ होता है।

● मूल अंक २ ●

● इस अंक का स्वामी 'चन्द्रमा' है। इस अंक वाले व्यक्ति कल्पनाशील, कला-प्रेमी, शान्ति-प्रिय तथा ठंडे स्वभाव के

होते हैं। शारीरिक दृष्टि से भले ही ये दुर्बल हों, परन्तु इनकी मस्तिष्क-शक्ति प्रबल होती है। इनका स्वभाव चंचल होता है, अतः इनके विचारों में परिवर्तन होता रहता है। एक काम को अधूरा छोड़कर, दूसरे काम में लग जाना इनका प्राकृतिक स्वभाव होता है। धैर्य तथा अध्यवसाय की इनमें कमी होती है। अतिशय भावुकता तथा उदारता इनके लिए हानिकारक सिद्ध होती है। ये थोड़ी-सी असफलता, हानि एवं कष्टों से ही घबरा जाते हैं और निराश हो जाते हैं। इसी कारण ये लोग अपने जीवन में विशेष उन्नति नहीं कर पाते। इस अंक वाले लोगों को अपने चंचल स्वभाव पर काबू पाना आवश्यक है।

● इन लोगों के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण वर्ष १, १०, १९, २८ होते हैं। अन्य महत्वपूर्ण वर्ष निम्नलिखित होते हैं—४, ७, १३, १६, २२, २५, ३१, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० और ७३।

● इनके लिए २, ११, २० और २९ तारीखें महत्वपूर्ण होती हैं तथा सोमवार, रविवार एवं शुक्रवार के दिन शुभ होते हैं। सफेद कापूरी, अंगूरी अथवा हरा रंग इनके लिए शुभ होता है।

● मूल अंक ३ ●

● इस अंक का स्वामी 'बृहस्पति' है। इस अंक वाले व्यक्ति महत्वाकांक्षी, कठोर अनुशासन का पालन करने तथा कराने वाले एवं नेतृत्वप्रिय होते हैं। हुकूमत करने में ये इतने कठोर होते हैं कि कभी-कभी इनके अधीनस्थ कर्मचारी, सहयोगी तथा मित्र इनसे रुष्ट होकर शत्रुता मान बैठते हैं। यदि ये लोग सेना, पुलिस अथवा ऐसे ही किसी विभाग में काम करें, जहां कि इन्हें नेतृत्व करना हो, तो ये अपने सहयोगियों अथवा अधीनस्थ कर्मचारियों में शिथिलता की भावना नहीं आने देते। इनके तेज तथा कार्यप्रणाली के समक्ष इनके शत्रु अथवा विरोधी नहीं ठहर पाते। राजनैतिक, सामाजिक अथवा अन्य क्षेत्रों में नेतृत्व करने में इन्हें सफलता प्राप्त होती है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३,१२,२१,३०,३९, ४८, ५७ तथा ६६ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ३,१२,२१ और ३० होती हैं। बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा मंगलवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं। सोमवार का दिन भी अच्छा रहता है। चमकीला गुलाबी तथा हल्का जामुनी रंग इनके लिए शुभ होता है।

● मूल अंक ४ ●

● इस अंक का स्वामी मंगल है। इस अंक वाले व्यक्ति संघर्ष-प्रिय, आश्चर्यजनक कार्य करने वाले तथा नवीनता के उपासक होते हैं। ये प्राचीन रूढ़ियों को तोड़कर नई मान्यताओं को स्थापित करते हैं। अपने स्वभाव के कारण अनेक लोगों से इनका संघर्ष होता है, फलतः इनके विरोधियों, निन्दकों, आलोचकों तथा शत्रुओं की संख्या में वृद्धि होती रहती है। ये लोग धन-संग्रह को अधिक महत्व नहीं देते। उल्लासमय तथा परिवर्तनशील जीवन बिताने में इनकी रुचि होती है। इनमें सहिष्णुता कम होती है। अपनी धुन के ये बहुत पक्के होते हैं। यदि ये लोग कुछ सहिष्णु बन सकें और व्यर्थ के शत्रुओं तथा प्रतिद्वन्द्वियों को उत्पन्न न करें तो इन्हें धन तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८ तथा ६७ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ४, १३, २२ तथा ३१ होती हैं। शनिवार, रविवार तथा सोमवार इनके लिए शुभ दिन होते हैं। धूपछांहीं, नीला तथा खाकी (भूरा) रंग इनके लिए शुभ होता है।

● मूल अंक ५ ●

● इस अंक का स्वामी 'बुध' है। इस अंक वाले व्यक्ति व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करते हैं। ये लोग सट्टा आदि शीघ्र लाभ देने वाले व्यवसायों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। ये बड़े मिलनसार स्वभाव के होते हैं, अतः इनके मित्रों की संख्या अधिक होती है। ये लोग किसी भी बात पर अधिक चिन्ता, शोक अथवा पश्चाताप नहीं करते। ये जल्दबाज स्वभाव के, फुर्तीले तथा चंचल प्रकृति के होते हैं। किसी भी मानसिक आघात को ये बहुत थोड़े समय में ही भूल जाते हैं। ऐसे लोगों को क्रोध भी बहुत जल्दी आ सकता है। इनके मिजाज में कुछ चिड़चिड़ापन भी पाया जा सकता है।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ तथा ७७ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ५, १४ तथा २३ होती हैं। बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार के दिन इनके लिए विशेष शुभ होते हैं। हल्का खाकी, सफेद तथा चमकीला उज्जवल रंग इनके लिए शुभ होता है।

● मूल अंक ६ ●

● इस अंक का स्वामी 'शुक्र' है। इस अंक वाले व्यक्ति ललित कलाओं के प्रेमी, सौंदर्योपासक, हँसमुख तथा मिलनसार होते हैं परन्तु स्वभाव के हठी होते हैं। इन लोगों के व्यक्तित्व में एक अजीब आकर्षण होता है, जिसके कारण इनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति इनके मित्र तथा प्रशंसक बन जाते हैं। ये लोग अतिथि-सत्कार करने में पटु होते हैं, परन्तु हठवादिता एवं ईर्ष्या इनमें पाए जाने वाले दुर्गुण हैं। ये लोग अपनी हठ को अन्त तक निभाते हैं तथा किसी अन्य व्यक्ति की प्रतियोगता को सहन नहीं कर पाते।

● ये लोग साहित्य, संगीत, अभिनय अथवा चित्रकला के प्रेमी और जानकार होते हैं। इन्हें सुन्दर भूषणों से लगाव होता है तथा अपने घर को बहुत सजाकर रखते हैं। धन तथा सौभाग्य की दृष्टि से ऐसे लोग सम्पन्न होते हैं।

● इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१,६०, ६९ तथा ७८ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ६,१५,

तारीखें ६, १५ तथा २४ होती हैं। शुक्रवार, मंगलवार तथा बृहस्पतिवार इनके लिए शुभ दिन होते हैं। हल्का नीला, आसमानी तथा गहरा नीला रंग इनके लिए शुभ होता है।

मूल अङ्क ७

इस अङ्क का स्वामी 'नेपच्यून' है। इस अङ्क वाले व्यक्ति परिवर्तन-प्रिय होते हैं। उन्हें नवीन स्थानों की यात्रा, समुद्रपारीय यात्रा तथा ललित कलाओं में विशेष रुचि रहती है। ये लोग दूसरे के मन की बात को अपने आप जान लेते हैं। धार्मिक रीति-रिवाजों से ये लोग रूढ़िवादी नहीं होते। इनकी धार्मिक मान्यताएं प्रचलित परम्पराओं से भिन्न होती हैं। ये शान्त प्रकृति के, उदार, दयालु, स्नेही तथा परोपकारी होते हैं। ये सौंदर्य-प्रेमी होते हैं तथा जीवन में अनेक प्रेम-सम्बन्ध करते हैं, परन्तु आर्थिक दृष्टि से ये लोग सफल नहीं हो पाते। यदि ये लोग धन-संग्रह कर भी लें तो वह नष्ट हो जाता है। इस अङ्क वाली स्त्रियों का विवाह धनी घरों में होता है और वे वस्त्राभूषण तथा शृंगार से विशेष प्रेम करती हैं।

इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० तथा ७९ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ७, १६ तथा २५ हैं। सोमवार तथा रविवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं।

मूल अङ्क ८

इस अङ्क का स्वामी 'शनि' है। इस अङ्क वाले व्यक्ति बड़े परिश्रमी, उत्साही, लगनशील, स्पष्टवादी तथा निर्भय प्रकृति के होते हैं, परन्तु अन्य लोगों का व्यवहार इनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण नहीं होता, अतः ये मन-ही-मन खिन्न बने रहते हैं। ये लोग बाह्य प्रदर्शन से दूर रहते हैं, अतः इन्हें प्रायः शुष्क तथा कठोर स्वभाव का समझा जाता है, जबकि यथार्थ में ये लोग अपनी धुन के धनी तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहने वाले होते हैं और अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए इन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता है तथा कष्ट भी उठाना पड़ता है। फिर भी ये लोग हिम्मत नहीं हारते। ये इतने स्वाभिमानी होते हैं कि लोग इन्हें अहंकारी समझकर ईर्ष्या-द्वेष कर उठते हैं, जबकि यथार्थ में ऐसे लोग बड़े धीर, गम्भीर, विचारशील, दूरदर्शी तथा बुद्धिमान् होते हैं। ये बड़े-से-बड़े खतरे को उठाने और बड़े-से-बड़े संकटों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं और उनमें सफलता प्राप्त करते हैं। इनका सम्पूर्ण जीवन परिस्थितियों से संघर्ष करते ही बीतता है, परन्तु इन्हें कभी पराजित नहीं होना पड़ता।

इन लोगों के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण वर्ष ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ तथा ८० होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ८, १७ तथा २६ होती हैं। इनके लिए शनिवार, रविवार तथा सोमवार के दिन विशेष शुभ होते हैं।

मूल अङ्क ९

इस अङ्क का स्वामी मङ्गल है। इस अङ्क वाले व्यक्ति अत्यन्त परिश्रमी, संघर्षशील, स्वाभिमानी तथा कठिनाइयों से जूझ कर सफलता पाने वाले होते हैं। इनके स्वभाव में उग्रता तथा अक्खड़पन की मात्रा अधिक होती है, अतः इनके शत्रुओं की संख्या भी बहुत होती है, परन्तु कोई शत्रु इनका कुछ बिगाड़ नहीं पाता। प्रकट रूप में कोई शत्रु सामने भी नहीं पड़ता। ये अपने शत्रु के सामने पहुंचकर उससे अपने निर्देशानुसार कार्य करा सकते हैं और शत्रु को इनके सामने पड़ने का साहस नहीं होता। ये लोग दृढ़-निश्चयी, स्पष्टवक्ता तथा अपने भाग्य के स्वयं निर्माता होते हैं। ऊपर से उग्र तथा कठोर दिखाई देने पर भी इनका हृदय अत्यन्त कोमल होता है। ये परोपकारी, दानी तथा दयालु भी होते हैं और दूसरों की सहायता करना इन्हें अच्छा लगता है। ये अपने वचन का पालन करने वाले तथा स्थिर स्वभाव के होते हैं। इन्हें इनके संकल्प से नहीं डिगाया जा सकता।

इन लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३ तथा ७२ होते हैं। महत्वपूर्ण तारीखें ९, १८ तथा २७ होती हैं। मंगलवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार के दिन इनके लिए शुभ होते हैं।

शरीर की बनावट

लम्बे कद वाला व्यक्ति कुछ अहंकारी, लापरवाह, स्वार्थी, भोगी, अकड़ वाला, अपने मन की इच्छानुसार चलने वाला तथा धार्मिक मर्यादाओं के प्रति लापरवाही बरतने वाला होता है।

छोटे कद (ठिगना) वाला व्यक्ति अधिक स्वार्थी, महान् परिश्रमी, गुप्त रीति से अपने लाभ की ओर ध्यान देने वाला, वाणी से अधिक विनम्रता तथा मीठापन प्रदर्शित करने वाला, परन्तु अपना मतलब निकालने में निपुण तथा मन-ही-मन चिन्तित रहने वाला होता है।

सामान्य कद का व्यक्ति बहुत बुद्धिमान्, सावधान, समयानुसार क्रोध तथा शक्ति का प्रदर्शन करने वाला, अपने तथा पराये का समान ध्यान रखने वाला, सज्जन, विवेकी, धर्म-अधर्म का विचार करने वाला, दूरदर्शी, सहृदय, उदार तथा सामाजिक एवं लौकिक नियमों का पालन करने वाला होता है।

मोटे शरीर वाला व्यक्ति हंसमुख, लापरवाह, अहंकारी, स्वार्थ-साधन में चतुर, आरामी, अधिक भोजन करने वाला, अधिक मुनाफा कमाने वाला, लौकिक सफलताओं को महत्व देने वाला, धर्म का पालन करने वाला तथा कुछ सीमाओं तक मान-सम्मान का ध्यान रखने वाला होता है।

पतले शरीर वाला व्यक्ति कुछ सन्तोषी, कुछ स्वाभिमानी, कुछ क्रोधी तथा हृदय में सदैव कुछ चिंताएं रखने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति के पूर्ण सुख के साधनों में कुछ कमी बनी रहती है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा बनावट प्रिय होता है।

गोरे रंग वाला व्यक्ति सौंदर्य एवं कला-प्रेमी, स्वाभिमानी, नवीनता-प्रिय तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं को सरलता से प्राप्त करने वाला होता है। उसे अपने इष्ट मित्रों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

गेहुंआ रंग वाला व्यक्ति सुन्दर तथा श्रेष्ठ कर्म करने वाला यशस्वी, स्वाभिमानी, विचारक, परिश्रमी मधुरभाषी, चतुर, दृढ़ मैत्री का निर्वाह करने वाला, सन्तोषी, दूरदर्शी, ईश्वर-भक्त, शुभ कर्म करने वाला तथा अपने-पराये के मान-सम्मान का ध्यान रखने वाला होता है।

काले रंग का व्यक्ति स्वार्थी, आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए विशेष परिश्रम करने वाला, दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करने वाला, क्रोधी, हठी, साहसी, धर्मपालन में विशेष रुचि न रखने वाला, चतुर, चालाक, गुप्त युक्तियों से अपना काम निकालने वाला तथा कटुभाषी होता है।

चेहरे की बनावट

भरे हुए चेहरे तथा फूले हुए गालों वाला व्यक्ति सुखी, श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करने वाला, हँसोड़, प्रसन्न-मुख, अपने हृदय में चिन्ताओं को कम स्थान देने वाला, मित्रों से युक्त, थोड़े ही परिश्रम से लौकिक सफलताएं प्राप्त करने वाला, उदार, स्वाभिमानी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

पतले चेहरे वाला व्यक्ति सुख-प्राप्ति के साधनों में कुछ कमी पाने वाला, हृदय का कमजोर, चिन्ताशील, जिद्दी, क्रोधी तथा आत्मग्लानि से सम्पन्न होता है। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेता है तथा उसके मित्रों की संख्या भी कम ही होती है।

जिस मनुष्य का सिर छोटा हो तथा गाल फूले हुए हों, उसे धन, भोजन तथा सुख के साधनों की प्राप्ति तो होती रहती है परन्तु ज्ञान एवं विद्या की कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने प्रभुत्व में कमी का अनुभव करता है तथा बेफिक्री का जीवन बिताते हुए भी बातचीत करते समय प्रायः हिचकिचाता है।

जिस मनुष्य का मस्तक चौड़ा तथा मुंह पतला हो, वह लौकिक सफलताओं को प्राप्त करने वाला, होशियार, दूरदर्शी, सम्मान पाने वाला तथा भाग्यवान् होता है। परन्तु उसे अपने पारिवारिक जीवन में दुःख एवं कमी का अनुभव होता रहता है। उसके आन्तरिक मित्रों की संख्या भी कम होती है।

जिस मनुष्य का मस्तक लम्बा-चौड़ा तथा चेहरा भरा हुआ हो, वह भाग्यवान धनी, दूरदर्शी, बुद्धिमान्, यशस्वी सुखी, विद्वान् तथा इष्ट-मित्रों से युक्त, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है। ऐसे लोग लौकिक तथा पारलौकिक विषयों के ज्ञाता, धर्माचरण करने वाले, स्वाभिमानी तथा सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं।

जिस मनुष्य का मस्तक कम चौड़ा तथा मुंह हल्का और पतला हो वह दब्बू प्रकृति का, गुप्त युक्तियों द्वारा स्वार्थ-साधन करने वाला, परिश्रमी, मनचाही स्थिति एवं सम्मान को प्राप्त न करने वाला तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

भौंहें

जिस मनुष्य की दोनों भौंहें परस्पर मिली हुई हों, वह बड़ा चुस्त-चालाक, मतलबी, स्वार्थ-सिद्धि का ध्यान रखने वाला तथा अपने मन की बात को छिपाये रखने वाला होता है।

जिस मनुष्य की भौंहें धनुषाकार हों वह कलाकार, कला-प्रेमी, गंभीर, ज्ञानी, यशस्वी, दूसरों पर अपना प्रभाव डालने वाला, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित तथा लोगों द्वारा प्रशंसनीय होता है।

जिस मनुष्य की भौंहें अधिक मोटी तथा बल खाये हुए हों, वह दूसरों पर अपना प्रभाव जमाने की चेष्टा करने वाला, अधिक लाभ उठाने में प्रयत्नशील, अहंकारी तथा विलासी होता है।

छोटी और हल्की भौंहों वाला व्यक्ति सन्तोषी, शान्त, शीलवान, दब्बू प्रकृति का तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता हैं।

विविध

जिस मनुष्य की छाती पर बाल न हों, वह भोठा बोलने वाला, आडम्बरी, स्वार्थी, खर्चीला, अविश्वासी तथा धोखा देने वाला होता है।

छोटी आंखों वाला व्यक्ति स्वार्थी, ऊपर से भला दिखाई देने वाला, मतलबी तथा विद्या-बुद्धि और विवेक के क्षेत्र में त्रुटि पाने वाला होता है।

बड़े और चौड़े कानों वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है। ऐसे व्यक्ति हठी तथा अहंकारी भी होते हैं।

जिसके कानों पर बाल हों वह व्यक्ति दीर्घायु, गम्भीर तथा विद्वान् होता है।

छोटे कानों वाला व्यक्ति जिद्दी, लापरवाह, चिन्ताशील, गृहस्थ-जीवन में सुख की कमी पाने वाला तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव

रत्न अनेक प्रकार के होते हैं परन्तु उनमें ८४ प्रकार के रत्न मुख्य माने जाते हैं। इन रत्नों में से कुछ रत्न ऐसे होते हैं, जिनका सम्बन्ध विशेष ग्रहों से होता है अर्थात् कुछ विशेष प्रकार के रत्नों में भिन्न-भिन्न ग्रहों की राशियों को आत्मसात् करने की प्रबल शक्ति विद्यमान है। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है, तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की राशियों को मानव-शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं, जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है। यह निम्नलिखित देखें।

विभिन्न अंग्रेजी महीनों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धारण करने योग्य रत्न

महीने का नाम	सम्बन्धित रत्न	महीने का नाम	सम्बन्धित रत्न
१. जनवरी	मूंगा (प्रवाल)	७. जुलाई	माणिक
२. फरवरी	एमेथिस्ट	८. अगस्त	गोमेद
३. मार्च	एक्वामरीन	९. सितम्बर	नीलम
४. अप्रैल	हीरा	१०. अक्टूबर	चन्द्रकान्त
५. मई	पन्ना	११. नवम्बर	पुखराज
६. जून	सुलेमान	१२. दिसम्बर	वैदूर्य

विभिन्न ग्रहों के रत्न और धातुएं

ग्रह	रत्न	धातुएं
१. सूर्य	माणिक्य	स्वर्ण
२. चन्द्र	मोती	चांदी
३. मंगल	मूंगा	स्वर्ण
४. बुध	पन्ना	स्वर्ण, कांसी
५. गुरु	पुखर	चांदी
६. शुक्र	हीरा	चांदी
७. शनि	नीलम	लोहा, शीशा
८. राहु	गोमेद	पंच धातु
९. केतु	लहसनियां	पंच धातु

१२ राशियों के रत्न और उपरत्न

राशि	रत्न और उपरत्न
१. मेष	त्रिकोण प्रवाल (मूंगा)
२. वृष	हीरा एवं षट्कोण पन्ना
३. मिथुन	पंचकोण पन्ना एवं मोती
४. कर्क	नीलम एवं गोल मोती
५. सिंह	गोल माणिक
६. कन्या	पन्ना
७. तुला	श्वेत पुखराज एवं हीरा
८. वृश्चिक	प्रवाल (मूंगा)
९. धनु	पीला पुखराज
१०. मकर	नीलम
११. कुम्भ	वैदूर्य (लहसनियां) फिरोजा एवं नीलम
१२. मीन	गोमेद और पुखराज

ग्रहों के अनुसार रत्नों की प्रयोग विधि

● १. सूर्य—सूर्य के लिए माणिक धारण किया जाता है। इसे सोने अथवा तांबे की अंगूठी में रविवार के दिन जब पुष्य, कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः सूर्योदय से ९ बजे के बीच जड़वाकर दांये हाथ की अनामिका उंगली में सूर्य की पूजा करने के बाद धारण करना चाहिए।

● २.चन्द्र—चन्द्रमा के लिए मोती धारण किया जाता है। इसे चांदी की अंगूठी में गुरुवार अथवा रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सूर्योदय से १० बजे के बीच जड़वाकर बांये हाथ की कनिष्ठिका उंगली में पहनना चाहिए।

● ३. मंगल–मंगल के लिए मूंगा धारण करता है। इसे मंगलवार के दिन मेष या वृश्चिक राशि पर चन्द्रमा अथवा मंगल हो और उसी दिन मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र हो, तब सूर्योदय से प्रातः ११ बजे के बीच सोने की अंगूठी में जड़वाकर बांये हाथ की मध्यमा उंगली में पहनना चाहिए।

● ४. बुध—बुध के लिए पन्ना धारण किया जाता है। इसे बुधवार के दिन जब आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र हो, उस दिन सूर्योदय से १०।। बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ५. गुरु—गुरु के लिए पुखराज धारण किया जाता है। गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब सूर्योदय से ११ बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की तर्जनी या अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

● ६. शुक्र—शुक्र के लिए हीरा धारण किया जाता है। वृष, तुला अथवा मीन राशि पर जब शुक्र हो अथवा शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाफाल्गुनी अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो, तब प्रातः सूर्योदय से पहले ११।। बजे तक सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका उंगली में धारण करना चाहिए।

● ७. शनि—शनि के लिए नीलम धारण किया जाता है। इसे मकर अथवा कुंभ राशि में जब शनि हो अथवा शनिवार को उत्तराषाढ़ा श्रावण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र हो, तब पंचधातु, फौलाद अथवा सोने की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ८. राहु—राहु के लिए गोमेद धारण किया जाता है। इसे स्वाति, शतभिषा अथवा आर्द्रा नक्षत्र वाले दिन प्रातः [illegible] बजे तक पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ की कनिष्ठा उंगली या बांये हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

● ९. केतु—केतु के लिए लहसनियां धारण किया जाता है। इसे जब चन्द्रमा मेष, मीन या धनु राशि का हो अथवा अश्विनी, मघा या मूलनक्षत्र हो, अथवा बुधवार या शुक्रवार हो तो किसी भी दिन सायं ५ बजे से ८ बजे के बीच लोहे अथवा पंचधातु की अंगूठी में जड़वाकर बांये हाथ की मध्यमा अथवा कनिष्ठिका उंगली में पहनना चाहिए।

भारतवर्ष में टोटकों द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। आज के भौतिकवादी वैज्ञानिक युग के पढ़े-लिखे लोग इन बातों पर विश्वास नहीं करते और सामान्य रोगों के लिए भी डाक्टरों की शरण में जाकर ढेरों रुपये खर्च कर देते हैं, जबकि ये टोटके कौड़ियों की लागत में अथवा बिना पैसे के तैयार होकर कठिन रोगों पर अपना जादू-जैसा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

यहां पर कुछ प्रसिद्ध टोटकों को लिखा जा रहा है। अन्य टोटकों की जानकारी के लिए हमारे यहां से प्रकाशित **'टोटका विज्ञान-चिकित्सा'** पुस्तक मूल्य 3/- पढ़नी चाहिए।

● १. रविवार के दिन आक या सफेद कनेर की जड़ को कान पर बांधने से हर प्रकार के विषय-ज्वर (पारी से आने वाले अथवा कम-अधिक आने वाले बुखार) दूर हो जाते हैं।

● २. रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़कर दायें हाथ में बांधने से पारी से आने वाला शीत-ज्वर एक ही दिन में दूर हो जाता है।

● ३. हुलहुल की जड़ को कान में बांधने से भूत-ज्वर दूर हो जाता है।

● ४. चौलाई की जड़ को सिर में बांधने से भी विषय-ज्वर ठीक हो जाता है।

● ५. ओंगा (अपामार्ग) अथवा नील की जड़ को अपने सिर से पांव तक की लम्बाई वाले लाल डोरे में बांध कर बायें कान अथवा कमर में धारण करने से तिजारी बुखार दूर हो जाता है।

● ६. रोगी की कमर में सर्प की केंचुल बांध देने से पारी का बुखार रुक जाता है।

● ७. चिरचिटे की जड़ अथवा लालपलाश की जड़ को हाथ में बांधने से भूत-प्रेत आदि की बाधा के कारण होने वाले ज्वर दूर हो जाते हैं।

● **दांत दर्द**—छोटे बच्चे के गिरे हुए दूध के दांत को ताबीज में मढ़वा कर पास रखने से दांत का दर्द दूर हो जाता है।

● **संग्रहणी**—गेहुंअन सर्प की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर पेड़ के ऊपर बांधने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

● **दस्त**—सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, उन्हें लाल रंग के डोरे में लपेटकर कमर में बांधने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

● **पथरी**—लोहे की अंगूठी को दायें हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करने से पथरी रोग का दर्द दूर हो जाता है।

● **बवासीर**—बवासीर के मस्से के नीचे सर्प की केंचुल रखने से बवासीर कष्ट दूर हो जाता है।

● **मृगी**—१. जायफल को रेशम के धागे में गूंथकर बांह या कण्ठ में धारण करने से मृगी रोग दूर हो जाता है।

● २. एक तोला असली हींग को कपड़े में सीकर ताबीज जैसा बनाकर गले में पहन लें। इससे मृगी का दौरा नहीं आता।

● ३. गाय के बायें सींग की अंगूठी बनवाकर बायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में पहनने से मृगी का दौरा नहीं आता।

● **तिल्ली-जिगर**—१. नागफनी की जड़ की माला पहनने से यकृत् और प्लीहा (तिल्ली-जिगर) रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

● २. बांझककोड़े की गांठ को रविवार के दिन लाकर रोगी के समीप एक जलते हुए चूल्हे से बांध दें। वह गांठ जैसे जैसे सूखती जायेगी, वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जायेगी।

● **हिचकी**—१. जिसे अधिक हिचकियां आ रही हों, उसे यदि अचानक डरा दिया जाय तो हिचकी आना बन्द हो जाता है।

● २. हिचकी आने वाले व्यक्ति के मुंह पर अचानक पानी के छींटे मार देने से भी हिचकी बन्द हो जाती है।

● **प्रेम का पागलपन**—जो व्यक्ति किसी से प्रेम करने के कारण पागल हो गया हो, उसके लिए बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून तथा कछुए के नाखून को ऊंट के चमड़े में मढ़कर ताबीज की तरह गले में बांध देने से, उसका पागलपन कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

● **मोटापा**—रांगे की अंगूठी दायें हाथ की मध्यमा उंगली में पहनाने से मोटापा कम हो जाता है।

● **सेंहुआ रोग**—धोबी के घर से तुरन्त धुलकर आये हुए कपड़ों को रोगी के शरीर से स्पर्श करा देने से सेंहुआ रोग दूर हो जाता है।

● **आधासीसी का दर्द**—प्रातःकाल दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके हाथ में गुड़ की एक डेली लेकर उसे दांत से काटें।

● **स्त्री रोग**—१. प्रसव-कष्ट से पीड़ित स्त्री की कमर में यदि नीम की जड़ बांध दी जाय तो प्रसव सुखपूर्वक होता है।

● २. प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री के हाथ में चुम्बक पत्थर रख देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।

● ३. थोड़ा-सा नमक लाल कपड़े में बांधकर प्रसव कष्ट से पीड़ित स्त्री के बायें हाथ की ओर लटकाने से प्रसव-काल का कष्ट बहुत कम रह जाता है।

● ४. केले की जड़ को स्त्री की कमर में बांध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है। बच्चे की नाल के निकलते ही जड़ को खोलकर फेंक देना चाहिए।

● ५. मासिक-धर्म की खराबी के कारण स्त्री के पेड़ू में दर्द हो तो उसे रात को सोते समय अपनी कमर से मूंज की रस्सी बांधकर सोना चाहिए तथा प्रातःकाल उस रस्सी को खोलकर चौराहे पर फेंक देना चाहिए। इससे माहवारी की खराबी के कारण होने वाला पेड़ू का दर्द दूर हो जाता है।

● **बाल रोग**—१. सीपियों की माला बनाकर बच्चे के गले में पहनाने से दांत आसानी से निकल आते हैं।

● २. संभालू की जड़ को गले में बांध देने से बच्चे के दांत आसानी से निकल आते हैं।

● **बिच्छू का डंक**—जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो, उसे चिरचिटे की जड़ का स्पर्श कराने अथवा दो बार दिखा देने से जहर उतर जाता है।

● अथ मंत्रचमत्कार ●

● ज्वर उतारने का मन्त्र ●

मन्त्र—या हफीजन या हफीजन या हफीज।

विधि—नीम का ढाई पत्ता लेकर सात बार मन्त्र पढ़े और फूंक मारता जाय। मन्त्र पढ़ने के बाद उस ढाई पत्ते को मल देवे और उसको पान में रखकर ज्वर आने से आध घण्टा पहले खिला दें। उस दिन ज्वर नहीं आयेगा।

● बच्चे की पसली झाड़ने का मन्त्र ●

मन्त्र—नौ अंगुल सरकण्डा काटूं दस अंगुल हो जाय। फलने का डिब्बा झाड़ूं पानीपत को जाय। दुहाई हजरत नूर कुतुब आलम की।

विधि—सरकण्डा नौ अंगुल का जड़ सहित काट लेवे। चाक की नोक और सरकण्डे की नोक बराबर करके झाड़े और मन्त्र पढ़ता जाय और बराबर फूंक मारता जाय तथा १५१ एक सौ इक्यावन बार उस सरकण्डे को बीच में से चीरकर फेंक दें। उसको ऐसी जगह फेंकना चाहिए जहां पर किसी का पांव न पड़े। उसके बाद दोनों ओर की पसलियों पर हींग-अफीम का लेप कर दो।

● स्त्री के स्तन झाड़ने का मन्त्र ●

मन्त्र—कामरू देश को उछा रहे उछा को खाय, फलानी का मैं थनेला झाड़ूं, छाती भस्म हो जाय।

विधि—जब तक छाती पके नहीं और पीव न पड़े, तब तक नहीं झाड़े नहीं तो मन्त्र काम न देगा। स्त्री का नाम पूछे और जिस तरफ उसकी छाती में दुःख है उससे विपरीत अपनी दूसरी तरफ की छाती पर २१ बार मन्त्र पढ़कर हाथ फेरे। छाती लाल कड़ी होय और बाद में गरम-गरम पानी का सेक दो भगवन् चाहेगा तो अवश्य आराम होगा।

● सर्वजन वशीकरण मंत्र ●

निम्नलिखित मन्त्र केवल १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। स्नानोपरान्त स्वच्छ वस्त्र धारण करके, पवित्र आसन पर बैठकर इस मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिए।

ओ३म् सर्वलोक वशंकराय कुरु कुरु स्वाहा।

जब मन्त्र का जप पूरा हो जाय तब निम्नलिखित में से किसी भी एक विधि के अनुसार वस्तुओं को इस मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके साध्य व्यक्ति के ऊपर प्रयुक्त करने से वह वशीभूत हो जाता है—

(१) ब्रह्मदण्डी, वच तथा कूठ को समभाग लेकर चूर्ण बना ले। इस चूर्ण को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर पान में रखकर जिस साध्य व्यक्ति को खिला दिया जायगा, वही साधक के वशीभूत हो जायगा।

(२) सहदेई को छाया में सुखाकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। फिर उसका चूर्ण बनाकर चूर्ण को पान में रखकर साध्य व्यक्ति को खिलावे तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

(३) सफेद दूब को कपिला गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करें। फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-स्त्री अथवा पुरुष के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो।

उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंचा जायगा वही साधक के वशीभूत हो जायगा।

● शत्रु मोहन मंत्र ●

निम्नलिखित मन्त्र, १०,००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है —

"ओ३म् नमो महाबल महापराक्रम शस्त्र विद्या विशारद अमुकस्य भुजबलं बंधय तध्य दृष्टि स्तंभय स्तम्भय अंगानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुं।"

इस मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस मन्त्र की प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

अपामार्ग (औंगा) का रस निकाल कर, उसे इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने शस्त्र पर लेपकर फिर युद्ध-भूमि में जाय तो शत्रु उसे देखते ही मोहित हो जाता है।

● ज्वर नाशक मंत्र ●

निम्नलिखित मन्त्र को १०८ बार जपकर, पानी को अभिमन्त्रित करे तथा वह पानी ज्वर के रोगी को पिला दे तो उसका ज्वर आना दूर हो जाता है। मन्त्र यह है—

ओ३म् शान्ति शान्ति सव रिष्ट नाशिनी स्वाहा।

● भूत-ज्वरनाशक मंत्र ●

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा देने से भूत-ज्वर उतर जाता है। मन्त्र यह है—

ओ३म् नमो भगवतेउड्डामरेश्वराय कुहुनो कुर्बली स्वाहा।

● सुख-प्रसवकर मंत्र ●

निम्नलिखित मन्त्र का ८ बार उच्चारण करके जल को अभिमंत्रित करे तथा अभिमंत्रित जल गर्भवती स्त्री को पिला दे तो उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है। मंत्र यह है—

ओ३म् मुक्ता पाशा विपाशाश्च
मुक्ता सूर्येण रश्मयः।
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ
ऐहि माचिर माचिर स्वाहा॥

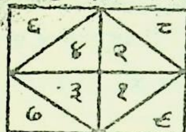
● सर्पों को भगाने का मंत्र ●

ओ३म् प्लः सर्पकुलाय स्वाहा अशेष कुल सर्प कुलाय स्वाहा

इस मन्त्र द्वारा मिट्टी को सात बार अभिमंत्रित करके उसे घर में बिखरा दे तो इस मन्त्र के प्रभाव से उस घर में रहने वाले सर्प वहां से भाग जाते हैं।

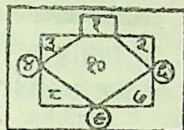
※※ चमत्कारिक यन्त्रों के प्रभाव से लाभ उठाइए ※※

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● तीर्थ-यात्रा ●



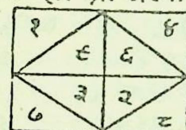
इस यन्त्र को भोज-पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से तीर्थयात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● वाहन-प्राप्ति ●



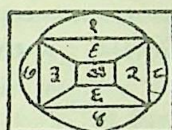
इस यन्त्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५००१ की संख्या में लिखकर पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इसके प्रभाव से इच्छित वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग ३१ दिन तक निरन्तर करना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● मन्दिर-निर्माण ●



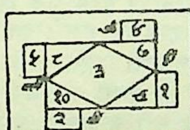
इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्लपक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उनका धूप-दीप आदि से पूजन करे, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल मे प्रवाहित कर दे, तो मन्दिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

● ऋण-मुक्ति ●



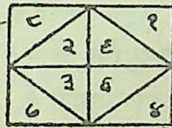
इस यन्त्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरान्त उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण-मुक्त हो जाता है।

● जलाशय-निर्माण ●



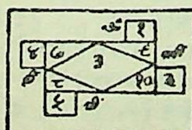
इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के रविवार के दिन भोजपत्र या सफेद कागज के ऊपर केशर द्वारा ३१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते हुए जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआं, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूरा होता है।

● रोग-मुक्ति ●



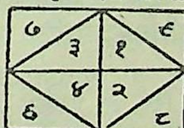
इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोज पत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

● गृह-निर्माण ●



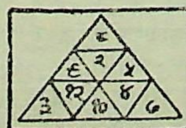
इस यन्त्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से लिखना आरंभ करें। केशर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर ११००० की संख्या में यन्त्र लिखने चाहिए, फिर उन्हें नदी में पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए। इसके प्रभाव से गृह-निर्माण की इच्छा पूर्ण होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● ईश्वर-भक्ति ●



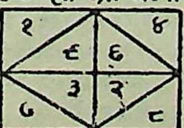
इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरंभ करे तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिखकर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यन्त्र लेखक को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

● सन्तान-प्राप्ति ●



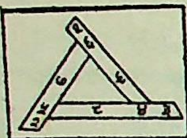
इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरंभ करें। लिखने की कलम चांदी की होनी चाहिए। यन्त्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ● पदोन्नति ●



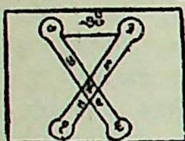
इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरंभ करे। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

भाग्योन्नति



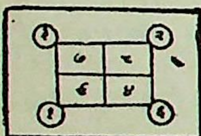
इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन भोजपत्र के ऊपर केशर से ६२५ यन्त्र लिखे। जितने दिनों में संख्या १०००० पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यन्त्रों को लिख-लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करता रहे, तो भाग्य की उन्नति होती है एवं कामनाएं पूर्ण होती हैं।

पुत्री का विवाह



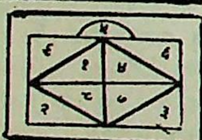
इस यन्त्र को सोमवार के दिन से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे। जब ५००० यंत्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर, धूप-दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस यंत्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्दपूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

पारिवारिक सुख



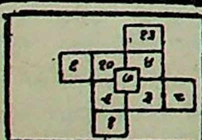
इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में लिखना आरंभ करे। यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब ५००० की संख्या पूरी हो जाय, तब सब यन्त्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दे। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

यश-प्राप्ति



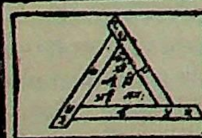
इस यन्त्र को रविवार के दिन प्रातःकाल ५ बजे से लिखना आरंभ करे। प्रतिदिन १०१ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर अथवा गोरोचन से लिखे। जब २५०० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दे तो इसके प्रभाव से यश तथा सन्तान की प्राप्ति होती है।

आजीविका प्राप्ति



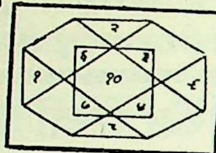
इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना प्रारंभ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखे। जब ५००० यन्त्र लिखे जा चुके, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इसके प्रभाव से आजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

स्थानान्तरण



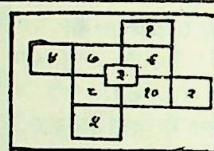
इस यन्त्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में लिखना आरंभ करे। सफेद कागज या भोजपत्र के ऊपर केशर से यंत्र लिखने चाहिए। जब २५०० यन्त्र लिख जायं, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो साधक व्यक्ति का स्थानान्तरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।

आत्म-रक्षा



इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर यथाविधि धूप-दीप आदि से पूजन कर, त्रिलोह के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर ले तो आत्म-रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति को कहीं भय नहीं होता।

धन-प्राप्ति



इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १२५ यन्त्र लिखे, जब ५००० यन्त्र लिख जायं, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दे तथा एक यन्त्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करे तो धन की प्राप्ति होती है।

सन्तान-सुख

६	११	३
४	७	९
१०	२	८

इस यन्त्र को रविवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र लिखे। जब २५०० यन्त्र पूरे हो जायं, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दे। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई सन्तान सुधर जाती है।

विद्या-प्राप्ति

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे और उन यन्त्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दे। १५ दिन तक इसी प्रकार निरन्तर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यन्त्र ताबीज में भरकर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

परीक्षा में सफलता

३	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

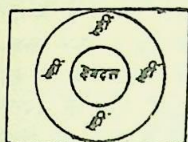
परीक्षा आरम्भ होने से १५ दिन पूर्व इस यन्त्र को केसर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १०१ यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर दे। सोलहवें दिन एक यन्त्र को यथाविधि पूजकर ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा अथवा गले में धारण कर ले और परीक्षा देने को जाय तो उसमें सफलता प्राप्त हो।

बन्धन-मुक्ति

[illegible]	३३३	३३८	३३१
[illegible]	३२२	३३४	३३६
९९	३३७	३३०	३३५
[illegible]	९९	[illegible]	[illegible]

इस यन्त्र को रविवार के दिन चन्दन से कागज या भोजपत्र के ऊपर लिखकर, एक जंगली कबूतर के गले में बांधकर कबूतर को छोड़ दें। इस यन्त्र में जिस स्थान पर 'कैदी का नाम' लिखा है वहां कैदी के नाम को तथा जहां 'मां का नाम' लिखा है, वहां कैदी के मां का नाम को लिखना चाहिए। यह बड़ा प्रभावकारी यन्त्र है।

● कारावास-मुक्ति ●



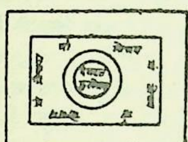
इस चक्र को पुए के ऊपर घी से लिखकर बीच में देवदत्त के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखे जो जेल में पड़ा हो। गन्ध, पुष्प आदि से यन्त्र वाले पुए का पूजन करके, वह पुआ उसी कैदी व्यक्ति को खिला दे। इस यन्त्र के प्रभाव से वह कैदी व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही कैद से छूट जाता है। यह यन्त्र भी बहुत प्रभावशाली है।

● सम्मान-प्राप्ति ●

दं.	वं.	दं.	दे.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

इस यन्त्र को केसर अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखे। लिखने का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के गुरुवार अथवा पूर्णिमा के दिन से करना चाहिए। निश्चित संख्या में लेखन कार्य पूरा हो जाने पर यन्त्र लेखक को सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। यन्त्र लिखते समय प्रतिदिन धूप-दीप भी जलानी चाहिए।

● राजदण्ड से मुक्ति ●



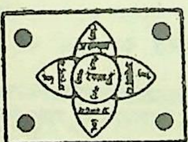
इस यन्त्र को कपूर कुंकुम से एक बड़े भोजपत्र के ऊपर लिखकर बीच में 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखे। फिर यन्त्र का गन्ध पुष्प आदि से पूजन कर, त्रिलोह के तावीज में भरकर कंठ अथवा भुजा में धारण करे तो इसके प्रभाव से राजदण्ड अथवा बन्धन (कैद का भय) दूर हो जाता है। यदि किसी ने किसी को जबर्दस्ती रोक रक्खा हो तो छुटकारा मिल जाता है।

● गये हुए व्यक्ति का लौटना ●

२७६	२५७	२६०	२४२
२५६	२४६	२४८	२५३
२४४	२७६	२५०	२४०
२५१	२४६	२४५	२५५

यदि किसी के घर से लड़का, लड़की, स्त्री, पुरुष, भाई, बहिन, सेवक अथवा अन्य व्यक्ति रूठकर या किसी भी कारण से चुपचाप घर से बाहर चला गया हो और न आ रहा हो, तो उसे वापिस बुलाने के लिए इस यन्त्र को रविवार के दिन भोजपत्र पर चन्दन से लिखकर चरखे पर बांध दें और क्वारी कन्या के हाथ से उल्टा चरखा चलवाकर सूत कतवायें तो गया हुआ व्यक्ति वापिस लौट आता है।

● क्रोध-शमन ●



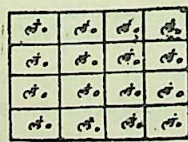
इस यन्त्र को लोहे के कांटे से गोरोचन द्वारा ताड़-पत्र के ऊपर सोमवार के दिन लिखे। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए, जिसका क्रोध शान्त करना हो। फिर यन्त्र को कुम्हार की मिट्टी में रखकर ७ दिन तक पूजन करे। अन्त में ब्राह्मण को भोजन कराये। इसके प्रभाव से शत्रु, मित्र अथवा अन्य व्यक्ति का क्रोध दूर हो जाता है।

● खोई हुई वस्तु का मिलना ●

ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.
हूं.	हूं.	हूं.	हूं.
ॐः	ॐः	ॐः	ॐः
श्रीं.	श्रीं.	श्रीं.	श्रीं.

इस यन्त्र को कनेर के वृक्ष की छाया में बैठकर बकरे की हड्डी से पृथ्वी के ऊपर १०८ बार लिखें। तत्पश्चात् भगवान् शिव का यथाविधि पूजन करे तो इसके प्रभाव से खोई हुई वस्तु मिल जाती है अथवा गई हुई वस्तु वापिस आ जाती है। इस यन्त्र को मंगलवार या शनिवार के दिन लिखना चाहिए।

● शत्रु-विनाश ●



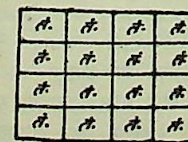
शत्रु का उच्चाटन करने तथा शत्रु से छुटकारा पाने के लिए इस यन्त्र को लोहे की कलम से तांबे के यन्त्र (ताम्र पत्र) पर लिखकर गंध-पुष्पादि से पूजन करे तथा जिस शत्रु का विनाश करना हो, उसका ध्यान करे तो यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का उच्चाटन होता है और वह उस स्थान को छोड़कर दूर चला जाता है तथा शत्रुता करने का कभी नाम भी नहीं लेता।

● दूकान की बिक्री में वृद्धि ●

२१	८	२	७
६	६	१४	२६
२७	१२	८	१
६	४	२१	३६

इस यंत्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन तुलसी के रस से चमेली की लकड़ी की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप दें। फिर दूकान में जिस स्थान पर गद्दी हो, उस स्थान में गाड़ दें और ऊपर गद्दी बिछा कर बैठे। इस यन्त्र के प्रभाव से दूकान की बिक्री में वृद्धि होती है। यह यन्त्र बड़ा प्रभावकारी है।

● शत्रु-विजय ●



इस यन्त्र को श्मशान के कोयले द्वारा शत्रु के वस्त्र के ऊपर लिखकर उसे धूप-दीप दे। तत्पश्चात् उस वस्त्र को भूमि में गाड़ दे अथवा किसी नदी में बहा दे तो शत्रु पर विजय प्राप्त होती है। इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु देश छोड़कर चला जाता है अथवा क्षमा मांगकर शत्रुता को त्याग देता है। यह प्रभावशाली यन्त्र है।

● लाटरी में सफलता ●

६०	६०	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

इस यन्त्र को अनार की लकड़ी की लेखनी से लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें। फिर इसे अष्टधातु के तावीज में रखकर गूगल की धूनी देकर दाईं भुजा में धारण कर लें। लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि यन्त्र ऊपर को उठने न पाये। इस यन्त्र को धारण करने से लाटरी में सफलता प्राप्त होती है।

D.P.B.

● रेस में सफलता ●

१	२४।	२५।	२३॥
३१॥।	२७॥	३४॥	३६॥
१०।	८	२४॥	१९॥
२६।	१८।	५॥।	४॥।

इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप दे। फिर यन्त्र को ताबीज में भरकर अपनी दांयी भुजा में बांधकर रेस खेलने के लिए जाय तो रेस में सफलता प्राप्त होती है। इस यन्त्र को शुभ दिन तथा शुभ तिथि में लिखकर अपनी भुजा में बांधना चाहिए तथा कार्य के दिन इसको धूप देनी चाहिए।

● कृषि-उत्पादन में वृद्धि ●

२	१०	३	८
७	३	८४	२४
२६	८१	६	१
४	६	३२	२५

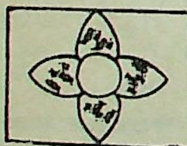
इस यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर खेत में गाड़ दें तत्पश्चात् विधिपूर्वक क्षेत्रपाल का पूजन करे तो खेत में अन्न अथवा अन्य वस्तुओं की उपज बहुत अधिक होती है। जो किसान अपने खेत की उपज में वृद्धि करना चाहते हों, उन्हें इसका प्रयोग करना चाहिए। यन्त्र को किसी भी शुभ दिन और तिथि में लिखा जा सकता है।

● जुए में सफलता ●

ते	[illegible]	र	[illegible]	द	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ट	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	द	[illegible]	र	[illegible]	[illegible]

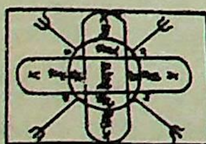
एरण्ड के पत्ते के ऊपर कौए के पंख की कलम से काली स्याही के द्वारा रात्रि के समय इस यंत्र को लिख कर धूप दीप से पूजन करे। फिर उसे कलावे में लपेट कर दाईं भुजा में बांध ले। जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करके जुआ खेलता है वह जुए में अवश्य ही विजय प्राप्त करता है। यह प्रसन्न यन्त्र नामक यन्त्र बड़ा प्रभावशाली कहा गया है।

● मुकद्दमे में सफलता ●



भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से इस यन्त्र को बनाकर धूप, दीप, नैवेद्य पुष्प आदि से पूजा करें। फिर त्रिलोह ताबीज में भरकर यन्त्र को दूध के भीतर डालदे। ऐसा करने के बाद मुकद्दमे-झगड़े आदि में जाय तो सफलता प्राप्त होती है।

● व्यवसाय में सफलता ●



इस यन्त्र को शुक्लपक्ष में गुरुवार के दिन चमेली की लकड़ी की कलम से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप से पूजन कर, किसी ताबीज में भरकर अपनी दुकान या दफ्तर की तिजोरी में रख दे तो व्यवसाय में खूब सफलता मिलती है तथा धन वैभव की उत्तरोत्तर वृद्धि होती चली जाती है। यह यन्त्र बहुत ही प्रभावशाली माना गया है।

● हर कार्य में सफलता ●

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

इस यन्त्र को गुरुवार, पूर्णमासी अथवा ग्रहण के दिन अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपनी भुजा में बांध ले अथवा गले में डाल ले या अपने पास रक्खे तो प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यन्त्र को ताबीज में भरकर भी धारण किया जा सकता है। यन्त्र लिखने के बाद धूप-दीप से पूजा कर लेनी चाहिए।

● कामना-पूर्ति ●

३	६	२२
२१	३१	३
७२	२४	६

इस चिन्तामणि नामक यन्त्र को चन्दन तथा सिन्दूर से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपने मस्तक पर धारण करे तो समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। यन्त्र लिखनोपरान्त उसका धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजा कर लेनी चाहिए तथा जो भी मनोकामना हो, उसका ध्यान करना चाहिए, इस यन्त्र के प्रभाव से पूरी हो जायेगी।

● मनोरथ-प्राप्ति ●

१	५	६
८	३	४
२	७	६

इस यन्त्र को बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ कर अनार की कलम से पृथ्वी पर या भोजपत्र पर चार हजार बार लिखने से मनोरथ की प्राप्ति होती है। भोजपत्र पर लिखकर इस यन्त्र को ताबीज में भरकर भुजा या कंठ में धारण भी किया जा सकता है। परन्तु यन्त्र को ४००० बार लिखना आवश्यक है।

● विदेश यात्रा में सफलता ●

राम	राम	राम
राम	सीताराम	राम
राम	राम	राम

इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में तांबे के पत्र पर चन्दन द्वारा अनार की कलम से लिखकर विधिपूर्वक प्रतिदिन पूजन करते रहने से सब कार्यों में सिद्धि, सब मनोरथों में पूर्णता तथा विदेश यात्रा में सफलता प्राप्त होती है। यह यन्त्रराज समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला कहा गया है।

● विदेशी व्यवसाय में सफलता ●

१	४	२	७
८	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	२

इस यन्त्र को सरसों के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, विधिपूर्वक पूजन करके वन में गाड़ देने से हर प्रकार की अभिलाषा पूर्ण होती है तथा विदेशों से वस्तुओं के आयात-निर्यात संबंधी व्यापार में लाभ होता है।

● सब प्रकार की सुरक्षा ●

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
लृ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

इस यन्त्र को कस्तूरी, केशर तथा चंदन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीप, चंदन, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य आदि से पूजन करे। तत्पश्चात् धन, वस्त्र आदि से ब्राह्मणों का पूजन कर, तांबे के ताबीज में यन्त्र को भरकर पुरुष अपनी दाईं भुजा में तथा स्त्री कंठ में धारण करे। इस यन्त्र के प्रभाव से हर प्रकार से सुरक्षा बनी रहती है। भय दूर होता है तथा भाग्य की वृद्धि होती है।

● मनवांछित सन्तान ●

३	११	१०	१
१३	९ ६ ७ १ ७		१२
३	११ २ ५ ८ ६ ३ ७ ६		६
१०	५	४	१४

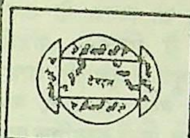
इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन प्रातःकाल के समय चमेली की लकड़ी की कलम से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप देकर १०८ दिन तक प्रतिदिन पूजन करता रहे, तत्पश्चात् यन्त्र को चांदी, सोने, तांबा या अष्टगंध के ताबीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करे तो मनवांछित सन्तान की प्राप्ति होती है।

● स्नेह-वृद्धि ●

२१	२६	२
२८	२४	२०
२३	२२	१०

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर पूजन करे, फिर यन्त्र लिखित भोजपत्र को फुलेल के तेल में जलाये तथा जलाते समय अपनी मनोभिलाषा का चिन्तन करता रहे। इस यन्त्र के प्रभाव से इच्छित व्यक्ति से स्नेह की वृद्धि होती है तथा उसके मन में प्रीति उत्पन्न होती है। यन्त्र को शुभ तिथि तथा शुभ दिन में लिखना चाहिए।

● प्रेम में सफलता ●



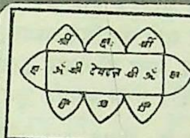
इस यन्त्र को गोरोचन, कुंकुम, लालचन्दन और कस्तूरी द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र में जहां 'देवदत्त' लिखा है, वहां साध्य व्यक्ति का नाम लिखकर राई द्वारा निर्मित कामदेव के हृदय भाग में रक्खे। प्रतिमा को लकड़ी के तारों पर रखकर धूप, दीपादि से पूजन करें। सिद्धि होने तक प्रत्येक रात्रि में यह क्रिया करे तो प्रेम में सफलता प्राप्त होगी।

● विवाह ●

६१	१७	१६
१७	कुं	६५
७॥	६	८१

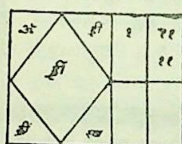
इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर से अपनी हथेली पर लिखकर अभिलषित स्त्री के समक्ष जाय और उसे दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करे तो वह स्त्री शीघ्र वश में हो जाती है और विवाह करने के लिए तैयार हो जाती है। मनोनुकूल स्त्री से विवाह कराने में यह यंत्र अत्यन्त प्रभावकारी कहा गया है।

● प्रेमी-मिलन ●



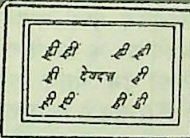
इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर मध्य में 'देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखे फिर यन्त्र को दो मिट्टी के शकोरों में बन्द करके अग्नि में रख दे। ठंडा हो जाने पर शकोरों को खोलकर यन्त्र की भस्म का प्रयोग करे। इस प्रयोग द्वारा प्रेमी से मिलन होता है तथा साध्य व्यक्ति जीवनभर वशीभूत रहता है। पति को वश में रखने का श्रेष्ठ उपाय है।

● सास-श्वसुर का सुख ●



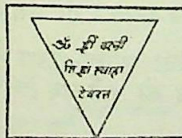
इस यन्त्र को गेहूं की रोटी पर लिखकर काली कुतिया को खिलाने से श्वसुर का सुख प्राप्त होता है। इस यंत्र के साधक के लिए किसी विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। यह यन्त्र सास-श्वसुर अच्छे स्वभाव के न हो तो उनके स्वभाव में परिवर्तन भी ला देता है।

● राजा वशीकरण ●



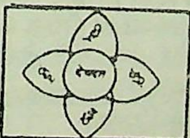
गोरोचन, केशर, लालचन्दन तथा अनामिका का रक्त—इन सब द्रव्यों को एकत्र कर, इनसे भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखे। मध्य में देवदत्त के स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। यन्त्र लिखकर धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन कर कुमारी ब्राह्मणी को भोजन कराके, यन्त्र को मुट्ठी में दबाकर राजा के पास जाय तो राजा वशीभूत हो जाता है। राजा क्रुद्ध हो तो प्रसन्न हो जाता है।

● मानिनी-आकर्षण ●



अपने दायें हाथ की अनामिका ऊंगली के रक्त से अपने बायें हाथ की हथेली पर इस यन्त्र को लिखकर यन्त्र में जहां देवदत्त' लिखा है, उस स्थान पर साध्य-स्त्री का नाम लिखे। यन्त्र लिखने के बाद गंध पुष्पादि से पूजन कर जिस मानिनि स्त्री को अपनी ओर आकर्षित करना हो उसका चिन्तन करे। इस यन्त्र के प्रभाव से मानिनी स्त्री एक प्रहर में ही आकर्षित होकर प्राप्त होती है।

● सेवक वशीकरण ●



इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर लिखे। मध्य में 'देवदत्त' के स्थान पर जिस सेवक को वश में करना हो, उसका नाम लिखे। लिखने के बाद पुष्प आदि से पूजन करके यन्त्र को दही के भीतर रख दे।

जब अपना ही कोई सेवक किसी कारणवश क्रुद्ध होकर अपना अनिष्ट करना चाह रहा हो, उस समय इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इसके प्रभाव से सेवक स्वामी को हानि नहीं पहुंचाता।

● प्रेमिका-मिलन ●



इस यन्त्र को गोरोचन, केशर और कुंकुम द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखे तथा यन्त्र के मध्य में जहां देवदत्त लिखा है, वहां अपनी प्रेमिका का नाम लिखे। फिर यन्त्र का पूजन कर, रात्रि के समय श्वेत वस्त्र धारण कर यन्त्र को सामने रखकर प्रेमिका का चिन्तन करे। इस प्रकार सात दिन करके ब्राह्मण-स्त्रियों को भोजन कराये। फिर यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज में भरकर भुजा पर बांधे तो प्रेमिका से मिलन होता है।

● कुटुम्ब वृद्धि ●

८०४	८१०	८१५	[illegible]
८१६	८११	८०६	८१७
८१०	८१३	८२०	८००
[illegible]	८०८	८०६	८१४

यदि किसी के सन्तान न होती हो, अथवा लड़कियां ही होनी हों, या सन्तान होकर मर जाती हो या गर्भ ही गिर जाया करता हो अथवा मृत सन्तान पैदा होती हो तो इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र के उपर पूर्णिमा के दिन लिखकर ताबीज में भरे और धूप-दीप देकर स्त्री की बाईं बांह या गले में पहना दें। यह यन्त्र कुटुम्ब की वृद्धि करता है और दीर्घायु सन्तान पैदा करता है।

D.P.B.

वर्षा को रोकना

११	१८	२	८
७	३	३५६	३०५
३५८	३५३	६	१
४	६	३०७	३५६

इस यन्त्र को कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, कलावे द्वारा किसी बबूल के वृक्ष की शाखा से बांध दे तो वर्षा का पानी रुक जाता है। जिन दिनों अत्यधिक वर्षा हो रही हो और उसके कारण फसल को हानि पहुंचने की आशंका हो, उस समय वर्षा को रोकने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। लिखने के बाद यन्त्र का पूजन भी करना चाहिए।

रोग-विनाश

६	१	८
७	५	३
२	९	४

यदि कोई रोग दूर न होता हो तो इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन अष्टगन्ध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, धूप-दीप दे, चांदी के तावीज में भरकर रोगी के गले में डाल दे। इस यन्त्र के प्रभाव से कुछ ही दिनों में रोग दूर हो जाता है तथा रोगी को स्वास्थ्य लाभ होता है। पूर्ण यन्त्र का प्रयोग हर रोग के लिए किया जा सकता है।

विघ्न-विनाश

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

शुक्ल पक्ष आरम्भ होने पर जो पहला रविवार आये उस दिन मध्याह्न १२ बजे इस यन्त्र को केसर द्वारा लिखकर, धूप-दीप देकर अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करे तो हर प्रकार के विघ्न दूर होते हैं। जिस विघ्न को दूर करना हो, यन्त्र लिखते समय उसी का मन में ध्यान रखना चाहिए।

तिजारी (तीसरे दिन का) नाशक

६	२	७
४	६	८
५	१०	३

इस यंत्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन कर पुरुष अपनी दाईं और स्त्री अपनी बाईं भुजा में बांधे तो तृतीयक ज्वर अर्थात् तीजारी का बुखार आना बन्द हो जाता है।

भय-विनाश

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पुष्प गन्धादि से पूजन कर अपने घर के सामने गाढ़ दे। यंत्र को किसी शुभ तिथि तथा शुभ दिन में लिखना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से हर प्रकार का भय दूर हो जाता है। यह यंत्र चमत्कारिक प्रभाव प्रदर्शित करने वाला कहा गया है।

कष्टा-स्त्री के लिए सुखकर

ई   अ

३३	१३	१३
३.३	३३	३३
३१	३३.	३२

इस यन्त्र को कांसी की थाली में केसर से लिखकर, पूजनोपरान्त थाली को पानी से धोकर, पानी कष्टा-स्त्री को पिला दे तो वह रजस्वला हो जाती है और उसका कष्ट दूर हो जाता है। यह यन्त्र भी बहुत प्रभावशाली बताया गया है।

दुःस्वप्न-नाशक

हं०	सं०	खं०	फं०
पं०	दं०	धं०	जं०
मं०	वं०	भं०	दं०
थं०	यं०	जं०	दं०

इस यंत्र को केसर के द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर गंध, पुष्प, धूप दीपादि से पूजन करे। फिर इस यंत्र को सोते समय अपने सिरहाने रखकर सो जाय तो दुःस्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है। साथ ही दुःस्वप्नों का कोई फल नहीं होता। यन्त्र को चाहे जिस दिन लिखा जा सकता है।

बच्चों का रोना बन्द करना

२	९	४
७	५	३
६	१	८

नीचे लिखे यन्त्र को कागज पर लिखकर, धूप, दीप आदि से पूजन कर, ताबीज या मोमजामे में भरकर बालक के गले में पहना दे तो उसका रोना कम या बन्द हो जाता है। जो बच्चा अधिक रोता हो उसे यह यन्त्र पहना देना चाहिए। यन्त्र को चाहे जब लिखा जा सकता है।

प्रीति-विनाश

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

इस यन्त्र को कंटाई (कटेली) के पत्ते पर केसर से लिखकर सुखा ले। फिर जिस व्यक्ति का प्रेम किसी से नष्ट करना हो, उस दूसरे व्यक्ति का नाम लेकर पहला व्यक्ति सोता हो, वहां उसके ऊपर सुखाये हुए पत्ते को डाल दे तो उस व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति से प्रीति नष्ट हो जाती है।

उदर शूल नाशक

१६	२	जुवार
२	५११	है
अज	कुंन	मजमा

इस यन्त्र को केशर द्वारा कांसी की थाली में लिखकर, पूजनोपरान्त, उस थाली को पानी से धोकर, पानी पेट का दर्द के रोगी को पिला देने से पेट का दर्द तुरन्त : द हो जाता है। यन्त्र को आवश्यकता के समय कभी भी लिखा जा सकता है।

कलह-वृद्धि

४१	१८	११
१०	२०	३०
१९	२३	३२

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सरसों के तेल में जिस साध्य व्यक्ति का नाम लेकर जलाया जायगा, उसके घर में कलह की वृद्धि होगी तथा जिस व्यक्ति से उसका प्रेम होगा वह टूट जायेगा। इस प्रयोग को भी चाहे जिस दिन किया जा सकता है।

विषम ज्वर नाशक

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, रोगी की भुजा में बांध देने से हर प्रकार का विषम ज्वर तिजारी आदि का आना [illegible] जाता है। यन्त्र को आवश्यकता के समय कभी भी लिखा जा सकता है।

दर्द नाशक

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	७

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजन करे, तो हर प्रकार का दर्द नष्ट हो जाता है।

D.P.B.

नित्य-ज्वर-नाशक

८२	८६	[illegible]	७
६	३	५६	५५
५८	६२	८	१
४	५	८४	५७

इस यन्त्र को ठीकरी के ऊपर केशर से लिखे। फिर उस ठीकरी को उस व्यक्ति के हाथ से, जिसे ज्वर आता हो, किसी कुएं में गिरवा दे तो उस रोगी को नित्य आने वाला ज्वर रुक जाता है। यन्त्र को आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा जा सकता है।

आधाशीशी नाशक

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, आधाशीशी के रोगी के मस्तक पर बांध देने से आधाशीशी का दर्द बन्द हो जाता है। यन्त्र को दोपहर के समय बांधना चाहिए। यन्त्र को आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा जा सकता है।

नजर-दोष नाशक

३	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल-चन्दन से लिखकर, धूप-दीप देकर तांबे के ताबीज में भरकर, उस बालक के गले में बांध दे, जिसे नजर लग गई हो। इस यन्त्र के प्रभाव से नजर लगने का दोष तुरन्त दूर हो जाता है। यन्त्र को चाहे जब लिखा जा सकता है।

ज्वर-नाशक

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

इस यन्त्र को केशर द्वारा ठीकरी पर लिखकर, उस ठीकरी को रोगी की भुजा में बांध दिया जाय तो इकतरा बुखार अर्थात् एक दिन छोड़कर आने वाला ज्वर दूर हो जाता है। इस यन्त्र को अपनी आवश्यकतानुसार चाहे जब लिखा और प्रयोग में लाया जा सकता है।

सर्पविष-प्रभाव नाशक

|||	=	।०।	=
||| ||	।	|| ||	≡.
≡	=	।	≡
|||	=	।	≡।

इस यन्त्र को कागज के ऊपर केशर से लिखकर धूप-दीप से पूजन करे। फिर उस कागज को पानी से धोकर वह पानी उस व्यक्ति को पिला दे, जिसे सांप ने काट लिया हो। इस यन्त्र के पानी के प्रभाव से सामान्य सर्प का काटा हुआ व्यक्ति बच जाता है और विष उतर जाता है।

अकाल-मृत्यु-नाशक

२	९	४
७	५	३
६	१	८

इस यन्त्र को कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से भोजपत्र के ऊपर एक हजार की संख्या में लिखने से अकाल मृत्यु का भय दूर होता है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह यन्त्र सब जग रक्षा करता है।

दंगल में विजय

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इस यन्त्र को अपामार्ग (औंजा) के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर अपनी दाईं भुजा अथवा गले में धारण करने से दंगल तथा शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त होती है। यन्त्र लिखने का कार्य किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि में करना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरकर धारण किया जा सकता है।

गड़े धन की प्राप्ति

२	७	६
९	५	१
४	३	८

इस यन्त्र को बेलपत्र के रस, हरताल तथा मैंनसिस के घोल से बेल की कलम से किसी शुभ स्थान में बैठकर पृथ्वी पर दो हजार की संख्या में लिखे तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है तथा मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। यह यन्त्र अनेक प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

धरोहर की सुरक्षा

८	१	६
३	५	७
४	९	२

इस यन्त्र को चमेली की कलम से केसर द्वारा भोजपत्र के उपर लिखकर पुष्प, धूप, आदि से पूजन करने पर धरोहर की सुरक्षा होती है।

यन्त्र का पूजन करते समय जिस व्यक्ति के यहां धरोहर रखी हो उसका चिन्तन करना चाहिए। इसके प्रभाव से धरोहर सुरक्षित रहेगी।

ऋण-प्राप्ति

५७	६२	२	८
६	३	५९	५८
६१	५६	८	१
४	५	६४	६०

इस यन्त्र को पीपल की कलम से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर १००१ की संख्या में लिखने तथा एक यंत्र लिखित भोजपत्र को अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने से साहूकार से ऋण की प्राप्ति होती है तथा दरिद्रता का नाश होता है। यह यन्त्र बहुत प्रभावशाली है।

अभिनय क्षेत्र में सफलता

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें। ऐसे सवालाख यंत्र लिखकर, प्रत्येक यन्त्र को आटे की गोली में भरकर वे गोलियां मछलियों को खिलादे तो फिल्म, नाटक थियेटर आदि अभिनय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी तथा अन्य कामनाएं भी पूर्ण होती हैं। यह यन्त्र अन्यक्षेत्रों में भी सफलता दिलाता है।

देहाती पुस्तक भण्डार

● साझेदारी में सफलता ●

८	३	४
१	५	६
६	७	२

इस यन्त्र को कुत्ते के नख द्वारा पृथ्वी पर १००१ बार लिखने से साझे के काम में सफलता प्राप्त होती है। यह यन्त्र अन्य कार्यों में भी सफलता एवं सिद्ध देने वाला है। इस यन्त्र को किसी शुभ दिन तथा शुभ तिथि में लिखना चाहिए।

● प्रेत बाधा नाशक ●

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	९
४	६	३३	३६

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर अपने घर के सामने गाढ़ देने से हर प्रकार की प्रेतबाधा तथा भय दूर हो जाता है। यन्त्र को चाहे जिस दिन लिखा जा सकता है। विघ्न बाधाओं को दूर करने में यह यन्त्र प्रभावशाली है।

● सर्व सिद्धिदाता लक्ष्मी यन्त्र ●

असली प्राचीन सच्ची प्राक. शक्तियाँ पं० जगन्नाथ मू. 15.00

		१३	
६	१०	४	
	७		
	६	३	८
	१		

ज्योतिष, धन-सम्पत्ति और परिवार पं० जगन्नाथ मू. 8.25

इस यन्त्र को किसी शुभ दिन तथा मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर यथाविधि पूजन करने के उपरान्त कीच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रतिदिन प्रातःकाल इस यन्त्र का पूजन करके, धूप-दीप देकर 'लक्ष्मी स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए।

इस यन्त्र के पूजन के प्रभाव से घर में धन-सम्मत्ति ऐश्वर्य, एवं सुखों की वृद्धि होती है, लक्ष्मी स्थिर बनी रहती है तथा हर प्रकार के दुःख दूर होते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में इस लक्ष्मी यन्त्र की बड़ी महिमा कही गई है, अतः प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति को इस यन्त्र के पूजन से लाभ उठाना चाहिए।

आपत्ति दूरीकरण यन्त्र

ओं

ऊं	हैं	ऊं
ह	ऊइं अ पु	[illegible]
ऊं	हं	ऊं

ज्वर यन्त्र

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३४	०७	५	३३
५१	७	३	२५

ओं

● **आपत्ति दूरीकरण यन्त्र**—इसको प्रथम सिद्ध कर लो या एक हजार यंत्र भोजपत्रपर लिखकर गोरोचन व आटे की गोली बनाकर मछलियों को खिलाओ, और फिर सोमवार के दिन ताबीज में मढ़वा कर धारण करें।

● **ज्वर यन्त्र**—प्रथम इसको सिद्ध करें। सफेद कागज पर लाल चन्दन से २१०० बार लिख कर गोली बनाकर मछलियों को खिलाओ, सिद्ध होगा। जिसको बुखार आता हो इस यंत्र को लिखकर उसकी भुजा में बांधो। बुखार नहीं आयेगा।

सर्व कार्य सिद्धि यंत्र

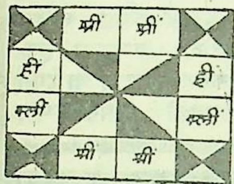
			२
१	६	८	
	श्री		
	७	६	४
	३		

यन्त्र-विधि—प्रथम स्नान आदि से शुद्ध होकर ४० यन्त्र रोजाना लिखें २१ दिन तक। जब २१वां दिन हो उस दिन इन सबकी गोली बनाये। एक-एक करके नदी में डाल दें, सिद्ध हो जायेगा। इस यंत्र को दो के अंक से भरना शुरू कर दें।

वशीकरण के लिए भुजा में बांधें। इस यन्त्र को सिर पर रखने से कार्य सिद्ध हो। इस यन्त्र को शत्रु का नाम लेकर आग दिखावे, पुत्र प्राप्त हो और गर्भ-रक्षा के लिए स्त्री की कमर में बांधें तो रोग जाय। इस यन्त्र का पूजन करने से धन-वृद्धि हो परन्तु धूप दे और हवन करावे। इस यन्त्र को इतवार के दिन सिराहने रखकर सोवे तो प्रश्न उत्तर मिले। अगर कोई मनष्य परदेश गया हो या लापता हो तो उसके वस्त्र में इस यन्त्र को बांधकर खूंटी से लटका दे और सुबह-शाम के समय सात कोड़े मारे तो परदेश गया आदमी वापस आवे।

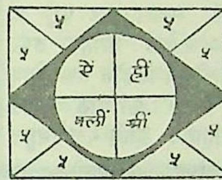
सन्तान को फिल्म स्टार बनाना

जो लोग अपनी सन्तान को फिल्म-क्षेत्र में प्रविष्ट होते हुए देखना चाहते हों, उन्हें निम्नलिखित यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर स्वयं धारण करना चाहिए तथा जिस सन्तान को फिल्म-स्टार बनाना हो, उसे भी धारण कराना चाहिए। प्रतिदिन दोनों को विष्णु सहस्र-नाम का पाठ करना भी आवश्यक है।



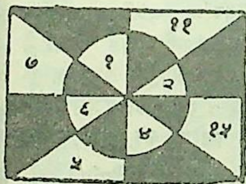
अखबार निकालने में लाभ

जो लोग अखबार निकाल कर उससे लाभ कमाने के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र केशर, कस्तूरी या गोरोचन द्वारा एक बड़े भोजपत्र पर लिख कर तथा कांच के फ्रेम में मढ़वा कर अपने दफ्तर में टांग देना चाहिए तथा प्रतिदिन इस यन्त्र का पूजन करके लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे उन्हें सफलता मिलेगी।



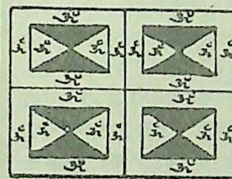
सन्तान का इच्छित स्थान पर विवाह

जो व्यक्ति अपने पुत्र अथवा पुत्री का किसी इच्छित स्थान पर विवाह करना चाहते हों और उस संबंध के होने में कोई कठिनाई आ रही हो तो यह यन्त्र किसी शुभ मुहूर्त में अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखकर कण्ठ या भुजा में धारण करना चाहिए तथा संकट मोचन हनुमान स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे बाधा दूर हो जाएगी।



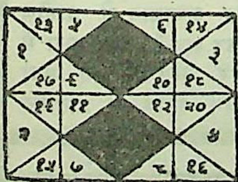
लड़के का जन्म

जिन लोगों के यहां केवल लड़कियां-ही-लड़कियां होती हों और जो लड़के का जन्म चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र अष्ट-गंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर अपनी दाईं भुजा तथा स्त्री की बाईं भुजा में, चांदी के ताबीज में भरकर बांधना चाहिए तथा प्रतिदिन 'सन्तान गोपाल स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए। इससे उनकी कामना पूर्ण होगी।



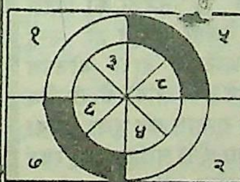
विदेशी वस्तु के व्यवसाय में लाभ

जो लोग विदेश से कोई वस्तु मंगवाकर उसके व्यवसाय से लाभ प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर धूप-दीप से पूजन करने के बाद अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन लक्ष्मी स्तोत्र, कष्टमोचन, हनुमान स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इससे मनोकामना पूरी होगी।



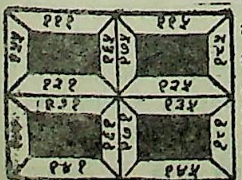
सन्तानों की दीर्घ आयु

जिन लोगों की सन्तान अल्पायु में ही मर जाती हो, उन्हें अपनी सन्तान के दीर्घ जीवन के लिए इस यन्त्र को केशर तथा गोरोचन द्वारा भोज-पत्र पर लिखकर यथाविधि पूजन करने के बाद स्वयं तथा अपनी पत्नी के गले में धारण करना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरवा कर पहना जा सकता है। भगवान की दया से उनकी कामना पूरी होगी।



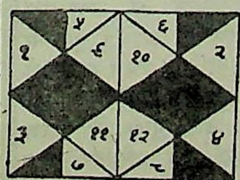
मित्र से वफादारी पाना

जो लोग यह चाहते हों कि उनका मित्र अथवा सम्बन्धी उन्हें धोखा न दे, उन्हें इस यन्त्र को केशर तथा कस्तूरी द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर एवं चांदी के ताबीज में मढ़वा कर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से मित्र या सम्बन्धी कभी बेवफाई नहीं करेंगे तथा हमेशा साथ देते रहेंगे।



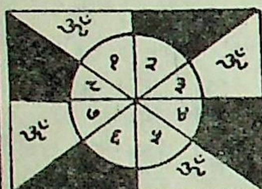
कर्ज से छुटकारा

जो लोग कर्ज से छुटकारा पाना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्ठगंध से लिखकर, विधि पूर्वक पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रति दिन 'ऋणमोचन स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। 'ऋणमोचन स्तोत्र' देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ से मंगवाया जा सकता है। धनी-मानी दानियों को इस स्तोत्र को बड़ी संख्या में मंगवाकर बटवाना तथा पुण्य लाभ लेना चाहिए।



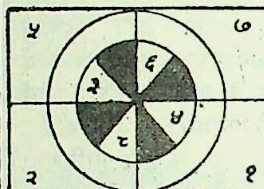
● पशु बेचने से लाभ ●

जो लोग अपने पशु को बेचकर लाभ उठाना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर तथा तांबे के ताबीज में मढ़वा कर पशु के गले में बांध देना चाहिए तथा स्वयं पशु की बिक्री होने तक 'शिव महिमा स्तोत्र' का पाठ करते रहना चाहिए। इससे पशु बहुत लाभ के साथ बिकेगा।



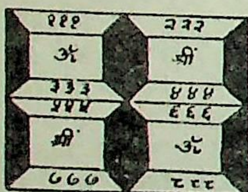
● सेना में नौकरी ●

जो लोग सेना में नौकरी प्राप्त करने में इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन 'पंचमुखी हनुमत्कवच' का पाठ करना चाहिए। इससे उनकी मनोकामना पूर्ण होगी।



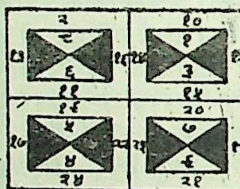
● चुनाव में विजय ●

जो लोग किसी चुनाव में विजय पाना चाहते हों अथवा किसी कम्पीटीशन में सफलता प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर से लिखकर पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन गरीबों को कुछ-न-कुछ दान करना चाहिए।



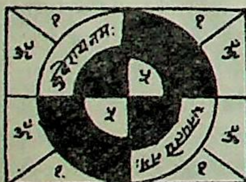
● फर्स्ट डिवीजन में पास होना ●

जो विद्यार्थी अपनी परीक्षा में फर्स्ट डिवीजन में पास होना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर पूजनोपरान्त, चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन सरस्वती देवी का पूजन और 'सरस्वती स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से उन्हें इच्छित सफलता मिलेगी।



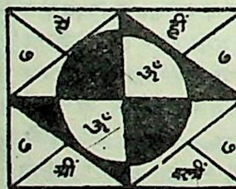
● सन्तान की विदेश यात्रा ●

जो लोग अपनी सन्तान—लड़के या लड़की को विदेश जाते हुए देखना चाहते हों, उन्हें यह यन्त्र अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तथा चांदी के ताबीज में भरकर सन्तान की भुजा अथवा गले में पहना देना चाहिए तथा स्वयं प्रतिदिन कुबेर का पूजन करना चाहिए। इससे उन्हें वांछित सफलता प्राप्त होगी।



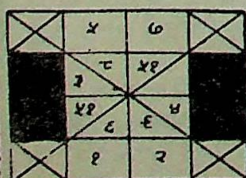
● वृद्धावस्था में सुख ●

जो लोग वृद्धावस्था में सुख प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें अपनी युवावस्था में ही किसी शुभ मुहूर्त में यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर तथा पूजनोपरान्त अष्टधातु के ताबीज में भरवाकर अपनी दाईं भुजा में धारण कर लेना चाहिए तथा संकट मोचन स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करना चाहिए।



● अपनी विदेश यात्रा ●

जो लोग स्वयं विदेश-यात्रा के इच्छुक हों, उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से लिखकर यथाविधि पूजन करने के बाद अष्टधातु के ताबीज में भर कर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए तथा प्रतिदिन गणेश जी का पूजन करना चाहिए। इससे उन्हें सफलता प्राप्त होगी।



गरीबों को भोजन कराने से शीघ्र काम बनेगा।

● लाटरी का पुरस्कार ●

जो लोग लाटरी का पुरस्कार प्राप्त करने के इच्छुक हों उन्हें यह यन्त्र भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखकर, यथा विधि पूजनोपरान्त चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दाईं भुजा में धारण करना चाहिए। फिर अंक ज्योतिष के आधार पर लाटरी का टिकट खरीदना चाहिए। इससे उन्हें पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता मिलेगी।



सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करने वाला होरा मुहूर्त

होरा मुहूर्त सभी कार्यों की सिद्धि के लिए अचूक व शुभ फलदायक है। पाठकों के कल्याण के लिए नीचे होरा मुहूर्त उदाहरण सहित दिया जा रहा है, उसे समझकर अपनी कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग में लायें।

सूर्य से लेकर शनि तक सातों ग्रहों के सात होरे होते हैं, जो दिन-रात में चौबीस घंटों में घूमते रहकर कार्य सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी शुभ समय प्रदान करते हैं। १—सूर्य का होरा राज सेवा के लिए, २—शुक्र का होरा यात्रा के लिए, ३—बुध का होरा ज्ञानोपार्जन के लिए, ४—चन्द्रमा का होरा सम्पूर्ण कार्य सिद्धि के लिए, ५—शनि का होरा धन इकट्ठा करने के लिए, ६—गुरु का होरा विवाह (शादी) के लिए और कलह तथा विवाद के लिए, ७—मंगल का होरा युद्ध के लिए उत्तम माना गया है। प्रत्येक होरा १ घंटे का होता है। जिस दिन किसी कार्य सिद्धि के लिए होरा देखना हो उस दिन जो वार हो उस वार के सूर्योदय के समय १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। १ घंटा बाद दूसरा होरा क्रमशः उस वार से छठे वार का होता है। यह भी १ घंटा रहता है। उसके बाद तीसरा होरा उससे छठे वार का होता है और यह भी १ घंटा रहता है। इसी प्रकार रात-दिन में २४ घंटों के होरा जानने चाहिए और फिर दूसरे दिन जो अगला वार होगा सूर्योदय के समय उसी वार का होरा प्रवृत हो जायेगा।

जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा लिखा गया है, किसी भी दिन उस कार्य की सिद्धि के लिए उस कार्य को सिद्ध करने वाले उत्तम होरा में १ घंटे के समय मुहूर्त कर सकते हैं। ऐसा करने से उस कार्य की सफलता में अवश्य सिद्धि मिलेगी। प्रत्येक वार में अलग-अलग २४ घंटों के होरा आसानी से देख सकें। इसके लिए नीचे चक्र दिया जा रहा है उससे समझ लें।

सम्पूर्ण कार्य-सिद्ध करने वाला होरा-चक्र

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
चं.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.
गु.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
श.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.

वार	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.
बु.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.
शु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

उदाहरण माना कि आज शुक्रवार है—यात्रा के लिए शुक्र का होरा देखना है तो शुक्रवार के समाने चक्र में दखा तो १, ८, १५, २२ के घंटे में शुक्र का होरा मिलाया तो इससे जाना गया कि सूर्योदय के पहले घंटे में, सूर्योदय से ८ वें घंटे में, सूर्योदय से १५ वें घंटे में तथा सूर्योदय से २२ वें घंटे में यात्रा करना उत्तम है। इसी प्रकार अन्य कार्यों के लिए भी मानना चाहिए।

किसी माह का वार जानने की विधि

अक्टूबर जनवरी ७ अप्रैल जुलाई ६ ही जानो। ३ फरवरी मार्च नवम्बर पर अगस्त में २ ही जानो॥
५ सितम्बर और दिसम्बर, जून ४ मई १ धरो। इष्ट वर्ष चौथाई कर, वांछित तारीख सही धरो॥
इन चारों का जोड़ कर, सात दिवस का दीजै भाग। शेष अंक को शनि से गिनिये, सही दिवस पर लग जायलग॥

उदाहरण—मानाकि हमें ११ अगस्त १९७१ का वार देखना है तो अगस्त मास का नियमित अंक २ लिया। १९७१ व १९७१ का चौथाई ४९२ लिया। ११ अगस्त का ११ लिया। इन चारों का क्रमशः २+१९७१+४९२+११=२४७६ योग आया। योग में ७ का भाग दिया, तो शेष ५ रहा। इसको शनि से गिना तो बुधवार मिला। इससे जाना गया है कि ११ अगस्त १९७१ को बुधवार है।

D.P.B.

१	२	३	४	५	६
1	2	4	8	16	32
3	3	5	9	17	33
5	6	6	10	18	34
7	7	7	11	19	35
9	10	12	12	20	36
11	11	13	13	21	37
13	14	14	14	22	38
15	15	15	15	23	39
17	18	20	24	24	40
19	19	21	25	25	41
21	22	22	26	26	42
23	23	23	27	27	43
25	26	28	28	28	44
27	27	29	29	29	45
29	30	30	30	30	46
31	31	31	31	31	47
33	34	36	40	48	48
35	35	37	41	49	49
37	38	38	42	50	50
39	39	39	43	51	51
41	42	44	44	52	52
43	43	45	45	53	53
45	46	46	46	54	54
47	47	47	47	55	55
49	50	52	56	56	56
51	51	53	57	57	57
53	54	54	58	58	58
55	55	55	59	59	59
57	58	60	60	60	60
59	59	61	61	61	61
61	62	62	62	62	62
63	63	63	63	63	63

यात्रा में शुभाशुभ शकुन

यात्रा में शुभाशुभ शकुन यात्रा की सफलता और असफलता का द्योतन करते हैं। अशुभ शकुनों को बायां छोड़कर चलने से हानि की सम्भावना नहीं रहती एवं शुभ शकुनों को दायां छोड़कर चलने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

● **अशुभ चिह्न**—(१) वन्ध्या स्त्री, (२) सर्प, (३) जलावन की लकड़ी, (४) तेल, (५) तेल मालिशयुक्त व्यक्ति, (६) संन्यासी, (७) शत्रु, (८) बुभुक्षित, (९) लड़ती हुई बिल्लियां, (१०) विधवा, (११) युद्धरत भैंस, (१२) रुई, (१३) काला अन्न, (१४) क्रोधी, (१५) गर्भवती, (१६) रजस्वला, (१७) मुंडित केश, (१८) गीला वस्त्र, (१९) अन्धा-बहरा और (२०) दायें से गर्दभ आदि अशुभ है।

● **शुभ चिह्न**—(१) ब्राह्मण, (२) घोड़ा हाथी, (३) फल, (४) अन्न, (५) दूध-दही, (६) गाय, (७) सरसों, (८) कमल, (९) विमल वस्त्र, (१०) वेश्या, (११) मोर, (१२) वकुल, (१३) मछली, (१४) पुष्प, (१५) भरा घड़ा, (१६) छाता, (१७) रत्न, (१८) सफेद बैल, (१९) दर्पण, (२०) धोबी, (२१) पुत्रवती नारी आदि के दर्शन शुभ हैं।

यात्रा में शुभाशुभ शकुन जानने के लिए—सरल सुगम ज्योतिष, मूल्य १२/- रु०, डाक खर्च अलग।

काक (कौआ) स्पर्श-फल

● काक (कौआ) यदि मस्तक का स्पर्श करे तो मृत्यु समान कष्ट या मृत्यु, कलह तथा धन का एवं कमर या कंधा का स्पर्श करे तो अशुभ होता है।

● स्त्री के मस्तक का स्पर्श करे तो पति पुत्र का नाश।

● वृक्ष के नीचे दही आदि खाने के पदार्थ पर झपटते समय यदि स्पर्श हो जाय तो कोई दोष नहीं होता है। परन्तु यदि बिना किसी कारण के अचानक ही स्पर्श हो जाय तो दोष होता है। शान्ति करानी चाहिए।

● काक मैथुन देखने से छह महीना के अन्दर मृत्यु या मृत्यु के समान कष्ट तथा सभी मन के साचे कार्य नष्ट होते हैं। प्रमाण भी है 'षडमा साभ्यन्तरे मृत्युः काक मैथुन दर्शने' इसका दोष दूर करने के लिए उड़द व आटे की काक-प्रतिमा बनाकर मिट्टी के बर्तन में रखकर उड़द, चावल, घी तथा मीठा दें तथा आवश्यक शान्ति करायें।

दूसरे के दिल की बात बतलाना

आपकी आयु कितनी होगी, अमुक व्यक्ति की जेब में कितने रु० हैं, उनकी ठीक संख्या को दिल में सोचकर याद रख लें। अगर वह यह पूछना चाहता है कि इस समय उनकी आयु कितने वर्ष की है तो आयु का अंक सोच लें। इसके बाद उससे पूछो कि उसने जो अंक सोचा है वह इस टेबिल की कौन-कौन सी पंक्ति में है। जिस-जिस पंक्ति में हो उस की चोटी पर जो अंक दिया है उनको आपस में जोड़ लो। जो जोड आवे वही उस व्यक्ति की सोची हुई संख्या है।

उदाहरण—एक व्यक्ति दिल में सोच लेता है कि मेरी आयु ५१ वर्ष है तो वह आप को बतलाएगा कि मेरा अंक पंक्ति १, २, ५, ६ में है तो आप तुरन्त ऊपर चोटी वाले अंक १, २, १६, ३२ को जोड़कर ५१ बता दें।

विस्तार पूर्वक मालूम करने के लिये आयु निर्णय १२/-।

● वशीकरण मन्त्र ●

ओ३म् नमः सर्वलोक वॉशग कराय कुरु कुरु स्वाहा । पुननंवा की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उखाड़कर सात वार इस मन्त्र को पढ़ कर भुजा पर बांधे । सब लोग मेहरबान हो जाएंगे मन्त्र ओं कच्छ गौतम शीघ्रत्वं ग्रामेषु नगरेषु च आसन, वसत्र, तांम्बूलम् ततर कलवय । होली दिवाली या ग्रहण में जप करने से काम देता है । जब कहीं जा कर ठहरना हो, यात्रा में कष्ट में पढ़ने से काम देता है ।

● चोर पकड़ने का मंत्र ●

राम तू है ते छे किन विन बसी आछे, आछे सात रविवार को तेल घी चीनी से हवन करे एक बार में १०८ वार मन्त्र जप करे । तब सिद्ध होगा इसके बाद जो काम करना होगा सब सिद्ध होगा चोर पकड़ा हो तो चोर को शूल हो यदि चोर पकड़ना हो तो मन्त्र में खजूर के सात कांटे लेकर मन्त्र पढ़ कर केले के खम्बे में गाड़ देवें । त. चं र को शूल हो । यदि उखाड़ दें तो अच्छा हो जाए ।

● बुद्धि तेज करने का मंत्र ●

ओं नमोदेवी कामाक्षा, त्रिशूल, ख, हस्त, पाधा, पाती, गरुड़, सर्व लखी तु प्रीतये, समांगन, तत्व चिन्तामणि, नरसिंह, चल, चल, क्षीनकोटी कात्यानी ताल्व प्रसाव, के ह्रों ह्रीं ह्रूं, फू ं त्रिभवन चालिया, चालिया स्वाहा । स्नान करने के उपरांत ४१ तुलसी के पत्ते लेकर १०८ वार इस मंत्र को पढ़कर प्रति दिन खा लिया करें ।

● **हनुमान मन्त्र**—ओं हिं पवननन्दनाय स्वाहा, यह मूल मंत्र है । इस का तरीका यह है कि सूर्योदय होने से पहले उठकर नदी पर जाकर स्नान करके खड़े होकर इस मंत्र का आह्वान करे । ओं गंगेच यमुने चैव गोदावरी, सरस्वती, नरवदे, सिंधु, कावेरी, जले अस्मिन सनिधी कुरु । इस मंत्र को पढ़कर अंकुश, मुदरा से तीर्थ का जल में आवाहन कर आठ वार मूल मंत्र का जप कर बारह वार जल से सिर पर मार्जन करे । फिरे दूसरे कपड़े पहन कर गंगा के किनारे या पर्वत पर बैठकर अंगन्यास करे । ह्रां अंगुष्टाभ्यां नमः ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ह्र, शिखायैः वषट् ह्रीं कवचाय हुं, हुं, ह्रीं, नेत्रायवषट्, हुरा अस्तराय फट् । इसका छ हजार जप दैनिक करे, ऐसा छः दिन करने से सातवें दिन सूर्य उदय से सूर्य अस्त तक जप करे, ऐसा करने से रात्रि को बहुत भयानक स्वरूप महाबीर जी का प्रकट होगा । पहिले तो यह बहुत भयानक स्वरूप दिखलावेंगे । परन्तु भय नहीं खाना, होशियार रहना, फिर आपको महाबीर जी वर प्रधान करेंगे ।

● जिस के सन्तान न होती हो उनके लिए मन्त्र ●

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहो मे तन्यं कृष्ण त्वामहं शरणं गता ।

इस मन्त्र का एक लाख जाप करे तिल शहद आदि से हवन करे । कम से कम एक माला प्रतिदिन जप किया करें । पति पत्नी दोनों ब्रह्मचर्य का पालन करें सात्विक भोजन करें, झूठ से बचें, पृथ्वी पर सोएं, मनुष्य अपने केश (बाल) न कटवाए । एक लाख जप होने पर दसवां भाग जप का हवन करे, ब्राह्मणों को भोजन करवा दे ।

● रोग दूर करने का मंत्र ●

ओं सं, सां सिं सीं, सुं, सूं सें सैं सों सौं सं सः बं, बां बिं बीं बुं बूं बें बैं बों बौं बं बां सह अमृत वरचे स्वाहा । एक जल का गिलास लेकर इस मन्त्र को दस बार पढ़कर उस जल को थोड़ा सा पी लिया करें । रोगी का रोग तुरन्त दूर हो जाएगा ।

अज्ञातपता करना

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायैः विचे इस यन्त्र को सफेद कागज पर लिखकर भस्खे से बांधकर अन्त गुप्त पे । सात दिन करने से अज्ञात स्थान पर आजाएगा ।

ऐं	ह्री	कली
डा	मु	चा
यै	वि	चे

भाग हुए का नाम

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

१६	३	६	९
५	१०	१५	४
११	८	१	१४
२	१३	१२	७

गर्भ यंत्र

३४२	३४९	२	७
६	३	३४६	२४१
४४८	२४३	८	१
४	५	३४४	३४३

पुत्र रक्षा यंत्र

४२	४६	३	७
६३६	३	४६	४५
४८	४३	८	७
४	५	४४	४७

भूत निकल जावे

आं	ह्रीं	श्री	वलीं	क्लीं
नखाह	१०	४	६ ह	ह्रीं
वमा	०	७	११ २१	ह्रां
ब	८	९	३ क:ल	ह्र,
मा	म	न्मः	आं	ऐं

सिर पीडा का यंत्र

७	७।	५	८
३	२	४	७
३।	४	२	५
७।	०	५	०

बंदी छूटे

१७।

वा वु । ७७ १ । ढ ७ घ ७

घ ।। ५ २ । ७ ।।।।

मगी ७७७५७७

जुआ जीते

२८	३५	२	७
६	६	३२	३१
३४	२५	८	१
४	५	३०	३३

देहाती पुस्तक भण्डार

देहाती पुस्तक भण्डार

D.P.B.

जीवन में आवश्यक घटने वाले यंत्र-मंत्र तंत्र

D.P.B.

वशीकरण यन्त्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	नाम	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

कार्य सिद्धि यन्त्र

ॐ / ह्रीं / फल / गट / मद / धन

[illegible] यन्त्र

ॐ / नमः / ॐ ॐ ॐ / ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ / ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

[illegible] ताप का यंत्र

५	२
३	७

बारी ताप नाशक यन्त्र

४	५	६	६
२	७	७	१२
६	६	३	१५
८	११	२	६

नजर उतारने का यन्त्र

६२	४	५१	६१
०१	५	११	१
२८	८	६	०
२७	५	७	००

[illegible] यन्त्र

८ / ३ / २ / 22 / 20 / ३ / १२ / ६ / ३ / ५

[illegible] यंत्र

१४	७	४	३
६	३	६	५
	३	४	१४
०	१४	३	७

ताप नाशक यंत्र

कं	ठः	में	[illegible]
ही:	जूः	डा	दा
	मा	म	
है	पै	कः	[illegible]

बन्ध्या यन्त्र

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३६
१३	७	१४०	१
२०	१३४	६	१४६

वशीभूत यंत्र

११७	१२४	२	७
६	३	१२१	१२०
११३	११८	८	१
४	५	११६	१२२

[illegible] यंत्र

[illegible]

१० / ६ / १ / २ / ३ / ४ / ६ / ८ / ७

ताप निवारण यंत्र २

५५१	२१७	३६६
६५५	१३८१	४६३
७७२	१२७७	१५२१
८८१	६६६	१००१

[illegible] यंत्र

४०	४२	४	५
१	३	४८	४१
४६	४४	५	४
२	७	४७	४४

कान पीड़ा यन्त्र

म	ज	घ
क	ग	जः
च	[illegible]:	दः

ताप का यन्त्र १

७	२	८
८	६	४
३	८	५

आधाशीशी यन्त्र १

चौथिया ताप का यंत्र

सं ७	स: १	सां: ३
स: ६	२ स.	स: ५
सु: ८	स. ६	सू. ४

[illegible] यंत्र

मु ४	ह्रां १	ॐ [illegible]
ह ५	ह्री २	श्री [illegible]
स: ६	प्री ३	ह्रीं [illegible]

२ स्त्री वशीकरण यन्त्र

ॐ	वे	ऊे	ऽ.
टे	ऊँ	ह्री	ऽ०
बं	ड	नाम	ऽ।।

[illegible] नाशक यंत्र

६६	१६	८१
७६	५६	३६
१६	६६	४१

[illegible] यन्त्र

ह्री श्री ह्री / श्री ह्री श्री / मा: ॐ ह्र

[illegible] नाशक यंत्र

१४६ / देवदत्त / १३६

[illegible] यंत्र

२	६	४
७	५	३
६	१	८

३	५	[illegible]
८	१	६
४	६	२

[illegible] यन्त्र

३७१००३७१३७१००
३७७००७७००३७००
३७७०० देवदत्त ३०७०

[illegible] यंत्र

ह्रीं / ह्री / ह्री

[illegible] यात्रा यन्त्र

आधाशीशी यंत्र २

५३	४२
३११	७०

[illegible] यन्त्र

७	५
६	१

देवदत्त

ग्राम तुलसी का यन्त्र

५७८२०६०२

[illegible] यन्त्र

ठठठठठठठठठठठ

सात्विक विचार रखने वाले नर-नारी ही इन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का प्रयोग करें। विशेष जानकारी के लिये [illegible]
चिकित्सा पद्धति जिसमें इन यन्त्रों की पूरी व्याख्या की गई है। हमसे खरीदें। मूल्य 24-00 (बाकी राम [illegible]

शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

शकुनों की बलवान दिशाएं

(१) पूर्व दिशा —पूर्व दिशा में मुर्गा, हाथी, मोर, पक्षी और सिंहनाद के शकुन बलवान होते हैं।

(२) पश्चिम दिशा:—पश्चिम दिशा में गाय, खरहा, क्रौंच, लोमड़ी, हंस, बिल्ली सफेद तीतर तथा उत्सव, वाद्य-गीत एवं हास्य के शकुन बलवान होते हैं।

(३) उत्तर दिशा:—उत्तर दिशा में हरिण, घोड़ा, चूहा, कोयल, नीलकंठ, सेही, शातात्रपक्षी तथा वेदध्वनि, शंखध्वनि एवं घंटाध्वनि के शकुन बलवान होते हैं।

(४) दक्षिण दिशा:—दक्षिण दिशा में उल्लू, शृगाल, कौआ, तोता, चक्रवाक, पिंगला तथा कबूतर इन पशु-पक्षियों के रोने, बिल्लाने तथा क्रूर शब्द करने के शकुन बलवान होते हैं।

यात्रा के शुभ शकुन

यात्रा अथवा गृह-प्रवेश के समय यदि निम्नलिखित वस्तुएं सामने आयें तो उन्हें शुभ शकुन समझना चाहिए—

१ फल, २ दूध, ३ दही, ४ जलपूर्ण घट, ५ गाय, ६ ब्राह्मण, ७ कन्या ८ कमल, ९ सरसों, १० वस्त्र, ११ वेश्या, १२ नेवला, १३ बकरी, १४ मोर, १५ कोयल, १६ मछली, १७ ईख, १८ दर्पण, १९ रत्न, २० पगड़ी, २१ सफेद रंग का बैल २२ मिट्टी, २३ मद्य, २४ पुत्र को गोद में लिए हुए स्त्री, २५ चामर, २६ छत्र, २७ मधु, २८ घृत, २९ गोरोचन, ३० राजचिह्न, ३१ अंजन, ३२ मंगल-गीत, ३३ रुदन-रहित शव यात्रा, ३४ वेदध्वनि, ३५ मांस, ३६ वाद्य, ३७ मधुर वाणी, ३८ प्रज्वलित अग्नि और ३९ नीलकण्ठ पक्षी।

यद्यपि खाली घड़े को देखना अशकुन माना जाता है परन्तु यदि वह अपने से पीछे हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यात्रा के समय गदहे का शब्द सुनना भी अशकुन है, परन्तु यदि वह अपने से बाईं ओर हो तो शुभ समझना चाहिए।

यात्रा के समय कौआ, बिल्ली, कुत्ता तथा पिंगला पक्षी का दाईं ओर होना शुभ मानना चाहिए।

युद्ध, भय, भगदड़, नदियों के पार उतरने तथा नष्ट वस्तु को खोजते समय शुभ शकुन अशुभ फलदायक तथा अशुभ शकुन शुभ फलदायक माने जाते हैं।

कुत्ते का शकुन



यात्रा के समय यदि कुत्ता मनुष्य, घोड़ा, हाथी, घड़ा, दुघारा, वृक्षा, ईंटों का ढेर, छत्र, सेज, आसन, उलूखल, ध्वज, चामर, अन्न का खेत और फुलवारी वाले स्थान पर मूत्रत्याग करे अथवा आगे जाय तो कार्य की सिद्धि होती है।

यदि कुत्ता गीले गोबर पर मूत्र त्याग करके चला जाय तो यात्री को मीठा भोजन प्राप्त होता है। यदि सूखी वस्तु पर मूत्र त्याग कर चला जाय तो लड्डू अथवा गुड़ खाने को मिलता है।

यदि कुत्ता कांटेदार वृक्ष, पत्थर काष्ठ तथा श्मशान पर मूत्रत्याग कर लौटकर यात्री के आगे चले तो यात्री का अनिष्ट होता है।

यदि कुत्ता वस्त्र लेकर आये तो शुभ समझना चाहिए।

यदि यात्रा के समय कुत्ता यात्री के पांव चाटे, कान फटफटाये अथवा उसपर दौड़े तो यात्रा करने वाले को विघ्नों का सामना करना पड़ता है।

यात्रा के समय यदि कुत्ता अपने शरीर को खुजलाता हुआ दिखाई दे तो यात्री को समझ लेना चाहिए कि कुत्ता यात्रा का विरोध कर रहा है। ऐसी स्थिति में यात्रा करना हानिकारक सिद्ध होता है।

यदि यात्रा के समय कुत्ता ऊपर की ओर पांव करके सोता हुआ दिखाई दे तो यात्रा नहीं करनी चाहिए। ऐसी यात्रा दोषपूर्ण होती है।

यदि किसी गांव के बीच में सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुंह करके एक अथवा अधिक कुत्ते इकट्ठे होकर रोयें तो उस गांव के प्रधान व्यक्ति पर संकट आता है। या तो वह अपदस्थ हो जाता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है।

यदि यात्रा करते समय कुत्ते परस्पर लड़ते हुए दिखाई दें तो यात्राकारी की यात्रा में विघ्न उपस्थित होता है। यदि कुत्ता या कुत्ते रोते हुए दिखाई दें तो अनिष्ट होता है। ऐसी स्थिति में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

सियार का शकुन



यदि सियार दिन के पहले प्रहर में ईशान कोण, पूर्व दिशा अथवा अग्नि कोण में बोले तो उसका शब्द सुनने वाले को भय, त्रास, नाश अथवा बधन की प्राप्ति होती है।

यदि सियार दिन के दूसरे प्रहर में पूर्व दिशा अग्नि कोण अथवा दक्षिण दिशा में बोले तो भय, बधन और शरीर का नाश होता है।

यदि सियार दिन के तीसरे प्रहर में अग्नि कोण, दक्षिण दिशा अथवा नैऋत्य कोण में बोले तो भय, नाश अथवा बन्धन होता है।

यदि सियार दिन के चौथे प्रहर में दक्षिण दिशा, पश्चिम दिशा अथवा नैऋत्य कोण में बोले तो भय, बन्धन अथवा शरीर का नाश होता है।

यदि सियार रात्रि के पहले प्रहर में नैऋत्य कोण, पश्चिम दिशा अथवा वायव्य कोण में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के दूसरे प्रहर में पश्चिम दिशा, वायव्य कोण अथवा उत्तर दिशा में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के तीसरे प्रहर में वायव्य कोण, उत्तर दिशा अथवा ईशान कोण में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

यदि सियार रात्रि के चौथे प्रहर में उत्तर दिशा, ईशान कोण अथवा पूर्व दिशा में बोले तो भी उपर्युक्त फल होता है।

पूर्व दिशा में शृगाली के प्रथम शब्द से धनलाभ, दूसरे शब्द से धन दर्शन, तीसरे शब्द से कन्या की प्राप्ति, चौथे शब्द से बन्धु-आगमन तथा पांचवें शब्द से अर्थ सिद्धि होती है।

चील का शकुन



यदि चीलें किसी मकान पर बैठना आरंभ कर दें अथवा रहने लगें तो वह मकान बहुत जल्दी सूना हो जाता है।

यदि चील किसी व्यक्ति के मस्तक का स्पर्श करती हुई चली जाय तो उसकी शीघ्र मृत्यु होती है।

चील के दस प्रकार के शब्द कहे गये हैं, जिनके फल इस प्रकार हैं—

(१) यदि चील 'चिलि-चिलि' का शब्द करे तो लाभदायक समझना चाहिए। (२) यदि 'शूलि-शूलि' का शब्द करे तो यह भी लाभदायक होता है। (३) यदि 'कूचि-कूचि' का शब्द करे तो 'चील को प्यास लगी है' यह समझकर उसके पीने के लिए पानी रख देना चाहिए। (४) यदि 'चिकु चिकु' शब्द करे तो वह किसी के आगमन का सूचक होता है। (५) यदि 'कीतु-कीतु' शब्द करे तो कामनापूर्ति होती है। (६) यदि 'चिचो-चिचो' शब्द करे तो भय प्राप्त होता है। (७) यदि 'चिलिकु चिलिकु' शब्द करे तो धनलाभ होता है। (८) यदि 'चिरि-चिरि' शब्द करे तो कष्ट और भय प्राप्त होता है। (९) यदि 'चिकु चिकु' शब्द करे तो दरिद्रता आती है और (१०) यदि 'चीची-चीची' का अखंड शब्द करे तो कामनाएं पूर्ण होती हैं।

पिंगला पक्षी का शकुन



पिंगला पक्षी वर्ग के अन्तर्गत (१) घुग्घू, (२) चंडी, (३) पिंगलीका, (४) काली चिड़िया, (५) चीवरी, (६) रात्रिचरी, (७) उल्लू, (८) पेचक तथा (९) भैरवी की गणना की जाती है।

यात्रा के समय यदि पिंगला सामने हो तो उसे निरन्तर सुखदायक समझना चाहिए।

यदि पिंगला अन्य पक्षियों में बैठी हो तो वह किसी का संग कराती है।

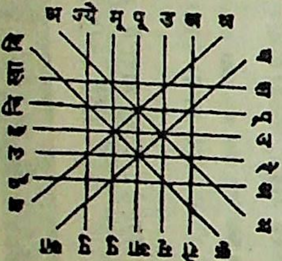
यदि पिंगला रति करती हुई दिखाई दे तो सहवास की प्राप्ति होती है।

यदि पिंगला पूंछ को हिलाती हुई दिखाई दे तो प्रेम की वृद्धि होती है।

भूमि का शुभ शुभ ज्ञान

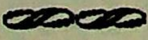
किसी जगह पर मकान बनवाना हो तो उस जगह का शुभाशुभ जानने के लिए नींव को इतना गहरा खोदें कि पानी दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी तक या साढ़े तीन हाथ या मनुष्य की लम्बाई के बराबर गहरा खोदे। खोदते समय जमीन में से पत्थर निकलें तो धन-आयु की वृद्धि हो। गुठली निकले तो धन का नाश हो और हाड़, राख या बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा होगी—ऐसा समझना चाहिए। बाकी कर्त्ता धर्ता भगवान हैं, उसकी लीला वही जाने।

विवाहे पंचशलाकाचक्रम् ।



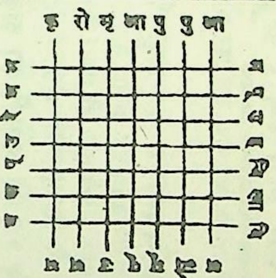
वेधोऽन्योन्यमसौ विरिञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधर्क्षयोर्विश्वेन्द्रोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतो हस्तोत्तराभाद्रयोः । स्वातीवारुणयोर्भवेन्निॠतिभादित्योस्यथोफाल्ययोः खेटे तत्र गते तुरीयचरणाद्योर्वा तृतीयद्वयोः ॥

रोहिणी, अभिजित् ॥ भरणी, अनुराधा ॥ उत्तराषाढा, मृगशिर ॥ श्रवण, मघा ॥ हस्त, उत्तराभाद्रपद ॥ स्वाती, शतभिषा ॥ मूल, पुनर्वसु ॥ उत्तराफाल्गुनी, रेवती ॥ इन नक्षत्रोंका आपस में वेध है, और चौथे चरणका प्रथम चरणके और द्वितीय चरणका तृतीय चरणके साथ वेध हैं॥



❋ अवकहडाचक्रसहितवरवधूमेलापकोपयोगिशतपदचक्रम् ❋

अन्यत्र सप्तशलाकाचक्रम्



शाक्रं ज्येशततारानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसुवीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे मिथः । हस्तोपांतिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्ट्रभाजांघ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धे कुमूद्रं चिके ॥

ज्येष्ठा, पुष्य ॥ शततारका, स्वाती । पूर्वाषाढा, आर्द्रा ॥ रेवती, उत्तराफाल्गुनी ॥ धनिष्ठा, विशाखा ॥ उत्तराषाढा, मृगशिरा ॥ अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी ॥ श्लेषा, अनुराधा ॥ हस्त- उत्तराभाद्रपदा ॥ रोहिणी, अभिजित् ॥ मूल, पुनर्वसू ॥ चित्रा, पूर्वाभाद्रपदा ॥ भरणी, मघा ॥ कृत्तिका, श्रवण ॥ इन नक्षत्रों का आपसमें सप्त शलाकावेध होता है॥

शुभाशुभ फल देने वाले शकुनों को जानिये !

कौए का शकुन



यात्रा करते समय यदि कौआ बाईं ओर तथा कौवी दाईं ओर दिखाई दें तो यात्रा शुभ होती है।

यदि कौआ पके हुए धान अथवा नवीन घास से परिपूर्ण खेत, मकान, अटारी, हरे रंग के स्थान, धान्य के ऊंचे ढेर अथवा किसी अन्य मंगल-वस्तु पर बैठ कर कांव-कांव करे तो धन की प्राप्ति होती है।

यदि कौआ मकान की मुंडेर पर बैठकर कांव-कांव करे तो घर में किसी अतिथि का आगमन होता है अथवा धन की प्राप्ति होती है।

यदि कौआ गाय की पूंछ अथवा बमई पर बैठकर बोले तो सर्प का दर्शन होता है। यदि भैंस के ऊपर बैठकर बोले तो ज्वर होता है। यदि घोड़े पर बैठकर बोले तो वाहन की प्राप्ति होती है, यदि पीछे जाकर शब्द करे तो खून बहता है।

यदि वैशाखमास में कौआ किसी निरुपद्रवी वृक्ष पर घोंसला बनाये तो सुभिक्ष एवं मंगल कारक होता है। यदि वह कांटेदार अथवा निन्दित वृक्ष पर घोंसला बनावे तो दुर्भिक्ष की आशा रहती है।

यदि शरद ऋतु में कौआ वृक्ष की पूर्व दिशा वाली शाखा पर घोंसला बनाये तो पहले पश्चिम दिशा में वर्षा होती है। यदि दक्षिण अथवा उत्तर दिशा वाली डाली पर घोंसला बनाये तो घोर वर्षा होती है। यदि अग्नि कोण में बनाये तो मंडल वृष्टि होती हैं। यदि नैऋत्य कोण में बनाये तो शरद ऋतु की खेती अच्छी होती है। ईशान कोण में घोंसला बनाये तो सुभिक्ष होता है। वायव्य कोण में बनाये तो चूहे अधिक होते हैं।

यदि किसी स्थान पर कौए अकारण ही इकठे होकर महान् कांव-कांव शब्द करें तो दुर्भिक्ष पड़ता है। यदि चक्र बांध कर घूमें तो प्रकृति का प्रकोप होता है यदि चारों कोणों में स्थित हों तो उपद्रव होते हैं। यदि कौए निर्भय होकर मनुष्यों को चोंच मारें तो शत्रुओं की वृद्धि होती है। यदि कौए रात्रि के समय विचरण करें तो मनुष्यों का नाश होता है। यदि सुन्दर फल-फूल वाले वृक्षों पर बोलें तो आनन्द होता है।

मधुमक्खी का शकुन

जिस मकान में मधुमक्खियां अपना छत्ता लगायें, वह मकान बहुत जल्दी सूना हो जाता है अर्थात् उस मकान में रहने वाले विपत्तियों में घिर कर, उस घर को छोड़कर चले जाते हैं।

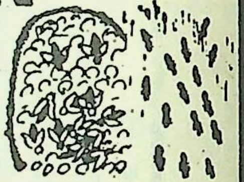
चिमगादड़ का शकुन

जिस मकान में चिमगादड़ बसेरा लेना आरंभ कर दें, वह मकान भी बहुत जल्दी सूना हो जाता है। उस मकान के निवासी दरिद्रता के शिकार बनते हैं।

नीले रंग की मक्खी का शकुन

यदि नीले रंग की मक्खी सिर के ऊपर बैठे तो शीघ्र मृत्यु होती है।

चींटियों का शकुन



यदि चीटियां अपने अंडे पानी में डालें तो वर्षा रुक जाती है यदि वे अपने अंडों को नीचे से वृक्ष के ऊपर ले जायं तो शीघ्र वर्षा होती है।

स्वर का शकुन

नासिका के दो छिद्र हैं। उनमें से किसी समय दायें ओर किसी समय बायें छिद्र से श्वास का आवागमन होता है। जिस समय नासा-छिद्र से श्वास वायु का आवागमन हो रहा होता है उस समय उसी ओर के छिद्र को स्वर का चलना कहते हैं।

यदि दाईं ओर का छिद्र चल रहा हो अर्थात् दाईं ओर के नासा-छिद्र से वायु का आवागमन हो रहा हो तो उस समय यात्रा करना शुभ होता है। यदि बायां स्वर चल रहा हो तो शुभ नहीं होता। यदि बायें स्वर के चलते समय यात्रा करना आवश्यक ही हो तो पहले अपना बायां पांव उठाकर आगे बढ़ाना चाहिएं। इसी प्रकार दायें स्वर के चलते समय यदि पहले दायें पांव को आगे बढ़ाकर चला जाय तो यात्रा शुभ होती है।

पिछले व आने वाले 40 वर्षों के सूर्य व चन्द्र ग्रहण का विवरण

संवत्	ग्रहण	तारीख	स्पर्श	मध्य	मोक्ष
2028	खग्रास चन्द्रग्रहण	6- 8-71	11-27	1-11	2-57
2028	ग्रस्तोदय खग्रास च.ग्र.	30- 1-72	0-42	5-25	6-7
2030	ग्रस्तास्त खण्ड च.ग्र.	10-12-73	6-32	7-14	7-55
2031	चन्द्रग्रहण	4- 6-74	2-2	3-41	5-18
2031	खग्रास चन्द्रग्रहण	29-11-74	6-55	8-43	10-26
2032	चन्द्रग्रहण	18-11-75	2-16	4-0	5-44
2033	चन्द्रग्रहण	13- 5-76	12-48	1-31	1-12
2033	सूर्यग्रहण	29- 4-76	4-29	5-42	6-52
2034	चन्द्रग्रहण	24- 3-78	8-0	9-49	11-38
2035	चन्द्रग्रहण	16- 9-78	10-52	12-38	2-22
2035	चन्द्रग्रहण	13- 3-79	12-55	2-38	4-19
2036	सूर्यग्रहण	16- 2-80	2-29	3-43	4-46
2038	सूर्यग्रहण	31- 7-81	6-50	7-47	8-25
2038	चन्द्रग्रहण	8- 1-82	11-45	1-28	3-12
2039	सूर्यग्रहण	15-12-82	3-0	4-13	5-10
2039	चन्द्रग्रहण	30-12-82	3-20	4-49	6-38
2042	चन्द्रग्रहण	4- 5-85	12-17	1-59	3-39
2042	चन्द्रग्रहण	28-10-85	9-38	11-25	1-15
2043	चन्द्रग्रहण	24- 4-86	4-55	6-37	8-15
3043	चन्द्रग्रहण	17-10-86	11-0	12-50	2-30
2044	ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण	23- 9-87	5-50	6-41	7-37
2044	ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण	18- 3-88	4-43	6-28	7-9
2045	सूर्यग्रहण	11- 9-88	7-24	8-24	8-55
2045	सूर्यग्रहण	6- 2-89	7-12	2-6	10-58
2046	चन्द्रग्रहण	9- 2-90	11-0	12-45	2-29

संवत्	ग्रहण	तारीख	स्पर्श	मध्य	मोक्ष
2047	ग्रस्तोदित चन्द्रग्रहण	6- 8- 90	6-12	7-42	9-10
2048	चन्द्रग्रहण	21-12- 91	3-23	4-3	4-42
2049	चन्द्रग्रहण	9-12- 92	3-24	5-11	6-55
2050	ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण	4- 6- 93	4-42	6-33	8-22
2052	ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण	15- 4- 95	5-6	6-25	1-19
2052	सूर्यग्रहण	24-10- 95	7-22	8-30	9-47
2053	खग्रास चन्द्रग्रहण	3- 4- 96	3-5	5-14	7-3
2053	ग्रस्तोदय सूर्यग्रहण	9- 3- 97	5-10	5-51	6-41
2054	खग्रास चन्द्रग्रहण	16- 9- 97	10-40	12-20	2-0
2057	खग्रास चन्द्रग्रहण	16- 7-2000	5-29	7-26	0-24
2057	खग्रास चन्द्रग्रहण	9- 1-2001	12-5	1-44	3-23
2058	ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण	5- 7-2001	7-5	8-24	9-43
2060	सूर्यग्रहण	31- 5-2003	7-32	8-25	8-31
2060	चन्द्रग्रहण	9-11-2003	5-0	6-47	8-25
2061	चन्द्रग्रहण	4- 5-2004	12-15	1-57	2-39
2061	ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण	27-10-2004	6-45	8-36	10-25
2062	सूर्यग्रहण	3-10-2005	4-13	5-3	5-15
2062	चन्द्रग्रहण	17-10-2005	4-27	3-50	5-11
2062	सूर्यग्रहण	29- 3-2006	4-27	-23	6-0
2063	चन्द्रग्रहण	7- 9-2006	120	12-50	1-39
2063	खग्रास चन्द्रग्रहण	3- 3-2007	2-58	4-50	6-40
2063	सूर्यग्रहण	19- 3-2007	6-9	6-58	7-48
2064	चन्द्रग्रहण	20- 2-2008	7-14	8-58	14-47
2065	सूर्यग्रहण	1- 8-2008	2-34	3-21	4-24
2065	चन्द्रग्रहण	16- 8-2008	1- 1	2-53	4-25

तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ध्रुवा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	पूर्णिमा	अमावस्या					
ध्रुवा	२१	१५	१२	२	१[illegible]	१४	० ०	१५	३०					
राशि	मेष	वष	मिथुन	कक	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन		
ध्रुवा	३	५	२२	२५	१९	१३	२०	१३	१७	१९	२३	२४		
नक्षत्र	अश्वि	भरणी	कृति	रोह	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य०	श्ले	मघा	पू० फा०	उ०फा	हस्त	चित्रा
ध्रुवा	१९	५	३२	१४	४	१३	२८	२८	३६	१५	३	३१	१८	२५
नक्षत्र	स्वा	विशाखा	अनुराधा	ज्ये	मूल	पू षा	उ०षा०	श्रवण	धनि०	शत	पू० भा०	उ० भा	रेवती	-
ध्रुवा	१४	२४	२९	३७	१८	७३	३०	२५	२३	२४	९	४१	२८	
योग	विष्क	प्रीति	आयुष्मा.	सौभाग्य	शोभन	आर्तगण्ड	सुकर्मा	धृति	शूल	गण्ड	वृद्धि	ध्रुव	व्यघात	हर्षल
ध्रुवा	१३	१२	४७	५९	३६	४७	१८	४४	१३	२५	१७	२२	१५	२५
योग	वज्र	सिद्धि	व्यतीपा.	वरीयान	परिघ	शिव	सिद्धि	साध्य	शुभ	शुक्ल	ब्रह्म	ऐन्द्र	वैकु०	
ध्रुवा	१४	२२	१३	३९	१५	१५	२६	१९	१२	२५	२२	१३	२७	
करण	बब	बाल	कौं.	तैति	गर	वणी	विस्टी	शकुनि	चतुष्य	नाग	किस्तुघ्न			
ध्रुवा	५	१७	२०	२५	४१	२९	३५	४०	३७	१५	३०			
मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन		
ध्रुवा	६१	६३	६५	६७	६९	७१	७३	५०	५३	५५	५७	५९		
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन		
ध्रुवा	३७	८४	६६	१०९	१२५	१०२	१४०	१४४	१४५	१९८	१९०	१००		
वस्तु	वस्त्र	स्वर्ण	हल्दी	चांदी	चन्दन	मिर्च	जस्त	पित्तल	कस्तूरी	रुई	कपास	गुड़	शक्कर	खांड
ध्रुवा	१०९	६६	७३	८१	१८७	६०८	५०७	९८	१३४	४४	१२०	४७	१०१	९९
वस्तु	धान्य	कनक	चावल	ज्वार	चना	मूंग	सन	घी	तेल	वेजिटे०	पत्थर	लकड़ी	कायला	नमक
वा	७७	१०५	१००	१३३	३५	४१	९०	९५	९९	३९	१०९	३८	४९	९७
राशि नाम	मेष जो गेहूं	वृष वस्त्रचाव	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन		
वस्तु	घी सरसों चावल मिर्च बाजरा ज्वार शेयर सुपारी	हीरी तिल धातु नमक चीनी रुई	ज्वार मक्का नमक सोनां बिनौला मूंगफली जूट	केला जायफल तम्बाकू गुड़ गेहूं चावल घी चांदी	खाण्ड अलसी सर्वप्रकार के रस अन्न सोना लालवस्तु	सफेद गेहूं मूंग चदन कपूर अरहर मटर सन कपास	अरण्डी सुपारी मिर्च हींग जो मसूर नारियल रुई	नागरपान लोहा गुगल भेड़बकरी काली वस्तु कालेतिल	घोड़ी हाथी सफेद वस्त्र कन्दमूल आलू समु पदार्थ	मजीट दाख इलायची कोयला जस्ता ताम्बा कांसी	तेल तिल पोस्त मोती कुल पसरटा बिजली सामान	समुद्र की वस्तु सीप हीरा गोरोचन चीनी घी तेल		

सारिणी प्रयोग

तिथि, वार, वस्तु, राशि अंक, नक्षत्र, योग, करण, संक्रांति, वस्तु के ध्रुवा का योग करें, एक कम कर के सात से गुणा करे ३ का भाग दे, २ शेष हो तो मन्दा, ३ शेष रहे तो तेज तथा एक शेष रहे यो साव सम जाने।

चन्द्र--वस्तु की राशि से चन्द्रमा ४, ८, १२ हो तो तेज, १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११ में हो तोमंदी क्रूर गृह की दृष्टि न हो, चन्द्र २,६,७ १०, ११ हो तो मन्दी कारक है।

गुरु-३,६,८,१२ में तेज २,५,७,९,१०,११ में मंदा

शुक्र-१,२,४,५,८,९,१० ११, १२ में मदा ६, ७ में जाकर लौटे तो तेज, शेष में तेज।

बुध-१, ३, ४, ६,७ ९, १२ में तेज २, ५, ८, १० ११ में मन्दा।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

• नक्षत्र कष्टावली •

क्र०	नक्षत्र	कष्टलक्षण	चरणानुसार कष्ट	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलि द्रव्य	होम द्रव्य	हाथमेघरणार्थऔषध	देवता	जप संख्या	जपनीय मन्त्र
१	अश्विनी	वातज्वर निद्राभगशरीर पीड़ाबुद्धिभ्रम	१-६दि.२-११दि.३-१० दि. ४-२० दिन	चन्दन कमल घी गुग्गलखीर लड्डु गुड़प्रमाद	घी का घड़ा एवं स्वर्ण	तिल गुड़ोदन	खांड जौ घी	पुठकन्डा अपामार्ग की जड	अश्विनी कुमारी	५,०००	ओं अश्विनी तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वति वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेनेद्राय दधुरिन्द्रियम ।। ओं अश्विनी कुमाराभ्यां नमः ।
२	भरणी	तेज ज्वर कंपकंपी आलस	१ मृत्युसम २ ८०दि.३-४०, व ४-११दिन	अगर रवीर फूल घी गुड़ बन	गाय भैंस काघी खांड छाया दान	खिचड़ी	घी शहद तिल चावल	अगस्त की जड़	यम	१०,०००	ओ यमायत्वा महायत्वा सूर्यस्यत्वातपसे देवस्यत्वा सविता मध्वानवतु ।। पृथिव्यासँ संस्पर्शस्पाहि अर्चिरसिशोच्रिर सितपोसि ।।२।। ओं यमाय नमः
३	कृतिका	नींद न आना जलन आंख व गोड़ों में दर्द	१-६,२-११, ३-१६,४-२८ दिन	चंदन घी घी-खीर गुग्गलजू घी तिलउड़द	स्वर्ण एवं गोदान	दूध घी लड्डू	घी तिल जौ	कपास की जड़	अग्नि	१०,०००	ओं अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पति पृथिव्या अयम अपाॐ रेताॐ सिजन्वति।।६।।ओं अग्नये नमः ।।
४	रोहिणी	सिर व कूख में दर्द ज्वर रौनी	१-७,२-६, ३-१८, ४-३० दिन	चन्दन कमल घी दीप दशांग धूप पायसघृत	पतान्न का गोदान कन्या भोज	घी शहद सांठी की खीर	तिल जौ घी	पुठकन्डा की जड़	ब्रह्मा	५,०००	ओं ब्रह्म जज्ञानं प्रथम पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य निष्ठा सतश्च योनिमसतश्च विवः ।।४।।
५	मृगशीर्ष	पागलपन आधे शरीर में दर्द	१-६,२-५,३-७, ४-१० दिन	उपरोक्त४वस्तु दूध पुड़ा भात व शहद	दहीचावल गाय बच्छे सहित	खांड दही सांठी के चावल	दूध दही	जयन्ति की जड़	चन्द्र	१०,०००	ओं इमं देवा असपत्नॐसुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठया महते जान राज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय इमम मुष्य पुत्रमुष्ये पुत्रमस्यै विश एषवोऽमी राजा मोऽस्माकं ब्राह्मणानाॐ राजा ।।५।।ओंचंद्रमसेनमः
६	आर्द्रा	पागलपन सारे शरीर में दर्द नींद न आना	१-मृत्युसम कष्ट २-१८दिन ३-४ मृत्युसम	चन्दन सौरभ फूलदशांगधूप घी का दीपक	काला कपड़ा एवं काला बैल	दहीचावल शहद घी	घी शहद	बड़ की जड़ तथा चन्दन	शिव	१०,०००	ओं नमस्यं रुद्रमत्वय उतो त इषवे नमः ।। बाहुभ्याम् उतते नमः ।।६।। ओं रुद्राय नमः ।।
७	पुनर्वसु	ज्वर सिर व कमर में दर्द	१-७,२-१४, ३-२,४-२१ दिन	हल्दीकुं गु.घी कादीपकअष्ट गंधधूप घीदीप	वस्त्र कमल व स्वर्ण कन्याभोज	घी पीले चावल	घी चावल	आक की जड़	अदिति	१०,०००	ओं अदिति द्योरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पन्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ।। ओं आदित्यै नमः ।।
८	पुष्य	ज्वर कष्टशूल	१-७,२-७, ३-१०, ४-२१ दिन	कुं गु. कमलघी दूधगुग्गलखांड का प्रसाद	गौ पीला वस्त्र स्वर्ण	लड्डू	घी दूध	तुषार की जड़	गुरु	१०,०००	ओं बृहस्पत अतियदर्यो अर्हाद्यु माद्वभाति क्रतु मज्जनेषु यदीदयच्छ्र वस ऋत प्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।। ओं बृहस्पये नमः ।।
९	अश्लेषा	पैर व सारे शरीर में पीड़ा मृत्युसम कष्ट	१. मृत्युसम ३-४, २-४ मृत्युसम	कुं गु. अगर का फूलघीगर गलघीदूधप्र०	बछड़े वाली काली गाय	दही चावल	खांड घी	पटोल की जड़	सर्प	१०,०००	ओं नमोस्तु सर्पेभ्यो य के च पृथ्वी ममुः ये दिवितेभ्य सर्पेभ्यो नमः ।।६।। ओं सर्पेभ्यो नमः
१०	मघा	सिर व माथे [illegible]	१-१५,२-७, [illegible]	चन्दन चम्पक [illegible]	वस्त्र तिल	तिल घी	तिल घी	भृंगराज [illegible]	पितृ	१०,०००	ओं पितृभ्य स्वधयिभ्य स्वाधनमः ।। पिता [illegible]
११	फा[illegible]	[illegible]	[illegible]	चन्दन मालती का फूल घी,	[illegible]	जौ उड़द अन्न	धीचा[illegible]	कंगन	कपड़ा		

		में दर्द	१२-१५४-३०	बिल्वधूप पूड़ा भात लड्डू	स्वर्ण व गोदान	वलदूध	गौतिल	की जड़	भग	१०,०००	...भगप्रणीत भगसत्यराधो भगमांधियमुदवादन्न।।भगप्र तननायगोभिरश्च भंगप्रणेनभिनर्वंतुस्यामम्रोंभगायनम
१२	उ. फा	कुक्षमेंशूलसिर दर्द बुखार	७,१४,७,३०	कपूर केसर अर्कफूल गुगल धूप घी दूध प्रसाद	अन्न वस्त्र चांद ब्रह्म भोजन गोदान	घी खा अन्न	गौतिल	पटोल की जड़	अर्यमा	१०,०००	ओंदेव्यावध्वर्यु आगत, रथेनसूयत्वचा मध्वाज्ञं समन्जाथेप्रत्यथर्यिवेनश्चित्वंदेवान् ओंअर्यमणेनम:
१३	हस्त	उफारापेट दर्द ठंडा पसीना	१५,१७,१५ मृत्युसम	लाल चन्दन केसर कमल गुगल घी दूध का प्रसाद	स्वर्ण व गोदान ब्राह्मण भोजन	मीठा अन्न	दहीघी	जाति की जड़	सविता	५,०००	ओंविभ्राड्बृहत्पिवतुसोम्यमध्वायुर्दधद्यज्ञपभावविहुरुत मृवातजूतोयोअभिरक्षतत्मनाप्रजापुपोषपँआविराजति
१४	चित्रा	अनेक विचित्र कष्टप्रतिकष्ट	११,६.६,१६	केसर अगर बिचित्रवर्णपुष्प गुगल घीविचित्र अन्न लड्डू	तिलगुड़बैल छाया दानब्राह्मणभोजन	अन्न घी	तलघी चावल	मरबा की जड़	विश्व-कर्मा	१०,०००	ॐत्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्निपुष्टिवर्द्धनम्द्विपदाछंद इन्द्रीयमुक्षागौन्नवयोदधु ।। ॐविश्वकर्मणेनम: ।।
१५	स्वाति	अनेक प्रकार के कष्ट	६०,१७,३० मृत्युसम	चन्दन कमल का फूल अगर गुगल घी घी-दूध का प्रसाद	स्वर्ण लाल गाय मिठाई ब्र० भोज	घी दूध	तिल जौ घी	जाति की जड़	वायु	१०,०००	वायायेतेसहस्त्रिणोरथासस्तत्रिरागहिनियुत्वा म साम पीतये ।। ओं वायये नम: ।।
१६	विशा-खा	कूख दर्द सारे शरीर में दर्द	१५मृत्यु सम ४,१३	चन्दनकेसर कमल फूल देव दार घीधूप घीदूधका प्रसाद	लालवपीलाकपड़ा कालाबैल ब्र.भोज	सहवि-चित्रान	घी दूध	गुंजा की जड़	इन्द्राग्नि	१०,०००	ॐइन्द्राग्नीआगतँ सुतंगीभिर्नमो वरेस्तवं ।। अस्य पातं वियोविता । ॐ इन्द्राग्नीभ्यां नम: ।।
१७	अनुरा धा	तेजबुखा रसिर में दर्द	६०,१२,३६ ३०	केसर कमल फूलचन्दन घी दूध का प्रसाद	स्वर्ण गोछायादान ब्रह्म भोज	घी गुड़ मोठ	जौ घी	फूलकी जड़	मित्र	१०,०००	ॐनममित्रस्यवरुणस्यचक्षु सेमहोदेवायतदृतँ सपर्यतेदू रदृशेदेवजाताकेतवेदिवसपुत्रायसूर्यायशँसत् ।। ॐ
१८	ज्येष्ठा	व्याकुलताग-र्मी से रोग	५६,६ ६,४,	सफेद चन्दन चम्पा का फूल कपूर घी मनोहर भोजन	स्वर्ण तिल नीला वस्त्र ब्रह्मभोज	दद्योन्न व फूल	तिलघी चावल	अपामा की जड़	इन्द्र	५,०००	ॐत्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँ हवेसुहवँ शूरमिन्द्रम् ह्व यामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रँ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्र: ।ॐ
१९	मूल	पेट व मुंह में रोग सन्निपात	मृत्युसम ६, १५, ६,	काला अगर नीलोत्पल पुष्प घी मीठे का भोजन	स्वर्ण कपड़ा कपला गाय छाया	सहवि-मोठ	घी कंद मूल	मंदार की जड़	राक्षस	५,०००	ॐमातवपुत्रंपृथिवीपुरीष्यमाग्नँ स्वधानावमारुता.तां विश्वेदेव:ऋतुभिसंवाम:प्रजापतिविश्वकर्माविमुन्चतु
२०	पू. षा.	सिरदर्द कष्ट कंपकंपी	मृत्युमम ५,१४, १०,	सफेद चन्दन कमलपुष्प घी गुगल घी दूध भोजन	स्वर्ण कपड़ा तिल चावल घड़ा गौ	घी दूध मिठाई	तिल घ चावल	कपास की जड़	जल	५,०००	ॐअपाघमप किल्विषं मपकृत्यामनोरप: । अपाम-मार्गत्वमप्मदप दुष्वप्न्यँ सुव ।। ॐप्रदम्यीनम। ।।
२१	उ. षा.	पेट कमर में दर्द प्रलाप	३०, २४-२६ १६	सफेद चन्दन कमलपुष्प घी गुगल घी दूध भोजन	स्वर्ण अन्न ब्रह्म भोजन	सहवि दूध घी	तिल घी जौ	,,	विश्वे-देवा	१०,०००	ॐविश्वेदेवाशृणुतम् हममेयेअन्तरिक्षेथे उपद्यविष्ठय अग्निजिह्वाउतवोयजत्राआसद्यास्मिनर्बर्हिषिमादयध
२२	श्रवण	अतिसारसन्नि पात का भय	६०,२४,६,६	सफेद चन्दन मालती कापुष्प कपूर गुगल घी दूध भोजन	स्वर्ण गौ छाता वस्त्र ब्रह्म. भोजन	सहवि दूध	तिल घी जौ	अपामा की जड़	विष्णु	१०,०००	ॐ विष्णोरराटमसिविष्णो: श्नप्त्रेस्थोविष्णो स्युर सिविष्णो.सिवँष्णवमसिविष्णवेत्वा । ॐविष्णवेनम:
२३	धनि	मुत्रकृच्छ्ज्वर कंपकंपी	१५, २, २०, २१	सफेद चन्दन कमल पुष्प गुगल घी दूध भोजन	छतरी घोड़ास्वर्ण ब्राह्मण भोजन	दूध लड्डू	तिल घी दूध	भृंगरा जकी ज	वसु	१०,०००	ॐनमोपवित्रमशोशतधारवसो:पवित्रमसिसहस्त्रधारम देवस्त्वासवितापुनासवसोपवित्रेणशतधारेणसुप्त्वा
२४	शत	सन्निपातजोड़ का बुखारकष्ट	मृत्युसम ४५ ३, २२	केसर अगर कमलपुष्प कपूर चन्दन घृत पोलिका	स्वर्ण तल अन्न घड़ा घोड़ा दान	घी अन्न	घीदही अन्य	कमल की जड़	वरुण	१०,०००	वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य ऋतसदन्यसिवरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदन
२५	पू. भा.	शरीर पीड़ा सन्नि० उल्टी	मृत्यु सम १२ २१,१६	केसरचन्दन अर्ककापुष्प शतो पधि दही दूध भोजन	स्वर्ण चांदी अन्न गौ. वस्त्र ब्रा भो.	दही अन्न	खीरघी खांड	भृंगरा जकीज	अजैक पात	१०,०००	ॐउतनाऽहिर्बु ध्न्यश्रृणात्वजएकपापृथिवीसमुद्र:विश्वे देवाऽऋतावृधोहुतानास्तुतामंत्रा: कविस्ताभवन्तु ।।
२६	उ. भा.	ज्वर कामला रोग शूल	१०, २०, ६ १५	चन्दन कपूर कमल पुष्प वेल फल गुगल घी दूध भोजन	स्वर्ण चांदी तिल काला कपड़ा ब्रा० भोजन	तिल घीमोठ	तिल जौ घी	अश्वत्थ की जड़	अहिर्बु ध्न्य	१०,०००	ॐशिवोनाम साम्रस्वतिस्वपितानमस्तेऽस्तु मामा-गी:निवर्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजनेतायरायस्पोषायसत्र जास्त्वायसुवीर्याय ।। ऊं अहिर्बुध्न्याय नम: ।।
२७	रेवती	चित्तभ्रम पेट दर्दबुखार वायु	१८,१०,६१ २०	लाल चन्दन मल र के फूल घी गुगल घी दूध भोजन	वाञ्छितवस्त्र बैल दानब्रा.भो पीतल	सहवि अन्न	तिलघी चावल	अश्वत्थ की जड़	पुषा	५,०००	ॐपूषनतवव्रतेवयनरिष्येमकदाचनस्तोतारस्तइहस्मसि ॐ पूष्णेनम: ।

दशम लग्न सारिणीयम्

(सर्वत्र उपयोगी)

राशयः	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
मेष.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
०	३४	४३	५३	२	११	२०	३०	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	[illegible]
वृष.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	[illegible]
१	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	[illegible]
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	[illegible]
२	४५	५६	६	१७	२८	३९	४९	००	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	२	१३	२४	[illegible]
कर्क.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	[illegible]
३	७	१७	२८	३९	५०	००	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	[illegible]
सिंह.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	[illegible]
४	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	३	१२	२२	३१	४०	५०	५९	८	१८	[illegible]
कन्या.	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	[illegible]
५	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	[illegible]
तुला.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	[illegible]
६	३४	४३	५३	२	११	२०	३०	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	[illegible]
वृश्चिक.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	[illegible]
७	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४१	५१	२	[illegible]
धनु.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	[illegible]
८	४५	५६	६	१७	२८	३९	४९	००	११	२१	३२	४३	५४	४	१५	२६	३७	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	२	१३	२४	[illegible]
मकर.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	[illegible]
९	७	१७	२८	३९	५०	००	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	[illegible]
कुंभ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	[illegible]
१०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	३९	४९	५८	७	१७	२६	३५	४५	५४	३	१२	२२	३१	४०	५०	५९	८	१८	[illegible]
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	[illegible]	२	२	२	२	२	२	[illegible]
११	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५२	१	१०	२०	२९	३८	४७	५७	[illegible]



विधिः—दशम स्पष्ट करने के लिए इष्ट प्रविष्टे के दिनार्द्ध को अपने इष्ट में से रन कर दो और यदि आप का इष्ट दिनार्द्ध से तो इस में ६० घड़ी और युक्त करके जोड़ में से दिनार्द्ध को हीन कर दो, इस प्रकार जो लब्धि प्राप्त हो इस को दशम भावेष्ट कहते हैं; भावेष्ट को जन्म कालीन इष्ट मान कर इस से ऊपर लिखित दशम सारिणी द्वारा शेष विधि लग्न की क्रिया पूर्वक करने से दशम भाव जाता है

उदाहरणः—१० जुलाई सन् १९४९ ई० को सूर्योदय इष्ट ४३।७ पर दशम स्पष्ट करने के लिये इस प्रविष्टे के दिनार्द्ध १७ ४३।७ में से रन किया तो लब्धि २५।५७ दशम भावेष्ट निकला, इस को ऊपर लिखित सारिणी में इष्ट स्पष्ट सूर्य मिथुन राशि और २४ तुल्य के कोष्ट १८।२ में युक्त करके जोड़ फल ४३।५९ को ऊपर लिखित सारिणी में देखा तो इस से न्यून का कोष्ट ४३।५६ धन राशि के तुल्य मिला, फिर ४३।५९ और ४३।५६ के अन्तर ३ पल को ६० से गुणा करके गुणनफल को ४३।५६ और ४४।६ के अन्तर १० दिया तो $३\times\frac{६०}{१०}=१८$ कला लब्धि प्राप्त हुई, इसको स्पष्ट सूर्य की केवल ४० कला ११ विकला में धन किया तो ५८ कला १६ वि फल निकला, जिससे ज्ञात हुआ कि इस समय दशम लग्न धन राशि के एक अंश ५८ कला १६ विकला पर है।

लग्न के अन्य भाव स्पष्ट करने की विधिः—लग्न के अन्य भाव स्पष्ट करने के लिये दशम स्पष्ट में ६ राशि युक्त करने से च निकल आवेगा, इस चतुर्थ स्पष्ट में लग्न को हीन करके ६ पर भाग दें, लब्धि को खटांश कहते हैं, फिर खट अंश को लग्न में युक्त करने लग्न, सन्धि लग्न में खट अंश जोड़ने से दूसरा भाव स्पष्ट हो जावेगा, इसी प्रकार इसी खट अंश से चतुर्थ भाव पर्यन्त सब भाव स्पष्ट तृतीय सन्धि में १ राशि युक्त करने से चतुर्थ सन्धि, तृतीय भाव में २ राशि युक्त करने से पंचम भाव, द्वितीय सन्धि में ३ राशि जोड़ भाव सन्धि और द्वितीय भाव में ४ राशि युक्त करने से ६वां भाव स्पष्ट होगा, फिर लग्न सन्धि में ५ राशि युक्त करने से छटी सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम स्पष्ट निकल आवेगा, फिर इन सब भावों तथा सन्धियों के स्पष्टों में क्रमशः छः छः राशि युक्त करके तक शेष सभी भाव और सन्धियां स्पष्ट कर लेवें।

स्टैंडर्ड लोकल टाइम अन्तर सारिणी देहली

प्रविष्ट	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
१	२४	३४	३४	२६	१८	१९	२४	२७	२१	१०	५	११
२	२५	३५	३४	२५	१८	१९	२४	२७	२१	१०	५	११
३	२५	३५	३४	२५	१८	१९	२४	२७	२०	१०	५	११
४	२६	३५	३४	२५	१८	१९	२५	२७	२०	९	५	१२
५	२६	३५	३३	२४	१८	१९	२५	२७	२०	९	५	१२
६	२७	३५	३३	२४	१८	१९	२५	२७	१९	९	५	१२
७	२७	३५	३२	२४	१७	१९	२५	२७	१९	९	५	१३
८	२७	३५	३३	२३	१७	१९	२५	२६	१९	८	५	१३
९	२८	३५	३३	२३	१७	२०	२५	२६	१८	८	५	१४
१०	२८	३५	३२	२३	१७	२०	२५	२६	१८	८	५	१४
११	२९	३६	३२	२३	१७	२०	२६	२६	१७	७	५	१५
१२	२९	३६	३२	२२	१७	२१	२६	२६	१७	७	६	१५
१३	२९	३६	३२	२२	१७	२१	२६	२६	१७	७	६	१५
१४	३०	३६	३१	२१	१७	२१	२६	२५	१७	७	६	१६
१५	३०	३६	३१	२१	१७	२१	२६	२५	१६	७	६	१६
१६	३०	३६	३१	२१	१७	२१	२७	२५	१६	६	६	१७
१७	३१	३६	३१	२१	१७	२१	२७	२५	१५	६	६	१७
१८	३१	३५	३०	२१	१७	२१	२७	२५	१५	६	७	१८
१९	३१	३५	३०	२१	१७	२२	२७	२४	१५	६	७	१८
२०	३२	३५	२९	२१	१७	२२	२७	२४	१४	६	७	१९
२१	३२	३५	२९	२०	१७	२२	२७	२४	१४	५	७	१९
२२	३२	३५	२९	२०	१७	२२	२७	२४	१४	५	८	२०
२३	३३	३५	२९	२०	१७	२३	२७	२३	१३	५	८	२०
२४	३३	३५	२८	१९	१७	२३	२७	२३	१३	५	८	२१
२५	३३	३५	२८	१९	१८	२३	२७	२३	१२	५	८	२१
२६	३३	३५	२७	१९	१८	२३	२७	२३	१२	५	९	२१
२७	३३	३५	२७	१९	१८	२३	२७	२२	१२	५	९	२२
२८	३४	३५	२७	१९	१८	२४	२७	२२	११	५	९	२२
२९	३४	३४	२७	१९	१८	२४	२७	२२	११	५	१०	२३
३०	३४	×	२६	१८	१८	२४	२७	२२	११	५	१०	२३
३१	३४	×	२६	×	१८	×	२७	२१	×	५	×	२४

स्टैंडर्ड लोकल सारिणी का प्रयोग

स्टैंडर्ड लोकल टाइम अन्तर सारिणी में इष्ट प्रविष्टे को जितने मिनट लिखे हैं इतने मिनट स्टैंडर्ड टाइम में से कम करने से इष्ट दिन का देहली का लोकल [धूप घड़ी का] टाइम निकल आता है और देहली के लोकल टाइम में इसी अन्तर को जोड़ने से स्टैंडर्ड टाइम बन जाता है।

सूर्य क्रान्ति चक्र

सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला	सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला	सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला	सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला	सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला	सूर्य अंश	क्रांति अंश	क्रांति कला
१	००	२४	१६	६	१८	३१	११	४९	४६	१६	३८	६१	२०	२२	७६	२२	४३
२	००	४८	१७	६	४१	३२	१२	१०	४७	१६	५५	६२	२०	३४	७७	२२	४९
३	१	१२	१८	७	४	३३	१२	३१	४८	१७	१२	६३	२०	४६	७८	२२	५४
४	१	३६	१९	७	२६	३४	१२	५२	४९	१७	२९	६४	२०	५७	७९	२२	५९
५	१	५९	२०	७	४९	३५	१३	११	५०	१७	४५	६५	२१	८	८०	२३	४
६	२	२३	२१	८	१२	३६	१३	३१	५१	१८	१	६६	२१	१९	८१	२३	८
७	२	४७	२२	८	३४	३७	१३	५१	५२	१८	१६	६७	२१	२९	८२	२३	१२
८	३	११	२३	८	५६	३८	१४	११	५३	१८	३१	६८	२१	३९	८३	२३	१६
९	३	३४	२४	९	१९	३९	१४	३१	५४	१८	४८	६९	२१	४८	८४	२३	१९
१०	३	५८	२५	९	४१	४०	१४	४९	५५	१९	१	७०	२१	५७	८५	२३	२१
११	४	२१	२६	१०	३	४१	१५	८	५६	१९	१५	७१	२२	६	८६	२३	२३
१२	४	४५	२७	१०	२४	४२	१५	२६	५७	१९	३०	७२	२२	१४	८७	२३	२५
१३	५	८	२८	१०	४६	४३	१५	४५	५८	१९	४३	७३	२२	२२	८८	२३	२६
१४	५	३१	२९	११	७	४४	१६	३	५९	१९	५७	७४	२२	२९	८९	२३	२७
१५	५	५४	३०	११	२८	४५	१६	२०	६०	२०	९	७५	२२	३६	९०	२३	२७

सूर्य क्रांति जानने की विधि

जिस दिन सूर्य की क्रांति जाननी हो प्रथम उस दिन के निकट का सूर्य स्पष्ट इस जन्त्री में से लेकर इसकी दैनिक गति से इष्ट काल का सूर्य स्पष्ट करो और फिर इसमें "आयन अंश" धन करके सायन रवि मालूम कर लो। सायन रवि यदि [१] तीन राशि तक हो तो इसके अंशादि कर लो [२] यदि तीन राशि से छः राशि तक हो तो इस को छः राशि में से कम कर लो [३] यदि छः राशि से अधिक व नौ राशी से कम हो तो इस में से छः राशि कम कर दो और यदि [४] नौ राशि से १२ राशि तक हो तो उसे बारह राशि में से कम कर दो। बस, इस तरह जो लब्धि हो उसके अंशादि कर लो, इसको "भुज अंशादि" कहते हैं. फिर ऊपरलिखित सारिणी में इन भुज अंशों के सामने जो क्रांति दर्ज है इस में भुज कलाओं का फल अनुपात द्वारा जान कर धन कर दो तो लब्धि इष्ट कालिक क्रांति ज्ञात होगी। सायन सूर्य मेष आदि अर्थात् छः राशि से कम हो तो क्रांति उत्तर और तुला आदि अर्थात् छः राशि से अधिक हो तो क्रांति दक्षिण जाननी चाहिये।

उदाहरणः—सं० २००६ वि० आषाढ़ शुदि पूर्णिमा रविवार १० जुलाई सन् १९४९ ई० को सूर्योदय समय रवि क्रांति जानने के लिए इस समय के स्पष्ट सूर्य २।२३।५६।२५ में 'आयनांश' २३।४७ को युक्त करने से ३।१७।४३।२५ सायन रवि ज्ञात हुआ, तीन राशि से अधिक होने पर इसे छः राशि में से कम किया तो राशि आदि २।१२।१३।३५ भुज निकला, इस के अंशादि किये तो ७२।१३।३५ हुए, सारिणी में ७२ अंशों के तुल्य देखा तो २२ अंश १४ कला क्रांति लिखी है इसमें भुज कला १५ के लिये [१३ कला ३५ विकला को सुविधा केलिये १५ कला मान लिया] अनुपात द्वारा लाया हुआ फल २ कला (७२ व ७३ अंश की क्रांति का अन्तर किया तो ८ कला हुआ, इसलिए १ अंश अर्थात् ६० कला के लिये क्रांति अन्तर ८ कला, तो १५ कला के लिए क्रांति अन्तर २ कला हुआ) धन किया तो २२ अंश १६ कला इष्टकालिक क्रांति ज्ञात हुई, सायन रवि मेष आदि होनेसे क्रांति उत्तर है।

देहाती पुस्तक भण्डार — चर सारिणीयम् — चावड़ी बाजार, दिल्ली

अक्षांश \ क्रां. अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२३.२७
४	१	१	२	३	३	४	५	६	६	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१७
५	१	२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
६	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२५	२६
७	१	२	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१४	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२३	२४	२५	२७	२८	३०	३०
८	१	३	४	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१८	१९	२१	२३	२५	२६	२८	२९	३१	३२	३४	३५
९	२	३	५	६	८	९	११	११	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३८	३९
१०	२	३	५	७	९	१०	१२	१२	१६	१८	२०	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४४
११	२	४	६	८	१०	१२	१४	१४	१७	२०	२२	२३	२६	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	४८
१२	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	३०	३३	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५३
१३	२	४	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३	२६	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४६	४८	५१	५३	५६	५७
१४	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२८	३०	३३	३६	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	१ १	१ २
१५	३	५	८	११	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३३	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	१ २	१ ५	१ ७
१६	३	६	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	१ ००	१ ३	१ ६	१ १०	१ ११
१७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३	५७	१ ००	१ ४	१ ७	१ ११	१ १४	१ १६
१८	३	६	१०	१३	१६	१९	२३	२६	२९	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५७	१ १	१ ४	१ ८	१ १२	१ १५	१ १९	१ २१
१९	३	७	१०	१४	१७	२१	२४	२७	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५३	५७	१ ००	१ ४	१ ८	१ १२	१ १६	१ २०	१ २४	१ २६
२०	४	७	११	१४	१८	२२	२५	२९	३३	३७	४०	४४	४८	५२	५६	१ ००	१ ४	१ ८	१ १२	१ १६	१ २०	१ २४	१ २९	१ ३१
२१	४	८	११	१६	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	१ ३	१ ७	१ १२	१ १६	१ २	१ २५	१ २९	१ ३४	१ ३६
२२	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३७	४१	४५	४९	५३	५८	१ २	१ ६	१ ११	१ १५	१ २०	१ २४	१ २९	१ ३४	१ ३९	१ ४१
२३	४	८	१३	१७	२१	२५	३०	३४	३८	४३	४७	५२	५६	१ १	१ ५	१ १०	१ १४	१ १९	१ २४	१ २९	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४६
२४	५	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	१ ४	१ ८	१ १३	१ १८	१ २३	१ २८	१ ३३	१ ३८	१ ४३	१ ४९	१ ५१
२५	५	९	१४	१८	२३	२८	३३	३७	४२	४७	५२	५७	१ २	१ ७	१ १२	१ १७	१ २२	१ २७	१ ३२	१ ३८	१ ४३	१ ४८	१ ५४	१ ५७
२६	५	१०	१५	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	१ ४	१ १०	१ १५	१ २०	१ २६	१ ३१	१ ३५	१ ४२	१ ४८	१ ५३	२ ००	२ २
२७	५	१०	१५	२०	२५	३१	३६	४१	४६	५१	५७	१ २	१ ७	१ १३	१ १८	१ २४	१ ३०	१ ३५	१ ४१	१ ४७	१ ५३	१ ५९	२ ५	२ ७
२८	५	१०	१६	२१	२७	३२	३७	४३	४८	५४	५९	१ ५	१ १०	१ १६	१ २२	१ २७	१ ३४	१ ३९	१ ४५	१ ५१	१ ५८	२ ४	२ १०	२ १३
२९	५	११	१७	२२	२८	३३	३९	४५	५०	५६	१ २	१ ८	१ १४	१ १९	१ २५	१ ३१	१ ३८	१ ४४	१ ५०	१ ५६	२ ३	२ ९	२ १६	२ १९
३०	६	११	१७	२३	२९	३५	४१	४६	५२	५८	१ ४	१ १०	१ १६	१ २३	१ २९	१ ३५	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ १	२ ८	२ १५	२ २२	२ २५
३१	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५५	१ १	१ ७	१ १३	१ २०	१ २६	१ ३३	१ ३९	१ ४६	१ ५२	१ ५९	२ ६	२ १३	२ २०	२ २८	२ ३१
३२	६	१२	१९	२५	३१	३८	४४	५०	५७	१ ३	१ १०	१ १६	१ २३	१ २९	१ ३६	१ ४३	१ ५०	१ ५७	२ ४	२ ११	२ १९	२ २६	२ ३४	२ ३७
३३	६	१३	१९	२६	३२	३९	४६	५२	५९	१ ६	१ १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५५	२ २	२ ९	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४४
३४	७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २९	१ ३७	१ ४४	१ ५२	१ ५९	२ ७	२ १५	२ २२	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५०
३५	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	१ ४	१ ११	१ १८	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४८	१ ५६	२ ४	२ १२	२ २०	२ २८	२ ३६	२ ४४	२ ५३	२ ५७
३६	७	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	१ ६	१ १३	१ २१	१ २९	१ ३६	१ ४४	१ ५२	२ ००	२ ८	२ १६	२ २५	२ ३३	२ ४२	२ ५१	२ ५९	३

१८ अक्षांश व २२ क्रांति अंश का फल=१।१५
१८ अक्षांश व २३ क्रांति अंश का फल=१।१९
∴ १ क्रांति अंश का अन्तर =००।४

∴ १८ अक्षांश व २२।१६ क्रांति का चर=१।१५+००।१=१।१६
इसी प्रकार १९ अक्षांश व २२।१६ क्रांति का फल=१।२१ दोनों का अन्तर=००।५

चर जानने की विधिः—चर जानने के लिये प्रथम पृष्ट नं० 109 पर दी हुई विधि से इष्टकालिक क्रांति जान कर इसी क्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश (अंश कला को छोड़ कर) के तुल्य इस पृष्ट पर दी हुई सारिणी में से अनुपात द्वारा चर घड़ी व पल को मालूम करो, फिर दूसरी बार इसी क्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश में एक अंश और युक्त करके इन [illegible]र मालूम करो, फिर दोनों चरों का अन्तर निकालकर इस अन्तर से अक्षांश कला का फल अनुपात द्वारा निकाल कर इस फल को प्रथम चर में धन कर दो तो लब्धि इष्ट कालिक चर ज्ञात हो जावेगा।

काकमैथुन—काकमैथुन देखे, काक सिर पर बैठ जाय, किसी अंग में पंजे से मारे या सोय हुए मनुष्य के ऊपर काक बैठे तो शास्त्रकारों ने इसे महा भयानक-अनिष्ट कहा है। इसी प्रकार आधीरात में अकारण काक बोले तथा जंगली कबूतर घर पर [illegible], तो भी हानि होती है। इसकी शान्ति के लिए सप्तधान्य का दान करे; घी शरीर में लगाये। ऊड़द के चूर्ण का काक [illegible] बनाकर, गन्ध पुष्पादि से उसका पंचोपचार पूजन करके उड़द दही, घी तथा भात को मिट्टी के बरतन में उसके सामने स्थापित करे। सात बत्ती का दीपक जलाकर बलि के मध्य में रखकर दक्षिण दिशा में चौराहे पर दक्षिणा सहित बलि को दे। लौटकर पंचगव्य से स्नान करे तथा "ॐ नमः शिवाय" इस मन्त्र का जप करे [illegible] घी में अपनी छाया देखकर [illegible]

(लग्न बनाने की रीति) लग्न सारणी देहली चरखण्डा ६५।५२।२२

अंश	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	०२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
००	४३	५०	५७	५	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१७	२५	३४
वृष	०६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
०१	४२	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
०२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१३	२५	३५	४७	५१	१०	२२	३४	४५	५७	८	११	३०	४२	५३
कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
०३	६	१७	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४४	५५	७	११	३१	४२
सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
०४	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१७	२९	४०	५१	२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४४	५५	६	१८	२८
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
०५	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	००	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
०६	२४	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	०१	१३	२५	३४	४८	००	१२	२४	३६	४८	००
वृश्चक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
०७	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५०	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१३	२४	३६	४७
धन	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
०८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	०९	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५०	००
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
०९	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३९	४७	५६	५	१३	२१
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१६	२०	२८	३५	४२	५०	५६	३
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	३	१	२	२	२	२	२	२
११	१०	१७	२५	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४६	५३	००	७	१५	२१	२९	३६
अंश	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९

लग्नसारणी से लग्न देखने रीति

जिस समय इस लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट बनाकर उस में उस दिन का सूर्य स्पष्ट जो कि जंत्री में सूर्य स्पष्ट लिखा है जिस राशि में जितने अंश पर हो लग्न सारणी में उस राशि के सामने और उन अंशों की कोष्टक के नीचे जो घड़ीपल हो उन में अपने जन्म समय के इष्ट के घड़ीपल जोड़ने से लग्न की घड़ीपल बन जाती हैं सो यह घड़ी पल लग्नसारणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्टफ के नीचे मिलेंगे वह स्पष्ट लग्न राशि अंशादि होगा

उदाहरण :–२०१६ आषाढ़ प्र० ८ को इष्ट घटियादि १०।१५ पर क्या लग्न होगा । इस दिन जंत्री में स्पष्ट राशि २।७।१।१९ लग्न सारणी २ राशि के सामने और ७ अंश के नीचे घटयादि १२।४१ में इष्टादि १०।१५ जोड़ दिया तो २२।५६ घटयादि हुई, लग्न सारणी में इस से स्पष्ट कोण देखा तो ४ राशि २० अंश के नीचे घटयादि २२।५५ और इष्ट युक्त घटयादि २२।५६ अन्तर १ पल को अमुककोष्ट और अगले कोष्ट के अन्तर १२ पल हैं, मालूम किया गया कि १२ पल अन्तर है ६० कला में तो १ पल का अन्तर होता है तो ६०×१×१२ तो लब्ध ५ कला हुआ सो उस समय स्पष्ट लग्न ४ राशि ०० अंश ५ कला अर्थात लग्न सिंह हुआ ।

पलभा सारिणी

पलभा सारिणी
[illegible]

सारणी प्रवेश रीति—देशान्तर सारणी से इष्ट स्थान के अक्षांश लेकर इष्ट स्थान की पलभा बनाओ । उदाहरण:—किसी ने अक्षांश ३२।१० की पलभा बनानी है तो सारणी में ३२ की पलभा ७।२९।५३ हैं, ३३ की ७।४७।३१ दोनों का अन्तर १७।३८ के शेषांक १० से गुणा करो तो १७६।२० हुए ६० से भाग दिया तो व्यंगुलात्मक लब्धि २।५६।२० पलभा ७।२९।५३ में उक्त किया तो ७।३२।४९ पलभा हुई । इसी प्रकार प्रत्येक स्थान की पलभा प्राप्त निकाल सकते हैं ।

अथ सूर्यादिग्रहों का द्वादश भावों में गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
सूर्यः	स्थानंनाश	भय	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृनाश	सिद्धि	धनला.
चंद्रः	अन्नला	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनलाभ	स्त्रीला.	रोगः	धमलाभ	सौख्यं	धनला.
भौमः	शत्रुभी	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभि	शत्रुपी.	शोकः	धनला.
बुद्धः	बधन	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनला.
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	रजमा	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभयः	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःखं	धनला.
शनिः	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभीः	पुत्रनाश	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन.	धनला.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं
केतुः	रोगः	वैरं	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः

अथ वर्ष कुण्डली से द्वादश भाव ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
सूर्यः	चिन्ता	नृपभी	धनलाभ.	हानिः	कष्टम्	शत्रुना	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनला.
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद	विजयः	धनला.
भौमः	व्रणाः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्मतिः	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योद	राज्यला.	धनला.
बुध	सौख्या	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह. ला.	पुत्र प्रा.	कष्टम्	सुखम	रोगः	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.
शुक्रः	मानप्र.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभी	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोद	मानला.	क्षेमला
शनि	बार्तार्त्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पी	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्यहा	धनहा.	धनला.
राहुः	शिरोर्ति	राजभी	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाः	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हा.	विजयः	सुलाभ
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना	धनला.	लाभ.
मुन्था	सुखम्	यज्ञोऽर्ग	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद	राज्य प्रा	लाभः

अथ पुरुष जन्म कुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८ः	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित	अल्पायु	सुखी	शूरः	धनी
चन्द्र	जड़ः	कुटम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान	अल्पायु	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यात
भौमः	व्रणीः	कुटिल	विक्रमी	पीड़ित	अपुत्र	शत्रुजित	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापत्मा	सुखीं	धनाढ्य
बुध	विद्वान	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुशीलः	धर्मयज्ञ	गुणी	पुत्रवान	विक्रमी	धनी
गुरु	चिरायु	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध	अल्पायु	पुत्रवान	सकति	धनी
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान	रोगी	क्रोधी	नीग	प्रतापी	सुमति	धनीढ्य
शनिः	रोगी	चका	विक्रमी	दुखी	दरिद्र	सुखी	दुःखी	नैत्ररो	सुखी	पराक्रमी	धनी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुखी	दर्भग	बली	अशचि	गताय	दैन्य	मानी	ख्यात
केतु	अल्पायु	धर्महा	नूरः	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्री	कलेशी	पापी	अधर्मो	धनी

अथ स्त्री जन्म कुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहफल

ग्रहाः	तनुः	धन २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रु ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११
सूर्यः	सक्रोधाः	निर्धन	सुपुत्रा	सपीडा	अपुत्रा	धनाढ्य	दुःखार्ता	विधवा	धभिक्ष	सति	सधना
चन्द्र	अल्पायुः	सधना	सुखनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगणी	पति प्रि०	दुखार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिना
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातु	दुखिनि	सुबुद्धि	नीरोग	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधना
बुधः	सुभगः	धनाढ्य	सुखिनी	सुमूहा	आध्वी	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा
गुरु	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	सुसुता	साषादा	सुकृति	रोगणी	पुत्राढ्य	सुभागा	सुरूपा
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्य	सुकीर्ति	अपुत्रा	दरीद्र	पति प्रि०	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा
शनिः	बन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृदरोगा	अपुत्रा	सुगणा	बिधवा	देखाना	वन्धया	पापी	सुलाभा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्य	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्य	दुःखार्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मी	सुभगा
केतुः	दुखाती	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्य	विधवा	[illegible]	शोकार्त्त	पापी	सुभगा

देहाती पुस्तक भण्डार

वर्ष फल बनाने की रीति

चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	६०	००

वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	०२	३०	००	३०	००	६०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्षफल बनाने की रीति

जिस वर्ष का वर्षफल बनाना हो उस वर्ष से जन्म सम्वत् को कम करे जो शेष रहे उन अंकोंके उपर सारणी से देखकर उसमें जन्म के वार इष्ट घड़ी पल में जोड़देने से उस वर्ष का वार इष्ट घड़ी पल बन जाएगा फिर लग्नसारणी से लग्न देख लेवें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न को युक्त करके १२ से भाग देवें जो शेष रहे उस राशी में मुन्था लगा देवें।

फलम:—मुंथा यदि लग्न से ५,१०,११वें स्थान में हो तो वह वर्ष लाभदायक हो यदि २,३,५ वें स्थान में हो तो मध्यम और यदि ४।६।७।८ या १२ वें स्थान में पड़े तो वह वर्ष अति अशुभ जानना चाहिए, इस के अतिरिक्त यदि मुन्था शुभ ग्रह के साथ हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ और यदि इससे विपरित हो तो अशुभ फल देता है।

अर्थ त्रिप्ताकि चक्रम:—तीन सीधी और तीन तिरछी रेखाऐं खेंचकर तीनों को परस्पर मिला देवें और फिर मध्य रेखा के ऊपर वाले कोने पर वर्ष लग्न लगाकर शेष राशिएं नम्वर बार दर्ज कर देवें ग्रह स्थापन करने की विधि यह है कि गत वर्षों को नौ का भाग दे शेष जो बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगा देवें शेष ग्रहों का ४ पर भाग देवे जो शेश रहे जन्म ग्रहों से उतनी संख्या पर शेष ग्रहों को लगा देवें परन्तु राहु वा केतु का संस्कार इसके विपरित करे। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न से आठवे स्थान में आवे तो वर्ष कष्टदायक हो। जिस स्थान में जो कोई ग्रह होगा उसी के अनुसार अपना प्रभाव डालेगा।

फलम:—यदि शुभग्रह का राहु से बेध होतो उस वर्ष शरीर में रोग, सूर्य से हो तो कफवायु रोग, मंगल से हो तो रक्त विकार और शरीर में पीड़ा और यदि शनि से हो तो वह वर्ष अतिकष्टकारो और धनादि का खर्च अधिक होता है।

दशा:—जन्म नक्षत्र को अश्विनी नक्षत्र से गिन कर लब्ध को गत वर्षों में जमा करके २ हीन कर देवें जो शेष बचे उसको ९ पर भाग देवे यदि शेष १ बचे तो सूर्य दो रहें तो चन्द्रमा ३ रहें तो मंगल ४ रहे तो राहू ५ रहें तो बृहस्पति ६ रहें तो शनि ७ रहें तो बुध ८ रहे हो तो केतु और यदि शून्य (९) शेष बचे तो शुक्र की दशा शुरू में होगी।

अथ दशा दिनानी:—सूर्य १८ दिन, चन्द्रमा ३० दिन मंगल २१ दिन राहु ५४ दिन बृहस्पति ४८ दिन शनि ५७ दिन बुध ५१ दिन केतु २१ दिन और शुक्र की दशा के ६० दिन होते हैं। इस प्रकार से दशा लगा लिया करें।

फलम:—सूर्य मंगल राहु केतु ३,६,१०,११ वें स्थान में जन्म या वर्ष लग्न में पड़ें हों तो शुभ फल देते हैं और शुभ ग्रह चन्द्रमा बुध, गुरु शुक्र, ४५,७,९,१०११ वें स्थान में शुभ फल देते हैं ८,१२ वें स्थान में सब ग्रह नेष्ट फल देते हैं।

वर्ष कुन्डलो में अरिष्ट योग

जन्म लग्न हो वर्ष लग्न हो वर्ष लग्न हो तो दो जन्मा वर्ष होता है जो शुभदायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है। यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हो और गुरु आठवें हों और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तूल्य कष्ट होता है

सन्तान योग

वर्ष कुंडली में लग्नेश पांचवें या सातवें में पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पाँचवे हों और पांचमेश देखता हो तो गर्भ होता है गुरु की राशि में चन्द्रमा हो मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में बैठा हो तो गर्भ योग होता है।

तरक्की व तबदीली के योग

वर्ष लग्न मे लग्नेश वा तृतीयेश, चतुर्थेश, नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हो तो तवदीली होगी।

द्विजन्मा वर्ष:—यदि जन्म लग्न और वर्ष एक ही हों तो वर्ष एक ही हों तो वर्ष अशुभ वा कष्ट दायक होता है।

विवाह विषयक जानने योग्य उपयोगी बातें

एक ही तागे में पति तथा पत्नी का मन गुँथा हुआ नहीं होने से दाम्पत्य जीवन अशान्तिपूर्ण अथवा नीरस हो जाता है । पुरुष-स्त्री के जन्म-मास के अनुसार विवाह होने पर ही दोनों का जीवन सुखपूर्वक व्यतीत हो सकता है । भिन्न-भिन्न ग्रहों के प्रभाव से भिन्न-भिन्न मास में मनुष्य जन्म ग्रहण करते हैं । इसलिये परस्पर अनुकूल ग्रहों का होना जरूरी है । किस मास में उत्पन्न हुये मनुष्य से किस मास में जन्म लेनेवाली कन्या का विवाह होना चाहिये, यह नीचे लिख रहे हैं ।

(१) वैशाख मास में उत्पन्न हुये बालक का विवाह भादों, कार्तिक या पौष मास में जन्म लेनेवाली कन्या के साथ शुभ होगा । प्रेम रहेगा एवं जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा ।

(२) ज्येष्ठ मास में उत्पन्न हुये पुरुष के साथ आश्विन, मार्गशीर्ष, माघवाली कन्या के साथ शुभ होगा ।

(३) आषाढ़ मास के पुरुष के साथ कार्तिक, पौष, फाल्गुन वाली जन्मी कन्या के साथ ब्याह करना शुभ होगा ।

(४) श्रावण मास के पुरुष के साथ मार्गशीर्ष, माघ, चैत्र के मास में जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ फलदायक होगा ।

(५) भाद्रपद मास के पुरुष के साथ पौष, फाल्गुन, वैशाख में जन्म लेनेवाली कन्या के साथ विवाह करने से जीवन सुख-शान्ति से गुजरता है ।

(६) आश्विन के जन्मे पुरुष के साथ माघ, चैत्र, ज्येष्ठ की जन्मी कन्या के साथ ब्याह करना शुभ होगा ।

(७) कार्तिक के जन्मे पुरुष का वैशाख, आषाढ़, फाल्गुन की जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ होगा ।

(८) मार्गशीर्ष के जन्मे पुरुष का ज्येष्ठ, श्रावण, चैत्र की जन्मी कन्या के साथ विवाह शुभ फलदायक होगा ।

(९) पौष मास के जन्मे पुरुष का ब्याह वैशाख, आषाढ़, तथा भाद्रपद की कन्या के साथ जीवन सुखदायी होता है ।

(१०) माघ के जन्मे पुरुष का ब्याह ज्येष्ठ, श्रावण तथा आश्विन की जन्मी कन्या के साथ शुभ होगा ।

(११) फाल्गुन के जन्मे पुरुष का ब्याह आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक की जन्मी हुई कन्या के साथ ब्याह करने से जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा ।

(१२) चैत्र मास के जन्मे पुरुष का ब्याह श्रावण, आश्विन, अगहन मास की जन्मी कन्या के साथ विवाह करने से दोनों प्राणियों का जीवन प्रेमपूर्वक व्यतीत होगा । इसके विपरीत ब्याह होने से कलह-रंज से जीवन व्यतीत होगा ।

ओ रुपिये के लिये देश और जाति से द्रोह करने वाले इन्सान ! ओ रुपिये के लिये लड़के, और लड़कियों को बेचनेवाले इन्सान ! याद रख ले रुपिये से -

लड़का मिल सकता है	पुत्र नहीं मिल सकता
औरत मिल सकती है	धर्मपत्नी नहीं मिल सकती
नौकर मिल सकता है	सेवक नहीं मिल सकता
रोटियाँ मिल सकती हैं	भूख नहीं मिट सकती
पलंग मिल सकता है	नींद नहीं मिल सकती
ऐनक मिल सकती है	आँखे नहीं मिल सकतीं
मास्टर मिल सकता है	विद्या नहीं मिल सकती
पुस्तकें मिल सकती हैं	बुद्धि नहीं मिल सकती है
गीता मिल सकती है	ज्ञान नहीं मिल सकता
मूर्तियाँ मिल सकती हैं	भगवान नहीं मिल सकते
आराम मिल सकता है	राम नहीं मिल सकता
सुख मिल सकता है	शान्ति नहीं मिल सकती
साधन मिल सकते हैं	साधना नहीं मिल सकती
शान मिल सकती है	सम्मान नहीं मिल सकता
बादाम मिल सकते हैं	ताकत नहीं मिल सकती है
पिस्तौल मिल सकता है	हिम्मत नहीं मिल सकती है
डॉक्टर मिल सकता है	स्वास्थ्य नहीं मिल सकता है
औषधि मिल सकती है	आयु नहीं मिल सकती है
विष मिल सकता है	अमृत नहीं मिल सकता
साथी मिल सकता है	मित्र नहीं मिल सकता
शोहरत मिल सकती है	इज्जत नहीं मिल सकती
कमल मिल सकती है	लेख नहीं मिल सकता
हारमोनियम मिल सकता	स्वर नहीं मिल सकता है
शरीर मिल सकता है	आत्मा नहीं मिल सकती
मानव मिल सकता है	मानवता नहीं मिल सकती है

उत्तम शिक्षायें

(१) किसी को उसके मुख पर ही बेवकूफ बनाने की चेष्टा न करो ।
(२) जोर से हँसने की आदत से बचते रहो ।
(३) जल्दी-जल्दी बोलने की आदत न डालो ।
(४) अपने स्वार्थ के लिये औरों को मजबूर न करो ।
(५) उधार माँगने की आदत से बचते रहो ।
(६) बोलचाल में हे हे के से आदि अशुद्ध प्रयोग न करो ।
(७) अपने कार्य को उत्साह पूर्वक करो ।
(८) राजनीति में नर्म दल ही का अनुसरण करो ।
(९) अपनी कठिनाइयों को अपने ही तक रक्खो ।
(१०) सदैव चापलूसी से दूर रहो ।
(११) प्रसन्नतापूर्वक अपना काम छोड़कर दूसरों को सहयोग दो ।
(१२) पीठ पीछे किसी की हँसी उड़ाने की चेष्टा न करो ।
(१३) ऐसी दिल्लगी से सदा सावधान रहो जो सुनने वाले को अहितकर हो ।
(१४) नेकी करने वाला सदैव किसी खराबी में नहीं फँसता ।
(१५) यह भारी मुसीबत है (कौन) बाल बच्चों का अधिकता ।
(१६) आप को ऐसे बड़े दरबार में जाना है जहाँ धनी निर्धन बराबर हैं । अतः कभी घमंड न करो ।

वर-कन्या गुणमेलापक कोष्टक (आमूल परिशोधित)

वर राशि, नक्ष. / कन्या राशि, नक्ष.	मेष ♈ अश्विनी	भरणी	कृ. १	वृष ♉ कृ. ३	रोहिणी	मृ. २	मिथुन ♊ मृ. २	आर्द्रा	पु. ३	कर्क ♋ पु. १	पुष्य	आश्लेषा	सिंह ♌ मघा	पू.फा.	उ. १	कन्या ♍ उ. ३	हस्त	चि. २	तुला ♎ चि. २	स्वाती	वि. ३	वृश्चिक ♏ वि. १	अनु.	ज्येष्ठा	धनु ♐ मूला	पू. ०॥	पू. ३॥	उ. १॥	मकर ♑ उ. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	कुम्भ ♒ ध. २	शत.	पू. ३	मीन ♓ पू. १	उ. भा.	रेवती
मेष ♈ अ.	२८	३३	२७॥	१८॥	२१॥	२२॥	२५	१७	१८	२२॥	३०॥	२७	२७	३१	२२॥	१२	९	१३	२२॥	२५॥	२१॥	२४॥	३२॥	२१	२०	३२	३३	३१॥	२६॥	२७॥	२६	१९	१९	१५	१५	२०॥	३१॥	३३
भ.	३४	२८	२८	१९	२२॥	१४॥	१७	२६	२६	३०॥	२२॥	२४॥	२६	२४	३२	२०॥	२१	४	१३॥	२९॥	२०॥	२३॥	२३॥	२५॥	२७	२५	२६	३४	८	२७	२६	९॥	९	२०	२३	२८॥	२३॥	३३॥
कृ. १	२६॥	२८	२८	१८	१०	१६॥	१९	२०	२०	२४॥	२६॥	२२॥	२२॥	२६	२७	१६॥	१६॥	१८	२७॥	१५॥	१९॥	२२॥	२५॥	३१॥	३१॥	२४	२५	२०	१४	१२	११॥	२४	२४	२६	१८	२३॥	२६॥	१७॥
वृष ♉ कृ. ३	१७॥	१९	१९	२८	१९	२५॥	२३॥	२४॥	२४॥	२१	२३	१०	१७॥	२१	२२	२८	२८	३०॥	२९॥	१७॥	२१॥	२०॥	२३॥	२९॥	२०	१३॥	१४॥	८॥	२०॥	१८	१७	२९॥	२८॥	३०॥	२२॥	१९	२१	१३
रो.	२२॥	२२॥	१०	१८	२८	३६	३४	२९॥	२९॥	२६	२६	१२	१०॥	२४॥	२६	३२	३२	२७	२६	२१॥	१६॥	१५॥	२०॥	२३॥	१३	२०	२१	१२॥	२४	२६	२५	२७॥	२६	२२॥	३०॥	२७	२१	१७
मृ. २	२२॥	१३॥	१७॥	२५॥	३५	२८	२४	३०॥	२९॥	२६	१८	२१	१९॥	१५॥	२३॥	२९॥	३२	२०	२९	३१	२५॥	२४॥	२१॥	२४॥	१४	११	१२	१८	२३	३४	३३	२०	१९	२५	२९॥	२६	११	२५
मिथुन ♊ मृ. २	२५	१६	२०	२४॥	३४	२५	२८	३२	३१॥	२०	१२	१५	२३॥	१९॥	२७॥	३०॥	३३	२१	२१	३३	२७॥	१५	१२	१५	२१	१९	१८	२३	२६॥	३२	३१॥	१८॥	१३	२०	२३॥	२५॥	[illegible]	२४॥
आ.	१९	२७	२१	२५॥	२९॥	३१	३२	२८	२५	१३॥	२१	१४	२२॥	२८॥	२१॥	२४॥	२४॥	२७	२७	३४	२७	१४॥	१८	४	१६	२८	२७	२७	३०॥	३०॥	३०	२३॥	१९	१२	१७	१९	[illegible]	[illegible]
पु. ३	१९	२६	२२	२६॥	२८॥	२९॥	३०॥	२३	२८	१५॥	२२॥	२१	२२॥	२६॥	२०॥	२३॥	२४॥	२६॥	२६॥	३४	२८	१५॥	२१॥	७	१४	२७	२६	२६	२९॥	३०॥	३०	२४	१८॥	१३	१६	१८	[illegible]	[illegible]
कर्क ♋ पु. १	२१॥	२८॥	२४॥	२१	२३	२४	१८	१०॥	१४॥	२८	३४	२९॥	२३॥	२७॥	२१॥	१७	१८	२०	१९॥	२७	२१	२०	२६	११॥	१५	२८	२८॥	२८॥	२५	२६	२७	२०	१२॥	७	१०	१६	[illegible]	[illegible]
पुष्य	२९॥	२०॥	२६॥	२३	२३	१६	१०	१८	२०॥	३४	२८	२९	२५॥	२१॥	३०॥	२६	२७	१२	११॥	२६॥	२१	२०	१८	२१	२४	१८	१८॥	२८॥	२५	२३	२४	१२	४॥	१३॥	१८	२४	१८	२३
आ.	२५	२३॥	२१॥	१८	१०	१८	१२	१२	१६	२८॥	२८	२८	२२	२२॥	२४॥	२०	२०	२५	२४॥	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२९॥	२३	२३॥	१५॥	१२	१२	१३	२६	१७॥	१८॥	११॥	१७॥	२८	१२
सिंह ♌ म.	२६	२६	२२॥	१६॥	८॥	१६॥	२०॥	२०॥	१९॥	२२॥	२५॥	२२	२८	३०	२६॥	२२॥	२२॥	२८॥	२४॥	१०॥	१६॥	२२॥	२४॥	३२	३१	२६	२६	१५॥	३॥	४॥	५॥	१९॥	२४॥	२४॥	१८॥	२५॥	२५॥	१९
पू. फा.	३२	२४	२६	२०	२२॥	१४॥	१८॥	२६॥	२५॥	२८॥	२३॥	२२॥	३०	२८	३४	३०	२८॥	१४॥	१०॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	२४॥	२५	२४	२४	३१	१९	१८॥	१९॥	५॥	१०॥	१८॥	२४॥	३१॥	२६॥	३१॥
उ. फा. १	२३॥	३२	२७	२१	२४	२२॥	२६॥	२०॥	२०॥	२३॥	२२॥	२५॥	२६॥	३४	२८	२२	२३	२०॥	१६॥	२५॥	१६॥	२२॥	३०॥	१६॥	१६॥	३२	३२	३२	२०	२०	२१	१२॥	१७॥	११॥	१५॥	२२॥	३३॥	३१॥
कन्या ♍ उ. फा. ३	१४	२१॥	१७॥	२८	३१	२९॥	२९॥	२३॥	२३॥	१९	२८	२१	२३॥	३१	२३	२८	२७	२४॥	२३॥	३२॥	२३॥	१८	२६	१२	१४	२९॥	२८॥	२८॥	२६॥	२६	२५॥	१७	२३॥	१७॥	२१॥	१७॥	२८॥	२६॥
ह.	१०	२१	१८॥	२९	३०	३१	३१	२२॥	२३॥	१९	२८	२२	२४॥	२८॥	२३	२६	२८	२८	२७	३३॥	२४॥	२०	२६	१३	१५	२७	२६	२७॥	२५	२६	२५॥	१९॥	२६	१५॥	२०॥	१६॥	२६॥	२७॥
चि. २	१२	५	१९	२९॥	२७	१९	१९	२५	२३॥	१९	११	२५	२९॥	१५॥	२०॥	२३॥	२६	२८	२५	२६	३३॥	२८	११	२५	२७	१३	१२	२१	१८	१९	१८॥	१६॥	२३	३१	२३॥	१९॥	१९॥	१९॥
तुला ♎ चि. २	२१॥	१३॥	२७॥	२९॥	२७	१९	२०	२६	२४॥	१८॥	१०॥	२४॥	२५॥	११॥	१६॥	२३॥	२६	२६	२८	२७	३४॥	२४॥	६॥	२०॥	२७	१३	१२	२१	२५॥	२६	२५॥	२३॥	२५	३३	२५	१३	४॥	१३॥
स्वा.	२७॥	२९॥	१७॥	१९॥	२०	३१	३२	३३	३४॥	२८	२७॥	१३॥	१२॥	२४॥	२५॥	३२॥	३४॥	२७	२७	२८	२०	१०	२२॥	१७॥	२३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२८	२७	३२	२०	२३॥	१६॥
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	२२॥	१७॥	२५॥	२६॥	२६	२६॥	२०	२०	१६॥	१७॥	१९॥	१६॥	२३॥	२४॥	३४॥	३४	१८	२८	१७	१७	२१॥	२७	२१	२०	१३	१७॥	१६॥	१६	३०	३१॥	३३	२७॥	१५॥	१४	५॥
वृश्चिक ♏ वि. १	२३॥	२३॥	२०॥	१८॥	१४॥	२२॥	१२	१२॥	१२॥	१८	१८	१४	२१॥	२३॥	२०॥	१६	१७	२७	२३॥	७	१६	२८	२७	३१॥	२८॥	२२॥	२३॥	१६॥	१२	११	११	२५	२४	२५॥	१९॥	२६	२५	१६॥
अ.	३१॥	२१॥	२५॥	२३॥	२७॥	२०॥	१०	१५	१९॥	२५	१७	२०	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	१०	६॥	२०॥	१६	२७	२८	३१	२२॥	२०॥	२१॥	२९॥	२५	२६	२६	१२	११	२१	२४॥	२१	१४	३३
ज्ये.	१९	२४॥	३०॥	२८॥	२२॥	२२॥	१२	२	४	९॥	१९	२५	२१	२३॥	१५॥	११	११	२३	१९॥	१४॥	१९॥	३०॥	३०	२८	२१	२३॥	२४॥	२४॥	२०	२०	२०	२५	२४	१८	१०	१६॥	२७	२७
धनु ♐ मू.	१९	२७	३१॥	२०	१३	१३	२०	१५	११	१४	२४	२९॥	३०	२४	१६॥	१३	१३	२५	२५	२१	२५	२८॥	२१॥	२१	२८	२८	२७	२५॥	१६	१६॥	१६	२१	२८॥	२१॥	१४॥	१६	२५	२६॥
पू. षा. ॥	३३	२५	२५	१३॥	२०	१२	१९	२७	२७	३०	१९	२४	२६	२४	३२	२८॥	२७	११	११	२७	१९	२२॥	२२॥	२४॥	२८	२८	२७	३३	२४	२७॥	२७	७	१४॥	२३॥	२८॥	३०	२३	३१
पू. षा. ३॥	३४	२६	२६	१४॥	२१	१३	१८	२६	२६	३०॥	१९॥	२४॥	२६	२४	३२	२७॥	२६	१०	१०	२६	१८	२३॥	२३॥	२५॥	२७	२७	२८	३४	२५	२८॥	२७॥	७॥	१३॥	२२॥	२७॥	३०॥	२३॥	३१॥
उ. षा. १	३२॥	३४	२०	८॥	१२॥	१९	२४	२६	२६	३०॥	३०॥	१६॥	१४॥	३०	३२	२७॥	२७॥	२०	२०	१८	१२	१७॥	३१॥	२५॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१७	१५	१६॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३१॥	२३॥
मकर ♑ उ. षा. ३	२८	२९॥	१५॥	२०	२४	३०॥	२७॥	२९	२९॥	२७	२७	१३	३॥	१९	२०	२५	२५	१७॥	२४॥	२२॥	१६॥	१३	२७	२१	१६॥	२४	२५	१९	२८	२६	२५	२५॥	२४	२४॥	३०॥	२९॥	२९॥	२१॥
श्र. १॥	२८	२७	१४॥	१९	२५	३४	३१	२८	२९॥	२७	२५	१४	५॥	१७॥	१९	२४	२५	१९	२५	२२॥	१५॥	१२	२७	२२	१७॥	२४॥	२५॥	१६	२५	२८	२७	२७	२६	२५॥	२८॥	२७॥	२८॥	२१॥
श्र. २॥	२७	२६	१३॥	१८	२४	३३	३०॥	२८	२९	२८	२६	१६	६॥	१८॥	२०	२३॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२	१५	१२	२७	२२	१७	२४	२४॥	१५	२४	२७	२८	२८	२५॥	२५	२८	२८॥	२९॥	२२॥
ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१६॥	२३॥	२२	२१	१३	२७	१९॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१५॥	२१॥	२३॥	२८	२५	११	२५	२१	७	७॥	१६॥	२५॥	२५	२६	२८	२३॥	३०॥	२६	२६॥	१५॥	२२॥
कुम्भ ♒ ध. २	२०	११	२६	३०॥	२७	१९	१३	२०	१८॥	१३॥	५॥	१९॥	२५॥	११॥	१७॥	२३॥	२५	२३	२४	२६	३०॥	२४	१०	२४	२८॥	१४॥	१३॥	२३॥	२५॥	२५	२४	२४॥	२८	३३	२८॥	२२	८	१५
शततारा	१५	२१	२७	३१॥	२४॥	२६	२०	१३	१३	८	१४॥	२०॥	२५॥	१९॥	१२॥	१८॥	१४॥	३१	३२	२५	३२	२५॥	२१	१९	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	३५॥	२५॥	२५	३०॥	३२	२८	१९	९॥	२१	१७
पू. भा. ३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२५॥	१८	१८	१२	२१	१३॥	१९॥	२५॥	१५॥	२१॥	२१॥	२३॥	२४॥	३२	२६	१९॥	२५॥	१०	१४॥	२८॥	२७॥	२९॥	२१॥	२९॥	२९॥	२७	२८॥	१८	२८	१७॥	२३॥	२१
मीन ♓ पू. भा. १	२१॥	२८॥	२३॥	१९	२६	२६	२५॥	१८	१८	१८	२६	१८॥	२४॥	३०॥	२०॥	१५॥	१५॥	१७॥	११॥	१९	१३	२५	३१	१५॥	१४	२८	२८॥	३०॥	२८॥	२६॥	२७॥	२५॥	१८	७	१६॥	२८	३३	२०॥
उ. भा.	३१॥	२२॥	२५॥	२१॥	२५	१७	१६॥	२५॥	२७	२७	२३	२१	२४॥	२२॥	३२॥	२७॥	[illegible]	८॥	२॥	२०॥	१२	२४	२५	२७	२४	२२	२२॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	१३॥	६	१७	२१॥	३२	२८	३४
रेवती	३२	३१॥	१७॥	१३	१६	२५	२४॥	२४॥	२५॥	२५॥	२७	१४	१९	२९॥	२९॥	[illegible]	२६॥	१८॥	१२॥	१२॥	४॥	१६॥	३३	२८	२६॥	२९	२९॥	२१॥	१९॥	२०॥	२१॥	२१॥	१४	१६॥	१८	२८	३३	२८

भारत के प्रसिद्ध नगरों का मध्य रेखा का बलान्तर

नगर	अन्तर	नगर	अन्तर	नगर	अन्तर	नगर	अन्तर
जोनपुर	०	भागलपुर	+१८	त्रिविन्द्रम	२२	पेशावर	—४४
आजमगढ़	+१	भोपाल	—२०	देहली	—२१	भावनगर	—४१
अयोध्या	—१	मथुरा	—१९	नाभा	—२५	पोरबन्दर	—५२
बलरामपुर	—१	झांसी	—१६	पटियाला	—२४	द्वारिका	—५४
काशी	+२	तंजावर	—१४	पंढरपुर	—२८	छोटी सादड़ी	—३१
गोरखपुर	+३	दरभंगा	+१४	नीमच	—३०	भीलवाड़ा	—३१
प्रयाग	—३	धौलपुर	—१८	किशनगढ़ (रा)	—३०	सीतामढ़	—२८
गाजीपुर	+४	नागपुर	—१३	काश्मीर	—३१	आसाम	+३२
अमेठी	—४	नैनीताल	—१२	कोल्हापुर	—३३	रतलाम	—३०
बहराईच	—४	पटना	+११	जम्मू	—३१	जावरा	—३०
चित्रकूट	—७	पूर्णियां	+२०	जोधपुर	—३८	नागौर	३५
कानपुर	—९	कुरुक्षेत्र	—२६	अजमेर	—३१	नसीराबाद	—३१
बांदा	—९	कोचीन	—२५	अमृतसर	—३१	भीन्डर	—३३
गया	+१०	कोटा	—२७	अहमदनगर	—३१	श्री माधोपुर	—२९
जबलपुर	—१०	जयपुर	—२७	आबू	—३९	शोलापुर	—२७
काठमांडूनेपाल	+११	जींद	—२४	उदयपुर	—३५	होशंगाबाद	—१९
ग्वालियर	—१७	अलवर	—२३	कांकरोली	—३४	हैदराबाददक्षिण	—१६
जगन्नाथपुरी	+१३	इन्दौर	—२७	प्रतापगढ़(रा)	—३१	हातरस	—१८
अमरावती	—१९	उज्जैन	—२७	फरीदकोट	—३१	सोजत मारवाड़	—३५
अलीगढ़	—१९	औरंगाबाद	—२८	बड़ौदा	—३७	सूरत	—३९
अल्मोड़ा	—११	कपूरथला	+२८	बम्बई	—३८	सिरोही	—३८
आगरा	—१८	कलकत्ता	+२३	बांसवाड़ा	—३२	सागर	—१५
इटावा	—१५	बर्दवान	+२२	बीकानेर	—३६	रायपुर (M.P.)	—३
कटक	+१३	बूंदी	—२७	नाथद्वारा	—३४	फतेपुर (राज)	—३०
कांची	—१९	मंडी	—२२	नासिक	—३५	धूलिया	—३१
फरूकाबाद	—१२	झालरापाटन	—२६	पूना	—३४	जैसलमेर	—४६
बरेली	—१२	टौंक	—२७	अहमदाबाद	—४०	चित्तौड़गढ़	—३१
[illegible]	—२०	टौंका	—२५	जामनगर	—५०	खण्डवा	—२५
						कच्छभुज	—५१

कई स्थलों का समय जैसे अमेरिका वा रूस अन्तर्गत देशों का टाईम ग्रीष्म ऋतु का है जिसमें करीबन एक घन्टा का विशेष फर्क रहता है।

भारत के स्टेन्डर्ड टाईम् से विदेशों का स्टेन्डर्ड टाईम विवरण

नोट—भारत तथा विदेशी स्टेन्डर्ड टाईम का ऋण — व धन + संकेत अनुसार जोड़ने व घटाने से, उपयुक्त टाईम सही बैठता है।

देश		घ० मि०	देश		घ० मि०
चीन	+	२-३१	ढाका (पाकिस्तान)	—	०-३२
चेकोस्लाविया	—	४-३२	बंगलादेश	+	०-३१
आस्ट्रेलिया	—	४-२९	फिलापाईन	+	२-३२
वेल्जीयम्	—	४-३०	रोडेशिया	—	३-३०
बर्मा	+	१-०१	रोमानिया	—	३-३१
कोलम्बिया	—	१०-३०	जैदा	—	२-३०
क्यूबा	—	१०-३०	तेहरान	—	१-३२
डेनमार्क	—	४-३०	सिंगापुर	+	२-१०
इथोपिया	—	२-२८	सोमाली	—	२-३०
फिन्लेण्ड	—	३-३०	साउथ अफ्रीका	—	३-३२
घाना	—	५-३०	स्पेन	—	४-३०
ग्रींस	—	३-३०	सूडान	—	३-३०
हांगकांग	+	२-३०	स्वीडन	—	४-३२
हंगरी	—	४-३०	स्वीजरलेण्ड	—	४-३०
मास्को	—	२-३२	टांगानिका	—	२-३०
इर्कस्तत	+	२-३०	थाईलेण्ड	+	१-३०
जर्मनी	—	४-३०	टर्की	—	३-३०
फ्रांस	—	४-३०	युगान्डा	—	२-३०
ईरान	—	२-१०	अदन	—	२-३०
ईराक	—	२-३०	अफगानिस्तान	—	१-१०
इटली	—	४-३०	अर्जेन्टाईना	—	८-३२
जापान	+	३-३०	न्यू साउथ वेल्स	+	४-३०
जोर्डन	—	३-३०	नार्दन टेरीटरी	+	४-१०
कोरिया	+	२-३०	वेनेजूएला	—	९-३२
कुवेत	—	२-३०	पश्चिम अफ्रीका	—	५-३२
मलाया	+	२-१०	युगोस्लाविया	—	४-३१
सारवक	+	२-३०	हालेन्ड	—	५-१०
			आईसलेन्ड	—	६ ३०

सन्तान प्राप्ति योग—लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश वा गुरु पंचम भाव को देखते हो, उस समय, इन ग्रहों की दशांतर्दशा में पुत्र प्राप्ति का योग बनता है जब गोचर काल में लग्न का पति पञ्चमेश के साथ दृष्टि सम्बन्ध करे तो पुत्र प्राप्ति होती है। पंचम का पति वा उस स्थान की राशि का पति नवांशक में बली वा राशिपति पंचम स्थान का एवं पञ्चमेश ग्रह दोनों गोचर में आपस में दृष्टि सम्बन्ध करे तब भी पुत्र प्राप्ति हो जावे।

सन्तान न हो तो क्या कारण—यदि सूर्य ग्रह सन्तान विषय में बाधा करता हो तो शिव मूर्ति का पूर्व जन्म में खण्डन किया हैं। वा पितृजों का अपमान किया है। इसके दोष से स्त्री के पेट में गाँठ पड़ जाती है वा कृश हो जाती है चन्द्रमा यदि बाधक हो तो भगवती उमा की मूर्ति का खण्डन, वा किसी समय पूर्व जन्म में गुरुजन व माता पिता का वृहद अपमान किया हो, या मित्र के साथ धोखा किया हो. इस कारण सन्तानोत्पत्ति नहीं होती हैं। इस ग्रह से स्त्री का गर्भ धारण ग्रह सृजन प्राप्त करता है।

यदि मंगल ग्रह सन्तान में बाधा उत्पन्न करता हो तो पूर्व जन्म में ग्राम देवता का अपमान, स्वामी कार्तिकेय का अपमान किया। इस कारण सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इन दोषों से कोई शत्रु गर्भ योनि मंत्र तंत्र से बन्द कर देता है। यदि बुध ग्रह के कारण सन्तान प्राप्ति न हो तो, पूर्व जन्म में किसी बिल्ली वा बिलाव का वध किया, या किसी बच्चे को अधिक पीटने से उसके श्राप से सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इसमें स्त्री के गर्भ यन्त्र में प्रजनन शक्ति नहीं रहती है। यदि गुरु ग्रह बाधक हो तो, इष्ट देवता का अपमान ब्राह्मण का श्राप, फल युक्त वृक्ष काटने से सन्तान उत्पन्न नहीं होती, इसमें गर्भ यन्त्र में मांस वृद्धि हो जाती है। शुक्र यदि सन्तान बाधक हो तो किसी सती माता का अपमान, वा बैल गाय के वध के कारण सन्तान प्राप्ति नहीं होती, इसमें गर्भ धारण यन्त्र कुम्हला जाता है। वा पुरुष को वीर्य सम्बन्धी बिमारी होती है। शनि ग्रह बाधक हो तो, पीपल के काटने से, वा भूत प्रेतादिक बाधा से अथवा यम दोष से सन्तान नहीं होती, इससे पुरुष नपुंसक होता है। एवं स्त्री प्रजनन युक्त नहीं होती है। राहु वा केतु हो तो सर्प के मारने वा ब्राह्मण को जहर देने के दोष से सन्तान प्राप्ति नहीं होती इससे गर्भ यन्त्र पर चर्बी चढ़ जाती है।

विशेष नोट—इन दोषों की शान्ति कैसे हो, इसका किस कारण से दोष दूर हो, व सन्तान प्राप्ति हो इसकी विशेष जानकारी कार्यालय द्वारा करें एवं सन्तान प्राप्ति के वास्ते विशेष कर प्रजापति देवता का आराधन विधिवत् करें।

स्त्री प्राप्तियोग—जिसकी जन्म कुण्डली में द्वितीय, व्यय, सप्तम वा नवम, का पति वा इन राशियों का पति त्रिकोण, मूल उच्च में गुरु दृष्टि युक्त हो. अथवा गोचर में यह मूल त्रिकोण में आ जाय उस समय स्त्री प्राप्ति होती है। शुक्र दृष्टि से युक्त यह ग्रह हो तो सौभाग्यवती सुन्दर पुत्र युक्ता. यदि बुध दृष्टि युक्त हो तो लड़ाकू चरित्रहीन सन्तानहीन स्त्री प्राप्त होती है।

भार्या लाभ किस दिशा से—सप्तमेश ग्रह वा राशि की दिशा, सप्तमेश जिस राशि में हो, उसकी दिशा, शुक्र जिस राशि में हो उस की दिशा में स्त्री लाभ वा गुरु यदि सप्तम में हो तो उसमें पंचम ग्रह की दिशा में भी स्त्री लाभ होता है।

स्त्री न हो ऐसे योग—यदि सप्तम भाव में अष्टम राशि का शुक्र सप्तम में वृष राशि का बुध, वा नीच का गुरु, शनि मंगल कर्क में, ऐसे ग्रह दशम वा चतुर्थ स्थान के राशिपति ग्रह से दृष्टि सम्बन्ध करते हों तो स्त्री लाभ नही होता।

नपुंसक योग—शनि युक्त शुक्र दशम स्थान में वा आठवें या शनि छठवें वा व्यय में नीच का विषम राशि का सूर्य सम राशि का चन्द्रमा विषम राशि सूर्य सम का मंगल विषम राशि गत चन्द्रमा सम राशि गत बुध यह नपुंसक योग करता है।

पिता के मृत्यु समय का ज्ञान—नवम स्थान में सूर्य वा भौम हो, नवमेश द्विस्वभाव राशिगत हो, वा दो पाप ग्रहों के साथ हो, या गोचर में इन्हीं राशियों में राजयोग कर्त्ता ग्रह हो तो पिता का मारक कहे।

स्त्री नपुंसक योग—यदि नवम स्थान में शत्रु क्षेत्री शुक्र वा द्वितिय स्थान में उच्च का शनि वा पंचम स्थान में शत्रु क्षेत्री बुध हो तो स्त्री नपुंसक होती है। (भ्रातृकष्ट योग) तृतिय स्थान में नीच व शत्रु क्षेत्री ग्रह वा तृतीय स्थान से पंचम वा नवम स्थान में शुक्र शत्रु क्षेत्री हो तो भ्रातृ नाश वा कष्ट होता है।

कार्यप्राप्ति वा नौकरी प्राप्ति योग—लग्नेश पंचमेश भाग्येश, राज्येश एवं लाभेश का कहीं भी किसी भी स्थान पर सहदृष्टि सम्बन्ध हो, उसकी दशान्तर्दशा वा गोचर में त्रिकोण भ्रमण समय नौकरी, वा व्यापार योग होता है।

हवाईयान वा सेना में नौकरी योग—षष्ठेश मंगल वा शनि उच्च का हो तो सेना में अच्छा पद प्राप्त कर सकता है कमाण्डर चीफ का यदि षष्ठेश मे और सोम्य ग्रह उच्च के वा स्वक्षेत्री हो तो हवाईयान नौकरी प्राप्त करता है।

डाक्टर वैद्य, ज्योतिषी योग—गुरु से चतुर्थ, वा लग्न से चतुर्थ, स्थान में सूर्य बुध योग कर्क राशि में हो. वा चन्द्रमा से अष्टम स्थान में ऐसा योग हो तो, उपरोक्त पदवी प्राप्त होती है।

यश प्राप्ति योग—राज्येश का मालिक, मूल, त्रिकोण, स्वक्षेत्री होकर, व्यय भाव में पड़े तो, देश देशान्तर में यश प्राप्ति होती है।

"महादरिद्र योग" लग्न से चौथे कोई ग्रह न हो, शुक्र से दशवें कोई ग्रह न हो, एवं चन्द्रमा से अष्टम में कोई ग्रह न हो, ऐसा जातक जन्म २ तक दरिद्रता प्राप्त करता है।

पुरुष जातक कोष्ठक ग्रह फलम्

स्थान	रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि राहु केतु
लग्न	शरीर पीड़ा	शरीर पीड़ा	रक्तकोप	कान्ति	कान्ति	कीर्तिमान	बहु दुःख
द्वितीय	अति दुःख	बहुत दुख	दुःख	धन प्राप्ति	बहु धन	धनवान	दुःख
तृतीय	निरोगी	कीर्तिवंत	बुद्धिहीन	धनवान	उत्तम बुद्धि	बहु रूपिया	स्त्री प्रिय
चतुर्थ	शरीर दुःख	सं भोगी	शरीर दुःख	संभोगी	सुख युक्त	बुद्धिवान	शरीर पीड़ा
पंचम	बहुत क्रोधी	बहु पुत्र	सन्तान नाश	संतान थोड़ी	बहु प्रजा	बहुत सुख	सन्तान नाश
षष्ठम्	शत्रु नाश	आत्म जीवी	शत्रु नाश	बुद्धि वान	शरीर पीड़ा	रोगी	शत्रु पूज्य
सप्तम	दुष्ट कर्मी	स्त्री रूपवान	स्त्री नाश	रोगी	पुत्र वरन	स्वभा	स्त्री दुष्ट कर्म
अष्टम	मृत्युनाश	महा अरिष्ट	महाभय	अरिष्ट	शस्त्र घात	बीमार	रोगी
नवम	अधर्मी	धर्म बुद्धि	महादुष्ट	धर्मात्मा	धार्मिक बुद्धि	धार्मिक	धर्महीन
दशम	अमल दुख	कीर्तिवान	कुपुत्र	उत्तम कांति	शुभ कर्म	सम्पति वान	दुष्ट बुद्धि
एकादश	राज मैत्री	धनवान	राज सेवा	विचारवान	आयु वृद्धि	गुणवान	कीर्तिमान
द्वादश	दुष्ट स्वभाव	कामी	पाप कर्म	दरिद्री	कृशाङ्ग	रोगी	निरंकुश

स्त्री जातक कोष्ठक ग्रह फलम्

स्थान	रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि राहु केतु
लग्न	वधवा	अल्पायु	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	सौभाग्य	,,
द्वितीय	दरिद्री	बहुपुत्र	दौर्भाग्य	सौभाग्य	सौभाग्य	लाभ	,,
तृतीय	पुत्रवती	धनवती	धनयुक्त	धन युक्त	धन	धन	,,
चतुर्थ	दरिद्री	दुष्ट भाव	अल्प संख्यक	बहु सौभाग्य	बहुसौभा	सौभाग्य	,,
पंचम	पुत्रनाश	बहुपुत्र	पुत्र नाश	उत्तम	बहुत धन	धनवती	,,
षष्ठम	धनवान	विधवा	धन युक्त	कलहा	बहुफल	मृत्यु	,,
सप्तम	जाया	प्रवासी	विधवा	नाश	वैश्या	वैश्या	,,
अष्टम	विधवा	वियोग	धनयुक्त	स्वर्गीय	मृत्यु	दौर्भाग्य	,,
नवम	धर्म बुद्धि	पुत्रयुक्त	धर्मंव	उत्तम भोग	भय	सुख	,,
दशम	कर्म	पापयुक्त	मृत्यु	धनवती	लाभ	लाभ	,,
एकादश	आय	धनयुक्त	बहुपुत्र	सुखी	सुखी	भय	,,
द्वादश	व्यय	दिवान्ध	दुष्ट कर्म	सुपुत्र	कुलटा	लाभ	,,

ताराबल विचार—सभी शुभ कार्यों में ताराबल विचार अवश्यमेव करे जन्म नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनकर शुभ वा अशुभ विचार करें।

१-१०-१९	२.११ २०	३ १२-२१	५-१४-२३	७-१६ २५	६-१५-२४	४-१३-२२	८-१७-२६	९-१८-२७
जन्मभे	सम्पत	दुःखम्	अवतरी	मृत्यु	साधन	कुशलं	मित्रादि	अतिमित्रादि
शुभम्	शुभम्	अशुभम्	अशुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्	शुभम्	शुभम्

ग्रह प्रकरण

विंशोतरी दशा प्रकार—अश्विनि से जन्म नक्षत्र तक गिनती करे, २ घटाकर ९ का भाग देवे शेष १ बचे तो सूर्य दशा २ में चन्द्र दशा ३ में भौमदशा ४ में राहु की दशा ५ शेष में गुरु की दशा ६ शेष में शनि दशा ७ शेष में बुध दशा ८ शेष में केतु दशा ० में शुक्र दशा जाने। सूर्य की ६.वर्ष चन्द्र की १०,भौम ७,राहु १८,गुरु १६, शनि १९,बुध १७, केतु ७,शुक्र २० वर्ष के क्रम से दशा होती है।

योगिनी दशा—मंगला, पींगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा यह आठ होती हैं। इनके क्रम से स्वामी, चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, राहु,केतु होते है। अश्विनि से जन्म नक्षत्र तक गिने तीन और मिला कर आठ का भाग देवे, शेष बचे वह क्रम से मंगला पींगला से गिनती करके होती है। उदाहरण, जैसे जन्म नक्षत्र पुष्य है। अश्विनि से गिनती किया, ८ हुए ३ और जोड़े ११ हुए ८ का भाग दिया शेष तीन बचे, तो क्रम से धान्या की दशा हुई।

ग्रह फल कब देते हैं

सूर्यादि नवग्रह १२ राशियों में गोचर भ्रमण करते है। जिनका फल आदि मध्यान्त होता है। क्रम इस प्रकार है। सूर्य एक राशि १ महिने में भोग करता है। सो प्रथम ५ दिन फल देता है। चन्द्रमा एक राशि को सवा दो दिन भोगता है। सो अन्त की ३ घड़ी फल देता है। मंगल एक राशि को डेढ़ महिना भोगता है। सो पहले आठ दिन फल देता है। बुध एक राशि को एक मास भोगता है। सो अन्त के चार दिन फल देता है। गुरु १ राशि को तेरह मास भोगता है। यह बीच में चार मास फल दाता होता है। शुक्र एक राशि को १ मास भौगता है। सो मध्य के सात दिन फल देता है शनि एक राशि को तीस मास भौगता है। सो अन्त के सात मास फल देता है। राहु व केतु एक राशि पर अठारह मास तथा मुंथा एक राशि पर एक मास रहता है सो क्रम से अन्त के दो मास व दो दिन फलदायक होते हैं।

समान गोत्र प्रवर में विवाह निषेध—भारतीय धर्मशास्त्रकारों ने समान गोत्रप्रवर के वर-वधू में विवाह होना महापातक बतलाया है। आपस्तम्ब का कथन है कि समान गोत्रप्रवर विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होता है। तथा वर-वधू ब्राह्मणत्व से च्युत हो जाते हैं। अन्य धर्मशास्त्रकारों ने भी कहा है कि तुल्य मातृ-गोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है अतएव इनमें विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसे वर-वधू से उत्पन्न सन्तान को चाण्डाल कहा गया है। इसी से सगोत्र विवाह का निषेध किया गया है।

नाडीपरिहारः ॥ द्व्यर्क्षे ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्याङ्के । ॥ अथ होडाचक्रं वरकन्यानक्षत्रमेलापकविचारोपयोगिकम् । ॥ रौप्यं ... ॥

नक्षत्रं	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
नामा वर्णाः	चू. चे. चो. ला.	ली. लू. ले. लो.	अ. ई. उ. ए.	ओ. वा. वी. वु.	वे. वो. का. की.	कु. घ. ङ. छ.	के. को. हा. ही.	हू. हे. हो. डा.	डी. डू. डे. डो.	मा. मी. मू. मे.	मो. टा. टी. टू.	टे. टो. पा. पी.	पू. ष. ण. ठ.	पे. पो. रा. री.	रू. रे. रो. ता.	ती. तू. ते. तो.	ना. नी. नू. ने.	नो. या. यी. यू.	ये. यो. भा. भी.	भू. ध. फ. ढ.	भे. भो. जा. जी.	खी. खू. खे. खो.	गा. गी. गू. गे.	गो. सा. सी. सू.	से. सो. दा. दी.	दू. थ. झ. ञ.	दे. दो. चा. ची.
राशिः	मेष	मेष	मेष १ वृष ३	वृष	वृष २ मिथु २	मिथुन	मिथु. ३ कर्क १	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह १ कन्या ३	कन्या	कन्या २ तुला २	तुला	तुला ३ वृश्चि. १	वृश्चिक	वृश्चिक	धन	धन	धन १ मकर ३	मकर	मकर २ कुम्भ २	कुम्भ	कुम्भ ३ मीन १	मीन	मीन
वर्णः	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि १ वैश्य ३	वैश्य	वैश्य २ शूद्र २	शूद्र	शूद्र ३ विप्र १	विप्र	विप्र
वश्यः	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प.	चतुष्प	चतु. २ मान. २	मानव	मान. १ जल. ३	जलचर	जलचर	चतुष्प.	चतुष्प.	चतु. १ मान. ३	मानव	मानव	मानव	मान. ३ कीट १	कीट	कीट	मानव	मान. ॥ चतु. ३॥	चतुष्प.	चतु. १॥ जल २॥	ज. च. २ मान. २	मानव	मान. ३ जल १	जलचर	जलचर
योनिः	अश्व.	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो. वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीशाः	भौमः	भौमः	भौमः १ शुक्रः ३	शुक्रः	शुक्रः २ बुधः २	बुधः	बुधः ३ चन्द्रः १	चन्द्रः	चन्द्रः	सूर्यः	सूर्यः	सूर्यः १ बुधः ३	बुधः	बुधः २ शुक्रः २	शुक्रः	शुक्रः ३ भौमः १	भौमः	भौमः	गुरुः	गुरुः	गुरुः १ शनिः ३	शनिः	शनिः	शनिः	शनिः ३ गुरुः १	गुरुः	गुरुः
गणः	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

गुरुसूर्यबलस्य विचारः । कन्याविवाहे कुमारस्योपनयने च गुरुबलम् ॥ कुमारस्योद्वाहोपनयनयोः सूर्यबलमुभयोश्चन्द्रबलञ्च विमृश्यमिति ।

१ वर्णस्य गुणाः ॥ वरस्य (कन्यायाः)

वर्णाः	वि.	क्ष.	वै.	शू.
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः ॥ वरस्य

वश्याः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतु.	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

विवाहेरविचन्द्रगुरुशुद्धिचक्रम् ।

रविः	चन्द्रः	गुरुः	ग्रहाः
३।६ १०।११	३।६।७ १०।११	२।५।७ ९।११	शुभ-स्थानानि
१।२।५।७ ९	१।२ ५।९	१।३ १०।६	पूज्य-स्थानानि
४ ८।१२	४ ८।१२	४ ८।१२	निन्दित-स्थानानि

३ तारायाः गुणाः ॥ वरस्य (कन्यायाः)

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्रकस्य गुणाः ॥ वरस्य (कन्यायाः)

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
बृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

४ योनिकूटस्य गुणाः ॥ वरस्य (कन्यायाः)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जा.	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	[illegible]	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	१	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	४	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	३	२	२	२	२	४

६ गणगुणाः । (कन्यायाः)

	दे.	म.	रा.
दे.	६	५	१
म.	६	६	०
रा.	०	१	६

८ नाडीगुणाः । (कन्यायाः)

ना.	आ.	म.	अं.
आ.	०	८	८
म.	८	०	८
अं.	८	८	०

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

ट ५	च. ५	क. ५	अ. ७
श्वान	सिंह	मार्जार	गरुड
श. ४	य. ४	प. ५	त. ५
अवि	मृग	मूषक	सर्प

७ राशिकूटस्य गुणाः ॥ वरस्य ॥ (कन्यायाः)

राशयः	१ मे.	२ वृ.	३ मि.	४ क.	५ सिं.	६ कं.	७ तु.	८ वृ.	९ ध.	१० म.	११ कुं.	१२ मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रमिदम् ।

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	बृह.	शुक्रः	शनिः	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सूर्यः बुधः	सू. चं. बृ.	सूर्यः शुक्रः	सूर्यः मं. चं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः	मित्राणि
बुधः	मं. बृ. शु. श.	शुक्रः शनिः	मं. बृ. शनिः	शनिः	भौमः बृह.	गुरुः	समाः
शुक्रः शनिः	०	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं. मं.	शत्रवः

ग्रहों के लिये होम समिधा—सूर्य के लिए आक (अकवन), चन्द्रमा के लिए पलाश, मंगल के लिए खैर, बुध के लिए अपामार्ग (चिचड़ी), गुरु के लिए पीपल, शुक्र के लिए गूलर, शनि के लिए शमी, राहु के लिए दूर्वा तथा केतु के लिए कुशा से होम करना चाहिए। मधु तथा घी लगाकर उपरोक्त समीधाओं से प्रत्येक ग्रह के लिए १०८या २८हवन तत्तद् मन्त्रों से करना चाहिए। यदि हवन सामग्री अधिक हो तो १००८ हवन प्रत्येक ग्रह के लिए करना चाहिए।

अवकहडाचक्रम्

नक्षत्र	आश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशीर्ष	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
नाडी	आद्यनाडी	मध्यनाडी	अंत्यनाडी	अंत्यनाडी	मध्यनाडी	आद्यनाडी	आद्यनाडी	मध्यनाडी	अंत्यनाडी
योनि	अश्वयोनि	गजयोनि	मेषयोनि	सर्पयोनि	सर्पयोनी	श्वानयोनि	मार्जारयोनि	मेषयोनि	मार्जारयोनि
गण	देवगण	मनुष्यगण	राक्षसगण	मनुष्यगण	देवगण	मनुष्यगण	देवगण	देवगण	राक्षसगण
आराध्यवृक्ष	कुचलावृक्ष	आंवला	गूलर	जामून	खैर	कृष्णागरु	बसूर	पिंपल	नागचंपा,
पीडापरिहारार्थ दान	अन्नदान	श्वेतवस्त्र	सुवर्ण	दूध	खीर (क्षिप्रा)	काली गाय	उडीद, तिल	रक्तवस्त्र	तिलधेनु
नक्षत्रदेवता व तारा	अश्विनीकुमार ३	यम (३)	अग्नि (६)	ब्रह्मा (५)	चंद्र (३)	शंकर (१)	अदिति (४)	बृहस्पति (३)	सर्प (५)
चरणपरसे पीडा दिवस	९ १० ३ ७	१० ० ९ २१	९ १० ७ २१	७ ९ २० २८	३० १५ ७ २१	० १५ ७ ७	७ २१ २० २२	७ ७ १० २०	० १ ० ६०
चरणांक	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
चरणाक्षर	चू चे चो ला	ली लू ले लो	आ ई ऊ ए	ओ वा वी वू	वे वो का की	कू घ ङ छ	के का हा ही	हू हे हो डा	डी डू डे डो
नक्षत्रचरणके स्वामी	मं शु बु चं	र बु शु मं	गु श श गु	मं शु बु चं	र बु शु मं	गु श श गु	मं शु बु चं	र बु शु मं	गु श श गु

राशी / राश्यधिपति / वर्ण / वश्य	उदयकाल	
मेष / मंगल / क्षत्रियवर्ण / चतुष्पाद — आ ला इ	उदयकाल	२८ से वर्ग
वृषभ / शुक्र / वैश्यवर्ण / चतुष्पाद — वा वा	उदयकाल	२९ से वर्ग
मिथुन / बुध / शूद्रवर्ण / मानव — काछा	उदयकाल	३२ से ३६ वर्ग
कर्क / चंद्र / विप्रवर्ण / जलचर — डा हा	उदयकाल	२९ से २८ वर्ग

नक्षत्र	मघा	पूर्वाफा	उत्तराफा	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
नाडी	अंत्यनाडी	मध्यनाडी	आद्यनाडी	आद्यनाडी	मध्यनाडी	अंत्यनाडी	अंत्यनाडी	मध्यनाडी	आद्यनाडी
योनि	मूषकयोनि	मूषकयोनि	गोयोनि	महिषीयोनि	व्याघ्रयोनि	महिषीयोनि	व्याघ्रयोनि	मृगयोनि	मृगयोनि
गण	राक्षसगण	मनुष्यगण	मनुष्यगण	देवगण	राक्षसगण	देवगण	राक्षसगण	देवगण	राक्षसगण
आराध्यवृक्ष	वटवृक्ष	छोला	पायरी वृक्ष	जुही	बेलवृक्ष	अर्जुनवृक्ष	नागकेशर	नागकेशर	सांबरवृक्ष
पीडापरिहारार्थ दान	गुड, नमक	अन्नदान	मोतीदान	अन्नदान	पीतवस्त्र	लाल गाय	ताम्रदान	शय्यादान	उपानह [जूता]
नक्षत्रदेवता व तारा	पितर (५)	भग (२)	अर्यमा (२)	सूर्य (५)	त्वष्टा (१)	वायु (१)	इंद्राग्नि (४)	मित्र (४)	इंद्र (३)
चरणपरसे पीडा दिवस	२० ० १७ २०	२० १५ १२ ३०	३७ ३७ ७ ५	१५ ५ ५ ५२	१० ० ५ ५६	० १७ २१ ०	१५ १८ ५ १३	३ ७ ३५ २४	० ५ २६ ५५
चरणांक	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
चरणाक्षर	मा मी मू मे	मो टा टी टू	टे टो पा पी	पू षा णा ठा	पे पो रा री	रु रे रो ता	ती तू ते तो	ना नी नू ने	नो या यी यू
नक्षत्रचरणके स्वामी	मं शु बु चं	र बु शु मं	गु श श गु	मं शु बु चं	र बु शु मं	गु श श गु	मं शु बु चं	र बु शु म	गु श श गु

राशी / राश्यधिपति / वर्ण / वश्य	उदयकाल	
सिंह / सूर्य / क्षत्रियवर्ण / वनचर — मा टा	उदयकाल	२२ से २९ वर्ग
कन्या / बुध / वैश्यवर्ण / मानव — पा ठा	उदयकाल	२३ से ३६ वर्ग
तुला / शुक्र / शूद्रवर्ण / मानव — रा ता	उदयकाल	२९ से वर्ग
वृश्चिक / मंगल / विप्रवर्ण / कीटक — ना या	उदयकाल	२८ से ३२ वर्ग

नक्षत्र	मूळ	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शततारका	पूर्वाभाद्रपदा	उत्तराभाद्रपदा	रेवती
नाडी	आद्यनाडी	मध्यनाडी	अंत्यनाडी	अंत्यनाडी	मध्यनाडी	आद्यनाडी	आद्यनाडी	मध्यनाडी	अंत्यनाडी
योनि	श्वानयोनि	वानरयोनि	नकुलयोनि	वानरयोनि	सिंहयोनि	अश्वयोनि	गौयोनि	सिंहयोनि	गजयोनि
गण	राक्षसगण	मनुष्यगण	मनुष्यगण	देवगण	राक्षसगण	राक्षसगण	मनुष्यगण	मनुष्यगण	देवगण
आराध्यवृक्ष	रालका वृक्ष	बेतवृक्ष	कटहलवृक्ष	अर्क (रुई)	शमीवृक्ष	कदंववृक्ष	आम्रवृक्ष	कडवा नीम	मोहका वृक्ष
पीडापरिहारार्थदान	लोहदान	कंबलदान	महिषीदान	ब्राह्मणभाजन	सुवर्ण-रौप्यदान	शर्करादान	सुवर्णदान	बकरीदान	महादान
नक्षत्रदेवता व तारा	निर्ऋति (११)	उदक (२)	विश्वेदेव (२)	विष्णु (३)	वसु (४)	वरुण (१००)	अजचरण (२)	अहिर्बुध्न्य (२)	पूषा (३२)

नक्षत्र	चरणपरसे पीडादिन	चरणांक	चरणाक्षरे	नक्षत्रचरणस्वामी
मूळ	९	१	ये	मं
	५	२	यो	शु
	१५	३	भा	बु
	५	४	भी	चं
पूर्वाषाढा	०	१	भू	र
	९	२	धा	बु
	७	३	फा	शु
	७	४	ढा	मं
उत्तराषाढा	१३	१	भे	गु
	१५	२	भो	श
	४	३	जा	श
	१५	४	जी	गु
श्रवण	१०	१	खी	मं
	२०	२	खू	शु
	४	३	खे	बु
	२१	४	खो	चं
धनिष्ठा	१२	१	गा	र
	२०	२	गी	बु
	१०	३	गू	शु
	२	४	गे	मं
शततारका	११	१	गो	गु
	०	२	सा	श
	१२	३	सी	श
	८	४	सू	गु
पूर्वाभाद्रपदा	७	१	से	मं
	१०	२	सो	शु
	३९	३	दा	बु
	२९	४	दी	चं
उत्तराभाद्रपदा	७	१	दू	र
	२४	२	था	बु
	४	३	झा	शु
	२२	४	ञा	मं
रेवती	३	१	दे	गु
	१८	२	दो	श
	२६	३	चा	श
	६०	४	ची	गु

राशि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
उदयकाल	५९ से ७ घटी	२५ घटी से ३० घटी	३० घटी	५९ से १०
राश्यधिपति	गुरु	शनि	शनि	गुरु
वर्ण	क्षत्रियवर्ण	वैश्यवर्ण	शूद्रवर्ण	विप्रवर्ण
वश्य	मानव	जलचर	मानव	जलचर
अक्षर	भा धा	जा खा	गा सा	दा चा

यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन, यात्रा औषधी प्रतियोगिता परीक्षा व्यवहार में वर्ज्य करना चाहिये

राशीनां घातचक्रम्

विवाह व उपनयनादि मंगल कार्य में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।११	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घातनक्ष	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा	मूळ	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतीपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनी	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गरज	तैतिल	शकुनी	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु. घातचंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्री. घातचंद्र	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

नामाक्षरोंके वर्ग (जातक) और वैरवर्ग देखनेका कोष्टक, स्वकीय वर्गसे पांचवां वर्ग शत्रु होता है

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

अ इ उ ए ओ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व ष	श स ह ळ ज्ञ
गरुड	मार्जार	सिंह	कुत्ता	सर्प	मूषक	गज	हिरन

ज० लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
माता का सिर	पूर्व या पश्चिम में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में	पूर्व या पश्चिम में	दक्षिण में	पूर्व या पश्चिम में	दक्षिण या उत्तर में	पूर्व या पश्चिम में	दक्षिण में	पश्चिम में	उत्तर में
औरतें	दो या तीन	३ या ४ औरतें २ बाद में आई	३ या ५ औरतें	४ या ५ औरतें	३ स्त्रियां १ बाद में आई	३ या ५ स्त्रियां	३ या ६ स्त्रियां १ कन्या भी हो	२ या ३ स्त्रियां २ बाद में आई	१ या ५ स्त्रियां	२ स्त्रियां और १ बाद में आई	४ स्त्रियां और २ बाद में आई	२ या ५ स्त्रियां
जन्म स्थान	घर के पूर्व भाग में, जन्म (भूमि पर)	घरके पूर्व भाग में जन्म-स्थान	अग्निकोण में छत पर जन्म	भूमि पर जन्म द. भाग में प्रसूति स्थान	दक्षिण भाग में प्रसव	नैऋत कोण में छत पर जन्म	घर के प० भाग में जन्म	घर के पश्चिम भाग में प्रसूतिगृह	वायु कोण में प्रसूति स्थान	उत्तरी खण्डमें जीर्ण सा प्रसूति स्थान	घर के उत्तरी भाग में जन्म	घर के ईशान कोण में जन्म
जन्म से पू. माता का भोजन	लाल एवं मीठा भोजन	सूखी शाक का भोजन	नमकीन व थोड़ा सा भोजन	ठण्डा मीठा भोजन किया	सूखा, खट्टा व विचित्र सा भोजन	बासी व मीठा भोजन	जल, पानी, या अन्य वस्तु गुस्से में खाई	क्रोध के साथ थोड़ा सा भोजन किया	जन्म से पूर्व मिठाई आदि खाई थी	जलपान मीठा व दूधतथाकसैला भोजन	मीठा ठण्डा शाकादि का भोजन	विचित्र स्वाद वाला थोड़ा सा भोजन
प्रसव समय	माताकोअति-कष्ट, पाँव से प्रसव	अधोमुख, पांव से प्रसव	सिर से प्रसव मुख ऊपर की ओर	दीपक उठाया गया, पाद से प्रसव	भूमि पर जन्म माता को प्रसव कष्ट कम	दीपक उठाया गया, माता को कष्ट	भूमि में जन्म प्रसूति कष्ट	भूमि पर जन्म प्रसूति कष्ट कम	छत पर जन्म दीपक उठाया गया	दीपक उठाया गया, भूमि पर जन्म	माताकोप्रसूति कष्ट भूमि पर जन्म	दीपक बुझ गया या छत पर जन्म
प्रसव पश्चात्	बालक लम्बे स्वर से रोया	गौर वर्ण बालक दीर्घ स्वर से रोया	काफी समय तक रोता रहा	जन्मते ही छींका देर से रोया शरीरपरचिन्ह	जन्मते ही रोया बालक की पीठ पर चिन्ह	बालक दबे स्वर से रोया	जन्म के कुछ समय बाद दबे स्वर से रोया	काफी समय बादछींकमारी व रोया	जन्मते ही रोया व छींक मारी	कुछ देर बाद धीमी आवाज से रोया	दबी आवाज में बालक रोया	जन्म के काफी समय बाद रोया
माता के वस्त्र	लाल रंग के मैले से वस्त्र	सफेद तथा साफ कपड़े	हरा व पुराना सा वस्त्र, दूध कम उतरे	वस्त्र सफेद व लाल रंग के	मलिन सफेद या लाल रंग के वस्त्र	पुराने व लाल रंग के वस्त्र	पुराना व सफेद रंग का वस्त्र	वस्त्र लाल या कहीं से जला हुआ	लाल या पीले रंग के वस्त्र	काले रंग का वस्त्र फटा हुआ था	हल्का काला या मैला सा वस्त्र	पीले रंग का या मैला कपड़ा पहना हुआ
कष्ट काल	४. ११. १६. ४४. ५८ दिनों या वर्ष में कष्ट	१, २८, ३३, ४४ व ६१ दिन या वर्ष में कष्ट	४, १०, १४, ३८ व ५८ दिन या वर्ष में कष्ट	५, २५, ४० ४८ ६२ दिन मास या वर्ष में कष्ट	१३, २८, ३६ ४८, ५ दिन मास या वर्ष में कष्ट	१६, २३, ३६, ४, ५५ दिन मास वर्ष में कष्ट	१५, ३१, ३५, ८. ६२, ६४ दि. मा. या वर्ष में क.	११, २८, ३८, ५२, ६२ दि. म. या वर्ष में कष्ट	१०, १८, ३१ ३८, ४८, ६२ दि. म. व. में क.	५ १३, २७, ३६ ५७. ६३ दिन मा. व. में कष्ट	२२८, ३२, ४८ ६४ दिन मा. व वर्ष में कष्ट	१, ८, १३, ३६, ७८ दि. मा. व वर्षों में कष्ट
उपाय	प्रारम्भ में तुला गोदान या महामृत्युंजय	महामृत्युंजयके जाप व ब्राह्मण भोजन	मृत्युंजय जप हवन व शिवार्चन	छायादान, तुलादान मृत संजीवनी जाप	सूर्य पूजन व आदित्यहृदय का पाठ	गोदान व महामृत्युंजय के जाप	महामृत्युंजय जाप हवन व नवग्रह पूजा	महामृत्युंजय जाप व तुलादान ब्रह्मभोज	महामृत्युंजय जाप ब्राह्मण भोज शिवार्चन	महामृत्युंजय जाप अन्न व स्वर्ण दान करें	महामृत्युंजय जाप तुलादान व गोदान	महामृत्युंजय जाप हवन व नवग्रह पूजा
पूर्णायु	१०० वर्ष	९० वर्ष	८६ वर्ष	१०० वर्ष	६७ वर्ष	१०० वर्ष	७५ वर्ष	१०० वर्ष	८१ वर्ष	६५ वर्ष	९० वर्ष	८३ वर्ष

[illegible] कुछ कमी-बेशी हो तो उस समय इस लग्न-निर्णय सारिणी द्वारा निर्णय किया जा सकता है। उन

दिन की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
ली चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
री चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
री चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
थी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
वीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
वीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
तवीं चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
ठवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात की चौघड़िया

	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
पहली चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
दूसरी चौघ.	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तीसरी चौघ.	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चौथी चौघ.	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पाँचवीं चौघ.	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
छठवीं चौघ.	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सातवीं चौघ.	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
आठवीं चौघ.	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शीघ्रता में कोई भी यात्रा-मुहूर्त न बनता हो या यकायक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर के लिए विशेष रूप से चौघड़िया-मुहूर्त का उपयोग है; लेकिन अब तो प्रायः हर आवश्यकीय शुभ कार्यारम्भ के लिए चौघड़िया-मुहूर्त ने जनता के हृदय पर अपना सिक्का जमा लिया है।

दिन और रात के आठ-आठ बराबर हिस्से का एक-एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन और रात बराबर यानी 12 घण्टे का दिन और 12 घण्टे की रात होती है तब एक चौघड़िया-मुहूर्त १॥ घंटा यानी पौने चार घड़ी का होता है, इसलिए इसका नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा। रविवार, सोमवार आदि प्रत्येक वार सूर्योदय से शुरू होकर अगले सूर्योदय पर समाप्त होता है, एवं उसी समय से अगला 'वार' आरम्भ हो जाता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का 'दिनमान' और सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान न्यूनाधिक भी (यानी दिन-रात छोटे-बड़े) हुआ करते हैं; पर 'वार' हमेशा २४ घंटा यानी ६० घड़ी का होता है अर्थात् दिनमान और रात्रिमान का योग हमेशा ६० घड़ी का होता है। जंत्री में हर रोज का 'दिनमान' दिया रहता है; अतः जिस रोज का रात्रिमान जानना हो, उस रोज के दिनमान को ६० घड़ी में से घटा देने पर रात्रिमान निकल आयेगा। अब जिस रोज दिन में यात्रा करनी हो तो उस रोज के दिनमान के अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर उस रोज के सूर्योदय समय में जोड़ते जायें तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़िया के समय ज्ञात होते जायेंगे। उन आठों चौघड़ियों में से कौन-सा ग्राह्य और त्याज्य है, यह ऊपर 'दिन' की चौघड़िया के चक्र में उस दिन के 'वार' के सामने खाने में देख कर जान लें। इसी प्रकार जिस रोज रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस रोज के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घंटा-मिनट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात की प्रत्येक चौघड़िया का समय ज्ञात हो जायेगा और उनका शुभाशुभत्व उपर्युक्त रात की चौघड़ियों के चक्र में उस रोज के 'वार' के सामने के खाने में देख कर जान लें। श्रेष्ठ समय शुभ, चर, अमृत और लाभदेवा चौघड़िया का है। अशुभ समय उद्वेग, रोग और कालकी होता है, इनको त्याग देना चाहिये। २॥ घड़ी का १ घंटा तथा २॥ पल का एक मिनट होता है। अतः घटी-पल का घंटा-मिनट बनाने के लिए उनमें ५ का भाग देकर लब्धि को दूना कर लें।

टिप्पणी—प्रत्येक चौघड़िया के स्वामी-ग्रह क्रमशः ये हैं—उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग चौघड़िया का स्वामी भौम है। ऊपर जो शुभ, चर, अमृत और लाभ की चौघड़िया का समय श्रेष्ठ कहा गया है, वह इसी लिए कि उन सबके स्वामी क्रमशः शुभ ग्रह गुरु, शुक्र, चन्द्र और बुध हैं। अतः इन सबके श्रेष्ठ चौघड़िया मुहूर्त में प्रत्येक शुभ कार्य किये जा सकते हैं; किन्तु यात्रा में इनके स्वामी का सूक्ष्म विचार कर लेना अत्यावश्यक है। प्रायः सभी लोग उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़िया में से किसी चौघड़िया में किसी भी दिशा की यात्रा कर लेते हैं; किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी शुभ की जगह अशुभ और हानिकर हो जाता है। जैसे यदि किसी को पूर्व में जाना है और उपर्युक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में से "अमृत" चौघड़िया के समय में वह चला गया तो उस चौघड़िया का स्वामी चन्द्र होने के कारण दिशा के लिए वह चन्द्र दिशाशूलकारक होगा—"सोम,पूर्वशनीचर पूरब न चालू", जिससे शुभ फल के बजाय अशुभ होना निश्चित-प्राय है। अतः चारों श्रेष्ठ चौघड़ियों में से भी जिस चौघड़िया का स्वामी अपनी यात्रा के लिए दिशाशूलकारक हो, उस चौघड़िया को यत्नपूर्वक वर्जित करना चाहिए।

मेलापक चक्र विचार—यदि भकूट शुद्ध हो तो १६ से कम निन्दित, २० तक मध्यम, इसके बाद उत्तम है। दुष्ट भकूट में २० गुण से कम निन्दित, २५ गुण तक मध्यम, ३६ गुण तक उत्तम होता है। जिसका जन्म-नक्षत्र ज्ञात न हो, उसका नाम नक्षत्र से मेलापक देखना चाहिये। यदि जन्म-नक्षत्र से विचार करना हो तो वर-वधू दोनों के जन्म नक्षत्र से विचार करना चाहिये। एक का जन्म नक्षत्र तथा दूसरे का नाम-नक्षत्र ऐसा नहीं करना चाहिए। ग्रह मेलापक के लिए यदि वर की जन्म-कुण्डली में लग्न अथवा चन्द्रमा से १, ४, ७, तथा १२ स्थान में मंगल या पापग्रह हों तो कन्या के लिए हानिकारक है। यदि इसी प्रकार के ग्रह कन्या की भी कुण्डली में हों तो मंगल का दोष नहीं लगता। जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से कोई शुभ ग्रह अथवा सप्तमभाव में स्थित हो तो मंगल का दोष नष्ट हो जाता है।

जातक चिन्ह

लग्न में मगल, सातव वृहस्पति या शुक्र हो —तो उसके सिर में चोट या (व्रण) आदि का चिन्ह हो। लग्न सिर में शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चिन्ह होता है। मंगल व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल (मशक) लहसन जानें! सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर में पापी ग्रह हों या लग्न में शुक्र या सातवें राहु हो तो माथे में या बायें कान में चिन्ह हो। लग्न से ३, ६, ११ वें स्थान में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बायें बगल की ओर व्रण का चिन्ह हो। लग्न में मंगल हो और त्रिकोण ५।९ में शनि हो इसको शुक्र देखे तो गुदा (मल-द्वार) या लिंग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न में ५।९वें शुक्र, आठवें बुध-गुरु लग्न में या चतुर्थ घर में शनि हो तो पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर शुक्र, तीसरे मंगल शनि हो व लग्न में आठवें सूर्य हो तो कमर में चिन्ह होगा। चतुर्थ घर में शुक्र-राहु हो, लग्न में मंगल या शनि हो, तो पादमूल मे व बायें पैर में चिन्ह होगा। बारहवें गुरु ९वें चन्द्रमा ३।३।११वें बुध होने से गुदा के समीप चिन्ह या व्रणादि होते हैं, छठे घर का स्वामी पापी ग्रह के साथ लग्न सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। योगकर्ता सूर्य हो तो शिर में, चन्द्रमा से मुख में, मंगल से गले में, बुध से हृदय में, वृहस्पति से नाभि में, शुक्र से आँख या पीठ पर और राहु शनि केतु से पैर या अधर (होठ पर) या दाँतों पर चिन्ह जानने चाहिए।

● **नालवेष्टित अंग ज्ञान**– यदि सूर्य चतुष्पद राशि में हो शेष ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशिगत हों तो बालक, एक जरायु से वेष्टित उत्पन्न होते हैं। यदि मेष, सिंह लग्न में शनि व मंगल स्थिति हो तो लग्न का जो नवांश उदय होता है वह राशि काल पुरुष के जिस अंग में हो तो उस अंग के नालवेष्टित बालक उत्पन्न होता है।

● **काल पुरुष**—काल पुरुष के सिर में मेष राशि, मुख मे वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय, कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या, वस्ति में तुला, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक, उर में धन, जानु में मकर, जांघों में कुम्भ, दोनों पादों में मीन राशि काल-पुरुष के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्म ले वह शिर जानें। अन्य सब राशिक्रम के अंग होते हैं।

● **उपसूतिकाज्ञानम्** – लग्न अथवा लग्नेश्वरके साथ और इनके दूसरे तथा बा हवें स्थान मे जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका कहना। अन्य प्रकार—लग्न और चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका जानना।

यदि चतुर्थ-दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो सुख से प्रसव होता है। यदि नवम पंचम सप्तम में पाप ग्रह हो तो माता को प्रसव-काल में बहुत कष्ट होता है।

भूषण बनवाने का मुहूर्त – नक्षत्र रेवा,० पुन० पुष्य अ० ध० श० ह० अ० रो० उ० ३, तिथि २, ३, ५, ७, १०, ११ १३, बार रवि चं० बुध० गुरु० भृगु० हो।

● **दिशा ज्ञानम्** – पूर्व द्वितीय तृतीय ईशान चतुर्थ उत्तर पंचम षष्ठ दक्षिण वायव्य। सप्तम पश्चिम, अष्टम नैऋत नवम दशम दक्षिण एकादश द्वादशभाव को आग्नेय जाने।

● **प्रसूति स्थान से पाकशालादि विचार**—जन्म-कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्नि स्थान (पाकगृह) जानना। चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुद्ध (मैला) स्थान जानना चाहिए।

● **आकृति ज्ञानम्**— जन्म लग्न का जो नवांश है उनका जो स्वामी हो उसके सदृश शरीर की आकृति है। चन्द्र राशि के नवांश के स्वामी के समान वर्ण होता है।

● **शिरपादजातज्ञानम्**—शीर्षोदय राशि ३।५।६।८ जन्म समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो सिर पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय में हो तो पाद में जन्म जानना। यदि [illegible] का नवांश हो तो हाथ मे जानना। लग्नेश दशम में [illegible] जन्म में हो तो बालक पैरों से उत्पन्न हो।

● **सूतिका-गृहद्वार ज्ञानम्**—केन्द्र में स्थित [illegible] की दिशा मे सूतिकागृह का द्वार जानना। यदि केन्द्र बहुत ग्रह पड़े हों तो उनमें जो अधिक बली (स्वराशि मित्रोच्च या मूल राशि का) हो उसकी दिशा में सूतिका गृह का द्वार कहना। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो लग्न की दिशा में ग्रह का द्वार कहना।

● **ग्रहों की दिशा**— सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

● **खट्वा विचार**—लग्न और द्वितीय राशि तीसरी राशि दक्षिण पाया चतुर्थ, पंचम दक्षिण बाहि दक्षिण पाया, सप्तम अष्टम वाम सेरू, नवम वाम दशम एकादश वाम बाहि द्वादश वाम पाया होता (फल) जिस अंग से पा [illegible] ग्रह अथवा द्विस्वभाव राशि वहां से फटा होता है अथवा केतु ग्रह की दृष्टि हो भी फटा हुआ हो। अर्थात् शनि हो तो लोहे से मंगल हो तो फटा हुआ जानना। यदि उसको शुभ ग्रह देखे तो फटा नहीं होता।

● **दीपकादि ज्ञानम्**—यदि जन्म के काल में १० १८ अंश तक हो तो दीपक तेल से पूर्ण हो, १० अंश तक हो तो आधा, २० से ३० अंश तक हो बहुत थोड़ा हो, बत्ती लग्न से होती है जितना लग्न हो गया हो उतनी दग्ध जानना। यदि सूर्य जन्म चर राशि में हो तो दीपक इधर-उधर ले जाया तो स्थिर राशि में स्थिति और द्विस्वभाव राशि स्थान से उठाये दूसरे स्थान पर स्थिर होता है आचार्यों का मत है कि जिस राशि में सूर्य हो उस की दिशा में दीपक कहें।

जन्म स्थान विचार— जन्म लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हों अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि दसवें चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर अथवा जल के समीप स्थान में हुआ जानना। पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि में हो, बुध लग्न में हो, गुरु चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न जलचर राशि में हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा जानना। लग्न और चन्द्रमा से १२वें स्थान में शनि हो उसे पापी ग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में व एकान्त में हुआ जानना। चर राशि गत शनि लग्न में हो और शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर घर में जन्म कहना।

बालक के जन्म समय मृत्यु-योग

लग्न में व सप्तम में पापी ग्रह हों और चन्द्रमा पापी ग्रहों के साथ वहां स्थित हो, उस चन्द्रमा को सौम्य ग्रह न देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

चन्द्रमा पापी ग्रह से युक्त हुआ लग्न, द्वादश, सप्तम अष्टम इनमें से किसी स्थान में हो, शुभ ग्रह केन्द्रों में न हों, चन्द्रमा भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से वर्जित हो तो जन्म लेने वाले को मृत्यु को देने वाला होता है। क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्रों में आठवें चर पापी ग्रह हों, इस योग में उत्पन्न हुआ बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह पापी ग्रहों के मध्य चन्द्रमा शुभ लग्न में हो और सातवें आठवें पापी ग्रह हों, यदि बलवान शुभग्रह से चन्द्रमा दृष्ट न हो तो बालक माता-पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि बलवान शुभ ग्रहों करके चन्द्रमा देखा जाता है तो माता-पिता की मृत्यु नहीं होती। द्वादश स्थान में शनि हो, सूर्य नवम हो, चन्द्रमा लग्न में, मंगल अष्टम स्थान में हो यह सब ग्रह यदि बलवान गुरु से दृष्ट न हों तो उत्पन्न बालक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। यदि बलवान गुरु किसी को न देखे व बलहीन गुरु सबको देखे तो शीघ्र मृत्यु नहीं होती। यदि गुरु सबको देखता हो तो वह फल नहीं होता। पापी ग्रह से युक्त चन्द्रमा पंचम सप्तम नवम, द्वादश, लग्न और अष्टम स्थानों में हो, नवांश बुध, गुरु और शुक्र इनमें से किसी एक से भी युक्त-दृष्ट न हो तो यह योग नहीं होता।

चन्द्रमा जन्म लग्न से आठवें स्थान में हो और पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है। इस चन्द्रमा को पापी ग्रह न देखते हों और शुभ ग्रह देखते हों, तो आठ वर्ष तक जीवित रहता है। पापी ग्रह और शुभ ग्रह दोनों देखते हों तो चार वर्ष जीता रहता है। शुभ या पापी ग्रह कोई नहीं देखता हो तो यह योग नहीं होता। शुभ ग्रह से युक्त और शुभ क्षेत्र से छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो मृत्यु को नहीं देता। कृष्ण पक्ष में जिनका जन्म हो, शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और छठे आठवें स्थान में शुभ व पापी ग्रह से दृष्ट हो तो शुभ ग्रह का देने वाला नहीं होता। छठे आठवें स्थान में भी मृत्यु हो इनका बलवान पापी ग्रह देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक महीना-भर जीता है।

माता-पिता का अरिष्ट योग

पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से और माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिए। यदि बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम स्थान में पापी ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के मध्य में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। यदि सूर्य से ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो, शुभ नवांश में स्थित शुभ ग्रहों करके देखे जा सकते हों, तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २।१२वें स्थान व ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ न हो तो माता को कष्ट जानें।

● **अरिष्ट भंग योग**—यदि बलवान गुरु लग्न में विराजमान हुआ अनेक प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है। लग्नपति अति बलवान केन्द्र स्थित शुभ ग्रहों करके देखा हुआ दीर्घ आयु देता है। ग्रहों की वर्गों में स्थिति हो तो वे अरिष्टों को दूर करते हैं।

● **नेत्र विकार योग**—तनु १ धन २ व्यय १२ पति युत भृगु आइ बसे त्रिक ३।८।१२ धाम। राशीश धन २ रवि युत होहि नेत्र की हानि॥ शुक्र सूर्य तनुनाथ युत जाइ बसे त्रिकधाम। जन्म अन्ध का योग है भाषत बुध गुण ग्राम॥ मात, तात, भ्रात, पुत्र स्वामि नारि ग्रह नाथ। सूर्य युत शुक्रत्रिक धाम बसे तिन के नेत्र नहीं साथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादश वाम नेत्र की हानि। भौम राहु दाहिनी नयन बुधजन कहत बखान॥

● **मूक योग**—छठे घर का स्वामी बुध के साथ लग्न में बैठा हो तो जबान तोतली या गूंगा होता है। चन्द्रमा लग्न में हो और छठे घर का राशि मिथुन या कन्या हो अथवा दूसरे घर का स्वामी बृहस्पति के साथ ६।८वें या १२वें घर में हो, अथवा शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा मंगल के साथ लग्न में हो, तो तोतली जबान और गूंगा होता है।

● **ऋणी मनुष्य का योग**—धन स्थान में पापी ग्रह हो, लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और नवमेश लाभेश से दृष्ट व युक्त हो तो जातक ऋणी होता है।

● धनेश अन्तर्गत नीच राशि गत हो, धन व अष्टम भाव पापयुक्त रहे तो जातक ऋण से दबा रहे।

● लाभेश की राशि जिस नवांशक में हो उसका स्वामी दुष्ट भाव में पापयुक्त हो तथा क्रूर षष्ठांग में हो तो मनुष्य ऋणग्रस्त होता है।

● **सन्यास योग**—लग्नेश पर केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की नहीं, अथवा शनि को लग्नेश देखे और लग्नेश शनि देखें, बल रहित हो तो संन्यास योग होता है।

बालारिष्ट योग—जन्म लग्न से ६-८-१२ स्थान में स्थिर चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो बालक की आयु ८ वर्ष की जानना। शनि अथवा शुभ ग्रह ६-८-१२ इन स्थानों में हों वह वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई शुभ ग्रह नहीं हो।

तो बालक की आयु एक मास का जानो । जिसके लग्न से पाँचवें स्थान में सूर्य, मंगल और शनि ग्रह तीनों पड़े हों तो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना तथा भाई को हानि हो । जिनके सप्तम स्थान में शनि छठें चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना । जिसके लग्न में शनि हो चन्द्रमा आठवें हों, वृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र मृत्यु जानना । जन्म लग्न का बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता परन्तु सूर्य चन्द्रमा शुक्र और राहु यह विशेष करके कष्ट कारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है । जिसके जन्म लग्न से बारहवें, आठवें तथा दूसरे क्रूर ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में हो तो बालक की शीघ्र ही मृत्यु जानना ।

छठे, आठवें तथा जन्म लग्न में बुध हो तो चौथे वर्ष बालक की मृत्यु हो । मंगल के घर में वृहस्पति और छटे आठवें चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष बालक की मृत्यु हो, जन्म लग्न के दशवें राहु तथा जन्म में राहु हो तो सोलहवें वर्ष में बालक की मृत्यु हो, जिसके लग्न या अष्टम स्थान में चन्द्रमा सहित राहु हो तो उस बालक की दस दिन में मृत्यु होती है ।

अरिष्ट भंग योग — बुध, वृहस्पति, शुक्र इनमें से एक भी ग्रह केन्द्र (१।४।७।१०) में हो, बलवान होकर केवल यदि वृहस्पति ही लग्न में हो । बली होकर बैठा हो लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो । शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो इन पाँच योगों में से एक भी योग पड़ जावे तो ऊपर दिये हुये अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना ।

माता-पिता अरिष्टम् — हर एक पुरुष के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिये । अतएव जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रक चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में शुभ न हो तो माता ो कष्ट जानना ।

त्रिखलजन्मफलम् — तीन पुत्रों के बाद कन्या हो या तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है। इससे माता को अरिष्ट, महाभय, धन-हानि आदि होवे । शांत अर्थ त्रिखल शांति करे ।

पितृपरोक्षज्ञानम् — बालक के जन्म समय पिता घर में था कि नहीं ? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिये कि जन्म कुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म के समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना कथन विशेष है कि यदि सूर्य जन्म लग्न में अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चन्द्रमा राशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म के समय दूसरे देश में था, परन्तु घर में नहीं था । इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे। परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था, ऐसा जानना चाहिये । जन्म समय शनि लग्न का हो अथवा मंगल सातवें स्थान में हो और दूसरा द्वितीय स्थान में पड़ा हो, तो भी पिता के परोक्ष में बालक जन्म जानना, परन्तु यह चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में दोनों अंशों का योग भी जान लेना जैसे बुध की स्पष्टी पाँच अंश हो, चन्द्रमा की दश अंश की शुक्र की पन्द्रह अंश हो, और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो पूर्वोक्त योग जानना ।

मूक योग — तीसरे स्थान में शुक्र हो, सिंह या मेष के गुरु हों १० वें सूर्य या मंगल हो तो वह बालक मूक होता है ।

वर-कन्या मिलाप — कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनें, वैसे ही वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनें । जोड़कर ९ का भाग देवें । जो ३-५-७ आवें तो अवश्य है बाकी शत्रु जानें ।

स्त्री जातक विचार — जिस स्त्री के लग्न या सातवें स्थान में पाप ग्रह हों तो उस स्त्री का पति सात वर्ष में मर जावे और चन्द्रमा छठे आठवें हो तो आठ वर्ष में मरे । लग्न से पाँचवें सूर्य हो तो उस स्त्री के एक ही बालक हो और मंगल पाँचवें हो तो तीन पुत्र हों और वृहस्पति पाँचवें हो तो पाँच पुत्र हों । जिस स्त्री के पाँचवें चन्द्रमा हो तो २ कन्या हों और बुध पाँचवें हो तो चार कन्या हों तथा शुक्र पाँचवें हो तो सात कन्या हों । जिस स्त्री के नवें शुक्र हो तो छः कन्यायें तथा सातवें राहु हो तो एक पुत्र हो । गुरु या शुक्र छठे आठवें हों तो उसके बालक न जियें । मंगल छठे आठवें स्थान में हो तो गर्भ में ही बालक नष्ट हो जाये । जिस कन्या के लग्न में पाप ग्रहों के बीच में चन्द्रमा हो तो वह कन्या पिता और ससुर दोनों के कुलों का नाश करे । सातवें शुक्र हो तो कुल दोष करने वाली हो तथा कर्क राशि में मंगल हो तो इच्छापूर्वक घर घर में घूमे ।

जिस कन्या का कर्क लग्न में जन्म हो, सातवें सूरज हो और लग्न पर वृहस्पति की पूर्ण दृष्टि हो तो वह स्त्री विद्यावती हो तथा रानी हो, पुत्र-पौत्र बहुत हों ।

स्त्री के सप्तम भाव में किसी ग्रह की दृष्टि या कोई ग्रह नहीं हो तो उसका पति उसका (अकिंचन) होता है । यदि बुध वा शनि को राशि सप्तम भाव हो तो उसका पति नपुन्सक होता है । यदि सप्तम द्विस्वभाव राशि हो तो उसका पति विदेश वासी होता है । यदि द्विस्वभाव राशि हो तो घर और विदेश दोनों स्थान में रहने वाला अर्थात् स्थिर राशि, सप्तम भाव हो तो उसका पति सदा पास में रहता है ।

राज योग — नवें स्थान का स्वामी दसवें हो और दसवें स्थान का स्वामी नवें हो तो राज योग होता है ।

नेत्र नाश योग — (१) शनि, मंगल, सूर्य, चन्द्रमा ८।६।१२ अथवा १२वें हों तो अन्ध योग जानना । (२) पापयुक्त मंगल लग्न में होने से भी अन्ध योग होता है । (३) मगल व चन्द्रमा १२वें हों तो बायां नेत्र और यदि सूर्य व राहु १२वें हों तो दाएं नेत्र का विनाश हो ।

पितृ-नाश योग—(१) यदि सूर्य के दसवें पापी ग्रह हों या दशमेश पापयुक्त हो तो बालक का पिता महान कष्ट पावे अथवा मर जावे। (२) सूर्य से ७वें मंगल या शनि हो तो पिता को कष्ट हो। (३) मंगल व शनि के मध्य में सूर्य हो यानी लग्न में चन्द्रमा ६वें और मंगल ७वें हो तो बालक का पिता न जीवे। (४) चौथा व दसवाँ स्थान पाप ग्रहों से युक्त हो तो पिता का अनिष्ट हो। (५) दसवें मंगल शत्रु राशि का हो तो पिता की मृत्यु हो जावे, शत्रु स्थिर राहु व गुरु हो अथवा १, २ हों तो 23वें वर्ष में पिता का नाश हो। (६) लग्न में शनि, सातवें मंगल हो और चन्द्रमा बुध व शुक्र के मध्य होकर लग्न को न देखे तो जन्म से पूर्व ही पिता की मृत्यु हो जावे।

मातृ-नाश योग—(१) चन्द्रमा से सातवें मंगल या शनि हो तो माता रोग से पीड़ित हो (२) मंगल व शनि के मध्य में चन्द्रमा हो तो माता की मृत्यु हो, (३) छठे या बारहवें पापग्रह हो तो माता का अरिष्ट हो, (४) क्षीणता बलहीन चन्द्रमा से ४ या ११वें पाप ग्रह हो तो माता की मृत्यु हो जावे।

गर्भ योग—वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो और पंचमेश या सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भ योग होता है। शुभ ग्रह पाँचवें हो और पंचमेश देखता हो तो गर्भ योग होता है। गुरु की राशि में चन्द्रमा हो और मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में स्थित हो और शुक्र अपनी राशि में बैठा हो तो भी गर्भ योग होता है।

मामा नाश योग—बुध से छटे पाप ग्रह, पापांतस्य व पाप युक्त तथा बलहीन नीच राशि देवांश के में हो तो मामा का नाश हो।

भ्रष्ट नाश योग—(१) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को, शनि छोटे भाई को और मंगल छोटे बालकों का नाश करता है (२) मंगल और तीसरे पापी ग्रह हों तो भाइयों का सुख दूर हो।

उच्च योग—शुक्र बुध मूर्ति में बृहस्पति १।४।७। १०वें हों तथा जिसके दसवें मंगल हो तो उच्च योग जानना (२) मंगल, सिंह राशि में चन्द्रमा ५वें और राहु १२वें हो तो बालक दीपक समान जानना, (३) लग्न से या ७वें मंगल, ५वें सूर्य और बारहवें राहु हो तो बालक बहुत प्रसिद्ध हो, (४) तीन ग्रह उच्च के हों तो राजा, अपने घर के हों तो मन्त्री जरूर हो।

नीच योग—(१) जन्म लग्न से ४वें और ७वें शनि हो तो बालक म्लेच्छ हो, (२) जिसके जन्म काल में शुक्र व बुध न हो, केन्द्र में गुरु न हो, १०वें मंगल न हो तो इस बालक का जीना निरर्थक जानना, (३) जो जन्म-पत्र में तीन ग्रह नीच के हों तो दास, तीन अन्त के हों तो मूर्ख हो, (४) सूर्य और चन्द्रमा ७वें शनि से दृष्ट हो तो नीच काम करे।

यात्रा समय शकुन विचार

स्वान दाहिने पाँव से, खने खाज निज शीश।
राज्य लाभ अरु उदरसुख, कण्ठ गुदा धन दीश॥
हृदय कण्ठ आदर अधिक, नाम महा सुखकार।
पीठ सुहावन लाभ है, ठोड़ी सुयश अपार॥
जो इन अंगन स्वान, खने अंग पद बाम सौं।
तो फल अशुभ बखान, काज न कीजै अपशकुन॥
गवन समय जो स्वान निज, फरफराय दे कान।
महाअशुभ हो कार्य को, शकुन शास्त्र परिमान॥

स्वान धुने जो अंग, अथवा लोटे भूमि पर।
तो निज कारज भंग, अति ही कुशकुन जानिये॥
रासभ महिषी रन चढ़यो, मिलै लड़त्त कंजार।
स्वान महिषि मानव लड़े, एव अशुभ विचार॥

एक शूद्र दो वैश्य असारा, तीन विप्र अरु क्षत्री चारा।
नौ नारी जो सनमुख आवै, तो मति चलिये शकुन बतावै॥
जो कहूँ नकुल दरशना पावै, होय काज संपति मिल जावै।
सब विधि कुशल प्राव घर नीके, सबै मनोरथ पूजै जीके॥
वाम मार्ग से चकवा चारी, सब शकुनत ते है यह भारी।
औरहु शकुन कहौं सुखकारी, चित दै सुनहु बुद्धि बरबारी॥

गमन समय जो दाहिने, देख परै कहुँ काग।
धन गण की रति बहु मिले, बड़े बहुत सी साख॥
क्षेमकरी जो बोलई, चलती बार सुबोल।
तो शुभ जानों ही पिया, होती काज अमोल॥

गमन समय को औरहु भ्राता, शकुन सुहावन है सुखदाता।
सहज वायु सुखन की मूला, बहै त्रिविध सब विधि अनुकूला॥
लिए सुहागिन सुवन उछंगा, कै घट भरै होय जल गंगा।
यहि विधि मिलै सो आवत आगे, मनहु मनोरथ सोवत जागे॥
कोयल दीखे शुभ तरु बैठे, मानहु काज भयो घर बैठे।
दधि मछली जो आगे आवै, इन शकुनन कोई न पावै॥
पोथी लिए विप्र दो मिल हों, तो मन कारज भयो जानहीं।
औरहु शकुन सुनहु शुभकारी, दर्शन लवा होत शुभ भारी॥
सनमुख धेनु पिलावे बाछा, यहि ते शकुन कहो का आछा।

मृगमाला गह दाहिने, होकर कढ़े तुरन्त।
धन गण भूमि बहु मिले आदर करै महन्त॥
इक बकरी पुनि इक वृषभ, पाँच भैंस षट् स्वान।
तीन धेनु गज चार तजु करहि निर्बंध पयान॥

अगर यात्रा के समय में ठोकर लग जावे, कपड़ा पीछे से किंवाड़ आदि में फँस जावे तो यात्रा न करे।

दुःख शकुन परिहार—पहले कोई दुःशकुन हो तो स्थिर होकर ११ साँस लेकर चले। दूसरी बार फिर दुःशकुन हो तो सोलह साँसें लेकर चले तीसरी बार दुःशकुन हो तो कभी यात्रा न करे, लौट आये।

• नष्ट जन्म-पत्रिका शुद्धि •

प्राय: देखने में आता है कि जन्मपत्रिकायें उपर से खण्डित हो जाती हैं । ऐसी अवस्था में जन्म-पत्रिका का सम्वत्, मास, तिथि, वार, नक्षत्र आदि तथा जन्म समय का पता नहीं चल पाता । जिसके अभाव में फलादेश के वर्णन में बड़ी कठिनाई होती है । इस प्रकार की नष्ट जन्म-पत्रिका का पुनरुद्धार करने के लिये यहाँ कुछ रीतियाँ दी जा रही हैं । जो प्रत्येक ज्योतिषी, विद्वान एवं ज्योतिष में रुचि रखने वाले व्यक्ति के लिये लाभकारी सिद्ध होंगी, ऐसी आशा है ।

1. जन्म-कुण्डली का संवत् जानना—

जन्मांक चैक स्थित मंद राशेः,
संप्राप्त सम्वत्सर मंद राशिम् ।
गणयेच्च सार्धद्वयं वत्सरे च,
गुण्यात्तदंकं गतवत्सरं स्यात् ।।1।।

भावार्थ—जन्म कुण्डली में जिस राशि का शनि हो उससे वर्तमान शनि जिस राशि पर हो, उस तक गिने। जो संख्या आवे उसे अढ़ाई गुणा करके जो संख्या आवे, वह गत वर्ष होंगे। सम्वत् में से घटाने पर जन्म सम्वत् प्राप्त होगा।

2. कुण्डली का मास-जानना—

वैशाख स्याद प्रथमे मेषे, यावद्भानुश्च गण्यते ।
तावन्मासे भवेज्जन्म, गर्गस्य वचनं यथा ।।2।।

भावार्थ—मेष का सूर्य हो तो वैशाख मास का जन्म। वृष का सूर्य हो तो ज्येष्ठ का, मिथुन के सूर्य में आषाढ़ मास समझें । इसी क्रम से जिस राशि का सूर्य हो, वैशाख आदि क्रम से जन्म का मास समझें ।

3. कुण्डली का पक्ष जानना

तथैव सूर्याद् गण्येच्च चन्द्रम्, चेज्जायते सप्तमराशिवर्ती ।
तदा भवेज्जन्मनि शुक्ल पक्षे, ह्यतः परस्तात्प्रवदेच्च कृष्णम्3

भावार्थ—जिस राशि पर सूर्य हो यदि उससे 7 राशियों के अन्तर्गत चन्द्रमा हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म होता है। यदि चन्द्रमा सात से 12 राशि के अन्तर्गत हो तो जन्म कृष्ण पक्ष का समझें ।

4. जन्म-कुण्डली की तिथि का ज्ञान—

यत्र भानु स्थितस्तत्र चन्द्रो यावच्च गण्यते ।
सार्द्धद्वयसमाख्यातं, तिथिज्ञानं मनीषिभिः ।।4।।

भावार्थ—जिस राशि मे सूर्य हो वहाँ से चन्द्र राशि तक गिने जितने स्थान हों उसे अढाई गुणा करने पर तिथि प्राप्त होगी ।

5. कुण्डली में दिन और रात्रि का ज्ञान—

कुण्डली में सूर्य से छः राशि पर्यन्त लग्न हो तो दिन का जन्म, सप्तम राशि लग्न हो तो सायंकाल, सात से 12 राशि के अन्तर्गत लग्न हो तो रात्रि का जन्म समझें। दसवें राशिगत लग्न हो तो अर्धरात्रि का जन्म होता है।

6. कुण्डली के वार का ज्ञान—

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से मास गिन कर बीते पक्ष के दिन गिन कर जोड़े । सात का भाग दें । जो शेष बचे उसे राजा से गिन कर वार जानें ।

7. कुण्डली के योग का ज्ञान—

पुष्य नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र तक गिनें । श्रवण से दिन के नक्षत्र तक गिनें। दोनों को जोड़कर 27 का भाग दें । जो शेष बचे उसे विष्कुम्भादि से योग प्राप्त कर लें।

8. जन्मपत्री स्त्री की है या पुरुष की ?

जन्म-कुण्डली में लग्न को छोड़कर विषम स्थान पर शनि बैठा हो एवं पुरुष ग्रह बलवान हों तो पुरुष की कुण्डली समझें। विपरीत अवस्था में स्त्री की कुण्डली समझें ।

बापू के प्रवचन

JANUARY जनवरी

1 नया साल सबको शांति देने वाला हो। प्रार्थना ही आत्मा की खुराक है।
2 भारी चीज भी पंख-जैसी बन जाती है, जब प्रेम से उठाने वाला होता है।
3 हमारे पास जो कुछ है, भगवान को अर्पण कर दें।
4 सब बातें मनुष्य की मन, वचन और कर्म की शुद्धि पर निर्भर हैं।
5 पूर्ण समर्पण का अर्थ है चिन्ताओं से मुक्त हो जाना।
6 पैसे में परमेश्वर को देखना परमेश्वर को भूलने जैसा है।
7 गुस्से को पीना इन्सानियत है।
8 अहिंसा क्षत्रिय-धर्म की परिसीमा है।
9 चर्खे से निकलने वाला कच्चा धागा करोड़ों स्त्री-पुरुषों में प्रेम का अटूट सम्बन्ध बांध देता है।
10 जिस चीज की जरूरत न हो, उसका स्वाद हमें क्यों जानना चाहिए ?
11 कोई सबसे अच्छा तभी साबित होता है जब वह निर्लेप होकर काम करे।
12 उपवास तो आखिरी हथियार है। वह तलवार की जगह लेता है।
13 प्रेम की कल्पना यह है कि कुसुम से कोमल, वज्र से कठोर है।
14 समाज हमको नहीं बनाता, हम समाज को बनाते हैं।
15 जिसका राम रक्षक है, उसे कौन मार सकता है ?
16 हमारे सोचने की बात तो कर्म ही है, कर्म फल नहीं।
17 दिल को एक बार सफाई हो गई तो मरने तक कायम रहती है।
18 ईश्वर की तरफ जाना ही इन्सान का फर्ज है।
19 अनासक्त कार्य शक्ति प्रद है, क्योंकि अनासक्त कार्य भगवान् की शक्ति है।
20 अगर देहातों को जीना ही नहीं, मजबूत व समृद्ध बनाना है तो देहाती दृष्टि ही हिन्दुस्तान में सही हो सकती है।
21 जमीन का मालिक तो वही है जो उस पर मिहनत करता है।
22 गरीब मुल्क दूसरे मुल्कों के साथ पैसे से मुकाबला करे तो मर जावेगा।
23 उन्नति का मूल मंत्र आत्म-समर्पण है। उन्नति का अर्थ है आत्म-ज्ञान।
24 त्याग के लिए त्याग करना मुश्किल है; परन्तु सेवा के निमित्त आसान है।
25 मृत्यु केवल निद्रा और विस्मृति है।
26 खुराक स्वाद लेने के लिए नहीं, बल्कि शरीर को पालने के लिए है।
27 इन्सान इन्सान से डरे, यह हमारे लिए शर्म की बात है।
28 लालच किसी को होना ही नहीं चाहिए।
29 किसान जमीन से पैदा न करे तो हम क्या खाएंगे ? राजा तो वही है।
30 हे राम ! जो मनुष्य किसी का बोझ हलका करता है वह निकम्मा नहीं है।
31 आत्म-सुधार से प्रफुल्लता आनी चाहिए।

FEBRUARY फरवरी

1 बिना ज्ञान के सही स्वतन्त्रता नहीं मिलती।
2 मनुष्य के विकास के लिए जीवन जितनी ही मृत्यु आवश्यक है।
3 बड़ों की लाल आंखों में अमृत देखें। उनके लाड़ से दूर भागें।
4 जन्म-मरण दोनों एक ही चीज के दो पहलू हैं।
5 दृश्य ईश्वर क्या है ? गरीब की सेवा।
6 लालच और कपट हिंसा की संतान भी हैं और उसके जनक भी।
7 मनुष्य-मात्र का विश्वास रखना हमारा कर्तव्य है। हम भी तो दूसरे के विश्वास की आशा रखते हैं।
8 तमाम सच्चे और ठोस काम कार्यकर्ता को अमर बना देते हैं, क्योंकि वे उसकी मौत के बाद भी जिंदा रहते हैं।
9 सेवा करने वाले को तो अपनी आबरू, मान, सर्वस्व होम कर ही प्रजा की सेवा का इरादा करना चाहिए।
10 तपस्या जीवन की सबसे बड़ी कला है।
11 सूर्य के बराबर अद्वितीय नियमितता के साथ कौन बेगार करता है ?
12 जो सेवा पाता है उसे सेवा का ध्यान रखना चाहिए। न रखना अपने कर्तव्य से चूकना है।
13 जो अनासक्ति से प्रेम करता है, वह शरीर से थकता नहीं।
14 कोई शुभ निश्चय मनुष्य भले ही न करे, लेकिन विचार पूर्वक करे तो उसे कभी न छोड़े।
15 सत्याग्रही असत्य को सच मानकर बैठ जाय तो दुराग्रही बन सकता है।
16 सच्ची और निःस्वार्थ सेवा ही सच्ची-से-सच्ची प्रार्थना है।
17 जब कोई धर्म बाहरी टीका को सहन करने का धीरज खो देगा तो वह उसके पतन का दिन होगा।
18 ब्रह्मचर्य सबसे अच्छा है, व्यभिचार बुरा।
19 जीवन की स्वच्छता सबसे ऊंची व सबसे सच्ची कला है।
20 शिक्षा मात्र आत्मोन्नति के लिए होती है।
21 विश्व की मां बनने वाली में तो अपार ज्ञान और प्रेम चाहिए।
22 जो यह भी नहीं जानता कि वह कुछ नहीं जानता, वह मूर्ख-शिरोमणि है।
23 जो जीवन का लोभ छोड़कर जीता है, वही जीवित रहता है।
24 जब मैं विश्वास-भंग होते देखता हूं तो मुझे जीवन भार-सा लगता है।
25 मौन कभी-कभी वाणी से अधिक वाचाल होता है।
26 समुद्र से अलग पानी की बूंद सूख जाती है। समुद्र का हिस्सा बनकर अपनी छाती पर बड़ा भारी जहाजी बेड़ा ले जाने का यश कमाती है।
27 डरपोक के सब-कोई दुश्मन हो जाते हैं।
28 अंधा अंधे को कैसे रास्ता बता सकता है ? डूबता डूबते को कैसे बचा सकता है ?

MARCH मार्च

1 रामायण और महाभारत के रचयिता शब्दों के चित्रकार नहीं, मानव-स्वभाव के चित्रकार थे।
2 रजामन्दी के साथ लगाई जाने वाली पाबंदियां ही फायदा पहुंचा सकती हैं।
3 जो ईश्वर के न्याय में शंका रखते हैं, उनका हृदय प्रफुल्लित नहीं रहता।
4 गीता के भक्त को न सुख होता है, न दुःख।
5 सम्पूर्ण स्वार्पण का अर्थ है कि चिंता से पूरी तरह मुक्त रहें।
6 सत्याग्रही में सत्य का आग्रह—सत्य का बल—होना चाहिए।
7 यदि सम्पूर्ण सत्य का पालन किया जाय तो क्या नहीं हो सकता ?
8 धीरज रखो, विश्वास रखो और निराशा को कभी मन में स्थान न दो।
9 आत्म शुद्धि की पहली सीढ़ी यह है कि हम अपनी अशुद्धि को कबूल करें।
10 मनुष्य कर्म का भोग बनता है। सत्कर्म से चढ़ता है, दुष्कर्म से गिरता है।
11 हाथ और पैर का श्रम ही सच्चा श्रम है।
12 मैं सतत प्रार्थना करता हूं कि मैं किसीके लिए झूठा मार्ग-दर्शक साबित न होऊं।
13 आत्मवंचना में दंभ से भी ज्यादा बड़ा खतरा है।
14 जहां सम्पूर्ण आत्म-समर्पण है वहां स्वेच्छा के लिए गुंजाइश नहीं है।
15 कर्तव्यों के धर्म-संकट में से सच्चा मार्ग ढूंढ लेना सहज नहीं है।
16 खुराक की बदहजमी के लिए तो दवा है, पर विचारों की बदहजमी आत्मा को बिगाड़ देती है।
17 बुद्धि का उपयोग समाज के लिए ही करना चाहिए।
18 ईश्वर की इस दुनिया में रात कहीं भी सदा नहीं बनी रहती।
19 मनुष्य स्वयं अपना उद्धारक है। अपना शत्रु और नाशक भी वही है।
20 जो धर्म सत्य और अहिंसा का विरोधी है वह धर्म नहीं है।
21 मनुष्य जिस भावना से देखता है वही अर्थ निकालता है।
22 जैसे अहिंसा के सामने हिंसा शांत हो जाती है वैसे ही शुद्ध सत्य के आगे असत्य शांत हो जाना चाहिए।
23 जो व्यक्ति पूर्ण सत्यमय हो जाता है, उस के लिए निराशा जैसी कोई चीज ही नहीं।
24 प्रकाश गहरे-से-गहरे अंधकार का नाश करता है।
25 प्रतिज्ञा हमेशा किसी सत्कार्य के लिये ही की जाती है।
26 ईश्वर प्रकाश है, अंधकार नहीं। वह प्रेम है, घृणा नहीं। वह सत्य है, असत्य नहीं।
27 बुद्धि तो हृदय की दासी है।
28 जवानी विकारों को जीतने के लिए मिली है। उसे हम व्यर्थ ही न जाने दें।
29 अगर डर मिट जाता है तो नफरत के लिए भी कोई जगह नहीं रह जाती।
30 अगर हम शुद्ध नहीं होंगे तो केवल जड़ता से ही मर जाने वाले हैं।
31 [illegible] के बाद भी काम नहीं बनता।

APRIL अप्रैल

1 यह विश्वास कि जगतपालक हमारी रक्षा करता है, ये दलील से उत्पन्न नहीं होता, दर्शन ही से होता है।
2 जब मनुष्य अपने को एक रजकण से भी छोटा मानता है, तब ईश्वर उसकी मदद करता है।
3 मेरी प्रार्थना मन की शांति के लिए है, दिल की सफाई के लिए है।
4 उस देशभक्ति का त्याग करो, जो दूसरे राष्ट्रों को आफत में डालकर, बड़प्पन चाहती हो।
5 मर्यादा में रहकर उपवास करने से बहुत आत्मिक लाभ होता है।
6 धर्महीन राजनीति को एक फांसी ही समझिए। वह आत्मा का नाश करती है।
7 धर्म के मूल में श्रद्धा रही है। जहां श्रद्धा नहीं, वहां धर्म नहीं।
8 भूल करने से पाप तो है ही, परन्तु उसे छिपाने में उससे भी बड़ा पाप है।
9 जिसको ईश्वर बचाना चाहता है उसको कौन मिटा सकता है ?
10 जो दिया बुझ गया, जो जिंदगी चली गई, वह लौटकर आने वाली ही नहीं।
11 सीप में चांदी का और सूर्य के ताप में जल का भ्रम सर्वथा झूठा है।
12 आंखें सारे शरीर का दीपक हैं।
13 श्रद्धा और विश्वास न रहे तो क्षणभर में प्रलय हो जाय।
14 रागद्वेषादि का सर्वांश में क्षय हो जाना ही आत्मदर्शन का उपाय है।
15 सरकार की मदद लेने में न धर्म का पालन होता है, न पुरुषार्थ बनता है। इसमें मानव का कल्याण है।
16 आलस्य एक प्रकार की हिंसा है।
17 अशक्य को शक्य बनाने में ही नवयुवक की बहादुरी और यौवन की शोभा है।
18 हमें भूलें करने का अधिकार है। भूल होगी, फिर करेंगे और आगे बढ़ेंगे।
19 श्रद्धा किसी की सलाह की राह नहीं देखती।
20 जहां श्रद्धा है, पराजय नहीं। श्रद्धालु का अकर्म भी कर्म हो जाता है।
21 पशु और दूसरे कोटि के प्राणियों का नियम मानवयोनि का नियम नहीं।
22 धीरज का फल मीठा होता है। धीरज रखें। सब अच्छा ही होगा।
23 अपने प्रति और दुनियां के प्रति सच्चे रहो।
24 शैतान हमारे पीछे रहता है और कमजोर हालत में पकड़ता है।
25 हरएक गुनाह एक किस्म की बीमारी है और उसका इलाज भी इसी दृष्टि से होना चाहिए।
26 जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं को कभी यंत्राधीन मत बनाओ।
27 हम धर्म को न भूलें, इतनी प्रार्थना ईश्वर से मैं निरन्तर करता हूं।
28 सौ कपूतों से एक सपूत अच्छा होता है।
29 मौन एक ब्रह्म अस्त्र है।
30 प्रातःकाल उठते ही राम नाम लेना और कहना कि मुझे निर्विकार कर, मनुष्य को अवश्य ही निर्विकार करता है।

MAY मई

1 शैतान मनुष्य की कमजोरी बढ़ा देता है, ईश्वर मनुष्य की कमजोरी दूर करता है।

2 आत्मा न स्त्री है न पुरुष, न बालक है न वृद्ध। ये गुण तो शरीर के हैं।

3 हरेक धर्म में जो रत्न की-सी बात हाथ में आवे उसको ले लें। और अपने धर्म की अच्छाई को बढ़ाते चलें।

4 जिस का चित्त ईश्वर में होता है, उसे अन्ध-कारमय चीजें भी दीखती हैं।

5 जिसका मन थक जाय उसे क्या जबरन रखा जा सकता है ?

6 जो अनिवार्य है, उस पर रंज करना व्यर्थ है

7 जब उन्नत घड़ियां जीवन का स्थायी अंग बन जाती हैं, तब किसी चीज की जरूरत नहीं रहती।

8 दुनिया में ऐसा कोई नहीं है, जिससे हमें कुछ भी लेने से न मिले।

9 महान् पुरुष कभी नहीं मरते। यह आप पर है कि उनको अमर रक्खें।

10 प्राणिमात्र में जो दुःखी हैं, उनकी सेवा भगवद्भक्ति है।

11 पवित्रता जबरदस्ती नहीं लाई जा सकती।

12 परमात्मा बड़ा शांतिशील और चिर-सहिष्णु है। जालिम को वह उसकी कब्र खोदने देता है।

13 हम सब में दैवी और आसुरी प्रकृति कार्य कर रही है।

14 संयम मनुष्य को सुशोभित करता है और स्वतंत्र बनाता है।

15 गुस्से और नफरत की भावनाओं को काबू में रखो।

16 सौंदर्य आंतरिक वस्तु होने से उसका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो सकता।

17 जो कलेजे के दृढ़ हैं, हाथों में दम है, उन्हें हानि से नहीं डरना चाहिए।

18 प्रार्थना का अर्थ ही सदाचरण होना चाहिए।

19 शरीर का नीरोग या दीर्घायु होना विषय-रहित होने का परिणाम है।

20 जिसे विकार-मात्र का त्याग करना है उसे शांति की आवश्यकता है।

21 जहां वाचा और मन में एकता नहीं, वहां वाचा केवल मिथ्यात्व है।

22 जब जीवन है शरीर को उसका हक देना ही चाहिए।

23 मैं हो 'निर्बल के बलराम को सम्पूर्णतया मानता हूं।

24 प्रत्येक देश की शिक्षा उसके स्वराज्य की रक्षा के लिए होती है।

25 भाषणों से और भाषण करने वालों से डरना, उनसे दूर रहना अच्छा है।

26 जितने गहरे पानी में जाओ, उतने ही ज्यादा रत्न मिलते हैं।

27 इस पृथ्वी पर किसी मनुष्य के प्रति भी हमें द्वेष नहीं है।

28 जीवन के प्रति आग्रह कोई छलना नहीं है, यह अत्यन्त वास्तविक है।

29 भविष्य का विचार न करके जिस समय जो काम करते हों, वही करें।

30 हमारे जीवन में सच्चाई है तो उसका असर अपने आप लोगों पर पड़ेगा।

31 मेरा तो यह भी विश्वास है कि सत्पुरुष के कार्य का सच्चा आरम्भ उसके देहांत के बाद ही होता है।

JUNE जून

1 जो खादी पहनते हैं, वे या तो गरीबों के लिए पहनते हैं या स्वराज्य के लिये।

2 किसी को अस्पृश्य गिन सकते हैं तो असत्य और पाखण्ड से भरे लोगों को।

3 कितना ही दुःखद विषय क्यों न हो, उसकी चर्चा कठोरता से न करें।

4 चंद आदमियों में धन केन्द्रित होना और लाखों का बिकार होना महान सामाजिक अपराध या रोग है।

5 जिन्हें श्रद्धा होती है उनके कंधों से सभी चिंताओं का भार उतर जाता है

6 मनुष्य को अपनी ओर खींचने वाला असली चुम्बक तो केवल प्रेम है।

7 गुरु शिष्य का सम्बन्ध आध्यात्मिक तथा स्वयं-स्फुरित होता है।

8 नापक साधन से ईश्वर नहीं पाया जा सकता, और बुरी चीज को पाने का साधन साफ नहीं हो सकता।

9 अधीरज को धीरज से ही मारा जा सकता है और गरमी को सरदी से।

10 दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है लोकमत, जो सत्य-अहिंसा से पैदा होता है।

11 इन्सान डरपोक बनने के लिये थोड़े ही पैदा हुआ है।

12 दलीलों से या रुपये-पैसे से आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा सकता।

13 अनुभव की पाठशाला का अभ्यास किताबें पढ़ने से ज्यादा उपयोगी होता है।

14 जो ईश्वर को अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

15 इस दुःखी जगत की पीड़ा हटाने के अहिंसा सीधा रास्ता है।

16 जो जाग्रत रहते हैं और प्रार्थना करते हैं, उनके लिये ईश्वर बड़े काम और बड़ी जिम्मेदारी जुटा देता है।

17 सत्य के पुजारी पर परिस्थिति का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये।

18 हथियारों की बहादुरी से ज्यादा बुलंदी मरकर स्वरक्षा करने में है।

19 जिसका मन परोपकार में रमा रहता है, उसका जन्म सफल होता है।

20 कानून के जरिये किसी भी बुरी आदत को छुड़ाना उतना हिंसा या पशु-बल नहीं कहा जा सकता।

21 बाहरी चीजों की लोलुपता के बजाय हमें भीतरी सुन्दरता को देखना चाहिये।

22 झूठ अपनी मौत मर जाता है। उसकी अपनी कोई शक्ति नहीं होती।

23 उस जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं जिसके बनाने की शक्ति हममें न हो।

24 दूसरों पर अत्याचार करके अपने धर्म की रक्षा नहीं हो सकती।

25 शक पैदा होने पर अच्छा यही है कि हम धैर्य रखकर बैठे रहें।

26 धर्म हरएक औरत या मर्द के लिए अमल की चीज है।

27 बुरे की बुराई उसके साथ चली जाती है, केवल भलाई ही पीछे रहती है।

28 आदमी यदि अच्छा काम करता है तो जगत को हिस्सेदार बना लेता है।

29 जो हक कर्तव्यपालन में से पैदा नहीं होता उसकी कोई रक्षा नहीं कर सकता।

30 हमें भलाई के सिवा और कुछ सोचना ही नहीं चाहिए।

JULY — जुलाई

1 मेरे लिए यह आकाश-दर्शन ईश्वर-दर्शन का द्वार बन गया है।
2 रिवाज के कुएं में तैरना अच्छा है, उसमें डूबना आत्महत्या है।
3 जितना पचा या हजम हुआ होगा उतना ही कार्य के रूप में फूटेगा।
4 अविश्रांत, सच्चे और शांत प्रयत्न से कार्य में सफलता शीघ्र मिल सकती है।
5 कोई बुरी चीज स्वीकार कर लेने से वह अच्छी थोड़े ही हो जाती है।
6 रूप सदा बदलता, आत्मा न कभी बदलती है, न नष्ट होती है।
7 परमार्थ की ओर से दृष्टि हट जाय तो सभी करोड़पति बनने के लिए बेचैन हो जायं।
8 अत्यंत आध्यात्मिक कार्य, शब्द के अर्थों में अतिशय व्यावहारिक होता है।
9 हर रोग कुदरत के किसी अज्ञात कानून के भंग का ही परिणाम है।
10 बूते से बाहर का काम अपने पर नहीं लेना चाहिए।
11 कला को उपयोग से अलग नहीं किया जा सकता।
12 पापी को पुण्य अखरता है, स्वच्छंदी को संयम कड़वा लगता है।
13 जो जैसा कहता है, वैसा करता है या नहीं, इसी से उसकी जांच होती है।
14 मनुष्य में भावना न हो तो मनुष्य का मूल्य क्या है।
15 शक्ति के पैदा होते ही संयम कर लेना प्रायः अधिक प्रभावकारी होता है।
16 मंदिर, मस्जिद आदि अलग-अलग रह सकते हैं, परंतु हिंदुस्तान-रूपी जो बड़ा मन्दिर है, वह सबका है।
17 आलोचना करने के अधिकार के लिए हममें स्पष्ट समझ और पूरी सहिष्णुता की प्रेम-शक्ति होनी चाहिए।
18 हमारा भविष्य, हमारी सामर्थ्य, सत्यवादिता, साहस, संकल्प, सतर्कता और नियंत्रण पर निर्भर करता है।
19 किसी भी मित्र या रिश्तेदार की मृत्यु से हमारा विश्व-प्रेम बढ़ना चाहिए।
20 आत्मा का आत्मा से मिलन होना अधिक अच्छा है।
21 शास्त्र के नाम से जो चलता है, सबको शास्त्र न माना जाय।
22 सब प्रांतों को एक महान् नदी की सहायक नदियों की भांति होना चाहिए।
23 जितने की जरूरत हो, उतना ही मांगें। न मिले तो उसके लिए लड़ें।
24 तुम जिसे इस समय सच मानते हो वही सत्य और तुम्हारा परमेश्वर है।
25 हृदय पर बौद्धिक विश्वास का असर बहुत धीरे-धीरे होता है।
26 हम ईश्वर को पहचानते हैं तो मृत्यु में आनंद मानना सीखना चाहिए।
27 विरोधी की त्रुटियों को रजकण-सा गिनकर खूबियों को पर्वत करके बताने में ही दया और प्रेम की कला है।
28 पंथ बना देने वाली कठिनाइयों पर पहले से विचार नहीं करना चाहिए।

AUGUST — अगस्त

1 अगर सारा समाज शुद्ध हो जाय तो बाहरी आक्रमण कितने ही भयंकर क्यों न हों, वह उनसे सुरक्षित हो जायगा।
2 माताओं की शोभा जेवर से नहीं, हृदय से है।
3 अशोक का चक्र किसी भी हालत में हिंसा का चक्र नहीं बन सकता।
4 तन मेरा चाहे जिस प्रवृत्ति में लगा हो, पर मन में तो राम का मधुर नाम ही गूंजा करे।
5 विषय मात्र का निरोध ही ब्रह्मचर्य है।
6 विषयों का आत्यंतिक क्षय तो पर के दर्शन से ही हो सकता है।
7 अनाथ तो अपने को वही समझ सकता है, जिसके सिर पर ईश्वर न हो।
8 जो कर्तव्य के ध्यान में रहता है, दूसरी वस्तुओं से उदासीन हो जाता है।
9 मेहनत से तैयार की हुई चीज ही भेंट देना क्या सच्ची भेंट नहीं है?
10 सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्ला है, गॉड है।
11 हिंसा में अशान्ति अहिंसा में शान्ति है।
12 सत्याग्रह सत्ता प्राप्त करने के लिए नहीं, सत्ता को शुद्ध करने के लिए है।
13 लाखों भूखों मरने वालों के साथ पूर्ण पक्ष लेना न्याय है।
14 जैसे समुद्र की बूंदें अलग होने पर एक हैं वैसे हम इस संसार-सागर में हैं।
15 आजादी का दिन खुशी मनाने का दिन तब हो सकता है जब हम सच्चे दिल से दोस्त बनें।
16 धन-दौलत तो आती-जाती ही है। चली जाय तो रंज हर्गिज न करें।
17 भगवान् ने इंसान को अपनी ही तरह बनाया, लेकिन हमारे दुर्भाग्य से इंसान ने भगवान को अपने जैसा बना डाला।
18 भारी-से-भारी संकट में हमारा कर्म ही हमें सत्य पर स्थिर रखता है।
19 हम नम्रतापूर्वक इस बात को जानें, भूलों से संग्राम करना ही जीवन है।
20 दंभ तो सिर्फ झूठ की पोशाक है।
21 जहां काम करने की इच्छा होती है, वहां रास्ता निकल ही आता है।
22 हमें गीता की समदर्शिता अपने में पैदा करनी है।
23 रोग के कीड़ों को प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा नष्ट कर देना चाहिए।
24 अंतःकरण परिपक्व बुद्धि के रास्ते हमारे अंतर-पट पर पड़ने वाली प्रतिध्वनि है।
25 स्वार्थ की भावना जिसने त्याग दी उसका जीवन सफल है।
26 लड़ाई से न तो भारत को मुक्ति मिल सकती है न संसार को।
27 जहां शुद्ध प्रेम है, वहां दोनों एक-दूसरे का मन रखकर चलते हैं।
28 जो अपने दोषों को गुण समझता है, उससे तो ईश्वर भी दूर भागता है।
29 सारे अधिकार उन कर्तव्यों से निकलते हैं, जिन्हें हम अदा कर चुकते हैं।
30 पहले समय विद्यार्थियों को ज्ञान बढ़ाने का काम ही करना चाहिए।

SEPTEMBER सितम्बर

1 दीक्षा का अर्थ आत्म-समर्पण है। आत्म-समर्पण आडंबर से नहीं होता। यह मानसिक वस्तु है।
2 अभय मोह रहित अवस्था की पराकाष्ठा है।
3 ठीक ढंग के जनतंत्र के विकास में हिंसा और असत्य में समझौता नहीं हो सकता।
4 जनता अगर अपनी ताकत और अपने धर्म को समझ के काम करे तो सब कुछ अपने-आप ठीक हो सकता है।
5 सिद्धांत-रक्षा की खातिर प्रियतमों को भी त्यागने का साहस हम में होना चाहिए।
6 सत्याग्रह की जड़ मनुष्य-स्वभाव पर विश्वास रखने में है।
7 अंग्रेजी भाषा का मोह छूटेगा, हमारी भाषाओं को कंगाल बना देगा।
8 गलत बात या बढ़ा-चढ़ाकर कहने से अच्छा मामला भी बिगड़ जाता है।
9 मानव-सेवा में राजनैतिक मतभेदों और संघर्षों के बावजूद सबको एक होना चाहिए।
10 धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है : धर्म-रहित राज्यसत्ता राक्षसी है।
11 अपने पड़ौसी के सदा गुण देखने चाहिए। अपने सदा दोष देखने चाहिए।
12 सच्चा इंसान वह है जो बुरे का बदला भले से देता है।
13 मारने वाले से बचाने वाला बलवान है।
14 शुद्ध सेवा के बल पर सत्ता मिलती है, वह हृदय को उच्च बनाती है।
15 सुगंध जल कर हम सुगंध फैलाते हैं, उसी प्रकार पूजा करके हम सुगंध-मय बनते हैं।
16 बोलें कम, करें अधिक।
17 मेरी राय में हिंदूधर्म की खूबी उसकी सर्वव्यापकता और सर्वसंग्राहकता है।
18 हमारा यह काम नहीं हो सकता कि कोई गंदा करे तो हम भी गंदा करें।
19 अच्छा होना ही काफी नहीं है, बहादुर और ज्ञानी भी होना चाहिए।
20 जब तक शरीर का उपयोग है तभी तक वह रहे, इसी में भलाई है।
21 गलती के स्वीकार से हमको बहुत लाभ होता है। उसमें शुद्ध व्यवहार है।
22 शिष्टाचार और सहन शक्ति हमारी संस्कृति अपना स्वयं परिचय दे।
23 मरने की हिम्मत रखना सबसे बड़ी बहादुरी है।
24 धर्म की बात में लिहाज नहीं किया जा सकता।
25 मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिए और ईश्वर का सहारा रखना चाहिए।
26 कला के लिए जरूरत बुद्धि और हृदय की है, रुपये की कदापि नहीं।
27 जिसे रामनाम हृदय में अंकित करना है, उसको मरना है ही कहां ?
28 उचित समय पर लिया गया आराम फटे कपड़े में टांका लगाने जैसा है।
29 खादी की पोशाक पहनकर दरिद्रनारायण की सेवा करना ही उचित है।
30 हम पहली तालीम अपने लड़के-लड़कियों को यह दें कि वे अबल नहीं हैं।

OCTOBER अक्टूबर

1 हुकूमत का क्षेत्र, छोटा है, लेकिन सेवा का क्षेत्र तो बहुत बड़ा है।
2 दया के इस अपार सागर में हम सब बूंद के बराबर हैं।
3 अगर मैं सच्चा होऊं तो साथी जरूर सच्चे होंगे।
4 परछांई की तरह पीछे-२ चलने वाली मौत कब पकड़ लेगी, कौन जानता है ?
5 हम कभी एक चोला पहनें, कभी दूसरा, तो यह भी कोई धर्म होता है।
6 अस्पृश्यता-निवारण करने का अर्थ है ऊंच-नीच के भेदभाव को जड़ से उखाड़ फेंकना।
7 नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यंतिक क्षय।
8 अन्न शरीर की खुराक है, ज्ञान और चिंतन आत्मा की।
9 इस दुनिया में केवल सुख-ही-सुख हो तो हमारा जीवन उससे ऊब जाय।
10 जो धर्म को बहुत-सी प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्म को जानता ही नहीं।
11 जो ब्रह्म में लीन और सदा सेवापरायण रहना चाहता है, उसे किसी की आवश्यकता नहीं।
12 मनुष्य को कष्ट भोगना पड़े यह मुझे इतना नहीं खटकता जितना पतन होना खटकता है।
13 बेहद विरोधी परिस्थितियों में ही आदमी की जांच होती है।
14 बुद्धि को ही सर्वज्ञ मानना उतनी ही बुरी मूर्ति-पूजा है, जितनी ईंट-पत्थर को ही ईश्वर मानकर पूजा करना।
15 इंसान में जो देव-अंश है, उसकी झलक न दिखे, तो मानवता मर जाय।
16 वाङ्मय साध्य नहीं है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवा का साधन है।
17 दुश्मन के प्रति मित्रभाव का नाम प्रेम है।
18 हम यह चाहते हैं कि दुष्ट-से-दुष्ट मनुष्य भी दुष्टता छोड़े।
19 धर्म की परीक्षा दुःख में होती है।
20 पवित्र हृदय वालों के विचार अपवित्र हृदय वालों से कहीं अधिक अच्छे हैं।
21 गरीब-से-गरीब लोगों की सेवा बिना, मोक्ष मैं असम्भव मानता हूं।
22 जब तक मनुष्य निर्बल रहेंगे उनकी निर्बलता से लाभ उठाने वाले भी रहेंगे।
23 विदेश में रहने से अच्छा स्वदेश की स्वतन्त्रता है।
24 प्रेम-भरा हृदय अपने प्रेम पात्र की भूल पर दया करता है।
25 मनुष्य कोई गुनाह करने की खातिर गुनाह थोड़े ही करता है।
26 अत्याचार से कभी कोई धर्म नहीं बचता।
27 यह असम्भव है कि प्रचण्ड प्रकाश में पाप और बहम टिके रह सकें।
28 वर्तमान की चिन्ता हम कर लेंगे तो भविष्य की भगवान कर लेगा।
29 कायर की समझदारी लम्बी मंजिल तय नहीं कर सकती।
30 सत्य के लिए कुछ भी गुप्त नहीं है। सत्य ही ईश्वर है।
31 बगैर अनासक्ति के मनुष्य न सत्य का पालन कर सकता है, न अहिंसा का।

NOVEMBER नवम्बर

1 लिपियों में सुधार तब होगा जब गिरोहबंदी और जनून का कारण नहीं रहेगा।
2 जो अन्तर को देखता है, बाह्य को नहीं, वही सच्चा कलाकार है।
3 सभी क्रांतिकारी सुधारक होते हैं और सभी सुधारक क्रांतिकारी होते हैं।
4 कई युद्ध ऐसे भी हैं, जिनमें हारना विजय है।
5 जो बुद्धि-ग्राह्य वस्तु नहीं है और बुद्धि से विपरीत है, वह धर्म नहीं होगी।
6 हार गये तो हार मानने में सत्याग्रही को शर्म न होनी चाहिए।
7 मनुष्य तो रंक प्राणी है। राजा तभी होता है, जब अहंकार छोड़कर ईश्वर में समा जाए।
8 दान देने वाले जितने ज्यादा होंगे, उतना ही निराश्रितों और देश को फायदा होगा।
9 कूप-मंडूक बनना छोड़ो तो हिन्दुस्तान, और सब बंधन छोड़ें तो सारा संसार एक कुटुम्ब बन जाता है।
10 सेवा का भी मोह हो सकता है। मोह मात्र छोड़ने से ही सच्ची सेवा होगी।
11 योग्य काम अपना आशीर्वाद अपने साथ ही लेकर चलता है।
12 आलस हरएक को नीचे गिराता है।
13 जिस बात को आप सच मानते हैं, वही करें। बाद में जगत सच ही कहेगा।
14 सच्चे धर्म में दबाव के लिए कोई जगह नहीं होती।
15 आलस और पराधीनता देश के लिए बुरी चीजें हैं।
16 मानव अधिकारों के सामने पैसा कोई चीज नहीं है।
17 गरमी में तपता हुआ, छांह में रहने वाले पंडित की बात कैसे माने?
18 मुझे पक्षपात सत्य का ही है और मैं अहिंसा के मार्ग से सत्य का शोधन करना हूं।
19 सरकारी सत्ता को सच्ची सत्ता बनी रहना है तो वह अपराधी को अपराध की सजा दिये बिना न रहेगी।
20 एक पापी सारी नाव को डुबो देता है।
21 इच्छा न हो उस पर भी रोग के कीड़े असर करते हैं।
22 अच्छे-से-अच्छे अखबार भी खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर कहने से बरी नहीं।
23 वही साहित्य चिरंजीव रहेगा, जिसे लोग सुगमता से पा, पचा सकेंगे।
24 मृत्यु से शरीर का नाश होता है, आत्मा का नहीं।
25 महान् वस्तुओं का दुरुपयोग अनादिकाल से होता आया है।
26 जो ईश्वर भक्त है वह तो बीमारी का भी सदुपयोग कर सकता है।
27 जो सत्य जानता है; वह परमेश्वर को पहचानता है।
28 प्रजा में जितना जोहर होगा उतना ही चमकेगा। हम उसका तेज बढ़ावें।
29 [illegible]

DECEMBER दिसम्बर

1 हम यह सोचने की गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नहीं सकते।
2 जो बुरा करते हैं उन पर इल्जाम लगाया जाय तो इसमें बुरा क्या?
3 जहां तक हो सके वहां तक मौन ही रखना चाहिए।
4 योग धीरे-धीरे करना चाहिए। जो काम हम कर रहे हैं वह योग ही है।
5 दूसरों का जो भला काम है उसको बढ़ाकर, बुरे काम को छोटा बतावें।
6 परोपकार का अर्थ है दूसरों का भला चाहना।
7 प्रेम ही संसार में सबसे सूक्ष्म शक्ति है।
8 यह दुनिया वैर से भरी होती तो इसका कभी का अन्त हो गया होता।
9 शहर देहातियों को चूसने के लिये है। अतः शहर की सम्पदा देहातों के ढांचे में नहीं है।
10 मैं तो चाहता हूं कि हर एक देहात के घरों में चर्खा गुंजन करे।
11 हम छोटे इंसान समुद्र में बिंदु के समान हैं। ईश्वर नहीं बचायेगा तो शैतान खा जायेगा।
12 गजेन्द्र-मोक्ष कोरा काव्य नहीं है। हमारे जैसों के लिये एक आश्वासन है।
13 मानसिक काबू सबसे कठिन है। इसका उत्तम उपाय गीता का अध्ययन है।
14 जो समय बचाते हैं वे धन बचाते हैं। बचाया धन कमाये के बराबर है।
15 विनाश का पूर्वाभास गर्व और पतन का पूर्वाभास मिथ्या गर्व से होता है।
16 जब बहुत आदमियों से काम लेना हो तो अविश्वास रखना गलत नीति है।
17 शरीर ईश्वर के रहने का मन्दिर है। उसे हम झाड़-बुहार कर साफ रखें।
18 पर त्याज्य मानी जाने वाली जरा से परिवर्तन से कर्त्तव्य बन जाती है।
19 जो चीज बुद्धिगम्य है, उसको श्रद्धा से मानने की आवश्यकता नहीं है।
20 चर्खा सूरज है दूसरे उद्योग ग्रह हैं। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नहीं सकते।
21 सत्य गोपनीयता से घृणा करता है।
22 इंसान के स्वभाव का हनन कोई कर सकता है तो वह स्वयं ही।
23 पाप-कर्म को अन्धेरे की जरूरत होती है।
24 सबसे बड़ा गिरजाघर है ऊपर आकाश और नीचे धरती माता।
25 सत्य और अहिंसा तो अपूर्ण हो ही नहीं सकते।
26 दूसरों को मिटाने की चेष्टा करने वालों को खुद मिटना होगा।
27 जो पक्का सत्याग्रही है, उसके लिये संशयात्मक दशा है ही नहीं।
28 सात्विक भावों को बढ़ाने की कोशिश करते रहें तो उद्दण्डता प्रतिक्षण गौण स्थान लेती जायगी।
29 हमें तो इतना देखना चाहिये कि हम जो कर रहे हैं वह शुद्ध है या नहीं? जो बो रहे हैं वह प्रेम है या और कुछ?
30 [illegible]

बापू का प्रिय भजन

...णव जन तो तेने कहीये जे पीड़ पराई जाणे रे ;
...र दुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।
...कल लोकमां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे
...च, काछ, मन-निश्चळ राखे, धन-धन जननी तेनी रे।

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे ;
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहीं जेने, दृढ़ वैराग्य जेनां मनमां रे ;
रामनामशुं ताळी लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे ;
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां कुळ एकोतेर तार्या रे।

१८६९—२ अक्टूबर को पोरबन्दर में जन्म।
१८७६—राजकोट में शिक्षारंभ; कस्तूरबाई से सगाई।
१८८३—कस्तूरबाई से विवाह।
१८८५—पिताजी की मृत्यु।
१८८७—मैट्रिक परीक्षा पास की: भावनगर के सामलदास कालेज में दाखिला।
१८८८—४ सितम्बर को शिक्षा के लिए विलायत रवाना।
१८८९—पहला सार्वजनिक भाषण—इंग्लैंड की निरामिषाहारियों की सभा में।
१८९१—१० जून को बैरिस्टर हुए; ७ जुलाई को बम्बई पहुंचे; माताजी की मृत्यु का समाचार।
१८९२—राजकोट तथा बम्बई में वकालत।
१८९३—अप्रैल में मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका रवाना।
१८९४—जिस मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका गये थे, उसका पंच-फैसला हुआ।
१८९५—नेटाल सुप्रीम कोर्ट के एडवोकेट हुए; नेटाल भारतीय कांग्रेस का संगठन।
१८९६—छः मास के लिए भारत-आगमन; तिलक-गोखले आदि नेताओं से भेंट; २८ नवम्बर को वापसी।
१८९७—डर्बन लौटने पर विरोधी प्रदर्शन; जीवन में महान परिवर्तन।
१८९९—बोअर-युद्ध में अंग्रेजों की सहायता।
१९०१—राजकोट में महामारी-कमेटी द्वारा सेवा; भारत-आगमन; कलकत्ता-कांग्रेस में शामिल।
१९०२—बर्मा-यात्रा; रेल के तीसरे दर्जे में भारत-प्रवास। जुलाई में बम्बई में आफिस; तीन महीने बाद दक्षिण अफ्रीका के लिए पुनः प्रस्थान।
१९०३—ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन की स्थापना। 'इंडियन ओपीनियन' की स्थापना।
१९०४ गीताध्ययन, रस्किन के 'अंटू दिस लास्ट' (सर्वोदय) को पढ़कर जीवनमें क्रांतिकारी परिवर्तन; फिनिक्स आश्रम की स्थापना।
१९०६—जुलू-विद्रोह; घायलों की सेवा; ब्रह्मचर्य से रहने की प्रतिज्ञा, ...

... के सदस्य के तौर पर इंग्लैण्ड रवाना।
१९०७—खूनी कानून के विरुद्ध सत्याग्रह।
१९०८—अंतरिम समझौता; पठान द्वारा आक्रमण; पुनः सत्याग्रह प्रारम्भ; गिरफ्तारी।
१९०९—टाल्स्टाय को प्रथम पत्र; दूसरी बार शिष्टमंडल में इंग्लैण्ड रवाना; वापसी में जहाज पर 'हिन्द स्वराज्य' लिखा।
१९१०—जोहान्सबर्ग में टाल्स्टाय फार्म की स्थापना।
१९१२—गोखले की दक्षिण अफ्रीका की यात्रा; 'नीति-धर्म' प्रकाशित। 'आरोग्य-विषयक-सामान्य ज्ञान' पुस्तक लिखी।
१९१३—सत्याग्रह फिर आरंभ; गिरफ्तारी व रिहाई; सात दिन का उपवास तथा साढ़े चार मास तक एक समय भोजन।
१९१४—चौदह दिन का उपवास; समझौता व सत्याग्रह की सफलता; १८ जुलाई को इंग्लैण्ड रवाना; ४ अगस्त से प्रथम महायुद्ध; सरोजिनी नायडू से परिचय और महायुद्ध में सेवा।
१९१५—भारत-आगमन और 'कैसरे हिन्द' मैडल की प्राप्ति; भारत-भ्रमण; काका कालेलकर व आचार्य कृपालानी से परिचय; १९ फरवरी को गोखले की मृत्यु; २५ मई को आश्रम की स्थापना।
१९१६—काशी विश्वविद्यालय की स्थापना के अवसरपर प्रसिद्ध भाषण; लखनऊ-कांग्रेस में जवाहरलाल नेहरू से पहली बार भेंट।
१९१७—राजेन्द्रबाबू से पहली बार भेंट; १० अप्रैल को चम्पारन-सत्याग्रह; ३१ मईको गिरमिटियाकानून रद्द; ३० जूनको दादाभाई नवरोजी की मृत्यु; और महादेवभाई देसाई से सम्पर्क।
१९१८—अहमदाबाद में मिल-मजदूरों की हड़ताल और तीन दिन का उपवास; खेड़ा-सत्याग्रह; चर्खे का पुनरुद्धार।
१९१९—रौलट कानून; ६ अप्रैल को प्रार्थना और उपवास दिवस; १३ अप्रैलको जलियांवाला-बाग-कांड, 'यंगइंडिया' व 'नवजीवन' का संपादन शुरू; खिलाफत द्वारा असहयोग; अमृतसर-कांग्रेस।
१९२०—१ अगस्त को लोकमान्य तिलक की मृत्यु; २ अक्टूबर को तिलक स्वराज्य फंड की स्थापना; गांधीजी द्वारा तैयार किया हुआ कांग्रेस का संविधान स्वीकृत, असहयोग-आन्दोलन आरम्भ; गुजरात विद्यापीठ की स्थापना।
१९२१—अन्य राष्ट्रीय विद्यापीठों की स्थापना; प्रिंस आफ वेल्स के आगमन के बहिष्कार के कारण दंगा; अशान्ति; पांच दिन का

उपवास; अहमदाबाद-कांग्रेस।

१९२२—५ फरवरी को चौरीचौरा-कांड; सत्याग्रह-आन्दोलन स्थगित; पांच दिन का उपवास; १० मार्च को गिरफ्तारी; ६ वर्ष की सजा।

१९२४—अपेंडिसाइटिस का आपरेशन; ५ फरवरी को रिहाई; २४ सितम्बर को हिंदू-मुस्लिम-एकता के लिए २१ दिन का उपवास, बेलगांव कांग्रेस के अध्यक्ष।

१९२५—१६ जून को देशबन्धु चित्तरंजनदास की मृत्यु; एक सप्ताह का उपवास; कानपुर कांग्रेस; चर्खा संघ की स्थापना।

१९२६—स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान।

१९२७—खादी-यात्रा; १९ दिसम्बर को हकीम अजमलखां की मृत्यु।

१९२८—साईमन-कमीशन; बारडोली सत्याग्रह; मगनलाल गांधी की २२ अप्रैल को पटना में मृत्यु; १७ नवम्बर को लाला लाजपतराय की मृत्यु; नेहरू-रिपोर्ट; कलकत्ता-कांग्रेस में समझौता प्रस्ताव।

१९२९—लाहौर-कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का-प्रस्ताव।

१९३०—२६ जनवरी को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा; १२ मार्च को नमक-कानून तोड़ने के लिए दांडी-यात्रा, ५ मई को गिरफ्तारी।

१९३१—४ जनवरी को इंग्लेंड में मौ० मुहम्मदअली की मृत्यु; २५ जनवरी को रिहाई; ६ फरवरी को पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु; ४मार्च को गांधी-इर्विन-पैक्ट; २४ मार्च को भगतसिंह को फांसी; कराची-कांग्रेस; २५ मार्च को गणेशशंकर विद्यार्थी का बलिदान, दूसरी गोलमेज-कान्फ्रेंस में भारत के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में शामिल; दिसम्बर में गोलमेज-परिषद से खाली हाथ लौटे।

१९३२—कांग्रेस गैरकानूनी-घोषित; सत्याग्रह फिर से आरंभ; ४जनवरी को गिरफ्तारी; 'नवजीवन' 'यंगइंडिया' पत्र बन्द; २० सितम्बर से साम्प्रदायिक निर्णय के विरोध में आमरण अनशन; २४ सितम्बर को यरवदा-पैक्ट; २६ सितम्बर को उपवास समाप्त।

१९३३—८ मई से ३१ दिन का उपवास; 'हरिजन' पत्रों का प्रारम्भ; रिहाई; फिर गिरफ्तारी; एक वर्ष की सजा; १६ अगस्त से आमरण उपवास, जो एक सप्ताह चला; २३ अगस्त को रिहाई, २० सितम्बर को ऐनीबेसेंट की मृत्यु; २२ सितम्बर को विट्ठलभाई पटेल की मृत्यु; साबरमती आश्रम का विसर्जन;

१९३४—बिहार-भूकम्प; ७मईको सत्याग्रह स्थगित; ७ दिन का उपवास; २६ अक्तूबर को ग्रामोद्योग-संघ की स्थापना; बम्बई-कांग्रेस।

१९३५—कांग्रेस की स्वर्ण-जयन्ती।

१९३६—१० मई को डा० अंसारी की मृत्यु; सेवाग्राम आश्रम की स्थापना।

१९३७—जुलाई में कांग्रेस पदग्रहण; नई तालीम शुरू।

१९३९—४ जनवरी को मौ० शौकतअली की मृत्यु; राजकोट में आमरण अनशन; वाइसराय के हस्तक्षेप से चार दिन बाद समाप्त; त्रिपुरी-कांग्रेस; सुभासबाबू का कांग्रेस के अध्यक्ष-पद से त्याग-पत्र; ३ सितम्बर को द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ; ८ नवम्बर को प्रांतों में कांग्रेस सरकारों द्वारा पद-त्याग।

१९४०—११ अक्तूबर से व्यक्तिगत सत्याग्रह—विनोबा प्रथम सत्याग्रही; 'हरिजन' पत्रों पर रोक।

१९४१—७ अगस्त को रवीन्द्रनाथ ठाकुर की मृत्यु; कांग्रेस के नेतृत्व से मुक्ति; ३० सितम्बर को 'गो-सेवा-संघ' की स्थापना।

१९४२—कांग्रेस का फिर नेतृत्व; ११ फरवरी को सेठ जमनालाल बजाज की मृत्यु; क्रिप्स-मिशन; हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की स्थापना; ८ अगस्त को 'भारत-छोड़ो' प्रस्ताव; ९ अगस्त को भारत-भर में नेताओं की सामूहिक गिरफ्तारियां; १५ अगस्त को महादेवभाई की मृत्यु।

१९४३—आगाखां महल में २१ दिन का उपवास।

१९४४—२२ फरवरी को कस्तूरबा गांधी की मृत्यु; ६ मई को जेल से रिहाई; गांधी-जिन्ना वार्ता।

१९४५—नेताओं की जेल से मुक्ति, पहली शिमला-कान्फ्रेंस।

१९४६—केबिनेट-मिशन; मुस्लिम लीग द्वारा १६ अगस्त को 'सीधी कार्रवाई' का दिन; सांप्रदायिक दंगे, नोआखाली की पैदल यात्रा शुरू।

१९४७—१५ अगस्त को स्वतंत्रता-प्राप्ति; कलकत्ता में ७३ घन्टे का उपवास।

१९४८—दिल्ली में शांति-स्थापना तथा आमरण अनशन, जो पाँच दिन चला। ३० जनवरी को महाप्रयाण। 'हे राम!'

यात्रा के समय शुभाशुभ शकुनों पर ध्यान देने की प्रथा हमारे देश में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। इस विषय का विस्तृत लाभ प्राप्त करने के लिए 'सचित्र शकुन विज्ञान' नामक पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए। यहां पर हम यात्राकाल के कुछ प्रमुख शकुनों के फलाफल का उल्लेख कर रहे है जिन्हें नियमानुसार समझकर लाभ उठाना चाहिए।

मंगल पदार्थों के शकुन

● प्रस्थान के समय यदि सामने जल से पूर्ण मंगल घट रखा दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है।

● प्रस्थान के समय दांये भाग में दो मछली, ध्वजा पताका, छत्र, कलश अलंकार, आभूषण, शहद, चंदन, फल, केशर, पानी, रत्न, स्वर्ण, आसन, पुष्प माला, दूर्वा, चंवर, मुकुट, मिट्टी, शंख दीपक, चावल, सरसों, लड्डी, दही, मांस घंटा, शस्त्र, वस्त्र, अंकुश तथा ताम्बुल दिखाई दे तो उसे शुभ समझना चाहिए।

बैल सम्बन्धी शकुन

● यात्रा के समय रस्सी से युक्त एक बैल सामने से आता हुआ दिखाई दे तो विजय प्राप्त होती है।

● यात्रा के समय बैल (सांड) अपने बांये सींग तथा बांये पांव से पृथ्वी खोदता हुआ दिखाई दे तो सभी कार्य सिद्ध होते है।

● यात्रा के समय बैल का दांई ओर मुंह किए खड़े दिखाई देना शुभ होता है। बांई ओर अशुभ होता है।

सर्प का शकुन

● यात्रा के समय धामन जाति का सर्प अपना फन ऊंचा किये हुए अथवा बांई ओर को जाता हुआ दिखाई दे तो उसे सिद्धि समझना चाहिए।

● यात्रा के समय केवल फन उठाये हुए सर्प को बांई ओर से दांई ओर को जाते हुए देखा जाए तो भोजन प्राप्त होता है।

● यात्रा में दो सर्पों को एक ही ओर जाते या लड़ते देखना अशुभ होता है।

चूहा तथा अन्य सरीष्टयों का शकुन

● यात्रा के समय चूहा पथिक बायें भाग में हो और प्रसन्न होकर शब्द कर रहा हो तो शुभ होता है।

● यात्रा के समय नेवला दिखाई दे तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

● यात्रा के समय कानखजूए बांई ओर हो तो शुभ ओर हो तो अशुभ एवं क्लेश दायक होता है।

मुर्गी का शकुन

● प्रस्थान करते समय यदि मुर्गी दांई ओर को दिखाई दे अथवा बोले तो वह शुभ होता है।

● प्रस्थान के समय यदि मुर्गा-मुर्गी के साथ क्रीड़ा करता हुआ दिखाई दे तो उसे मनोकामना पूर्ण करने वाला शुभ शकुन समझना चाहिए।

पक्षी शकुन

● यात्रा के समय पोद की चिड़िया प्रसन्न बैठी दिखाई दे तो यात्रा शुभ होती है।

● यात्रा के समय खंजन पक्षी दांई ओर को दिखाई दे तो अत्यन्त सुख प्राप्त होता है।

● यात्रा के समय टिटहरी दांई ओर को बोले तो लाभ होता है बांई ओर बोले तो अशुभ समझना चाहिए।

● यात्रा के समय साथ का जोड़ा दिखाई दे और वह शब्द कर रहा हो धन, सुख, पुत्र एवं कल्याण की प्राप्ति होती है।

मोर का शकुन

● यात्रा के समय मोर नृत्य करता हुआ दिखाई दे तो सुख चैन प्राप्त होता है।

● यात्रा के समय मोर का शब्द निरन्तर सुनाई देता रहे तो कल्याण होता है।

● यात्रा के समय मोर का शब्द केवल एक बार सुनाई दे तो सुख तीन बार सुनाई दे तो धन सम्मान एवं पांच बार सुनाई दे तो अत्यन्त सुख एवं कल्याण का लाभ होता है।

शकुन आपके भविष्य सूचक होते हैं

कुत्ते का शकुन



● यात्रा के समय यदि कुत्ता अपने मुंह में हाड़ मांस रोटी अथवा अन्य किसी आहार को लिए हुए सामने दिखाई दे तो यात्रा सफल होती है तथा पथिक की मनोकामना पूर्ण होती है।

कौआ सम्बन्धी शकुन



● यदि कौआ किसी दरिद्र स्त्री अथवा पुरुष के मस्तक पर आ बैठे तो उसे श्रेष्ठ लाभ कराता है परन्तु कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार कौए का मस्तक पर बैठना शुभ नहीं होता।

● यदि कौआ किसी धनवान व्यक्ति के मस्तक पर आ बैठे तो उसके धन का नाश होता है।

साधु सन्यासी शकुन



● यदि यात्रा के समय कोई दण्डी, सन्यासी, बैरागी, जोगी, फकीर अथवा जटाधारी साधु सामने आपहुंचे तो यात्रा निष्फल हो जाती है।

ध्वनि सम्बन्धी शकुन



● यदि घर से निकलते समय षडज ऋषभ और गांधार इन तीनों में से कोई सुनाई दे तो उसे शुभ समझना चाहिए।

● यदि यात्रा आरम्भ करते समय वेद ध्वनि शास्त्र ध्वनि, मांगलिक गीत, की मनोरम ध्वनि, देव मन्दिर से आरती अथवा घण्टा, बादल की ध्वनि नृत्य की ध्वनि, मनोरम वाद्य यंत्रों की ध्वनि अथवा मन में प्रसन्नता एवं आनन्द भरने वाली कोई अन्य ध्वनि सुनाई दे तो उसे यात्रा की सफलता का सूचक समझना चाहिए।

अन्य शकुन

● यदि प्रस्थान के समय कोई सधवा स्त्री अपनी गोद में बालक को लिए हो सामने आ जाय तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

मनुष्य का शकुन



● प्रस्थान के समय कोई प्रसन्न मुख व्यक्ति सामने दिखाई दे तो यात्रा शुभ होती है।

● प्रस्थान के समय कोई पुरुष हाथ में हरी पताका, गन्ना अथवा कमल पुष्प लिए सामने दिखाई दे तो उसे कार्य सिद्धि का सूचक समझना चाहिए।

हाथी का शकुन

● यात्रा के समय मस्त चाल से चलता हुआ हाथी सामने अथवा बांई ओर को दिखाई दे तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

● यात्रा के समय हाथी किसी वृक्ष अथवा दण्ड को अपनी सूंड से उखाड़ता हुआ दिखाई दे तो विजय होता है

✱ यात्रा काल में हाथी तीव्रगति से चलता हुआ दिखाई दे विजय प्राप्त होती है।

● यात्रा काल में यदि ऐसा हाथी दिखाई दे जिसके बांये का मध्यभाग टूटा हुआ हो तो शत्रुओं का नाश करने वाला होता है।

घड़े का शकुन

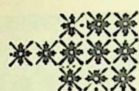


● घर से निकलते समय यदि पानी से भरा हुआ घड़ा दिखाई दे तो पूर्ण शुभ फल प्राप्त होता है।

● यदि आधा भरा घड़ा दिखाई दे तो आधा शुभ फल मिलता है।

● यदि पानी से भरे हुए दो घड़े एक साथ मिलें तो अत्युत्तम फल प्राप्त होता है।

● यदि यात्रा के समय सामने खाली घड़ा अथवा कोई जल पात्र दिखाई दे तो लाभ के स्थान पर हानि होती है अतः स्थगित कर देनी चाहिए।



विशेष स्वप्नों के विशेष फल



देवी देवता



● स्वप्न में देवी का दिखाई देना प्रयोग में सफलता का सूचक होता है।

● स्वप्न में देवी किसी को अपनी गोद में लेकर ताज पहनती हुई दिखाई दे तो द्रष्टा के यश तथा पद की वृद्धि होती है।

● स्वप्न में देवता का दिखाई देना लाभ एवं सफलता का सूचक होता है।

विद्यालय



● यदि विद्यालय में जाने का स्वप्न दिखाई दे तो वह द्रष्टा के श्रेष्ठ चरित्र का परिचायक होता है।

● विद्यालय से भाग आने का स्वप्न दिखाई देना अच्छा तथा द्रष्टा की सर्वतोमुखी सफलता का सूचक होता है।

चीता



● स्वप्न में चीते का दिखाई देना द्रष्टा के सफलता के मार्ग में कठिनाइयों का सूचक होता है।

● यदि स्वप्न में चीता द्रष्टा पर आक्रमण करता हुआ दिखाई दे तो द्रष्टा की कठिनाइयों शीघ्र ही बढ़ जाती हैं।

● यदि स्वप्न में चीता किसी दूसरे व्यक्ति पर आक्रमण करता हुआ दिखाई दे तो दृष्टा किसी गंभीर दुर्घटना के कारण बड़े संकट में पड़ता है।

ढोलक

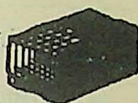


● यदि स्वप्न में कोई कुमारी स्त्री स्वयं को ढोलक बजाती हुई देखे तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

● यदि कोई व्यक्ति स्वप्न में अपने घर पर ढोल बजता हुआ देखे तो उसके परिवार में पुत्र का जन्म होता है।

● यदि द्रष्टा किसी उत्सव में स्वयं को ढोल बजाता हुआ देखे तो उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मशीन



● यदि स्वप्न में पंचिग मशीन दिखाई दे तो दृष्टा को कोई उच्चपद प्राप्त होता है।



● यदि किसी व्यापारी को स्वप्न में पंचिग मशीन दिखाई दे तो उसे व्यवसाय में बहुत लाभ होता है।

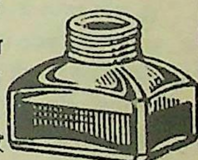
● यदि स्वप्न में अन्य प्रकार की मशीनें दिखाई दें तो व्यवसाय में असफलता मिलती है।

तितली



● यदि स्वप्न में कोई तितली के पीछे भागता और उसे पकड़ लेता है तो उसका विवाह इच्छित लड़की के साथ हो जाता है परन्तु यदि तितली पकड़ से बाहर निकल जाय, तो उस लड़की का विवाह किसी अन्य व्यक्ति से हो जाता है।

दस्तावेज, स्याही



● यदि स्वप्न में कोई दस्तावेज अथवा बांड पर हस्ताक्षर करे तो उसे धन की हानि होती है।

● यदि स्वप्न में द्रष्टा किसी दूसरे व्यक्ति को कोई बांड दस्तावेज हस्ताक्षर के लिए देता है। तो उसके धन एवं प्रभाव में वृद्धि होती है तथा नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ होता है।

● स्वप्न स्याही दिखाई दे तो समस्त इच्छाएं पूरी होती हैं।

आंखें



● यदि स्वप्न में अपनी आँखें लाल दिखाई दें तो द्रष्टा को रोग होता है।

● यदि स्वप्न में अपनी आंखें सूजी हुई, परन्तु बिना दर्द की दिखाई दें तो द्रष्टा का जीवन आनन्दमय व्यतीत होता है।

विशेष स्वप्नों के विशेष फल

प्रार्थना

● यदि कोई व्यक्ति स्वप्न में यह देखे कि यह अकेला ही अपने इष्ट देव की प्रार्थना कर रहा है तो यह समझना चाहिए कि उसकी सहायता के सभी दरवाजे बन्द हो गये हैं।

● यदि कोई पुरुष बहुत लोगों के साथ प्रार्थना करने का स्वप्न देखे तो उसकी सामाजिक स्थिति उन्नत होती है।

● यदि कोई प्रार्थना से अलग रहने का स्वप्न देखे तो उसके परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु होना संभव है।

● यदि कोई स्त्री इष्ट देव की प्रार्थना करने का स्वप्न देखे तो उसके पति तथा बच्चों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

बिल्ली

● यदि स्वप्न में बिल्ली दिखाई दे तो द्रष्टा के आचरण के विषय में खराब खबरें फैलती हैं लोग उससे घृणा करते हैं। चोरी आदि के द्वारा उसे आर्थिक हानि भी होती है।

● स्वप्न में बिल्ली को पकड़ना अथवा मारना दिखाई दे तो द्रष्टा के घर में चोर-डाकू आते हैं परन्तु उसे कोई हानि नहीं पहुंचा पाते।

● स्वप्न में किसी भी रूप में बिल्ली का दिखाई देना अच्छा नहीं होता।

भोजन

● यदि स्वप्न में स्वयं को भोजन करता हुआ देखे तो द्रष्टा को कोई रोग होता है।

● स्वप्न में भोजन की वस्तुओं का दिखाई देना व्यवसाय में साधारण सफलता का सूचक होता है।

● यदि स्वप्न में कोई व्यक्ति हलका भोजन करे तो द्रष्टा को खेल में विजय प्राप्त होती है।

● यदि किसी जीवित व्यक्ति को भोजन करने का स्वप्न दिखाई दे तो घर में सम्पत्ति आती है।

छिपकली



● यदि स्वप्न में अपने शरीर पर छिपक[ली] गिरती दिखाई दे तो बीमारी होगी।

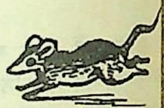
● यदि कोई स्त्री स्वप्न में अपने कपड़ों [पर] छिपकली गिरती हुई देखे तो कुछ अनिवार्य कार[ण] से कुछ दिनों के लिए पति से वियोग होता है।

● यदि स्वप्न में दो छिपकलियां लड़ती हुई दिखाई दें [तो] परिवार पर भारी आपत्ति आयेगी।

● यदि स्वप्न में छिपकली काटे तो बच्चे बीमार होंगे, [ऐसा] समझना चाहिए।

● स्वप्न में छिपकली का दीखना उद्योगों में सफलता [का] सूचक समझना चाहिए।

चूहा



● स्वप्न में चूहा दिखाई दे तो समझना चाहिए कि द्रष्टा के अनेक शत्रु होंगे।

● स्वप्न में चूहे फंसना यह सूचित करता है कि द्रष्टा शत्रु[ओं] के षड्यन्त्र का शिकार होगा।

● स्वप्न में मरा हुआ चूहा दिखाई देना द्रष्टा के अच्छे दि[नों] का सूचक होता है।

● स्वप्न में चूहा काटता हुआ दिखाई दें तो कोई [भारी] दुर्घटना टल गई है, यह समझें।

● स्वप्न में बहुत से चूहे दिखाई दें तो द्रष्टा को प्रत्येक [कार्य] में असफलता मिलती है।

१ विद्या परीक्षा फल

१ अभी उत्तीर्ण होना दूर ।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं ।
३ मनोकामना पूरी होवेगी ।
४ विद्या साभान्घ सफलता देवेगा ।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी ।
६ उत्तीर्ण होने में दुःख होगा ।
७ अच्छे दरजे में पास होंगे ।
८ विद्या स विशेष लाभकारी होगी ।
९ विशेष लाभ

विद्या परीक्षा

७	८	५
६	३	२
९	१	४

प्र० १

२ लाभ हानि का फल

१ इस माल में लाभ उत्तम होगा ।
२ इस माल में लाभ कुछ न होगा ।
३ यह काम घाटे का है इसे छोड़ो
४ चोरी या नुकसान का भय है ।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा ।
६ माल में सवाया लाभ होगा ।
७ माल है कुछ देर से लाभ होगा ।
८ खरीदो मत, पडा है तो बेचो ।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा ।

लाभ हानि

७	४	५
६	८	९
२	३	१

प्र० २

३ मुकदमे का फल

१ मुकदमा देर से होगा, लाभ न करे ।
२ मुकदमेमें जीत होगी एक मास में ।
३ हाकिम ठीक न्याय न करेगा ।
४ कुछ २ जीत होगी खर्च अधिक ।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी ।
५ दुःख अधिक होगा पर खारिज हो ।
७ तुम्हारी हार होगी खरच न करो ।
८ सुलह हो जायगी सन्तोष रखो ।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी ।

मुकदमा

४	२	१
३	९	८
६	७	५

प्र० ३

४ यात्रा का फल

१ गमन मत करो लाभ नहीं ।
२ देशाटन है हानि लाभ बराबर है ।
३ भूलकर भी मत जाओ हानि होगी
४ शुभ दिन जाओ लाभ होगा ।
५ देशाटन में कोई चमत्कार होगा ।
६ शकुन विचार के गमन करो लाभ हो
७ यात्रा पीड़ा कारक होगी ।
८ यात्रा में आराम मिलेगा ।
९ यात्रा सफल हो खरच विशेष होगा

यात्रा

५	४	९
१	६	३
२	७	८

प्र० ४

५ नौकरी का फल

१ नौकरी अवश्य मिलेगी पर देर में ।
२ देर से मिलेगी धीरज धरो ।
३ काम बनेगा सचेत हो जाओ
४ खर्च करने से कार्य बनेगा ।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो ।
६ शत्रु रुकावट करेंगे ग्रहदान करो ।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे ।
९ काम सिद्ध होगा शिव पूजन करे

नौकरी का फल

१	५	२
७	३	६
९	४	८

प्र० ५

६ गर्भ में क्या है फल

१ इस गर्भ की सुख की आशा नही ।
२ पुत्री का जन्म होगा कष्ट विशेष ।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र होगा ।
४ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे ।
६ पुत्र का जन्म होगा अभी देर है ।
७ दीर्घायु पुत्र होगा एक मास में ।
८ जोड़ी कन्या जन्मे एक मरेगा ।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे ।

गर्भ में क्या

७	६	१
४	२	९
३	५	८

प्र० ६

७ अनाज खरीद फल

१ अनाज मे भारी लाभ होगा ।
२ नफा टोटा समान रहेगा ।
३ घाटा रहेगा विचार से काम लो ।
४ अन्न के खराब होने का भय है ।
५ साझा का व्यापार न करे धोखा है
६ देर से बिकेगा लाभ है
७ अनाज में सवाये होंगे ।
८ बेचना ठीक है लेना मत ।
९ प्रश्न फल अशुभ है खरीदो मत ।

अनाज खरीद

८	७	५
९	४	३
२	१	६

प्र० ७

८ चोरी गई का फल

१ वस्तु शीघ्र ही मिलेगा चोर कच्चा है
२ खर्च करने पर माल मिलेगा ।
३ पता पूरा लगाने पर मालमिलेगा ।
४ चोर पक्का है माल न मिलेगा ।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा ।
६ चोर ने तेरी वस्तु और को देदी ।
७ माल आधा खराब हो गया है ।
८ माल न मिलेगा आशा न करो ।
९ चोर छोटी आयु का है

चोरी का फल

५	७	१
४	९	८
२	६	३

प्र० ८

हनुमान सिद्धि

हनुमान जी अपने भक्त की सभी मनोभिलाषाओं को पूर्ण करने में समर्थ देव माने जाते हैं। इस पुस्तक में हनुमान सिद्धि के मन्त्र, यन्त्र, ध्यान, जप संख्या, पूजा-नियम, वीर-साधन विधि के प्रयोगों के अतिरिक्त विपत्ति-विनाशन हनुमत् माला मंत्र तथा हनुमान सिद्धि के विशेष मन्त्र दिये गये हैं। [मूल्य : 21/-

दशकंधर लंकेशपति महापण्डित रावणकृत

रावण-सिद्धि

(भाषा टीका सहित)

इस घोर कलिकाल में भी तन्त्र विद्या का प्रभाव कम नहीं हुआ है। वास्तव में पूर्ण विधि अनुसार किये गये कार्य सिद्ध होते हैं। लंकेशपति रावण, जोकि शिवजी का अनन्य भक्त था, उसने जितनी सिद्धियां प्राप्त कीं वे सभी शिवजी को प्रसन्न करके प्राप्त की थीं। रावण के क्रिया-कलापों में मतभेद हो सकता है, परन्तु लोक-कल्याण के लिए महापण्डित रावणकृत उड्डीशतन्त्र में किसी प्रकार का मतभेद नहीं है। शिवजी ने उड्डीश तन्त्र का वर्णन करते हुए अन्त में कहा है—'हे पुत्र! यह उत्तम उड्डीश तन्त्र मैंने तुमसे वर्णन किया, इसे सभी को नहीं बताना चाहिए, अर्थात् यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।' इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में उड्डीश तन्त्र तथा द्वितीय भाग में दत्तात्रेय तन्त्र संकलित किया गया है।

विदेश में : £ 4 पौंड या $ 8 डालर]

[स्वदेश में : मूल्य : 21/- इक्कीस रुपये

ऋद्धि-सिद्धि मंत्रावली

इस पुस्तक में दिये गये यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र अत्यन्त शक्तिशाली हैं। मामूली कामों के लिए इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए। जब वातावरण निराशाजनक हो और संसार में कोई भी आपका हमदर्द दिखाई न देता हो, अपने बेगाने बन गये हों; रोग, गरीबी, मुकद्दमा, बेरोजगारी, जैसी परेशानियों ने घेरा डाल रखा हो तो ऐसे विकट समय में इस पुस्तक द्वारा प्रभु ने चाहा तो आपकी दिली तमन्ना पूरी होगी। इसके यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र नवग्रहों, उपग्रहों तथा नीच ग्रहों पर भी प्रभावी हैं।

[मूल्य : 21/- रुपये

हमज़ाद (छाया-पुरुष) सिद्धि

संसार में जन्मे व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर स्थूल शरीर के साथ ही उसकी स्थूल छाया विलीन हो जाती है, परन्तु सूक्ष्म-शरीर की सूक्ष्म-छाया समाप्त नहीं होती। तान्त्रिकों के मतानुसार हिन्दी में सूक्ष्म-छाया को 'छाया-पुरुष' तथा उर्दू में 'हमजाद', कसीफ, लतीफ, मादी और रूहानी कहते हैं। छाया-पुरुष सामान्य-दृष्टि से दिखाई नहीं देता, परन्तु जिस प्रकार किसी प्राणी को वश में करके मनचाहा काम लिया जाता है, उसी प्रकार स्थूल-शरीर के माध्यम से सूक्ष्म-छाया (हमजाद) को वशीभूत करके कामें ले सकते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में छाया-पुरुष की अनेक साधन विधियाँ सचित्र दी गई हैं।

[मूल्य : 21/- रु०

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6

विवाहादि के बाद त्याज्य विषय

* विवाह के बाद एक वर्ष तक, व्रत बन्ध के बाद 6 मास तक तथा चूड़ा कर्म के बाद 3 मास तक पिण्ड दान, मृतक के साथ यात्रा एवं तिल-तर्पण ये कर्म नहीं करने चाहिए।

* महालय में, गया-श्राद्ध में, माता पिता के क्षय-दिन में पिण्डदान तो हो सकता है, परन्तु तिल-तर्पण नहीं होता।

पातकी योग

निम्नलिखित ग्रह योगों वाला व्यक्ति पातकी (पापी) होता है —

* यदि लग्न में चन्द्र-मंगल तथा सप्तम भाव में शनि हो तो ऐसा जातक पाप कर्म करने वाला अथवा हत्या करने वाला होता है।

* यदि सूर्य-चन्द्र एक ही राशि में तथा एक ही अंश में हो तथा पाप ग्रह से युक्त हों तो ऐसा जातक महापापी होता है।

यदि मंगल और सूर्य दोनों एक ही राशि में हो तो जातक पापी होता है। यदि एक ही अंश में हो तो वह महापापी, क्रूर तथा निष्ठुर-हृदय वाला होता है।

* यदि लग्नेश मंगल से युक्त तथा पाप ग्रह से युक्त हो एवम् चन्द्रमा षष्ठभाव में हो तो जातक पापी होता है।

* यदि राहु से युक्त चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक महापापी होता है।

* यदि षष्ठ भाव में चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त मंगल हो तो जातक पापी होता है।

* यदि चतुर्थ भाव अथवा चतुर्थेश पापग्रह के मध्य में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक पापी होता है।

दुष्काण-योग

जन्म कुण्डली में निम्नलिखित ग्रह-योग होने पर दुर्घटना घटने की संभावना रहती है, अतः फलादेश करते समय इन्हें ध्यान में रखना आवश्यक है —

* यदि शनि, रवि, राहु सप्तम, अष्टम भाव अथवा लग्न में हो तो जातक की मृत्यु सर्प-दंश से होती है।

* यदि (1) बुध-शनि अष्टम में हो अथवा (2) लग्न में बुध और अष्टम में शनि हो, अथवा (3) षष्ठेश अष्टम में हो अथवा (4) अष्टमेश षष्ठ में हो तो जातक की मृत्यु जेल में होती है।

* यदि (1) लग्न में शनि-मंगल तथा अष्टम में चन्द्रमा हो अथवा (2) सुखेश और केतु षष्ठ भाव में हो अथवा (3) शनि, मंगल, राहु अष्टम भाव में हो, (4) अथवा मेष या वृष के चन्द्रमा पर पाप-कर्तरी हो अथवा (5) शनि, चन्द्र वृष या तुला में हो तथा शनि, भौम, राहु की पूर्ण दृष्टि हो तो किसी अस्त्र-शस्त्र से मृत्यु होती है।

* यदि द्वादश भाव में मंगल तथा अष्टम भाव में राहु-शनि हो तो कु-मृत्यु होती है।

* यदि दशम भाव में सूर्य, चतुर्थ में मंगल और अष्टम में शनि अथवा राहु हो तो सर्प-दंश से मृत्यु होती है।

* यदि तृतीय भाव शनि, राहु अथवा मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो तो शस्त्र, जल, अग्नि, विष अथवा किसी ऊंचे स्थान से गिरने अथवा फांसी लगने से मृत्यु होती है।

* यदि [1] अष्टमेश मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा राहु-मंगल की युति या दृष्टि-सम्बन्ध हो [2] यदि अष्टम भाव राहु, मंगल से युक्त या दृष्ट अथवा दोनों से युक्त या दृष्ट हो अथवा [4] ये तीनों स्थान शनि तथा राहु से युक्त अथवा दृष्ट हों तो जातक की मृत्यु किसी दुर्घटना में होती है।

* यदि [1] अष्टमेश अथवा शुक्र मंगल से युक्त हो रेल-दुर्घटना से, [2] यदि शनि से युक्त हो तो वायु-यान दुर्घटना से और [3] यदि चन्द्र राहु से युक्त हो तो जलयान की दुर्घटना से जातक की मृत्यु होती है।

टिप्पणी — दुर्घटना सम्बन्धी योगों पर विचार करते समय शुभ ग्रहों की स्थिति पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

कन्या-विवाह विषयक ज्ञातव्य

कन्या के विवाह के सम्बन्ध में निम्न लिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है —

* विवाह के समय सर्वप्रथम क्रमशः पितामह पिता, उपनीत भ्राता, नाना, मामा और माता को कन्यादान करना चाहिए। सबसे पहले पिता को यदि पिता न हो तो पितामह को कन्या दान करना उचित है, तत्पश्चात क्रमशः अन्य लोगों को करना चाहिए।

* यदि सगाई के पश्चात् वर-कन्या में से किस के वंश में कोई मृत्यु हो जाय तो सर्वप्रथभ तो उस कन्या का उस वर के साथ विवाह न करना ही उचित है। यदि ऐसा करना संभव न हो तो निम्न व्यवस्था का पालन करना चाहिए ...

[1] पिता की मृत्यु पर 1 वर्ष बाद, [2] माता की मृत्यु पर 6 मास बाद, [3] स्त्री की मृत्यु पर 3 मास बाद, [4] भतीजे की मृत्यु पर 45 दिन बाद तथा दादा, परदादा आदि की मृत्यु पर 1 मास बाद ही विवाह करना चाहिए। यह दोष 4 पीढ़ी तक होता है। पांचवीं पीढ़ी में यह दोष नहीं लगता। यदि सम्वतसर बदल जाय तो भी अवधि समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में सूतक के समाप्त हो जाने पर बिनायक-शान्ति तथा गोदान के पश्चात विवाह किया जा सकता है।

* यदि अत्यन्त संकट-काल हो अथवा विदेश जाना हो अथवा धर्म परिवर्तन की आशंका हो तो पहले त्रिपिण्डी श्राद्ध, वार्षिक श्राद्ध करके नान्दी श्राद्ध करना चाहिए, तत्पश्चात किसी भी समय विवाह कर लेना चाहिए।

* यदि विवाह के समय वर अथवा वधू में से किसी की भी माता रजस्वला हो जाय तो विवाह नहीं करना चाहिए। कुछ अनिवार्य स्थितियों में नान्दी श्राद्ध करके विवाह हो सकता है। अन्यथा रजोदर्शन से चौथे दिन कूष्माण्ड होम, बलि, गोदान तथा प्रायश्चित की शान्ति करके विवाह करना उचित है। पांचवे दिन केवल नान्दी श्राद्ध करके ही विवाह किया जा सकता है।

* यदि कन्या का पिता किसी कारणवश रजोदर्शन से पूर्व विवाह न कर सके तो रजोदर्शन के बाद से विवाह के समय तक जितने महीने बीत चुके हों उतने गोदान करके विवाह करना चाहिए। यदि इतनी सामर्थ्य न हो तो केवल एक ही गोदान करना चाहिए। विवाह से पूर्व कन्या को भी 3 दिन तक व्रत रखकर गाय का दूध पीना चाहिए।

पंचक-मरण सम्बन्धी ज्ञातव्य

यदि किसी व्यक्ति की पंचकों में मृत्यु हो जाय तो उसकी शान्ति के लिए दाह संस्कार क समय केवल 5 पुतलों को जला कर प्रायश्चित करना ही यथेष्ठ नहीं होता।

पंचक-मरण के प्रायश्चित का विधान निम्नानुसार होना चाहिए ---

* सपिण्डीकरण के बाद पुण्याह-वाचन करें। तथा हवन की वेदी का निर्माण कर के 5 कलश मंगायें उनमें से एक कलश को वेदी के ईशान कोण में तथा शेष 4 कलशों को चारों दिशाओं में रख कर, पांचों कलशों पर 5 स्वर्ण की मूर्ति [धनिष्ठादि पाँच नक्षत्रों के स्वामियों की] बनवा कर रक्खें और उनका पूजन करें। फिर मृत्युञ्जय का पूजन करके यजुर्वेद के मन्त्र 'कृणुष्वपाजः' (13+9+12), 'बिभ्राट' [33/30/43], आशुः शिशानो [17/33/49], 'नमस्तेरुद्र' [16/63] तथा ऋचं वाचम् (1/24) — इन पांचों का जप करना चाहिए तथा इन्हीं मन्त्रों से हवन वेदी पर हवन करके 6 ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

* यदि कोई व्यक्ति धनिष्टादि 5 नक्षत्रों [पंचकों] में मरे तो 5 कुशा की प्रतिमा बनायें। और संकल्प 'देश कालो संकीर्त्य' पञ्चक-मरण जनित वंशारिष्ट के परिहार के लिए कुशा-निर्मित पांच प्रतिमाएं बनाकर उन्हें ऊनी सूत से लपेट कर तथा यव की पिष्टी से लेपकर 'ॐ प्रेतवाहाय नमः 'ॐ प्रेत सखायनमः', 'ॐ प्रेतमाय नमः', ॐ प्रेतभूमिपाय नमः' तथा ॐ प्रेत हर्त्रे नमः' - इन मन्त्रों से पूजन करके 1 शिर पर दूसरी नेत्रों पर, तीसरी वामकुक्षि में, चौथी नाभि में तथा पाँचवीं पांव पर रख कर, उपर्युक्त मन्त्रों से स्नान कराके घी की 5 आहुतियां देनी चाहिए।

यदि संभव हो तो पंचक में दाह-संस्कार नहीं करना चाहिए।

शनि के सम्बन्ध में विशेष विचार

पहला नियम

* जिस दिन विचार करना हो, उस दिन शनि जिस नक्षत्र में हो, उससे अपने नक्षत्र तक गणना करें। यदि वही नक्षत्र हो तो 3 मास एवं 10 दिन के भीतर अनेक प्रकार की हानियां उठानी पड़ेंगी।

* यदि दूसरे से पांचवे नक्षत्र तक हो तो $13\frac{1}{3}$ मास की अवधि में युद्ध में विजय प्राप्त होगी।

* यदि छठे से ग्यारहवें नक्षत्र तक हो तो 1 वर्ष तथा 8 मास की अवधि का समय वायु रोग कारक एवं देशान्तर में भ्रमण कराने वाला होगा।

* यदि बारहवें से पन्द्रहवें नक्षत्र तक हो तो 13 मास एवं 10 दिन तक का समय कष्ट में बीतेगा।

* यदि सोलहवे से अठारहवें नक्षत्र तक हो तो 10 मास का समय उत्तम तथा राज्य-यशकारक रहेगा।

* यदि उन्नीसवां अथवा बीसवां नक्षत्र हो तो $6\frac{2}{3}$ मास का समय सुख देने वाला रहेगा।

* यदि इक्कीसवाँ अथवा बाईसवां नक्षत्र हो तो 6 मास तथा 20 दिन का समय वायु-विकार एवं महा कष्टकारक रहेगा।

* यदि तेईस से सत्ताईसवां नक्षत्र हो तो 6 मास तथा 20 दिन के समय में अनुचित ढंग से धन-धान्य का लाभ होगा।

दूसरा नियम

* जिस दिन शनि राशि-संक्रमण करे, उस दिन के चन्द्र नक्षत्र की राशि बनायें। यदि वह अपनी राशि से 1, 6 अथवा 11वीं पड़े तो लाभ होगा तथा समय शुभ रहेगा।

* यदि वह अपनी राशि से 4, 8 अथवा 12 वीं पड़े तो समय अनिष्ट कारक रहेगा।

* यदि वह अपनी राशि से 2, 5 अथवा 9 वीं पड़े तो साधारण लाभ होगा।

* यदि वह अपनी राशि से 3, 7 अथवा 10 वीं पड़े तो साधारण रहेगा।

उक्त फल पंचांगों में भेद होने के कारण पूर्णतः नहीं मिल पाता है। इस विधि के द्वारा शनि के नक्षत्र-संक्रमण में भी विचार किया जा सकता है।

शनि की साढ़े साती तथा ढैया

शनि एक राशि में $2\frac{1}{2}$ वर्ष तक रहता है। जन्म राशि से बारहवां, जन्म राशि का तथा जन्म राशि से दूसरा इन तीनों राशियों को मिला कर शनि की साढ़े साती होती है।

* जब शनि जन्म राशि से चौथे अथवा आठवें होता है तब 'शनि की ढैया' आती है। यह ढाई वर्ष का समय कष्टकारक रहता है।

* जब शनि जन्म राशि से बारहवें आता है, तब खर्च की अधिकता अवश्य होती है।

* जब शनि जन्म राशि पर होता है, तब यात्रा चर्म रोग एवं वायु रोग अवश्य होते हैं।

* जब शनि दूसरी राशि पर होता है, तब धन की हानि होती है तथा परिवार में किसी को मृत्यु भी होती है।

* जब शनि चौथी राशि पर होता है तब मुक़द्दमा, विवाद तथा मित्रों से सम्बन्ध विच्छेद होता है।

* जब शनि आठवीं राशि पर होता .है, तब धन का अधिक व्यय, हानि तथा रोग आदि परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

निम्न लिखित विषयों की जानकारी प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी हिन्दू को होनी आवश्यक है —

ब्राह्मण अथवा गोहत्या के सम्बन्ध में

जिस स्थान पर ब्राह्मण अथवा गाय की हत्या हुई हो, सर्व प्रथम उस स्थान को शुद्ध करना आवश्यक है। फिर पहले हत्या का प्रायश्चित करके, बाद में उपवास करना चाहिए। तदनन्तर ब्राह्मणों को बिना नमक का पायसान्न भोजन कराना उचित है।

इसके बाद उक्त भूमि को 3 हाथ गहरा खोद कर, उस गड्ढे में अग्नि जलानी चाहिए, फिर उसमें वर्षा का पानी डाल कर, खेत की शुद्ध मिट्टी से गड्ढे को भर देना चाहिए। गड्ढे में पंचरत्न गाढ़ना तथा उसका पंचगव्य से सिंचन करना भी आवश्यक है।

भाद्रपद मास में गाय आदि के प्रसव के सम्बन्ध में

सौर भाद्रपद मास में गाय का प्रसव होना गाय के स्वामी के लिए अनिष्टकर माना गया है। इसी भाँति पौष में भैंस तथा विशाखा के सूर्य में घोड़ी का प्रसव भी स्वामी के लिए अनिष्टकारक होता है। कुछ विद्वानों के मत में माघ मास में भैंस तथा श्रावण मास में घोड़ी का प्रसव अरिष्टकारक होता है।

उक्त अरिष्टकारक मास में गाय, भैंस अथवा घोड़ी का प्रसव होने पर पहले शान्ति-पाठ कराना चाहिए। तत्पश्चात अन्नदान करना चाहिए अथवा उसी पशु को दान कर देना चाहिए।

विवाह के सम्बन्ध में

✲ सगाई के बाद वर-कन्या में से किसी के कुल में माता-पिता की मृत्यु हो जाय तो 1 वर्ष तक तथा किसी अन्य परिवारीजन की मृत्यु हो जाय तो एक मास तक विवाह नहीं करना चाहिए। यह नियम चार पीढ़ियों तक के लिए है। सूतकोपरान्त विनायक शान्ति से 1 मास के भीतर भी विवाह किया जा सकता है।

✲ यदि वर-कन्या में से किसी की माता रजस्वला हो जाय तो विवाह, उपनयन एवं यज्ञादि कर्म वर्जित कहे गये हैं। यदि नान्दी श्राद्ध के बाद ऋतुमती हो तो गोदान एवं कूष्माण्डी-हवन के पश्चात विवाह किया जा सकता है।

✲ एक ही वर को दो कन्याएं निषिद्ध हैं।

✲ एक ही घर में विवाह आदि दो मंगल कार्य एक साथ नहीं करने चाहिएं, परन्तु मण्डप के आचार्य बदल कर किये जा सकते हैं।

✲ यदि विवाह होते समय कन्या ऋतुमती हो जाय तो 'यङ्जाम' इस मन्त्र से हवन, स्नान तथा पंचगव्य का पान करना आवश्यक है।

✲ कलिकाल में विवाहिता-स्त्री का पुनर्विवाह वर्जित है।

✲ मातु-सपिण्ड में विवाह वर्जित है।

✲ द्वितीय विवाह में वर को स्वयं नान्दी श्राद्ध करना चाहिए, पिता को नहीं।

✲ विवाह, यज्ञ तथा व्रत आदि में नान्दीश्राद्ध के अनन्तर सूतक नहीं लगता।

✲ एक मातृज का कोई संस्कार एक साथ नहीं होता परन्तु यमल [जड़वाँ भाई] अथवा जुड़वाँ बहिन] का हो सकता है।

✲ पुत्र के विवाह के बाद 6 मास तक पुत्री का विवाह अथवा उपनयन आदि कोई कर्म नहीं करना चाहिए। परन्तु संवत्सर [वर्ष] के बदलने पर हो सकता है।

✲ विवाह के बाद एक वर्ष तक तिल-तर्पण, शवानुगमन [शव यात्रा में भाग लेना], नूतन तीर्थ-गमन तथा मुण्डनादि कार्य नहीं करने चाहिएं।

✲ विवाहादि मंगल कार्यों के समय [illegible] चन्दन लगाना वर्जित है।

✲ विवाह में स्पर्शास्पर्श का दोष नहीं होता।

अन्य विषय

✲ मुण्डन में शिखा कटवाने का विधान नहीं है।

✲ सधवा स्त्रियों को मुण्डन नहीं कराना चाहिए, परन्तु प्रयाग में सधवा-स्त्री भी दो अंगुल केश कटवा सकती है।

✲ मलमास में भी तीर्थ-श्राद्ध होता है।

✲ मलमास में कोई पर्व नहीं होता।

✲ सूतक में भी सन्ध्यादि कर्म किये जाते हैं।

✲ षष्ठी पूजा में अशौच नहीं होता।

✲ ग्रहणादि में यज्ञोपवीत बदल लेना चाहिए।

✲ ग्रहण काल में रजस्वला स्त्री को गंगाजल से स्नान करना चाहिए। परन्तु वह जल गंगा से लाया हुआ होना चाहिए। नदी में बैठकर नहीं करना चाहिए।

✲ जन्म तिथि हमेशा उदय कालिक ही चाहिए।

✲ भोजन के समय एक ब्राह्मण को ब्राह्मण का स्पर्श नहीं करना चाहिए।

✲ अर्घ्य पात्र कांसे का नहीं होना चाहिए।

भक्ति योग

जन्म कुन्डली में निम्नलिखित ग्रह योग होने पर जातक विभिन्न देवी-देवताओं का भक्त होता है-

यदि नवम भाव में ग्रह हो और वह गुरु से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक गुरु-भक्त होता है।

जिस राशि में गुरु हो उसके स्वामी गुरु तथा शुक्र से दृष्ट हो तो जातक गुरु की भक्ति करने वाला होता है।

नवमेश मृदु संज्ञक शुभ षष्टयंश में हो तो जातक गुरु का भक्त होता है।

यदि पंचमभाव गुरु से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक सरस्वती का भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में केतु तथा शुक्र हो तो जातक महालक्ष्मी एवं महालक्ष्मी से सम्बन्धित दश महा विद्या की भक्ति करने वाला होता है।

यदि पंचम भाव में शुक्र-चन्द्र का युक्ति अथवा दृष्टि-सम्बन्ध हो तो जातक शक्ति का उपासक होता है।

यदि पंचम भाव शुक्र से युक्त अथवा दृष्टि हो तो जातक चामुण्डा देवी का भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में केतु तथा चन्द्रमा हो तो जातक देवी का भक्त होता है।

यदि पंचमभाव सूर्य से युक्त अथवा दृष्टि हो जातक सूर्य तथा शिव (शंकर) का भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में केतु और गुरु हों तो जातक शिव-भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में केतु और सूर्य हों तो जातक शिवजी का उपासक होता है।

यदि पंचमभाव मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक स्वामी कार्तिकेय एवं भैरव का भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में बुध-शनि हों तो जातक विष्णु का भक्त होता है।

यदि चतुर्थेश पंचम भाव में हो तो जातक विष्णु एवं विष्णु के दशावतारों का भक्त होता है।

यदि कारकांश लग्न में केतु तथा मंगल हो तो जातक स्वामीकार्तिकेय का भक्त होता है।

यदि व्ययेश द्वितीय तथा अष्टमभाव में हो तथा पंचमेश से सम्बन्ध रखता हो तो जातक किसी सात्विक देवता का भक्त होता है

यदि पंचमभाव से बुध से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक सब देवताओं का भक्त होता है।

यदि पंचमभाव में पुरुष ग्रह हो तो जातक पुरुष-देवता का उपासक होता है।

यदि पंचमभाव राहु अथवा युक्त हो तो जातक दूसरों को पीड़ा देने वाले देवता की भक्ति करता है अथवा अपने इष्ट देवता के प्रभाव से दूसरों के लिए कष्ट कारक बनता है।

यदि पंचमभाव से शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक प्रेत, शाकिनी आदि क्षुद्र देवी-देवताओं का भक्त होता है।

यदि पंचमभाघ चन्द्रमा से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक यक्षिणी का भक्त होता है।

धर्मात्मा योग

यदि सुखेश दशम भाव में हो तो जातक देवालय एवं जलाशयों का जीर्णोद्धार कराने वाला होता है।

यदि 1 गुरु से युक्त बुध गोपुरांश में हो अथवा 2 मंगल से युक्त बुध गोपुरांश में हो तो जातक धर्मशाला आदि सार्वजनिक लाभ के स्थानों का निर्माण कराने वाला होता है।

यदि दशमेश गोपुराँश में हो तो जातक कुआं, बावड़ी आदि जलाशयों का निर्माण कराता है।

यदि कारकांश लग्न में कुम्भ राशि हो तो जातक जलाशयों का निर्माण कराने वाला होता है।

यदि नवमेश मृदु संज्ञक एवं शुभग्रह से दृष्ट हो तो जातक कुआं, बावड़ी आदि जलाशयों का निर्माण कराने वाला होता है।

धर्माचार्य योग

यदि नवमेश शुभ ग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो जातक विशेष धर्मात्मा अथवा धर्माचार्य होता है।

यदि गुरु शुक्र-दोनों ही बुध के नवांश में हों जातक अधिक धर्म करने वाला अथवा धर्माचार्य होता है।

यदि गुरु अथवा शुक्र अपनी उच्चराशियों में तथा शुभग्रहों के वर्ग में हो और नवमेश बलवान हो तो जातक अधिक धर्म करने वाला अथवा धर्माचार्य होता है।

आयु सम्बन्धी विचार

जन्म कुण्डली के आधार पर जातक की आयु निश्चित करने के विषय में अनेक मत प्रचलित हैं, उनमें से कुछ का उल्लेख यहां किया जा रहा है—

पहला मत- जन्म कुण्डली में लग्न [प्रथम भाव], चतुर्थ भाव, सप्तम भाव तथा दशमलव के अंकों को मिला कर 3 से गुणा करें। जो योग संख्या हो, उस में से, यदि उक्त भावों में से किसी में राहु तथा मंगल बैठे हों तो उन भावों की संख्या के तीन गुने किये हुए भाव को निकाल दें तत्पश्चात् जो संख्या शेष बचे, जातक के उतने ही आयु-वर्ष समझने चाहिए। उदाहरण के लिए —

लग्न में - 2
चतुर्थ में - 5
सप्तम में - 8
दशम में - 11

कुल योग 26 हुआ। इस संख्या को 3 से गुणा किया तो गुणनफल 78 हुआ। अब यदि लग्न में मंगल और राहु बैठे है तो लग्न के अंक 2 के तीन गुना अर्थात 6 अंकों को उक्त गुणनफल में से घटा दें तो शेष 78—6=72 बचेंगे। अतः इस विधि से जातक की आयु 72 वर्ष की निश्चित होगी।

दूसरा मत - लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशमभाव की राशि संख्या को एकत्र करें। यदि इनमें से किसी भाव में राहु, केतु, मंगल और शनि हो तो उनके भावों की संख्या को जोड़ कर, पूर्वोक्त संख्या में घटा दें तथा शेष को तीन गुना करें। जो योग हो उसी को जातक के आयु-वर्ष समझें। उदाहरण के लिए

लग्न में 2
चतुर्थ में 5
सप्तम में 8
दशम में 11

कुल योग 26 हुआ। अब यदि लग्न में मंगल और राहु सप्तम में शनि और केतु हैं तो 1+7= कुल 8 की संख्या इसमें से घटा दें तो 26—8=14 हुए अब इसे 3 से गुणा कर दें तो 18X3 = 54 वर्ष की आयु जातक की होगी।

व्रत सम्बन्धी विचार

व्रतों के सम्बन्ध में प्रायः भूल हो जाया करती है। अतः विभिन्न व्रतों के लिए उचित समय का निर्धारण निम्नानुसार करना चाहिए —

1. एकादशी व्रत - गृहस्थों के लिए दशमी से बिद्ध एकादशी तिथि को व्रत रखकर द्वादशी में पारण करना चाहिए। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए 'देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6' द्वारा प्रकाशित एकादशी व्रत एवं महात्म्य' नामक पुस्तक का अध्ययन करें।

2. गणेश चतुर्थी व्रत - यह व्रत प्रत्येक मास में किया जाता है। भाद्रपद मास में विशेष रूप से किया जाता है। गणेश चतुर्थी का व्रत तृतीया से बिद्ध चतुर्थी तिथि में ही करना चाहिए अर्थात तृतीया के दिन जब चन्द्रोदय के समय चतुर्थी का योग हो, उसी दिन गणेश चतुर्थी का व्रत करना उचित है।

3. हरितालिका व्रत - भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया में जब चतुर्थी लगे, तभी यह व्रत करना चाहिए।

4. जीवित्पुत्रिका व्रत - गौड़ पक्ष के मतानुसार अश्विन कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के उदय काल में जब अष्टमी मिले तब यह व्रत करना चाहिए। मैथिल पक्ष के मतानुसार उदय काल में अष्टमी होना आवश्यक है। उसी दिन प्रदोष काल में व्रत करना चाहिए।

5. श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत - भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को अर्द्धरात्रि में जब रोहिणी नक्षत्र मिले, उसी दिन जन्माष्टमी का व्रत करना शुभ है। परन्तु इस सम्बन्ध में अन्य मत भी पाये जाते हैं।

दुर्घटनाएँ और ग्रह-योग : मंगल, राहु, शनि और सूर्य

✳ हर प्रकार की दुर्घटनाओं का कारक मुख्य रूप से मंगल ग्रह माना जाता है। मंगल रक्त-स्राव तथा चोट आदि का कारक है। मंगल के बाद राहु और उसके बाद शनि दुर्घटना कारक ग्रह माने जाते हैं। कभी-कभी केतु तथा सूर्य भी दुर्घटनाओं के कारक बनते हैं।

✳ कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों से दुर्घटनाओं के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

✳ मंगल ग्रह रक्त तथा शक्ति का स्वामी है, अतः शक्ति एवं रक्त से सम्बन्धित सभी विषयों पर मंगल के द्वारा विचार किया जाता है। मंगल के अरिष्टप्रद होने पर रक्त-विकार, चोट, अपघात, रक्तस्राव, अग्निदग्ध, व्रण, विस्फोट, गोली-काण्ड, छुरेबाजी, सर्प-दंश, राजकीय कोष, मशीनरी के कारण दुर्घटना आदि अशुभ फल घटित होते हैं।

✳ यदि लग्न में मंगल तथा राहु की युति हो गोली लगना, घाव होना, सिर फूटना अथवा चेचक निकलना आदि घटनाएं घटती हैं।

✳ यदि मंगल विषम राशि में हो तो अधिक अरिष्ट कारक होता है। पुलिस-हस्तक्षेप तथा जेल-यात्रा भी मंगल के ही कारण संभव हो सकती है।

✳ मंगल जब गोचर में उक्त स्थानों पर हो, तब भी कष्टदायक सिद्ध होता है।

✳ राहु शस्त्र, चाकू, कृमि, पिशाच, भूत तथा अग्नि से आक्रान्त करता है। पेट में कृमि, पीठ में घाव तथा शरीर के किसी भाग में कीड़े पड़ना – यह सब राहु के ही अशुभ परिणाम हैं। राहु चाहें कुण्डली में खराब स्थान पर हो अथवा गोचर में अशुभ हो वह अपना अशुभ प्रभाव अवश्य प्रदर्शित करता है।

✳ राहु चन्द्रमा की युति हों तो मूर्च्छा एवं उन्माद रोग हो सकते है।

✳ राहु द्वादश भाव में हो तो राज भय होता है।

✳ यदि अष्टम भाव में हो तो बवासीर, भगन्दर आदि रोग होते हैं।

✳ यदि किसी अशुभ-स्थान पर राहु शनि की युति हो अथवा राहु-शनि एक दूसरे से सप्तम स्थान पर हों तो प्रेत बाधा होती है।

✳ यदि राहु द्वादश भाव में हो तो हत्या, जेल, अपघात आदि कुफल करता है।

✳ अष्टमस्थ शनि आयुवर्द्धक माना गया है। शेष अशुभ स्थानों में हो तो वायुयान से दुर्घटना अथवा मृत्यु, वायु जनित कष्ट, पशुओं से अपघात, प्रेत बाधा एवं जेल यात्रा आदि अशुभ फल करता है।

✳ यदि अशुभ स्थान में शनि शनि-मंगल, राहु की युति हो तो जातक को राजयक्ष्मा (टी. बी.) का शिकार बनना पड़ता है।

✳ यदि उक्त युति कर्क राशि अथवा पंचम भाव में हो तो यक्ष्मा [तपैदिक] रोग अवश्य होता है।

✳ शनि-मंगल की अशुभ-युति हो तो जातक हत्यारा होता है और स्वयं उसकी भी हत्या होती है।

✳ सूर्य अष्टम भाव में हो तो यात्रा, अग्नि अथवा राजा द्वारा हानि होती है। मृत्यु भी हो सकती है।

✳ मंगल अष्टम भाव में हो तो शस्त्र, विष अथवा अग्नि से भय होता है।

✳ शनि अष्टम भाव में हो तो वायु, क्षुधा अथवा प्रेत बाधा से मृत्यु होती है।

✳ राहु अष्टम भाव में हो तो छुरे के आघात, प्रेत बाधा अथवा उदर-विकार से मृत्यु होती है।

यज्ञ में ग्राह्य पदार्थ

निम्नलिखित पदार्थ यज्ञ में ग्रहण करने योग्य हैं—

1-तिल, 2-यव, 3-श्वेत चावल, 4-गेहूं, 5-मूंग, 6-वेशबीज, 7-तिल्ली, 8-मुलहठी, 9-ककुनी, 10-आम 11-केला, 12-अदरक, 13-गाय का घी, 14-गाय का दही, 15-भैंस का घी, 16-शहद, 17-ईख, 18-मखान, 19-बिदारी, 20-सूरण, 21-सिघाड़ा, 22-बेर, 23-जंगली शहतूत, 24-कटहल 25-अरबी, 26-प्याज, 27-सुथनी, 28-खिरनी, 29-कूट, 30-ककड़ी 31-फरेना जामुन, 32-सरसों का साग, 33-आंवला, 34-चिरौंजी, 35-गूलर, 36-बड़हल, 37-फालसा, 38-कसेरू, 39-दालचीनी, 40-तेजपात, 41-इलायची, 42-रायता, 43-चटनी, 44-काबुली फल, 45-परवल, 46-खरबूजा, 47-इमली, 48-सोंठ, 49-बेल, 50-मुनक्का, 51-अनार, 52-बथुआ, 53-सैन्धव, 54-गुड़, 55-कपूर, 56-चीनी, 57-कपूर, 58-सत्तू, 59-धनिया, 60-जीरा, 61-मड़ुआ, 62-नारियल, 63-मीठा आलू, 64-सतावर, 65-खीरा, 66-हींग तथा 67-अखरोट।

यज्ञ में त्याज्य पदार्थ

1-भात, 2-कोदो, 3-लाल तुलसी (भक्षय में), 4-पालक, 5-हरीमिर्च, 6-कोण, 7-सहिजन, 8-बोंडा अरबी, 9-खारा नमक, 10-काला नमक, 11-सांभर, 12-करोंदा, 13-करी का फल, 14-अरहर कीदाल, 15-चना, 16-सेब, 17-वायबिडंग, 18-पुदीना, 19-छोटी जामुन, 20-परवल, 21-मक्का, 22-बाजरा, 23-ज्वार, 24-पीपल 25-मिर्च, 26-कृण घान, 27-सन, 28-बरगद, 29-मदार, (आक) 30-अड़ूसा, 31-धतूरा, 32-मीठा नीबू, 33-कचनार: 34-कैथ, 35-लीची, , 36-वन मूंग, 37-पोय, 38-सोवा, 39-गाजर, 40-बैंगन, 41-केंवाच, 42-बिजौरा, 43-लिस्सैड़ा, 44-कमलडण्डी, 45-पादुका, 46-उपानह, 47-रक्त वस्त्र, 48-लाल रंग के पुष्प, 49-चमेली के पुष्प, 50-लोबान, 51-पापड़, 52-कांजी, 53-मरसा तथा 54-बिल्ली।

पुण्यात्मा योग

1-नवे भाव पर शुभग्रहों की अधिक दृष्टि हो तो जातक पुण्यात्मा होता है।

चतुर्थ भावाशुभ ग्रहों के बीच हो तो जातक पुण्यवान् होता है।

ज्योतिष परिभाषा के विषय में सामान्य ज्ञान

ज्योतिषीय परिभाषा की सामान्य बातें नियमानुसार समझ लें।

●क्रान्ति वृत्त—सूर्य आकाश मंडल में जिस मार्ग से परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है, उस मार्ग को क्रान्ति वृत कहते हैं। क्रान्ति वृत्त गोल(अण्डाकार सा) चक्र की भांति है। इसके 360 अंश (भाग) होते हैं।

●राशि—क्रांति वृति के 360 अंशों को 12 भागों में बांटी है। राशियों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं। 1-मेष 2-वृष, 3-मिथुन, 4-कर्क, 5-सिंह, 6-कन्या, 7-तुला, 8-वृश्चिक, 9-धन, 10-मकर, 11-कुम्भ और 12-मीन।

●वार —वार सात हैं रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, और शनि। वारों का आरम्भ सूर्योदय से होता है।

●तिथि—चन्द्रमा की एक कल्प को तिथि कहा जाता है। एक तिथि 12 अंशकी होती है।

●करण —तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं।

●लेक्षत्र—क्रान्ति वृत के 27 भाग को नक्षत्र कहते हैं। 1-नक्षत्र 13 अंश 20 करण अथवा 200 कल्प का होता है। चन्द्रमा भी स्पष्ट गति से सदैव एकत्र न होने के कारण नक्षत्र का मान भी सदा समान नहीं होता। कुल नक्षत्र 27 हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं।

1अश्विनी, 2भरणी, 3 कृत्तिका, 4 रोहिणी 5-भृगशिरा, 6-आर्द्रा, 7-पुनर्वसु, 8-पुन्य, 9-अश्लेषा, 10-मघा, 11-पूर्वा फाल्गुनी, 12-उत्तरा फाल्गुनी 13-हस्त 14-चित्रा, 15-स्वाती, 16-विशाखा, 17-अनुराधा 18-ज्येष्ठा, 19-मूल, 20-पुर्वाषाढा, 21-उत्तराषाढा, 22-श्रावण 23-धतिष्ठा, 24-शतमिषा, 25पुर्वाभाद्रपदा, 26-उत्तरा भाद्रपदा, और 27-रेवती। अभिजित नामक एक 28 वें नक्षत्र की कल्पना भी की गई है, जिसका स्थान उत्तराषाढा एवं श्रावण के बीच में है। इसका मान उत्तराषाढा का अन्तिम चौथा चरण तथा श्रावण की पहली 15 घटी है।

●योग—सूर्य तथा चन्द्रमा किसी समय जिन जिन नक्षत्रों में रहते हैं, उस समय उनके मिलने से जो योग बनता है, उसे स्थिर योग कहा जाता है। योगों की कुल संख्या 27 है।

●संक्रांति —सूर्य जब 2 राशि अर्थात क्रांतिवृत्त के 30 अंश की परिक्रमा पूरी कर लेता है और दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तब संक्रांति होती है।

● ग्रह—मुख्य ग्रह 7 हैं 1-सूर्य, 2-चन्द्र, 3-मंगल 4-बुध, 5-गुरु, 6-शुक्र, 7-शनि, । दो और ग्रह 1-राहु और केतु।

ज्योतिषियों के लिए ज्ञातव्य

स्त्री पुरुष में किसकी कुण्डली है

स्त्री और पुरुष में से किस की कुण्डली है—यह जानने के लिए निम्नलिखित नियम हैं—

✻ यदि लग्न से सम में शनि हो तो स्त्री की और विषम शनि हो तो पुरुष की कुण्डली समझनी चाहिए।

✻ यदि लग्न का अंक तथा सूर्य, मंगल और राहु जिस राशि में हों—इन तीनों आंक जोड़कर तथा जोड़ में से 1 घटाकर 3 का भाग दें। यदि 2 शेष बचे तो स्त्री की जन्म पत्र हैं और यदि 1 अथवा 0 (शून्य) शेष बचे तो पुरुष की जन्म पत्र है—यह समझना चाहिए।

✻ यदि लग्न गुरु, चन्द्रमा और सूर्य विषम राशि के विषम नवांश मेंहों तो पुरुष की कुण्डली है और यदि सम राशि के सम नवांश में हों तो स्त्री की कुण्डली समझनी चाहिए।

मूल तथा अश्लेषा नक्षत्र के जन्म पाद का फल

✻ यदि मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में पुत्र का जन्म हो तो वह पिता का, दूसरे चरण में हो तो माता का तथा तीसरे चरण में हो तो धन का नाश करता है। चौथे चरण में हो तो शान्ति करने से शुभ होता है।

✻ यदि आश्विनी तथा मघा नक्षत्र में जन्म हो तो भी उक्त फल ही समझना चाहिए।

✻ अश्लेषा के चौथे चरण में जन्म हो तो पिता का, तीसरे में हो तो माता का तथा दूसरे में हो तो धन का नाश होता है। प्रथम चरण में जन्म होने पर, शान्ति कराने से शुभ फल होता हैं।

✻ रेवती तथा ज्येष्ठ नक्षत्र में जन्म हो तो भी उक्त नियम ही लागू होगा।

✻ कन्या का जन्म होने पर, उक्त फल कन्या की ससुराल पर इसी क्रम से लागू होता है। अर्थात् कन्या के लिये पिता के स्थान पर स्वसुर तथा माता के स्थान पर सास समझनी चाहिए।

वैधव्य योग

जन्म कुण्डली में यदि—1-लग्न अथवा चन्द्र मा से लग्न, सप्तम अथवा अष्टम भाव में मंगल, शनि, राहु अथवा सूर्य हों तो वैधव्य योग होता है

2-मंगल से अष्ठम अथवा द्वादश भाव में सूर्य पाप ग्रह से युक्त मंगल हो तो वैधव्य योग होता है।

3-लग्न से सप्तम, द्वितीय अथवा अष्टम भाव में पाप ग्रह से युक्त मंगल हो तो वैधव्य योग माना गया है।

देव प्रतिमा के सम्बन्ध में ज्ञातव्य

शिव-निर्माल्य के सम्बन्ध में विचार

शिवजी पर चढ़ाये गये द्रव्य, अन्न, फल, जल आदि का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए। शिव-निर्माल्य को लांघने से पाप होता है। उसे किसी कुएंमें डाल देना अच्छा है। जो व्यक्ति लोभ अथवा मोह के वशीभूत होकर एक कण भर भी शिव-निर्मौल्य को ग्रहण करता है, वह कल्पान्त तक नरकवास करता है। केवल वार्णलिंग (नर्मदेश्वर शिव-लिंग) का पर चढ़ाये गये जल, अन्न आदि को प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। उसे ग्रहण करने में कोई दोष नहीं होता।

देव-स्पर्श का अधिकार

1-स्त्रियों को स्पर्श, 2-जिसका यज्ञोपवीत न हुआ हो उन्हें तथा 3-शूद्रों की विष्णु अथवा शिव की मूर्ति का स्पर्श करने से नरक मिलता है। देवी तथा गणेश आदि देवताओं को स्पर्श करने में किसी को दोष नहीं लगता।

गृहस्थों के लिए देव-प्रतिमा सम्बन्धी विचार

गृहस्थों को स्वर्ग, रौप्य (चांदी), ताम्र (तांबा), रत्न, शिला (पत्थर), काष्ठ (लकड़ी)अथवा पंचधातु निर्मित देव-प्रतिमा एक अंगुल से एक बलिश्त (पितस्ति) तक के आकार की ही बनवानी चाहिए। इससे अधिक बड़े आकार की मूर्ति गृहस्थों को घर में रखनी शुभ नहीं होती।

निम्नलिखित विषयों की जानकारी प्रत्येक सनातन मतावलम्बी हिन्दू के होनी आवश्यक है—

पूजन सम्बन्धी

※ एक ही घर में दो शिवलिंग, दो शालिग्राम दो सूर्य, दो चक्र, दो शंख, तीन गणेश तथा तीन शक्ति की पूजा चक्र साथ नहीं करनी चाहिए।

※ शलिग्राम यदि दो से अधिक सम संख्या जैसे— 4, 6, 8, 10, 12 हों तो उनका पूजन किया जा सकता है। परन्तु विषय संख्या में हो तो पूजन निषिद्ध है।

※ शिव-निर्माल्य का सेवन निषिद्ध है, परन्तु नर्मदेश्वर, ज्योतिर्लिंग, रसलिंग, रत्नलिंग सिद्ध प्रतिष्ठत लिंग तथा स्वयम्भू शिवलिंग का निर्माल्य ग्रहण किया जा सकता है। शिव-पंचायतन (शिव, पार्वती, गणेश, स्वामीकार्तिकेय एवं नन्दी) पूजा में भी प्रसाद ग्रहण किया जाता है।

※ षष्ठी-पूजा में अशौच नहीं होता।

मूर्ति खण्डित होने पर

यदि मूर्तिखण्डित हो जाय तो नियमानुसार कार्य करना चाहिए —

1-खण्डित मूर्ति यदि काष्टकी हो तो उसे अग्नि में समर्पित करदें, 2-यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और 3-यदि रत्न अथवा धातु की हो तो उसे अगाध जल में डुबा देना चाहिए।

जो मूर्ति खण्डित हो गई हो, उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर, मूर्तिको सवारी पर रखें। तत्पश्चात् उसे बाजे गाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबा दें तथा अपने गुरु को दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें।

जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो, उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके, पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठित करनी चाहिए।

गायत्री अनुष्ठान

पुरातन काल में गायत्री मन्त्र का एक लाख की संख्या में नियम पूर्वक जप करने से ही द्विजमात्र को अपूर्व शक्ति का लाभ होता था, परन्तु कलि-युग में पुरश्चरण के लिए चार लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना आवश्यक है। गायत्री को एक बार ब्रह्मा ने, दूसरी वशिष्ठ ने तथा तीसरी बार विश्वा-मित्र ने श्राप भी दिया है, अतः इन तीनों के श्राप विमोचनार्थ तीन लाख की संख्या में अतिरिक्त जप कराना भी आवश्यक है। इसी प्रकार कुल मिलाकर सात लाख की संख्या में गायत्री मन्त्र का जप करने के बाद ही पुरश्चरण सिद्ध होता है।

गया-श्राद्ध में विचार

※ यदि पिता जीवित हो तो कोई श्राद्ध करने का अधिकार नहीं है। यदि पिता जीवित रहते हुए पुत्र गया-क्षेत्र में पहुंचा हो तो वह मातृ-तर्पण कर सकता है।

※ गया-श्राद्ध करने के लिए स्व-ग्राम की उपस्थिति ही आवश्यक नहीं है। वह विदेश से भी हो सकता है।

※ विभक्ति अथवा अविभक्त सम्पत्ति में बड़े भाई द्वारा गया श्राद्ध करने पर भी उसके छोटे भाईयों को गया-श्राद्ध करने का अधिकार है। मंझला भाई भी गया-श्राद्ध स्वं तर्पण आदि करता है।

श्राद्ध सम्बन्धी अन्य नियम

※ श्राद्ध के दिन नित्य तर्पण तथा तिल त्याज्य है। श्राद्धाँग तर्पण ही करना चाहिए।

※ लौहपात्र में श्राद्धदान वर्जित है।

※ औरस पुत्र, पौत्र, पौत्र का पुत्र, दत्तक पुत्र, नप्ता, भाई, भतीजा, पिता, माता, बहिन, भानजा, तथा सपिण्ड सोदक—ये सब क्रमशः श्राद्ध के अधि-कारी हैं।

※ मलमास में भी तीर्थ श्राद्ध होता है।

※ सलामी का श्राद्ध द्वादशी तिथि को होता है।

※ श्राद्ध सम्बन्धी भोजन एकादशी तिथि को करना निषिद्ध नहीं है।

※ श्राद्ध करने वाले को ताम्बुल का सेवन नहीं करना चाहिए।

※ श्राद्ध के लिए पिण्ड का निर्माण श्राद्धकर्ता की पत्नी को करना चाहिए।

※ जिसका कर्णवेध न हुआ हो, उसे श्राद्ध का अधिकारी नहीं माना गया है।

※ भाद्रपद मास की पूर्णिमा के अतिरिक्त शेष सभी पूर्णिमाओं में श्राद्ध करना निषिद्ध है।

※ गर्भिणी स्त्री के पति को मुण्डन, पिण्डदान, प्रेतकर्म, समुद्र-स्नान, नख-केश-कर्तन, उपनयन, नौका रोहण, शवानुगमन तथा अतिदूर गमन—ये सभी त्याज्य कहे हैं।

※ जिसकी श्राद्ध तिथि का ठीक पता न हो, उसका श्राद्ध श्राद्ध-पक्ष की अमावस्या को किया जा सकता है।

योगों के विषय में ज्ञातव्य

प्रत्येक पंचांग में किस तिथि को कौन सा योग कितने घड़ी-पल तक रहेगा, इसका उल्लेख रहता है। इस जंत्री में भी योगों का उल्लेख है। जंत्री तथा पंचांग में योगों के नाम 'आदि' अक्षर मात्र दिया रहता है। उनके पूरे नामों की जानकारी नियमानुसार प्राप्त कर लेनी चाहिए।

योगों की कुल संख्या 27 हैं, जिनकी क्रमश: पुनरावृत्ति होती रहती है।

1. विष्कम्भ।
2. प्रीति।
3. आयुष्मान्।
4. सौभाग्य।
5. शोभन।
6. अतिगण्ड।
7. सुकर्मा।
8. धृति।
9. शूल।
10. गण्ड।
11. वृद्धि।
12. ध्रुव।
13. व्याघात।
14. हर्षण।
15. वज्र।
16. सिद्धि।
17. व्यतीपात।
18. वरीयान।
19. परिघ।
20. शिव।
21. सिद्ध।
22. साध्य।
23. शुभ।
24. शुक्ल।
25. ब्रह्म।
26. ऐन्द्र।
27. वैधृति।

योगों में त्याज्य काल

शुभ कार्यों में योगों के निम्नलिखित भाग त्याज्य है—

1. परिघ योग का पहला आधा भाग।
2. विष्कम्भ योग की पहली 5 घटी।
3. गण्ड तथा व्याघात योग की पहली 6 घटी।
4. हर्षण तथा वज्र योग की पहली 9 घटी।
5. वैधृति तथा व्यतीपात योग पूर्णरूपेण त्याज्य है।

मतान्तर से—विष्कम्भ के 3 दण्ड, शूल के 5 दण्ड, गण्ड तथा अतिगण्ड के 7 दण्ड तथा व्याघात एवं वज्र योग के 9 दण्ड त्याज्य है। एक दण्ड 1 घटी के बराबर होता है।

करण के विषय में ज्ञातव्य

तिथि के आधे भाग को 'करण' कहते हैं, अत: प्रत्येक तिथि में दो करण होते हैं। करणों की कुल संख्या 11 है, जिनकी क्रमश: पुनरावृत्ति होती रहती है। करणों के नाम यह हैं—

1. बव।
2. बालव।
3. कौलव।
4. तैतिल।
5. गर।
6. वणिज।
7. विष्टि।
8. शकुनि।
9. चतुष्पद।
10. नाग।
11. किंस्तुघ्न।

इनमें पहले 7 कारण 'चर' संज्ञक तथा अन्तिम चार करण 'स्थिर' संज्ञक माने गये हैं।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अन्तिम अर्द्ध भाग में 'शकुनि' नामक करण रहता है। फिर अमावस्या के पहले अर्द्ध भाग में 'चतुष्पद' तथा दूसरे अर्द्ध भाग में 'नाग' नामक करण रहते हैं। फिर शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के के पहले अर्द्ध भाग में 'किंस्तुघ्न' तथा उसके बाद क्रमश: बव आदि अन्य करण आते हैं।

'विष्टि' करण का ही दूसरा नाम 'भद्रा' है। कृष्ण-पक्ष की पंचमी, सप्तमी तथा चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्द्ध में 'विष्टि' करण (भद्रा) होता है तथा शुक्लपक्ष में चतुर्थी एवं एकादशी के पूर्वार्द्ध में तथा अष्टमी एवं पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में 'विष्टि' करण (भद्रा) होता है।

प्रत्येक पंचाग, तथा जन्त्री में भद्रा के आरंभ होने तथा समाप्त होने का समय दिया रहता है। भद्रा में किसी भी प्रकार का शुभ कार्य करना वर्जित कहा गया है।

वर्षा एवं वायु सम्बन्धी विचार

वर्षा के नक्षत्र

मेष संक्रान्ति लगने के बाद अश्विनी से 10 नक्षत्रों तक पर विचार करें। अश्विनी से जितनी संख्या के नक्षत्र में बादल दिखाई दें, आर्द्रा से उतनी ही संख्या के नक्षत्रों में अच्छी वर्षा होगी - यह समझना चाहिए।

यदि सूर्य तथा चन्द्रमा के नक्षत्र पर रहे तथा चन्द्रमा सूर्य के नक्षत्रों पर जाय तो उस दिन वर्षा होगी- यह कहना चाहिए। यदि सूर्य तथा चन्द्रमा दोनों ही सूर्य के नक्षत्रों में रहें तो वर्षा नहीं होती, परन्तु यदि दोनों ही चन्द्रमा के नक्षत्रों में रहें तो सामान्य वर्षा होती है।

सूर्य तथा चन्द्रमा के कौन २ से नक्षत्र होते हैं, इसे नियमानुसार समझना चाहिये।

1-सूर्य नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा, शतभिषा तथा उत्तराभाद्रपदा।

चन्द्र नक्षत्र—आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, अभिजित् तथा धनिष्ठा।

वर्षा-योग

वर्षा काल में यदि 1-शुक्र से सप्तम भाव में चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्टि हो, 2-शनि से चन्द्रमा पंचम, सप्तम अथवा नवम भाव में हो और शुभ ग्रह से दृष्ट हो। 3-यदि बुध तथा शुक्र समीपस्थ हों, 4-सूर्य के पहले अथवा पीछे शुभ ग्रह हों, 5-ग्रहों का उदयास्त हो, 6-ग्रहों का राश्यान्तर गमन हो, 7-ग्रहों की युति हो, 8-बुध शुक्र का उदयास्त हो अथवा 9-भौम का राशि संचार हो तो वर्षा होती है।

यदि बुध शुक्र के बीच में सूर्य आ जाय तो वर्षा का नाश हो सकता है।

सप्तनाड़ी चक्र द्वारा भी वर्षा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की जाती है। इसे आगे लिखे अनुसार समझ लें।

वर्षा-ज्ञानार्थ सप्त नाड़ी चक्र

संख्या	चण्डा	वात	पलि	सौम्प	नीरां	जन्म	अमृत
नाम नक्षत्र	कृ.	रो.	मृ	आ.	पुन	पुष्प	ऽ श्ले
	वि	स्वा	चि	ह.	उफा	पूफा	म.
	अनु	ज्ये.	मू	पूष.	उषा.	अभि.	श्र.
	भ.	अ,	रे.	उभा,	पूभा.	श.	ध.
स्वामी	शनि	रवि	भौम	गुरु	शुक्र	बुध	चन्द्र
संख्या	1	2	3	4	5	6	7

टिप्पणी—उपर्युक्त चक्र में 7 भाग हैं। यदि किसी भाग के नक्षत्र में रवि, चन्द्र भौम (मंगल) हो जाय तो उनकी उपस्थिति तक अत्याधिक वर्षा होती है। यदि बुध, शुक्र, गुरु एक नाड़ी में हों और उसी में सूर्य भी हो तो वर्षा होती है। यदि उसी में चन्द्रमा भी आ जाय तो उक्त समय तक अधिक वर्षा होती है।

आषाढ़ में वायु-परीक्षा

आषाढ़ की पूर्णिमा में प्रदोष के समय वायु बहने का फल नी लिखे अनुसार समझना चाहिए—

1-पूर्व में-श्रेष्ठ धायोत्पत्ति, अच्छी वर्षा।
2-आग्नेय-अत्यल्प धान्य, अनावृष्टि।
3-दक्षिण-प्रजापीड़ा, अल्पवृष्टि, अल्पधान्य।
4-नैर्ऋत्य-अनावृष्टि, दुर्भिक्ष।
5-पश्चिम-उत्तम धान्योत्पत्ति, महावृष्टि।
6-वायव्य-मध्यम धान्य, वायु की तीव्रता।
7-उत्तर-जन सुख, अधिक धान्य, अतिवृष्टि।
8-ईशान-उत्तम धान्य, उत्तम वृष्टि।



1 पुत्र प्राप्ति के लिए—

'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।' इस द्वादशाक्षर मंत्र का आम के वृक्ष पर बैठकर एकाग्र मन से जो एक वर्ष तक निरंतर जप करता है, उसको अवश्य ही पुत्र की प्राप्ति होती है, ऐसा भगवान् शंकर जी ने कहा है।

2. पत्नी की प्राप्ति के लिये—

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा सप्तशती)

इस मंत्र का सवा लाख जप स्वयं करने से शीघ्र पत्नी की प्राप्ति (विवाह) हो जाती है और 'पत्नी मनोरमां देहि०' इस मंत्र के सम्पुट से दुर्गा के 100 पाठ अर्थात् शतचण्डी कराने से शीघ्र विवाह हो जाता है।

स देवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाणः।
दृढव्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कृतप्रयत्नः॥
(बाल्मीकीय रामायण, सुन्दरकाण्ड 36।46)

इस मंत्र का सवा लक्ष जप करने से और इसी मंत्र के सम्पुटित वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड का कम से कम 9 पाठ स्वयं अथवा अन्य ब्राह्मण से कराने पर शीघ्र विवाह हो जाता है।

3. वर प्राप्ति के लिये—

'हे गौरि! शङ्करार्धाङ्गि! यथा त्वं शङ्करप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि! कान्त कान्तां सुदुर्लभाम्॥'

भगवती पार्वतीजी का पूजन करके उपर्युक्त मंत्र का प्रतिदिन 5 माला जप करने से शीघ्र श्रेष्ठ पति की (वर की) प्राप्ति हो जाती है।

पार्वती जी का पूजन कर जो कन्या श्री रामचरित मानस के बालकाण्ड के 234 दोहे के बाद—'जय जय गिरिराज किशोरी' से 'मंजुल मगल मूल बाम अंग फरकन लगे'—यहाँ तक 236 दोहे तक प्रतिदिन श्रद्धा-विश्वास पूर्वक पाठ करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥
(श्रीमद्भागवत 10।22।4)

कात्यायनि देवी अथवा पार्वती देवी की फोटो सामने रखकर जो कन्या उसका पूजन कर उपर्युक्त मंत्र का 1 माला जप प्रतिदिन करती है, उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनि।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रलाभं च देहि मे॥

उपर्युक्त मंत्र का 108 बार कन्या को जप करना चाहिए। जप करने की विधि यह है कि—तुलसी के वृक्ष का पूजन करके उसके सामने तुलसी की माला पर 108 बार जप पूर्ण होने पर तुलसी के पेड़ की 12 बार परिक्रमा करनी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा में दुग्ध और जल से भगवान् सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हुए 'ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यम्' उपर्युक्त मंत्र को भी पढ़ना चाहिए। कन्या को चाहिए वह अपने दाहिने हाथ से दूध और बाएं हाथ से जल से अर्घ्य दे। दूध और जल से अर्घ्य एक साथ ही 12 बार देना चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त विधि से जप और सूर्य को अर्घ्य प्रदान करती है, उसको बहुत शीघ्र वर की प्राप्ति हो जाती है।

ॐ शं शंकराय सकल जन्मार्जितपापविध्वंसनाय।
पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं मे देहि कुरु कुरु स्वाहा॥

उपर्युक्त मंत्र का जप तीन माला तुलसी की माला पर करने से कन्या का विवाह शीघ्र हो जाता है। जप की विधि यह है कि—भगवान् शंकर और अन्नपूर्णा की फोटो सामने रखकर उनका प्रतिदिन पूजन करके धूप बत्ती जलाकर जप करे। जप जहाँ किया जाय, वहाँ मिट्टी के गमले में अथवा टीन कनस्तर में केले के स्तम्भ को रखकर उसको मौली (नाला) से 9 अथवा 11 बार लपेट कर उस केले के वृक्ष की पूजा प्रतिदिन करनी चाहिए और जप के बाद केले के स्तम्भ की 4 बार अथवा 9 बार परिक्रमा करनी चाहिए। जो कन्या उपर्युक्त अनुष्ठान को प्रतिदिन करती है, उसका शीघ्र विवाह हो जाता है।

4. ज्वर से मुक्त होने के लिए

ॐ भस्मायुधाय विद्महे एकदंष्ट्राय धीमहि।
तन्नो ज्वरः प्रचोदयात्॥

इस मन्त्र का उत्पत्ति-संहारोत्पत्ति क्रम से 7 दिन तक जप स्वयं करने से अथवा 21 दिन तक दूसरे विद्वान् से जप कराने से सभी प्रकार का ज्वर ठीक हो जाता है।

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास॥
(श्रीमद्भगवद्गीता 11/25)

सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्ण का ध्यान और उनको नमस्कार करके जो मनुष्य उपर्युक्त मन्त्र का 108 बार जप करता है, यह ज्वर से मुक्त हो जाता है।

5. लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए

ॐ श्रीं श्रियै नमः स्वाहा।

इस मन्त्र से बाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति अग्नि में देनी चाहिए। अनन्तर सर्ग की समाप्ति पर—

ॐ रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं रक्षां देहि श्रियं च ते॥

इस मंत्र का पाठ करना चाहिए।

ॐ श्रीं श्रियै नमः मह्यं श्रियं देहि देहि दापह-दापह स्वाहा।

इससे बाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड के प्रत्येक श्लोक से घी की आहुति देनी चाहिए।

विधि—इस अनुष्ठान का प्रारम्भ दीपावली की रात्रि को दीपक जलाने के बाद करना चाहिए।

8 दिन तक प्रतिदिन सात सर्ग का और 9वें दिन बारह सर्ग का पाठ करके नौ दिन में पाठ पूरा करना चाहिए। अथवा प्रतिदिन सात, पाँच, तीन या एक सर्ग का पाठ करके अड़सठ दिनों में सुन्दर काण्ड का 7, 3 अथवा 1 पाठ पूर्ण करना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति और वृद्धि होती है।

● 6. भूत-प्रेत बाधा की निवृत्ति के लिए

स्थाने हृषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः

(भगवद्गीता 11।36)

इस मन्त्र को सवा लाख जप करके सर्वप्रथम सिद्ध करना आवश्यक है। पश्चात् उपर्युक्त मन्त्र काम करता है।

भूत-प्रेत का आवेश होने पर मिट्टी के किसी शुद्ध पात्र में गङ्गाजल अथवा कूप का जल लेकर 7 बार उपर्युक्त मन्त्र को बोलकर उसमें दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली को फिरा (घुमा) दें। फिर उस जल में से थोड़ा-सा रोगी को पिला देना चाहिए। बचा हुआ जल रोगी के समस्त अंगों पर छिड़क देना चाहिए। जब तक रोगी को भूत-प्रेत बाधा शान्त न हो, तब तक प्रतिदिन दो बार प्रातः और सायंकाल इस प्रयोग को करना चाहिए।

● 7. मस्तक पीड़ा की निवृत्ति के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु को बाल में कपाल, कपाल में भेजी, भेजी में कीड़ा करे पीड़ा सोने का शाला का रूपा का हथोड़ा ईश्वर गढ़े गौरिया तोड़े इनका श्राप श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्रो ईश्वरो वाचा।

अपने बाएँ हाथ में 7 बार थोड़ी-थोड़ी पवित्र राख (भस्म) को लेकर दाहिने हाथ से ढंककर उपर्युक्त मन्त्र को 7 बार पढ़कर दर्द वाले के मस्तक पर लगाने से दर्द दूर हो जाता है।

● 8. मित्रता के लिए

ॐ दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः॥ 1॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथधियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे॥ 2॥

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों से अलग-अलग पायस (खीर) में घृत डालकर हवन करने से शत्रुता हटकर मित्रता हो जाती है। यह अनुष्ठान कम से कम 61 दिन का है।

● 9. शत्रुता कराने के लिए

ॐ महाभैरवाय श्मशान अमुको अमुका विद्वेषं कुरु फट्।

उपर्युक्त मन्त्र का 41 दिन तक 108 बार जप करने से प्रेमियों का प्रेम हटकर परस्पर शत्रुता हो जाती है।

मन्त्र में जिन जगहों पर अमुक-अमुक शब्द लिखा है, उस जगह पर प्रेमियों का नाम लिखना चाहिए जिसकी शत्रुता करानी हो।

● 10. शूल निवृत्ति के लिए

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्षऽआयुधं कृत्तिवसानऽआचर पिनाकं विभ्रदागहि॥

(शुक्ल यजुर्वेद 16।51)

उपर्युक्त मन्त्र का पाठ अथवा जप करने से मनुष्य का दर्द दूर हो जाता है।

● 11. सुख से प्रसव होने के लिए

ॐ मुक्तापाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्तसर्वभयाद् गर्भं त्राह्येहि मारीच स्वाहा॥

उपर्युक्त मन्त्र के द्वारा पवित्र जल को आठ बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को जल पिलाने से उसको सुख से प्रसव होगा।

● 12. पति को वश में करने के लिए

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को दीपावली अथवा ग्रहण के दिन 108 बार जप करके सिद्ध करले। पश्चात् 31 दिन 108 बार जप करने से स्त्री का पति उसके वश में हो जाता है।

● 13. जलती अग्नि शीतल हो

'ॐ नमो कोरा करावा जल सा भरिया, ले गौरा के शिर पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, ई जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द सांचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस मन्त्र को ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि—कुएँ के सन्निकट से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार मन्त्र पढ़कर अग्नि की ओर फेंके।

● 14. नजर झाड़ने का मन्त्र

गरुर चरणे दियामन, श्रीहरी मोक्ष कारन, देव दानव दैत्यानी लाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चोटी हुंकारे फुंकारे उड़ाय, माटी शलिकेर पांव देख, टुकरिया जाय अमुकार अंगे डाइनेर दृष्टि पलाय कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा॥

दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झाड़ने का विधान है।

15. सर्प विषनाशक मन्त्र-औषधि

गरुड़ास्त्र मन्त्र—ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरेवक्षी । सोम आत्माछन्दास्यंकानि यजूंषिनाम । साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञयज्ञियम्पुच्छ-न्धिष्ठायाऽशम्या सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्व: पत ॐ ।'

इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है ।

दधि-मधु-नवनीता, पीप्पली शृंगवेरं,
मिरचमपि कूटो प्रतिहन्ता सुकेशी ।
यदि डसति सरोषो, तक्षको वालुकी वा,
यमसदनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम् ।।

गाय के ताजे दूध से निकाला ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा में मिलाकर सांप से डसे हुए व्यक्ति को पिला देने से विष उतर जाएगा ।

16. चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमल वालेय प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः ।

(2) पुत्र कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होती हो या विघ्न हो तो श्री कात्यायानी देवी का पूजन विधि से करावे ।

17. स्थायीधन स्थिति मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ।।

18. प्रसवसमयेजल मन्त्र

आकाश टले पवन टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन की कर कोका कोकी रिक्ता कुण्डली बसिया बाहिर हव असिया सिद्ध गुड़ कालिका चराडीर वरे शीघ्र करिया भूमे पड़ें ।

विधि—ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढकर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है ।

19. मृत्युञ्जय मन्त्र

'ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः ह्रौं ॐ ।'

पुराणोक्तमृत्युञ्जय मन्त्र—'मृत्युञ्जयाग रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे । अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः ।'

'ॐ हौंजूंसः' मृत्युज्य मन्त्र है ।

इनके विनियोग न्यास यथा विधि करें ।

20. धनधान्य पूर्णकर-अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ ह्री क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ

इस मन्त्र के प्रभाव से धन-धान्य पूर्ण रहता है । दो लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खीर, दाख गोघृत से हवन करना चाहिये । दो लक्ष का पुरश्चरण क्षेत्र के भीतर यंत्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है ।

21. आपदुद्धारक बटुक भैरव मंत्र

'ॐ नमो भगवते बटुकाय आपदुद्धारकाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ।

विधि—भात, घी, सरसों, चन्दन, चूरा आदि से हवन करना चाहिये ।

22. सर्व सिद्धिप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

'ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा ।'

खीर, दाख, उखरस, पलास, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन 1 लक्ष का पुरश्चरण । भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन-वस्तु होनी चाहिये ।

23. बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

'ॐ छः फट् स्वाहा ।' जल अभिमंत्रित करके देना ।

आदित्यरथ वेगेन विष्णुबाणबलेन च ।
तार्क्ष्य पक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष ।।

विधि—राई से उतारना ।

24. आंख झाड़ने का मन्त्र

शर्यातिञ्च सुकन्यांच च्यवनं शुक्रमश्विनौ ।
संध्ययोः स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्न नश्यति ।।

मन्त्र पढ़कर जल से धुलवाये ।

25. ज्वर झाड़ना

(1) ॐ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहै ।

(2) ॐ नमो अजैपालकी दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव'को दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप दीप देकर सिद्धकर लेना चाहिये ।

26. अन्तर तिजरा चौथिया का मन्त्र

ॐ लंकायाम् दक्षिणे तीरे कुमुदो नाम वानरः ।
तस्य स्मरणमात्रेण ज्वरो याति दिशोदश ।।

इसे पीपल के पत्ते पर लिखकर डोरा से बांध देवे ।

27. सुखपूर्वक प्रसव होने का यंत्र मंत्र

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिए चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करके पिलावे ।

मन्त्र—हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी ।
तस्य नूपुरशब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत् ।।

विशेष—चिरचिरा (चिचिड़ी) मस्तक में बांधने से सुख से प्रसव होता है । इन सब मन्त्रों को 108 बार पढ़ना ।

28. यात्रा में स्मरण करने का मन्त्र

यः स्मरेत्तुलसी सीता रामं सौमित्रिणा सह ।
कार्यं कृत्वा रिपूञ्जित्वा क्षेमेणायाति वै नरः ॥

थोड़ी-सी दही खाकर यात्रा आरम्भ करे और चंदन तिलक से सदा पूर्ण रहे ।

29. बीमारी दूर भगाने के लिए

गांव में पशुओं की बीमारी न आवे इसके लिए गुरु पुष्य हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के बड़े सकोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बीमारी नहीं होगी ।

मन्त्र—अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
बीभत्सुर्विजयी पार्थ सव्यसाची धनंजयः ।
कपिध्वजो गुडाकेशो गांडीवी कृष्णसारथिः ।
एतान्यर्जुननामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत् ।
न तत्र पशुरोगादि शुभं शीघ्रं प्रजायते ।

30. यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

31. यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितम् मया ।
जीर्णत्वात्त्वत्-परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।

32. सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

33. औषधि खाने का मन्त्र

अच्युतानन्त गोविन्द नामोच्चारणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥

34. श्री अष्टाक्षर मन्त्र महिमा

किं मन्त्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यैर्मखैः,
किंचिल्लोपविधानमात्रविफलैः संसारदुःखावहैः ।
एकः सन्नपि सर्वमन्त्रफलदो लोपादिदोषोज्झितः,
श्रीकृष्णः शरणं ममेति परमो मन्त्रोऽयमष्टाक्षरः ॥

श्रीमन्महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण ने अपने आश्रित-जनों के कल्याण के लिए अष्टाक्षर महामन्त्र की दीक्षा देकर सदैव उसके जप करने के लिए आज्ञा की है। श्रीमत्प्रभुचरण श्रीगुसांई जी से प्रारम्भ कर अब तक हमारे आचार्य वंशज इस महामन्त्र की दीक्षा शरणागत दैवी जीवों को देने की कृपा कर रहे हैं। सम्प्रदाय का प्रधान-मन्त्र यह अष्टाक्षर महामन्त्र है। श्रीमहाप्रभु जी द्वारा प्राप्त इस अष्टाक्षर मन्त्र की वैष्णव दीक्षा लेते हैं तथा इस मन्त्र का नित्यप्रति जप भी करते हैं।

अष्टाक्षर महामन्त्र की महिमा श्रीवल्लभ सम्प्रदाय में सुप्रसिद्ध है। श्रीमत्प्रभुचरण श्रीविट्ठलनाथ जी श्रीगुसांई जी ने अपने 'अष्टाक्षरार्थ निरूपण' नामक ग्रन्थ में यह स्पष्ट किया है, श्रीगुसांई जी आज्ञा करते हैं कि—

श्रीकृष्णः कृष्ण कृष्णेति कृष्ण नाम सदा जपेत् ।
आनन्दः परमानन्दो वैकुण्ठं तस्य निश्चितम् ॥

जो प्राणी सदा श्रीकृष्ण भगवान् के नाम का स्मरण करता है, उसको इस लोक में आनन्द तथा परमानन्द की प्राप्ति होती है और अवश्य वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति होती है। अष्टाक्षर में आठ अक्षर हैं। उनका फल श्रीगुसांई जी ने इस प्रकार लिखा है—

- **श्री** सौभाग्य देता है, धनवान् और राजवल्लभ करता है।
- **कृ** यह सब प्रकार के पापों का शोषण करता है।
- **ष्ण** आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक इन तीन प्रकार के दुःखों का हरण करता है।
- **श** जन्म मरण का दुःख दूर करता है।
- **र** प्रभु सम्बन्धी ज्ञान देता है।
- **णं** प्रभु में दृढ़ भक्ति उत्पन्न करता है।
- **म** भगवत्सेवा के उपदेशक अपने गुरुदेव में प्रीति कराता है।
- **म** प्रभु में सायुज्य कराता है जिससे पुनः जन्म न लेना पड़े। श्रीमन्महाप्रभु जी अपने नवरत्न ग्रन्थ में आज्ञा करते हैं कि—

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम ।
वदद्भिरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः ॥

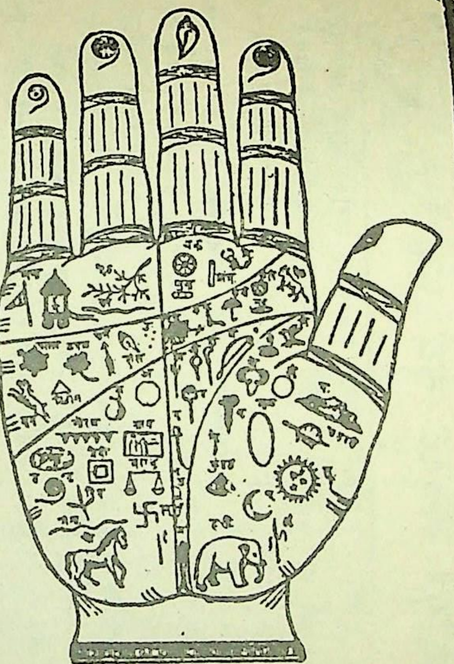
सब प्रकार की चिन्ताओं से बचने के लिए सदैव सर्वात्मभाव सहित 'श्रीकृष्णः शरणं मम' कहते रहना अथवा सदैव अष्टाक्षर जप करने वाले भगवदीयों की संगति में रहना यह मेरी सम्मति है। संक्षेप में अष्टाक्षर मन्त्र के जप से सब कार्य सिद्ध होते हैं। आधिभौतिक, आध्यात्मिक, आधिदैविक इन त्रिविध दुःखों में से किसी प्रकार का दुःख प्राप्त होने पर 'श्रीकृष्णः शरणं मम' इस महामन्त्र का जप-उच्चार करना चाहिए।

श्रीमन्महाप्रभु जी ने वेद, गीता, उपनिषद् एवं सभी शास्त्रों का सार-समन्वय करके तथा सभी प्रकार विचार करके दैवीजीवों के उद्धार के लिए भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र के शरणगमन पूर्वक आत्मनिवेदन करके उनकी सेवा स्मरण करते रहना यही निर्णय करके अपने अनुयायीजनों को सबसे प्रथम भगवान् की शरणागति की दृढ़ता के लिए अष्टाक्षर मन्त्र दीक्षा देकर उसके जप करने की आज्ञा दी है। इस आज्ञा का पालन करना अत्यावश्यक है।

आप अष्टाक्षर मन्त्र का स्वयं जप करें और अपने कुटुम्ब परिवार के तथा परिचय के वैष्णवों को प्रेरणा देकर जपानुष्ठान में सम्मिलित करने के लिए प्रबन्ध करें।

अक्षांशः २१ मध्य प्रदेश (बरार) लग्न सारिणी अयनांशा २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	२३३
०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३५	४३	५२	१	९	१८	२९	३६	४५	५४	२३	
वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	२६२
१	१२	२१	३०	३९	४९	५९	८	१७	२७	३६	४६	५६	५	१५	२५	३५	४५	५४	५	१५	२५	३५	४५	५५	६	१६	२९	३९	४८	५८	
मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	३०७
२	९	२०	३१	४१	५२	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३२	४८	०	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	
कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	३३७
३	४१	५२	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१६	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	२८	
सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	३३६
४	१९	३०	३१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	४२	४१	२	१३	२४	३४	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३२५
५	४५	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	३६	५७	
तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३२५
६	८	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२९	
वृश्चि.	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	३३६
७	४०	५१	३	१४	२५	४६	४९	५९	११	२२	३२	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४८	१	१२	२३	३४	४५	५६	८	
धन	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	३३७
८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	८	१९	३०	५१	५१	२	१२	२३	३३	४४	५४	५	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२५	
मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	३०७
९	३५	४५	५५	४	१४	२४	३३	४३	५२	२	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	५९	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२६२
१०	८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२३३
११	६	१४	२२	२९	३६	४५	५२	०	८	१५	२३	३१	३८	४६	५४	१	९	१०	२४	३२	४०	४८	५५	३	११	२०	२९	३४	४२	५०	



श्रीगणेशायनमः । अथातः संप्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम् । दक्षिणे पुरुषंज्ञेयं वामे वामकरं शुभम् ॥१॥ शिवोक्तं तत्र सामुद्रं हस्तरेखा शुभाशुभम् ॥ येन विज्ञानमात्रेण पुरुषोनहिशोचति ॥२॥ यस्यमीनसमारेखा कर्मसिद्धिश्चजायते ॥ धनाढ्यस्तु सविज्ञेयो-बहुपुत्रो न संशयः ॥३॥ तुलाग्रामतथावज्र करमध्येच हृश्यते । तस्य वाणिज्यसिद्धिः स्यात्पुरुषस्य न संशयः ॥४॥ पद्मचापादिखड्गंच अष्टकोणादि हृश्यते । स्त्रियश्चपुरुषस्यापिधनवान्ससुखीनरः ॥५॥ शंखचक्रध्वजाकारो मत्स्याकारश्च हृश्यते । सर्वविद्या प्रदानेन बुद्धिमान्ससुखीनरः ॥६॥ त्रिशूलंकरमध्येतु तेन राजा प्रवर्तते । यज्ञे धर्मे च दानेच देवद्विज-प्रपूजकः ॥७॥ शक्तितोमरवाणैश्च करमध्येतु हृश्यते ॥ रथचक्रध्वजाकारः सचराज्यंलभेन्नरः ॥८॥ अंकुशं कुंडलं चक्रंयस्यपाणितले भवेत् । तस्यराज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनंयथा ॥९॥ गिरिकंकणयोनीनां नरमुण्डघटादिकम् । करेवै यस्य चिह्नानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥१०॥ रविचन्द्रलतानेत्रमष्टकोणत्रिकोणकम् । मन्दिरस्य गजअश्वानां चिह्नं धन सुखीनरः ॥११॥ अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्यविराजते । उत्पन्न भक्षभोगीस्यात्सनरःसुखमेधते ॥१२॥ मध्यमातर्जनीमूले यवो यस्य प्रहृस्यते । धनवान् सुखभोगी स्यात्पुत्रदारगृहादिषु ॥१३॥ एवं बहुधा ॥



● अत्यन्त उपयोगी लेटेस्ट नये प्रकाशन



सुन्दर व आकर्षक कैसे बनें ? (लेखिका : उषा)

काली-कलूटी तथा बदरंग, जिनकी छवि अच्छी नहीं है वह भी इस वैज्ञानिक युग में रूपवान, ऐसा सौंदर्य जिससे आँखें चौंधिया जायें, प्राप्त कर सकती हैं। कील, मुँहासे, झाइयाँ, काले दाग़ शृंगार में बाधा डालते हैं। यदि आप चेहरे को गुलाब के फूल की मानिन्द, दुल्हन की तरह सौंदर्यवान बनाना चाहती हैं तो आज ही पुस्तक मंगायें। जूड़ा, चोटी, केश संवारने के मॉडर्न फैशन के सैकड़ों चित्र। पृष्ठ 192, मूल्य 10/- (दस रुपये)

बेबीज़, लेडीज एण्ड जेन्ट्स हैल्थ गाइड लेखिका : वीणा

गृहस्थ जीवन को सुखमय व्यतीत करने के लिए बच्चे-स्त्री-पुरुष तीनों का स्वस्थ, सुन्दर, सुडौल, आकर्षक तथा नीरोग होना नितान्त आवश्यक है। पति-पत्नी में से यदि एक रोगी, मोटा, ठिगना, कुरूप या अधिक पतला है तो जीवन में सच्चे आनन्द की अनुभूति नहीं हो सकती। आज के इस युग में कुछ भी असम्भव नहीं है। यदि नवीन वैज्ञानिक विधियों को अपनाया जाय तो बेबीज़, लेडीज एण्ड जेंट्स तीनों आकर्षक व्यक्तित्व सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तक में सैकड़ों आकर्षक चित्र भी दिये गये हैं। बड़ा साइज मूल्य 36/- (छतीस रुपये)

कैरिज एण्ड वैगन गाइड (लेखक : श्रीराम घुपड़)

इस पुस्तक में बॉक्स वैगन, आई. सी. एफ. एवं एम. ए. एन. बॉडियों के साथ-साथ ब्राडगेज, मीटरगेज तथा नैरोगेज का विवरण प्रश्नोत्तर सहित दिया गया है। यह पुस्तक स्किड पोर्टर, सफाई वाला, बेसिक, फिटर, मैकेनिक, कारपेण्टर, वैल्डर, ब्लैक स्मिथि तथा वर्कशाप स्टॉफ से लेकर ट्रेन एग्जामिनर तक अत्युपयोगी है। पुस्तक सचित्र है। मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

मॉडर्न वर्कशाप कोर्स (लेखक : ओ. एन. टंडन)

प्रस्तुत पुस्तक आई. टी. आई. के सिलेबसानुसार वर्कशाप तथा फिटर ट्रेड के लिए तैयार की गई है। इसमें वर्कशाप का प्रारम्भिक ज्ञान, माप-यन्त्र, सुरक्षा व सावधानियाँ, बैंच कार्य, ट्रांसमिशन आफ एनर्जी, फैरस मैटल्स, हीट ट्रीटमैंट, लैथ (खराद), सिक्रीव कटिंग, ड्रिलिंग मशीन, वर्मे और ड्रिल का आकार, शेपर एण्ड प्लेनर मशीन, मिलिंग मशीन, मैटिल, ग्राइंडिंग मशीनें, कटिंग सेल्स, वैल्डिंग और एलाइड प्रासिस (टांका), ब्लैक स्मिथि (लुहारगीरी), जिग एण्ड फिक्सचर, बन्धक व अभिबन्दी युक्तियाँ, गोल व वर्ग स्टील छड़ों के विवरण के साथ-साथ पुस्तक के अन्त में आवश्यक शब्दावली भी दी गई है। □ बड़ा साइज, □ 320 पृष्ठ, □ मूल्य 36/- (छतीस रुपये)

टैब्लेट्स एण्ड कैप्स्यूल्स गाइड—इस पुस्तक में लगभग 500 प्रकार की चुनी हुई मशहूर एलोपैथिक, आयुर्वेदिक व यूनानी गोलियों तथा कैप्स्यूलों के फार्मूलों के साथ-साथ उन्हें बनाने की विधि, रोगों में आयु अनुसार दी जाने वाली मात्रा व गुणों का सविस्तार वर्णन किया गया है। लेखक A.C. शुक्ल, मूल्य 36/- (छत्तीस रुपये)

यूनानी तिब्बी गाइड—ऐलोपैथिक चिकित्सा अत्यंत महँगी है, परन्तु देहात में पायी जाने वाली जड़ी-बूटियों से तैयार होने के कारण यूनानी तिब्बी चिकित्सा काफी सस्ती होती है। इस पुस्तक में अत्युत्तम चमत्कारी यूनानी नुस्खों का संग्रह है। ले. अमोलचन्द्र शुक्ल, मूल्य 36/- (छत्तीस रु.)

डायबिटीज़ एण्ड ब्लड प्रेशर ट्रीटमेंट—डायबिटीज तथा ब्लड प्रेशर जिन्हें हिन्दी में मधुमेह तथा रक्तचाप कहते हैं, आजकल इनके रोगियों से अस्पताल भरे पड़े हैं। इस पुस्तक में इन दोनों महारोगों के कारण, लक्षण, तथा चिकित्सा आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। अतएव रोगों से छुटकारा पाने के लिए इस पुस्तक को अवश्य मंगायें। ले० A.C. शुक्ल, मू० 36/- (छत्तीस रु.)

महापुरुषों के दृष्टान्त—इस धार्मिक ग्रन्थ में प्रत्येक स्त्री-पुरुष को सद्मार्ग प्रदर्शित करने वाले, अत्यधिक मनोरंजक, सुरुचिपूर्ण तथा शिक्षाप्रद दृष्टान्तों का संकलन है। ये दृष्टान्त पाप-पुण्य, सत्-असत् और धर्म-अधर्म का ज्ञान कराने के साथ-साथ भगवद्भक्ति में श्रद्धा और लगन उत्पन्न कर जीवन सफल बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। ले० अमोलचन्द शुक्ल मू० 36/- (छत्तीस रुपये)

केवल 10/-(दस रु० में) सौ वर्षीय जीवन-बीमा!

● **आपकी हैल्थ**—प्रस्तुत पुस्तक में कौन-सा आसन्न, किस रोग के लिए उपयोगी है, ऐसे 100 से अधिक स्त्री-पुरुषों के विभिन्न आसन दिये गये हैं। प्राचीन भारतीय योगासन प्रणाली का नित्यप्रति केवल 5-10 मिनट अभ्यास करके प्रत्येक स्त्री-पुरुष पूरे एक सौ वर्ष तक उस परमपिता परमेश्वर के दिये हुए अमानती शरीर की रक्षा कर सकता है। योग, प्राणायाम, भोजन, आहार-विहार, दुग्ध, फल, दैनिक दिनचर्या तथा संयम आदि की क्रियाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य 10/- (दस रुपये)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली फोन 261030

प्यारी बिटिया की शादी

लड़का हो या लड़की, युवा होते ही उनके विवाह की समस्या भारतीय माता-पिता के सामने आ जाती है। आधुनिक परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन भी हुए हैं, लेकिन वह न के तुल्य हैं। निन्यानवे प्रतिशत अभिभावक तो अब भी प्राचीन मान्यताओं को स्वीकार करते हुए, पुत्र-पुत्री के विवाह को अपनी चिन्ता का कारण समझते ही हैं।

कुछ लड़के, लड़कियों के विवाह बिना किसी विशेष प्रयास के होते देखे जाते हैं, और कुछ के विवाह काफी प्रयास के बाद भी एक लम्बी आयु तक नहीं हो पाते; और कुछ तो विवाह-इच्छा के बावजूद भी कुंआरा जीवन व्यतीत करते हैं।

ज्योतिषीय अध्ययन के आधार पर विवाह-बाधा भी कुंडलीगत विशेष ग्रह स्थितियों के कारण ही प्रस्तुत होती है। आधुनिकता के मद से भ्रमित हुए लोग प्रायः इस ओर ध्यान नहीं देते, और अपने बेटे-बेटियों को युवा से वृद्ध होता देखते रहते हैं।

विवाह का एक समय होता है; उस चढ़ती उम्र में सम्पन्न हुआ विवाह ही वैवाहिक जीवन को रस-गंधमय बना कर प्रफुल्लित करता है। समय पर विवाह न होने से लड़के-लड़कियां विभिन्न मानसिक तथा शरीरिक रोगों से आक्रांत होते देखे गए हैं; साथ ही-उनके अभिभावक भी मानसिक अशांति से त्रस्त होते हैं।

किसी भी लड़की या लड़के की वैवाहिक स्थिति को ज्योतिष के माध्यम से बहुत पहले ही ज्ञात किया जा सकता है। रोग का संकेत मिलते ही निदान अधिक प्रभावी होता है। वैवाहिक वय आने से पूर्व ही ज्योतिषीय परामर्श के आधार पर 'विवाह-बाधा-निदान' के लिए किया गया प्रयास, भावी समस्याओं से मुक्ति में सहायक हो सकता है। प्रस्तुत लेख में विवाह-बाधा से ग्रस्त कन्याओं के लिए विशेष अनुभूत ज्योतिषीय परामर्श प्रस्तुत हैं।

● यदि आपकी लाड़ली विवाह योग्य आयु प्राप्त कर चुकी है, लेकिन बाधायें प्रकट हो रही हैं तो आवश्यक यह होगा कि आप सर्वप्रथम किसी ज्योतिविद् से मिलकर विशेष परामर्श प्राप्त करें। यदि किसी कारणवश यह असम्भव दिख रहा है, तो पीला पुखराज 4 रत्ती तथा ओपल 4 रत्ती एक ही त्रिधातु मुद्रिका में मढ़वा, प्राण प्रतिष्ठा कराकर कन्या को धारण करायें। शुद्ध दो मुखी रुद्राक्ष भी विधि विधान सहित कन्या की बायीं भुजा में बांधें। अपेक्षित फल निश्चित प्राप्त होगा। **सिद्ध रुद्राक्ष तथा रत्न परिचय** नामक पुस्तकें अध्ययन करें।

● विवाहाकांक्षी कन्या को गुरुवार-व्रत शीघ्र फल प्राप्ति में सहायक है।

● वृहस्पतिवार के दिन कन्या पीले रेशमी कपड़े में केले की जड़, धूप, दीप देकर बाईं भुजा कर धारणा कर ले, और प्रति वृहस्पति को व्रत रख-कर केले के वृक्ष की पूजा करे।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

गुरुवार-व्रत के दिन अन्न तथा नमक त्याग आवश्यक है। इस दिन केवल फल तथा दुग्ध के सौम्य आहार पर ही आश्रित रहना चाहिए।

● गुरुवार-व्रत के दिन स्नानादि से निवृत होकर कन्या निम्न मंत्र का केवल 7 बार पाठ करे—



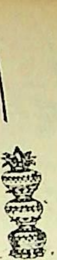
देवानां च ऋणीणां च गुरुं काञ्जन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं गुरुं प्रणमाम्यहम् ॥'

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का 21 बार पाठ करे—

'ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्यो अर्हद्युमद्विभाति ऋतुमज्जनेषु। यद्दी दयच्छवम ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम् ॥

दोनों मंत्रों का पाठ पूर्वाभिमुख होकर ही करना चाहिए। उच्चारण स्पष्ट होना आवश्यक है। आवाज इतनी होनी चाहिए कि कान सुन सकें। चिल्लाना नहीं चाहिए और न ही बुदबुदाना चाहिए।

उपरोक्त क्रियायें यदि विधि सहित की जाये, तो अतिशीघ्र ही विवाह-बाधा से मुक्ति प्राप्त होती हैं।



शकुन, स्वर, फलित प्रश्न ज्योतिष तथा ऐलोपैथिक चिकित्सा का ग्रंथ

शकुन ज्योतिष शास्त्र—यात्रा, परदेश अथवा अन्य अवसरों पर शकुन निकालना, जीवन पर शकुनों का अच्छा बुरा प्रभाव, पशु-पक्षी व अंग फड़कने आदि का फल। लेखक : **राजेश दीक्षित**। मूल्य 24/- रुपये।

2. **सुगम ज्योतिष शास्त्र (सरल सुगम ज्योतिष)**—इस ग्रंथ में ज्योतिष के सभी अंगों का विस्तृत वर्णन किया गया है। ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रंथ है। लेखक : **पं० जगन्नाथ**। मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

3. **रमल ज्योतिष शास्त्र**—रमल ज्योतिष का सम्यक् ज्ञान देने वाली सर्वजनोपयोगी एकमात्र पुस्तक। लेखक : राजेश दीक्षित, मूल्य 24/- (चौबीस रुपये)

4. **स्वर ज्योतिष शास्त्र**—नाक के छिद्रों द्वारा श्वास वायु का आगमन निश्चित तिथि और समय के अनुसार न होने से शरीर पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है इसका सही विवेचन। ले० : **राजेश दीक्षित**। मू० 24/-

5. **कैरलीय ज्योतिष शास्त्र**—इसमें केरल ज्योतिष पर एक सम्पूर्ण पुस्तक। लेखक : **राजेश दीक्षित**, मू० 24/-

6. **मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र**—प्रत्येक गृहस्थी के लिए मुहूर्त निकालकर कोई भी शुभ कार्य करना अत्यन्त आवश्यक है। लेखक : **राजेश दीक्षित** मूल्य 24/- रुपये

7. **प्रश्न ज्योतिष शास्त्र (प्रश्न चमत्कार)**—प्रश्न मार्तण्ड कहिए, चाहे प्रश्न कौतूहल या प्रश्न भास्कर कहिए; बहरहाल जीवन से सम्बन्धित आवश्यक प्रश्नों का सही-सही उत्तर क्षणों में देने वाली उत्तम पुस्तक। लेखक : पं० जगन्नाथ। मूल्य 15-00

8. **सरल ज्योतिष शास्त्र**—ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक विषयों की जानकारी देने वाली अत्युपयोगी पुस्तक। ले० राजेश दीक्षित। मूल्य 15/- (पन्द्रह रुपये)

9. **हस्त-सामुद्रिक शास्त्र**—आपकी आयु कितनी होगी, रोग से मुक्ति कब होगी ? मृत्यु किस परिस्थिति में होगी, आदि समस्त बातों का विवरण हस्त रेखाओं के फलादेशानुसार इस पुस्तक से प्राप्त करें। मूल्य 10/-।

10. **फलित ज्योतिष मार्तण्ड**—1 मास में यदि फलित ज्योतिष में पूर्ण निपुणता प्राप्त करना चाहते हैं तो इस पुस्तक को मंगाकर अवश्य पढ़ें। मूल्य 15/-

11. **स्वप्न ज्योतिष शास्त्र**—सातों प्रकार के स्वप्नों का अकारादि क्रम से शुभाशुभ फल, साथ ही साथ पुस्तक के अन्त में पढ़ें। पासे द्वारा प्रश्नों का हाल। लेखक : राजेश दीक्षित। मूल्य 10/

12. **स्वर ज्योतिष और भाग्य (स्वर सिद्धि और शकुन)**—प्रश्नोत्तर के रूप में लिखी गई स्वर ज्योतिष की अमूल्य सचित्र पुस्तक। मूल्य 3/- (तीन रुपये)

13. **वृहद् हस्त रेखा विज्ञान (भाग्य का कम्प्यूटर)**—पृष्ठ 432, चित्र 560, बड़ा साइज, पक्की जिल्द में हस्तरेखा पर सबसे जिम्मेदार पुस्तक। जिसमें सभी नर-नारी अपने हाथ की रेखाओं द्वारा भूत-भविष्य व वर्तमान की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य 24/- डाक खर्च 4/- पृथक्।

14. **कुण्डली दर्पण**—मूल्य 15-00

15. **षोडश संस्कार विधि**—छपकर तैयार मू० 15/-

36/- में घर बैठे ऐलोपैथिक डाक्टर बनकर देश व जाति का भला करें :

भारत का प्रत्येक व्यक्ति इस बात से भलीभांति परिचित है कि जितनी रिसर्च ऐलोपैथी में हुई है, उतनी और किसी चिकित्सा पद्धति में नहीं हुई। अधिकांश ऐलोपैथिक डाक्टरों के पास घर की बिल्डिंग, टेलीविजन सैट, कार तथा लाखों रुपये का बैंक बैलेंस होता है। यह सब ऐलोपैथिक चिकित्सा की सफलता के कारण कुछ ही समय में प्राप्त किये जा सकते हैं, बशर्ते कि आप सफल डाक्टर बन सकें। यदि आप घर बैठे ऐलोपैथिक डाक्टर बनना चाहते हैं तो हमारी अत्यन्त रिसर्च पूर्ण पुस्तक :

आधुनिक ऐलोपैथिक गाइड

☐ ले० : हरनारायण कोकचा, ☐ पृ. 784, मू० 36/- आज ही मंगाकर पढ़ें। इसकी सहायता से किसी भी शहर, कस्बा, देहात या गली-कूचे में ऐलोपैथिक चिकित्सा करके धन व यश के साथ-साथ देश व समाज का भला कर सकते हैं।

इस पुस्तक में कम्पाउण्डरी शिक्षा, होम नर्सिंग, मिडवाइफरी, फर्स्ट-एड, रोग परीक्षा पद्धति, इंजेक्शन लगाना व बनाना, नयी-नयी पेटेण्ट मेडीसन्स, रोगों के जानने के नये वैज्ञानिक उपाय, पैथालोजी, एनाटोमी, फिजियालोजी, बैक्टोलोजी, सर्जरी, रोजाना सताने वाले नये-पुराने रोगों की सफल ऐलोपैथिक चिकित्सा तथा ऐलोपैथी में अब तक हुए नये से नये आविष्कारों का सचित्र वर्णन किया गया है। डाक खर्च पृथक्,

ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ तथा चिकित्सा सम्बन्धी सभी प्रकार की पुस्तकें मंगाने का एकमात्र विश्वसनीय स्थान :



देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार,

चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006, फोन : 261030

घण्टाकर्ण यंत्र

बीसवीं शताब्दी के परम विशिष्ट साधक योगीराज अनहदानन्द ने घण्टाकर्ण के बारे में कहा है, 'यह यन्त्र आश्चर्यचकित कर देने वाला है, असाध्य से असाध्य कार्यों को साधने वाला तथा त्वरित फल देने में अग्रणी है।' महाप्रभु विज्ञानानन्द ने घण्टाकर्ण यन्त्र पर वृहद् ग्रन्थ लिखा है। भूमिका में उन्होंने सारांशतः लिखा है कि जिस दिन दुनिया घण्टाकर्ण का रहस्य समझ लेगी, उस दिन वह भूखी-नंगी नहीं रहेगी। त्रिकालदर्शी साधक व्यासाचार्य ने कहा है, 'घण्टाकर्ण के भेदोपभेद असीम हैं, यह रक्षाकार्यों में गाण्डीववत् और धन-सम्पदा कार्यों में कुबेरवत् है।'

● घण्टाकर्ण यन्त्रस्वरूप

तेरह रेखाएँ सीधी और बारह रेखाएं तिरछी खीच कर बराबर 132 कोष्ठक बनाए जाते हैं और फिर चक्रवत् घण्टाकर्ण मन्त्र का प्रत्येक अक्षर एक-एक कोष्ठक में अंकित किया जाता है। इस प्रकार घण्टाकर्ण मन्त्र के 131 अक्षर उन कोष्ठकों में लिख दिए जाते हैं और मध्य के कोष्ठक में घण्टाकर्ण बीज कल्प अंकित किया जाता है। इस प्रकार पूरे 132 खण्ड (कोष्ठक) घण्टाकर्ण बीज कल्पयुक्त घण्टाकर्ण मन्त्र अंकित कर देते हैं। ये 132 खण्ड एक सौ बत्तीस सिद्धियों के आगार कहे जाते हैं।

● घण्टाकर्ण यन्त्र पूजन-समय

घण्टाकर्ण यन्त्र सिद्ध करने के लिए कार्तिक, मार्गशीर्ष, वैशाख तथा ज्येष्ठ मास शुभ कहे गए हैं, साथ ही शुक्ल पक्ष, पंचमी, दशमी, पूर्णिमा तिथि और चन्द्र, बुध, गुरुवार का संयोग लिया जा सके तो श्रेष्ठ रहता है। परम दैवज्ञ योगी 'छिन्ना स्वामी' के मतानुसार रविवार को हस्त, मूल या पुष्य नक्षत्र हो और उस दिन इसे सिद्ध किया जाए तो ज्यादा उचित रहता है। पश्चिम के प्रसिद्ध तांत्रिक श्रावक के अनुसार किसी भी अमावस्या की रात्रि को यह मन्त्र सिद्ध करना पूर्ण सफलतासूचक रहता है।

मेरे अनुभव के अनुसार दीपावली में पाँच दिन पूर्व और पाँच दिन बाद तक का समय इस कार्य के लिए सर्वोत्कृष्ट रहता है, इसके अलावा विजयदशमी, मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, अमृत, सिद्धि, योग, आनन्द, श्री वत्स, छत्र इत्यादि योगों में सिद्ध किया यन्त्र पूर्ण फलदायक रहता है।

● यन्त्र भेद

वास्तव में देखा जाए तो इस यन्त्र को भली प्रकार से समझा ही नहीं गया है, यह यन्त्र असीम सिद्धियों से परिपूर्ण है। कहते हैं कि कुबेर ने अपने आपको सर्व ऐश्वर्य सम्पन्न बनाने के लिए भगवान पशुपतिनाथ से इस यन्त्र का रहस्य समझा था और प्रयोग किया था। शेष विश्व को इस यन्त्र की श्रेष्ठता तथा रहस्य कुबेर से ही ज्ञात हुए थे। कहा जाता है कि यदि कोई साधक या योगी इस यन्त्र के भेदोपभेद जानकर सिद्ध कर ले तो वह विश्व का श्रेष्ठ धनपति, यशपति और शौर्यपति हो सकता है। इस पर भी इस यन्त्र की विशेषता यह है यह योगी तथा गृहस्थ दोनों के लिए सेवनीय तथा उपयोगी है।

इस यन्त्र में कुल 132 भेद हैं, एक सौ बत्तीस यन्त्र भेद हैं, एक सौ बत्तीस ही साधना-पद्धतियाँ हैं और एक सौ बत्तीस ही सिद्धियाँ हैं। जो इस यन्त्र के सभी भेद सिद्ध कर लेता है, वह विश्व का बिरला व्यक्ति हो जाता है।

उच्छिष्ट, त्रैलोक्य, मोहन, शक्ति, सिद्धि, मृत्युञ्जय, दक्षिण, नवनिधि, घण्टाकर्ण, प्रयोग के वीरसाधन, शत्रुञ्जय आदि 60 प्रकार के भेद हैं।

○ यन्त्र निर्माण

अलग-अलग कार्यों एवं कामना सिद्धि के लिए अलग-अलग प्रकार से यन्त्र निर्माण होता है। शत्रुस्तम्भन कार्यों के लिए ताम्रपत्र पर, वशीकरण के लिए कागज पर गोरोचन से, लक्ष्मी प्राप्ति के लिए रजत पर, समस्त प्रकार के ऐश्वर्य हेतु पंच धातु पर तथा कुबेरवत् सम्पदायुक्त अक्षय कीर्ति हेतु स्वर्ण पर यन्त्र निर्माण होता है।

यन्त्र उत्कीर्ण अत्यन्त सूक्ष्म एवं परिश्रमसाध्य कार्य है, अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मुहूर्त में ही यन्त्र उत्कीर्ण किया जाता है। लक्ष्मी प्राप्ति, ऐश्वर्य, धन सम्पदा व अक्षय कीर्ति के लिए नित्य दोपहर बारह बज कर सात मिनट से बारह बज कर इकतीस मिनट तक विजय काल में ही यन्त्र उत्कीर्ण होना चाहिए, तभी वह पूर्ण प्रभावशाली एवं सिद्धिप्रद होता है।

योगीश्वर अव्रजानन्द स्वामी के अनुसार यदि अन्य धातु उपलब्ध न हो तो भोजपत्र पर अष्टगन्ध से यन्त्र उत्कीर्ण का प्रयोग किया जाए, तब भी सफलता सम्भव है।

● घंटाकर्ण मन्त्र

यन्त्र साधना से पूर्व छह क्रियाएँ आवश्यक होती हैं:

1. मन्त्रबीज, 2. मन्त्र-बहिर्न्यास एवं अन्तन्यास, 3. मन्त्र-उत्कीलन, 4. मन्त्रचैतन्य, 5. मन्त्रविनियोग और 6. मन्त्रप्रयोग। साधक को योग्य गुरु के चरणों में बैठ कर इन क्रियाओं की विधि और उनसे मन्त्रों का सम्यक् ज्ञान कर लेना चाहिए।

● घन्टाकर्ण बीज मन्त्र

पूरे मन्त्र के एक सौ बत्तीस मन्त्र हैं जो अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग हैं घन्टाकर्ण लक्ष्मी बीज मन्त्र है—

॥ ओम ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रौं ह्रं घन्टाकर्ण नमः ॥

इस सम्बन्ध में खोज करने पर काफी विवरण मिला है। कलकत्ता लाइब्रेरी में 'घन्टाकर्ण यन्त्र—गुह्यातिगुह्य यन्त्र' शीर्षक से हस्तलिखित प्रति है जिसमें इस बारे में विस्तृत विवरण है। पटना नेशनल लाइब्रेरी में 'घन्टाकर्ण कल्प' शीर्षक से हस्तलिखित बत्तीस पन्नों की पुस्तक है, जिसमें घन्टाकर्ण साधना विधि सही रूप में अनुभव गम्य लिखी हुई है। सेठ रघुनाथदास जालान लाइब्रेरी में पहली प्रामाणिक हस्तलिखित पोथी है जिसका नाम 'घन्टाकर्ण यन्त्र—यन्त्रसार' क्रमांक 12831 है। इस में विस्तार से घन्टाकर्ण यन्त्र साधना अनुष्ठान पद्धति और एक सौ बत्तीस घन्टाकर्ण यन्त्रभेद चित्र हैं जो कि प्रामाणिक हैं जिसमें प्रत्येक साधना विधि, बाधाएँ-निराकरण और सम्बन्धित फल स्पष्ट किए हुए हैं। मूलजी पुस्तकालय बम्बई में घन्टाकर्ण के एक सौ बत्तीस भेदयन्त्र ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण हैं। श्रीलंका की प्रसिद्ध काली गुफाओं तथा नेपाल के रामगोडा मन्दिर में यह यन्त्र व इसके 132 यन्त्र भेद अंकित हैं। (साप्ताहिक हिन्दुस्तान से साभार)

मन्त्रों द्वारा रोग निवारण

जब पुराणों में 'ॐ नमः शिवाय' अथवा 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' आदि मंत्रों के अद्भुत चमत्कारों का वर्णन आता है और इन मंत्रों के द्वारा समस्त रोग शोक दूर होने की तथा साक्षात् भगवान् के दर्शन करने तक की अद्भुत शक्ति का वर्णन पढ़ने को मिलता है तो कुछ लोग एकदम से बिदक जाते हैं, और इन बातों को गपोड़ेबाजी तथा सफेद झूठ मानकर हंसी में उड़ाने लगते हैं। आज हम पाठकों के सामने 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का चमत्कार आर्य नेता अरविन्द कुमार विद्यालंकार द्वारा छपवाई सत्य घटना के आधार पर रखने जा रहे हैं। आशा है पाठक इसे ध्यान से पढ़ने की कृपा करेंगे। साप्ताहिक पत्र 'पूर्वाञ्चल धारा' (30 जुलाई, 12 अगस्त 1979 वाराणसी) के मुख पृष्ठ पर इस प्रकार छपा है—

'नमः शिवाय' मंत्र में कैंसर रोग एवं महाव्याधि को दूर करने की विलक्षण शक्ति

अमेरिका की महिला शारी ब्राउन 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र के रहस्य की अनुभूति कर कष्टों से मुक्त हो गई। उसने कैंसर का विकट आपरेशन इस मंत्र का जाप करते-करते हँसते हुए कराया। यह चमत्कार देख सारा अस्पताल 'ओम् नमः शिवाय' की पवित्र ध्वनि से गूंज उठा। वह मंत्र जाप तब बन्द हुआ जब अस्पताल की मैट्रन ने कहा, यह आश्रम नहीं अस्पताल है। अमरीकी महिला शारी ब्राउन के शब्दों में ही उसका अनुभव पढ़िये जो मूल अंग्रेजी से अनुदित है। टेलीफोन पर अचानक महिला ब्राउन ने 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र सुना और वह अनिर्वचनीय अनुभव से परिपूर्ण हो उठी तथा तुरन्त न्यूयार्क के आश्रम में पहुँची। उसने कहा, इस मंत्र ने इसके बाद से मेरी जीवन दृष्टि बदल दी। सब कुछ बदल गया। क्यों और कैसे हुआ ? यह बताना मेरे लिए संभव नहीं। यह वह रहस्यपूर्ण हृदय की अनुभूति थी। मेरे चारों ओर का सब कुछ बदल गया। कैंसर का कठिन आपरेशन अनायास सुखमय हो गया। सब चकित और विस्मित हो 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र जपने लगे। ब्राउन का कहना है वह तो कैंसर के प्रति कृतज्ञता अनुभव करती है क्योंकि इसके कारण यह अनमोल पवित्र मंत्र पाया। इस महान अनुभूति को पाने के लिये कैंसर रोग होना तुच्छ बात है। ओम् नमः शिवाय मंत्र की महिमा जानना जीवन की एक अनहोनी घटना जैसी है। यह कल्पनातीत है। अनिवर्चनीय है। 'ओम् नमः शिवाय' पुस्तक की भूमिका स्वामी मुक्तानन्द ने लिखी है। स्वामी जी का कहना है कि सब रोग इस मंत्र के जप से दूर हो सकते हैं। मानव की अवस्था तथा आध्यात्मिक जीवन सुधर सकता है। आधिव्याधि को दूर करने की शक्ति 'ओम् नमः शिवाय' मंत्र में है। सत्य की पुष्टि अमेरिकी महिला शारी ब्राउन ने की है। क्या भौतिकता से ग्रस्त अमेरिका पर यह भारत की आध्यात्मिक विजय नहीं है ?

भारत देश की सामान्य जनता का मंत्र की शक्ति पर दृढ़ विश्वास है। मंत्र में निहित गूढ़ शक्ति का भले ही अनुभव न करे और न जानता हो परन्तु उसका विश्वास अडिग है। यह कुछ वर्षों से नहीं प्रत्युत विक्रम संवत् से अन्यून 2500 वर्ष पूर्व से चला आ रहा है। ब्रिटिश इतिहासकार जान डरविन ने माना है कि प्राग् ऐतिहासिक काल में विश्व भर में जन जातियां शिवलिंग की पूजा करती थीं।

शिव एक देवता हैं, भारत राष्ट्र के आद्य निर्माताओं में से एक हैं। संध्या करने वाले प्रातः सायं इस मंत्र का ध्यान करते है और शिव को नमस्कार करते हैं—

"नमः शम्भवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च, मयस्कराय च, नमः शिवाय च, शिवतराय च।"

इस प्रकार भारतीय जन अपने पूर्व पुरुष का स्मरण करते हैं। राष्ट्र की अमरता का अनुभव करते हैं। सुख के लिये ही नहीं, कल्याण के लिये ही नहीं, अपितु भव-बाधाओं से मुक्त होने के लिये भी 'ओम् नमः शिवाय' का जप करते हैं।

पश्चिम वासी भारतीय जनों के दृढ़ विश्वास को अन्धविश्वास कहते हैं। वास्तव में ओम् नमः शिवाय तो बीज मंत्र है। भारत राष्ट्र के इस दृढ़ विश्वास का सब धर्मों का मूल स्रोत वेद है "वेदो अखिलो धर्ममूलम्" इसी सन्दर्भ में 19वीं सदी में महर्षि दयानन्द के ये उद्‌गार प्रबोधक हैं। उन्होंने कहा था—भारत को पश्चिम से कुछ लेना नहीं है। भिखारी पश्चिम भारत को क्या देगा ? विमान सूक्त के आधार पर नारायणराव ने सन् 1891 में विश्व भर में सबसे पहले विमान बनाया और उड़ा कर दिखाया। राइट बन्धुओं ने इसके दो साल बाद विमान बनाया। वेद ज्ञान के विस्मरण के कारण ही हमारा पतन हुआ।

'ओम् नमः शिवाय' मंत्र में आधिव्याधि को दूर करने की कितनी विलक्षण शक्ति है, यह न्यूयार्क की महिला शारी ब्राउन के उद्धरण से भी पुष्ट है। इसके अतिरिक्त इन मंत्रों का आध्यात्मिक जीवन के लिये प्रभाव तो असीम ही है। (सारभूत : मन्त्र महार्णव)

ज्योतिष विद्या की चमत्कारी पुस्तकें

वी० पी० पी० द्वारा मंगाइये !

● **व्यापार चमत्कार (तेजी-मंदी)**—व्यापारिक तेजी-मंदी जानने की सुगम विधियां, तेजी-मन्दी के गुप्त भेद, जिनका एक चांस बताने का ज्योतिषी लोग सैकड़ों रुपया न्योछावर के रूप में मांगते हैं। ग्रह, नक्षत्र आदि का पूरा-पूरा ज्ञान सिखाने वाली इस पुस्तक में रुई, सूत, शेयर, सोना चांदी, तांबा, मूंगफली, किराना, तिल, तेल, सरसों, लोहा आदि वस्तुओं के व्यापार में जिन लोगों ने रुपया गमाया वे इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। (पं० रतीराम) मूल्य 24/-

● **ज्योतिष विज्ञान**—ज्योतिष विज्ञान के सम्बन्ध में हर प्रकार की जानकारी देने वाली अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। इसके अध्ययन द्वारा आप घर बैठे ही ज्योतिषी बन सकते हैं। (ले० पं० विशुद्धानन्द) मूल्य 24/-

● **आपका भविष्य**—अंग्रेजी जन्म तिथि अथवा जन्म-करण और भारतीय राशियों के आधार पर प्रत्येक स्त्री-पुरुष के जीवन-भर में समय-समय पर घटने वाली घटनायें तथा उनका भाव, चरित्र, स्वभाव, रुचि अन्य राशि वाले स्त्री-पुरुषों के साथ शत्रुता या मित्रता, विवाह, भाग्योदय, बीमारी आदि का विस्तृत विवरण इस पुस्तक में पढ़ें। (ले० राजेश दीक्षित) मूल्य 24/-

● **सरल ज्योतिष शास्त्र**—ज्योतिष विद्या का घर बैठे सरलतापूर्वक ज्ञान कराने वाली यह उपयोगी पुस्तक हर घर में रहने योग्य है। इसे पढ़कर आप श्रेष्ठ ज्योतिषी बन सकते हैं। (ले. राजेश दीक्षित) मूल्य 15/-

● **आयु-निर्णय**—पति-पत्नी व कुटुम्ब में किसकी कितनी आयु होगी, इसका उत्तर जन्मकुण्डली के आधार पर निर्णीत करने के लिए इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। हिन्दी भाषा में प्रामाणिक पुस्तक। (ले. पं जगन्नाथ) मू 24-00

● मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र मू० 24-00

● स्वर ज्योतिष शास्त्र मूल्य 24-00

● सच्चा फालनामा मू० 21/-

● रमल ज्योतिष शास्त्र मू. 24-00

● शकुन ज्योतिष शास्त्र मू. 24-00

● **भृगुसंहिता फलित प्रकाश**—जिसमें संसार भर के अनेक व्यक्तियों की कुण्डलियों का फलादेश, जिन्दगी के हालात, आपका भाग्य किस-किस वर्ष में कौन-कौन सी तारीखों में उदय होगा, धनोन्नति, पारिवारिक, दैहिक, भौतिक सुख, धन की स्थिति, संतान-सुख, माता-पिता, स्त्री, भाई-बहन व विद्या, रोजगार, जायदाद, आयु, लाभ, हानि, सारांश जीवन-भर के भाग्यादि की जानकारी के सम्बन्ध में बगैर ज्योतिष व बिना गुरु की सहायता के थोड़ा पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी घर बैठे दर्पण की भांति देखकर फल कह सकता है तथा गलत बनी हुई 'अशुद्ध' कुण्डलियां भी स्वयं ठीक कर सकता है (मूल लेखक भृगु ऋषि) मू. 51/-

● **एक घंटे में विवाह संस्कार**—आज का शिक्षित नवयुवक तथा नवयुवती विवाह की वेदी पर घंटों बैठे रहना पसन्द नहीं करते। अतएव शास्त्रीय विधि से कम-से-कम समय में विवाह संस्कार सम्पन्न कराने के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। (ले० पं० जगन्नाथ) मूल्य 10/-

● **पूजा-भास्कर** [पूजा-पद्धति]—कर्मकाण्ड में आस्था रखने वाले सभी व्यक्तियों के लिए देवताओं की पूजा-विधि का शास्त्रीय विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। (ले० पं० जगन्नाथ) मू. 24-00

● **कर्मकाण्ड भास्कर**—इस बृहद् ग्रन्थ में सभी पूजाएं सभी संस्कार, सम्पूर्ण मन्त्र तथा यन्त्र टिप्पणियों सहित दिये हुए हैं। यह वैदिक तथा पौराणिक दृष्टिकोण के अनुसार अति उपयोगी ग्रन्थ है। (पं. जगन्नाथ) मूल्य 24-00

● **इच्छापूरक सिद्धियां** [मनवांछित फल की प्राप्ति]—इस पुस्तक में प्राचीन तन्त्र-मन्त्र विद्या का विस्तृत वर्णन किया गया है। आप भी अपनी इच्छित सिद्धि की पूर्ति के लिए इसे मंगाकर पढ़ें। (राजेश दीक्षित) मूल्य 24-00

● **मंत्र-महोदधि**—इस पुस्तक में जप का संक्षिप्त विधान गणपति, नवग्रह, द्वादश राशियों, लक्ष्मी, यक्षिणी, सरस्वती सप्तमहाशक्ति, महाकाली, हनुमान, भैरव आदि देवी-देवताओं के प्रभावशाली मन्त्र हैं। (पं. जगन्नाथ) मूल्य 21/-

नोट :—60/- या इससे अधिक की पुस्तकों पर डाक व्यय माफ।

ज्योतिष विद्या की सभी प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी. पी. पी. द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान :

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-6 फोन : 261030

इस घोर कलियुग में भवसागर से पार लगाने वाली

★ उपासना तथा धार्मिक पूजा-पाठ की पुस्तकें ★

विष्णु उपासना (विष्णु पूजा) राजेश दीक्षित मू. 18/-

● सम्पूर्ण चराचर के स्वामी चतुर्भुज शेषशायी भगवान् श्री विष्णु की पौराणिक कथा, पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन।

श्रीकृष्ण उपासना (कृष्ण पूजा) (राजेश दीक्षित) 10/-

● लीलाधारी, पूर्णावतार भगवान् कृष्ण के जीवन से सम्बन्धित पौराणिक कथा, पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान व स्तुति विषयक विविध मंत्र, स्तोत्र, चालीसा, भजन तथा आरतियों का सर्वोत्तम संकलन।

राम उपासना (राम पूजा) (राजेश दीक्षित) मू० 10/-

● मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम की महिमा, षोडशोपचार पूजन विधि, विविध स्तोत्र, ध्यान, मंत्र, चालीसा, आरती आदि का अत्युत्तम संकलन, जिसके द्वारा भगवान् राम की आराधना तथा उपासना आसानी से की जा सकती है।

शिव उपासना (शिव पूजा) (राजेश दीक्षित) मू० 10/-

● कैलाशवासी भगवान् सदाशिव की महिमा, पूजन-विधि, मन्त्र, यन्त्र, आरती, चालीसा, स्तोत्र, कवच आदि का अनुपम संकलन है।

श्री हनुमान उपासना (रामकृष्ण रसिक) मू. 10/-

● पवनपुत्र कपिश्रेष्ठ श्रीहनुमान बजरंगबली जी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का सचित्र एवं सजिल्द वृहद् संकलन।

भैरव उपासना (भैरव पूजा) (राजेश दीक्षित) 10/-

● वर्तमान कलियुग में श्री शिवजी के अवतार भैरव देव की जीती-जागती कला मानी जाती है। प्रस्तुत पुस्तक में भैरव की उपासना से सम्बद्ध पूजन विधि, स्तोत्र, चालीसा, आदि का संकलन है।

लक्ष्मी उपासना (लक्ष्मी पूजा) (राजेश दीक्षित) 10/-

● संसार का प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार लक्ष्मी की पूजा करता है तथा उन्हें प्रसन्न रखना चाहता है। प्रस्तुत पुस्तक में लक्ष्मी के उपासकों को मंत्र, पूजा विधि, चालीसा तथा आरती आदि का वृहद् संकलन है।

श्री गायत्री उपासना (गायत्री पूजा) मू० 10/-

● वेदमाता जगद्धात्री देवी गायत्री की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान, स्तुति विषयक यंत्र मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का सचित्र एवं सजिल्द वृहद् संकलन। (ले० राजेश दीक्षित)

श्री वैष्णोदेवी उपासना (वैष्णोदेवी पूजा) मू० 10/-

● हिमगिरि वासिनी भगवती वैष्णवी देवी की पौराणिक कथा तथा पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान, स्तुति, विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन, आरती, चालीसा आदि का वृहद् संकलन। सचित्र एवं सजिल्द पुस्तक।

दुर्गा उपासना (दुर्गा पूजा) (राजेश दीक्षित) मू० 10/-

● सर्वपूज्य मां भगवती को प्रसन्न करने के लिए नवार्ण-मंत्र, जप-विधि, पूजाविधान और अनुष्ठान, देवी के सभी रूपों से सम्बन्धित स्तोत्र, आरती, पद, भजन आदि का विराट संकलन।

सरस्वती उपासना (सरस्वती पूजा) मू० 10/-

● बुद्धि की अधिष्ठातृ देवी सरस्वती की कृपा बिना मन-बुद्धि सही रूप में काम कर ही नहीं सकते, विद्या भी प्राप्त नहीं हो सकती। प्रस्तुत पुस्तक में सरस्वती की महिमा, पूजन विधि मंत्रों सहित तथा विविध स्तोत्र, चालीसा, आरती आदि का संकलन किया गया है।

देवी-देवताओं की आरतियाँ मू० 15.00

● इस पुस्तक में देवी-देवताओं की अनेक आरतियाँ स्तोत्र, कामकाज और पूजा-पाठ की शास्त्रीय विधि, ज्ञान, वैराग्य, देश प्रेम, समाज-सुधार, ईश्वर भक्ति के सैकड़ों भावपूर्ण भजनों आदि का संग्रह है। प्रत्येक देवता के उपासक व्यक्ति के लिए यह बड़े काम की पुस्तक है।

बारह महीनों के व्रत और त्योहार मू० 10/-

● बारहों महीनों में किए जाने वाले व्रत तथा सभी त्योहारों की विधि, कथा तथा माहात्म्य का इस पुस्तक में विस्तृत वर्णन किया गया है। राष्ट्रीय पर्वों का परिचय भी साथ में है। हर घर में रहने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक।

ओ३म् उपासना (ॐ मंत्र महिमा) 3-00

● उस न्यायकारी परमपिता परमेश्वर को यदि प्रसन्न करना है तो शक्तिशाली 'ओ३म्' मंत्र का जप करें। यदि शारीरिक कष्ट हो, तब भी ओ३म् का जप करने से कष्ट निवारण हो जाता है। यदि मन में कोई इच्छा हो तब भी ओ३म् मंत्र इच्छित फल देने वाला सिद्ध होगा। विद्यार्थियों के लिए तो ओ३म् का जप निश्चय ही सफलता की कुञ्जी है। इस सबकी विस्तृत जानकारी प्रस्तुत पुस्तक में दी गई है। (ले०—पं० जगन्नाथ)

नोट—60/- या इससे अधिक की पुस्तकें मंगाने पर डाक व्यय माफ।

हर प्रकार की धार्मिक पुस्तकें मिलने तथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का एकमात्र स्थान :

देहाती पुस्तक भण्डार चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006 फोन : 261030

उत्तराक्षांशाः चरान्तरमिनट — चरान्तर सारिणी

यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो धन और क्रान्ति उत्तर होतो ऋण (८ से २८ तक) — **क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण उत्तर होतो धन** (२९ से ३६ तक)

अक्षांश	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	[illegible]
३	४	४	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	[illegible]
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	[illegible]
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	[illegible]
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	[illegible]
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	[illegible]
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	४	४	५	[illegible]
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	५	६
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	६
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	३	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	३	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	०	१	२	४	५	७	९	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	०	१	२	४	५	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	०	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	०	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	०	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	०	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	०	१	३	५	८	१०	१२	१५	१६
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	०	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	०	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
अक्षांशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें (८ से २८ तक) — **क्रांति के विपरीत करें** (२९ से ३६ तक)

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

रविक्रांति सारिणी द्वारा जिस तारीख महीने का चरांतर लाना है, उस दिन की रविक्रांति कितनी है यह देखें और दक्षिण है या उत्तर यह भी साथ में देखलें (+उत्तर—दक्षिण) तदनन्तर यह देखें कि जिस नगर का पंचांग बनाना हो उसके अक्षांश (अक्षांशादि सारिणी में) कितने हैं। सूर्य की क्रान्ति और अक्षांश द्वारा इस सारिणी (चरान्तर सारिणी) से चरान्तर मिनट जान लें। उदाहरण—जैसे ता. ३० अगस्त १९७७ को बम्बई का चरान्तर लाना है तो रवि क्रान्ति सारिणी से इस दिन की सूर्यक्रान्ति +९।१२ है और बम्बई के अक्षांश १८।५७ है, यह अक्षांश १९ के तुल्य है। चरान्तर सारिणी के बायीं हाथ की लाईन अक्षांश की है और बाईं ऊपर की लाईन क्रान्ति की है। [illegible] तथा अक्षांश १९ में देखा तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात से ७ मिनट प्राप्त हुए। अब यहां क्रांति उत्तर+धन होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

ग्रह मुखमांडा योग

पुनर्वसुश्च पुष्यंच रोहिणी चोत्तरात्रयम्
स्वाती चित्रामृगश्चैव ग्रहाणां मुखमेवच

ग्रहकर मांडायोग

रेवतीवासवश्चैव मैत्राऽश्विव शिवपंतुके
ग्रहागांकरमाख्यातंशेषापृष्ठंविनिर्दिशेत्
मुखेच जायते लाभं करयोसुख संपदा
पृष्टेच जायते हानि ग्रहाणां दाननिर्णयः

दान करने का समय

बुधस्य घटिका पंच सौरमध्यान्हमेवच
राहुकेत्वोश्चरात्रौचजीवे चंद्रेचसंध्ययो
उदये सूर्य शुक्रौच भौमेचघटिकाद्वये
अकाले नैव कर्तव्यं दातृणां प्राणघातकः

कुछ अनुभवी टोटके तथा तन्त्र-मन्त्र

बुखार पर :

रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ को कान पर बांधने से सभी प्रकार के विषम ज्वर शान्त होते हैं।

अतिसार पर :

सहदेवी की जड़—मंगल, रवि, गुरुवार को लाकर सात टुकड़े करके लाल डोरे में लपेट कर कमर में बाँधने से लाभ होता है।

प्लीहा पर :

प्याज की माला गले में धारण करने से पूरा-पूरा लाभ होगा।

आधाशीशी के दर्द पर :

प्रातःकाल दक्षिणाभिमुख होकर हाथ में एक टुकड़ा गुड़ का लेकर, दाँत से काट कर चौराहे पर फेंके।

या

प्रातः उदय होते हुए सूर्य की तरफ मुँह कर खड़े होकर गर्मागर्म जलेबी खावें। लाभ होगा।

सुखप्रसव के लिए मन्त्र :

ॐक्षीं स्वाहा, इस मन्त्र को १०८ बार या आवश्यकतानुसार १००८ बार पढ़ कर दुर्वाकुर से तिल का तेल अभिमन्त्रित करके वह तेल थोड़ा गर्भवती को पिलावें। थोड़ा पेट पर अच्छी तरह लगावें।

जिगर पर :

प्रातः निहार मुँह चौकिया नौसादर महीन पिसा हुआ ६ माशे फाँक कर ठण्डा जल पीवें—लाभ होगा।

सिद्ध मन्त्रोपासना

● मंत्र-सिद्धि के लिए चार साधन आवश्यक हैं— 1. एकान्त स्थान, 2. परम शान्ति, 3. एकाग्रता, 4, दृढ़ निश्चय। इसके साथ-साथ मंत्रदाता गुरु में, मंत्र में तथा मंत्र के देवता में परिपूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, प्रेम तथा भाव आदि होना अनिवार्य है।

उपर्युक्त में कमी होने पर मंत्र सिद्धि सन्दिग्ध रहती है।

● मंत्र जाप तथा नियम पूर्ण होने के बाद दशांश आहुतियां, मंत्र के अन्त में 'स्वाहा' शब्द बोल कर आहुति देनी चाहिए। आहुतियों के लिए साधारणतः निम्नलिखित सामग्री साफ सुथरी तैयार करके रख लेनी चाहिए।

● हवन की अष्टांग सामग्री

तिल 1 किलो, चावल 500 ग्राम, यव (जौ) 125 ग्राम, खाण्ड 125 ग्राम, शुद्ध घी आवश्यकतानुसार, चन्दन बुरादा 25 ग्राम, अगर 10 ग्राम, तगर 10 ग्राम, कर्पूर 10 ग्राम, केशर 5 ग्राम, नागरमोथा 25 ग्राम, पंच मेवा 100 ग्राम, कमल पुष्प 100 ग्राम, बेलगिरि 250 ग्राम, गूगल 100 ग्राम, कमलगट्टा 50 ग्राम, समिधा (पलाश-ढाक, लाल चन्दन, सफेद चन्दन आदि) आवश्यकतानुसार।

नौकरी प्रप्त्यर्थ एवं मनोरथ सिद्धि के लिए भुवनेश्वरी अम्बिकादेवी का मंत्र

मंत्र—"ॐ हरत्रिपुर हरभवानीबाला, राजा-प्रजा मोहिनी, सर्व शत्रु विध्वंसनी मम चिन्तितं फलं देहि-देहि भुवनेश्वरी स्वाहा।"

विधि—किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया से पूर्णिमा तक इस मंत्र का इक्कीस हजार जाप दिन-रात्रि में किसी भी समय (नियमित-संयमित रूप से) सुनिश्चित शांत पवित्र स्थान पर बैठ कर (रक्त पुष्प, प्रसाद, ज्योति-धूपादि युक्त) पूर्ण करना चाहिए। जाप पूर्ण होने पर इसी मंत्र द्वारा 'दो हजार एक सौ आठ' आहुतियां देनी चाहिए। हवन की पूर्णाहुति पर कम से कम एक ब्राह्मण, 3 कन्याएं एवं बटुकनाथ (बालक) को प्रेमपूर्वक भोजन कराना चाहिए।

इसके पश्चात् नित्य प्रातः तथा रात्रि को उपर्युक्त मंत्र की 3 माला (108 मनके वाली 3 माला) जाप करना चाहिए। कुछ ही समय में इष्ट-सिद्धि का अनुभव होने लगेगा।

टिप्पणी—इष्ट-सिद्धि कराने वाले इस साधन (भजन जाप) को जितना गुप्त रखा जायगा उतना ही शीघ्र वह चेतनता को प्राप्त होगा।

दरिद्रतानाशार्थ—'महालक्ष्मी मंत्र'

मंत्र—"ॐ कमल निवासिनी, सदा सुहासिनी मा चंचले! स्थिरां-स्थिरां ह्रीं-ह्रीं ॐ नमः कामाक्षायै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।"

विधि—शनिवार को अर्ध रात्रि से नित्य 1000 मंत्र जाप (धूप, दीप, नैवेद्य तथा पीले पुष्पादि युक्त) प्रारम्भ करना। इस प्रकार 22 दिन तक जप साधन करना चाहिए। तेईसवें दिन रात्रि को इसी मंत्र से विधिपूर्वक 2200 (22 माला) आहुतियां प्रदान कर, कम से कम एक ब्राह्मण, 3 कन्याएँ तथा एक बटुकनाथ (बालक) को श्रद्धापूर्वक भोजन कराना चापिए। यहाँ अनुष्ठान पूर्ण हुआ। मगर बाद में भी नित्य प्रातः व रात्रि को एक-एक माला मंत्र-जाप करते रहना चाहिए। 365 दिन में आपको धन-लाभ का अनुभव होने लगेगा।

बवासीर शमनार्थ सिद्ध साबर-मंत्र

मंत्र—"ईशम ईशो ईशाम, कंकर को न करो ललिशाम। आठों अच्छर जो नित जोय, मूल बवासीर होय न होय।"

विधि—शौच (आबदस्त) में बचे हुए पानी को सूचित मंत्र से 21 बार अभिमंत्रित करके, मस्सों का प्रक्षालन करें। यह क्रिया पाखाने (लिटरीन) में बैठे हुए ही करनी चाहिए। इस प्रकार 21 दिन तक यह क्रिया करें। खूनी या बादी बावासीर में इस मंत्र क्रिया का अद्भुत प्रभाव पड़ कर पर्याप्त लाभ होता है। ●

उपवास

यदि खूनी बवासीर हो और इसके कारण अधिक पीड़ा हो, तो दो या तीन दिन तक पूर्ण उपवास करना चाहिए। इससे रक्त बहना बन्द हो जायेगा तथा स्वास्थ्य में वृद्धि भी होगी।

ऊपर बताई गई चिकित्सा विधि के साथ-साथ सप्ताह में एक बार पूर्ण उपवास भी रखना लाभकारी होगा। □

तुलसी रामायण के कुछ मंत्र

श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी के रामचरितमानस के कुछ मंत्र हम पाठकों के सामने रखते हैं। उत्तरी भारत में ये मंत्र भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए काम में लाये जाते हैं और वे प्रभावी हैं। इनमें से जो मंत्र जप करना हो उसके लिए हवन करना पडता है। घरमें छोटासा हवनकुंड बना लेना चाहिये। उसमें अग्नि प्रज्वलित कर दे और दी हुई 16 चीजों में से कम से कम 8 लेकर 108 आहुतियाँ देकर मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। हवन तो सिर्फ एक बार ही करना होता है लेकिन मंत्रजप रोजाना 108 बार करना पड़ता है। इससे इष्ट फलप्राप्ति होती है। हवन के लिये आवश्यक वस्तुएँ: (1) चंदनका चूरा (2) तिल (3) घी (4) दाल (5) अगर (6) तगर (7) कपूर (8) शुद्ध केसर (9) नागरमोथा (10) जव (11) चावल (12) पंचमेवा (13) पिस्ता (14) बादाम (15) अंगूर (16) काजू इनमें से कम से कम 8 वस्तुएँ आवश्यक हैं। मंत्रजप सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार से प्रारंभ करें।

ईश्वर दर्शन के लिए

नील सरोरुह नील मनि नील नीलधर स्याम।
लाजहि तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥

आराम मिलने के लिए

रामचरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जावई बाग।

रक्षामंत्र

मामभिरक्षय रघुकुलनायक। धृतवरचाप रुचिकर सायक ॥

विपत्तिनाश के लिए

राजिवनयन धरे धनुसायक। भगत बिपतिभंजन सुखदायक ॥

संकटनाश के लिए

जो प्रभु दीनयालु कहावा। आरति हरन बेद जसु गावा ॥
जपहि नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

कठिन क्लेश नाश के लिए

हरन कठिन कलि कलुष कलेसू। महामोह निसि दलन दिनेसू ॥

विघ्नशांति के लिए

सकल विघ्न ब्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपा बिलोकहिं जेही ॥

दुःखनाशन के लिए

जब ते राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥

प्लेग महामारी न होने के लिए

जय रघुबंस बनज बनभानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानू ॥

भिन्न रोगों तथा उपद्रव शांति के लिये

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहिं ब्यापा ॥

सिरदर्द हटाने के लिए

हनूमान अंगद रन गाजे। हांक सुनत रजनीचर भाजे ॥

भूत भगाने के लिए

प्रनवउँ पवनकुमार, खल बन पावक ग्यान धन।
जासु हृदयँ आगार बसहि रामसर चाप धर ॥

विष नाश के लिये

नाम प्रभाउ जान सिवनीको। कालकूट फलदीन्ह अमीको ॥

अकाल मृत्युनिवारण के लिये

नाम पाहरू दिवस निसि, ध्यान तुम्हारा कपाट।
लोचन निज पद जंत्रित जाहि प्रान केहि बाट ॥

गुम हुई चीज प्राप्त होने के लिए

गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥

दीठ (नजर) न लगने के लिए

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी। निरखहिं छबि जननी तृन तोरी

जीविका प्राप्ति के लिये

बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥

दारिद्र्य हटाने के लिए

अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद धन दारिद्र दवारि के

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

जिमि सरिता सागर महुं जाही। जद्यपि ताहि कामना नाही ॥
तिमि सुखसंपत्ति बिनहि बोलाएँ। धरमसील पहिं जाहि सुभाएँ

पुत्र प्राप्ति के लिए

प्रेम मगन कौशल्या, निसि दिन जात न जान।
सुख सनेह बस माता, बालचरित कर गान ॥

संपत्ति लाभ के लिए

जे सकाम नर सुनहि जे गावहिं।
सुख संपति नाना विधि पावहिं ॥

ऋद्धि सिद्धि प्राप्त होने के लिए

साधक नाम जपहि लय लाएँ।
होहि सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥

सब सुख प्राप्ति के लिए

सुनहि विमुक्त बिरत अरु बिषई ।
लहहि भगति गति संपति नई ।।

मनोरथ सिद्ध होने के लिए

भव भेषज रघुनाथ जसु, सुनहि जे नर अरु नारि ।
तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहि त्रिपुरारि ।।

मुकदमा जीतने के लिए

पवन तनय बल पवन समाना ।
बुद्धि विवेक विग्यान निधाना ।।

प्रेमप्राप्ति के लिये

भुवन चारि दस भरा उछाहू ।
जनक सुता रघुवीर बिआहू ।।

शत्रु को मित्र बनाने के लिए

गरल सुधा रिपु करहि मिताई ।
गोपद सिंधु अनल सितलाई ।।

शत्रुनाश के लिए

बयरु न कर काहू सन कोई ।
राम प्रताप बिषमता खोई ।।

शत्रु के सामने जाने के लिए

कर सारंग तूण कटि माथा ।
अरि दल दलन चले रघुनाथा ।।

विवाह के लिए

तब जनक पाइ वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै ।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुँअरि लई हँकारि कै ।।

परीक्षा उत्तीर्ण होने के लिये

जेहि पर कृपा करहि जनु जानी ।
कबिउर अजिर नचावहि बानी ।।
मोरि सुधारिहि सो सब भांती ।
जासु कृपा नहि कृपा अघाती ।।

विद्या प्राप्ति के लिए

गुरु गृह गये पठन रघुराई ।
अलप काल विद्या सब आई ।।

आकर्षण के लिए

जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू ।
सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू ।।

यात्रा सफल होने के लिए

प्रविसि नगर कीजै सब काजा ।
हृदय राखि कोसलपुर राजा ।।

प्रेम बढ़ाने के लिए

सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती ।।

शास्त्रार्थ में विजय पाने के लिए

तेहि अवसर सुनि सिवधनुभंगा ।
आये भृगुकुल कमल पतंगा ।।

दूध देने के लिए

आगे दिया हुआ मंत्र कागज पर लिखकर उसे घी, गुड़, चंदनचूरा का धूप दे । मंत्र 21 बार पठन करे फिर लाल कपड़े में डालकर भैंस के सींग को बांध दे । भैंस या गाय दूध देने लगे तो शनिवार को हनुमान जी को फूल चढ़ावे और नारियल तोड़े ।

"बंदौं पवन कुमार, खल बन पावक ग्यान घन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर ।।"

गायत्री मंत्र जप और रोग निवारण

मधुमेह, मेद, तुतलनाना इन पर गायत्री मंत्र जप का इलाज

ॐ भूः भुव स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ।।

मस्तिष्क विकार, विस्मरण, चक्कर इनके लिए गायत्री मंत्र

ॐ भूः भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य । धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ।।

हृदयविकार ठीक करने के लिये गायत्री मंत्र

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नःप्रचोदयात् ।।

वमा, रक्तदान इन पर गायत्री मंत्र

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् ।
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

रोज सुबह नहाकर जो मंत्र जपना हो उसे 108 बार दुहराएँ । पाश्चात्य शास्त्रज्ञ भी इस मंत्र का अत्यादर करके नतमस्तक होते हैं लेकिन हम भूल रहे हैं ।

भोज्य पदार्थों के प्रभाव, गुणावगुण

1. **अचार**—इसके सेवन से ज़ुकाम, खांसी, नजला, गला बैंठना आदि प्रायः हो जाते हैं। नाक और गले के रोगियों को हलाहल विष है। स्वादिष्ट होने के कारण सप्ताह में 1-2 बार खाया जा सकता है।

बात यह है कि हमारे शरीर को 1. नसंकीन, 2. मीठे, 3. कड़वे 4. कसैले, 5. खारी और 6. खट्टे छहों रसों की जरूरत है ऐसा करने से शरीर स्वास्थ्य और रक्त शुद्ध होता है। खट्टा रस सबसे थोड़ा चाहिए।

2. **अजवायन**—गरम-रूक्ष दीपन पाचन, ज्वर नाशक, पेट कीड़े, शूल अफारा, जिगर, तिल्ली, दस्त, हैज़ा में बहुत गुण कारक है। रात को गिलोय अजवायन 1-1 तोला भिगो कर प्राप्तः रगड़ कर पीने से कई प्रकार का पुराना ज्वर हट जाता है।

3. **अखरोट**—गरम, गरमी और बलगम को बढ़ाता है। अल्प मात्रा में खाने से वात-संस्थान (नर्वस-सिस्टम) मस्तिष्क और शरीर को शक्ति पहुंचाता है, थोड़ा ही खायें।

4. अदरक—गरम-रूक्ष, अफारा, मेदे की दुर्बलता, कफ की अधिकता में लाभदायक है। खाना खाने से पहले नमक के साथ आधा तोला अदरक चबा लेना, पाचन शक्ति के लिए बहुत ही उत्तम है। कब्ज करने वाला भी और खोलने वाला भी है अर्थात मल को गाढ़ा करके नीचे गिराता है। अदरक का 6 माशे रस थोड़े शहद में मिलाकर, चाटने से बलगामी खांसी दूर होती है। गोभी, उड़द की दाल, मटर, शलजम आदि वादी कारक भाजियों में अदरक का छौंक लगाना आवश्यक है।

5. **अनानास**—ठण्डा-तर, स्फूर्तिदायक, घबराहट को दूर करता है, हृदय और मस्तिष्क को शक्ति देता है।

6. **अनार दाना** – मेदे को शक्ति देता व कब्ज दूर करता है। भूख लगाता है। अनार दाने का पानी कै, हिचकी तथा गर्भवती के जी मिचलाने में उत्तम है।

7. **अनार**—मीठा अनार ठण्डा व तर है। परन्तु खट्टा अनार ठण्डा-रूक्ष है। मीठा अनार उत्तम मेदे की दुर्बलता, संग्रहणी, दस्त और कै दूर हो जाते हैं कुछ कब्ज व रक्त शुद्ध करता है प्यास की बेचैनी को दूर करता है।

8. **अफीम**—गरम-रूक्ष,। कब्ज करती है। नशीली व नींद लाती है बात संस्थान व मस्तिष्क को शुन्न है। बहुत मूर्ख माताएं बच्चों को सुलाने के लिए दे देती हैं जो कि भयंकर भूल है।

9. **अरहर की दाल**—गरम-रूक्ष, बलगम के विकार को दूर करती है किंनचित कब्ज करती है। शक्ति दायक है घी या तेल अवश्य डालना चाहिए, धनियाँ और आमला पड़ी हुई सर्वहितकारी है।

10. **अमरूद**—सौम्य-तर है (न ठण्डा न गरम) थोड़ा सा नमक काली मिर्च लगाकर खाना चाहिए। भोजन से पहले ही खाना चाहिये। बीज दुष्पाच्य हैं। यह गरम, प्यास हटाता है हृदय, मस्तिष्क और मेदे की शक्ति देता है।

11. **अरबी (घुंईयां कचालू)**—गरम न ठण्डी, तर व शक्ति-दायक है। कफ बढ़ाती भारी व दुष्पाच्य है कब्ज करती है।

12. **अलूचा**—ठण्डा-तर, कब्ज व गरमी को दूर करता है थोड़ा खायें। खट्टा आलूचा खांसी जुकाम करता है।

13. **आड़ू**—ठण्डा-तर गरमी से भूख कम लगती हो, तो उन्हें अच्छा है। गरमी के ज्वार में स्फूर्ति दायक है। कफ पित्त की आकृति को हितकर है।

14. **आम**—गरम-तर शक्ति व तृप्तिदायक है जिस आम में रेशे सूत न हों वह भारी है। मीठे पतले रस वाला आम गुण कारक है। खट्टा कभी न खायें। आम खाकर दूध पीना शक्तिप्रद व आन्तों को बल देता है। खाली पेट न खायें-संग्रहणी और मन्दाग्नि की परम औषधि आम्र-कल्प अर्थात पतले रस के आम और दूध पर ही रहना है।

15. **आटा** – घर में हाथ की चक्की से पीसा हुआ आटा ही सर्वोत्तम है। छानस सहित खाना स्वास्थ्यप्रद है। आटा खूब गूंधना चाहिए। यह हल्का और बहुत शक्तिदायक होता है। रोटी पकाते समय पलेथन (थोड़ा) लगाना अच्छा नही, क्योंकि यह कच्चा आटा पेट को बिगाड़ता है।

16. **आमला**—ठण्डा-रूक्ष तृप्तिदायक भूख लगाता है। हृदय की बेचैनी धड़कन, जिगर, मेदा, तिल्ली, वीर्य की निर्बलता, हृदय मस्तिष्क और आंखों की दुर्बलता के लिए बहुत अच्छा है। पाव भर पानी में दो तोले सूखे आमले-रात को डाल रखें प्रातः काल उसके निचोड़े हुए पानी से बाल धोयें तो जड़ दृढ़ होती है आंखें धोयें तो सब आंखों के रोग मिटते हैं।

17. **आलू** – ठण्डा-रूक्ष पेट के मल को बांधता है। अधिक खाने से अफारा करता व मूत्र में शक्कर लाता है। उबाल कर, छिलके उतारें तो अधिक स्वास्थ्यकारक है। मेथी के साथ पकाने में बहुत लाभ होता है।

18. **इमली**—ठण्डी-रूक्ष। कब्ज खोलने वाली। खट्टी होने के कारण गले और रक्त को खराब करती है। 2 सेर पानी में एक छटांक भिगोकर रखें, पीछे पानी निथार कर पीया जाये। यह सेवन की उत्तम विधि है। गर्मी के ज्वर, पाण्डु, हैजा, प्लेग में इसका प्रयोग रक्षक सिद्ध होता है। कफ प्रकृति वालों को हानिकारक है।

19. **इलायची बड़ी**—गरम, कब्ज कारक, पसीना लाती व स्फूर्तिदायक है। वादी हटाती व भूख लगाती है। आमाशय को बहुत शक्ति देती है। इस के छिलकों का पानी हैजा और ज्वर में अच्छा है। 4 सेर पानी में 2 तोले छिलके उबालकर, 2 सेर रहने पर ठण्डा कर पिलाते रहें। माथे पर छिलकों का लेप सिर दर्द को दूर करता है।

20. **इलायची छोटी**—सौम्य (न गरम न ठण्डी) सुगन्धित, मस्तिष्क, मेदा, हृदय, फेफड़ों को शक्तिप्रद है। दमा, हिचकी, खांसी दूर करती है। चिलम में छिलके सहित रखकर इसका धुंआ पीने से हिचकी ठीक हो जाती है।

21. **ईसबगोल तथा सतईसबगोल**—ठण्डा-तर। प्यास, गरमी के वेग को दूर करती, शौचलाती है, 3-4 माशे की मात्रा कब्ज करती है। 7 माशे से 1 तोला की मात्रा कब्ज खोलती है। छिलका अधिक लाभप्रद है। गले की खरखराहट, अन्तड़ियों के घावों और पेचिस को दूर करती है।

22. **उड़द की दाल**—गरम-तर। भारी दुष्पाच्य। बलवान पैदा करती है। अच्छे स्वास्थ्य वालों को स्वास्थ्यप्रद है। कब्ज, जिगर, मोटापा, खांसी, दमा के रोगी भूल कर न बरतें। इसे सुपाच्य बनाने के लिए हींग, जीरा, लहसुन, सोंठ या अदरक का छोंक लगायें। घी डाल कर धुली दाल कदापि न खायें।

23. **अंगूर**—गरम-रूक्ष। कब्ज खोलने वाला, शक्तिदायक है। हृदय, मस्तिष्क, मेदा, फेफड़े अन्तड़ियों को शक्ति प्रदान करता है।

24. **अंजीर**—गरम-तर, सुपाच्य,। कब्ज दूर करता, पसीना लाता, स्त्रियों के और मस्तिष्क के सब रोगों को दूर करता है। एक समय में 4-6 दाने ही खायें। 50-100 सूखे अंजीर सिरके में डुबो रखें। तीसरे दिन से 4 दाने प्रतिदिन खायें, तो तिल्ली ठीक हो जायेगी।

25. **कचनार**—ठण्डा-रूक्ष। इसके फूलों का शाक बनता है। मेदे को शक्ति देता, कुछ कब्ज करता व रक्त साफ करता है। शाक में थोड़ा दही व सफेद जीरा डालना बहुत स्वास्थ्यप्रद है।

26. **ककड़ी**—ठण्डी-तर। गरमी मिटाती, मूत्र लाती है। अफारा करती व देर में पचती है। एक घण्टा पहले और 2 घण्टे पीछे पानी न पीना, वरना हैजा हो जायेगा।

27. **कटहल**—कच्चा गरम-रूक्ष। देर में पचता, कुछ कब्ज करता है। थोड़ा खायें।

28. **कद्दू (काशीफल)**—गरम-तर। कब्ज खोलने वाला, कुछ देर में पचता है। अफारा करता है, थोड़ा खायें।

29. **कमल ककड़ी**—देखें-में, भिस

30. **कमलगट्टा (कौलडोडा)**—ठण्डा-तर। भारी और कब्ज कारक। कफ वायु और गरमी के दोषों को दूर करता है जी मिचलाना, धड़कन दूर करता है। पीलियां में लाभप्रद है। कमलगट्टे को सुखाकर मखाने बनते हैं।

31. **करेला**—गर्म-रूक्ष। कफ घटाता है, बादी व पेट के कीड़ों को दूर करता है। बिना खटाई भरे इसे तेल या घी में पकाना चाहिए।

32. **करम कल्ला (करम का साग)**—गरम-रूक्ष। कब्ज खोलता व नींद की कमी में लाभदायक है। शाक में घी या तेल अवश्य डालें। खाने के बाद तोला भर गुड़ खाना अच्छा है।

33. **करौंदा**—सर्द-तर, काबिज। भूख लगता है।

34. **कलौंजी**—प्याज का काला-काला सा बीज है। प्याज के से गुण।

35. **काजू**—गरम-तर, पुष्टिदायक, काबिज और स्वादिष्ट है।

36. **कागजी नीबू**—ठण्डा-तर। भोजन पचाता, भूख लगाता है। अरुचि को दूर करके मेदे व जिगर को शक्ति देता है। जलन, प्यास मिटाता है। जी मिचलाना, गठिया और कै को दूर करता है। चित्त प्रसन्न रखता है। गर्मी के ज्वर में लाभप्रद है। नीबू को दो मिनट आग पर सेककर चीर लें, फिर नमक, काली मिर्च लगाकर मलेरिया के रोगी को ज्वर की गर्मी दूर करके चित्त प्रसन्न करता है। कागजी नीबू हैजा, प्लेग और विषैली वायु के प्रभाव को नष्ट करता है। खाली पेट अच्छे गरम पानी में एक नीबू निचोड़कर थोड़ा नमक मिलाकर पीना, यह सर्वोत्तम विधि है।

37. **काली मिर्च**—साधारण सी गरम-रूक्ष। पाचन शक्ति को बढ़ाती है। खांसी और पेट के दर्द के लिए उत्तम वस्तु है। दमा, अजीर्ण, जुकाम नींद की अधिकता व अफारा में हितकर है। सब साग सब्जियों में डालनी चाहिए।

38. **कुलफे का शाक**—ठण्डा-तर। कुछ खट्टा। तिल्ली, जिगर व रक्त की गरमी को दूर करता है। मूत्र खोलता व कफ बढ़ाता है। रक्त चाहे किसी भी मार्ग से आता हो, कुलफे का पानी आध पाव 5 काली मिर्च मिला कर प्रातः सायं पीयें।

39. **कुलत्थ (कुलथी) की दाल**—ठण्डी-तर। किंचित लम्बे प्रयोग से पथरी को तोड़ फोड़ देती है।

40. **कुलफी (मलाई की बर्फ)**—ठण्डी-तर। कब्ज करती, मूत्र खोलती है और अफारा करती है। दांत, गला व आँतों को खराब करती है।

41. **केला**—ठण्डा-तर। किंचित कफ कारक। शक्ति दायक जिनकी पाचन शक्ति क्षीण हो, कम सेवन करें। काबिज है। ब्रह्मचर्य का रक्षक है। स्त्रियों के श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर रोगों में उत्तम है।

42. **केशर**—गरम-रूक्ष। वात संस्थान, हृदय, मस्तिष्क और मेदे को शक्ति देता है। चित्त को प्रसन्न करता व कुछ कब्ज करता है। चेचक के रोगी को 4-5 तुरियाँ दे देने से सारा विष बाहर निकल आता है।

43. **खबाड़ा**—काबिज, गुलर के से गुण।

44. **खरबूजा**—गरम-तर। स्फूर्तिदायक। तरावट देता है। कब्ज, मूत्र और पसीने की रुकावट में लाभदायक है। खाली या बहुत भारी पेट नहीं खाना चाहिए।

45. **खजूर**—गरम-रूक्ष। आमाशय को बल देती, कुछ कब्ज करती है। खाकर छाछ पी ली जाये, तो तुरंत पच जाती है।

46. **खिरनी**—खजूर के से गुण। तुरन्त अफारा करती है। थोड़ी खायें।
ब. खट्टा (मोटा नीबू)—गरम-रूक्ष। पानी या शरबत में निचोड़ने पर ठण्डा और रूक्ष हो जाता है। बादी, कब्ज, पेट के कीड़े, पेट दर्द, कै, मुख का स्वाद ठीक न रहना—में यह अति उत्तम है। खांसी, जुकाम मे हानिकारक है।

47. **खांड**—गरम-तर। कफ को तर करती व शरीर में शक्ति उत्पन्न करती है। कोयले पर डाली हुई खांड का धुआं नाक के रास्ते अन्दर खींचना रुके हुए जुकाम में बहुत लाभप्रद है। खांड का शर्बत ठण्डा होता है। निर्बलता में जब भी घुटन लगे—2 तोले भर खांड, शहद या शक्कर ले लें।

48. **खीरा**—ठण्डा-तर। कब्ज को दूर करता है। अधिक न खायें। एक घन्टे पहले और दो घन्टा पीछे तक पानी न पीयें।

49. **खुम्ब**—ठण्डी-तर। काबिज। अफारा और कफ कारक है। रक्त बिगाड़ती तथा छतरी की शक्ल वाली खुम्ब जहर होती है।

50. **खुरमानी**—थोड़ी गरम। कब्ज खोलने वाली व पेट के कीड़ों को मारती है। प्यास, बवासीर, ज्वार और आंतों में सुद्दे हो जाने में इसका सेवन बहुत अच्छा है। 8-10 गिरी ही खायें।

51. **खोआ (मावा)**—देखें रबड़ी का वर्णन।

52. **गन्ना**—ठण्डा-तर। कफ पैदा करता है। भोजन को पचाता है। छाती के रुके हुए कफ को निकालता व मूत्र खोलता है। सरदी, बादी व बलगम बढ़े हुए हों, तो सेवन हानिकारक है।

53. **गरम मसाला**—इसके डालने से शाक भाजी सुपाच्य व सुगन्धित हो जाते हैं। परन्तु इसके कारण भोजन अधिक न किया जाये। निम्नलिखित गरम मसाला उत्तम है—



काली मिर्च—1 छटांक, सफेद जीरा—1 छटांक
काला जीरा—1 छटांक, बड़ी इलायची दाना—आधा छटांक
दार चीनी—एक तोला, लौंग—आधा तोला
हींग भुनी हुई—3 माशे

अलग-2 कूट पीस कर एक शीशी में बन्द रखें, ताकि गुण और सुगन्ध घट न जाये। जिन्हें धनिया की गन्ध प्रिय हो वे एक छटांक पिसा हुआ सूखा धनियाँ मिला लें। यह मसाला सबके अनुकूल है।

54. **गाजर**—ठण्डी-तर। कब्ज खोलती व स्वास्थ्य एवं ब्रह्मचर्य की रक्षक है। बादी, बलगमी रोगों, धड़कनों में हितकर है।

55. **गुच्छी**—देखें खुम्ब का वर्णन

56. **गुड़**—गरम-तर। पाचन शक्ति को ठीक करता है। मूत्र लाता व शक्तिदायक है। अदरक के साथ बलगम को दूर करता है; हरड़ के चूर्ण के साथ गरमी को दूर करता है तथा सौंठ के साथ हर प्रकार की बादी को दूर करता है। गुड़ का अधिक सेवन रक्त और दांतों को बिगाड़ देता है। खांड व मांस अधिक प्रयोग एवं अधिक मानसिक परिश्रम मधुमेह का विशेष कारण है।

57. **गुलाब का गुलकन्द व अर्क**—गर्म-तर। कब्ज खोलता, मेदे को शक्ति देता, बादी, फेफड़ों के रोगों में हितकर है। मस्तिष्क, आमाशय को शक्ति देता है।

58. **गूलर**—सौम्य है। बलगम को दूर करता है। नजला, सूखी खाँसी, रक्त दुष्टी व दमा में लाभदायक है।

59. **गेहूं**—तनिक गरम-तर। सब अनाजों में अच्छा है। शक्तिदायक है बासी कच्ची व अधिक जली हुई रोटी हानिकारक है।

60. **गोभी बन्द**—ठन्डी रूक्ष सुपाच्य व स्वास्थ्यप्रद है।

61. **गोभी फूल**—ठण्डी रुक्ष मूत्रल और भारी है बादी अफारा करती है। अदरक डाल कर खायें।

62. **गाँठ गोभी**—गरम रूक्ष—पेट को अशुद्ध करती है।

63. **ग्रेपफ्रूट**—स्वाद और गुणों में 'चकौतरा' से अच्छा है।

64. **घी**.—गरम-तर, स्वास्थ्य कारक है। हृदय, मस्तिष्क, को शक्ति देता है। दुर्बल पाचन शक्ति वाले न खाये। ज्वर में न खायें। विष खाने पर, सांप काटने पर, प्लेग हो गया हो उसे आध पाव शुद्ध घी दो-चार बार दूध में या वैसे ही पिलाना, लाभप्रद है। कफयुक्त तर खांसी व जुकाम में न खायें बनस्पति घी अति हानिकारक है।

65. **घिया कद्दू**—ठण्डा तर कुछ कब्ज खोलने वाला, मूत्र लाने वाला है। सुपाच्य है। पित्त के ज्वर में, गरमी व रक्त के रोगों में मन्दाग्नि में बहुत लाभदायक है। घिया को काटकर हाथ पैर के तलुओं पर मलने से गरमी का वेग बहुत कम हो जाता है।

66. **चटनी**—नित्य सेवन करने वालों का दुर्भाग्य है। पोदीना व धनिये की चटनी सप्ताह में एक-दो बार खानी चाहिए।

67. **चकोतरा**—ठण्डा-तर भूख लगता है। पित्त प्रकृति वालों को बहुत अच्छा है। स्फूर्तिदायक है।

68. **चना**—गरम-रूक्ष शक्तिप्रद व पुष्टिकारक है। पेट व कमर को शक्ति देता है। भुने हुए चनों में गुड़ मिलाना लाभप्रद है। नजला, मधुमेह और वीर्य के रोगों में चने का उचित मात्रा में सेवन करना चाहिए। हरा चना सौम्य है। काला जीरा या अदरक डालना चाहिए।

69. **चन्दन**—ठण्डा व सौम्य, श्वेत चन्दन उत्तम है। प्यास, हृदय, मस्तिष्क, आमाशय और यकृत की गरमी को दूर करता है। कफ, चेतनानाश, गरमी और रक्त के सब दोषों को दूर करता है।

70. **चपनी**—घिया कद्दू के से गुण। कुछ अफारा करती है।

71. **चरचीण्डे पण्डोल**—तोरी के समान गुण।

72. **चाय**—गरम-रूक्ष। थकान और सरदी को तथा इनसे पैदा हुई पीड़ा को दूर करती है। पसीना लाती व मूत्र लगाती एवं नींद को कम करती है। मलाई दूध पिलाने से चाय का यह दोष कम हो जाता है। अत्याधिक पी जाये तो रक्त व पाचन शक्ति को बिगाड़ देती है।

73. **चावल**—ठण्डे-रूक्ष। सब प्रकार के चावल सुपाच्य होते हैं। किंचित कब्ज करते हैं। पुराने चावल प्रयोग में लाने चाहिए। दस्त, पेचिश में दही चावल खाना लाभदायक है। साथ ही ज्वर हो तो दही खाना मना है। चावल शेष अनाजों से कम शक्तिप्रद है।

74. **चिब्भड़**—कच्चा ठण्डा और रूक्ष। कब्ज और अफारा करता है। पका हुआ गरम तर व पाचक होता है। पथरी को तोड़ता, गुर्दे और मूत्राशय को बल देता है। पथरी और गुर्दे के रोगों में चिब्भड़ और कुलथ की दाल सर्वोत्तम है।

75. **चिलगोजे**—(त्योजे, नेत्रे) गरम तर। देर में पचता है। भोजन के बाद इनका खाना लाभदायक है।

76. **चिरोंजी**—साधारण गर्म। वात कफ नाशक। शक्तिदायक है।

77. **चीकू**—सौम्य। कुछ कुशा है।

78. **चुकन्दर**—गरम तर। कफ को सुखाता, मस्तिष्क को तर रखता है जिगर को बल देता, रक्त तथा शक्ति को बढ़ाता है स्त्रियों के दूध कों बढ़ाता एवं जोड़ों के दर्द कों दूर करता है।

79. **चुंगा**—गरम रूक्ष। कड़वी। वात रोग नाशक रक्त शोधक।

80. **छाछ पक्की लस्सी मठा**—ठण्डी तर। शीघ्र पाचक थोड़ा कब्ज करती है और बलवर्धक है। कफ प्रकृति वाले छाछ में सोंठ काली मिर्च पिप्पली तीनों बराबर-बराबर मिलाकर एक माशा डालकर पीएं। डात प्रकृति वाले एक माशा सोंठ तथा नमक डाल कर पिएं। पित्त प्रकृति वाले खांड डाल सकते हैं। छाछ का टपका हुआ पानी बड़ा पाचक होता है वात बिगाड़ में छाछ अच्छी नहीं। मंठा अजीर्ण, यकृत बवासीर, दस्त, संग्रहणी, पेचिश में अमृत के समान है। आम ज्वर (नये बुखार) दर्द, बादी में कदापि न पिएं। जीर्ण ज्वर पुराने टाइफाईड बुखार, मीती झरा में लाभकारी है।

81. **छुहारा**—गरम। फेफड़े और छाती को वल देता है। ब्रह्मचय का खण्डन करता है। सर्दी, बादी व कफ रोगों में लाभकारी है। तीन-चार दाने से अधिक न खाएँ।

82. **जामुन**—ठण्डी रूक्ष। रक्त दोष को दूर करता है। कुछ कब्ज करता है। तिल्ली, जिगर, आमाशय (मेदा) आंतों (पक्रियस) को बल देता है मूत्र में चीनी आना व दांतों को दृढ़ करता है। इसकी गिरी वीय को बल देती, प्रमेह को ठीक करती है। जामुन के तने की नरम छाल सुखाकर पीस कर 3-3 माशे छाछ के साथ देना संग्रहणी में अच्छा है।

83. **जिमिकन्द**—गरम तर - भूख बढ़ाता, मेदा और जिगर को शक्ति देता है। वात कफ की बवासीर, व उदर रोगों को कुछ मास निरन्तर सेवन से हटा देता है। जितनी प्रशंसा की जाए थोड़ी है।

84. **जीरा सफेद**—थोड़ा गरम। कफ को कम करता है। बादी दूर करता, बच्चे की माता का दूध बढ़ता व बलवर्धक है।

85. **काला जीरा**—गरम। कफ, बादी दूर करता, भोजन को पचाता है।

86. **जैतून का तेल**—गरम तर। कब्ज कुशा और शक्ति वर्धक है।

87. **जौ**—ठण्डा रूक्ष। मेदे को बल देता, कफ, बादी को दूर करता है, मूत्रल है। खांसी, दमा, गरमी की सिर पीड़ा, मोटापन को लाभदायक है। सत्तू गरमी में ठण्डे व बल देते हैं।

88. **ज्वार**—सौम्य। देर में पचती, अफारा करती है। घी और मीठे के साथ खाने में दल देती है और अफारा भी नहीं करती है।

89. **टमाटर**—सौम्य। भूख लगाता, पाचक है। बादी के रोगों में लाभ दायक व कब्ज कुशा है। प्रातकाल निहार मुँह टमाटर में नमक और काली मिर्च मिलाकर खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

90. **टेण्डस** (टिण्डे)—ठण्डे-तर। वायु पैदा करता है। कफ के रोगों में न खायें। हाथ पैर की जलन' मूत्र की कमी, गरमी के ज्वार की प्यास को दूर करता है।



91. **टैंट** (डेहले) -- गरम, काबिज, दीपन, पाचन।

92. **ढींगरी**—खुम्ब के गुण।

93. **तम्बाकू**—गरम अत्याधिक रूक्ष। अत्यन्त हानिकारक। दिल दिमाग को हानि देता है। तम्बाकू की डंडी आंखों में फेरने से आंख की खुजली दूर होती है।

94. **तरबूज**—ठण्डा। रक्त, गरमी की उत्तेजना को रोकता है। मूत्र लाता कफ पैदा करता है। न भोजन के पहले और न ही भोजन के 2-3 घंटे पीछे तक खाना चाहिए।

95. **तिल**—गरम-तर। देर में पचते हैं। मूत्र रोग, वातार्श व बहु मूत्र में लाभप्रद हैं।

96. **तोरी हरी (मूंगी तोरी)**—कुछ सर्द तर। सुपाच्य है। पाचन शक्ति को बढ़ाती, रक्त शुद्ध करती है।

97. **तोरी हरी (घिया तोरी)**—ठण्डी-तर। गरमी को तर करती व स्वास्थ्य प्रद है।

98. **दही**—गरम-तर, चिकना और भारी है। हृदय, मस्तिष्क और अन्तड़ियों को बल देता है। खट्टा रक्त को उत्तेजित करवा है। छायी में जलन, खांसी, जुकाम को दूर करता है। पित्त के रोगों में खांड डालकर, कफ रोग में सोंठ और काली मिर्च डालकर, वात रोग में सौंठ, नमक, जीरा मिला खायें।

(शेष अगले अंक में)

भोज्य पदार्थों के प्रभाव, गुणावगुण

99. **दालें**—हमारे भोजन का बहुमूल्य अंश हैं। जिनकी पाचन शक्ति कम हो, उन्हें कम प्रयोग करनी चाहिए।

100. **दूध**—तर-गरम। गर्मी-सर्दी में अनुकूल। गाय का दूध सबसे अधिक गुणकारी है। भैंस का दूध मस्तिष्क को बोदा करता है। स्वस्थ पशु का दूध अमृत समान है अधिक उबाला हुआ भारी और दुष्पाच्य है। ताजा दुहा हुआ गरमागरम पीना चाहिए। 5-10 मिनट हो जायें तो थोड़ा गरम करें। दूध और भोजन के मध्य 2-3 घण्टे का अन्तर होना चाहिए। अन्यथा बिल्कुल साथ ले लें।

101. **धनिया**—ठण्डा रूक्ष। हृदय और मस्तिष्क को बल देता है काबिज और दीपन है। ब्रह्मचर्य में सहायक है। धनिया चबाने से प्याज की दुर्गन्ध नहीं आती है।

102. **नमक (लवण)**—गर्म-रूक्ष कब्ज कुशा, कफ नाशक व पाचक। पेट दर्द, अफारा, खट्टी डकार (अम्ल पित्त), मेदा, यकृत, प्लीहा को बल देता है। थोड़ी गरमी करता है।

103. **नाख**—नोशपाती ठण्डी क़ब्ज कुशा। मन को प्रसन्न करती है। हृदय, मस्तिष्क, आमाशय यकृत को बल देती है। अफारा करती व देर में पचती है। छिलके सहित खायें। बगू गोशे में भी यही गुण हैं।

104. **नारियल**—गोला सूखा गरम, कच्चा न गरम न ठण्डा। मूत्राशय, वृक्क (गुर्दे) को शक्ति देता है। कच्चा विशेष लाभदायक है। सूखा कुछ कब्ज करता है। भारी है। खांसी, दमा में निषिद्ध है।

105. **पनीर**—ठण्डा तर दूध को इमली, टाटरी, नीबू, नींबू-सत आदि डालकर फाड़ा जाता है और फिर पानी टपका दिया जाता है यह बल व शुद्ध रक्त पैदा करता है कच्चा खाना सर्वोत्तम है।

106. **परवल**—गरम तर और हलका है। आमाशय को बल देता है, सुपाच्य है सब प्रकार के रोगियों की सब्जी है।

107. **पान**—आयुर्वेद में इसकी प्रशंसा है। स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। भोजन के बाद इसका प्रयोग करना चाहिए।

108. **पानी**—ठण्डा तर। भोजन से पूर्व जल पीने से पाचन शक्ति घट जाती है। भोजन के मध्य 2-4 घूंट पीने से पच जाता हैं। परन्तु अधिक पीने से पाचन शक्ति और बल घट जाता है। भोजन के एक दो घण्टे पीछे ही पीना चाहिए। इस भोजन से अधिक रक्त और शक्ति उत्पन्न होती है।

109. **पालक**—ठण्डी तर, सुपाच्य और पाचक है। कब्ज वालों को हितकर है। किंचित कफ करती है। पथरी, पीलिया, उन्माद, हिस्टीरिया, प्यास, जलन और पित्त ज्वर में लाभदायक है।

110. **पपीता**—गरम तर। कब्ज कुशा, सुपाच्य। एक नम्बर फल है।

111. **पिस्ता**—गरम-तर। किंचित कब्ज करता है, शरीर को पुष्ट करता है।

112. **पीलू**—सौम्य रक्त शोधक। वायु गोला, धातु, कफ, सूजन तथा नेत्र रोगों में हितकर है। चावलों की भाँति एक साथ मुंह में डालने चाहिए।

113. **पेठा**—ठण्डा तर, बलवर्धक और रसायन है। डलियों के चिन्ह इस पर नहीं होते, ऊपर से साफ होता हैं।

114. **पोदीना**—गरम रूक्ष। पाचक और भूख लगाता है।

115. **प्याज**—गरम है। पेट की वायु को बाहर निकालती है। कै, जी मिचलाना, और ठण्ड के रोंगों में लाभ करता है। तामसिक भोजन है, ब्रह्मचर्य का खण्डन करता है। जलवायु बदल जाने में प्याज का प्रभाव लाभप्रद है। गिलटी पर बांधने से उसे बिठा देती है और फोड़े पर बांधने से उसके मैल को निकाल देती है। हैजा के दिनों में प्रयोग हितकर है। सफेद प्याज घर में रखने से साँप नहीं आता।

116. **फ्रांचबीन**—सेम की फली के समान गुण।

117. **फालसा**—ठण्डा रुक्ष। हृदय, आमाशय और यकृत को बल देता है। कब्ज करता है। जलन, बेचैनी, हृदय की धड़कन में फालसा का शर्बत हितकर है। अधपका खट्टा हानिकारक है।

118. **फूट**—इसके गुण दोष ककड़ी तर के समान हैं।

119. **बथुआ (बाथू का शाक)**—सौम्य है। आयुर्वेद में सब शाकों में उत्तम माना गया है। आमाशय को बल देता। कब्ज कुशा है। मूत्र रोग नहीं होने देता, मन्दाग्नि के कारण बढ़े हुए यकृत प्लीहा में लाभप्रद है।

120. **बर्फ**—ठण्डी-रूक्ष प्यास बढ़ती है। बस एक अवस्था में ही लाभ करती हैं जबकि गरमी के कारण भूख न लगती हो। भोजन के एक घण्टा पूर्व घूंट-घूंट पीने से भूख खुल जाती हैं। अन्यथा सब दशाओं में हानिकारक है।

121. **बही**—ठण्डी तर। कब्ज करने वाली मूत्रल है। भोजन के बाद प्रयोग करें। हृदय, मस्तिष्क की गर्मी और मुख से रक्त आता हो तो हितकर है।

122. **बांसकल्ला व बाजरा**—बांसकल्ला—शीतल, पित्त कफ नाशक। बाजरा—गरम रुक्ष। कुछ कब्ज करता है। मूत्रल है। पच कर रक्त बहुत पैदा करता है। रोटी खाने के बाद 2 तोले गुड़ खाने से शीघ्र पच जाता हैं।

123. **बादाम**—गरम-तर। भिगोकर छिलका उतार कर बादाम ठण्डा-तर हो जाता है। किंचित कब्ज करता है। चर्बी और रक्त पैदा करता है। मस्तिष्क और नेत्रों का अनुपम पदार्थ है। रक्त, खाँसी और वात-संस्थान को हितकर है।

124. **बिल्व, बिल्वगिरी**—गरम-तर। कब्ज करने वाली। मन्दाग्नि के कारण नेरम शौच हो तो प्रयोग अमृत समान हैं। पक्का बिल्व स्वास्थ्य में विकार पैदा करता हैं।

125. **बेसन**—गरम रुक्ष। बेसन के पकोड़ों से भूख मारी जाती है।

126. **बेर**—मीठा बेर ठण्डा रूक्ष। रक्त शोधक आँखों की ज्योति बढ़ाता है। सूखा बेर सुपाच्य, बलवर्धक पाचक है। कड़वी औषधि खाने से पूर्व बेर के 2-4 पत्ते चाबने से दवा का कड़वापन नहीं रहता है।

127. **बेंगन (बताऊँ, भाटा)**—गरम-रूक्ष। अशुद्ध रक्त पैदा करता है। ब्रह्मचर्य का खण्डन करता है। विशेष दोष इसके छिलके में है।

128. **भांग**—ठण्डी-रूक्ष। मादक। कब्ज करती है। हानिकारक, दृष्टि और बुद्धि नाशक है।

129. **भिण्डी तोरी (सफेद तोरी)**—ठण्डी-तर। भारी है पाचन क्रिया के बिगाड़ में इसका प्रयोग ठीक नहीं है।

130. **भे, भिस्सा (कमल की जड़)**—ठण्डी-रूक्ष। हृदय और मस्तिष्क को बल देती है। पित्त रोगों में हितकर है।

131. **मक्की**—ठण्डी रूक्ष, बलवर्धक, किंचित कब्ज करती है।

132. **मकोय का शाक**—(काक माची) गरम है। अन्दर बाहर की सब प्रकार की सूजन को दूर करती है। कब्ज कुशा है।

133. **मटर**—गरम-रुक्ष कुछ भारी है। इसमें नाइट्रोजन (नत्रजन) तथा प्रोटीन बहुत होने से रक्त बढ़ाता है।

134. **मलाई क्रीम**—तर किंचित गरम। बल वर्धक व रूक्ष, खाँसी में हितकर है।

135. **मसूर**—रूक्ष कुछ काबिज, कफ प्रकृति वालों के लिए हितकर। पुराने दस्त, पेचिस में हितकर है। आयुर्वेद में सब दालों में उत्तम माना है।

136. **महुआ**—ठण्डा-तर सब प्रकृतियों के अनुकूल जीर्ण ज्वर में काढ़ा हितकर है।

137. **माखन**—ठण्डा-तर मन्दाग्नि में हानिकारक। भोजन का भोजन व औषधि की औषधि है।

138. **माल्टा**—ठण्डा तर। बलदायक, पाचक, खांसी जुकाम में न खायें।

139. **मीठा नीम्बू**—ठण्डा-तर। गरमी को हटाता है, गले के रोगों को दूर करता व हृद्य है।

140. **मुसम्मी**—शीतल-तर। दिमागी व शारीरिक थकावट में लाभप्रद है।

141. **मूंग की दाल**—सरदी-गरमी में अनुकूल। रूक्ष है। वात प्रकृति वालों को बादी करती है। छिलके सहित ही दालों का प्रयोग करें।

142. **मूंगफली**—गरम, भारी। खाली पेट न खायें।

143. **मूली**—ठण्डी-तर। कच्ची कफ पैदा करती व पका हुआ शाक सब दोषों को दूर करता है। कब्ज कुशा है। इसका पत्ता और गुड़ इसे शीघ्र पचा देता है।

144. **मेथी**—गरम-रूक्ष। वात कफ नाशक, किंचित कब्ज कुशा है। एक उत्तम शाक है।

145. **मोठ**—गरम रुक्ष। शरीर में बढ़े हुए जल को सुखाती, कफ नाशक, सुपाच्य है। किंचित कब्ज करती है।

146. **रतालु**—ठण्डा-तर। भारी काबिज तथा वायु पैदा करने वाला।

147. **रबड़ी**—गरम-तर, भारी है। खोआ (मावा) भी इसके समान पाचन शक्ति को बिगाड़ता एवं अस्वास्थ्यकर है।

148. **लसुन (लहसुन)**—गरम-रूक्ष। कफ रोगों, अधरंग लकवा, दमा, खाँसी, सिरपीड़ा, जोड़ों के दर्द और अन्तड़ियों की दुर्बलता में अत्यन्त हितकर है। थोड़ा कब्ज कुशा है। जीर्ण ज्वर, कुष्ठ आदि को दूर करता व खून साफ करता है, नेत्रों को हितकर है। रसायन है। (बल, रक्त, माँस, मेदा और वीर्य को बढ़ाने तथा वृद्धावस्था को दूर करने वाली औषधि को रसायन कहते हैं)। प्रयोग मात्रा 1 माशा तक। गरम प्रकृति वालों को प्रयोग निषिद्ध है।

149. **लस्सी कच्ची**—पित्त दोषों में हितकर।

150. **लसूड़ा**—ठण्डा-तर। कफ, पित्त तथा रक्त दोषों को दूर करता है कब्ज खोलता है। अधिक प्रयोग पाचन शक्ति को बिगाड़ता है।

151. **लाल मिर्च**—अति गरम-रूक्ष। रक्त को उत्तेजित करती तथा बवासीर, कब्ज व जलनयुक्त खुजली पैदा करती है। हरी मिर्च भी सर्वथा लाभदायक नहीं, लाल से कुछ ठीक है।

152. **लीची**—ठण्डी तर। हृदय और मस्तिष्क को बल देती है। कुछ भारी है। थोड़ी खायें।

153. **लुकाट**—ठण्डा-तर। नकसीर (नाक से रक्त जाना), रक्त की कै, बवासीर व अन्य रक्त दोषों में हितकर है। वातपित्त रोगों में प्रयोग करें।

154. **लोबिया**—गरम-तर। मूत्रल है, कब्ज खोलता है। अधिक प्रयोग स्वप्न बहुत लाता है।

155. **लौंग (लवंग)**—गरम-रूक्ष। भूख लगाता, भोजन को पचाता, मस्तिष्क को बल देता है।

156. **शक्कर**—थोड़ी गरम तर और पाचक है। अधिक प्रयोग फोड़े, दन्त कृमि, मधुमेह बहुमूत्र रोग पैदा करता है। सुलगते कोयले पर शक्कर डालकर नाक द्वारा धुआँ भीतर खींचा जाए तो रुके जुकाम को लाभकारी है।

157. **शक्करकन्दी**—गरम-तर। कब्ज करने वाली। खाने के बाद सौंफ चबाना शीघ्र पचा देता है।

158. **सलगम (गोंगलू ठिप्पर)**—न सर्द, गर्म, तर-रूक्ष नाशक, रक्त शोधक है। किंचित अफारा करती व कफ को बढ़ाती है। शलगम उबाल कर बिवाइयों पर रगड़ना और उसी पानी से धोना हितकर है। रात को ऐसा करके ऊपर कपड़ा लपेट दें, शीघ्र लाभ होगा या ग्लेसरीन लगायें।

159. शरबत—पानी में मीठा डालने से कच्चा शरबत बनता है। पित्त नाशार्थ पानी में मिलाकर, वात नाशार्थ दूध में और कफ नाशार्थ इसमें कुछ न मिलायें ग्रीष्म ऋतु में ही प्रयोग करें।

160. **शराब (मद्य)**—गरम-रूक्ष, कड़वी। बुद्धि नाशक व महान हानि कारक है।

161. **शरीफा (सीताफल)**—गरम-तर। हृदय मस्तिष्क को बल देता व किंचित दुष्पाच्य है।

162. **शहतूत (तूत)**—कब्ज खोलता व सब प्रकृति वालों को अनुकूल।

163. **शहद (मधु)**—गरम रूक्ष, कफ नाशक। पाचन शक्ति वढ़ाता व कब्ज खोलता है। रक्त शोधक है। गर्मी में पित्त प्रकृति वालों को ठण्डा पानी मिला कर दें।

164. **शिमला की मिर्च**—वात, कफ नाशक। स्वस्थ स्त्री-पुरुष ही सप्ताह में 1-2 बार प्रयोग करें।

165. **सन्तरा (नारंगी)**—ठण्डा-तर। प्रसन्नतादायक, पाचन शक्ति को बढ़ाता है। मीठा सन्तरा ही प्रयोग करें।

166. **सरदा**—गरम न सर्द। मस्तिष्क, वृक्क, हृदय व मूत्राशय को साफ करता है।

167. **सरसों का शाक**—गरम-रूक्ष विरेचक और मूत्रल है। उदर क्रमियों को मारता व भूख लगाता है।

168. **सरसों का तेल**—ठण्डा तर, शक्तिदायक। घी न मिलने पर प्रयोग करें। कच्चे तेल की मालिश सप्ताह में दो बार करें।

169. **सलाद**—गरम न सर्द। सुपाच्य है। आन्तों को बल देता व कच्चा ही खाया जाता है।

170. **साबूदाना**—गरम-तर किंचित कब्ज कुशा। दूध पीछे से मिलायें। नहीं तो भारी है।

171. **सिरका**—ठण्डा-रूक्ष। कब्ज करता व पेट के कीड़ों को मारता है, पाचक है। हैजे की ऋतु में सिरका व प्याज खाना उत्तम है।

172. **सिंघाड़ा**—ताजा ठण्डा और तर है। सूखा ठण्डा रुक्ष है। गरमी के जुलाब, दही के साथ गर्मी के दस्तों में हितकर है। अधिक प्रयोग पाचन क्रिया बिगाड़ता है।

173. **सुपारी**—ठण्डी-रूक्ष। वीर्य स्राव तथा प्रदर को ठीक करती है।

174. **सुहांजना (फूल, फली)**—गरम-रूक्ष, कफ, वात नाशक। रक्त शोधक, मूत्रल है। वानज, कटिमूल और जोड़ों के दर्द में हितकर है।

175. **सेम की फली**—ठण्डी, रूक्ष। अफारा करती व अधिक खाने पर देर में पचाती है। पित्त कफ, नाशक।

176. सेब—किंचित गरम है। हृदय, मस्तिष्क और आमाशय को बल देता है। कुछ भारी और देर में पचता है। वृक्कों को शुद्ध करता है। मानसिक रोगों में स्वास्थ्यकर है। खाली पेट कुछ कब्ज खोलता व खाना खाने के बाद कुछ कब्ज करता है।

177. **सोये का शाक**—गरम-रूक्ष। पित्त प्रकृति के विरुद्ध। वात नाशक, वृक्कों तथा मूत्राशय की पथरी में सुखकर है। यकृत, अजीर्ण, कफ दोनों में हितकर है।

178. **सोयाबीन**—असंख्य गुण युक्त। मांस, चर्म, चर्बी, हड्डी मस्तिष्क तथा रोगों से बचाये रखने में रक्षक है।

179. **सोडावाटर (लेमोनेट)**—अजीर्ण की अवस्था में प्रयोग कर सकते हैं अन्यथा धन और स्वास्थ्य दोनों नष्ट होते हैं।

180. **सौंठ**—कुछ गरम-रूक्ष। मेदाजिगर और पाचन शक्ति को बल देती है। वात, कफ नाशक तथा कब्ज करती है। खांसी, जुकाम, मरोड़, दस्त तथा आँतों की दुर्बलता व उदर शूल को नष्ट करती है।

181. **सौंफ**—साधारणतया गरम रूक्ष। जिगर, तिल्ली के रुकाव को खोलता है। उदर शूल, अफारा तथा वात नाशक है। पेट के वायु को अनुलोम करके बाहर निकालता है।

182. **हरडपीली** (बड़ी हरड, हरीड, हर्र)—न गरम न सर्द। गरमी, बादी, बलगम और शरीर के हर प्रकार के सर्दी गर्मी के दोषों को दूर करती है। रसायन है हृदय, मस्तिष्क, जिगर तिल्ली के रोगों को दूर करके नेत्रों की ज्योति को बढ़ाती है। नई, चिकनी, भारी, पीली और पानी में डालने से डूब जाये वह हरड़ उत्तम होती है। हरड़ का चूर्ण उदर के मल को शुद्ध करता व कब्ज खोलता है। थोड़ा सा नमक मिलाने से कफ को, खांड से गरमी (पित्त) को, घी के साथ वात को और गुड़ के साथ सब दोषों को दूर करती करती है।

183. **हल्दी**—गरम-रूक्ष, रक्त शोधक, कफ नाशक। पीलिया, सूजन, खुजली, उदर-क्रमि, मधुमेह में बहुत हितकर है। चोट पर हल्दी का लेप लाभप्रद है।

184. **हालों**—गरम, पाचक, भूख लगाता है। अजीर्ण, उदर शूल, अफारा और वात के सब दोषों को दूर करता है। 3 माशे बीज भी यही गुण रखते हैं।

185. **हींग**—गरम-रूक्ष। उड़द की दाल कचालू आदि में अवश्य डालनी चाहिए, ताकि पेट में वायु पैदा न हो। घी में थोड़ी सी भूनकर रखें। वात, कफ, अफारा, पेट के कीड़े, भूख की कमी, अधांग, सूजन, उदरशूल में हित कर है। आधी रत्ती मुनक्का में लें। वात पित्त की प्रकृति में मक्खन से खायें। वात कफ प्रकृति वाले गरम मसाले में खाया करें तो अच्छा है। कब्ज करने वाली है।



योग द्वारा सन्तुलित विकास

पहले लोग यह सोचते थे कि यौगिक क्रियाएँ तपस्वियों और संन्यासियों तथा साधकों के लिए ही हैं। किन्तु आज सम्पूर्ण विश्व में योग की बढ़त हुई लोकप्रियता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि यौगिक क्रियाएँ अपने नित्य-प्रति जीवन में अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है।

योग हमारे दैनिक-जीवन में मात्र सौन्दर्य वृद्धि एवं चिकित्सापद्धति न होकर मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास का सर्वोत्तम मार्ग है। गीता में भी कहा गया है—"योगः कर्मसु कौशलम्"।

योग के द्वारा कर्मों में कुशलता आती है।

हमारे शास्त्रों में योग के आठ चरणों का वर्णन है—(1) यम, (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान और (8) समाधि।

आज के इस व्यस्ततापूर्ण युग में हम शारीरिक स्वस्थता व मानसिक शान्ति के लिए प्रथम चार चरणों का प्रयोग और अभ्यास अत्यन्त आसानी से कर सकते हैं।

योग के प्रथम चरण में यम अर्थात् आचरण द्वारा हम असद् को सद् में बदल सकते हैं। कलह, अशान्ति, उग्रता को भी सहृदयता में बदला जा सकता है।

नियम पालन से जीवन में अनुशासन आता है और उससे व्यक्तिगत शान्ति प्राप्ति होती है। आज का व्यक्ति व्यस्तता के कारण प्रायः अपना खाना-पीना, रहन-सहन अप्राकृतिक बनाता जा रहा है—इससे शरीर में अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। इन व्याधियों से बचने के लिए शरीर को स्वस्थ और साफ रखना आवश्यक है। जिस प्रकार घर को साफ रखने के लिए नियमित रूप से हम घर की सफाई करते हैं, उसी प्रकार शरीर व मन को नीरोग रखने के लिए नियमित रूप से मल-विसर्जन होना आवश्यक है। इस प्रकार हम अपने शरीर को शोधन-षट्कर्म तथा योगासनों के अभ्यास द्वारा ठीक रख सकते हैं। इसका वर्णन घेरण्ड संहिता में घरिण्ड ऋषि ने बहुत अच्छी तरह किया है। शोधन-षट्कर्म से शरीर शुद्ध होता है। आसनों से शरीर में दृढ़ता आती है मुद्राओं से स्थिरता बढ़ती है। प्रत्याहार से धैर्य का विकास होता है। प्राणायाम से हल्कापन अनुभव होता है। ध्यान द्वारा आत्मिक ज्ञान प्राप्त होता है। लगातार ध्यान का अभ्यास रहे तो योगी समाधि अवस्था को प्राप्त कर मोक्ष लाभ कर सकता है। षट्कर्म द्वारा श्वास-प्रश्वास की तालिका से लेकर आमाशय, पाकस्थली सहित सम्पूर्ण अन्तड़ियों की गन्दगी निर्मूल हो जाती है।

व्यायाम की दृष्टि से योगासनों का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ एवं उपयोगी सिद्ध होता है। दण्ड-बैठक आदि व्यायाम शारीरिक पुष्टि में वृद्धि अवश्य करते हैं किन्तु मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। जबकि योगासनों से शरीर का सर्वांगीण विकास होता है। इसका नियमित अभ्यास शरीर को सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट व बलवान तो बनाता ही है; वह शान्ति व स्फूर्ति भी प्रदान करता है। इससे थकावट का अनुभव नहीं होता; साथ ही कार्य करने का उत्साह बना रहता है।

योगासनों का अभ्यास स्त्रियों के लिए भी विशेष उपयोगी है। आजकल अधिकांश महिलाएँ मासिकधर्म की गड़बड़ी, गर्भाशय विकार, हिस्टीरिया, रक्तचाप आदि से व्यापक रूप से ग्रसित रहती हैं। पश्चिमोत्तान आसन, भुजंगासन, हलासन, धनुरासन, वज्रासन, आदि आसन विशेष रूप से गर्भाशय सम्बन्धी रोगों तथा डिम्बप्रणाली के दोषों को दूर करने में बहुत सहायक होते हैं। सर्वांग आसन व शवासन से हिस्टीरिया के दौरे दूर करने में काफी मदद मिलती है। मुटापे को भी योगासनों द्वारा दूर किया जा सकता है। सभी प्रकार की बीमारियों को दूर करने में योगासन सहायक हो सकते हैं और इनका प्रयोग हर व्यक्ति कर सकता है।

योग का निरन्तर अभ्यास हमारी बहुत सी बुरी आदतों को दूर कर सकता है—केवल निरन्तर अभ्यास की इच्छाशक्ति चाहिए—फिर हर परेशानी का इलाज योग के पास है।

प्राणायाम से जहाँ शरीर में हल्कापन आता है वहीं बुद्धि-विकास एवं बुद्धि में सहायता मिलती है। प्रतिदिन के अभ्यास से शारीरिक शिथिलता दूर होती है। जीवन दीर्घ होता है या आयु बढ़ती है। सूर्य भेदी प्राणायाम से खाँसी, जुखाम, सिरदर्द व थकावट दूर होती है।

योगाभ्यास को हमें अपने जीवन का अंग अवश्य बनाना चाहिए। इसकी महत्ता को देखते हुए हमारी सरकार ने इसका प्रशिक्षण स्कूलों में आरम्भ करने का निश्चय किया है। योगाभ्यास हमेशा किसी जानकार प्रशिक्षित व्यक्ति की देखरेख में करना व सीखना चाहिए। विस्तृत जानकारी के लिए 'सूर्य नमस्कार व योग' एवं 'पातंजलि योग दर्शन' नामक पुस्तकों को पढ़ें।

मधुमेह (DIABETES) की सरल चिकित्सा

● मधुमेह के भेद

मधुमेह को डायबिटीज (DIABETES), प्रमेह, बहुमूत्र तथा पेशाब में शुगर (चीनी) जाना तथा फ़ारसी में 'जियोबेतिस' भी कहते हैं। इसकी मुख्य जड़ हाजमे का खराब होना है।

मधुमेह में रोगी मधु (शहद) के समान मधुर (मीठा) मूत्र का त्याग करता है और उसके शरीर में भी माधुर्य रहता है, अतः मधुमेह कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है, एक धातुक्षय के द्वारा प्रकुपित वायु से और दूसरा पित्त या कफ से आवृत्त वायु द्वारा।

कुछ विद्वानों का मत है कि स्त्रियों का प्रमेह नहीं होता, क्योंकि प्रतिमास रज:स्राव के कारण स्त्रियों का संम्पूर्ण दोष दूर होकर शरीर शुद्ध हो जाता है। पर इस सिद्धान्त में मतभेद है। हां, इतना अवश्य है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में यह रोग बहुत ही कम पाया जाता है।

इसके मुख्यतः दो भेद माने जाते हैं—(1) मधुमेह (Diabetes Mellitur), (2) अमधुमेह (Diabetes Insipidus)। पहले में पेशाब में चीनी आती है, दूसरे में चीनी नहीं आती। पहले प्रकार का मधुमेह कष्टसाध्य होता है। यह शारीरिक परिश्रम की कमी से होता है। दूसरे में यद्यपि शर्करा (चीनी) नहीं आती, परन्तु पेशाब अधिक मात्रा में आता है। पेशाब का रंग पानी जैसा रहता है। यह अधिक शारीरिक परिश्रम के कारण होता है, और स्नायु-दौर्बल्य इसका मुख्य कारण है। बार-बार पेशाब आने के कारण इसका एक नाम 'बहुमूत्र' भी है।

● मधुमेह के कारण

गुदगुदे बिस्तर पर आराम से निष्क्रिय पड़े रहना, सुखपूर्वक अधिक सोना; बकरा मछली तथा भैंसा आदि प्राणियों के मांस रस का सेवन, दुग्ध सेवन, नवीन अन्न, वर्षा का पानी, गुड़ या चीनी के बने पदार्थ तथा अन्य कफवर्द्धक पदार्थों का सेवन करना प्रमेह के उत्पादन हेतु हैं। अधिकांश अवस्था में जब पुरानी कोष्ठबद्धता (कब्ज) के कारण आंत के भीतर जिस विष का संचार होता है, जब वह क्लोम यन्त्र पर आक्रमण कर उसे दुर्बल कर देता है, तभी यह रोग होता है। चाय का अधिक सेवन भी हानिप्रद है।

मधुमेह प्रायः उनको होता है, जो श्रम नहीं करते और देर से पचने वाले भारी भोजन करते हैं। घी, चीनी, दालें, पकवान तो केवल मजदूर (शारीरिक श्रम करने वाले) ही पचा सकते हैं।

असल में कुदरत हमें जो चीज जिस रूप में देती है, उसी रूप में हमें उसे ग्रहण करना चाहिए। जो वस्तु बिना आग के सम्पर्क में लाये न पकने वाली हों, उन्हें उतना ही और इसीलिए आग के सम्पर्क में लाना चाहिए कि वे पचने लायक हो जायें।

सफेद चीनी, कृत्रिम चिकनाई, मैदा व बेसन की तली भुनी चीजें, चाय आदि लगातार सेवन करने से पाचक यन्त्रों को आवश्यकता से अधिक कार्य करना पड़ता है, जिससे बाद में वे शिथिल व अक्षम बन जाते हैं। शरीर के पाचन-यन्त्र पाचक-रस आवश्यकतानुसार नहीं बना पाते। लीवर (जिगर) अपना कार्म नहीं कर पाता। अतः शरीर के उपयोग हेतु यकृत की अक्षमता के कारण खून में जरूरत से ज्यादा शर्करा रह जाता है, जिसे शरीर पेशाब के साथ बाहर फेंक देता है। इस प्रकार शरीर में शर्करा के आवश्यक उपयोग की शक्ति नहीं रह जाती। यही मधुमेह रोग है। यह शर्करा पेशाब में कई प्रतिशत तक आ सकता है।

शर्करा के आवश्यक उपयोग हेतु एक विशेष पाचक-रस की आवश्यकता होती है, जिसे 'इन्सुलिन' कहते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा पाचक-यन्त्र को ठीक करने का यत्न किया जाता है, जिससे रस-ग्रन्थियाँ अपना कार्य ठीक प्रकार से करने लग जाएँ और 'इन्सुलिन' बनने लग जाय। अन्य उपचार पद्धतियां 'इन्सुलिन' की पूर्तिमात्र करती हैं। एलोपैथी में पशुओं की पाचक-ग्रन्थियों से प्राप्त 'इन्सुलिन' टिकिया या इंजेक्शन के रूप में रोगी के शरीर में पहुँचाई जाती है अर्थात् शरीर में गन्दगी बढ़ायी जाती है। इसके पश्चात् रोग लुक-छिपकर तीव्रता से उभरता है और रोग व दवा जीवनभर चलती रहती है। आम भोजन हजम करने को एक इंजेक्शन से काम चल गया, तो कुछ दिन बाद दो से चलेगा और फिर इंजेक्शनों की संख्या बढ़ती रहेगी और पाचन-कार्य शिथिल बनता जाएगा। इसी कारण मधुमेह को एलोपैथी वाले लाइलाज बताते हैं, मगर वास्तव में यह असाध्य रोग नहीं है।

लक्षण—

चीनी जाने वाला मधुमेह बुरा है। इसमें प्यास अधिक लगती है, क्योंकि प्रकृति शरीर में अधिक पानी पहुंचाकर अतिरिक्त शर्करा को घोल के रूप में मूत्र के साथ बाहर निकालना चाहती है। इसमें भूख भी अधिक लगती है जो कि क्षय की पूर्ति के लिए प्रकृति का प्रयत्न है। प्रारम्भ में ये दो ही लक्षण प्रकाश में आते हैं। परन्तु कुछ समय के बाद शरीर का वजन तथा शक्ति घटने लगती है, साथ ही मन्दाग्नि, कब्ज, सिर-दर्द, सिर में चक्कर, नेत्र विकार, त्वचा में शुष्कता (रूखापन), मसूड़ों का फूलना, दांत के रोग तथा मुंह से दुर्गन्ध का आना आदि अलामतें आ घेरती हैं।

रोग अधिक बढ़ जाने पर शरीर में अन्य भयानक विकार, जैसे—समस्त शरीर में खुजली, शीघ्र अच्छे न होने वाले फोड़े तथा कारबंकल, शरीर के रोमकूपों का बन्द हो जाना, फेफड़ों के विकार, राजयक्ष्मा (तपेदिक जिसे T.B. भी कहते हैं), मूत्रद्वार में जलन, मूर्च्छा एवं उकवत आदि सताने लगते हैं। चिन्ता, क्रोध, शोक आदि मानसिक विकारों के कारण रोग के उपर्युक्त लक्षणों में असाधारण वृद्धि हो जाती है।

खाया हुआ प्रधान खाद्य श्वेतसार आमाशय में नहीं पचता, तब वह गुर्दों द्वारा पेशाब के साथ बाहर निकाल दिया जाता है। पाचन-क्रिया शिथिल हो जाती है। प्लीहा और यकृत अपना काम पूरी तरह नहीं कर पाते, पाचक-रस पैदा करने वाली ग्रन्थियों से आवश्यक मात्रा में पाचक-रस नहीं निकलता। परिणामस्वरूप भोजन कठिनाई से पचता है और उसके श्वेतसारीय भाग के शर्करा में परिणत होने पर शरीर के लिए जब रक्त द्वारा प्लीहा में लाया जाता है तब प्लीहा की शिथिलता के कारण इसमें आवश्यक मात्रा से अधिक शर्करा रह जाता है जिसे यूरिया, नमक तथा अन्य विषों की भांति गुर्दे पेशाब के रास्ते से बाहर निकाल देते हैं।

मोटे शरीर वाले इस रोग से अधिक पीडित देखने में आते हैं, क्योंकि मोटापे के कारण पाचक-रस पैदा करने वाली ग्रन्थियों पर पड़ने वाला भार अधिक बढ़ जाता है। आयुर्वेद के मतानुसार 'जातः प्रमेही मधुमेहिनोवा' इस रोग में पैतृक प्रभाव का बहुत अधिक हाथ रहता है। आलसियों एवं स्वादिष्ट खाने के लिए जीने वालों को विशेषरूप से यह रोग होता है। चालीस वर्ष से ऊपर की आयु वाले बुद्धिजीवियों में प्रायः यह रोग पाया जाता है। अधिक श्रम करने वालों तथा स्त्रियों को यह रोग बहुत कम होता है, जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है। यह रोग गरीबों की अपेक्षा अमीरों को अधिक होता है। अधिक भारी तथा मोटे शरीर वालों को यह रोग आसानी से हो जाता है।

जब मधुमेह का रोगी डाक्टर के पास जाता है, तो कम अनुभवी कुछ डाक्टर यह सोचकर कि श्वेतसारीय खाद्यों से चीनी बनती है, रोगी के भोजन से चावल, आलू तथा आटा निकाल देता है और यह मानकर कि फल भी मीठे होते हैं सभी फलों की मनाही कर देते हैं और भोजन की पूर्ति के लिए प्रोटीन वाले खाद्य—मांस, अण्डे तथा दालें आदि लेने को प्रोत्साहित करते हैं। वे सोचते हैं कि प्रोटीन वाले खाद्य से रोगी को चीनी नहीं मिलेगी और उसके भोजन की पूर्ति होती रहेगी। इसका परिणाम यह होता है कि रोगी का भोजन असंतुलित हो जाता है। फलों के अभाव तथा प्रोटीन युक्त खाद्यों की अधिकता से रक्त में अम्लता बढ़ जाती है, जिससे अधिकाधिक रोग जन्म लेते हैं। ईमानदारी से रोगों की दवा बदल-बदल कर देने पर भी डाक्टरी इलाज से मूल रोग से पीछा नहीं छूटता। यहां यह सब उल्लेख करने का आशय ऐलोपैथी की आलोचना नहीं, वरन् रोग और रोगी के हित के लिए सत्य को उजागर करना है। यह जानते हुए भी कि किसी के लिए भी चाय, काफी, सिग्रेट आवश्यक नहीं है, लेकिन डाक्टर उसके लिए मना नहीं कर पाता। हां, रोगी चीनी न खाये, इसके लिए वह चाय-काफी में रोगी को चीनी के बदले में 'सेक्रिन' डालने की सिफारिश करता है। सेक्रिन कोलतार से बनाया गया स्वयं में एक विष है। जिसका प्रयोग किसी को भी रोगी बना सकता है। इस प्रकार अन्य रोग हो जाते हैं मगर डाक्टर रोगी के मूत्र में, सेक्रिन लेने के कारण चीनी कम या बिल्कुल नहीं आ रही है, सन्तोष कर लेता है। वस्तुतः एलोपैथी में मधुमेह का शर्तिया इलाज नहीं है, बल्कि खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार में सुधार करके प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा इस रोग पर आसानी से काबू पाया जा सकता है।

सरल आहार चिकित्सा

शरीर की पाचन-क्रिया द्वारा प्रोटीन का कम-से-कम आधा भाग शर्करा (चीनी) में बदल दिया जाता है, जो मधुमेह के रोगी के लिए विष का काम करता है। इसलिए प्रोटीन उतना ही लेना चाहिए जितना शरीर के लिए आवश्यक हो। प्रोटीन अधिक मात्रा में लेना हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

प्रतिदिन शरीर के लिए प्रोटीन की एक औसत मात्रा समुचित है। नीचे लिखी तालिका अनुसार पदार्थ लेने से शरीर को पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन मिल जाता है। इनमें से कोई एक पदार्थ या आधी-आधी मात्रा में दो या एक-तिहाई मात्रा में तीन पदार्थ प्रतिदिन लिये जा सकते हैं।

नितान्त रोगियों के आहार

दूध	750 ग्राम से 1 कि० तक	पिस्ता	125 ग्राम
दही	500 ग्राम	काजू	125 ग्राम
पनीर	125 ग्राम	चिलगोजे	200 ग्राम
गेहूं	250 ग्राम	अखरोट	200 ग्राम
जई	200 ग्राम	मूंगफली	65 ग्राम
दालें	125 ग्राम	कद्दू के बीज	65 ग्राम
सूखी मटर	125 ग्राम	गुच्छी	65 ग्राम
सेम के बीज	125 ग्राम	भटवांस	65 ग्राम
बादाम	125 ग्राम	अण्डे	2 ग्राम

ऊपर लिखे प्रोटीन के अलावा मधुमेह के रोगी नीचे लिखे फल और तरकारियां भी सेवन करें—

फल (10 प्रतिशत वाले)—उनसरी (Blackberries), कमरख, मीठा नीबू, जामुन, चकोतरा, गलगल, जंभीरी नीबू, मौसमी, लीची, लोकाट, खट्टे आम, खरबूजा, तरबूज, सन्तरा, नारंगी, पपीता, आड़ू, ताजा रसभरी, टमाटर।

तरकारियां (5 प्रतिशत वाली)—चुकन्दर के पत्ते, करमकल्ला (पत्ता गोभी), हालों, अजमोदा, अरबी के पत्ते, चौलाई का साग, ककड़ी खीरा, सहिंजन, कासनी, हरी मिर्च, नारी का साग, गांठ गोभी, लौकी, सलाद, पुदीना, सरसों का साग, परवल, पेठा, कद्दू, मूली, चिचींड़ा, पालक, टिण्डा, टमाटर, तोरई, सफेद कद्दू, जल हालों।

मध्यम रोगियों के लिये—ऊपर बताये गये प्रोटीन, 10 प्रतिशत वाले फल, 5 प्रतिशत वाली तरकारियां, जिनकी सूचियां ऊपर दी हैं, इनके अलावा 5-10 प्रतिशत वाली—कुकन्दर, करेला, बैंगन, गाजर, चंसुर, मेथी का साग, कच्चे आम, भिण्डी, प्याज, शलजम भी सेवन कर सकते हैं।

मामूली रोगियों के लिये—जिगर की खराबी या विटामिन की कमी के कारण मामूली रोग हो जाता है। ऐसी स्थिति में ऊपर बताये गए प्रोटीन, फल, और तरकारियों के अलावा 10-15 प्रतिशत वाले फल भी लिये जा सकते हैं, जैसे—सेब, जर्दालू, आंवला, बनमेहल, अंगूर, अमरूद, आम, शहतूत, नाशपाती, करोंदा, अनानास, बेर, अनार।

परहेज—सब प्रकार के मैदे के बने पकवान; चावल, केक, पेस्ट्री, मसाले, चटनी, अचार, कॉफी, चाय, कोको, मछली, बटेर तथा हर प्रकार के गोश्त (मांस); अन्य खाद्य पदार्थ, जैसे—खजूर, केला, मुनक्का किशमिश, आलू, अंजीर, गुड़, चीनी तथा अन्य मीठे पदार्थ व मिठाइयां।

नोट—सभी प्रकार के मधुमेह के रोगियों के लिये सप्ताह में एक दिन शोधनाहार—इसमें केवल फलों का रस ही लिया जाय, जिससे रुधिर की क्षारीयकरण क्रिया होगी, कोशा क्रियाशीलता में वृद्धि होगी और शौक्तेन्य पदार्थ नहीं बनेंगे। ऐसा करने से बहुत लाभ पहुंचता है।

("चिकित्सा चमत्कार" से उद्धृत)

प्राकृतिक चिकित्सा

जब पेशाब में चीनी आ रही हो या रक्त में चीनी की मात्रा बढ़ गयी हो तो इसका मतलब यह है कि जिन खाद्यों से चीनी बनती है अर्थात् गेहूं, चावल, दाल, चीनी कुछ दिन के लिये न ली जायें ताकि शरीर की अतिरिक्त चीनी उपयोग में आ जाय तथा चीनी बनाने वाले अंगों को आराम मिले और वे स्वच्छ हों। पूरी पाचन प्रणाली के आराम का अर्थ ही उपवास है।

उपवास—रोगी यदि अधिक दुर्बल न हो गया हो तो आरम्भ में उसे 2-3 दिन का उपवास कराना चाहिए और एनिमा देकर पेट साफ करा लेना चाहिए। उपवास में केवल उबला पानी ठंडा किया हुआ और नीबू का रस पानी में मिलाकर देना चाहिए। उपवास तोड़ने के बाद दस दिन तक अन्न को सर्वथा त्याग कर केवल उबली या कच्ची हरी शाक-सब्जियों या उनके रस अथवा सन्तरा, टमाटर, मकोय, मुसम्मी, अनानास, नासपाती, सेब, पके गूलर के फल, आम, अंगूर आदि फलों या उनके रस पर रहना चाहिए। इससे पेशाब में चीनी का आना तो कम होगा ही, साथ-साथ शरीर के अन्दर उस शक्ति की भी प्राप्ति होगी जो चीनी को अपने अन्दर जज्ब करती है और उसे बेकार बाहर निकल जाने से रोकती है। तत्पश्चात् एक मास तक प्रातःकाल फलों का रस या ताजे बेल-पत्रों को कूटकर उनका एक तोला रस नाश्ते के रूप में, दोपहर को चोकरदार गेहूं के आटे की रोटी या गेहूं अथवा

जौ का दलिया और उबली सब्जी, तीसरे पहर मक्खन निकला मट्ठा 250 ग्राम तथा शाम को केवल फल का रस लेना चाहिए।

चालीस दिन तक उपर्युक्त क्रम चलाने से मधुमेह अवश्य दूर हो जाता है। यदि चालीसवें दिन रोग पूर्णरूप से न जाये तो फिर चिकित्सा क्रम को दोबारा या तिबारा दोहराना चाहिए। इससे रोग निर्मूल हो जाएगा।

यदि मधुमेह का रोगी शीघ्र रोग से मुक्ति चाहता है तो निम्नलिखित प्रयोग उपर्युक्त चिकित्सा क्रम में जोड़ दें:—

1. प्रतिदिन प्रातःकाल शौच आने के बाद ताजे पानी का एनिमा लेकर आधे घन्टे तक पेडू पर गीली मिट्टी बांधें या बीस मिनट तक कटि स्नान लें। (लुई का मत है कि कटि स्नान इसमें बहुत ही सहायक सिद्ध होता है।) इसके तत्पश्चात शक्ति अनुसार कोई व्यायाम करे या शुद्ध वायु से टहले। इससे कब्ज दूर होगा।

2. शाम को बीस मिनट तक मेहन स्नान ले। उसके बाद भी शक्तिभर टहलना आवश्यक है। इससे रोग से मुकाबला करने की शक्ति बढ़ेगी।

3. पेडू पर सेंक देकर या मालिश करके रात भर के लिए कमर की गीली पट्टी लगायें।

4. साधारण शीतल जल से स्नान करने से पूर्व धूप में बैठकर शरीर पर सरसों के तेल की मालिश करें और स्नान के समय मेरुदण्ड पर पांच मिनट तक ठंडे जल को तरेरा दें और स्नान के बाद पूरे शरीर की सूखी मालिश करके शरीर का जल सुखा दें।

5. नारंगी रंग की बोतल का सूर्यतप्त जल दो भाग और आसमानी रंग की बोतल का एक भाग जल मिलाकर आधी छटांक की खुराक सुबह-शाम भोजन के बाद लें।

इस परिवर्द्धित चिकित्सा क्रम से केवल 15 दिन में ही पेशाब में चीनी आना बन्द हो जाता है।

रोगी को शारीरिक और मानसिक विश्राम करना आवश्यक है। खुली हवा में गहरा सांस लेना चाहिए। एक कागजी नीबू का रस ताजे पानी में निचोड़ कर दिन में कई बार पीना चाहिए। ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है तथा सप्ताह में कम-से-कम एक दिन उपवास जरूर करना चाहिए। उपवास में पानी व नीबू का रस जल में अवश्य पीते रहना चाहिए।



परहेज—आलू, चावल, मटर, अखरोट आदि श्वेतसार प्रधान खाद्य पदार्थ; सब प्रकार के मीठे फल, जैसे—खजूर, किशमिश अंजीर, मुनक्का, खुबानी, शलजम, आदि; तेल मसाला, अधिक नमक, चीनी मिठाई, गुड़, मांस, मछली, अण्डा, चाय, कॉफी, तम्बाकू आदि नशीली वस्तुएं; अधिक भोजन; भय, क्रोध, चिन्ता आदि मनोविकार, दूध, मक्खन, घी और चिकनाई वाले पदार्थ आदि।

● मधुमेह की जड़ी-बूटियों द्वारा चिकित्सा

1. जामुन की गुठली का चूर्ण, बेलपत्र का चूर्ण तथा करेले का चूर्ण सम मात्रा में लेकर मिलायें और 2-2 माशे पानी के साथ सेवन करने से इस रोग में लाभ होता है।

2. पुराने जामुन के वृक्ष की अन्तर्छाल (भीतरी छाल) को अच्छी तरह सुखाकर और जलाकर खूब घोट कर शीशी में भरकर रख लें। यह भस्म एक से डेढ़ माशा तक लेकर प्रातःकाल खाली पेट पहली मात्रा ताजा पानी से लें, फिर दोपहर व शाम को भोजन के एक घंटे बाद लें।

3. जामुन की चार हरी पत्तियों को प्रतिदिन पीसकर दिन में दो बार पीने से कुछ समय में मधुमेह अच्छा हो जाता है।

4. जामुन की गुठलियों की गिरियां तथा मसूर की दाल का छिल्का बराबर-बराबर लेकर बारीक पीस कर रख लें। प्रतिदिन प्रातःकाल व सायंकाल 3-3 माशे की मात्रा ताजे पानी से सेवन करें। कुछ ही दिनों में रोग दूर हो जायगा।

5. जामुन और आम का रस समभाग मिलाकर कुछ दिन सेवन करने से मधुमेह ठीक हो जाता है।

6. जामुन के सूखे बीजों का चूर्ण ढाई रत्ती से एक माशा तक दिन में तीन बार सेवन करने से पेशाब के साथ चीनी का आना बन्द हो जाता है और 5 ग्रेन की मात्रा में दिन में 6 बार लेने से चौबीस घंटे में दो-ढाई कि० पेशाब की मात्रा कम हो जाती है, साथ ही पेशाब की ग्रैविटी भी कम हो जाती है।

7. एक तोला जामुन के पेड़ की जड़ को साफ करके 250 ग्राम पानी में पीसकर दो तोला शहद मिलाकर पीने से मधुमेह में लाभ होता है।

8. आधा तोला मेथी के दाने (बीज) शाम को पानी में भिगो दें। प्रातःकाल उठकर उसे घोंट लें। जब खूब घुट जाय तो उसे छानकर बिना

कुछ मिलाये पी लें। इस प्रकार एक सप्ताह सेवन करने से मधुमेह रोग जड़ से चला जाता है।

9. नीम की छाल का काढ़ा पीने से भी इस रोग में पर्याप्त लाभ होता है।

10. ताजे आंवलों के रस में कागजी नीबू का रस शहद मिलाकर पीने से मधुमेह में लाभ होता है।

11. जौ और चना समभाग मिले आटे की रोटी खाने से मधुमेह में लाभ होता है।

12. दूध में चने भिगो दें। फूल जाने पर शहद मिलाकर खायें तो मधुमेह दूर हो जाता है।

13. अमरूदों को बारीक काटकर कुछ देर तक पानी में रखें, फिर छान कर पी लें। ऐसा करने से मधुमेह रोग की तृषा (प्यास) दूर होती है।

14. पका बेल शहद के साथ खाने से भी मधुमेह में लाभ होता है।

15. टमाटर का रस या अनन्नास का रस नियमपूर्वक प्रतिदिन सेवन करने से मधुमेह में शीघ्र लाभ होता है।

16. करेले का स्वरस 10 या 20 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन पानी तथा करेले की तरकारी खाने से मधुमेह रोग दूर हो जाता है।

17. गुडमार बूटी के दस पत्ते तथा दस बेल के पत्तों का रस प्रतिदिन प्रातःकाल पानी में शर्बत बनाकर पीने से मधुमेह रोग दूर हो जाता है।

18. एक पाव बकरी के दूध में एक तोला सिंघाड़े का आटा मिलाकर सेवन करने से कुछ दिनों में मधुमेह दूर हो जाता है।

19. काले तिल 50 ग्राम, अजवाइन 25 ग्राम दोनों को बारीक पीसकर उसमें 65 ग्राम गुड़ मिलायें और सुबह-शाम 5-5 ग्राम खायें। इससे बुढ़ापे की बहुमूत्रता नष्ट हो जाती है।

20. सेम, करमकल्ला व गाजर का रस एक साथ मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने से कुछ दिनों में मधुमेह ठीक हो जाता है।

● मधुमेह के रोगी के लिए विशेष उपयोगी वस्तुएं

मेथी (फेनू ग्रीक)—सभी भारतीय परिवारों के रसोईघर में मेथी प्रायः काम आती, किन्तु मधुमेही के लिए यह एक आवश्यक वस्तु है। इसे अनेक विधियों द्वारा लिया जा सकता है। कुछ उल्लेख ऊपर किया है। यहां विशेष प्रकाश डाला जा रहा है।

1. प्रतिदिन एक चम्मच मेथी के दाने सादे ही निगले जा सकते हैं।

2. मेथी की चटनी भी बनायी जा सकती और इसमें कच्ची अम्बियां मिलाई जा सकती हैं। इस चटनी की एक चम्मच मात्रा प्रतिदिन ली जा सकती है।

3. मेथी को रातभर एक प्याले पानी में भिगो दिया जाय और दूसरे दिन प्रातः उसके दाने निकालकर उस पानी को रोगी पिये। मेथी से इस प्रकार बनाया गया पानी बहुत लाभदायी होता है।

नोट—उपर्युक्त प्रयोगों में से चाहे किसी भी प्रकार मेथी का प्रयोग प्रतिदिन मधुमेह के रोगी को अवश्य करना चाहिए।

करेला (मोमाडका चेरेन्टिका)—करेला तीखे स्वाद वाली सब्जी है, इस कारण मधुमेही के लिए बहुत ही लाभप्रद है। मधुमेह के रोगी को प्रतिदिन 4 या 5 करेलों का रस भोजन के बीच में लेना चाहिए। सूखे रूप में भी करेला लिया जा सकता है। इस प्रकार बेमौसम में भी सब्जी के रूप में काफी लाभप्रद हो सकता है।

● चावल और दाल का विकल्प मूंग की दाल की कढ़ी

मधुमेह के रोगी को शर्करा (चीनी), गुड़, आलू, चावल, दाल इत्यादि वस्तुएं लेना मना है। लेकिन चावल और दाल प्रतिदिन के भोजन के मुख्य अवयव होने से कुछ व्यक्ति अपनी आदत या इच्छा पर काबू नहीं कर पाते अतएव चावल व दाल के बदले में एक अन्य वस्तु उनका स्थान ले सकती है, जिसका विवरण इस प्रकार है—

साबुत मूंग की दाल पकाइये, मगर वह पतली न हो। उसे दही से बनाई गयी कढ़ी के साथ लीजिए। यह चावल व दाल के बदले एक श्रेष्ठ विकल्प के रूप में है और इसे खाने वाला अपने स्वाद की पूर्ति करके सन्तोष प्राप्त करेगा।

● चोकर के बिस्कुट

डा० एलन चोकर के बिस्कुट बनाने के लिए निम्नलिखित आदेश देते हैं। इसमें निम्नलिखित वस्तुएं प्रयोग में आती हैं।

चोकर सूखा व शुष्क 2 औंस, अगर (चूर्ण रूप में) 3/4 औंस ठंडा पानी साढ़े तीन औंस।

सर्वप्रथम चोकर को पनीर बनाने वाले कपड़े में बांधकर ठंडे पानी में

रखकर धोया जाता है। इसको पानी में खूब अच्छी तरह मला या मसला जाता है, ताकि इसमें से निकलने वाला जल साफ निकले। इस क्रिया में लगभग आधा घंटा या अधिक लगता है किन्तु यह एक महत्वपूर्ण क्रिया है और इसे नियमानुसार भली प्रकार करना चाहिए। अगर को साढ़े तीन औंस ठंडे पानी में मिला दिया जाता है और फिर उसे उबाला जाता है। अगर का गर्म तरल द्रव अब साफ किये हुए चोकर में मिलाया जाता है। इस मिश्रण से तीन केक बनाये जाते हैं, जो भट्टी में पकाये जाते हैं तथा सूखे व कुरमुरे होने पर निकाले जाते हैं। इनमें नमक अपने स्वाद अनुसार मिलाया जा सकता है। इसके लिए उपयुक्त चोकर चुनना आवश्यक है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के चोकर में कार्बोज पदार्थों की मात्रा अधिक होती है। इसके लिए गाय-भैंसों को खिलाये जाने वाले चोकर का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि इनमें कार्बोज की मात्रा कम-से-कम होती है तथा पानी में धोने के प्रयोग में पूर्ण सन्तुष्टि प्रदान करती है।



● मधुमेह की प्रथम अवस्था वाले रोगियों के लिए आहार-क्रम

लगभग 25-30 वर्ष पूर्व 'सेन्ट्रल फूड टेक्नोलाजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, मैसर' की प्रयोगशाला में कुछ प्रकार के प्रोटीन्स खाद्य पदार्थों के मधुमेह की दशा में लाभकारी प्रभाव का निरीक्षण किया गया और उसका संक्षिप्त विवरण औषधि चिकित्सा की प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका लैंसेट (अगस्त 1957, पृष्ठ 317-320) में प्रकाशित हुआ। रोगियों को मुँह द्वारा प्रोटीन्स युक्त खाद्य पदार्थ जैसे कैसीन, या मक्खन निकले दूध का चूर्ण, दालें, सेम, काला चना व बंगाली चना आदि दिये गये और इसके बाद उनमें ग्लूकोज की सहनशीलता की परीक्षा की गयी। इस प्रयोग से यह साफ पता चला कि इन खाद्य पदार्थों के प्रयोग से मधुमेह के रोगियों तथा साधारण स्वस्थ व्यक्तियों के शरीर में ग्लूकोज का पूर्णरूपसे उपयोग हुआ। वास्तव में स्वस्थ व्यक्तियों में यह प्रभाव इतना लाभदायी पाया गया कि उन व्यक्तियों की शिरा में ग्लूकोज सूची वेध (इंजेक्शन) द्वारा पहुँचाया गया और प्रोटीन-युक्त पदार्थ मुँह से खाने को दिया गया। यह देखा गया कि प्रोटीन युक्त खाद्य-पदार्थों का लाभकारी प्रभाव पड़ता है। मधुमेह के वह रोगी, जिनको एक विशिष्ट भोजन क्रम के प्रयोग का आदेश हुआ था और जिसमें कार्बोज पदार्थों के खाने की पूरी पाबन्दी नहीं थी तथा जिन्हें ऊपर लिखे प्रोटीन्स युक्त भोज्य पदार्थ सम्मिलित करने छूट थी—यह पाया गया कि उपवास के बाद रक्त में पायी जाने वाली शर्करा, ग्लूकोज सहन-शक्ति परीक्षा, मूत्र में पायी जाने वाली शर्करा तथा उनकी साधारण दशा में काफी सुधार हुआ। इन्हीं प्रयोगों का पुनः परीक्षण करने पर ऐसे ही आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

मधुमेह की कुछ नियंत्रित रोगियों की अवस्था का काफी लम्बे समय तक निरीक्षण करने पर कुछ तरकारियों तथा दलों के प्रभाव का भी अध्ययन किया गया। गांठ गोभी (Knol-khol) एक बिना पत्ते वाली तरकारी तथा बंगाल के चने का जल में घुलनशील अंश दोनों लाभकारी प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के तौर पर मधुमेह का एक जीर्ण रोगी, जिसको कि प्रतिदिन 40 यूनिट इन्सुलिन के इंजेक्शन की आवश्यकता पड़ती थी—ऐसा भोजन दिया गया जिसमें Knol-khol (गांठ गोभी) कैसीन तथा बंगाल के चने का जलीय अंश था—इससे रोगी की दशा में काफी सुधार हुआ। उसको इंसूलीन की आवश्यकता 20 यूनिट प्रतिदिन के हिसाब से कम की जा सकी।

ऊपर के परीक्षण के आधार पर, मधुमेह के रोगियों के लिए मांसाहारी व शाकाहारी) एक भोजन क्रम बनाया गया है जिसका उद्देश्य यह है कि मधुमेह के रोगियों की एक बड़ी संख्या की इस भोजन के प्रति प्रतिक्रिया ज्ञात हो सके, जो कि डाक्टरों अथवा चिकित्सालयों में कड़े निरीक्षण के अनुसार रखे गये हैं। परीक्षण के लिए इस प्रकार के भोजन क्रम को बनाने में इस तथ्य को भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि इस प्रकार के भोजन क्रम से यह गारण्टी नहीं की जा सकती कि ऐसा भोजन मधुमेह को पूर्णरूप से दूर कर देगा। इस भोजन क्रम का परीक्षण व निरीक्षण उन्हीं रोगियों पर करना चाहिए जिनकी योग्य चिकित्सकों ने परीक्षा करके मधुमेह की सबसे प्रथम अवस्था का रोगी माना है तथा जिनके शरीर में अन्य कोई उपद्रवी लक्षण उपस्थित न हों।

मधुमेह रोगी के लिये भोजन-क्रम

प्रातः 9 बजे (जलपान)—फलों का रस, अण्डा, उपमा, इडली, टोस्ट या सैंडविच, सीरियल फ्लेक्स और दूध। दूध के साथ मक्खन निकले हुए दूध के चूर्ण के दो चम्मच।

दोपहर 1 बजे (भोजन)—चावल 150 ग्राम या रोटी। साथ में गोश्त या मछली (भुनी नहीं) या बंगाल के चने का जलीय अंश, या Knol khol (गांठ-गोभी) सब्जी की कढ़ी तथा दही। चावल के साथ-साथ साधारण मात्रा में घी ले सकते हैं।

4 बजे (सायंकालीन जलपान)—स्नैक्स (बिना भुने हुए), साथ में एक प्याला काफी या चाय (शक्कर के साथ)।

8 बजे (रात का खाना)—दोपहर के खाने के समान।

रात्रि को (सोने से पहले)—एक प्याला दूध।

पथ्य—कोमल कच्चे टमाटर, Knol khol (गांठ-गोभी), पात गोभी, पत्तीदार भाजी जैसे चौलाई, क़ोमल फ्रेंचबीन आदि।

हल्का व्यायाम जैसे टहलना—जहां तक सम्भव हो सके।

अपथ्य—घी तथा तले हुए भोजन, आलू, पके टमाटर, मिण्डी, गाजर, चुकन्दर, लाल लौकी, कच्चा केला तथा तुअर की दाल।

मूत्र की परीक्षा भोजन लेने के डेढ़ घण्टे बाद तथा रात्रि के बाद अवश्य करनी चाहिए, ताकि रोग की अवस्था पर नियन्त्रण रहे।

भोजन प्रयोग विधि

1. बंगाल का चना—छिलकेदार बंगाल का चना (या काबली चना) जैसा कि बाजार में मिलता है, उसे अच्छी तरह धूल और गंदगी से साफ करके पानी से धो लेना चाहिए। इस चने को रात्रि को भिगो देना चाहिए या खाने से दो घण्टा पहले गर्म पानी में भिगोना चाहिए। इनको पकाते समय तथा रसा बनाते समय उसी पानी का प्रयोग करना चाहिए जिसमें कि इन्हें भिगोया है। रोगियों को भोजन के साथ केवल सूप लेना चाहिए तथा चने का प्रयोग परिवार के अन्य सदस्य कर कर सकते हैं।

2. Knol khol (गांठ गोभी)—यह सब्जी बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। अतः इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए। यह शाक केवल ताजा व कोमल ही लेना चाहिए। इसे काटकर, पकाकर इसमें नमक तथा अन्य हल्के मसाले डालकर प्रयोग किया जाता है।

3. ताजे सेम के बीज—मौसम में प्राप्त होने पर अवश्य लेना चाहिए।

4. काला चना—इसे इडली के रूप में लेना चाहिए। इसके बनाने में चना व चावल का अनुपात आधा-आधा होना चाहिए, यद्यपि सेला चावल के प्रयोग से इडली स्वादिष्ट बनती है। विशेषज्ञों के अनुसार सेला चावल कच्चे चावल की अपेक्षा अधिक ग्लूकोज उत्पन्न करता है।

5. मखनिया दूध का चूर्ण (केसीन)—इसे दूध या काफी के साथ लेना चाहिए वा दूध में यह चूर्ण डालकर उससे बने दही का प्रयोग किया जाय। इस प्रकार प्रतिदिन लगभग 5-6 चम्मच मक्खन निकले दूध का चूर्ण शरीर में पहुंचाना चाहिए।

6. गन्ने की शक्कर—यह आवश्यक नहीं कि कॉफी के साथ शक्कर की मात्रा घटा दी जाय क्योंकि शेरी, चावल आदि मुख्य रूप में लिये गये भोजन के आधार पर कार्बोज पदार्थों की मात्रा स्वयं ही अधिक हो जाती है। सेक्रीन का प्रयोग न करना चाहिये, क्योंकि यह एक ऐसी औषधि है जो विष का रूप है। भोजन का उद्देश्य यह है कि रोगी के भोजन में प्राप्त होने वाले कार्बोज पदार्थों में कटौती न करते हुए भी कुछ विशेष प्रकार की प्रोटीन्सयुक्त पदार्थों को भोजन में स्थान दिया जाय।

7. वसा—भोजन में वसा की मात्रा कम-से-कम होनी चाहिये तथा तले भुने पदार्थ जहाँ तक हो सके लेने ही नहीं चाहिए।

प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा मधुमेह का उपचार

मधुमेह का निश्चित व सफल उपचार केवल प्राकृतिक चिकित्सा की विधियों से हो सकता है। औषधियों से केवल अस्थायी मुक्ति मिलती है किन्तु पूर्णरूप से सफल उपचार नहीं होता। प्राकृतिक चिकित्सा का कुछ विवरण इससे पूर्व भी बताया जा चुका है। यहां एक 'प्राकृतिक चिकित्सालय' में प्राकृतिक चिकित्सा की जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, उनका विवरण प्रस्तुत है। इस कारण सम्भव है कि कुछ कियायें पहले से लिखे विवरण से मेल खाती हो अतः पाठक इसके लिए क्षमा प्रदान करें।

सर्वप्रथम शरीर में एकत्र विद्रव्य (विजातीय द्रव्य) को दूर किया जाता है। इसके लिये रोगी की आंतों को प्रतिदिन एनीमा की सहायता से साफ करना चाहिये। एनीमा के लिये गुनगुना पानी व नींबू का रस इस्तेमाल करना लाभकारी होगा। इसके उपरान्त रोगी तथा रोग की दशा को देखते हुए कटि स्नान, ठंडी पट्टी की लपेट, मालिश, आदि देना चाहिये। रोगी व रोग की दशायें प्रत्येक रोगी के सम्बन्ध में समान नहीं हो सकती हैं। शारीरिक व्यायाम (यौगिक व्यायाम को प्राथमिकता दी जाती है) प्रतिदिन करना

चाहिये। लगभग 15 मिनट सूर्य-स्नान की भी आवश्यकता पड़ सकती है। धूप में बैठकर शरीर पर सरसों के तेल की मालिश त्वचा के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए बहुत लाभदायी है। सूर्य-स्नान करने से शरीर में स्वयं ही विटामिन 'डी' का अभिशोषण हो जाता है। यदि सूर्य न दिखाई दे तो लाभ के लिये 5-10 मिनट का भाप स्नान कराया जा सकता है। सूर्य-स्नान अथवा भाप-स्नान के बाद ठंडे पानी का घर्षण स्नान उनको पुनः जीवन प्रदान करने में बहुत सहायक होता है। इसके लिये मौसम के अनुसार 30 मिनट का समय दिया जा सकता है।

प्रतिदिन दो बार एक-एक घंटे की ठण्डी चादर की लपेट भी देनी चाहिए। इससे त्वचा के अन्दर की गन्दगी निकल जाती है। रोज सायंकाल लगभग एक घंटे लिए पेडू की ठण्डी पट्टी की लपेट भी लाभदायी है।

रोगी को प्रतिदिन प्रातःकाल नियमित रूप से आधे घण्टे से एक घण्टे तक टहलना चाहिए। प्राणायाम भी लाभ देने वाला है।

रोगी के अपने स्वास्थ्य की उन्नति के लिए प्रकृति के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

जल्दी सोना व प्रातः जल्दी उठना आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक खाना, जल्दबाजी व मानसिक चिन्ताएँ, दिन में सोना व अधीरता आदि को सावधानी से दूर करना चाहिए।

यदि किसी समय रोगी को ठण्ड का अनुभव हो तो उसे गर्म पैर स्नान देकर उसके शरीर को गर्म रखने का प्रयास करना चाहिए।

भोजन—रोगी का भोजन निश्चित मात्रा में होना चाहिए। भोजन में अचानक व शीघ्रता से परिवर्तन लाभ के बजाय हानि पहुंचाता है। इसीलिए ऐसे परिवर्तन को क्रमशः करना चाहिए। मूत्र में शर्करा की उपस्थिति होने पर रोगी को चावल, दाल, आटा, साबूदाना, बार्ली, अनाज, गन्ने की शक्कर, मीठे फल, ठण्डे पदार्थ, मिठाई आदि न खाना चाहिए।

मधुमेही का मुख्य भोजन दही, फल (मीठे नहीं), हरी तरकारियाँ आदि तथा सलाद (टमाटर, गाजर आदि का), जिसके ऊपर से गरी के टुकड़े व कुछ पत्तीदार तरकारियां पड़ी हों—होना चाहिए।

रोगी को प्रति सप्ताह एक दिन जल पर उपवास करना चाहिये। रोगी भोजन में सरसों का तेल, घी, गिरी का तेल, मक्खन व दही, तरकारियों का सलाद अल्पमात्रा में ले सकता है। यदि मूत्र में शर्करा न हो तो शहद लिया जा सकता है।

*ऊपर लिखे अनुसार तीन सप्ताह तक चिकित्सा चलाने के बाद जब मूत्र में शर्करा अनुपस्थित हो जाय तो कुछ मीठे फल भी भोजन के साथ लिये जा सकते हैं किन्तु सावधानी से यह देखना होगा कि यह शर्करा शरीर संस्थानों के द्वारा शोषित होती है अथवा नहीं। जब यह पाया जाय कि रोगी के अंगों द्वारा शर्करा का शोषण व उपयोग हो रहा है तो कुछ माड़ी व कार्बोज पदार्थ भोजन के क्रमानुसार जोड़े जा सकते हैं। अन्त में रोगी सभी परहेजों से मुक्त हो सकता है केवल उसे यह ध्यान रखना होगा कि वह संभोग (कामवासना) का आधिक्य न करे जिससे कि रोग पुनः हो सकता है।



● शुगर में अन्य हितकारी पदार्थ

पटोड़े का प्रयोग—पटोड़ा बेसन से बनता है। बर्फी के समान इसकी कतरियां बनाकर उन्हें दही में डालकर रायते की भांति प्रयोग किया जाता है। इसमें नमक, मिर्च आवश्यकतानुसार डाल सकते हैं। यह बड़ा स्वादिष्ट तथा मधुमेह के रोगियों के लिये परम उपकारी है। देहात की स्त्रियां पटोड़े का बनाना भली प्रकार जानती हैं।

पटोड़े का रायता न बनाकर नमकीन बर्फी के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। स्वादिष्ट बनाने के लिये जीरा, साबुत काली मिर्च तथा अद्रक डाल सकते हैं।

खीरा का उपयोग—खीरा बारह महीने मिलता है। सलाद में खीरा प्रयोग कर सकते हैं। यह भी शुगर के मरीजों के लिए लाभप्रद है।

पनीर—पनीर का सेवन मधुमेह (शुगर) के रोगी को अवश्य करना चाहिये। पनीर की चाट बनाकर उसमें नींबू का रस व हल्का मसाला (इच्छानुसार) डालकर सेवन करना हितकर है।

भुने चने—यदि शुगर का मरीज काले भुने चने 25 से 50 ग्राम प्रतिदिन खायें तो मधुमेह में काफी राहत मिलती है।

सरसों का तेल—मधुमेह का रोगी प्रतिदिन स्नान करने के बाद शरीर के विविध अंगों (आँख, कान, नाक, अन्दर गले में, नाभि तथा गुदा) में सरसों का तेल लगाये तो मधुमेही की खुश्की दूर होती है।

● **स्वमूत्र द्वारा चिकित्सा**—पुराने रोगी उपवास के साथ-साथ स्वमूत्र-पान एवं मूत्र-मालिश करें। नये रोगी बिना उपवास किए केवल मूत्र-पान से ही लाभ उठा सकते हैं। रोग की न्यूनाधिकता के अनुरूप ही उपचार की अवधि में कम अथवा अधिक समय लगता है।

● **मधुमेह की अचूक दवा**—सहदेई (सहदेवी) नामक पौधे को खोदकर ले आयें। फिर उसकी जड़ को अलग निकालकर एक तोला को 250 ग्राम ताजा पानी के साथ इतना पीस लें कि वह जल के साथ एकदम घुल-मिल कर एक हो जाये। उसे सुबह शाम दोनों समय पियें। तीस दिन (एक मास) पीने से शुगर की बीमारी दूर हो जाएगी।

हृदय रोग (ब्लड प्रेशर) पर लहसुन के प्रयोग

भारतवर्ष में आजकल हृदय रोग की बीमारी बहुत ही हो गई है। आजकल हृदय-रोग की बात जगह-जगह सुनाई देती है। चन्द मिनटों में आदमी कहां से कहाँ पहुंच जाता है। शरीर के बायें भाग में स्तन के पास हृदय (दिल) का स्थान है। सावधानी से उस जगह हाथ रखने से हृदय फड़कता हुआ मालूम होता है। हृदय निरन्तर खुलता और बन्द होता रहता है। हृदय रक्त संचालन यन्त्र है। एक मिनट में 72 बार खून की रफ्तार चलती रहती है। हाथ की नाड़ी का हृदय से सीधा सम्बन्ध है। इसका आकार पान के पत्ते के जैसा होता है। इसी हृदय पिण्ड में रोग होने से छाती में दर्द और दिल का सर्वदा धुक-धुक करना होता है। कई बार छाती में और बीमारी या चोट के कारण भी दर्द उत्पन्न होता है तब इसका लक्षण अलग होता है। हृदय की गति बन्द होने के कारण तत्काल मृत्यु हो जाती है उसको 'हार्ट फेल' होना कहते हैं। कभी-कभी हृदय में दर्द होते ही तत्काल मृत्यु हो जाती है।

हृदय रोग शारीरिक परिश्रम, अत्यन्त कमजोरी, भारी भोजन, चिन्ता, भय, त्रास आदि मानसिक रोग, कुपित दोष रस को दूषित करके हृदय में जाकर जो विकार उत्पन्न करते हैं उसे हृदय रोग या ब्लेड प्रेशर रोग कहते हैं। मूर्च्छा, ज्वर, कास, हिचकी, श्वास, तृष्णा, मोह, वमन, कफ के उत्क्लेश से उत्पन्न पीड़ा तथा अरुचि और कुपित हुए वातादि दोष हृदय में अवस्थान करके तद्द्रव्य रस धातु को दूषित करके हृदय में अनेक प्रकार की पीड़ा उत्पन्न करते हैं। उसे हृदय रोग कहते हैं।



● **कारण**—हृदय धड़कता है, पर इसका भान हर समय नहीं होता। हृदय की विकृति से गति तीव्र होती है। तीव्रता का कोई वास्तविक कारण भी होता है। परन्तु हृदय रोग खून का दबाव कम अथवा ज्यादा होने से होता है। तम्बाकू, चाय, शराब, मादक द्रव्य सेवन, अति मैथुन, शुक्रमेह और शारीरिक या मानसिक परिश्रम आदि द्वारा उत्पन्न हुआ वातनाड़ी, दौर्बल्य, अजीर्ण गैस का ज्यादा होना, दुख-चिन्ता आदि से यह रोग हो जाता है। स्थूल पुरुष एवं कोमल प्रकृति की स्त्रियाँ इस रोग में अधिक आक्रान्त होती हैं। स्त्रियों में मृगी आना, श्वेत प्रदर, मासिक खराबी से यह रोग अधिक होता है। यह रोग अधिकतर 40 वर्ष से अधिक आयु के पुष्ट एवं मोटे आदमियों को होता है, जिनके चर्बी फैली हुई होती है।

● **लक्षण**—आकस्मिक घटनाओं, तेजी से चलने, ज्यादा क्रोध करने तथा मानसिक विचारों से हृदय जोर-जोर से धड़कने लगता है। ये धड़कनें सीने की दीवाल में प्रतीत होती हैं। रोगी को ऐसा मालूम होता है मानो उसका हृदय डूब रहा है। आँखों के सामने अँधेरा भी छा जाता है। श्वास फूलता है। नाड़ी की गति तीव्र हो जाती है। मूत्र का रंग लाल हो जाता है और मल सूख जाता है, भूख कम हो जाती है, जंभाई अधिक आती है। हृदय की जगह पर दर्द होता है, आलस्य सदा बना रहता है। इसके साथ मूर्च्छा के दौरे पड़ने लगते हैं। खून का दबाव एकाएक गिर जाने से रोगी मूर्च्छित हो जाता है या सारे शरीर में ऐंठन होती है और एकाएक खून का दबाव बढ़ जाने से मस्तिष्क में भी खून का दबाव बढ़ जाता है। इससे मस्तिष्क में शोथ, तीव्र शिरोपीड़ा, वमन की इच्छा, तन्द्रा, नींद तथा बेहोशी भी आ जाती है। किसी को तो पक्षाघात (लकवा) का रोग भी हो जाता है, ऐसे रोगी की अधिकतर मृत्यु हो जाती है, या अपंग हो जाता है।

● **चिकित्सा**—जिन कारणों से रोग हुआ हो उन्हें दूर करना इसकी प्रधान चिकित्सा है। रोगी को खुली हवा में रखें, अधिक मानसिक तथा शारीरिक परिश्रम से बचें। चिन्ता, दुख, शोक, भय से दूर रखें। समय-समय पर वातनाड़ी और हृदय को बल देने वाली औषधियाँ देनी चाहिये, रोगी को आराम से लिटा देना चाहिए और मनःप्रसाद करबल्य औषधियों का सेवन करना, मुक्तापिष्टि, मोती की भस्म 1 रत्ती, अकीक भस्म 1 रत्ती, प्रवाल भस्म 1 रत्ती अर्जुन सत्व 1 रत्ती, सितोपलादि चूर्ण 1½ माशा इन सबको मिलाकर शर्बत अनार के साथ तीन-तीन घंटे के अन्तर से चटायें तो इससे तात्काल लाभ होता है। भोजन के बाद अर्जुनारिष्ट, पार्थद्यरिष्ट 1-1 तोला जल में मिलाकर दें। सौंफ-धनियां, छोटी इलायची के बीज, मिश्री इन सबको समभाग लेकर चूर्ण बना ठण्डे पानी के साथ सुबह-शाम लेना चाहिये। चिलकादि बटी, लहसुनादि बटी, लवणभास्कर चूर्ण, गैसहरण चूर्ण, हवा वाण हरड़ें खाने के बाद पानी के साथ देने से गैस कम हो जाती है। दशमूल के क्वाथ में यवक्षार सैंधा नमक मिलाकर देने से फायदा होता है। खमीरा गाजवां अम्बरी जवाहर वाला, वात चिन्तामणी रस, जवाहर मोहरपिष्टि, मकरध्वज स्वर्णयुक्त, कस्तूरी सर्पगन्धा चूर्ण, अर्जुनघृत, चन्दनादि अवलेह, अर्जुनारिष्ट, कल्याण सुन्दर रस, च्यवनप्राश भी बहुत फायदा करता है।

लहसुन का रस 1 तोला, अर्जुन की छाल का रस 1 तोला सुबह-शाम पीकर गाय का दूध पीना चाहिए। हृदय रोग में राम बाण है।

लहसुन शरीर में बहुत से रोगों को नष्ट करता है। नेत्र रोग, हृदय रोग, जीर्ण ज्वर, गुल्म, अरुचि, खांसी, सूजन, बवासीर, कृमि, वात, गठिया, श्वास और बलकारक, वीर्यवर्द्धक; कोढ़ आदि अनेक रोगों में लहसुन लाभदायक होता है। इसके सेवन करते समय दूध का उपयोग ज्यादा करना चाहिये। 1 से 2 तोला तक की लहसुन की मात्रा होती है।

● **पथ्यापथ्य**—हृदय रोगी को जरा भी परिश्रम न कर आराम से लेटे रहना चाहिए। सीढ़ियाँ चढ़ना, पढ़ना, सवारी करना, मैथुन मना है। खटाई लाल मिर्च, भारी चीजें नहीं खानी चाहिए। हल्का खाना, ताजा भोजन पालक की सब्जी, मूली, गाजर, मेंथी, हरी सब्जी खाना जरूरी है। चिन्ता फिकर नहीं करनी चाहिये। लहसुन खाइये हृदय रोग मिटाइये। ●

श्रीराम के प्रमुख 108 नाम व भावार्थ

1 ॐ श्रीरामः—जिनमें योगीजन रमण करते हैं, ऐसे सच्चिदानन्द-घनस्वरूप श्रीराम अथवा सीता-सहित राम। 2 रामचन्द्रः—चन्द्रमा के समान आनन्ददायी एवं मनोहर राम। 3 रामभद्रः—कल्याणमय राम। 4 शाश्वतः—सनातन भगवान्। 5 राजीवलोचनः—कमल के समान नेत्रों वाले। 6 श्रीमान् राजेन्द्रः—श्रीसम्पन्न राजाओं के भी राजा, चक्रवर्ती सम्राट्। 7 रघुपुंगवः—रघुकुल में सर्वश्रेष्ठ। 8 जानकीवल्लभः—जनककिशोरी सीता के प्रियतम। 9 जैत्रः—विजयशील। 10 जितामित्रः—शत्रुओं को जीतने वाले। 11 जनार्दनः—सम्पूर्ण मनुष्यों द्वारा याचना करने योग्य। 12 विश्वामित्रप्रियः—विश्वामित्रजी के प्रियतम। 13 दान्तः—जितेन्द्रिय। 14 शरण्यत्राणतत्परः—शरणागतों की रक्षा में संलग्न। 15 बालिप्रमथनः—बालिनामक वानर को मारने वाले। 16 वाग्मी—अच्छे वक्ता। 17 सत्यवाक्—सत्यवादी। 18 सत्यविक्रमः—सत्यपराक्रमी। 19 सत्यव्रतः—सत्य का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाले। 20 व्रतफलः—सम्पूर्ण व्रतों के प्राप्त होने योग्य फलस्वरूप। 21 सदाहनुमदाश्रयः—निरन्तर हनुमान् जी के आश्रय अथवा हनुमान जी के हृदयकमल में सदा निवास करने वाले। 22 कौसलेयः—कौसल्या जी के पुत्र। 23 खरध्वंसी—खर नामक राक्षस का नाश करने वाले। 24 विराधवधपण्डितः—विराध नामक दैत्य का वध करने में कुशल। 25 विभीषणपरित्राता—विभीषण के रक्षक। 26 दशग्रीवशिरोहरः—दशशीश रावण के मस्तक काटने वाले। 27 सप्ततालप्रभेत्ता—सात तालवृक्षों को एक ही बाण से बींध डालने वाले। 28 हरकोदण्डखण्डनः—जनकपुर में शिवजी के धनुष को तोड़ने वाले। 29 जामदग्न्यमहादर्पदलनः—परशुराम जी के महान् अभिमान को चूर्ण करने वाले। 30 ताडकान्तकृत्—ताड़का नामवाली राक्षसी का वध करने वाले। 31 वेदान्तपारः—वेदान्त के पारंगत विद्वान् अथवा वेदान्त से भी अतीत। 32 वेदात्मा—वेदस्वरूप। 33 भवबन्धैकभेषजः—संसारबन्धन से मुक्त करने के लिए एकमात्र औषधरूप। 34 दूषणत्रिशिरोऽरिः—दूषण और त्रिशिरा नामक राक्षसों के शत्रु। 35 त्रिमूर्तिः—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—तीन रूप धारण करने वाले। 36 त्रिगुणः—त्रिगुणस्वरूप अथवा तीनों गुणों के आश्रय। 37 त्रयी—तीन वेदस्वरूप। 38 त्रिविक्रमः—वामन अवतार में तीन पगों से समस्त त्रिलोकी ताप लेने वाले। 39 त्रिलोकात्मा—तीनों लोकों के आत्मा। 40 पुण्यचारित्रकीर्तनः—जिनकी लीलाओं का कीर्तन परम पवित्र है, ऐसे। 41 त्रिलोकरक्षकः—तीनों लोकों की रक्षा करने वाले। 42 धन्वी—धनुष धारण करने वाले। 43 दण्डकारण्यवासकृत्—दण्डकारण्य में निवास करने वाले। 44 अहल्यापावनः—अहल्या को पवित्र करने वाले। 45 पितृभक्तः—पिता के भक्त। 46 वरप्रदः—वर देने वाले। 47 जितेन्द्रियः—इन्द्रियों को काबू में रखने वाले। 48 जितक्रोधः—क्रोध को जीतने वाले। 49 जीतलोभः—लोभ की वृत्ति को परास्त करने वाले। 50 जगद्गुरुः—अपने आदर्श चरित्रों से सम्पूर्ण जगत् को शिक्षा देने के कारण सबके गुरु। 51 ऋक्षवानरसंघाती—वानर और भालुओं की सेना का संगठन करने वाले। 52 चित्रकूटसमाश्रयः—बनवास के समय चित्रकूट पर्वत पर निवास करने वाले। 53 जयन्तत्राणवरदः—जयन्त के प्राणों की रक्षा करके उसे वर देने वाले। 54 सुमित्रापुत्रसेवितः—सुमित्रानन्दन लक्ष्मण के द्वारा सेवित। 55 सर्वदेवाधिदेवः—सम्पूर्ण देवताओं के भी अधिदेवता। 56 मृतवानरजीवनः—मरे हुए वानरों को जीवित करने वाले। 57 मायामारीचहन्ता—मायामय मृग का रूप धारण करके आये हुए मारीच नामक राक्षस का वध करने वाले। 58 महाभागः—महान् सौभाग्यशाली। 59 महाभुजः—बड़ी-बड़ी बाँहों वाले। 60 सर्वदेवस्तुतः—सम्पूर्ण देवता जिनकी स्तुति करते हैं, ऐसे। 61 सौम्यः—शान्त-स्वभाव। 62 ब्रह्मण्यः—ब्राह्मणों के हितैषी। 63 मुनिसंत्तमः—मुनियों में श्रेष्ठ। 64 महायोगी—सम्पूर्ण योगों के अधिष्ठान होने के कारण महान् योगी। 65 महोदारः—परम उदार। 66 सुग्रीवस्थिरराज्यदः—सुग्रीव को स्थिर राज्य प्रदान करने वाले। 67 सर्वपुण्याधिकफलः—समस्त पुण्यों के उत्कृष्ट फलरूप। 68 स्मृतसर्वाघनाशनः—स्मरण करने मात्र से ही सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाले। 69 आदिपुरुषः—ब्रह्माजी को भी उत्पन्न करने के कारण सबके आदिभूत अर्न्तयामी परमात्मा। 70 महापुरुषः—समस्त पुरुषों में महान्। 71 परमः पुरुषः—सर्वोत्कृष्ट पुरुष। 72 पुण्योदयः—पुण्य को प्रगट करने वाले। 73 महासारः—सर्वश्रेष्ठ सारभूत परमात्मा। 74 पुराणपुरुषोत्तमः—पुराण प्रसिद्ध क्षर-अक्षर पुरुषों से श्रेष्ठ लीला पुरुषोत्तम। 75 स्मितवक्त्रः—जिनके मुख पर सदा मुस्कान की छटा छायी

रहती है; ऐसे । 76 **मितभाषी**—कम बोलने वाले । 77 **पूर्वभाषी**—पूर्व वक्ता । 78 **राघवः**—रघुकुल में अवतीर्ण । 79 **अनन्तगुणगम्भीरः**—अनन्त कल्याणमय गुणों से युक्त एवं गम्भीर । 80 **धीरोदात्तगुणोत्तरः**—धीरोदात्त नायक के लोकोत्तर गुणों से युक्त । 81 **मायामानुषचारित्रः**—अपनी माया का आश्रय लेकर मनुष्यों की-सी लीलाएं करने वाले । 82 **महादेवाभिपूजितः**—भगवान् शंकर के द्वारा निरन्तर पूजित । 83 **सेतुकृत्**—समुद्र पर पुल बांधने वाले । 84 **जितवारीशः**—समुद्र को जीतने वाले । 85 **सर्वतीर्थमयः**—सर्वतीर्थ-स्वरूप । 86 **हरिः**—पाप-ताप को हरने वाले । 87 **श्यामांगः**—श्याम विग्रह वाले । 88 **सुन्दरः**—परम मनोहर । 89 **शूरः**—अनुपम शौर्य से सम्पन्न वीर । 90 **पीतवासाः**—पीताम्बरधारी । 91 **धनुर्धरः**—धनुष धारण करने वाले । 92 **सर्वयज्ञाधिपः**—सम्पूर्ण यज्ञों के स्वामी । 93 **यज्ञः**—यज्ञस्वरूप । 94 **जरामरणवर्जितः**—बुढ़ापा और मृत्यु से रहित । 95 **शिवलिंगप्रतिष्ठाता**—रामेश्वर नामक ज्योतिलिंग की स्थापना करने वाले । 96 **सर्वाघगणवर्जितः**—समस्त पाप-राशि से रहित । 97 **परमात्मा**—परमश्रेष्ठ, नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्तस्वभाव । 98 **परं ब्रह्म**—सर्वोत्कृष्ट, सर्वव्यापी एवं सर्वाधिष्ठान परमेश्वर । 99 **सच्चिदानन्दविग्रहः**—सत्, चित् और आनन्द ही जिनके स्वरूप का निर्देश कराने वाला है, ऐसे परमात्मा अथवा सच्चिदानन्दमय दिव्यविग्रह । 100 **परं ज्योतिः**—परम प्रकाशमय, परम ज्ञानमय । 101 **परं धाम**—सर्वोत्कृष्ट तेज अथवा साकेतधामस्वरूप । 102 **पराकाशः**—त्रिपाद विभूति में स्थित परमव्योम नामक वैकुण्ठधामरूप, महाकाशस्वरूप ब्रह्म । 103 **परात्परः**—पर—इन्द्रियः, मन, बुद्धि आदि से भी परे परमेश्वर । 104 **परेशः**—सर्वोत्कृष्ट शासक । 105 **पारगः**—सबको पार लगाने वाले अथवा मायामय जगत् की सीमा से बाहर रहने वाले । 106 **पारः**—सबसे परे विद्यमान अथवा भवसागर से पार जाने की इच्छा रखने वाले प्राणियों के प्राप्तव्य परमात्मा । 107 **सर्वभूतात्मकः**—सर्वभूतस्वरूप । 108 **शिवः**—परम कल्याणमय—ये श्रीरामचन्द्रजी के एक सौ आठ नाम गोपनीय से भी गोपनीय हैं ।



उपदेश मंजरी

● सदा अपने मनको देखते रहो । अभिमान, काम, क्रोध और मोह आदि लुटेरे मनरूपी महल में ऐसे दुबक कर छिपे रहते हैं कि साधारण दृष्टि से देखने पर यह पता ही नहीं चलता कि ये अन्दर मौजूद हैं । परन्तु मौका पाकर ये प्रकट हो जाते हैं और फिर सद्गुण और सद्विचाररूपी धन को ऐसी निर्दयता से लूटते हैं कि उम्रभर का किया-कराया प्रायः सब नष्ट हो जाता है ।

● अपने को निर्भय मानकर कभी निश्चिन्त और असावधान न रहो । जब तक इन लुटेरों का तुम्हारे मन में बीजनाश न हो जाय तब तक बराबर इन्हें मारने की चेष्टा करते रहो । बड़ी-बड़ी युक्तियों से ये तुम्हारे मित्र और आज्ञाकारी सेवक-से बनकर अन्दर रहना चाहेंगे, परन्तु इन पर कभी विश्वास न करो । जरा-सा पता चलते ही पछाड़ने का जतन करो ।

● जहाँ तक बने, अभिमानी, कामी, क्रोधी और लोभी मनुष्यों का इच्छापूर्वक संग न करो । उनके संग से तुम्हारे हृदय में कलुषित भाव पैदा होंगे, और उनसे तुम्हें कोई सच्ची सहायता नहीं मिलेगी ।

● किसी की निन्दा मत करो । याद रक्खो इससे तुम्हारी जबान गन्दी होगी, तुम्हारी वासना मलिन होगी । जिसकी निन्दा करते हो उससे वैर होने की सम्भावना रहेगी और चित्त में कुसंस्कारों के चित्र अंकित होंगे ।

● बिना विशेष आवश्यकता के बड़े आदमियों से, सरकारी अफसरों से और मान-प्रतिष्ठा चाहने वाले पुरुषों से न मिलो । क्योंकि ऐसे लोग तुम्हारी सच्ची बात सुनना नहीं चाहेंगे । उनकी हाँ में हाँ मिलाकर तुम्हें अपने शुद्ध विचारों को दबाना पड़ेगा । यदि उनकी राय के विरुद्ध सच बोलोगे तो वे नाराज होंगे ।

● याद रक्खो—दोषी लोग ही दूसरे के दोषों को ढूंढ़ा करते हैं । क्योंकि उन्हें अपने दोषों को ढँकने के लिए दूसरे के दोषों की आड़ आवश्यक होती है । साधु लोग तो सब जगह साधुता ही खोजते हैं, और दिखलायी भी देती हैं उन्हें साधुता ही । वे नीरक्षीर-विवेकी हंस की तरह गुण ही ग्रहण करते हैं ।

● बन-ठनकर बाहर से लोगों से बहुत सुन्दर दिखायी देने लगे, इससे क्या हुआ । जब तक हृदय कलुषित है, जब तक अन्तर्यामी परमात्मा के सामने तुम्हारा अन्तःकरण सुन्दर होकर नहीं आता तब तक बाहरी सुन्दरता वैसी ही है जसे शराब से भरा हुआ सोने का कलसा ।

● प्रारब्धवश जगत् में तुम्हारी बड़ी कीर्ति हो गयी, लोग पूजने लगे । इससे क्या हुआ ? जब तक तुम्हारा हृदय मलिन है, लुक-छिप कर पाप करते हो, तब तक मानसिक अशान्ति, सन्ताप और नरक दुःख से कदापि नहीं बच सकते ।

● भक्ति और ज्ञान के नाम पर बुरे कर्म करना भगवान को ठगने की गन्दी चेष्टा करना है । इन लोगों से वह कहीं अच्छे हैं जो बुरे कर्म करते हैं, परन्तु बुरे कहलाते हैं । भक्ति और ज्ञान के नाम को जो कलंकित नहीं करते । ●

अनुभूत नुस्खे

1. नौसादर, काला नमक तथा राई—सम भाग लेकर चूर्ण बना लें। प्रतिदिन 3 माशा की मात्रा में भोजन के बाद दिन में दो बार सेवन करें। इससे पेट का भारीपन दूर होगा तथा हवा खारिज होने लगेगी।

2. उबला हुआ पानी एक कप लेकर उसमें एक चम्मच काला नमक मिलाकर चुस्की ले-लेकर दिन में तीन बार (प्रातः, दोपहर व सायं) पीने से बलगम का गिरना बन्द हो जाता है तथा खांसी दूर हो जाती है मगर ब्लड प्रेशर के रोगी इसका प्रयोग न करें।

नोट—उपर्युक्त दोनों नुस्से श्री मंगतराम जी (दरी वाले), 836, कटरा महेशदास, नई सड़क, दिल्ली-6 के आजमूदा हैं।

3. काला बांसा (खुश्क) एक भाग, अपामार्ग (चिरचिटा) आधा भाग, ऊँट कटेरा अपामार्ग के सम भाग, आक के फूल की बौंडी ऊँट कटेरा से आधा भाग, मकई के भुट्टे की छूंछ 2—सबको सुखाकर भस्म बना लें। थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर शीशी में भरकर रख लें। इसमें से एक रत्ती भस्म शहद या पान में, बच्चों को मलाई में मिलाकर प्रतिदिन एक खुराक दें। श्वास तथा काली खांसी में मुफीद है।

4. हरी मकोय 200 ग्राम, सिन्दूर 1 तो०, देसी घी की लौनी 25 ग्राम, देसी पान 1 पत्ता, देसी कपूर 10 रत्ती 1 मकोय को कूटकर रस निकालें। तदनन्तर सभी वस्तुएं मिलाकर घोंट लें और मरहम सा बना लें सूखिया (मसान) रोग से पीड़ित बच्चे की पीठ की रीढ़ की हड्डी पर अपने दोनों हाथों के अंगूठों पर दवा लगाकर जोर से ऊपर से नीचे को मलें। लगभग दस मिनट क्रिया करें। इसी बीच सफेद रेशे (कीड़े) निकलने लगेंगे। उनकी चिन्ता न करें। थोड़ी देर बाद नीम के पत्ते डालकर उबला पानी सुहाता (थोड़ा गर्म) रहने पर उसमें जरा सा नमक डालकर स्नान करायें। दो-तीन दिन या आवश्यकतानुसार प्रयोग करने से बच्चों का सूखा (मसान) रोग दूर हो जाता है।

5. कुटकी 100 ग्राम कपड़ छन करके 15 पुड़िया बना लें। एक पुड़िया प्रतिदिन प्रातः गाय के दूध में बिना मीठा डाले सेवन करने से खूनों बबासीर दूर होती है।

इस नुस्खे के अतिरिक्त प्रातः शौच (टट्टी) के समय अपना पहला पेशाब किसी कपड़े में लेकर मस्सों पर लगायें। मलें नहीं। यह क्रिया एक दिन छोड़कर तब तक करें, जब तक पेशाब मस्सों पर लगता रहे। लगना बन्द होने पर यह क्रिया बन्द कर दें और समझें मस्से ठीक हो गये हैं।

परहेज—तेल, मिर्च, गुड़, खटाई, कब्जकारक एवं गर्म पदार्थों (आलू आदि) का सेवन न करें।

6. आठ करेले छोटे (कोंपल), आठ पीपल की कोंपल (पत्ते लेकर खरल करें। जितना अर्क निकले, उसमें उतना ही पानी मिलाकर आठ खुराक बनाकर 2-2 घंटे के अन्तर से एक दिन पी लें। एक ही दिन में लाभ होगा। परहेज—पूर्वोक्त।

नोट—नं० 3 से 6 तक के चारों नुस्खे श्री भूपेन्द्र रस्तोगी, त्रिनगर, नई दिल्ली के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं।

7. आंवला हरा 1 कि० लेकर कुकर में पानी या बिना पानी उबालें। बाद में मिक्सी में पिट्ठी बना लें। फिर 3 छ० घी में भुनें। तत्पश्चात् 3 पाव चीनी की चाशनी बनाकर उसमें पिट्ठी डाल दें। इस क्रिया से पूर्व सोंठ 2 तो०, छोटी पीपल 2 तो०, काली मिर्च 2 तो०, दालचीनी 2 तो०, छोटी इलायची 2 तो० का चूर्ण बनाकर रख लें। इस चूर्ण को चाशनी व पिट्ठी में मिलाकर अमृतबान में रख लें। इसमें से आधा पाव नित्य प्रातः सेवन करने से सिर दर्द दूर हो जाता है।

—रामजीलाल वैद्य आयुर्वेदाचार्य, फिरोजाबाद

8. गोमूत्र में नमक मिलाकर पिलाने से बालकों का लीवर तथा क्रमि मर जाते हैं।

9. नीम्बू में नमक, काली मिर्च मिलाकर गर्म करके सेवन करने से सिर दर्द दूर हो जाता है।

10. यदि दाँतों में मवाद, पायरिया रोग हो तो बादाम के छिलके को जलाकर उसमें गेरू और सैंधानमक, अकरकरा मिलाकर दाँतों में मंजन की तरह मलने से पायरिया रोग में बहुत लाभ होता है।

11. एक कली का लहसुन को पीसकर गर्म घी में सेक करखाने से राजयक्ष्मा रोग ठीक होता है और हृदय रोग में फायदा करता है।

12. रात को सोते समय 2 तो० सनाय, 1 तो० सैन्धानमक पीसकर गर्म पानी के साथ लेने से पेट की बीमारी ठीक होती है तथा जुलाब अच्छा होता है।

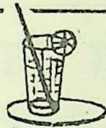
13. नीम के पत्तों को पीसकर—हल्दी मिलाकर फोड़े-फुन्सी, घाव पर लगाने से जल्दी से आराम होकर घाव में मवाद का आना बन्द हो जाता है।

14. बड़ का दूध 1 तोला सूर्य उगने से पूर्व बताशों में निकालकर खाने में 10 दिन में नामर्दी रोग मिट जाता है।

15. लौंग या बादाम घी में पीसकर लगाने से कनपटी का दर्द दूर होता है।

—ऋषिकुमार आयुर्वेद शास्त्री, दिल्ली

घरेलू उपचार



बच्चों का सूखा रोग

खाने का उत्तम चूना 1 तोला, मिश्री आधी छटांक, पानी आधा सेर इन तीनों चीजों को मिलाकर रख दें। जब पानी नितर जावे तब छानकर शीशी में भरकर रख लें। ध्यान रहे इनमें चूना न जाने पावे। इस नितरे पानी को 10 से 25 बूंद तक दूध में मिलाकर सुबह-शाम देने से लाभ होता है। तथा हाजमा ठीक रहता है।

कुक्कुर खांसी

यह रोग एक से दूसरे को लग जाता है। यह प्राय: 40 दिनों में शांत होता है। काकड़ासिंगी, दालचीनी, छोटी पीपल, छोटी भारंगी, बड़ी इलायची— सब चीजें समभाग लेकर कूट-पीस-छानकर रख लें। इसे बच्चों की उम्र के अनुसार 3 रत्ती से 1 माशे तक एक खुराक दिन में तीन बार अदरख, पान के रस तथा शहद के साथ दें।

आग से जल जाने पर

(1) आलू पीसकर लगाने से जलन शान्त हो जाती है तथा फफोला नहीं पड़ने पाता। (2) असली शहद का लेप करने से जलन शांत हो जाती है। (3) नारियल के तेल में चूने का नितरा हुआ पानी मिलाकर लगाने से जलन शांत होती है। (4) ग्लिसरिन का लेप करने से लाभ होता है। (5) एक मलिन कपड़ा तिल्ली के तेल में भिगोकर और कुछ गरम करके बांधने से लाभ होता है।

नोट— ऊपर लिखे हुए उपाय तुरन्त करने चाहिएं। जली हुई जगह में पानी पड़ने या हवा लगने से फफोला पड़ जाता है। जली हुई जगह पर तेललगा कर सेंक किया जावे तो फफोला नहीं पड़ने पाता।

बाल उड़ जाने पर

हाथी दांत को जलाकर रसोत में मिलाकर लेप करें। घमरा की पत्ती जिसे भृंगराज कहते हैं ताजी लेकर, पीसकर, लेप करने से भी बाल निकल आते हैं। घमरा को प्राय: सभी घास बेचने वाले या बगीचे के माली पहचानते हैं।

जाड़ों में पांवों की उंगलियों में सूजन और खुजली

इसका मुख्य कारण पांवों में रुधिर का दौरा ठीक न होना है। ऐसी सूरत में पांवों को थोड़ी देर कुछ नमक छोड़कर पानी में रखें। फिर नारियल के तेल में थोड़ी-सी फिटकरी मिलाकर गीले पांवों पर मलें।

चोट मोच के सूजन पर

सोंठ और लाजवन्ती समभाग में लेकर पीस लें, फिर किसी कटोरी में रखकर उसमें पानी डालकर फैला लें, वह रबर के माफिक तनती है। इसे आवश्यकतानुसार फैलाकर चिपका दें और ऊपर से कपड़े की पट्टी बांध दें, इस लेप से चोट-मोच की सूजन का दर्द जल्द दूर हो जाता है।

बरसाती फुन्सियां

हर्रे, फिटकरी पानी में घिसकर लगाने से लाभ होता है।

मुहासों पर

सुपारी को पानी में घिस कर लगाने से लाभ होता है। इस हेतु सुरक्ता स्ट्रांग भी लाभदायक है।

कान बहने पर

कान साफ करके असली शहद की 2 या 3 बूंद डाल कर रुई का फाहा लगा दें या आग पर फुलाई हुई फिटकरी और हल्दी बारीक पीस कर समभाग में मिला कर थोड़ी कान में डालें।

चेचक के घाव पर

हल्दी और कत्था बारीक पीसकर लगाने से घाव जल्द भर जाता है।

नींबू का शरबत

नींबू का रस 1 पाव, शक्कर ढाई पाव मिलाकर कलईदार बर्तन में डालकर आग पर पकाकर चाशनी तैयार कर लें, उसके बाद उसे बोतल में भर दें। इसका सेवन करने से गर्मी के दिनों में व्याकुलता, अफरन, उबकाई, अरुचि तथा रक्तविकार दूर होते हैं। इस शर्बत में सेंधा नमक, काला नमक, भुना जीरा, कालीमिर्च और भुनी हींग मिलाकर चाटने से उदर सम्बन्धी अनेक रोग दूर हो जाते हैं तथा भूख बढ़ती है।

बगल गन्ध पर

जामुन की छाल और पत्तियां डालकर औटाये हुए पानी में बगल धोने से बगलदुर्गंध चली जाती है।

हैजे पर

थोड़ा सा नीम का फूल, 4 या 5 काली मिर्च के साथ पीस कर पिलाना लाभदायक है।

खूनी बवासीर पर

दो सूखे अंजीर लेकर शाम को पानी में भिगोकर सुबह खाना तथा सुबह के भीगे शाम को खाना आवश्यक है।



लू लगने पर

बकरी के दूध से हाथ-पैरों में मालिश करें।

जले हुए के सफेद दाग पर

चन्दन का लेप लगायें।

वमन

अजीर्ण, अम्लपित्त, प्रकृति-विरुद्ध भोजन, अधिक भोजन व पेट में कीड़े होने से वमन (उल्टी) होती है। साधारणतया निम्नलिखित उपायों में से कोई एक उपाय करने से लाभ होता है :—

1. काला नमक, सफेद जीरा, काली मिर्च मिश्री के साथ दस-दस ग्राम लेकर बारीक चूर्ण करें, इस चूर्ण को चालीस पुड़िया बनायें, तब सुबह-शाम एक-एक पुड़िया शहद में लें।

2. पीपल की छाल को आग पर जलायें, जली छाल को पानी में डालकर छानें, फिर पीयें।

3. थोड़ा जायफल पानी के साथ चंदन की तरह घिसें, फिर एक प्याला पानी में घोलकर पियें।

4. गर्भावस्था में आधा-आधा आंवलों का मुरब्बा दिन में तीन बार लें।

5. दस ग्राम लौंग के चूर्ण की चालीस पुड़िया बनाकर, सुबह-शाम एक एक शहद के साथ सेवन करें।

यूनानी तिब्ब द्वारा साधारण इलाज

सिर दर्द (सुदा)

सिर का दर्द कई प्रकार का होता है, जो कभी पूरे सिर में या कभी सिर के किसी हिस्से में होता है। साथ ही कभी-कभी मतली और कै की शिकायत भी होती है।

(1) नुस्खा—उस्तुखुद्दूस 3 ग्राम, धनिया 3 ग्राम, काली मिर्च 5 अदद।

प्रयोग विधि—बारीक चूर्ण करके सुबह खाली पेट पानी के साथ लें। इसके बाद आधा घण्टे तक बिस्तर में आंखें बन्द करके आराम करें।

(2) नुस्खा—बबूल के फूल 10 ग्राम, धनिया 10 ग्राम, कद्दू के बीजों की गिरी 10 ग्राम।

प्रयोग विधि—बारीक चूर्ण करके पानी के साथ 3-3 ग्राम दिन में दो बार लें।

(3) नुस्खा—काफूर 500 मिलिग्राम, नौशादर 2 ग्राम।

प्रयोग विधि—उपरोक्त दवाओं का अलग-अलग बारीक चूर्ण बनाकर अच्छी तरह मिलाकर एक साफ शीशी में कार्क लगा कर रखें। आवश्यकता के समय शीशी हिला कर सुंघायें।

(4) नुस्खा—सत्त पोदीना, सत्त अजवायन, काफूर बराबर-बराबर लें।

प्रयोग विधि—तीनों को साफ शीशी में बन्द करके रखें। यह पानी जैसा पतला हो जाएगा। इसमें से 3 बूंद दवा थोड़े पानी में मिलाकर लें। माथे तथा कनपटियों पर भी लगा सकते हैं।

आधा सीसी (शक़ीक़ा)

यह समय-समय पर सिर में होने वाला दर्द है जो आम तौर पर सिर के एक तरफ होता है। कभी यह पूरे सिर में फैल जाता है। इसका दौरा कुछ मिनट से लेकर कई दिन तक रहता है। इसके साथ मतली और कै की भी शिकायत होती है।

(1) नुस्खा—रीठे का छिलका एक अदद।

प्रयोग विधि—60 मिलि लिटर पानी में इसे मलें, यहाँ तक कि झाग बन जायें। इसके बाद 2 बूंदें नाक में डालें।

(2) नुस्खा—धनिया 3 ग्राम, उस्तुखुद्दूस 3 ग्राम, काली मिर्च 5 अदद।

प्रयोग विधि—बारीक चूर्ण बना लें। सुबह सूरज निकलने से पहले पानी के साथ लें और आधा घंटा बिस्तर पर आराम करें। तेज दर्द की हालत में खाना बन्द कर दें और तेज रोशनी से बचें।

सर चकराना-घुमेर (स़दर व दुवार)

(1) नुस्खा—ख़शख़ाश 4 ग्राम, धनिया 4 ग्राम, बिनौले की गिरी 4 ग्राम।

प्रयोग विधि—120 ग्राम मिलि लिटर पानी में पीस छान कर रोजाना सुबह पियें।

(2) नुस्खा—मेंहदी के बीज 4 ग्राम, शहद 10 ग्राम।

प्रयोग विधि—मेंहदी के सूखे पत्तों का चूर्ण बनाकर शहद में मिलाकर चाटें। इसी प्रकार दिन में दो बार लें।

(3) नुस्खा—मुरब्बा आंवला एक अदद, चांदी का वर्क एक।

प्रयोग विधि—मुरब्बा आँवला को चांदी के वर्क में लपेटकर रोज सुबह नाश्ते से पहले लें।

(4) नुस्खा—इमली का गूदा 25 ग्राम, शक्कर 6 ग्राम।

प्रयोग विधि—इमली का गूदा, 120 मिलि लिटर पानी में एक घण्टे तक भिगोयें। फिर हाथ से मलकर छान लें और उसमें शक्कर मिला लें। दिन में दो बार लें।

नोट—यह खास तौर पर पित्त की ज्यादती में फायदा करता है।

नज़ला व जुकाम

इसमें बार-बार छींकें आती हैं। नाक से पानी बहता है। खांसी, थकावट और कभी हल्का बुखार भी होता है।

(1) नुस्खा—गेहूं की भूसी 6 ग्राम, काली मिर्च 5 अदद, नमक 1 ग्राम।

प्रयोग विधि—120 मिलि लिटर पानी में उबालकर छान लें और दिन में दो बार लें।

(2) नुस्खा—बिहिदाना 3 ग्राम, उन्नाब 5 अदद, सपिस्तां 9 अदद।

प्रयोग विधि—बिहिदाना को छोड़कर बाकी दो दवायें 120 मिलि लिटर पानी में उबालकर छान लें। बिहिदाने को 60 मिलि लिटर पानी में मिलाकर उसका लुआब निकालकर उपर्युक्त दवा में मिला लें तथा शक्कर मिलाकर मीठा कर लें और दिन में दो बार लें।

नोट—यह नुस्खा खास तौर पर गर्मी के नज़ले और खुश्क खांसी में फायदा करता है।

मृत्यु की सही परीक्षा

बात सन् 1896 की है। कुछ अंग्रेज युवक अधिकारी आपस में हंसी-मजाक कर रहे थे कि अचानक उनमें से एक व्यक्ति का सिर लटक गया और वह मेज पर गिर गया। प्राथमिक उपचार के सभी प्रयत्न बेकार हुए।

इस युवक के परिवार में व्यक्तियों को दिल की बीमारी थी और इसका भी इलाज हो चुका था। इस युवक को कूनूर के कब्रिस्तान में दफना दिया गया। युवक के परिवार के लोग उसे उटकमंड के सेंटजान चर्च के अहाते में दफनाना चाहते थे। आखिर 6 महीने बाद शव को हटाने की आज्ञा मिली। जब ताबूत को पहिचान के लिए खोला गया तो वे एकदम घबड़ाकर पीछे हट गये। कारण, इस समय लाश मुँह के बल औंधी पड़ी थी, सीने पर कमीज के चीथड़े हो गये थे। मुँह के पास ताबूत के फर्श पर ढेरों खून सूखकर जम चुका था। उसने अपनी उंगलियां चबा डाली थीं। स्पष्ट था, इस युवक को मरा हुआ समझकर 'मरने' के पहिले हीं दफना दिया गया और कब्र में जब उसे होश आया तो उसने निकलने की जो तोड़ कोशिश की। भय और क्रोध में उसने अपने कपड़े फाड़ डाले और अन्त में दम घुटने से मरा।

इस घटना के प्रति कोई भी व्यक्ति सन्देह कर सकता है कि, 'मृत व्यक्ति' वास्तव में जीवित नहीं हुआ, बल्कि उठाने, रखने, लाने या ले जाने में ताबूत के अन्दर लाश उलट गयी होगी और खरोंच लगने से कपड़े फट गये होंगे। लेकिन यहां हम एक ऐसी घटना का भी उल्लेख कर रहे हैं, जिसमें 'मृत व्यक्ति' उठ बैठा और काफी समय तक जीवित रहा।

श्वर्त्स नामक पादरी का देहान्त भारतवर्ष में हुआ। तीन दिन के बाद अन्तिम संस्कार के लिए एकत्रित लोग लाश के चारों ओर बैठे पादरी का प्रिय भजन गा रहे थे। भजन सुनने से पादरी के शरीर में चेतना का संचार हुआ और वह लेटी अवस्था में गाने लगा। तब लोगों की समझ में आया कि पादरी जीवित था।

इस प्रकार प्रायः ऐसी घटनायें होती हैं जिनमें आदमी को एक प्रकार की मूर्च्छा आ जाती है, जिससे वह मरा हुआ प्रतीत होता है। उसकी सांस रुक जाती है। दिल की धड़कन इतनी कम हो जाती है कि जांच से पता नहीं चलता।

सिद्ध योगियों की समाधि की बात हम सब जानते हैं। ऐसे योगी अपनी इच्छानुसार चेतनहीनता की अवस्था में चले जाते हैं। साधारण व्यक्ति भी किसी दुर्घटना के कारण कभी-कभी ऐसी मूर्च्छित अवस्था में पहुँच जाते हैं। साधारणतः यह मूर्च्छा घंटों, महीनों तक भी चल सकती है। किसी-किसी को ऐसी मूर्च्छा आती है कि उसमें जीवन का कोई चिन्ह शेष नहीं बचता। तनिक गर्मी मिलने पर प्रायः ऐसी मूर्च्छा मिट जाती है। पारसी लोग अपने मृतक का संस्कार करने के पहिले गर्म पानी से धोते हैं। फिर कई घंटे तक उसके पास आग जलाकर उसमें सुगन्धि डालते हैं। कुछ ऐसी घटना भी सुनने में आयी हैं कि मृत व्यक्ति चिता की गर्मी पाकर उठ बैठा, परन्तु सम्बन्धियों ने उसे प्रेत समझकर बांस से मारना शुरू कर दिया और समझदार व्यक्तियों के हस्तक्षेप से उसे बचा लिया गया। कहीं-कहीं मार डाला गया, यह भी सुनने में आता है। एसी दुर्घटना न हो, इसके लिए नीचे दियें जा रहे इस लेख के अंश अत्युपयोगी हैं।

मृत्यु के लक्षण

जब कोई मरता है तो साधारणतः उसके दिल की धड़कन बन्द हो जाती है, लेकिन नाड़ी और दिल की धड़कन बन्द होने पर भी प्रायः मरने का धोखा हो सकता है। वास्तविक मृत्यु होने की पहचान निम्नलिखित है—

1. **श्वास परीक्षा**—नाक के पास साफ शीशा रख देने से यदि तनिक भी श्वास चल रही होगी तो शीशे पर धुन्ध जमा हो जाती है।

2. **विद्युत परीक्षा**—मरने के बाद शरीर में हल्के बिजली के करण्ट का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. **अंगों का कड़ा होना**—मृत्यु के बाद हाथ-पैर अकड़ जाते हैं, उनका लोच खत्म हो जाता है। उंगलियों के बीच टार्च की रोशनी से लाल प्रकाश नहीं दिखाई देता।

4. **सड़न क्रिया**—मृत्यु का सही प्रमाण शरीर में सड़न क्रिया है। जीवित व्यक्ति चाहे कितने ही समय तक मूर्च्छित रहे, सड़न शुरू नहीं होता। इसके विपरीत मृत शरीर कुछ ही समय में सड़ना शुरू हो जाता है। गर्म प्रदेशों या गर्मी के मौसम में इसी कारण कुछ घंटों में शव से बदबू आने लगती है।

● श्राद्धादि निर्णय :

एक सूर्य संक्रान्ति में दो अमावस्या हों तो वह मल-मास होता है। इसमें पार्वणश्राद्ध नहीं करना चाहिये तथा अनित्य अनिमित कर्म, महादानादि व्रत, अग्न्याधान, यज्ञ, तीर्थ यात्रा, देव, रामतड़ागादि प्रतिष्ठा काम्य वृषोत्सर्गादि तथा विवाहादि, शिशु संस्कार, गृहारम्भादि शुभ कृत्य न करें। प्रथम वार्षिक श्राद्ध, मासिक सपिण्डि करणादि मलमास में विहित (कहे हुए) हैं। द्वितीय वार्षिकादि श्राद्ध मलमास के समाप्त होने पर चौदहवें महीने के प्रथम दिन में करें।

● ग्रहण दिने श्राद्ध निर्णयः

ग्रहण के दिन वार्षिक श्राद्ध आ जावे तो श्राद्ध आम (कच्चा) अन्न से व सुवर्ण से उसी दिन श्राद्ध करें, दूसरे दिन न ठहरें। रविवार को सूर्य ग्रहण व चन्द्रवार को चन्द्र ग्रहण हो तो चूड़ामणि योग होता है। इसमें कच्चे अन्न से श्राद्ध अवश्य करना चाहिये।

● श्राद्ध विघ्ने निर्णयः

श्राद्ध में ब्राह्मणों को निमन्त्रण देने के बाद कोई मर जाय तो अशौच नहीं होता है।

व्रत यज्ञ विवाहेषु श्राद्धे हेमार्चने जपे।
आब्ध सूतक नस्यात् अनाख्येतु सूतकम् ॥
(पूर्व संकल्पितान्नेषु न दोषः परिकीर्तितः)

● अशौच मध्ये श्राद्ध दिन निर्णयः

यदि अशौच दिनों में श्राद्ध दिन आ पड़े तो अशौच पूरा होने पर एकादशी अमावस्या या दूसरे महीने में उसी तिथि में श्राद्ध करें। यदि श्राद्ध काल में अपुत्रा स्त्री रजः-स्वला हो तो पाँचवें दिन श्राद्ध करें।

●श्राद्ध करने के अधिकारी क्रमशः

पुत्र, पत्नी, सहोदर भ्रातादि श्राद्ध करने के अधिकारी हैं अर्थात् सबसे पूर्व मृतक का पुत्र श्राद्ध करे। पुत्र न हो तो पत्नी श्राद्ध करे। पत्नी भी न होने पर सहोदर भ्रातादि क्रमशः श्राद्ध करें। (वशिष्ठ हारीत शंख लिखितों के वाक्यों में) पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र, पुत्री का पुत्र, पत्नी भ्राता, भ्राता का पुत्र, पिता, माता, स्नुषा (बहू), भागिनी, भानजा, सपिण्ड सोदक इनमें पूर्व के न होने से पिछले-पिछले पिण्ड के दाता कहे हैं।

न तत्र वीरजायन्ते न रोगो न शतायुषः।
न च श्रेयोऽधिगच्छन्ति यत्र श्राद्धं विवर्जितम् ॥

●श्राद्ध काल (समय) निर्णयः

पूर्वाह्णे दैविकं श्राद्धमपराह्णे तु पार्वणम्।
एकोदिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धि निमित्तकम् ॥

● नान्दी श्राद्ध काल

शुक्ल पक्षस्य पूर्वाह्णे श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः।
कृष्णपक्षेऽपराह्णे च रौहिणं न तु लंघयेत् ॥

●गया श्राद्ध काल

मीने मीषे गते सूर्ये, कन्यायां कार्मुके घटे।
दुर्लभं त्रिषुलोकेषु गयायां पिण्ड पातनम् ॥
मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्र सूर्ययोः।
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्ड पातनम् ॥
गया श्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषतः।
काले वा परपक्षेवा चतुर्थ्यादि तिथिष्वपि ॥
महालयं गया श्राद्धं मातापित्रोर्मृतेऽहनि।
कृतोद्वाहोऽपि कुर्वीत पिण्डदानं यथाविधिः ॥
मृताहेच सपिण्डं च गयाश्राद्धं महाफलं ॥

अधिमासे जन्मदिने तथास्ते गुरु शुक्रयोः।
न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्ते च वृहस्पतौ ॥

मतान्तर—प्रत्येक मास, गुरु शुक्रास्त, अधिमास, सिंह के वृहस्पति में भी गया श्राद्ध हो सकता है।

गया-श्राद्ध स्वग्राम में ही करना आवश्यक नहीं, विदेश में भी हो सकता है। 1

● गया श्राद्ध निषेध

यदि पिता जीवित हो तो, पुत्र को कोई भी श्राद्ध करने का अधिकार नहीं। यदि किसी तरह गया क्षेत्र में पहुंच जाय तो मातृ तर्पण कर सकता है।

●श्राद्धे निषिद्ध पदार्थाः

आशिषो द्विगुणा दर्भा जपाशो स्वस्तिवाचनम्।
पितृशब्दः स्वसम्बन्धः शर्म शब्द तथैवच ॥
पात्रालम्भोऽवगाहश्च उल्मुकोल्लेखनादिकम्।
तृप्ति प्रश्नश्च विकिरः शेषप्रश्नस्तथैव च ॥
तदक्षिणा विसर्गश्च सोमान्त गमनं तथा।
अष्टादश पदार्थश्चि प्रेत श्राद्धे विवर्जयेत् ॥

●सपिण्डादि विचार

मूल पुरुष से सात पीढ़ी तक सपिण्ड और ८वीं पीढ़ी से १४वीं पीढ़ी तक समानोदक और १५ से २१वीं पीढ़ी तक सगोत्र कहलाते हैं।

●अशौच भेदाः

अशौच दो प्रकार का होता है—
(१) जननाशौच (२) मरणाशौच।

●गर्भस्रावादौ अशौचम्

गर्भ से ४ मास तक गर्भस्राव कहलाता है, ५-६ महीने में गर्भपात, उपरान्त प्रसव कहलाता है। गर्भस्राव में ३ दिन व चौथे महीने में ४ दिन, ५।६ महीने में ५।६ दिन का क्रमशः तथा ७ मास के बाद के प्रसव का अपने-अपने वर्णों के अनुसार पूर्णाशौच होता है। ब्राह्मण १० दिन, क्षत्रिय १२ दिन, वैश्य १५ दिन व शूद्र को १ मास तक सूतक होता है।

●अशौच सम्पाते निर्णयः

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच होवे तो पहले के साथ शुद्धि होती है। ५ दिन के बाद ९ दिन तक पिछले के साथ शुद्धि होती है। यदि दसवें दिन की रात को दूसरा अशौच हो जावे तो अशौच २ दिन तक और बढ़ता है। यदि दसवें दिन रात्रि के अन्तिम प्रहर में अशौचान्तर हो तो अशौच ३ दिन और बढ़ जाता है। जननाशौच में मरणाशौच तथा मरणाशौच में जननाशौच होवे तो मरणाशौच के साथ शुद्धि होती है।

●मृतोत्पत्तौ विचारः

मरा हुआ प्रसव हो तो पितादि सपिण्डों को अपने वर्णानुसार सूतक होता है। यदि प्रसव नाल छेदन के पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन और पितादि को ३ दिन का जननाशौच लगेगा। नाल छेदन के बाद १० दिन के भीतर बच्चा मर जाय तो पितादि सपिण्डो को पूरा जननाशौच लगेगा।

● मृताशौच निर्णयः

१० दिन के बाद ६ मास के भीतर दांत आने से पहले बालक मरने पर माता-पिता को ३ दिन का मृताशौच होगा और सपिण्ड स्नान मात्र से शुद्ध होते हैं एवं कन्या के मरने पर पिता को एक दिन का अशौच होता है। ७ महीने से ३ वर्ष तक के बालक का मरण हो तो पिता को ३ दिन

तथा सपिण्डों को १ दिन का अशौच होता है। ३ वर्ष के अन्दर चूड़ा (मुण्डन) संस्कार हुआ हो तो दाह संस्कार हो सकता है। स्मरण रहे २ वर्ष तक के बालक का (तथा जिसका चूड़ाकर्म संस्कार न किया हो) दाह संस्कार नहीं करना चाहिए। उपनयन संस्कार के बाद पित्रादि सपिण्डों को पूर्ण मृताशौच होता है।

● दशाह मध्ये दर्शपाते निर्णयः

यदि १० दिन के अशौच में ३ दिन के बाद अमावस्या आ जाय तो प्रेततन्त्र अर्थात् पिण्डोदक क्रिया अमावस्या के भीतर ही समाप्त करनी चाहिये तथा उत्तर तन्त्र (सपिण्डन) अमावस्या के बाद करना चाहिये। देशाचार से प्रेत तन्त्र को अमावस्या के बाद भी प्रारम्भ कर सकते हैं।

● दौहित्र जन्मनी निर्णयः

विवाहिता लड़की के पिता के घर में बालक उत्पन्न हो तो माता-पिता को ३।३ दिन का, सगे भाई और चाचा को १।१ दिन का सूतक होता है। पति के घर में बच्चा होने पर बच्चे के नाना के कुल को सूतक नहीं होता है।

● बन्धु त्रय मरणे अशौचम्

अपनी फूफी, मौसी और मामा के पुत्रों को आत्म बान्धव कहते हैं। पिता की फूफी, मौसी और मामा के पुत्रों को पितृ बान्धव कहते हैं। माता की फूफी, मौसी और मामा के पुत्रों को मातृ बान्धव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बान्धवों में परस्पर उपनीत की मृत्यु होने पर ३ दिन का, अनुपनीत की मृत्यु होने पर १ दिन का अशौच होता है। बान्धवों की बहिन मरे तो डेढ़ दिन का तथा विवाहिता कन्या मरे तो १ दिन का अशौच होता है।

● अन्य सम्बन्धी मरणे अशौच निर्णय :

मामा, मामी के मरने पर भानजे को ३ दिन का और उपनीत भानजे के मरने पर मामा, मामी को भी ३ दिन का और अनुपनीत भानजे की मृत्यु पर १।। दिन का अशौच होता है। भानजी के मरने पर स्नान मात्र से शुद्धि होती है।

● पञ्चक मरण में क्या करना चाहिए

यदि कोई व्यक्ति धनिष्ठादि ५ नक्षत्रों में मरे तो कुशा की ५ प्रतिमा बनानी चाहिए और संकल्प 'देश-कालौ संकीर्त्य पंचक मरण जनित वंशारिष्ट परिहारार्थं दर्भमयो पञ्च प्रतिमा कृत्वा ऊर्णा सूत्रेण वेष्टयित्वा यव पिष्टेनानुलेप्य, ॐ प्रेत वाहाय नमः ॐ प्रेत सखाय नमः ॐ प्रेतमाय नमः ॐ प्रेत भूमिपाय नमः ॐ प्रेत हर्त्रेनमः' इन मन्त्रों से पूजन करके १ सिर पर, दूसरी नेत्रों पर, तीसरी वाम कुक्षि में, चौथी नाभि में, पांचवीं पैरों पर रख कर उपर्युक्त मन्त्रों से स्नान कराके घी की ५ आहुति देनी चाहिए। सम्भव हो पञ्चक में दाह न करें।

● पञ्चक मरण शान्ति

पञ्चक मरण में लोग मृतक के अग्नि संस्कार में ही ५ पुतले जलाकर अपने प्रायश्चित की इतिश्री समझ लेते हैं, परन्तु यह उचित नहीं; उसका विधान यह है—

सपिण्डी करण के बाद पुण्याहवाचन करना चाहिए। हवन वेदी का निर्माण करके ५ कलश मंगा कर १ कलश वेदी के ईशान कोण में तथा ४ कलश चारों दिशाओं में रखें ५ कलशों पर ५ सुवर्ण की मूर्ति धनिष्ठादि पांचों नक्षत्रों के स्वामियों की बनाकर रखनी चाहिए और तब उनका पूजन व मृत्युञ्जय का पूजन करना चाहिए। धनिष्ठादि के ५ मन्त्र—ॐ वसोपवित्र० ॐवरुणस्यांत्तम्भ०, ॐउतनोहिर्बुध्न्य, ॐ सिवोनामासि०, ॐ पूषन्तवव्रते० इन मन्त्रों का जप तथा इन्हीं से हवन करना चाहिए, ५ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

● अग्निवास

शैका तिथिर्वार युता कृताप्ता, शेषे गुणेऽभ्रं भुवि वह्नि वास ॥ सौख्याय होमे शशि युग्म शेषे, प्राणार्थनाशो दिवि भूतलंच ॥

भावार्थ—वर्तमान तिथि में वार जोड़ कर १ और जोड़ना, ४ का भाग देना ०।३ शेष रहे तो अग्नि का वास पृथ्वी में है होम में सिद्धि होगी। २।१ शेष रहे तो अग्नि वास पृथ्वी में नहीं। होमादि कर्म में प्राण धनादि नाश हो।

● शिववास विचार

तिथि च द्विगुणी कृत्य पंचभिश्च समन्वितम्।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं शिववास उच्यते॥
एके कैलाश वासं च द्वितीये गौरि सन्निधौ।
तृतीये वृषभारूढ चतुर्थे च सभास्थिते॥
पंचमे भोजने चैव क्रीडायान्तु रसात्मके।
शून्ये श्मशानके चैव शिववासं च योजयेत्॥

● शिववास फलम्

कैलाशे च भवेत्सौख्यं गौर्यायान्तु शुभं वदेत्।
वृषभे च श्रियः प्राप्तिः क्रीडा संताप कारकः॥
श्मशाने तु भवेन्मृत्युः शिववास फलम् वदेत्॥

● एक नक्षत्र जनन दोष

पिता-पुत्र दोनों का एक ही नक्षत्र हो या दो भाइयों का एक नक्षत्र हो तो अशुभ सूचक होता है। यदि पिता-पुत्र दोनों का एक ही नक्षत्र हो तथा एक ही चरण हो तो विशेष अशुभ होता है। एकादश ब्राह्मणों द्वारा शान्ति पाठ करा देने से दोष समाप्त हो जाता है।

● परिवित्ति निर्णयः

ज्येष्ठ भ्राता का विवाह न होने पर यदि छोटे भाई का विवाह किया जाय तो ज्येष्ठ परिवित्ति कनिष्ठ परवेत्ता होता है। एक माता की सन्तान में ही यह दोष होता है।

● त्रिखल जन्म फल

यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र का जन्म हो तो 'त्रिखल' नामक दोष के कारण कन्या से माता को, पुत्र से पिता को भय, धन हानि आदि कष्ट होते हैं। अतः शीघ्र ही शान्ति के उपाय कर लेने चाहिए। तब ही शुभ होता है। इस निमित्त तीन अन्न, तीन पात्र, तीन वस्त्र दान करें।

● अशुभ प्रसव मास

वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो ६ मास में पिता अथवा घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी ब्यावे तो महाभय होता है। उपर्युक्त प्रसूतों का सिर्फ प्रथम गर्भ का ही दोष होने का मतान्तर है। उपर्युक्त दोष सौर मास से ही जानने चाहिए, चान्द्रादि मास से नहीं।

● सौर सिंह (भाद्रपद) मास में गाय आदि के प्रसूति पर

सौर भाद्रपद मास में यदि गाय का बच्चा हो तो स्वामी को अरिष्टकारक होता है। सौर पौष में भैंस,

विशाखा के सूर्य में घोड़ी का बच्चा देना अनिष्टकारक है। किन्हीं के मत से माघ में भैंस, श्रावण में घोड़ी की प्रसूति भी स्वामी की अनिष्टकारक है।

ऐसी स्थिति में शान्ति पाठ कराना चाहिये, अन्न दान अथवा वही पशु दान देना चाहिए।

विवाह के पश्चात् एक वर्ष तक त्याज्य

विवाह के पश्चात् १ वर्ष तक; व्रतबन्ध के बाद ६ मास तक; चूड़ाकर्म के बाद ३ मास तक; पिण्ड दान, मृतक के साथ यात्रा, तिलतर्पण नहीं करना चाहिये।

महालय में, गया-श्राद्ध में, माता-पिता के क्षय दिन में, पिण्ड दान हो सकता है परन्तु तिल-तर्पण नहीं।

कन्यादान करने का अधिकारी क्रमशः

पिता, पितामह, उपनीत भ्राता, नाना, मामा, माता ये क्रमशः कन्यादान के अधिकारी हैं। अर्थात् सबसे पूर्व पिता को अधिकार है उसकी अनुपस्थिति में पितामह को, ततः उपर्युक्त अन्य को क्रमशः जानना चाहिये। यह प्रथम दान की बात है। जब विवाह में बहुत से दाता होते हैं तो इनके कन्यादान देने के पश्चात् औरों को भी कन्यादान का अधिकार है।

वाग्दान होने पर दोनों कुलों में किसी की मृत्यु हो जाय

वाग्दानान्तर दोनों वंशों में किसी की मृत्यु हो जाय तो उस वर से उस कन्या का विवाह नहीं करना चाहिये। यदि ऐसा करने में विशेष संकट उपस्थित हो या कोई बड़ी असुविधा हो तो निम्न व्यवस्था है।

पितुराशौचमब्दं स्यात्तदर्द्धं मातुरेवच। मासत्रयं च भार्यायाः स्यात्तदर्द्धं भ्रातृपुत्रयोः। प्रतिकूले सपिण्डस्य मासमेकं विवर्जयेत्। विवाहस्तु ततः पश्चात्तयो रेत्रविधीयते॥

विवाह में रजोदर्शन

यदि विवाह के समय (वर वधू की किसी की) माता रजस्वला हो जाय तो विवाह नहीं करना चाहिए। नान्दी श्राद्ध करके विवाह हो सकता है, वस्तुतः यह है कि मासिक से चौथे दिन कुष्माण्ड होम, बलि, गोदान, प्रायश्चित की शान्ति करके विवाह करना चाहिए। पांचवे दिन केवल नान्दी श्राद्ध करके करना चाहिए।

विवाह-काल में यदि कन्या रजस्वला हो

यदि किसी कारणवश पिता अपनी कन्या का विवाह रजोदर्शन के पूर्व न कर सके तो रजोदर्शन के बाद विवाह काल तक जितने मास बीत चुके हों उतना गोदान करना चाहिए। यदि यह सामर्थ्य न हो तो एक गोदान करना चाहिए। कन्या विवाह से पूर्व ३ दिन व्रत रखे व तृतीय रात्रि को गाय का दूध पीवे, ततः कन्यादान योग्य कन्या होती है ऐसी कन्या ग्रहण करने वाला पति भी कुष्माण्ड से हवन करे।

विवाह से प्रथम वर्ष पिता व पति के घर रहने में वर्ज्य मास

विवाह से प्रथम आषाढ़ में यदि कन्या पति के घर जाय तो अपनी सास और क्षयमास में अपने शरीर को नष्ट करती है। ज्येष्ठ मास में पति के घर जाय तो जेठ को, पौष में श्वसुर को, मलमास में पति को और पहले चैत्र में यदि पिता के घर रहे तो पिता को नष्ट करती है।

उपवास निषेध

(१) कांस्य पात्र में भोजन, मांस, मसूर, कोदों, चना, शाक, शहद, पराया अन्न, स्त्री-सम्भोग, दान्तुन करना उपवास में निषेध है। दिन में सोने से भी उपवास नष्ट हो जाता है।

उपवास में हविष्यान्न का भोजन करें।

सब तिथियों में वर्ज्य पदार्थ

प्रतिपदा को कुष्माण्ड, द्वितीया को कटेरी, तृतीया को लवण, चतुर्थी को तिल, पञ्चमी को खटाई, षष्ठी को तेल, सप्तमी को आंवले, अष्टमी को नारियल, नवमी को तांबा, दशमी को पटोल, एकादशी को निष्पाव, द्वादशी को मसूर, त्रयोदशी को बैंगन, चतुर्दशी को शहद, पूर्णिमा को द्यूत, अमावास्या को स्त्री गमन (ग्रहण) न करें।

गोपी चन्दन धारण निषेध काल

उबटन, सूतक, विवाह, पुत्र-जन्म मंगल के सम्पूर्ण कर्म में गोपी-चन्दन लगाना निषेध है।

देव विशेष से प्रतिष्ठा में ग्राह्यमास

श्रावणे स्थापयेल्लिंगमाश्विने जगदाम्बिकाम्। मार्गशीर्षे हरिं चैत्र सर्पात् पौषेऽपि चनचैत्रेवा फाल्गुने वाऽपि ज्येष्ठे वा माधवेऽपि वा॥ माघेवा सर्व देवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत्।

देव मूर्ति मुखास्थिति

ब्रह्मा, विष्णु शिवेन्द्र, भास्कर गुहा पूर्वा परास्याः शुभाः प्रोक्तौ सर्व दिशा मुखौ शिवजिनौ विष्णु विधाता तथा। चामुण्डा ग्रह मातरो धनपतिः द्वैमातरो भैरवो देवा दक्षिण दिङ्मुखाः कपिवरो नैऋत्य वक्त्रो भवेत्।

देश विशेष से दक्षिणायन में प्रतिष्ठा

वै० संहिता—मातृ भैरव वाराहः नारसिंहः त्रिविक्रमः। दक्षिणेतुमुमुक्षूणां मलमासेन साद्धयोः। महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥ शैव सिद्धान्त शेखरे—श्रेष्ठोत्तरे प्रतिष्ठा स्यादयने मुक्तिमिच्छताम्। दक्षिणायने जलस्थिति सम्भवः तदा कार्तिके तड़ागस्य प्रतिष्ठा शुभाः॥ भविष्यपुराणे—तस्मिन् सलिल संपूर्णे कार्तिकेच विशेषतः॥ तड़ागस्य विधिः कार्या स्थिर नक्षत्र योगतः॥ उग्र प्रकृतिनां च दक्षिणायनेऽपि स्थापनीयम्।

प्रदक्षिणा विचार

एका चण्ड्या रवेः सप्त तिस्त्र कार्या विनायके।
हरेश्चतुस्त्र कर्तव्याः शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणाः॥

दीप निर्वापणादि दोष

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थमुपकल्पितम्।
द्वीप हर्ता भवेदन्ध काणो निवार्पको भवेत्॥

देवताओं को अतिप्रिय पत्र पुष्प

शङ्करस्य बिल्वपत्रम्। विष्णोस्तुलसी॥ गणेशस्य दूर्वांकुरम्। अम्बाया नानाविध पुष्पाणि॥ सूर्यस्य रक्तं करवीर पुष्पम्॥

हवन कुण्ड में विकृत दोष

खातेऽधिके भवेद्रोगी हीते धेनु धनक्षयः।
वक्र कुंडे तु सन्तापो मरणं भिन्नमेखले॥
मेखला रहिते शोकोष्यधिके वित्त संक्षयः।
भार्या विनाशनं प्रोक्तं कुण्डे योन्या विनाकृते॥
अपत्य ध्वंसनप्रोक्तं कुण्ड यत्कण्ठवर्जितम्।
तदेवं कुण्ड निर्माण स्थातीव दुष्करतया।
न्यूनाधिकतायाञ्च दोष श्रवणात्कुण्डस्थाने स्थाण्डिलमेव कुर्यात्॥

ज्येष्ठ परिहार

कृतिकास्थं रविं त्यक्त्वा ज्येष्ठे ज्येष्ठस्य कारयेत् ।
उत्सवादीनि कार्याणि दिनानि दश वर्जयेत् ॥

कृतिका नक्षत्र स्थित सूर्य के १० दिन त्याग कर ज्येष्ठ मास में जेठी सन्तान का मुण्डन, विवाह, उपनयन कर सकते हैं।

१. ज्येष्ठ का महीना मलमास हो तो उसी में दशहरा होता है शुद्ध में नहीं।
२. ग्रहण में स्नान अमंवक होता है।
३. सुवासिनी स्त्रियों को अशिरस्क स्नान का विधान है।
४. शिष्ट स्त्रियों के लिए ग्रहण में सशिरस्क स्नान विहित है।
५. ग्रहण में पुत्र हो तो शान्ति करें।
६. ग्रहण में १ दिन और ग्रस्तास्त में ३ दिन अनाध्याय होती है।
७. जिस समय ग्रहण लगता है उसके पूर्व ग्रहण में भोजन न करें अर्थात् नौ घन्टे पहले भोजन न करें। सूर्यग्रहण में १२ घन्टे पहले भोजन न करें।
८. सम्पन्न व्यक्ति को ग्रहण में पकवान से श्राद्ध करना चाहिए।
९. ग्रहण में बाल, वृद्ध, रोगी, ये भोजन कर सकते हैं परन्तु ग्रहण से एक याम पहले निषिद्ध है।
१०. श्राद्ध शेषान्न भोजन स्वयं अवश्य ही करना चाहिए।
११. श्राद्ध शेषान्न शूद्र को न दे और शूद्र को उस दिन घर में भोजन भी नहीं कराना चाहिए।
१२. आश्विन मास के कृष्णपक्ष में १५ दिन श्राद्ध करते हैं उनको चतुर्दशी तिथि भी विहित है।
१३. पिता और माता के मरने पर प्रथम वर्ष में महालय कृताकृत है।
१४. महालय श्राद्ध मलमास में नहीं होता है।
१५. गया श्राद्ध फल-कामना से प्रतिवष कर सकते है।
१६. पार्वण श्राद्ध अपराह्न में करना चाहिए।
१७. एकोदिष्ट मध्याह्न में करना चाहिए।
१८. आम श्राद्ध में पूर्वाह्न व्यापिनी तिथि ग्राह्य है।
१९. श्राद्धाङ्गतर्पण नित्य श्राद्ध में नहीं होता है।
२०. नित्य श्राद्ध पार्वण विधि से होता है। इसमें विश्वेदेवा, पिण्डदानादि, ब्रह्मचर्यादि नियम, आवाहन, अर्घदानादि नहीं होते हैं।
२१. जिसकी माता पहले मृत पश्चात् पिता मरे हों ऐसे मातृ-पितृ पितृक को पितृ, मातृ, मातामह ये तीन पार्वण करने चाहिए।
२२. जिसकी त्रयोदशी मृततिथि है उसको महालय करने में कोई दोष नहीं चाहे वह सपुत्र भी हो।
२३. सिंह और कर्कट के मध्य में सब नदी रजस्वला होती हैं उनमें स्नानादि निषेध है।
२४. किनारे पर रहने वालों को रजोधर्म जन्य दोष नहीं होता है।
२५. गंगा में रजोदोष नहीं होता है।
२६. दूध में नमक, अच्छिष्ट में घी, धोबी तीर्थों में स्नान, तांबे के पात्र में गव्य (दूध आदि) सुरा (मद्य) के समान होता है।
२७. बछड़े का बचा हुआ (उच्छिष्ठ) दूध; शिव-निर्माल्य (गङ्गोदक), वान्त (शहद), मृतकर्पट (टसर का कपड़ा), दौहित्र, कुतुपकाल और तिल, ये सात श्राद्ध में पवित्र हैं।
२८. विवाह में स्पर्शास्पर्श दोष नहीं होता है।
२९. द्वितीय विवाह में वर स्वयं नान्दी श्राद्ध करे पिता न करे।
३०. मंगल कार्य में गोपीचन्दन धारण निषिद्ध है।
३१. अनुपनीत भाई को कन्यादान का अधिकार नहीं है माता ही करे।
३२. एक ही वर को २ कन्या नहीं देनी चाहिये।
३३. एक मातृज का कोई संस्कार एक साथ नहीं होता। यमलजात का होता है।
३४. अशौची दुकानदार की दुकान में फैले हुए दधि, मधु, घी, नमक, तृण, साग, फल, पुष्प आदि द्रव्यों को उसकी आज्ञा से अपने हाथ से ग्रहण करने पर दोष नहीं है, उसके हाथ से ग्रहण करने पर दोष है। ऐसे द्रव्य को उसके हाथ से लेने पर देवकार्य में उपयोग न करें।
३५. महापातकी, कुष्टी, विष और अग्नि देने वाला या इनके द्वारा पाखण्डी, विष, अग्नि, शस्त्र, अन्नशन, जल, पर्वत आदि से मरने वालों का ब्राह्मण तथा चाण्डालादि द्वारा मारने पर श्राद्ध और अशौच नहीं होता है। प्रायश्चित करने पर इनका श्राद्ध और अशौच होता है। स्वामी के लिए युद्ध में मरने पर, गौ और ब्राह्मण की रक्षा के निमित्त मरने पर, चोर आदि द्वारा मरने पर श्राद्ध और अशौच होता है।
३६. योगियों के मरने पर अशौच नहीं लगता है।
३७. नैष्टिक ब्रह्मचारी और अमुकामुक वर्णों के संन्यासियों का अशौच नहीं होता है।
३८. अनाथ की क्रिया करने में दोष नहीं होता है।
३९. अनाथ के निर्हरण आदि में सद्यः शौच होता है।
४०. रात्रि में शवस्पर्श में सूर्य दर्शन से शुद्धि होती है।
४१. दिन में शव को स्पर्श करने पर नक्षत्र दर्शन से शुद्धि होती है।

नित्योपयोगी आवश्यक नियम

ब्राह्मे काले समुत्थाय गणेशादीन्स्मरेत्ततः ।
प्रातः स्तोत्रं मंगलानि पठित्वा शौचमाचरेत् ॥

मूत्र व मलत्याग तालाब व नदी से कितनी दूर करें

दशहस्तान् परित्यज्य मूत्रं कूर्य्याज्जलाशये ।
शतहस्तान् पुरीषार्थे तीर्थे नद्यां चतुर्गुणम् ॥

शौच मन्त्र

गच्छन्तु ऋषयो देवाः पिशाचा ये च गुह्यकाः ।
पितृभूत गणाः सर्वे करिष्ये मल-मोचनम् ॥

शुद्धि क्रमः

एका लिङ्गे गुदे त्रीणि दश वाम करे मृदः ।
हस्ते द्वये च सप्तान्याश्चरणो च त्रिभिस्त्रिभिः ॥

कुल्ला बायीं ओर करें

पुरतः सर्वदेवाश्च, दक्षिणे पितरस्तथा ।
ऋषयः पृष्ठतः सर्वे वामे गण्डूष माचरेत् ॥

भारत के प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थ

काशी

चार धाम

१——श्रीबदरीनाथ

उत्तर-रेलवे की मुगलसराय से अमृतसर जानेवाली मुख्य लाइन के लक्सर स्टेशनसे एक लाइन हरिद्वार जाती है। हरिद्वार से एक दूसरी लाइन ऋषिकेश जाती है। ऋषिकेश से मोटर व बसें चलती हैं। जो बद्रीनाथ धाम तक पहुँचा देती हैं। हिमालय में नर-नारायण पर्वत के नीचे श्रीबदरीनाथ धाम है।

२——श्रीद्वारका

पश्चिम-रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनके मेहसाणा स्टेशनसे एक लाइन सुरेन्द्रनगरतक गयी है। सुरेन्द्रनगरसे एक लाइन ओखा-बंदरतक जाती है। इसी लाइनपर द्वारका स्टेशन है। बेट-द्वारका और डाकोरजी भी द्वारकाके ही अङ्ग माने जाते हैं। ओखाबंदरसे समुद्रकी खाड़ीको नौकाद्वारा पार करके बेटद्वारका जाना पड़ता है। बंबई-खाराघोड़ा लाइनके आनन्द स्टेशनसे जो लाइन गोधरा जाती है, उस लाइनपर डाकोर स्टेशन है।

३——श्रीजगन्नाथ (पुरी)

पूर्व-रेलवेकी हबड़ा-वाल्टेयर लाइनके खुर्दा-रोड स्टेशनसे एक लाइन पुरीको जाती है। समुद्र-किनारे उड़ीसामें यह जगन्नाथपुरी-धाम है।

४——श्रीरामेश्वरम

दक्षिण-रेलवेकी मद्रास-रामेश्वरम् लाइन पाम्बन होते हुए रामेश्वरम् तक गयी है। पाम्बनके पास समुद्रपर रेलवे-पुल है, जो रामेश्वरम् द्वीपको बड़े भूभागसे मिलाता है।

यदन्यत्र कृतं पापं तीर्थे तद् याति लाघवम्।
न तीर्थकृतमन्यत्र क्वचिदेव व्यपोहति॥

दूसरे स्थानपर किया हुआ पाप तीर्थमें जाकर हलका हो जाता है, परंतु तीर्थमें किया हुआ पाप अन्य स्थानोंमें कभी नष्ट नहीं होता।

मोक्षदायिनी सप्त पुरियाँ

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः॥

१——काशी

इसका नाम बनारस या वाराणसी भी है। उत्तर, रेलवेकी मुगलसरायसे अमृतसर तथा देहरादून जानेवाली मुख्य लाइनके मुगलसराय स्टेशनसे १२कि.मी.पर काशी और उससे ६ कि.मी. आगे बनारस-छावनी स्टेशन है। इलाहाबादके प्रयाग स्टेशनसे भी जंघई होकर एक सीधी लाइन बनारस-छावनीतक जाती है। पूर्वोत्तर-रेलवेकी एक लाइन भटनीसे तथा दूसरी छपरासे इलाहाबाद सिटीतक जाती है। उनसे भी बनारस सिटी होते हुए बनारस-छावनी जा सकते हैं। गङ्गा-किनारे यह भगवान् शंकर की प्रसिद्ध पुरी है।

२——काञ्ची

दक्षिण-रेलवेकी मद्राससे रामेश्वरम् जानेवाली मुख्य लाइनके मद्रास स्टेशनसे ५६किमी. पर चेंगलपट स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन आरकोनम्-तक जाती है। इस लाइनपर काञ्जीवरम् स्टेशन है। स्टेशनका नाम काञ्जीवरम् है; किन्तु नगरका नाम है काञ्चीपुरम्।

३——मायापुरी (हरिद्वार)

उत्तर रेलवे की मुगलसरायसे अमृतसर जानेवाली मुख्य लाइन पर लक्सर स्टेशन है। वहाँसे एक लाइन हरिद्वार तक गयी है। गङ्गाजी यहाँ पर्वतीय क्षेत्रको छोड़कर समतल भूमिमें प्रवेश करती हैं, इससे इसे गङ्गाद्वार भी कहते हैं।

४—अयोध्या

उत्तर-रेलवेकी मुगलसराय-लखनऊ लाइनके मुगलसराय स्टेशनसे २०६ कि. मी. पर अयोध्या स्टेशन है। भगवान् श्रीरामकी यह पवित्र अवतार-भूमि सरयू-तटपर स्थित है।

५–द्वारावती (द्वारावती)

यह चार धामोंसे एक धाम भी है। पश्चिम-रेलवेके सुरेन्द्रनगर-ओखा-पोर्ट लाइनपर यह नगर समुद्र-किनारेका स्टेशन है।

६–मथुरा

पूर्वोत्तर-रेलवेकी आगरा-फर्टसे गोरखपुर जानेवाली लाइनपर तथा पश्चिम-रेलवेकी बंबई-कोटा-दिल्ली लाइनपर मथुरा स्टेशन है। यमुना-तटपर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रकी अवतार-भूमिका यह पवित्र नगर स्थित है।

७–अवन्तिकापुरी (उज्जैन)

मध्य-रेलवेकी बंबई-भोपाल-दिल्ली लाइनके भोपाल स्टेशनसे एक लाइन उज्जैन जाती है। पश्चिम-रेलवेकी बंबई-कोटा-दिल्ली लाइनपर नागदा स्टेशनसे एक बड़ी लाइन भी उज्जैनतक गयी है। पश्चिम-रेलवेकी एक छोटी लाइन भी अजमेरसे खंडवातक जाती है। उक्त लाइनके महू स्टेशनसे भी एक लाइन उज्जैनको गयी है। यह नगर छिप्रा नदीके तटपर है।

यो न क्लिष्टोऽपि भिक्षेत ब्राह्मणस्तीर्थसेवकः।
सत्यवादी मसाधिस्थः स तीर्थस्योपकारकः॥

तीर्थसेवी जो ब्राह्मण अत्यन्त क्लेश पानेपर भी किसीसे दान नहीं लेता, सत्य बोलता और मनको रोककर रखता है, वह तीर्थकी महिमा बढ़ानेवाला है।

पञ्च केदार

[भगवान् शङ्करने एकबार महिषरूप धारण किया था। उनके उस महिषरूपके पाँच विभिन्न अङ्ग पाँच स्थानोंपर प्रतिष्ठित हुए। वे 'स्थानकेदार' कहे जाते हैं।]

१. श्रीकेदारनाथ

यह मुख्य केदारपीठ है। यहाँ महिषरूपधारी शिव का पृष्ठभाग प्रतिष्ठित है। इसे प्रथम केदार कहते हैं। केदारनाथकी यात्रा का पूरा विवरण उत्तराखण्ड के विवरण में दिया गया है। उसी में शेष चार केदारों के भी स्थल एवं यात्रा-मार्ग दे दिये गये हैं; क्योंकि पाँचों केदार-क्षेत्र उत्तराखण्ड में ही हैं।

२. श्रीमध्यमेश्वर

मनमहेश्वर या मदमहेश्वर भी लोग इनको ही कहते हैं। यह द्वितीय केदार-क्षेत्र है। यहाँ महिषरूप शिवकी नाभि प्रतिष्ठित है। ऊषीमठसे मध्यमेश्वर २८ किलोमीटर है। ऊषीमठसे ही वहाँतक एक मार्ग जाता है।

३. श्रीतुङ्गनाथ

यह तृतीय केदार-क्षेत्र है। यहाँ बाहु प्रतिष्ठित हैं। केदारनाथसे बदरीनाथ जाते समय तुङ्गनाथ मिलते हैं। तुङ्गनाथ-शिखरकी चढ़ाई ही उत्तराखण्डकी यात्रामें सबसे ऊँची चढ़ाई मानी जाती है।

४. श्रीरुद्रनाथ

यह चतुर्थ केदार-क्षेत्र है। यहाँ मुख प्रतिष्ठित है। तुङ्गनाथसे रुद्रनाथ-शिखर दीखता है; किंतु मण्डलचट्टीसे रुद्रनाथ जानेका मार्ग है। एक मार्ग हेलंग (कुम्हार चट्टी) से भी रुद्रनाथको जाता है।

५. श्रीकल्पेश्वर

यह पञ्चम केदार-क्षेत्र है। यहाँ जटाएँ प्रतिष्ठित हैं। हेलंग (कुम्हारचट्टी) में मुख्य मार्ग छोड़कर अलकनन्दाको पुलसे पार करके १० किलोमीटर जानेपर कल्पेश्वरका मन्दिर मिलता है। इस स्थानका नाम उरगम है।

सप्त बदरी

[भगवान् नारायण लोक-कल्याणार्थ युग-युगमें बदरीनाथके रूपमें स्थित रहते हैं। पञ्च केदारके समान ही ये बदरी-क्षेत्र भी हैं। इनमें पहले पाँच प्रधान हैं। ये सभी क्षेत्र उत्तराखण्डमें हैं।]

१. श्रीबदरीनारायण—बदरिकाश्रम-धाम प्रसिद्ध है।

२. आदिबदरी—उरगम ग्राम, कुम्हारचट्टीसे १० किलोमीटर। इन्हें ध्यानबदरी भी कहते हैं।

३. वृद्धबदरी—ऊषीमठ, कुम्हारचट्टीसे ४ किलोमीटर।

४. भविष्यबदरी—जोशीमठसे १८ किलोमीटर।

५. योगबदरी—पाण्डुकेश्वरमें—इन्हें ध्यानबदरी भी कहते हैं।
इनके सिवा निम्नलिखित बदरी और भी हैं—

६. आदिबदरी—कैलाशके मार्गमें शिवकुलमसे धूलिङ्गमठके बीचमें।

७. नृसिंहबदरी—जोशी-मठमें।

पञ्च नाथ

१ उत्तर—श्रीबदरीनाथ, श्रीबदरिकाश्रम (उत्तराखण्ड) में।
२ दक्षिण—श्रीरङ्गनाथ, श्रीरङ्गम् (मद्रास-प्रदेशमें)।
३ पूर्व—श्रीजगन्नाथ, श्रीनीलाचल—पुरी (उड़ीसा)
४ पश्चिम—श्रीद्वारकानाथ, श्रीद्वारका (सौराष्ट्र) में।
५ मध्य—श्रीगोबर्धननाथ, श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) में।

पञ्च काशी

१—वाराणसी। २—गुप्तकाशी। ३—उत्तरकाशी। ४—दक्षिणकाशी (तेन्काशी)। ५—शिवकाशी।

सप्त सरस्वती

(१) सुप्रभा—पुस्कर, (२) काञ्चीनाक्षी—नैमिष, (३) विशाला—गया, (४) मनोरमा—उत्तर-कोसल, (५) ओघवती—कुरुक्षेत्र, (६) सुरेणु—हरिद्वार, (७) विमलोदका—हिमालय।

सप्त गंगा

(१) भागीरथी, (२) वृद्धगङ्गा, (३) कालिन्दी (४) सरस्वती, (५) कावेरी, (६) नर्मदा, (७) वेणी।

सप्त पुण्यनदियाँ

(१) गङ्गा, (२) यमुना, (३) गोदावरी, (४) सरस्वती, (५) कावेरी, (६) नर्मदा, (७) सिन्धु।

सप्त क्षेत्र

(१) कुरुक्षेत्र (पंजाब), (२) हरिहरक्षेत्र (सोनपुर), (३) प्रभासक्षेत्र (वेरावल), (४) रेणुकाक्षेत्र (उत्तरप्रदेश मथुराके पास), (५) भृगुक्षेत्र (भरुच), (६) पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथ-पुरी) (७) सूकरक्षेत्र (सोरों)।

पंच सरोवर

(१) बिन्दु-सरोवर (सिद्धपुर), (२) नारायण-सरोवर (कच्छ), (३) पम्पा-सरोवर (मैसूर राज्य), (४) पुष्कर-सरोवर (राजस्थान), (५) मानसरोवर (तिब्बत)।

नौ अरण्य

(१) दण्डकारण्य, (२) सैन्धवारण्य, (३) पुष्करारण्य, (४) नैमिषारण्य, (५) कुरु जाङ्गल, (६) उत्पलावर्तकारण्य, (७) जम्बूमार्ग, (८) हिमवदरण्य, (९) अर्बुदारण्य,।

चतुर्दश प्रयाग

१—प्रयागराज—गंगा-यमुना-सरस्वती २—देवप्रयाग—अलकनन्दा-भागीरथी, ३—रुद्रप्रयाग—अलकनन्दा-मन्दाकिनी, ४—कर्णप्रयाग—पिण्डरगङ्गा-अलकनन्दा, ५—नन्दप्रयाग—अलकनन्दा-नन्दा, ६—विष्णुप्रयाग—विष्णुगङ्गा-अलकनन्दा, ७—सूर्यप्रयाग—अलसतरङ्गिणी-मन्दाकिनी, ८—इन्द्रप्रयाग—भागीरथी-व्यासगङ्गा (इसे व्यासघाट भी कहते हैं। वृत्रासुरके वधसे यहाँ इन्द्र ने शङ्कर की उपासना की थी।) ९—सोमप्रयाग—सोमनदी-मन्दाकिनी (सोमद्वार, त्रियुगीनारायणसे ५ किलोमीटर) १०—भास्करप्रयाग (भटवारी, मल्लाट्टीसे ३ किलोमीटर) ११—हरिप्रयाग—हरिगङ्गा-भागीरथी (हरसिल, उत्तरकाशी से गङ्गोत्तरी के मार्ग में) १२—गुप्तप्रयाग—नीलगङ्गा-भागीरथी (हरिप्रयाग से १ मिलीमीटर) १३—श्यामप्रयाग—श्यामगङ्गा-भागीरथी (गुप्तप्रयाग से करीब ३ किलोमीटर) १४—केशवप्रयाग—अलकनन्दासरस्वती (वसुधारासे ४ किलोमीटर नीचे)

नोट—इनमें प्रथम ५ मुख्य हैं। जो लोग हिमालयके ही पञ्च प्रयागको मानते हैं, वे प्रयागराजको न लेकर छठा विष्णुप्रयाग लेते हैं। हिमालयके पञ्च प्रयागोंमें देवप्रयाग मुख्य है।

श्राद्धके लिए प्रधान तीर्थ-स्थान

१—देवप्रयाग (अलकनन्दा-भागीरथी-संगम)
२—त्रियुगीनारायण (सरस्वतीकुण्ड) ३—मदमहेश्वर (मध्यमेश्वर)
४—रुद्रनाथ ५—बदरीनाथ (ब्रह्मकपाल-शिला)
६—हरिद्वार (हरिकी पैड़ी) ७—कुरुक्षेत्र (पेहवा)

८–पिण्डारक-तीर्थ	९–मथुरा (प्रवनाट)
१०–नैमिषारण्य	११–पीतवाट (हृत्याहरण-तीर्थ)
१२–विदूर (ब्रह्मावर्त)	१३–प्रयाग
१४–काशी (मणिकर्णिका)	१५–अयोध्या
१६–गया	१७–बोधगया
१८–राजगृह	१९–परशुरामकुण्ड
२०–याजपुर	२१–भुवनेश्वर
२२–जगन्नाथपुरी	२३–उज्जैन
२४–अमरकण्टक	२५–नासिक
२६–त्र्यम्बकेश्वर	२७–पंढरपुर (चन्द्रभागा)
२८–लोहार्गल	२९–पुष्कर
३०–तिरुपति (बालाजी)	३१–शिवकाञ्ची —सर्वतीर्थ-सरोवर
३२–कुम्भकोणम्	३३–श्रीरङ्गम् (कावेरी-तट)
३४–रामेश्वरम् (लक्ष्मण-तीर्थ)	३५–धनुष्कोटि
३६–दर्भशयनम्	३७–सिद्धपुर
३८–द्वारकापुरी	३९–नारायण-सर
४०–प्रभास-पाटण (वेरावल)	४१–शूलपाणि (सुरपाणीश्वर)
४२–वाणोद	

विवाह के बाद अपने कुल में मुण्डनादि का निषेध

चूडा व्रतंचाऽपि विवाहतो व्रताच्चूडाच नेष्टा पुरुषत्रयान्तरे ।
वधू प्रवेशाच्च सुताविनिर्गमः षण्मासतो वाऽब्दविभेदतः शुभः ।।
(मुहूर्त चिन्तामणि विवाह प्रकरण श्लो १८)

अर्थात् अपने त्रिपुरुष कुल में विवाह के बाद ६ मास तक मुण्डन और उपनयन शुभ नहीं है एवं उपनयन के ६ मास तक मुण्डन शुभ नहीं होता। पुत्रवधू प्रवेश से ६ मास तक कन्या का विनिर्गम (पतिगृह गमन अर्थात् द्विरागमन) भी नहीं करना चाहिये। प्रत्येक कार्य से ६ मास के बाद दूसरा शुभ कार्य शुभ होता है। किन्तु यदि वर्ष संवत्) बदल जाय तो ६ मास के भीतर भी शुभ होता है अर्थात् यदि माघ या फाल्गुन में विवाह हो तो वैशाख में मुण्डन उपनयन हो सकते है क्योंकि यहां संवत् बदल जाता है।



जो चाहो सो पूछलो



"प्रश्न एवं दोषावली विचार"

ईशान	पूर्व		अग्नि
उत्तर	६ डा	ॐ ऐं १	वि ८
	७ यै	५ मु	३ क्लीं
वायव्य	२ ह्रीं	९ च्चे	४ ना
	पश्चिम		नैऋत

(ऊपर तालिका में दक्षिण दिशा दाईं ओर अंकित है।)

मंत्र : ॐ नमो भगवती कुष्माण्डिनी सर्वकार्य प्रसाधिनि सर्वनिमित्त प्रकाशिनि ऐहि ऐहि त्वर त्वर वर वर हिलि हिलि मातंगिनी मम शुभाशुभं कथय कथय सत्यं ब्रूहि ब्रूहि ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

(१) इस मंत्र से पंचदशी यंत्र की पूजाकार धूप, दीप, नैवेद्य चढावें। फिर प्रश्नकर्त्ता से पंचदशी यंत्र के किसी एक अंक पर अंगुली रखने को कहें या १ से ९ तक के अंक में से किसी एक अंक को बोलने या लिखने को कहें, फिर उस अंक के अनुसार फल जाने। अंक ३, ७ हो तो कार्य सिद्ध होवे। ४, ६ अंक हो तो जल्दी कार्य सिद्ध होवे। १, ५, ९ अंक में कुछ विलम्ब होवे। २, ८ अंक में कार्य नहीं होवे।

(२) पृच्छक को नौ अंक में से एक का नाम लेने को कहें व किसी फल का नाम लेने को कहें। अंक को दुगना कर फल के नाम की संख्या जोड़ देवें। उसमें १३ और जोड़ें, फिर ९ का भाग देवें। यदि शेष १ अंक बचे तो धन लाभ, २ धन क्षय, ३ आरोग्य, ४ व्याधि, ५ स्त्री संतान प्राप्ति, ६ बंधुनाश, ७ कार्यसिद्धि, ८ मृत्यु, ९ राज सम्मान, यह फल समझें।

(३) जो अंक प्राप्त होवे, या शेष का अंक जो होवे, यंत्र में उसी अंक की दिशा में नष्ट वस्तु समझें। कार्य बनेगा या नहीं, किस दिशा में बनेगा, यह अंक के फलानुसार फल कहें व दिशा बातावें।

अथ: दोषावली विचार : इस पंचदशी यंत्र पर तीन बार अंगुली रखावें या तीन बार अंक लिखावें। प्राप्त अंक निम्न में से हो तो उसके सामने वाला दोष समझें तथा उपचार करें, लाभ होगा। तीन बार पाशा डाल कर या अन्न के बीजों से भी यह देखा जाता है।

अंकफल कथन :—

अंक १११ देव दोष कोई नहीं है, ग्रह पूजा, जाप्य, होम, दान सूँ शान्ति होगी। ११२ अभिष्ट देवता को भूल जाने पर यह दोष है। ११३ वेला विशेष हुआ है, वचन चल हुए हों, दिन १८ के बाद अच्छा होगा। ११४ पितृदोष सूँ चिंता बनी, दान देवें। १२१ भाई पितृ है, यह दोष है, जीमण माँगते हैं। १२३ पितृ पुराना है, विवाह का कर माँगते हैं। १२४ वड़ा पितृ तथा कुलदेवी दोष है, विवाह का कर माँगते हैं। १३१ पराया द्वारा किया हुआ है, बलवान दोष है। १३२ ग्रह दोष है, ग्रह पूज्यंते। १३३ क्षेत्रपाल, आकाश देवी दोष है। १३४ पितृ दोष है, कुल की रीत करनी बाकी है। १४१ कुल देवी दोष है, मेली वृक्ष के नीचे लागी है। १४२ अकस्मात् भय लगा है, भूत बाधा है। देवी पूजा से शांति होगी। १४३ ग्रह अनिष्ट है। ग्रह पूजा, जाप, होम, दान करने से शांति होगी। १४४ जलघात सूँ मृत्यु हुओ पितृ मूर्ति पूजने का कहता है। २११ कुलदेवी का दोष है। **उचितो करे**, खण लेवे, दिन ६, ७, १७, २४ पीड़ा है। २१२ ऊपरली छाँया है, मेली केकुंडा में पग पड़या है, (**ठीकरो**) **उतारणा** करे। २१३ कुंडा में पग पड़ा है, मेली की दृष्टि (निजर) है, उपचार करें। २१४ कांमण, आखा दोष है, उपचार करें। २२१ सति **पित्राणी** दोष है, चबूतरा करने का है। २२२ सगा भाई का दोष है। अन्न जल माँगते हैं। २२३ कुलदेवी अथवा पितृ दोष अथवा शंकर रो दोष है, २२४ जल तीरे मेली शाकिनी लागी है। २३१ महाम्माया भवानी दोष है। विजासणी देवी रातीजोगो मांगे है। २३२ अवगती से मरने वाले का दोष या झड़ोला का दोष है। २३३ **पित्राणी** सती दोष, पर्व तिथि पर थानक स्थान माँगते हैं। २३४ बालक कुआरो नजदीक सगाई है, उसका दोष सगाजी माँगते हैं। २४१ सोंक (द्विविवाहि स्त्री) का दोष है। रातीजोगो माँगे है।

ज्यादा लोगों को भोजन करावें । २४२ थांपण लेनदेन बाकी है, सो देवें । २४३ कांमण दोष है । २४४ पित्राणी अल्प मृत्यु हुई, उसका दोष है । ३११ पितृ दोष है, उसकी पूजा करें । ३१२ दृष्टि दोष है, पीड़ा दोष है, औषधीलेवें । ३१३ कुल देवी, सती पित्रानी का दोष है, उन्हें मनावें । ३१४ क्षैत्रपाल, जलदेव का दोष है । ३२१ सति पित्राणी दोष है, जाप होम करें । ३२२ कुलदेवी, पित्राणी सती हुई, उसका दोष है । ३२३ मेली शाकिनी दोष है, वृक्ष नीचे लागी है । ३२४ महासति दोष है । भवानी क्षैत्रपाल तेल सेर १ मांगते हैं । ३३१ रोग है, कोई दोष नहीं है । ३३२ मांमा (जुंजार का) दोष है, गोरियां क्षैत्रपाल की पूजा करें । ३३३ पितृ पुराणों और कुलदेवी दोष है, मांनता करें । ३३४ चंडालियो, मसांणियों और पितृ इकठ्ठा है । ३४१ कर्म दोष हैं, औषधी लेवें । ३४२ माता भावनी ईश्वरी रो दोष है, गोत्रज माड़ीजे । ३४३ आकाश मित्र और पितृ दोष है । ३४४ अवगतियां मृत्यु हुई, इसका पितृ पूर्वज दोष है । ४११ मेली दोष हैं, पालण करे, परन्तु क्रूर है । ४१२जलघातहुओ, पितृ दोष है । ४१३ क्षैत्रपाली, शाकिनी दोष है, पालण कीजे । ४१४ महाम्माया दोष है, आचार (शुद्धता) राखो । ४२१ माता पिता को वचन चल हुओ है । ४२२ क्षैत्रपाल का दोष है । ४२३ बड़ा पुरुष का दोष है, वरसुन चुकाविजे, पितृ दोष भी है । ४२४ पिता भाई पूर्वज है, खरच करें ४३१ चंडाल मसाणियों लागो है, ठीकरो उतारणों करे । ४३२ पितृ दोष है, खणलेवे । ४३३ भाई पितृ दोष है और कुलदेवी स्थापना मांगे है । ४३४ परदेशी का दोष है, थांपण है, खण लेवे । ४४१ पिता का भाई पीढी ३ का मांगे है, जींमण करे । ४४२ कुलदेवी भवानी दोष है, बलबाकल मांगे है । ४४३ विवाह में देवों को भूले हो, उसका दोष है । ४४४ भाई की कुमात मृत्यु हुई , उसका दोष है, ब्राह्मण जीमावें, तर्पण करें ।

— दोषावली (पंचाद्वरियां) विचार —

पितृदोषः भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णनः ।
वृषे गगन देव्यास्तु ज्वरो दुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥१॥

मिथुने च महाम्माया दोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शाकिनी दोषोः हास्य रोदन मौनता ॥२॥

सिंहे जल प्रेत दोषोः दिवा शांत ज्वरोऽरुचिः ।
मह दोषस्य कन्यायां क्रोधाऽलस्यो तथाऽरुचिः ॥३॥

क्षेत्रपाल भवेदोषस्तुले संतान पीडनम् ।
वृश्चिके नाम दोषश्च ज्वाला देहे कुबुद्धिता ॥४॥

चाप देहे भवे दोषो ज्वर शोकोदर व्यथा ।
मकरे चण्डिका दोषो देह भंङ्गोज्वराऽनिलः ॥५॥

मलीन प्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् ।
मीने शाकिनी दोष रुधिरं जठर पीडनम् ॥६॥

व्यये धर्मेतृतिये च षष्ठे पापग्रहो यदा ।
हतो गरले जले शस्त्रै तस्य दोषो कुलोद्‌ भवेः ॥७॥

शनौ जले कुजे शस्त्रै युते सूर्य स्व बन्धुजः ।
राहौ विक्रमतो नष्ट शान्ति पूजा द्विजार्चनैः ॥८॥

स्वक्षेत्रै शत्रु दोषो मित्रे स्वजन संभवः ।
शत्रुक्षेत्रै शत्रु दोषो उच्चे स्वजन संभव ॥९॥

विवस्वान् यदि चाष्टमें षष्ठ संस्थोः -
तदाक्षेत्र पालो कृतो दोषकास्युः ।
कुजे शाकिनि दृष्टि दोषो भवेत्तत् -
गुरु अम्बिका विधूकर्तायदिस्यात् ॥१०॥

लग्नेष्टमे व्यये सूर्यः क्षेत्रपालस्य दूषणम् ।
आकाश देव्याश्चचंद्रेतु लग्नेषस्टेष्टमे व्यये ॥११॥

द्वादशे दशमे भौमेः डाकिनी दूषणं स्मृतम् ।
वन देव्युद्भवो दोषः सप्तमे द्वादशे बुधे ॥१२॥

यामित्रे द्वादशे जीवे देवदोषोनिगच्छतेः ।
अस्ते व्यये दैत्यपूज्ये जलदेव्या च दूषणम् ॥१३॥

शनैश्चरे व्यये चास्तेः दोष स्यादामवातजः ।
यामीत्र द्वादशे राहुः कुगतिज्ञाति दूषणम् ॥१४॥

卐

श्री महालक्ष्मी यंत्र व श्री यंत्र की गोपनीयता

यंत्र परिचय

श्रीसूक्त के १६ मंत्र व लक्ष्मी सूक्त के १३ मंत्र मिलकर कुल २९ मंत्रों का **श्री महालक्ष्मी सूक्त** बनता है। वृत्ताकार १६ कमलदल की प्रथम आवर्ति में श्रीसूक्त व वृत्ताकार १२ कमलदल की द्वितीय आवर्ति व वृत्ताकार अष्ट कमलदल की तृतीय आवर्ति में लक्ष्मीसूक्त के १३ मंत्रों को उल्लिखित करें व मध्य वृत्तबिंदु में "श्रीम्" को लिखने पर यह **श्री महालक्ष्मी यंत्र** बनेगा। मात्र श्री सूक्त को दो बार इस १६, १२ व ८ कमलदलों में लिखने पर **श्रीयंत्र** बनेगा। वस्तुत: ये ही सत्य श्री महालक्ष्मी यंत्र या श्री यंत्र है परन्तु वर्तमान समय में "श्रीयंत्र" मध्य में त्रिकोणात्मक रूप में जो प्रचलित किया गया है वस्तुत: वह भुवनेश्वरी यंत्र है, श्रीयंत्र नहीं, यह गोपनीय रहस्य है। इन यंत्रों को को स्वर्ण, चाँदी, ताँम्र व भोजपत्रों पर या सुन्दर कागज पर लिखकर घर, दुकान तथा पूजन कक्ष में रखने से श्री महालक्ष्मी प्रसन्न होकर धन धान्य सुवर्णादि की वृद्धि करती है दरिद्रयोग भंग हो जाता है। इस श्री महालक्ष्मी सूक्त के सतत अनुष्ठान से लक्ष्मीजी का साक्षात्कार तक हो जाता है। श्री सूक्त के १६ मंत्रों में स्वर्ण बनाने का रहस्य तक छुपा हुआ है। रसायन सिद्धि: (स्वर्ण बनाते समय) करते समय इस श्रीसूक्त व लक्ष्मीसूक्त का प्रयोग व स्मरण करते रहने का भी उल्लेख मिलता है। वैसे दशमहाविद्या के सभी तंत्रों में लक्ष्मी प्राप्ति के प्रयोग मिलते हैं। परन्तु मूल में महालक्ष्मी अधिष्ठात्री देवी के प्रयोग ही फलप्रद हैं।

श्री महालक्ष्मी सूक्त—मंत्र प्रयोग :

संकल्प—ॐ विष्णुः ३ ·· ··· देशकालौ संकीर्त्य:···· ·· श्री महालक्ष्मी सूक्तस्य जपमहं करिष्ये: ॥

विनियोग:—अस्य श्री सर्वाबाधा विनिर्मुक्त धनधान्यसमन्विताऽर्थ श्री महालक्ष्मी सूक्तं पञ्चदशर्चेञ्च मंत्रस्य, शंकर ऋषि, अनुष्टुप्छन्द:, श्री महालक्ष्मी देवता, ह्रीँ बीजंस्वाहा:, महालक्ष्मी शक्ति:, ममाभिष्ट सिद्धर्थेजपे विनियोग ॥

न्यास:—ॐ शंकर ऋषयेनमः शिरसि, अनुष्टुप् छंदसेनमः मुखे, श्री महालक्ष्मी देवता नमः हृदि, ह्रीँ बीजाय नमः गुह्ये, स्वाहाः शक्तये नमः पादयोः, ममाभिष्ट सिद्धर्थे जपे विनियोगः ॥

ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः, ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः, ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः, एवं हृदयादिन्यासः

ध्यानं—या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी ।
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ॥
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगण खचितैः स्नापिता हेमकुम्भै—
र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमाङ्गल्ययुक्ता ॥१॥

अश्वारूढाँ त्रिनेत्राँ करकमलधरां पीतवासांसुकेशीम् ।
भक्ताभिष्ट प्रदात्रीं शशिमुकुट धरां स्वर्णदाने प्रशस्ताम् ॥
दुष्टान् पापान् हन्तीं स्मर हर दयितां सेवितं सिद्धसंघे ।
स्तां देवीं देववन्द्यां त्रिभुवन जननीं चेतसाचिंतयामि ॥ ॥

मंत्र—ॐ श्रीँ ह्रीँ श्रीँ कमले कमलालये मम प्रसिद्धः २ वरदे श्रीँ ह्रीँ श्रीँ महालक्ष्म्यैनमः (बीजमंत्र: १०८ जपं कृत्वा आद्योपांत:)

श्री महालक्ष्मी सूक्तम् :

श्री सूक्तम्—ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१॥

तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥३॥

काँसोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वावृणोमि ।।५।।

आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः ।
तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायांतरायाश्च बाह्याऽलक्ष्मीः ।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्ति वृद्धि ददातुमे ।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धि च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।८।।

गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामि होपह्वये श्रियम् ।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।१०।।

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम ।
श्रियं वासयमे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।।११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियं वासयमे कुले ।।१२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ।।१३।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।१४।।

तांमऽआवह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्यो श्वान्विन्देयंपुरुषानहम् ।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्री कामः सततं जपेत् ।।१६।।

लक्ष्मी सूक्तम्-सरसिज निलये सरोजहस्ते धवलतरां शुकगन्धमाल्य शोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ।।१।।

धनमग्निर्धनंवायु धनंसूर्यो धनंवसुः ।
धनमिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ।।२।।
वैनतेय सोमं पिबसोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमनो मह्यं ददातु सोमिनः ।।३।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो ना शुभामतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ।।४।।
पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षी पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ।।५।।

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने ।
धनंमे जुषतां देवि सर्वकामाश्चदेहिमे ।।६।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधव प्रियाम् ।
विष्णुप्रिय सखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ।।७।।

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।।८।।

पद्मानने पद्म विपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ।।९।।

पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथम् ।
प्रजानां भवसिमाता आयुष्मतं करोतु मे ।।१०।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इतिविश्रुताः ।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवी देवता ।।११।।

ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः ।
भयशोक मनस्तापा नश्यन्तु ममसर्वदा ।।१२।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्य मारोग्य माविधाच्छोभमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ।।१३।।

विविध प्रयोग :

(१) नागरखण्ड में लिखा है कि—जो श्रीसूक्त द्वारा भक्ति से श्रीलक्ष्मी देवी का पूजन करता रहेगा, वह सात जन्म तक निर्धन नहीं रहेगा ।

(२) विष्णुधर्मोत्तरपुराण का मत—जो श्रीसूक्त का भक्ति से पाठ या हवन करता है उसकी दरिद्रता नष्ट हो जाती है ।

(३) मेरुतन्त्रे—दरिद्रता का नाशक कलिकाल में केवल श्रीसूक्त जप ही है ।

(४) स्वर्ण प्राप्ति के लिये—"हिरण्यवर्णाम्" से, गौ और अश्व के लिये तांमआवह "से, रत्न प्राप्ति के लिए—"अश्वपूर्णां रथमध्याम् से, स्वर्ण, चाँदी की प्राप्ति के लिए 'कांसोस्मिताम्' से, दरिद्रता नाश के लिए—'चंद्रांप्रभासाम्' से, अलक्ष्मी परिहार के लिए—'आदित्यवर्णे' से यश कीर्ति के लिए—"उपैतु मां देवसखः' से, कुलमें अलक्ष्मी नाश के लिए—"क्षुत्पिपासा' से, लक्ष्मी प्रसन्नता के लिए—'गन्धद्वाराम्' से, कलह निवृत्ति के लिए—"मनसःकाममा" से, संपूर्ण संपत्ति वृद्धि के लिए—'कर्दमेन' से, धन धान्य समृद्धि के लिए 'आप सृजन्तु' से, पशु पुत्र बन्धु बान्धवों की समृद्धि के लिए—'आर्द्रांपुष्करिणीम्' से, देश ग्राम की प्राप्ति के लिए—'तांम आवह जातवेदो' से तथा अन्न की समृद्धि के लिए—'यः शुचिः' से हवन करें । इस लक्ष्मी हवन में, खीर, पंचामृत, कमल

पुष्पः कमलगट्टे, गुग्गल, पंचमेवा, केशर, कपूर, इलायची, लवंग आदि सामग्री का उपयोग किया जाता है ।

(५) पूजा समुच्चय में न्यास क्रम—हिरण्यवर्णाम्—मूर्ध्नि । तांम आवह नेत्रयोः । अश्वपूर्णाम्-कर्णयोः । कांसोस्मिताम्-नासिकायाम् । चंद्रां प्रभासाम्-मुखे ।
आदित्यवर्णे-कण्ठे । उपैतुमाम्-बाह्वोः । क्षुत्पिपासा-हृदये । गन्धद्वाराम्-नाभौ । मनसः कामना-गुह्ये । कर्दमेन-अपाने । आपः सृजन्तु-ऊर्वोः । आर्द्रांयः करणीम् जान्वोः । आर्द्रां पुष्करिणीम्-जंघयोः । तांम आवह-पादयोः । यः शुचिः-सर्वाङ्गे ।

(६) लक्ष्मी सहस्रनाम से पुष्पों का चढ़ाना व पुरुषसूक्त के साथ संपुट प्रयोग का उल्लेख मिलता है । लक्ष्मी के साथ विष्णु पूजन भी आवश्यक है । 卐

पुत्र संतान प्राप्ति के लिए मन्त्र प्रयोग

१. संतान गोपाल प्रयोगः—

संकल्पः—देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रः, अमुक शर्माहं मम धर्मपत्न्यां चिरञ्जीव शुभ सन्तान प्राप्त्यर्थं श्रीवंश गोपाल वासुदेव प्रीतये सन्तान गोपाल मन्त्र लक्ष संख्या परिमितं जपं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये। एतत्कार्यं परिपूरणार्थं कलशोपरि श्रीवासुदेव स्थापनं पूजनं च करिष्ये। तन्निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणेशाम्बिकयो पूजनं वरुण-कलशस्थापनं च करिष्ये।

न्यासः—ॐ अस्य श्री सन्तान गोपाल मन्त्रस्य श्री नारदऋषिः, अनुष्टुपछन्दः, श्री कृष्णोदेवता, ग्लौं बीजम् नमः शक्तिः, पुत्रार्थे जपे विनियोगः। ॐ देवकी सुत-गोविन्द हृदयानमः। वासुदेव जगत्पतेशिरसे स्वाहाः। देहिमें तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं-शरणंगतः कवचायहुम्। ॐ नमः अस्त्राय फट्॥

ध्यानम्:—

विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः।
प्रददत् तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेव नन्दनः ॥१॥
वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्।
किरीटिसारथिं पुत्रा नानयन्तं परात्परम् ॥२॥
आदाय ताञ्जलस्थांञ्च गुरवे वैदिकाय च।
अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थ मच्युतम् ॥३॥
बर्हापीडाभिरामं मृगमद तिलकं कुण्डल भ्रान्त गण्डं।
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठंस्मितसुभगमुखं स्वाधरेन्यस्तवेणुम्॥
श्यामं खण्डं त्रिभङ्गं रविकरवसनं भूषितं वैजयन्त्या।
वन्दे वृन्दावनस्थं युवति शतवृतं ब्रह्मगोपाल वेषम् ॥४॥
शंखं चक्रं गदां पद्मं दधानं सूतिका गृहे।
अङ्के शयानं देवक्याः कृष्णं वन्दे विमुक्तये ॥५॥

मंत्र —१ ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥१॥
(लक्षं जपः मधुराक्त तिलैर्दशांश होमः)

२ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

३. ॐ क्लीं गं षोडश सहस्त्र गोप स्त्री विहार दक्ष संतानं कुरू कुरू स्वाहाः

भृगुसंहितोक्त मंत्राः—

१. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां गं गोपालाय सकल जन्मान्तरार्जित पापविध्वंसनाय श्रीमते गोपिजन वल्लभाय श्रीगोपालायते नमः पुत्र जीवयोग सम्पन्नं देहि २ पूर्णायुर्वितर २ मध्येमाखंडितं कुरु२ सर्वान् कामान् पूरय२ गं श्रां क्लिं ह्रीं ऐं ॐ॥

२. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रां गं गोपालाय सकल जन्मान्तरार्जित पापविध्वंसनाय श्रीमते यसोदा सूनुवे रासविहारिणे ते नमः पुत्रं जीवयोग सम्पन्नं देहि२ पूर्णायुर्वितर२ मध्येमाखंडित कुरु२ सर्वान् कमान् पूरय२ गं श्रां क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।

३. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रॉं शंशकराय सकल जन्मान्तरार्जित पाप विध्वंसनाय श्रीमते आयु प्रदाय धनदाय पित्रो रक्षकाय महेश्वराय ते नमः कष्टं चाल्पभयं वारय२ पूर्णायुर्वितर२ मध्ये माखंडितं कुरु२ सर्वान् कामान् पूरय२ शं श्रां क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।

अस्य त्रयं मंत्रस्य भृगुसंहितान्तरगते द्रष्टव्याः शुभदिने शुभ मुहूर्तये शुभ लग्ने प्रारंभकृत्वाः स्वर्ण मूर्ति गोपाल पीठे निर्मायः कलशं संस्थाप्य, शोडषोपचार पूजा कृत्वाः शांति शूक्त पठनं दिग्बंधनं कृत्वाः धूपदीप नैवेद्यसर्वं विधिपूर्वकं कुर्यात् संख्या १२५००० तद्दशांशहोम, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनं कृत्वा।

४. ॐ ह्रीं ज्रीं क्लीं भूर्भुवः स्वः देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहिमे तनयंकृष्ण त्वामहं शरणं गतः भूर्भुवः स्वः क्लीं ज्रीं ह्रीं ॐ

वेदोक्त संतान मंत्रः— "माता कुन्ती द्वारा जाप्य"

ॐ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टारुपाणि पिंशतुआसिं ञ्जन्तु
प्रजापतिर्धाता गर्धविद्धातुगर्भंदेहि सिनीवाली गर्भंदेहि
सरस्वती गर्भेस्ते अश्विनो देना अघत्तां पुष्परजस्त्रजौ॥

विधि : शुक्लपक्ष में शुभचंद्र शुभ मुहूर्त में शुक्रवार से रात्रौ यथा शक्ति जपे। २१००० जपने तक ब्रह्मचर्य से रहे।

उपर्युक्त सभी प्रयोग पुत्र संतान प्रद है। पूर्णआस्था से विद्वान् पुण्डित के द्वारा विधिवत् प्रयोगानुष्ठान करवाने से निश्चित पूर्व जन्म जन्मातरों के पापों का क्षय होकर पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। संतान कामना में पायस होम आवश्यक है।

पुत्र संतानार्थ षष्ठीदेवी प्रयोग :—

संकल्प : विष्णुर्विष्णुः ३ ··· मम (मम यजमान) सभार्यस्यइह जन्मनि जन्मान्तरे वा ज्ञाताज्ञात कृतानां बालघात विप्रधन हरणादि सर्वविधपापानां निवृत्ति-पूर्वकं पूर्व जन्मार्जित अनपत्यत्वादि दोषपाप शमनार्थ मम (यजमानस्य) भार्याया वन्ध्यात्वदोष निरासपूर्वकं दीर्घायुल्य पुत्र प्राप्त्यर्थम् श्री षष्ठी दैव्या प्रीत्यर्थं षष्ठीदेव्या स्तोत्र एवं च ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यैस्वाहाः मंत्र अमुक संख्याकं जाप्यमहं करिष्यैः॥

मन्त्र – ॐ ह्रीं षष्ठी देव्यै स्वाहाः (अष्टाक्षरं महामंत्रः लक्ष्य जाप्यं कृत्वा।

स्तोत्र – ॐ नमो देव्यै महादेव्यै सिद्धयै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥१॥

वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदाय मोक्षदायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥ २ ॥

षष्ठ्यै षष्ठांश रूपायै सिद्धयै च नमो नमः।
मायायै सिद्ध योगिन्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः ॥३॥

सारायै शारदायै च परादेव्यै नमो नमः।
बालाधिष्ठातृ देव्यै च षष्ठी देव्यै नमो नमः ॥४॥

कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्।
प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः ॥५॥

पूज्यायै स्कंदकांतायै सर्वेषां सर्व कर्मसु।
देवरक्षण कारिण्यै षष्ठी देव्यै नमो नमः ॥६॥

सिद्ध सत्त्व स्वरूपायै वंदितायै नृणां सदा।
हिंसा क्रोध वर्जितायै षष्ठी देव्यै नमो नमः ॥७॥

धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
मानं देहि जयं देहि द्विषोजहि महेश्वरि ॥८॥

धर्मं देहि यशोदेहि षष्ठी देव्यै नमो नमः।
देहि भूमिं प्रजांदेहि विद्यां देहि सूपूजिते ॥९॥

कल्याणं च जयं देहि षष्ठी देव्यै नमो नमः।
इति देवीं च संस्तूय लभे पुत्रं प्रिय व्रतः ॥१०॥

यशस्विनं च राजेन्द्रः षष्ठीदेव्याः प्रसादतः।
षष्ठी स्तोत्रमिदं ब्रह्मन्यः शृणोति तुवत्सरम् ॥११॥

अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिर जीवनम्।
वर्षमेकं च यो भक्त्या संपूज्येदं शृणोति च ॥१२॥

सर्वपापाद् विनिर्मुक्तो महावन्ध्या प्रसूयते।
वीरं पुत्रं च गुणिनं विद्यावंतं यशस्विनम् ॥१३॥

सुचिरायुष्यवन्तं च सूते देवी प्रसादतः।
काकवंध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ॥१४॥
वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठी देवी प्रसादतः।
रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति चेत् ॥१५॥
मासेन मुच्यते बालः षष्ठी देवी प्रसादतः॥

विधि – शुभ मुहूर्त, उपयुक्तचंद्र में शुक्ला ६ तिथि से यह प्रयोग स्वयं वा ब्राह्मण द्वारा एक लक्ष पाठ करे या करवायें। जन्म के बाद ६ठे दिन इसी षष्ठी देवी की पूजा होती है। इसे सूतिका देवी, देवसेना भी कहते हैं। "ललाट पर लिखितं विधाता षष्ठीदिनेयाक्षर मालिका च" "इसे विधात्रा" भी कहते हैं। इसके प्रयोग से वा घर में नित्यपाठ से बालक निरोगी, वीर, गुणवान, विद्यावान, यशवान् होते हैं। काकवंध्या, मृतवत्सा संतान नहीं होती है इसका प्रयोग एक लक्ष पाठ का है।

श्रीयन्त्रः समृद्धि एवं धनवृद्धि के लिए

यन्त्र क्या है ?

यन्त्र की सबसे सरल-सुबोध परिभाषा यह है कि 'विज्ञान का व्यावहारिक रूप (मूर्तरूप) ही यन्त्र है।' चूंकि 'विज्ञान' शब्द बहु आयामी और व्यापक अर्थबोध का केन्द्र है; अतः उसके प्रत्येक क्षेत्र में यन्त्रों के विविध रूप उपलब्ध होते हैं। यहाँ हमारा प्रतिपाद्य विषय अध्यात्म 'मन्त्रविज्ञान' है, अतः उसी के सन्दर्भ में 'यन्त्र' पर कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

अध्यात्म के क्षेत्र में यंत्र

अध्यात्म के क्षेत्र विशेष—मन्त्र विज्ञान के अन्तर्गत आने वाले इस शब्द 'यन्त्र' को व्याख्या कुछ इस प्रकार हो सकती है—

'यन्त्र' वस्तुतः मन्त्र विद्या का उपजीव्य है, वैसे मन्त्र विद्या के तीनों आयाम-मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र—स्वयं में एक पृथक विषय माने जाते हैं। इन्हें मन्त्र विद्या, यन्त्र विद्या और तन्त्र विद्या की संज्ञा से अलग-अलग बड़े विस्तार से विवेचित किया गया है। इनकी व्याख्या और साधना पद्धति सम्बन्धी साहित्य विपुल परिमाण में उपलब्ध होता है। साध्य भले ही एक हो; किन्तु साधना और साधना पद्धति की दृष्टि से इन तीनों में पर्याप्त भिन्नता है। जहाँ यन्त्र-साधना नितान्त मौखिक (मानसिक) होती है, वहाँ यन्त्र-साधना में किसी आकृति अथवा चित्रों को माध्यम बनाया जाता है। यन्त्र में मन्त्र की मानसिकता और यन्त्र की रूपात्मकता के साथ-साथ कुछ विशिष्ट भौतिक उत्पादनों (वनस्पति विशेष अथवा रासायनिक पदार्थों) को भी सम्मिलित किया जाता है। मन्त्रसाधना ध्वनिप्रधान होती है, यन्त्र-साधना आकृति प्रधान होती है और तन्त्र साधना में इन दोनों के साथ भौतिक पदार्थों का प्रयोग भी होता है। तीनों की प्रभाव शक्ति अद्भुत है; किन्तु शफलता के लिए साधना विधि का निर्दोष और पूर्ण होना आवश्यक है।

यंत्र-साधना

यद्यपि प्रत्येक यन्त्र का अपना स्वतन्त्र साधना-विधान होता है, उसके कुछ विशिष्ट नियम और प्रतिबन्ध होते हैं; पर सामान्यतः सभी यन्त्रों की साधना-पद्धति में यह एकरूपता पाई जाती है कि—

यन्त्र साधना में सिद्ध किये हुये मन्त्र-विशेष को (किसी निर्दिष्ट)

पत्र, ताल, कागज, वस्त्र अथवा धातुपत्र पर, विशेष रूप से बनाई गई स्याही से अंकित किया जाता है। ऐसा मन्त्र उक्त आधार (पत्तर-वस्त्र आदि) पर बहुधा त्रिभुज, वर्ग, कोण, चतुर्भुज, पुष्पदल अथवा अन्य किसी प्रकार की आकृति बनाकर उसके रिक्त स्थानों में अंकित किया जाता है।

यन्त्र-रचना के पश्चात् उसे फिर से मन्त्र द्वारा अभिषिक्त करके विधिवत धूप-दीप और हवन-पूजन की प्रक्रिया द्वारा सशक्त किया जाता है। समस्त विधान पूरा हो चुकने पर वह पत्र लेकर किसी धातु के कवच (तावीज) में रखकर यथा-निर्देश प्रयुक्त किया जाता है। प्रयोग के लिए किसी स्थान पर रखने अथवा शरीर पर धारण करने (गले या भुजा में) का नियम है। कुछ यन्त्र ऐसे भी होते हैं, जो कवच में न रखकर खुले रूप में ही कहीं स्थापित कर दिए जाते हैं।

सामान्य दृष्टि से देखने पर कोई भी यन्त्र, (वह चाहे धातुपत्र पर हो, चाहे भोजपत्र पर अथवा कागज पर) किसी गणितीय प्रश्न का हल जैसा प्रतीत होता है, जिसमें कोई विचित्रता नहीं रहती। पर वास्तविकता यह है कि मन्त्र सिद्धि के कारण वह यन्त्र अपना चमत्कारी प्रभाव डालता है। बिजली का कोई खुला हुआ तार, जिसमें विद्युत्-धारा प्रवहमान हो, सामान्य वस्तु प्रतीत होने पर भी असीम शक्ति से सम्पन्न होता है। उसका स्पर्श भारी से भारी मशीनों को गतिमान कर देता है, विशाल भवनों को धराशायी कर सकता है और महाकाय हाथी को आधे मिनट में ही निर्जीव कर सकता है। ठीक ऐसी ही अदृश्य किन्तु अलौकिक शक्ति यन्त्रों में निहित रहती है। भौतिक यन्त्रों (मशीनों) की अपेक्षा आध्यात्मिक यन्त्र सैकड़ों गुना अधिक शक्तिशाली होते हैं। उनके प्रभाव को देखकर आज के बड़े-बड़े भौतिक विज्ञान भी दिग्भ्रमित—जैसे हो जाते हैं।

श्रीयंत्र

प्रत्येक यन्त्र किसी न किसी मन्त्र का मूर्तरूप होता है और प्रत्येक मन्त्र किसी शक्ति विशेष (देवी-देवता) का सूक्ष्मतम (ध्वन्यात्मक) आकार है। इस प्रकार प्रत्येक यन्त्र किसी न किसी दैवी शक्ति (अलौकिक सत्ता) का प्रतीक है। साधना को सुगम बनाने और मानसिक एकाग्रता, तन्मयता तथा आत्म-समर्पण के लिये विभिन्न देवी-देवताओं की कल्पना कर ली गई। इस प्रकार परम सत्ता, अलौकिक शक्ति, ईश्वर, देवी, देवता और निराकार ब्रह्म यह सब वस्तुतः उसी अदृश्य शक्ति के नाम रूप हैं, जिसके नियन्त्रण में ही अखिल ब्रह्माण्ड का अणु-परमाणु परिचलित है।

श्रीयन्त्र का सम्बन्ध वैभव-सम्पदा की अधिष्ठात्री शक्ति से माना गया है। आध्यात्मिक ग्रन्थों में इस शक्ति के विभिन्न नाम प्राप्त होते हैं। इसका सर्व सम्मत नाम लक्ष्मी है। लक्ष्मी का पर्याय श्री है; अतः इस यन्त्र को 'श्रीयन्त्र' की संज्ञा प्रदान की गई। वैसे भावसाम्य होने पर भी कहीं-कहीं नामांतर के प्रसंग भी मिलते हैं, यथा-तन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत दश महाविद्याओं के क्रम में वर्णित तीसरी महाविद्या 'षोड़शी' को श्री विद्या (लक्ष्मी) का स्वरूप माना गया है। महात्रिपुर सुन्दरी तथा ललिता जैसे नाम भी इस सन्दर्भ में प्राप्त होते हैं। जो भी हो, समृद्धि की स्वामिनी और प्रदायिका महादेवी लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए उनकी पूजा, अर्चना ध्यान तथा व्रत आदि उपासना के कई मन्त्र हैं। श्रीयन्त्र भी उन्हीं में से एक है; पर प्रभाव चमत्कार, अलौकिकता और स्थायित्व की दृष्टि से इसका स्थान सर्वोच्च है। श्रीयन्त्र साक्षात् लक्ष्मी-प्रतिभा है। इसकी साधना निश्चित रूपेण कल्याणकारी होती है। अपनी इसी रहस्यमय शक्ति के कारण यह मन्त्र चिरप्राचीनकाल से सम्पत्ति प्रेमियों की लालसा का प्रमुख बिन्दु रहा है और बड़े-बड़े राजे-महाराजे तथा धनिक भी इसे प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहे हैं। जिसे यह यन्त्र मिल गया, वह श्री विद्या लक्ष्मी जी का कृपापात्र अवश्य हुआ। आज यह यन्त्र, जो कई शताब्दितों तक लुप्तप्राय था, अनेक धर्मों, सम्प्रदायों और देशों के धर्मप्राण जनों की आस्था अर्जित कर रहा है।

श्रीयंत्र का निर्माण

आर्ष ग्रन्थों में श्री यन्त्र-निर्माण के लिए 'आधार भूमि की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि इस यन्त्र की रचना के लिये स्वर्णपत्र, रजतपत्र, ताम्रपत्र अथवा भोजपत्र को आधारभूमि बनाना चाहिए। यद्यपि यन्त्र का प्रभाव अवश्य मिलता है; पर आधार भूमि के रूप में वस्तुगत श्रेष्ठता के कारण प्रभावशक्ति में अन्तर अवश्य रहता है। भोजपत्र पर अंकित यन्त्र अपने मौलिक प्रभाव का दसगुना, ताम्रपत्र पर अंकित यन्त्र सौ गुना, रजत यन्त्र पर अंकित सहस्र गुना और स्वर्णपत्र पर अंकित लाख गुना अधिक फल देने वाला होता है। इसके अतिरिक्त स्फटिक, विद्रुम (मूँगा) तथा पन्ना जैसे रत्नों पर भी श्रीयन्त्र की रचना होती है। पत्रों पर अंकित यन्त्र के अक्षर यदि ऊपर की ओर (उभरे हुये) हों, तो विशेष फलदायक होते हैं। उभरे अक्षरों के अभाव में, गहराई से उत्कीर्णित अक्षरों पर गोरोचन, लाल चंदन, केसर जैसी वस्तुयें, मन्त्र पढ़ते हुये भर देना चाहिये।

यदि रत्न पर यन्त्र बनवाना है, तो इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वह रत्न कम से कम एक तोले का अवश्य हो। वैसे ४ तोले भार के रत्न पर अच्छा यन्त्र बन सकता है। रत्नों पर निर्मित श्रीयन्त्र के गुणों का वर्णन सहज सम्भव नहीं; वह स्वयं लक्ष्मी के तुल्य प्रभावशाली होता है। पर रत्न की मूल्यवत्ता को देखते हुये आज के युग में उसका निर्माण असम्भव जैसा हो गया है।

त्रिलोह धातु (सोना, चांदी, तांबा) के मिश्रण का पत्तर बनवाकर यदि उस पर यन्त्र रचना की जाय, तो वह भी फलदायी होता है। जिसे कोई भी आधार सुलभ न हो, वह अन्तिम विकल्प के रूप में भूमि पर इस यन्त्र की रचना करके उसकी पूजा, साधना कर सकता है। भूमि पर यन्त्र रचना करने के पूर्व उस स्थान को भली-भाँति स्वच्छ मिट्टी से लीपकर शुद्ध करना आवश्यक है। तदुपरान्त यन्त्र पर लाल रंग की मिट्टी बिछा देनी चाहिये। ईंट की सुर्खी इसके लिए उत्तम होती है। नदी की बालू यदि लाल रंग से रंग ली जाय तो वह भी प्रयोजनीय है। चावल भी (विभिन्न रंगों में रंग) यन्त्र के कोष्टकों में भरे जा सकते हैं। स्मरणीय है कि इस प्रकार की यन्त्र रचना में कलात्मकता के साथ उसकी पवित्रता शुद्धि और स्वच्छता का भी पूरा ध्यान रखना चाहिये।

पाठकों की सुविधा के लिये **श्री यन्त्रम्** प्रस्तुत है। इसे रचना करके साधना का लाभ प्राप्त करें।

साधना-काल

(का चित्र पृ. 239)

समय का महत्व सर्वमान्य है। भारतीय ज्योतिष तथा धर्म-दर्शन ग्रन्थों में 'मुहूर्त' शब्द का प्रयोग बहुलता से मिलता है। यह मुहूर्त क्या है—समय विशेष। समय विशेष का परिणाम भी विशिष्ट रूप में सामने आता है। भौतिक विज्ञान भी प्रकरान्तर से समय की सूक्ष्मता को स्वीकार करता है। मुहूर्त शोधन वस्तुतः गणितीय पद्धति पर आधारित है। आज के विकसित युग में जिस कालिक प्रभाव की चर्चा की जा रही है, उसका रहस्यबोध हमारे पूर्वज मनीषियों को हजारों वर्ष पहले ही हो चुका था। ग्रहों के, जलवायु के और तज्जन्य साम्पातिक प्रभाव के विश्लेषण द्वारा उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से निर्दिष्ट कर दिया था कि कब किस दिन, किस क्षण, किस कार्य के लिए कहाँ अनुकूल अथवा प्रतिकूल समय रहेगा। यन्त्र-साधना में भी ऐसे अनुकूल समय मुहूर्त का पालन करना आवश्यक होता है।

तन्त्र ग्रन्थों में श्रीयन्त्र की साधना के लिए अनुकूल समय का निर्देश करते हुये कहा गया है कि वर्ष के केवल ये महीने इस यन्त्र की साधना हेतु श्रेष्ठ होते हैं—वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघ। कार्तिक और माघ के महीनों में इस यन्त्र की साधना से विशेष फल प्राप्त होता है। →

देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम् ।

(१) तर्पणकालः—तर्पण का जल सूर्योदय से एक प्रहर अमृत, डेढ़ प्रहर तक दुग्ध, साढ़े तीन प्रहर तक जलरूप से पितरों को प्राप्त होता है ।

(२) तर्पणकर्ता पूर्वाभिमुख हो कुशा के आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करने के बाद कुशा और जल लेकर संकल्प करे ।

(३) तर्पण संकल्प—ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुक संवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्न अमुकशर्माहं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणं करिष्ये ।

(४) तर्पणतीर्थ—तर्पण के तीन तीर्थ हैं । (१) देवतीर्थ अंगुलियों का अग्रभाग- (२) कायतीर्थ (प्रजापति) सबसे छोटी अंगुलि का मूल (३) पितृतीर्थतर्जनी और अंगुष्ठमूलभाग—

अथ देवादि तर्पण—सव्य (बायें कन्धे पर जनेऊ रखकर) होकर देवतीर्थ से पूर्वमुख बैठकर त्रिकुशा और अक्षत से एक-एक अञ्जलि जल प्रत्येक नाम को पढ़कर देवे ।

ॐ ब्रह्मातृप्यताम् १ ॐ विष्णुस्तृप्यताम् २ ॐ रुद्रस्तृप्यताम् ३ ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम् ४ ॐ देवास्तृप्यन्ताम् ५ ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम् ६ ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम् ७ ॐ वेदास्तृप्यन्ताम् ८ ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम् ९ ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम् १० ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम् ११ ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम् १२ ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम् १३ ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम् १४ ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम् १५ ॐ नागास्तृप्यन्ताम् १६ ॐ सागरास्तृप्यन्ताम् १७ ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम् १८ ॐ सरितस्तृप्यन्ताम् १९ ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम् २० ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम् २१ ॐ रक्षांसितृप्यन्ताम् २२ ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम् २३ ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम् २४ ॐ भूतानितृप्यन्ताम् २५ ॐ पशवस्तृप्यन्ताम् २६ ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम् २७ ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम् २८ ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम् २९ ।

अथ दिव्यमनुष्य तर्पण—"निवीति" अर्थात् माला के समान यज्ञोपवीत और अंगौछे को करके कायतीर्थ से उत्तर मुख होकर त्रिकुशा यव से दो-दो अंजलि जल प्रत्येक को देवें ।

ॐ सनकस्तृप्यताम् १ ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् २ ॐ सनातनस्तृप्यताम् ३ ॐ कपिलस्तृप्यताम् ४ ॐ आसुरिस्तृप्यताम् ५ ॐ वोढुस्तृप्यताम् ६ ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् ७ ।

अथ मरीच्यादि तर्पण—पुनः सव्य होकर पूर्वाभिमुख देवतीर्थ से अक्षत सहित एक-एक अञ्जलि जल नीचे के मरीच्यादि ऋषियों को देवताओं की तरह देवे ।

ॐ मरीचिस्तृप्यताम् १ ॐ अत्रिस्तृप्यताम् २ ॐ अङ्गिरातृप्यताम् ३ ॐ पुलहस्त्यस्तृप्यताम् ४ ॐ पुलहस्तृप्यताम् ५ ॐ क्रतुस्तृप्यताम् ६ ॐ प्रचेतास्तृप्यताम् ७ ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम् ८ ॐ भृगुस्तृप्यताम् ९ ॐ नारदस्तृप्यताम् १० ।

अथ पितृतर्पणम्—अपसव्य (दक्षिण कन्धे पर यज्ञोपवीत को करके) दक्षिण मुख हो तिल मोटक लेकर तीन-तीन अञ्जलि जल तिलसहित वामघुटना मोड़ कर पितृतीर्थ द्वारा प्रत्येक को देवे ।

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, । १ ॐ सोमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा तस्मै स्वधा, । २ ॐ यमस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा तस्मै स्वधा, । ३ ॐ अर्यमातृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, ४ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, ५ वर्हिषदस्तृषन्तामिदं जल तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा । ६ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं जलं तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा, तेभ्यः स्वधा ७ ।

अथ यमतर्पण—पूर्वोक्त विधि से निम्न १४ यमों को भी तीन-तीन अञ्जलि जल देवे ।

ॐ यमाय नमः १ ॐ धर्मराजाय नमः २ ॐ मृत्यवेनमः ३ ॐ अन्तकाय नमः ४ ॐ वैवस्वताय नमः ५ ॐ कालाय नमः ६ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ७ ॐ औदुम्बराय नमः ८ ॐ दध्नाय नमः ९ ॐ नीलाय नमः १० परमेष्ठिने नमः ११ ॐ वृकोदराय नमः १२ ॐ चित्राय नमः १३ ॐ चित्रगुप्ताय नमः १४ ।

अथ पितृतर्पणम्---तीन कुशा को एक में लपेट कर इकठ्ठा कर लेने को मोटक कहते हैं और तीन कुशा को त्रिकुशा कहते हैं । तिल और कुशा सहित तीन-तीन अञ्जलि जल पितरों को देवे ।

ॐ वसुरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पिता अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा ३ ॐ रुद्ररूपः अमुकगोत्रः अस्मत्पितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ आदित्यरूपः अमुकगोत्रः अस्मत्प्रपितामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

ॐ गायत्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मन्माता अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ३ । ॐ सावित्रीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्पितामही अमुक देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा ३ । सरस्वतीरूपा अमुकगोत्रा अस्मत्प्रपितामही अमुकी देवी तृप्यतामिदं जलं तस्यै स्वधा नमः ३ ।

ॐ अमुकगोत्रः अस्मन्मातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मत्प्रमातामहः अमुकशर्मा सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ । ॐ अमुकगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहः अमुकशर्मा तृप्यतामिदं जलं तस्मै स्वधा नमः ३ ।

इसी क्रम से पितृव्य, तत्पत्नी, भ्राता, तत्पत्नी, भगिनी, मातुल, मातुलानी, पितृष्वसा (फूआ), मातृष्वसा (मौसी) मातृष्वस्रीय, मातुलेयादि तथा पिता माता के सपिण्ड को एक एक अञ्जलि जल दिया जावे । ससुर, सास, गुरु का भी तर्पण करें। इसके अतिरिक्त और भी जो पितृ देव मानव आदि जिनको जल देना अभीष्ट हो नीचे लिखे मन्त्र से जल देवे ।

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः ।
तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः ॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम् ॥

नीचे के श्लोक को पढ़ते समय बराबर जल देते जावे !
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः ।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति ॥ १ ॥

इस श्लोक को पढ़ते समय अंगोछे के खूँट से जल पृथ्वी पर निचोड़ कर तर्पण करे ।
ये चास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ।
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥ २ ॥

श्री भीष्मपितामह को अपसव्य होकर नीचे लिखे मन्त्र से अथवा केवल जल लेकर तीन तीन अञ्जलि देवे । ऐसा सौभाग्य बालब्रह्मचारी पितामह को ही प्राप्त है । जिसे सभी हिन्दू जनता अपना पितामह मान कर तर्पण करती है । यह हमारे देश का आदर्श है ।
वैयाघ्रपदगोत्राय साङ्कृत्यप्रवराय च ।
अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे ॥

सूर्यार्घ्यः—सव्य होकर पूर्वाभिमुख निम्नलिखित मन्त्र से पुष्प गन्ध तुलसी आदि लेकर ३ अर्घ्य देवे ।
ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

उपसंहार व सदुपदेश

आदित्यपुराणे-यस्तु कार्तं (सत्य) युगे धर्मो न कर्तव्यः कलौयुगे पापप्रयुक्तश्च सदा कलौ नार्यो नरोस्तथा ॥ वाग्दानान्तरमन्यस्मै दानमदूषितम् ॥ विज्ञानेश्वरवचनम्—दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयांश्चेद्वर आव्रजेत् ॥ त्यजेद्देशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् । द्वापरे कुलमेकन्तु कर्तारन्तु कलौ युगे ॥ कृते तु मानवाधर्मास्त्रेतायां गौतमाः स्मृता ॥ अन्योपदेश—आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् । ज्ञात्वा पापकरणे न तस्य निष्कृतिर्दृष्टा भूम्याभिपतनादृते । विधवया महाधर्मा चरणे स पुरुषस्त्याज्यः—यो नरो विधवा नारीमुपेयात्काममोलुपः स हन्तव्योऽथवा त्याज्यो द्विजाती नामयं विधिः ॥ आशीर्वादाः—सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः । सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाग्भवेत् ॥ शुभम् ॥

यस्मिन्देशेऽस्वसुप्तो हितं तस्य विधीयताम् । रक्षणीयाः प्रयत्नेन गावो विप्राः सुतस्त्रियः ॥ अन्नं जलं स्वदेशीयं यथा गृह्णाति मानवः । तथा वस्त्रं स्वदेशीयं धार्यं देशहिताय च ॥ अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् । उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ शरीरं बलवद्धार्यं धैर्यं धार्यं भयं नहि । भारतं भारतीयानामित्येको मंत्र उत्तमः । जयश्चाप्यो गृहीतव्यः उपदेष्ट्याभूत्र च।

गणेशचतुर्थी (बहुला) कथा

श्रीगणेशउवाच ॥ भद्रे भाद्रपदेमासि संकष्टीयाचतुर्थिका। अनेकफलदा प्रोक्ता सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥२॥ पूजापूर्वविधानेन तस्याः कार्या समन्ततः विशेषं तु प्रवक्ष्यामि भोजनादिषु पार्वति ॥३॥ श्रीकृष्ण उवाच—एवं निवेदिते पुत्रे सुतं पप्रच्छपार्वती। को विशेषः प्रकर्तव्यः पूजने भोजनेषु च ॥४॥ श्रीगणेशउवाच—गुरूपदिष्टमार्गेण भक्त्या तद्व्रतमाचरेत् । द्वादशष्वपि मासेषु पृथङ्नामभिरर्चयेत् ॥ ५ ॥ विनायकश्चैकदन्तः कृष्णपिंगो गजाननः । लम्बोदरो भालचन्द्रो हेरम्बो विकटस्तथा ॥ ६ ॥ वक्रतुण्डश्चासुरथो विघ्नराजो गणाधिपः । द्वादशैर्नामभिश्चैतैर्गणेशं पूजयेद्व्रती ॥ ७ ॥ द्वादशस्वपि मासेषु पूज्यते नामभिः पृथक् ॥ चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय नित्यकृत्यं यथोदितम् ॥ ८ ॥ नलोह्यासीत्कृतयुगे पुण्यश्लोको नराधिपः । तस्य रूपवती भार्या दमयन्तीति विश्रुता ॥९॥ तस्य दैववशाच्छापः स्त्रीयोगविवादकृत । तदा देव्या कृतं ह्येतद् व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥ १० ॥ पार्वत्युवाच—केन वै विधिना पुत्र दमयन्ती व्रतोत्तमम् चकार भूपति लेभे तृतीये मासि शोभना ॥११॥ श्री कृष्ण उवाच— एवं निगदितः पार्थ पार्वत्या गणनायकः । प्रोवाच वचनं धीमान् विस्तरेण शृणुष्व तत् ॥ १२ ॥ श्रीगणेश उवाच—मातर्नलस्य भूपस्य विपत्तिर्विपुलाभवत् ॥ गजा गजशालायां मदरायां हया हताः ॥ १३ ॥ कोशस्तु तस्करै गृहं दग्धं कृशानुना । मन्त्रिणोऽभिगतास्तस्य राजकार्यविना शकाः ॥१४॥ अक्षक्रीडनकेनैव राजा सर्वहृतोऽभवत् ॥ मन्द शस्ततो राजा स्वपुरान्निर्गतो वनम् ॥१५॥ दमयन्त्या समं त नानाक्लेशैश्च पीडितः ॥ तत्रापि दमयन्ती च वियोगं प्रा दैवतः ॥ १६ ॥ कस्मिंश्चिन्नगरे राजा भृत्यभावं समागतः । कस्मिंश्चिद्विषये भार्या कस्मिंश्चिद्विषये सुतः ॥१७॥ भिक्षाशिनस्ते सर्वे नानाव्याधिप्रपीडिताः । स्वकर्मभोगान् भुंजाना परस्परवियोगिनः ॥१८॥ एकदा दमयन्ती सा शरभंग महामुनिम् । प्रणम्य पादमूर्ध्ना बद्धाञ्जलिरभाषत ॥ १९ ॥ दमयंत्युवाच-कथं भो भर्तृप्राप्तिः पुत्रप्राप्तिश्च कथं भवेत् कथं गजहयान् राज्यं नगरं नृभिराकुलं ॥ २० ॥ कथमेतद् भार्थ्य मुने तद्वद निश्चितम् । गणेश उवाच—इति तस्या व श्रुत्वा शरभंगोऽब्रवीद्वचः ॥ २१ ॥ शरभंग उवाच—दमयन्ति शृणु वचो वक्ष्यामि हितकारकम् । महासंकष्टशमनं सर्वका प्रदं शुभम् ॥ २२ ॥ भाद्रमासस्य या कृष्णाचतुर्थी संकष्टा सा । तस्या पूज्यो नरैः स्त्रीभिरेकदन्तो गजाननः ॥ २३ ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन भक्त्या प्रीत्या च श्रद्धया । व्रतेनानेन भो दे लब्धकामा भविष्यसि ॥२४॥ मुनिमासैर्महाराजमिति मे निश्च मति । गणेश उवाच—दमयन्ती तदा चक्रे संकष्टव्रतमुत्तमम् भाद्रे मासि कृत्तारंभा गणनाथार्चने रता ॥ २५ ॥ सप्तमासे पतिं पाप राज्यं पुत्रं तथैव च । तथैव सुपदं राजा कृत्वा व्रतादमं व्रतोत्तमम् ॥ २६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच—तथा पार्थ भविष्य द्राज्यं प्राप्स्यसि निश्चितम् । वैरिणस्ते पराभूता भविष्य विशेषतः ॥ २७ ॥ इति ते कथितं भूप व्रतानामुत्तमं व्रतम् करिष्यति महाभागं सर्वं दुःखनिवारणम् ॥२८॥ इति श्रीस्कन्द पुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे भाद्रपदकृष्णचतुर्थीव्रतकथा समाप्ता ॥२९॥

जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई ...

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप-दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

औषध खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

नव ग्रहों की शान्ति के लिये तान्त्रिक मन्त्र

		जप संख्या
सूर्य—ॐ घृणि सूर्याय नमः		७०००
चन्द्र—ॐ सों सोमाय नमः	,,	११०००
मंगल—ॐ अं अंगारकाय नमः	,,	१००००
बुध—ॐ बुं बुधाय नमः	,,	९०००
गुरु—ॐ वृं बृहस्पतये नमः	,,	१९०००
शुक्र—ॐ शुं शुक्राय नमः	,,	१६०००
शनि—ॐ शं शनैश्चराय नमः	,,	२३०००
राहु—ॐ रां राहवे नमः	,,	१८०००
केतु—ॐ कें केतवे नमः	,,	१८०००

कर्तव्य—वाराह पुराण का वचन है कि गर्भ धारण के बाद स्त्री को मांस नहीं खाना चाहिए। गृह्य कारिका में लिखा है कि गर्भवती स्त्री अंगार, भस्म, हड्डी, कपाल, चूल्ही, सूप, ऊखल, पत्थर आदि यन्त्र, तुष (भूसी, मार्जनी (झाड़ू) तथा गोबर के पिंड आदि पर न बैठे। जल में घुस कर स्नान न करे। कोयला या नख से पृथ्वी पर न लिखे। झगड़ा न करे, अंगड़ाई न ले। खुले केश न रहे। नंगी न हो, सन्ध्या समय भोजन तथा शयन न करे। अमंगल शब्द का उच्चारण, शून्य में रहना तथा अकेले किसी वृक्ष के नीचे जाना भी वर्जित है। विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है कि कटु, तीखा, कसैला, अत्यन्त गर्म तथा अधिक नमकीन भोजन, अधिक परिश्रम, बोझा ढोना, नाव या किसी सवारी पर चढ़ना, तथा मैथुन करना गर्भवती स्त्री को त्याग देना चाहिए। हेमाद्रि में कौण्डिन्य का वचन है कि मुण्डन, पिंडदान तथा सम्पूर्ण प्रेत कर्म को जीवत्पितृक तथा गर्भिणी के पति को त्याग देना चाहिए। मिताक्षरा में लिखा है कि समुद्र के जल से स्नान, नख काटना तथा मुण्डन, यदि गर्भिणी का पति करे तो प्रजा की हानि होती है। पृथ्वी चन्द्रोदय में गरुण पुराण का वचन है कि गर्भिणी पति गया में पिंडदान कर सकता है। प्रयोग परिजात में कश्यप का वचन है कि गर्भिणी स्त्री, हाथी, घोड़ा, पर्वत तथा कोठे पर न चढ़े, मैथुन तथा शीघ्र गमन को त्याग दे। शोक करना, रक्त विमोक, साहसिक कर्म, कुक्कुट के समान बैठना, अधिक परिश्रम, दिन में सोना तथा रात्रि में जागना भी त्याग दे।
मदन रत्न में स्कन्द पुराण का वचन है कि हल्दी, कुंकुम, सिन्दूर, काजल, कूर्पासक, (चोली) पान, मंगल सूत्र, केश संस्कार, हाथ-कान के भूषण इनके पति की आयु चाहने वाली स्त्री को गर्भावस्था में भी नहीं त्यागना चाहिये। बृहस्पति का वचन है कि चौथे छठे, आठवें तथा विशेष कर आषाढ़ मास में गर्भिणी स्त्री यात्रा न करे। याज्ञवल्क्य का वचन है कि दोहद (जो वस्तु गर्भिणी को खाने की इच्छा हो) गर्भिणी को यत्न पूर्वक देना चाहिये। इससे सुन्दर तथा आयुष्मान सन्तान की उत्पत्ति होती है। ... पर आश्वलायन का वचन ... भोजन इन्हें वेद के ज्ञाता गर्भिणी पति को त्याग देना चाहिये।

शालग्रामादि शिला के पूजनादि का विचार— तिथि तत्व में ब्रह्मपुराण का वचन है कि सूर्य तथा शिव के सिवा अन्य देवताओं की पूजा कमल से करना श्रेष्ठ है। वाराह तथा पद्म पुराण में लिखा है कि घर में दो लिंग, दो शालग्राम, दो द्वारका चक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खंडित प्रतिमा, मत्स्य-कूर्म आदि १० अवतार, अग्नि से जली तथा भग्न प्रतिमाओं को न पूजे, क्यों कि इनके पूजने से गृहस्थ को सदा उद्वेग प्राप्त होता है। शालग्राम सम (चार छः आदि) पूजना चाहिये। किन्तु दो नहीं पूजना चाहिये, विषम में एक के सिवा तीन आदि पूजना ठीक नहीं। द्वारावती चक्र के सहित टूटी-फूटी शालग्राम शिला की पूजा कर सकते हैं क्यों कि शालग्राम की भग्न शिला भी श्रेष्ठ कही गयी है। वाराहपुराण में लिखा है कि जो मनुष्य भक्त को सोने के सहित शालग्राम शिला का दान करता है। उसे सम्पूर्ण पृथ्वी दान का फल प्राप्त होता है। यह भी लिखा है कि १०० शालग्राम शिलाओं की नित्य पूजा का फल अवर्णनीय है। विष्णुधर्म में लिखा है कि शालग्राम तथा द्वारावती चक्र की शिला को ब्राह्मण को नित्य पूजना चाहिये। क्षत्रिय आदि स्पर्श कर पूजन न करें। स्कन्द पुराण में लिखा है कि शूद्र, अनुपनीत, स्त्री तथा पतित ये विष्णु तथा महादेव को स्पर्श करें तो नरक की प्राप्ति होती है। कल्याण चाहने वाली ब्राह्मणी को भी शालग्राम को नहीं छूना चाहिये, क्योंकि लोक में इसका प्रायश्चित नहीं है। इन्हें स्पर्श रहित पूजन का ही अधिकार है। वाराह पुराणका वचन है कि शालग्राम को स्त्री तथा शूद्र का स्पर्श वज्र के स्पर्श से भी अधिक होता है। मोहवश स्पर्श करने पर प्रलय पर्यन्त नरक में रहना पड़ता है। निर्णयसिन्धुकार का मत है कि केवल शालग्राम के स्पर्श का ही दोष होता है। ब्रह्म पुराण में लिखा है कि शालग्राम की शिला के निकट यदि किसी का देहान्त हो जाय तो उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

षोडशोपचारदेवपूजनविधिः

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ **आचमन**—ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। प्राणायाम। **संकल्पः**—ॐ विष्णुः ३, ॐतत्सदद्यश्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्त्तकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे……बौद्धावतारे अमुक संवत्सरे…… अमुक शालिवाहनशाके……अमुक…… ……नाम्नि संवत्सरे अमुक अयने अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकनामाहं मम कायिकवाचिकमानसिकज्ञाताज्ञातसकलदोषपरिहारार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च……अमुककर्म करिष्ये॥ देवतापूजनं॥ प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति हो तो केवल पुष्प छोड़ देवे। यदि प्रतिष्ठा की हुई न हो तो सुपारी के ऊपर नारा लपेट कर अक्षत के ऊपर स्थापित करके दाहिने हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र से छोड़े॥ **आवाहन**—आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव! यावत् पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधो भव॥ **प्रतिष्ठा**—अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः चरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥ **आसन**—रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्। आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥ (आसनं समर्पयामि)॥ **पाद्य**—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्धसंयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्॥ (पाद्यं स०)। **अर्घ्य**—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह। करुणाकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते। (अर्घ्यं स०)॥ **आचमन**—सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम्। आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर। (आचमनीयं स०)॥ **स्नान**—गङ्गासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः। स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे। (स्नानं स०)॥ **दुग्धस्नान**—कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्। (दुग्धस्नानं स०)॥ (पुनर्जलस्नानं स०)॥ **दधि स्नान**—पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (दधिस्नानं स०)॥ **घृतस्नान**—नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम्। घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (घृतस्नानं स०)॥ **मधुस्नान**—तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु। तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् (मधुस्नान स०) **शर्करास्नान**—इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका। मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (शर्करास्नानं स०)॥ **पञ्चामृतस्नान**—पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करयायुतम्। पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् (पञ्चामृतस्नानं स०) **शुद्धोदकस्नानम्**—मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। (शुद्धोदकस्नानं स०)॥ **वस्त्र**—सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे। मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्। (वस्त्रोपवस्त्रं स०)॥ **यज्ञोपवीत**—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयं। उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर। (यज्ञोपवीतं स०)॥ **गन्ध**—श्रीखण्डंचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चन्दनं प्रतिगृह्यताम्। (गन्धं स०) **कुंकुम**—(रोली) कुंकुमं कामनादिव्यं कामनाकामसंभवम्। कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर (कुकुमं स०)॥ **अक्षत**—अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर। (अक्षतान् स०)॥ **पुष्प**—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मया हृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥ (पुष्पाणि स०) **पुष्पमाला**—सुरभि पुष्पनिचयैः ग्रथितां शुभमालिकां। ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वर। (पुष्पमालां स०) **दूर्वा** (अग्रभाग चढ़ावे)॥ त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि। सौभाग्यं सन्तति देहि सर्वकार्यकरी भव। (दूर्वां स०॥ **शमीपत्र**—शमी शमयते पापं शमी लोहितकण्टकी। धारिण्यर्जुनवाणानां रामस्य प्रियवादिनी। (शमीपत्रं स०)॥ **सिन्दूर**—सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्य सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्। (सिन्दूरं स०) **सौभाग्यद्रव्य**—हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम्। सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर॥ (सौभाग्यद्रव्याणि स०)॥ **अबीर गुलाल**—अबीरं च गुलालं च चोवाचन्दनमेव च। अबीरेणार्चितो देव अतः शान्ति प्रयच्छ मे॥ (अबीरं गुलालं स०)॥ **आभूषण**—अलङ्कारान् महादिव्यान्नानारत्नैर्विनिर्मितान्। गृहाण देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर॥ (आभूषणं स०)॥ **धूप**—वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ (धूपमाघ्रापयामि)॥ **दीप**—साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह। (दीपं दर्शयामि) **नैवेद्य**—शर्कराघृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्। उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ (नैवेद्यं निवेदयामि)॥ **आचमन**—गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशे स्थितम्। आचम्यतां सुरश्रेष्ठ शुद्धमाचमनीयकम्। (आचमनीयं स०)॥ **ऋतुफल**—नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम्। कूष्माण्डं पुरतो भक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम्॥ (ऋतुफलं स०)॥ **अखण्डऋतुफल**—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥ (अखण्ड ऋतुफलं स०)। **ताम्बूल पूगीफल**—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्। एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। (ताम्बूलं पूगीफलं स०) **दक्षिणा**—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रयच्छ मे। (दक्षिणां स०)॥ **आरती**—चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च। त्वमेव सर्वं ज्योतींषि आर्त्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥ **प्रार्थना**—गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थ जम्बूफलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाश कारकं नमामि, विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥ अनया पूजया गणपतिः प्रीयतां न मम॥

40-50 से अधिक उम्र वालोंके लिए व्यायाम

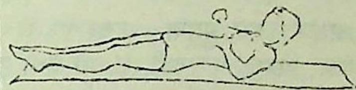
क्या आप सुबह जल्दी नहीं उठना चाहते ? उठना आपको बुरा लगता है। यदि सचमुच इस प्रश्नका उत्तर 'नहीं' है, तो समझ लीजिए कि, आप साधारण व्यक्तिसे भिन्न हैं; क्योंकि हममेंसे अधिकांशका उत्तर 'हाँ' ही होगा। तो बिस्तर छोड़नेकी अरुचिके इस समयका उपयोग आप अपने शारीरिक और मानसिक हितके लिए क्यों नहीं करते ? इस समयका सही सदुपयोग आपमें चुस्ती लायेगा, सुबहका नाश्ता आपको प्रिय लगेगा तथा आप अपना दिन भरका काम पूरी मुस्तैदीसे कर सकेंगे। अक्सर लोग शिकायत करते फिरते हैं कि, उनके पास व्यायामके लिए समय कहाँ है ? पर, दिन प्रारम्भ होनेसे पहलेका यह समय व्यायाम के लिए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

जब आदमी जवान रहता है, तो उसके लिए कोई भी समय व्यायामके लिए उपयुक्त समय हो सकता है; पर जब व्यक्ति अपनी आधी उम्र पार कर चुका हो, तो उसके लिए एक दम प्रातः और संध्याका समयही व्यायाम करनेका सही समय होता है। कैसा व्यायाम किया जाये इसे निश्चित् करनेके लिए, आदमीको अपने व्यवसाय, शक्ति, उम्र, वजन, शारीरिक कष्ट आदि अनेक बातोंको दृष्टिमें रखकर किसी निश्चय पर पहुंचना चाहिए। जिसका वजन सामान्यसे कम हो, उसके लिए प्रातःका व्यायाम सर्वोत्तम है। इससे उसकी भूख बढ़ेगी। पर, यदि व्यक्ति मोटापेका शिकार हो, तो उसे प्रातः, दोपहर और सायं तीन बार व्यायाम करना चाहिए। बस, ध्यानमें रखनेकी यह बात है कि, यदि उसे कोई शारीरिक गड़बड़ी हो, तो व्यायाम उसके लिए हानिकारक नहीं होना चाहिए। जब कोई शारीरिक गड़बड़ी हो, व्यक्तिको चारपाईसे उठने या घरसे बाहर जानेके लिए मना किया गया हो, तो इन स्थितियोंमें जब व्यक्तिको व्यायाम करनेकी इच्छा मनसे उठे, वही समय व्यायामके लिए सर्वोत्तम है। ऐसी स्थितिमें यदि व्यायामकी इच्छाही न होती हो, तो व्यायाम ११॥ बजे दिनमें थोड़ा-बहुत कर लेना चाहिए। कुछ शारीरिक रोग-यथा आर्गेनिक हार्ट अथवा गुर्देकी गड़बड़ी-ऐसे हैं, जिनमें टहलनेके अतिरिक्त और कोई व्यायाम किया ही नहीं जा सकता। जब तक उनमें खासा सुधार न हो ले, व्यायाम नहीं करना चाहिए।

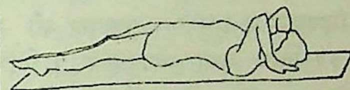
हम यहाँ जिन व्यायामोंकी चर्चा करने जा रहे हैं, वे बहुत श्रमसाध्य नहीं हैं। बिस्तर पर पड़ा रोगी भी उनको कर सकता है। पर, रुग्ण व्यक्ति को इनको करनेसे पूर्व चिकित्सकसे सलाह ले लेनी चाहिए।

विषयांतरके लिए क्षमा करें, और अपने मूल प्रश्न पर आ जायें। मूल बात यह थी कि, यदि आपकी दिनचर्या इतनी व्यस्त है कि, आप व्यायामके लिए दिन में समय नहीं निकाल पाते, तो नींद खुलनेके तुरत बादके समयका उपयोग आप व्यायामके लिए क्यों नहीं करते ? इस व्यायामके बाद आप अपना दिनका कार्यभार अधिक दक्षतासे निभा पाइयेगा। ये व्यायाम अत्यन्त सरल है। इनको आप सरलतासे घटा-बढ़ा भी सकते हैं और रोक भी सकते हैं। अनियमित ढंग से किया गया व्यायाम लाभकर नहीं होता। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि, व्यायाम नियमित रूपमें प्रतिदिन किया जाये। भोजन, विश्राम, सोने, स्नानके समानही व्यायाम भी हमारा नित्यका काम होना चाहिए।

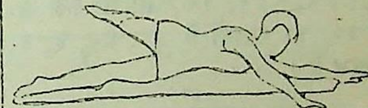
अतः अच्छा हो कि, नींद खुलनेके बाद बिस्तर पर पड़े-पड़े १०-१५ मिनट समय जो आप काहिलीमें बिताते हैं, उसका उपयोग व्यायाम करने में करें। नींद खुलते ही, आलस्य भगानेके लिए चारपाईके एक कोनेसे दूसरे कोन तक अपना शरीर जोर देकर पूरा-पूरा लम्बा करें। हर स्थितिमें और हर ऐंठनसे शरीरको फैलाए। अपनी रीढ़को आगे-



जागने के बाद जमुहाई लेना और शरीर फैलाना। अपना सर और कंधा कुछ ऊपर उठाइए और हल्की बंधी मुट्ठी से पूरे पेट पर थपकियां लगायें।



रीढ़के लिए शक्तिदायक प्रयोग। लेटे हुए शिथिलनकी स्थितिसे अपना नितम्ब ऊपर उठायें।



एक करवट लेटकर अपना ऊपर वाला हाथ सीधा बढ़ायें और ऊपर वाली टांग पीछे ले जायें। इसके बाद उस हाथको पीछे ले जायें और टांग आगे ले आयें। फिर टांग और हाथ एक सीधमें ले आयें। दूसरी करवट लेटकर उसी प्रकार करें।



पीठके बल सीधे लेटे रहें। हाथ बगलमें हो। उन्हें ऊपर ले जायें और गहरी साँसें लें।

पीछे और दोनों पार्श्वमें धनुषाकार करें। अपनी गरदन झुकाएं और चारों ओर घुमाएं। अपनी भुजाओं, टांगों और अन्य अंगोंको कड़ा करें। उनमें तनाव लायें।

चौल (मुण्डन) मुहूर्त्त—जन्मकाल से विषमवर्ष में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण में करना चाहिए। शुभ नक्षत्र-ज्येष्ठा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, स्वाती पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिष। चन्द्र, गुरु, बुध, शुक्रवार, चन्द्र तारा अनुकूल होने पर २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में २, ३, ४ ६, ७, ९, १२ लग्न तथा नवमांश में श्रेष्ठ होता है।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—उत्तरायण में जन्म से पाँचवें वर्ष में गणेश, विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी तथा कुलदेवता की सविधि पूजा करके शुक्लपक्ष में बालक को अक्षरारम्भ कराना चाहिये। शुभ तिथि–२, ३ ५, ६ १०, ११, १२ तिथियों में चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवार, अश्विनी, आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा स्वाती, अनुराधा, श्रवण, रेवती, नक्षत्र, २, ३, ६, ९, १२ लग्न तथा नवमांश में, अष्टम शुद्ध होने पर कुम्भ के नवमांश को छोड़कर करना चाहिए।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शुक्लपक्ष की २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथि तथा कृष्णपक्ष में ५ तिथि तक कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों, बुध बलवान हो, बुध, सूर्य, बृहस्पति, शुक्रवार आश्विनी, पुष्य, आर्द्रा, अनुराधा, मृगशिरा, पुनवर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वा३, श्लेषा, शतभिष नक्षत्र में अष्टम शुद्ध होने पर, २, ३, ६, २, १२ लग्नों में लग्न से १, २, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११ स्थानों में शुभ ग्रह, ३, ६, ११ में पापग्रह होने से शुभ है।

उपनयन मुहूर्त्त—गुरु, शुक्र के अस्त, शिशुत्व और वार्द्धक्य को छोड़ कर सूर्य के उत्तरायण होने पर, सूर्य, चन्द्रमा, गुरु, शुद्ध हो तो माघादि ५ मासों में ब्राह्मण के लिए चैत्रमास में विशेष शुभ कहा गया है। शुभ नक्षत्र-अश्विनी मृगशिरा, आर्द्रा, हस्त, पुष्य, उत्तरा ३, रोहिणी, श्लेषा, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिष, मूल, चित्रा, अनुराधा, पूर्वा ३, रेवती नक्षत्र में वेधरहित होने पर करना चाहिए, परन्तु अपराह्ण में नहीं। शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष में, २, ३, ५, तिथि में सूर्य, चन्द्र बुध, गुरु, शुक्रवार को भद्रा तथा रोग बाण से रहित होने पर, ३, ६ में पापग्रह, २, ३, ७, १० में चन्द्रमा, केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा एकादश में सभी शुभ हैं। चन्द्रमा, शुक्र, बृहस्पति तथा लग्नेश ६ तथा ८ में शुभ नहीं हैं। चन्द्र, शुक्र लग्न से १२वें निन्दित हैं। ५, ८, में पापग्रह शुभ नहीं होते, ६, ८, १२ में शुभग्रह शुभ नहीं हैं। ३, ६, ११ में पापग्रह शुभ हैं। लग्न में सूर्य शुभ है। चन्द्रमा के नवमांश को छोड़ कर पूर्ण चन्द्रमा वृष कर्क लग्न में श्रेष्ठ होते हैं अन्यथा नहीं।

दीक्षा (मन्त्र) ग्रहणमुहूर्त्त—अधिमास को छोड़ कर चैत्र, बैशाख, श्रवण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ तथा फाल्गुन मास में, अश्विनी, रोहिणी, पूर्वा ३, उत्तरा ३, चित्रा, रेवती, अनुराधा, पुष्य, स्वाती, पुनवसु, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार शुक्लपक्ष में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, कृष्णपक्ष में, २, ३, ५ तिथि में, २, ३, ५, ६, ७, ९, १२ लग्न में चन्द्र तारा अनुकूल होने पर लग्न से ३, ६, ११ में पापग्रह, १, ४, ५, ७, ९, १० में शुभग्रह हों, गुरु, शुक्र उदय हों तो श्रेष्ठ है। अष्टमी, संक्रान्ति तथा चन्द्र, सूर्यग्रहण में भी दीक्षाग्रहण उत्तम कहा गया है।

वधूप्रवेश मुहूर्त्त—विवाह दिन से २, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, १२, १४वें दिन, इसके बाद विषम मास तथा विषम वर्ष, पाँच वर्ष के बाद कभी भी हो सकता है। १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ तिथि में चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र शनिवार (मतान्तर से बुधवार भी) उत्तरा ३, रोहिणी, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती नक्षत्र में २, ५, ८, ११ लग्न में करना चाहिए।

द्विरागमन मुहूर्त्त—विवाह के बाद द्वितीय बार पिता के घर से पति के घर जाने की यात्रा को द्विरागमन कहते हैं। यह विवाह से विषम मास और वर्ष में होता है। शुक्लपक्ष में मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशि के सूर्य में पति के रवि, गुरु, शुद्ध होने पर, गुरु, शुक्र के उदय में सम्मुख दक्षिण रहित शुक्र के होने पर उत्तम होता है। अन्यथा नहीं। हस्त, अश्विनी, पुष्य, उत्तरा ३ रोहिणी, स्वाती, अभिजित, धनिष्ठा, शतभिषा, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, नक्षत्र में, चन्द्र, बृहस्पति, बुध, शुक्रवार, को चन्द्रतारा अनुकूल होने पर, १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १० ११, १३, १५, तिथि में, ९, ३, ६, ७, १२ लग्न में ३, ६, १०, ११ में गुरु, १, ४, १० में शुक्र, ३, ६, ११ में पापग्रह होने पर द्विरागमन करना चाहिये।

नवीन वधू के लिये रसोई बनाने का मुहूर्त्त—मृगशिरा, उत्तरा ३, पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतमिष, रोहिणी, विशाखा तथा रेवती नक्षत्र में, सोम, बृहस्पति, शुक्र, बुधवार को स्थिर लग्न में चतुर्थ शुद्ध होने पर सप्तम भाव में बलवान शुभग्रह हो, नवम स्थान शुद्ध हो तो नवी वधू को पहले पहल रसोई बनाना चाहिये।

हलप्रवहण बीजोप्ति मुहूर्त्त—भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, श्लेषा, पूर्वा ३ को छोड़ कर ४, ६, ८, ९, १४, ३० से रहित तिथि में कुम्भ, कर्क मेष, मकर, तुला को छोड़ कर अन्य लग्न में पापग्रहों के निर्बल होने पर चन्द्रमा जलचर राशि के नवमांश में, शुक्र चन्द्रमा के नवमांश में तथा बृहस्पति लग्न में हों तो रविवार और शनिवार को छोड़ कर अन्य दिनों में हलप्रहवण करना श्रेष्ठ है। हलप्रहवहण में कहे गये नक्षत्रों में, श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा तथा मंगलवार को छोड़कर बीजोप्ति चक्र शुद्ध होने पर बीजवपन करना चाहिए।

यात्रा विचार–यात्रा में शुभाशुभ नक्षत्र—अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्र में यात्रा में शुभ है। रोहिणी, उत्तरा ३, पूर्वा ३, ज्येष्ठा, मूल मध्यम, हैं। भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, चित्रा स्वाती, विशाखा निन्दित हैं। अनुराधा, हस्त, मृगशिरा, इनमें रिक्ता और दिक्शूल को छोड़ कर सर्वदा सब दिशाओं में यात्रा शुभ है। अत्यन्त आवश्यक हो तो तीनों पूर्वा की १६, कृत्तिका की २१, मघा की ११, भरणी ७, स्वाती, ज्येष्ठा, विशाखा तथा श्लेषा, की [illegible] और चित्रा की ३० घटी आरम्भ की छोड़ कर यात्रा कर सकते हैं। जन्म राशि तथा लग्न से अष्टम लग्न

होने पर यात्रा नहीं करनी चाहिए। प्रथम तीर्थ यात्रा गुरु-शुक्र के अस्त होने पर नहीं करनी चाहिए। सिंहस्थ तथा नीच राशि के गुरु में भी तीर्थ यात्रा वर्जित है। यात्रा में लग्न शुद्धि-जन्म राशि तथा जन्मलग्न से ८ वीं राशि एवं कुम्भ लग्न तथा उसका नवमांश, मीन तथा पृष्ठोदय राशि का लग्न यात्रा में त्याग देना चाहिए। लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह ३, ६, ११, में पापग्रह शुभ हैं। १० में शनि तथा ७ में शुक्र नेष्ट हैं। लग्न से १, ६, ७, ८ स्थानों में चन्द्रमा १, ६, ७, ८ तथा १२ में लग्नेश शुभ नहीं होते। लग्न से ८ स्थान ग्रहरहित होना चाहिए। वारशूल—चन्द्र शनिवार को पूर्व में, चन्द्र-गुरुवार की अग्नि कोण में गुरुवार दक्षिण में, रवि तथा शुक्रवार को नैऋत्य कोण में, रवि-शुक्र का पश्चिम में, मंगलवार को वायव्य कोण में, मंगल-बुध को उत्तर में, बुध तथा शनिवार को ईशान कोण में नहीं जाना चाहिए। नक्षत्र शूल—ज्येष्ठा में पूर्व, उ. भा. में दक्षिण, रोहिणी में पश्चिम, उ. फा. में उत्तर दिशा में नक्षत्र शूल का निवास रहता है। कालनिवास—शनिवार को पूर्व में, शुक्रवार को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायभ्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में काल का निवास रहता है। जिस दिशा में काल का निवास हो उस दिन उसके सामने की दिशा में पाश का निवास रहता है। प्रस्थान स्थापन—यदि किसी कारण से यात्रा के समय न जा सके तो अपनी कोई प्रिय वस्तु घर से बाहर उसी दिशा में रख दें। प्रस्थान पूर्व दिशा में ७ दिन, दक्षिण दिशा में ५ दिन, पश्चिम में ३ दिन तथा उत्तर में ? दिन तक प्रस्थान कहा गया है।

चन्द्रमा का निवास—मेष, सिंह तथा धनुराशि का चन्द्रमा पूर्व में, वृष, कन्या तथा मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में, तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में, रहता है। सम्मुख तथा दक्षिण का चन्द्रमा, शुभप्रद होता है। योगिनी निवास—१, ९ तिथि को पूर्व में ३, ११ में अग्निकोण, ५, १३ को दक्षिण में, ४, १२ में नैऋत्य में ६, १४ पश्चिम में, ७, १५ को वायव्य में, २, १० को उत्तर में तथा ८, ३० तिथि में ईशान कोण में योगिनी का निवास रहता है। योगिनी सम्मुख तथा बायें में शुभ नहीं है। अपनी राशि से चतुर्थ, अष्टम तथा द्वादश राशि का चन्द्रमा यात्रा में अशुभ फलदायक होता है। आवश्यकतावश १२ वें चन्द्र में यात्रा कर सकते हैं। यात्रा में शुभ शकुन—ब्राह्मण २, घोड़ा, हाथी, फल, अस, दूध, दही, गाय, सरसो कमल, विमलवस्त्र, वेश्या, बाजा, मोर, नेवला, सिंहासन, शस्त्र, मांस, प्रज्वलित, अग्नि, मछली, दर्पण, बालक सहित स्त्री, सामने छत्र, मधु, नीलकंठ पक्षी, बँधा हुआ एक पशु, चम्बा आदि पुष्प, कन्या, कार्यसिद्धि, वाक्य, मिट्टी, मरा कलश, घी, ऊख रत्न-मणि, पगड़ी-टोपी, सफेद बैल, मदिरा, काजल, धोया हुआ वस्त्र, गोरोचन, मुर्दा (रोदन रहित), पताका, भेंड़, धोबी (धोये वस्त्र के साथ) वेदध्वनि, मंगल वस्तु, गीत, भारद्वाज पक्षी, पालकी, अंकुश, महावत, पिछे मरा कलश, मंगल शब्द, दुर्वा, कोयल, पोतकी, छिपकली, शूकरी, रत्ना, भैरवी, छछुन्दरी, सियारिन, कबूत्तर, खंजन, तितर, हंस तथा बायें गदहा का शब्द, यात्रा में शुभ है। यात्रा में अशुभ शकुन—वन्ध्या स्त्री, चर्म, भूसी, हड्डी, सर्प, नमक, धूम्ररहित अग्नि, ईन्धन, नपुंसक, विष्ठा, तेल, पागल, चर्बी, औषध, शत्रु, जटाबान, संन्यासी, तृण, रोगी, नंगा आदमी (छोटे बालक को छोड़कर) तेल, उबटन लगाये मनुष्य, अंगहीन, कुजाति, भूखा, रक्त, स्त्री पुष्प, गिरगिट, छींक, अपने घर का जलना, मार्जार युद्ध, लाल वस्त्र, गुड़, तक्र, (मट्ठा), पंक, विधवा, कुब्ज, गृहकलह, वस्त्र, आदि का गिरना, भैंसा का युद्ध, काला अन्न, रुई, वमन, दाहिने गदहा का शब्द, क्रोधी, गर्भवती, बैरागी वस्त्र, असंगल, शब्द, अन्धा, बहरा, रजस्वला का वस्त्र, गोधा (गोह) दर्शन शूकर दर्शन, खरहा, वानर, तथा भालू का शब्द यात्रा के समय शुभ नहीं है। नदी पार करते, युद्ध में तथा चोरी गई वस्तु के खोजते समय अशुभ शकुन भी शुभ होते हैं।

गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल

गण्डमूल—अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्र की आरम्भ की क्रम से ३, ४ तथा ९ घटी तथा रेवती, श्लेषा तथा ज्येष्ठा के क्रमशः अन्त की ४, ११ तथा ६ घटी में कोई बालक उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा परिवार के लिए हानिकारक होता है। जन्म से १२ वें या २७वें दिन मूल शान्ति करनी चाहिए। शान्ति से पहले पिता लड़के का मुख न देखे। साधारणतया उपर्युक्त सभी नक्षत्रों में उत्पन्न बालक की मूल शान्ति करनी चाहिए। सुवर्ण तथा गोदान भी करना चाहिए।

अश्विनी चरण–फल		श्लेषा चरण–फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	पिता को भय	१	शांति से शुभ
१	सुख ऐश्वर्य	२	धन-नाश
३	मन्त्री पद	६	मातृ-नाश
४	राज सम्मान	४	पितृ-नाश

मघा चरण फल		ज्येष्ठा चरण–फल	
चरण	फल	चरण	फल
१	माता को नेष्ट	१	बड़े भ्राता को कष्ट
२	पितृ को भय	२	छोटे भ्राता को नेष्ट
३	सुख	३	मातृ-नाश
४	धन विद्या सुख	४	स्वयं नाश

मूल चरण फल		रेवती चरण फल
चरण	फल	फल
१	पितृ–नाश	राज सम्मान-सुख
२	मातृ–नाश	मंत्रित्व प्राप्ति
३	यश–नाश	धन सुख प्राप्ति
४	शान्ति से सुख	अनेक कष्ट

अभुक्त मूल—नारद जी के मत से ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की ४ घटी तथा मूल के आरम्भ को ४ घटी को अभुक्त मूल कहा गया है। वशिष्ट के मत से ज्येष्ठा के अन्त की १ घटी तथा मूल के आरम्भ की २ घटी को अभुक्त मूल कहा गया है। बृहस्पति के मत से दोनों नक्षत्रों की एक एक घटी को ही अभुक्त मूल कहा गया है। बृहस्पति का मत ही अधिक आदरणीय है। अभुक्त मूल में उत्पन्न बालक का मुख ८ वर्ष तक पिता को नहीं देखनी चाहिए। शान्ति करके देख सकते हैं।

शुभाशुभ मुहूर्त

स्त्रियों के प्रथम रजोदर्शन में श्रेष्ठ मास पक्ष तिथि इत्यादि—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ है कृष्ण पक्ष में दशमी तक मध्यम है। चन्द्र बुध, गुरु तथा शुक्रवार को शुभ है।

अश्विनी, मृगशिरा, शतभिष, धनिष्ठा रेवती चित्रा, अनुराधा, हस्त, श्रवण, पुष्य, तीनों उत्तरा तथा रोहिणी नक्षत्र में शुभ है। मूल, पुनर्वसु मघा विशाखा, तथा कृत्तिका में मध्यम है। शेष अशुभ है। दिन में भद्रा तथा दुर्योग रहित शुभ है। रात्रि में अशुभ है। २, ३, ४, ६, ७, ९, १२ लग्नों में शुभ ग्रहों से दृष्ट होने पर शुभ है।

गर्भाधान मुहूर्त्त—तीनों गण्डान्त, जन्मतारा, मूल, मघा, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण दिन, व्यतिपात, वैधृति, श्राद्ध दिन, दिन में परिघ का पूर्वार्ध, उत्पातहत नक्षत्र, भद्रा, पर्वदिन, ४, ६, ९, १४ तिथि, सन्ध्या समय सूर्य, मंगल, शनिवार तथा रजोदर्शन से ४ रात्रि तक गर्भाधान शुभ नहीं है। तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त अनुराधा, रोहणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिष नक्षत्र शुभ हैं।

लग्न से १, ४, ५, ९, १०, में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ में पापग्रह शुभ हैं, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति लग्न में हो तथा चन्द्रमा विषम राशि के नवमांश में हों तो ६, ८, १०, १२ रात्रि में गर्भाधान शुभ होता है। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य अश्विनी नक्षत्रों में गर्भाधान मध्यम होता है।

ऋतुमती स्नान का मुहूर्त्त—हस्त, स्वाती, अश्विनी, मृगशिरा, अनुराधा, धनिष्ठा, रोहिणी, उत्तरा ३ तथा ज्येष्ठा में शुभ वार तथा लग्न में ऋतुमती स्नान शुभ है।

विशेष—विवाह तथा गर्भ सम्बन्धी संस्कारों में स्त्रियों का चन्द्रबल विचारना चाहिए। अन्य कार्यों में पति का।

जातकर्म मुहूर्त्त—१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२ १३ तिथियाँ तथा चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में रोहणी, मृकशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष तथा रेवती नक्षत्रों में शुभ हैं।

पुंसवन मुहूर्त्त—स्त्री-पुरुष के चन्द्रमा तथा तारा के शुद्ध होने पर गर्भाधान से दूसरे या तीसरे मास में पुंसवन छठे या आठवें मास में मासाधिपति के बलवान होने पर सीमन्तोन्नयन संस्कार करना चाहिये। बृहस्पति और शुक्र का अस्तादि दोष इसमें नहीं लगता। शुभवार-सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र। शुभ नक्षत्र-पुरुष के जन्म नक्षत्र को छोड़कर मृगशिरा, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, मूल, श्रवण, हस्त, उत्तरा ३ तथा रेवती में शुभ है। शुभ तिथि—१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ शुक्ल पक्ष में (कृष्ण पक्ष में १० तक) पूर्वाह्न में करना चाहिये। लग्नशुद्धि-पुरुष लग्न तथा पुरुष नवमांश में लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ में पापग्रह हों तो उत्तम हैं, चन्द्रमा १, ६, ८, १२, में न हों, ४, ८, १२, शुद्ध हो तो शुभ है।

सूतीस्नान मुहूर्त्त—रेवती, उत्तरा, ३ रोहिणी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, अश्विनी नक्षत्र में. रवि, मंगल, गुरुवार को १, २, ३. ५, ७, १०, १३. १५, तिथियों में शुभ है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका मूल तथा चित्रा नक्षत्र, बुध, शनिवार ४, ६, ८, ९, १२, १४ तिथियाँ शुभ नहीं हैं। शेष पृथ्वी नक्षत्र, वार मध्यम हैं।

भूम्युपवेशन मुहूर्त्त—पृथ्वी तथा वाराह का पूजन करके मंगल के बलवान होने पर उत्तरा ३ रोहिणी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, पुष्य तथा अभिजित नक्षत्र में रिक्ता अमावस्या से भिन्न तिथि में, स्थिर लग्न में, चन्द्र बुध, शुक्र के दिन बालक को कटिसूत्र (कर्धनी) बाँध कर पृथ्वी पर बैठ कर उसके सामने वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, लेखनी (कलम) सोना, चाँदी रख देनी चाहिये। जिस वस्तु को सबसे पहले बालक छुये उसी वस्तु से उसकी जीविका चलेगी। ऐसा समझना चाहिये।

नामकरण मुहूर्त्त—जन्म से बारहवें, दिन अथवा अपने कुलाचार वश जन्म के दिन से सोलहवें या बीसवें दिन नामकरण करना चाहिये। शुभनक्षत्र-मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अश्विनी, उत्तरा ३, रोहिणी. हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, अभिजित, स्वाती, पुष्य, अनुराधा तथा शतभिष, शुभवार-चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र तिथि—१, २, ५, ७, ११, १२, १३। शुभ लग्न २, ५ ८, ११ अष्टम शुद्ध होने पर शुभग्रह के नवमांश में। लग्न से १, ४, ५ ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह ३, ६, ११ में पापग्रह, ६, ८, १२ शुद्ध हो, पिता पुत्र के तारा और चन्द्रमा बलवान रहने पर पूर्वाह्न में नामकरण करना चाहिये। मध्याह्न में मध्यम होता है।

नवग्रह के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्य—ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्मयेन सविताऽरथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ चन्द्र—ॐ इमन्देवाअसपत्नठं सुबध्वं महतेक्षत्रायमहतज्ज्यैष्ठचायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्रह्मणानाठं राजा ॥ भौम—ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाठं रेताठंसिजिन्वति ॥ बुध—ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजागृहीत्वमिष्टापूतसठं सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥ गुरु—बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाविक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ शुक्र—ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रं पयः ॥ सोमं प्रजापतिः। ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानठं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु ॥ शनि—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ राहु—ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ केतु—ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ इति ॥

दारिद्रय-दुःखनिवारक दत्तोपासना

मनुष्य को जीवन में जो भी सुख-दुख प्राप्त होता है वह उसके कर्मों का फल होता है। कर्म की सीमा में पूर्व जन्म तथा वर्तमान दोनों का प्रभाव निहित रहता है। तो भी वर्तमान के प्रयास से पूर्वकृत कर्मों का परिणाम प्रकारान्तर से परिवर्तित किया जा सकता है। एक सामान्य उदाहरण है—आपने आम का वृक्ष लगाया है। साधारण रूप से उसमें आम के फल आने चाहिए। किंतु कर्म व्यतिक्रम से उसके इस सहज धर्म में परिवर्तन किया जा सकता है—पेड़ सूख जाय, दुर्बल हो जाय, फल न दे, फल रोगी और छोटे हों, अथवा वह पौधा अपेक्षाकृत बड़ा, दीर्घजीवी और अधिक फलदार हो जाये। वनस्पति तंत्र के प्रयोगों द्वारा उसके फलों का रूपाकार भी बदला जा सकता है। भले ही अस्वाभाविक लगे, पर यह सत्य है कि एक जाति के वृक्ष में, वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा दूसरी जाति के फल भी उत्पन्न किए जा सकते हैं। ठीक यही स्थिति मानव के भाग्य (प्रारब्ध) की है। कर्मानुकूल पूर्व निर्मित भाग्य में, कर्मों के आधार पर पुनः परिवर्तन भी किया जा सकता है। जैसे एक व्यक्ति निर्धन है। सामान्य धारणा के अनुसार उसके प्रारब्ध में निर्धनता ही लिखी है। किन्तु विभिन्न प्रकार के प्रयासों तंत्र-मंत्र की साधना (देवाराधन) के द्वारा वह निर्धनता पर विजय भी प्राप्त कर सकता है। आशय यह कि प्रयास अथवा कर्तव्य ही भाग्य का वास्तविक रूप उजागर करता है।

भाग्य परिवर्तन, दारिद्रय-दुख-आपदा से मुक्ति के लिए जहाँ भौतिक प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं, वहां दैवी साधना (देवराधन) अर्थात आध्यात्मिक उपाय चमत्कारी प्रभाव दिखाते हैं। आस्थावान जनों के लिए यहाँ एक अति सरल और प्रभावी साधना का उल्लेख किया जा रहा है। इसका नाम है—दत्तोपासना, और इसके आराध्य देवता हैं—भगवान दत्तात्रेय, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का सम्मिलित अवतार हैं और आज के युग में भी अपने भक्तों को तुरन्त दर्शन देकर उनका कल्याण करते हैं। दैहिक, दैविक, भौतिक किसी भी प्रकार का कष्ट हो, दत्त भगवान की आराधना करने से शीघ्र ही समस्त आपदायें समाप्त हो जाती हैं।

पूजन-विधि – भगवान दत्तात्रेय का जन्म महासती अनसूया जी के गर्भ से मार्गशीर्ष (अगहन) की पूर्णिमा बृहस्पतिवार के दिन हुआ था। आज भी इस तिथि पर समस्त हिन्दू समाज में दत्त जयंती मनाई जाती है। वैसे तो साधक कभी भी उनकी उपासना आरम्भ कर सकता है, पर यदि बृहस्पतिवार से अथवा दत्त जयंती के दिन से प्रारम्भ करे तो विशेष उत्तम होता है।

किसी भी बृहस्पतिवार को प्रातः स्नान करके गूलर वृक्ष की छाया में, बैठकर दत्त मंत्र का जप करना चाहिए। स्थान को पहले से लीप-पोत कर शुद्ध कर लें। [illegible] पर अथवा भोजपत्र पर दत्त मंत्र की रचना करके उसकी पूजा करें। यदि नियमित रूप से ऐसी साधना की जाय तो साधक को अलौकिक अनुभूति होती है।

गूलर वृक्ष की छाया सुलभ न होने पर घर के ही किसी एकान्त में दत्तोपासना की जा सकती है। मुख्य आधार श्रद्धा और भक्ति है। श्रद्धापूर्वक कहीं भी इष्ट देवता का स्मरण, कीर्तन, स्तवन किया जाय, वह फलदायक होता है।

मिल सके तो कहीं से भगवान दत्तात्रेय का चित्र ले आयें अन्यथा भोजपत्र पर ही दत्त-यन्त्र की रचना कर लें। दत्त यन्त्र भी न मिल रहा हो तो लाल चंदन से भोजपत्र पर केवल दत्त मंत्र लिख लें। वह भी यन्त्र तुल्य प्रभावी रहेगा। दैनिक स्नान के पश्चात शुद्ध स्वच्छ स्थल पर बैठकर दत्तयन्त्र अथवा चित्र को, जो भी सुलभ हो, लकड़ी के पाटे पर वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। ठीक देव प्रतिमा की भाँति उसकी पूजा करें। धूप, दीप आदि से पूजा करके इस मन्त्र से दत्त भगवान का ध्यान करें—

'जटाधरं पाण्डुरंगं शूलहस्तं कृपानिधिम्।
सर्वरोग हरं देवं दत्तात्रेयमहं भजे ॥

इसके पश्चात् यदि सुलभ है तो दत्तात्रेय स्तोत्र का पाठ करें; अन्यथा नीचे दिए गए मंत्रों में से किसी एक 1-5-7 या 9 माला प्रतिदिन जप करें।

1. द्रां
2. द्रां ॐ दत्तात्रेयायनमः
3. द्रां दत्तात्रेयायनमः
4. श्रीं ह्रीं क्लीं दत्तात्रेयायनमः
5. दत्तात्रेयाय विद्महे योगीश्वराय धीमहि तन्नो दत्तः प्रचोदयात्।
6. दिगंबरा दिगंबरा श्री पादवल्लभ दिगंबरा।

उपरोक्त में से किसी भी एक मंत्र का नियमित रूप से नियमित संख्या में जप करें। जप समाप्ति पर इस श्लोक से पुनः चित्र अथवा यन्त्र को प्रणाम करें।

भिक्षाटनं गृहे ग्रामे पात्रं हेममयं करे।
नाना स्वादमयी भिक्षा, दत्तात्रेय नमोस्तुते ॥
अवधूत सदानंद परब्रह्म स्वरूपिणे।
विदेह देहरूपाय, दत्तात्रेय नमोस्तुते ॥
शत्रुनाशकरं स्तोत्रं ज्ञान विज्ञान दायकम्।
सर्वपापं शमं याति दत्तात्रेय नमोस्तुते ॥



ध्यान रहे कि दत्त भगवान की श्रद्धापूर्वक उपासना करने से साधना काल में अनेक प्रकार की अलौकिक अनुभूतियाँ होती हैं, दिव्य सुगन्ध के झोंके आते हैं। पर यह सब किसी को बताना नहीं चाहिए। दत्त भगवान श्री शिव जी की भाँति बहुत थोड़े समय में प्रसन्न होकर अपने भक्त की कामनाएं पूरी कर देते हैं। नोट— शिवजी द्वारा दत्तात्रेय जी से कहा गया 'दत्तात्रेय तन्त्र' मानव के लिए अत्यन्त कल्याणकारी है। इसका अध्ययन अवश्य करें।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

॥श्रीघंटाकर्णमहावीरमूर्त्तियंत्रमिदम्॥

॥घंटाकर्णमांणिभद्रवीर॥

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

॥ॐवरकणयसंखविद्रुम॥मरगय घण सन्निहं विगयमोहं॥सत्तरिसयं जिणाणं॥सयं जिणाणं॥सव्व॥

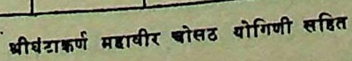
॥ॐनमः ह्रीं घंटाकर्णमहावीर॥सर्वव्याधिविनाशक॥विस्फोटकभये प्राप्ते॥रक्ष रक्ष महाबल॥१॥

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

॥ॐ ... श्री घंटाकर्ण महावीर. माणिभद्र ॐ ह्रीं घंटाकर्णनमोस्तु॥
॥ते ठः ठः ठः स्वाहा॥ मूलमंत्रनोजाप १२५००) ... जाप सवालक्ष नो॥
॥धुपदिप नैवे. ब्रह्मचर्य भूमिशयन पवित्र ... एकांते पवित्र स्थाने करवो॥
॥सर्वकार्य. उपयोगी यंत्रमिदं॥

२८	५	३१	२६
३५	३२	८	२५
७	२६	३४	२३
३०	३१	२७	६

श्रीघंटाकर्ण महावीर

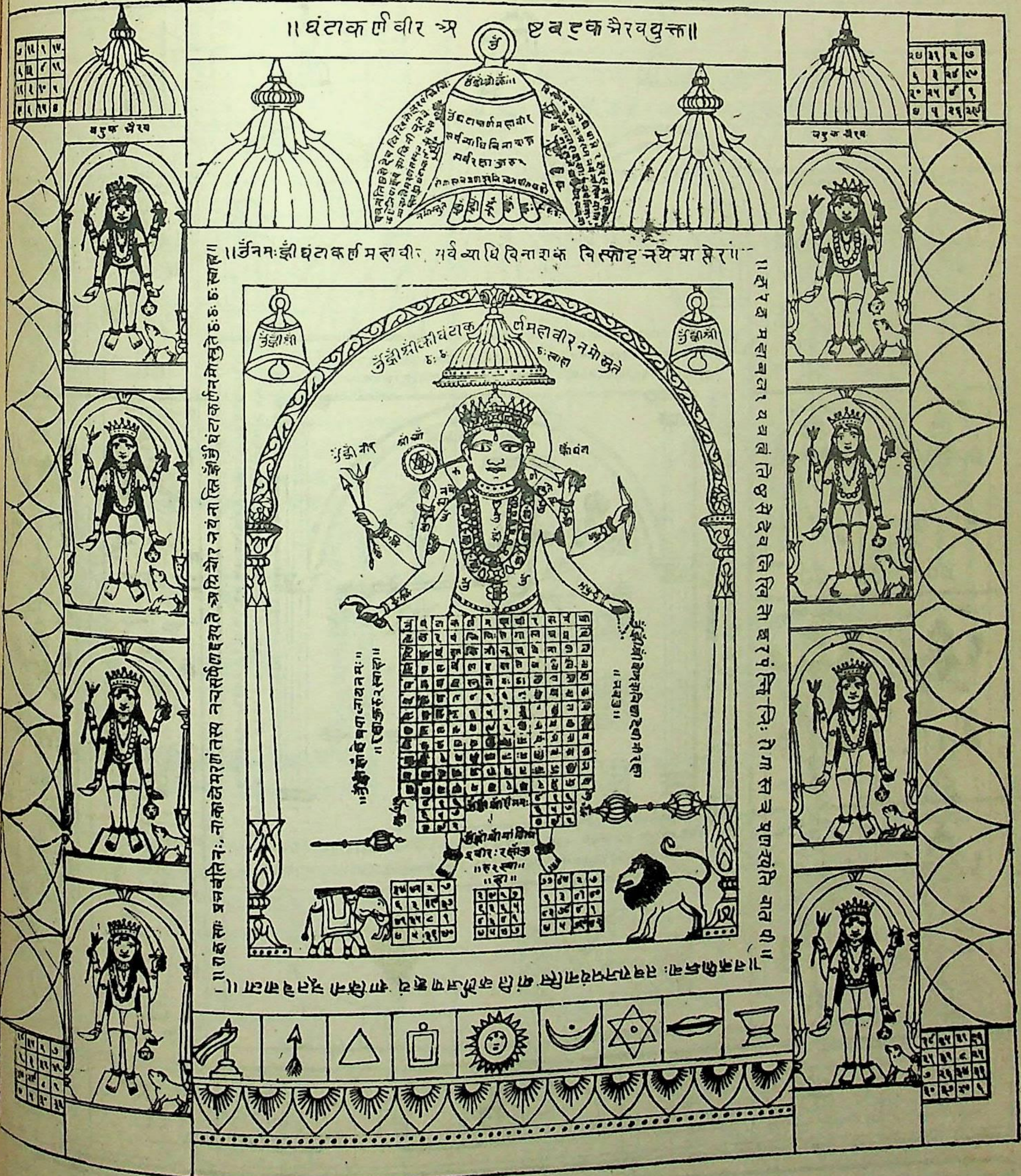


श्रीघंटाकर्ण महावीर चोसठ योगिणी सहित

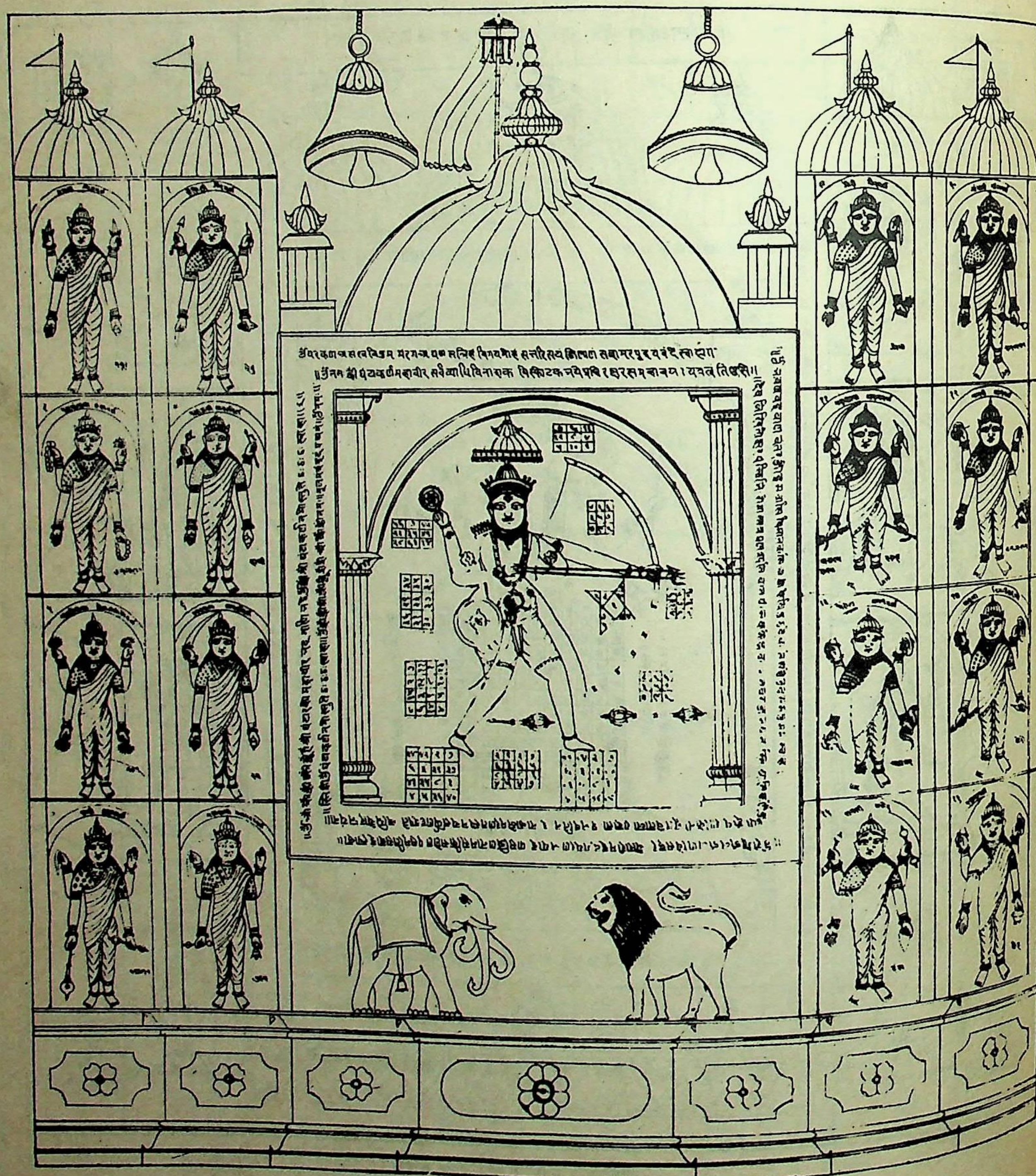
७	१२	१	१४	॥श्री घंटाकर्णमहावीर देव सर्वप्रकारे रक्षा करोति॥												२४	३१	२	७
२	१३	८	११	ॐ	घं	टा	क	र्ण	म	हा	वी	र	स	र्व	या	६	३	२८	२१
१६	३	१०	५	नि:	रो	गा	स्त्र	र	प	ण	स्पं	ति:	वा	त्प	वी	३०	२५	८	१
९	६	१५	४	नः	मा	का	ले	म	र	णं	त	स्प	न	च	स	४	५	२६	२९

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

अस्य प्रभावात् सर्वदोषा पद्वान यंत्रं वि पूजकस्य गृहे सुखशांति नैवति॥



श्रीघंटाकर्ण महावीर आठ भैरव सहित



श्रीघंटाकर्ण महावीर सोळ विद्यादेवी सहित

॥वशीकरणयंत्र॥

ॐ	घं	टा	क	र्ण	म	हा	वी	र	स	र्वे
[illegible]	क्षि	तो	श	र	पं	क्ति	नि:	रो	गा	[illegible]
[illegible]	फ	र्ले	ज	पा	[illegible]	यं	शा	कि	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	णं	तं	स्प	न	च	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥प्रज्वंतिन नाकालेमरणं तस्य नचसर्पेण
कनयेप्राशेरश्वरह मल्लबल यत्रतं

॥मि चोर नयं नास्ति ॐ घंटाकर्णनमोस्तुते
॥वशणसंति वात पीत्त क को त बा: त यश
॥ॐनम: घंटाकर्णमहावीर सर्वव्या

नभय नास्ति यांति करोज पा रूपं शाकिनी भूत
ॐनम:ॐ घंटाकर्णमहावीर सर्व व्याधिविनाश

॥देवादिनिवारणं॥

ॐ	घं	टा	क	र्ण	म	हा	वी	र	स	र्वे	व्या
[illegible]	क्ष	र	पं	क्ति	नि:	रो	गा	स्त	व	प्र	[illegible]
[illegible]	[illegible]	यं	शा	कि	नी	भू	त	वे	ता	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	र्वे	ण	द	रूप	ते	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ ज्वरादि निवारण यंत्र

ॐ नमः ह्रीं घंटाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशक विस्फोटक भये
सम्प्राप्ते रक्ष रक्ष महाबल यत्र त्वं तिष्ठसे ... ह्रीं ॐ घंटाकर्ण न

ह्रीं ॐ ह्रीं

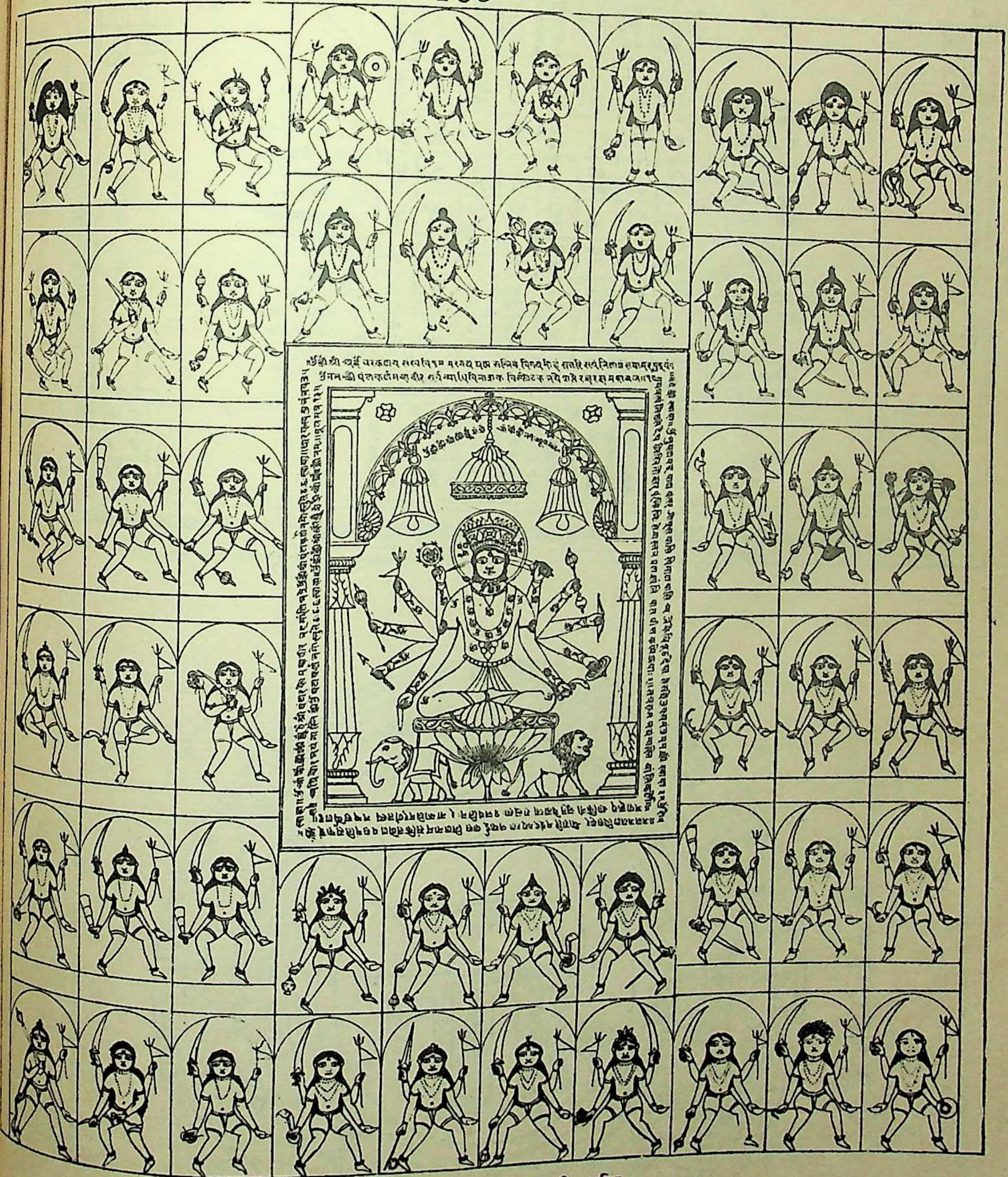
घंटाकर्ण महावीर सर्वव्या
धि विनाशक विस्फोटक

ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्ण नमो स्तुते ठः ठः स्वाहा

॥ यन्त्र ॥

॥ १९६ कोष्ठ मूलमंत्र १३ अक्षर १४ पंक्ति ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण महावीर नमो स्तुते स्वाहा ॥



श्रीघंटाकर्ण महावीर बावन वीर सहित

ॐ नमो पचांगुली पचांगुली परशरी परशरी माता मयंगल वशीकरणी

लोहमय दंडमणिनी चौसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवान मध्ये भूतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिंगमध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनी मध्ये यक्षणी मध्ये

दोष ग्रहण मध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपरे छूटें जो कोइ करे करावे जड़े जड़ावे तत चिन्तावे तस माथे श्री माता श्री पंचांगुली देवी तणो वज्र निघात पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा

८	१	६
३	५	७
४	९	२

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

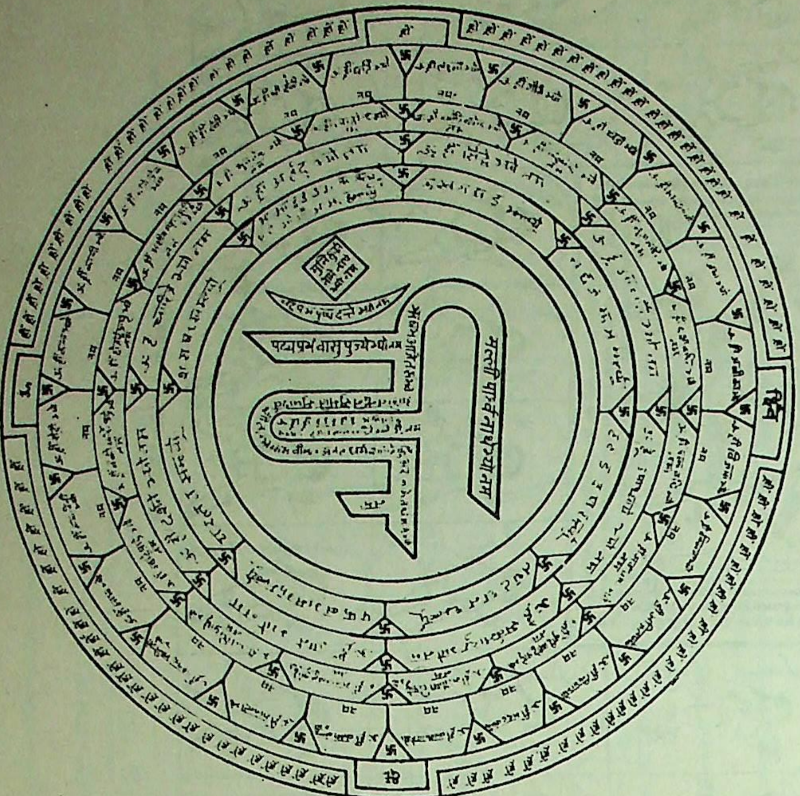
ॐ सूर्यपुत्र्यै नमः
ॐ सोमसायै नमः
ॐ कृष्णावल्यै नमः
ॐ रम्भायै नमः
ॐ कालरात्रे नमः
ॐ अमावस्यै नमः
ॐ श्री विष्ट्यै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ यमस्यै नमः
ॐ कालायै नमः
ॐ कत्यायै नमः
ॐ वागेश्वर्यै नमः
ॐ अनतसेनी नमः
ॐ चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ कामाक्षे नमः
ॐ विजयायै नमः

ॐ ब्रह्मन्यै नमः
ॐ कुमार्यै नमः
ॐ वाराहीनमः
ॐ इन्द्रायै नमः
ॐ संकायै नमः
ॐ कंकाली नमः
ॐ करालीनमः
ॐ कालद्रीनमः
ॐ महाकालीनमः
ॐ चंडालीनमः
ॐ ज्वाला पुष्पै नमः
ॐ कामाक्ष नमः
ॐ कामाल्यैनमः
ॐ भद्रकालीनमः
ॐ इयीयै नमः
ॐ अंबकायैनमः

ॐ ललनायै नमः
ॐ गीतीयै नमः
ॐ सुमंगलायै नमः
ॐ रोहण्यै नमः
ॐ कपलीयै नमः
ॐ सुलकरायै नमः
ॐ कडन्यै नमः
ॐ त्रिपुरायै नमः
ॐ कुरुकल्ये नमः
ॐ भैरवी नमः
ॐ पद्मावत्यैनमः
ॐ चैडायै नमः
ॐ नारसंही नमः
ॐ नरसहे नमः
ॐ हेमक ताय नमः
ॐ प्रेतायै नमः

विधि — शुभ मुहूर्त में सफेद वस्त्र, सफेद आसन से पूर्व की ओर मुंह कर, अनार की कलम व अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिख, ताम्रपत्र पर खुदवा लें। मंत्र का सात बार जाप कर सर्वांग पर हाथ फेरे—इसके प्रभाव से हस्त रेखाविद की भविष्यवाणी सफल होगी। यह सौभाग्यशाली, रोग नाशक व भूत, प्रेत बाधा नाशक प्रभावापन्न यंत्र है।

श्री ऋषिमण्डल महायंत्र



—महाप्रभावक सर्वतोभद्र-यंत्र—

ह्म्ल्व्र्यूं	ॐ ह्रीं श्रीं रोहिण्यै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं भैरव यक्ष रक्षाः	ॐ ह्रीं श्रीं वज्रश्रृंखलायै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं वज्रांकुशायै नमः	ह्म्ल्व्र्यूं
ॐ ह्रीं श्रीं महा-मानस्यै नमः	२५ ह	८० र	क्षि	१५ हुं	५० हः	ॐ ह्रीं श्रीं चक्रेश्वर्यै नमः
ॐ ह्रीं श्रीं मानस्यै नमः	२० स	४५ र	प	३० सुं	७५ सः	ॐ ह्रीं श्रीं नरदत्तायै नमः
ॐ ह्रीं श्रीं कपिल पिंगल यक्ष रक्षाः	क्षि	प	ॐ	स्वा	हा	ॐ ह्रीं श्रीं पूरण-भद्रयक्ष रक्षाः
ॐ ह्रीं श्रीं अच्छुप्तायै नमः	७० ह	३५ र	स्वा	६० हुं	५ हः	ॐ ह्रीं श्रीं कालियै नमः
ॐ ह्रीं श्रीं वैरोट्यायै नमः	५५ स	१० र	हा	६५ सुं	४० सः	ॐ ह्रीं श्रीं महा-कालियै नमः
ह्म्ल्व्र्यूं	ॐ ह्रीं श्रीं मानव्यै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं महाज्वालायै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं माणभद्रयक्ष रक्षाः	ॐ ह्रीं श्रीं गंधार्यै नमः	ॐ ह्रीं श्रीं गौर्यै नमः	ह्म्ल्व्र्यूं

विधि- -यह महा प्रभावशाली यंत्र पुष्य नक्षत्र या अपने नाम का उत्कृष्ट मुहूर्त निकलवाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखे। धूप, दीप, नैवेध, इत्र, फल, फूल से पूजा करे। स्वर्ण के तावीज में डालकर लाख से बन्द करके गले में धारण करे तो भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि व्यंतर देवों की क्रूर दृष्टि से रक्षा करता है। हर कार्य में सफलता प्राप्त होती है। चांदी की या कांसे की थाली में अष्टगन्ध से लिखकर इस यंत्र का जल

से प्रक्षालन कराकर वह जल रोज रोगी को पिलाने से ज्वर, हिचकी, मस्तक दर्द, पेट का दर्द, घबराहट व वायु आदि कितने ही रोगों में लाभ होता है। जैसे कहा है :—

सत्तरीसयनो महिमा अनंत,
तुच्छ बुद्धि किम जाणे तंत !

यह १७० के सर्वतोभद्र यंत्र की महिमा है।

श्री घंटाकर्ण महायंत्र

ॐ	घं	टा	क	र्णो	म	हा	वी	रः	स	वं	व्या
ता	क्ष	र	पं	क्ति	भि	रो	गा	स्त	व्र	प्र	धि
खि	त्क्ष	यं	शा	कि	नी	भू	त	वे	ता	ण	वि
लि	पा	स	पें	ण	दं	स्य	ते	अ	ला	श्य	ना
वा	ज	च	घं	टा	क	र्णो	न	ग्नि	रा	न्ति	श
दे	र्ण	न	ह्रीं	र	ठः	ठः	मो	ची	क्ष	वा	कः
से	क	स्य	ब्लूं	वी	स्वाहा	ठः	स्तु	र	सा	त्त	वि
ष्ठ	न्ति	त	क्लीं	र	न	ॐ	ते	भ	प्र	पि	स्फो
ति	या	णं	श्रीं	ह्रीं	ॐ	स्ति	ना	यं	भ	त्त	ट
त्वं	स्ति	र	म	ले	का	ना	नः	न्ति	व	क	क
त्र	ना	य	भ	ज	रा	त्र	त	वाः	द्भ	फो	भ
य	लः	ब	हा	म	क्ष	र	क्ष	र	प्ते	प्रा	य

236 A

विधि—यह यंत्र रवि पुष्य अथवा शुभ नक्षत्र में चांदी या तांबे के पत्र पर अथवा कांसे की थाली पर खुदवाना चाहिए या भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए। रविहस्त, रविमूल, गुरु पुष्य या दीवाली में भी लिखा जा सकता है। विशेषत: कांसे की थाली में खुदवाना चाहिए। फिर शुद्ध जल से स्नान कर, शुद्ध वस्त्र पहन कर, पंचामृत से अभिषेक करना चाहिए। फिर एक बाजोट पर थाली को यानी यंत्र को विराजमान कर चन्दन, केसर से पूजा करे। थाली के एक तरफ अगर के १०८ टुकड़े तथा दूसरी तरफ दीपक व लाल रंग के जूही आदि के १०८ फूल रखे। साधक व्यक्ति मंत्र बोले। एक मंत्र बोलने पर पास बैठा एक व्यक्ति थाली में एक फूल चढ़ावे व दूसरा पास बैठा व्यक्ति अगर का टुकड़ा धूप में छोड़े व थाली के बेलन से घंटा दे। इस तरह १०८ बार करके थाली में नारियल व पंच रत्न की एक पोटली तथा चांदी का एक रुपया चढ़ाये। फिर बाजोट सहित लाल कपड़ा बांधकर उस पर चांदी का वर्क चन्दन व फूल का हार चढ़ाये। धन-तेरस को चालीस माला, रूप चौदस को बयालीस माला तथा दीवाली को तयालीस माला घंटाकर्ण महा मंत्र की फेरे। यंत्र पास में रखे। जप-घर में इसका स्थापन करे। क्षुद्र उपद्रव शान्त होंगे। सुख-सौभाग्य की वृद्धि होगी।

चन्द्रप्रज्ञप्ति यंत्र

ओं	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ब्लूं	न	मि
ग	ए	कि	ले	से	अ	उ
ये	ये	स	व्व	सा	रि	ण
दि	ज्ञा	स्वा	हा	हु	हे	अ
वं	त्त	म:	न	णं	सि	सुर
रि	उ	ये	रि	य	द्धा	सुर
प	ग	यं	भु	ल	रु	ग

236 B

विधि—रवि पुष्य नक्षत्र में सोने, चांदी, तांबे या भोजपत्र पर इसे लिख कर विधिपूर्वक पूजा करे। उस दिन व समापन के दिन चौविहार उपवास करे। एकांत स्थान में इस मंत्र को लिखे तथा सफेद वस्त्र धारण कर सफेद माला से इसका जाप प्रारंभ करे। १२५०० जाप होने से यंत्र व मंत्र सिद्ध होता है। इससे मनवांछित कार्य सिद्धि होती है। अकस्मात् धन प्राप्त होता है। इसे पंचमी दशमी या पूर्णिमा को शुरू करना चाहिए।

श्री मणिभद्र महा यंत्र

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

२५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ९८, ३३,

ट, ठ, २४, ९५, ९३, ९१, ८९, ९९, ९७, ३४,

ड, ढ, ण, ९४, ९२, ९०, २०, ९६, ५९, ३५,

त, थ, द, ध, न, २३, ९५, ५८, ६०, ३५,

प, फ, ब, भ, म, य, र, २२, २१, ९४, ५७, ८८, ६१, ३६,

ल, व, श, ष, स, अ, आ, इ, ९३, ५६, ८६, ६२, ३७,

ह, क्ष, ज्ञ, ४, ९२, ८७, ६३, ३८,

ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, १, २, ३, ५५, ५, ७८, ७९, ९१, ६४, ३९,

ऌ, ॡ, ए, अं, ५३, ५४, ७७, ७६, ८४, ८५, ९, ८०, १०, ४०,

ऐ, अ:, ५२, ७४, ७५, ८३, ८२, ८१, ७,

ओ, औ, ५१, १००, ९९, ९८, ९७, ९६, ८, ४१,

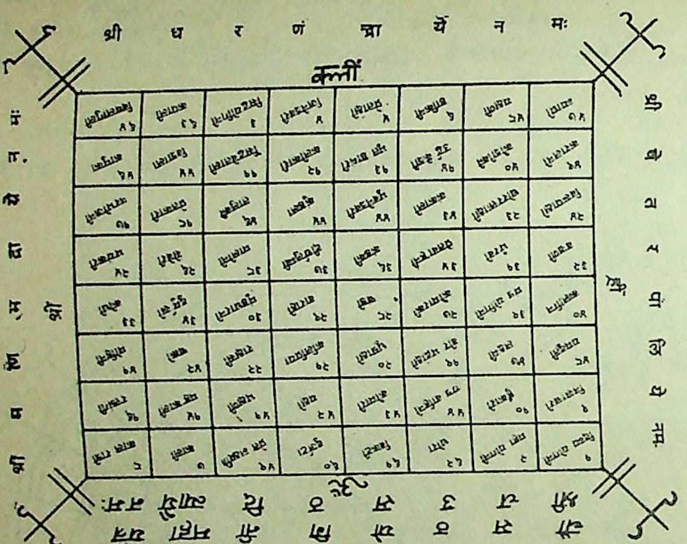
७३, ७२, ७१, ७०, ६९, ६८, ६७, ६६, ६५,

५०, ४९, ४८, ४७, ४६, ४५, ४४, ४३, ४२,

विधि—यह मणिभद्र महाराज का सौ अक्षरों वाला महायंत्र है। दीवाली के दिन चौविहार उपवास करके अष्टगन्ध या पंचगंध से सोने, चांदी, तांबे या भोजपत्र पर दीवाली की रात्रि को लिखकर मध्य रात्रि के समय गुंजा की झाड़ी की जड़ में गाड़ दे। दूसरे दिन प्रात: ब्राह्म मुहूर्त में मौनपूर्वक जाकर निकाल लाए। घर आकर पवित्र स्थान में स्थापना करे व पूजन करे। प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक पूजन करता रहे। यह महा प्रभावक यंत्र है। घर में आनन्द रहता है, लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

237 A

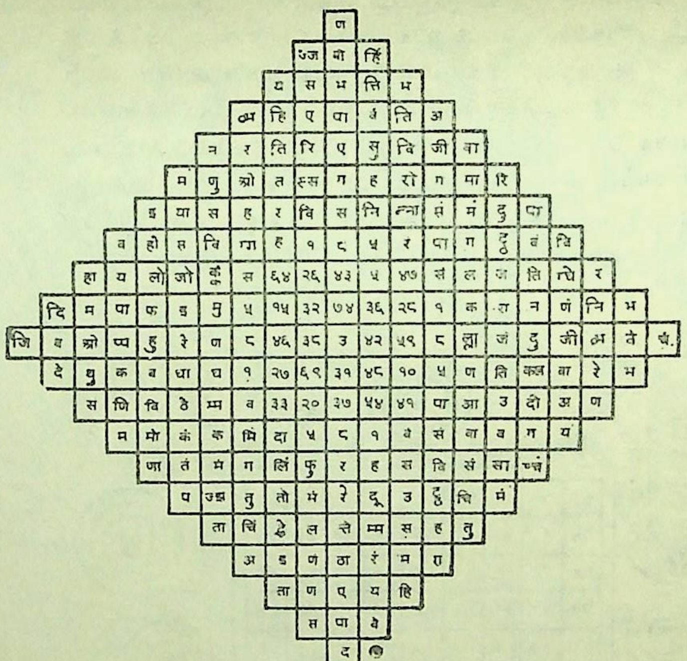
चौसठ योगिनी महायंत्र



विधि—यह चौसठ योगिनियों का प्रभावक यंत्र है। यह यंत्र कृष्ण-पक्ष की अष्टमी रविवार या चर्तुदशी रविवार को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए अथवा चांदी, सोने या तांबे के पत्र पर खुदवा कर घर में पूजन के लिए रखा जा सकता है। पूजन में रखने के बाद नित्य धूप, दीप करना चाहिए। शरीर की दुर्बलता, पुराना ज्वर तथा किसी भी प्रकार की शारीरिक व्याधि के लिए सात दिन तक नित्य एक बार चांदी की थाली में अष्टगंध से लिखकर जल प्रक्षालित कर पिलाने से पूर्ण लाभ मिलता है। इस यंत्र को धारण करने से भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, व्यंतर आदि देवों का दूषित प्रभाव अथवा दोष नहीं होते हैं। यंत्र को पानी में घोलकर वह पानी घर में चारों कोनों में छिड़कने से व्यंतर देव सम्बन्धी दोष निवारण होता है। ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि का आगमन होता है, प्रतिकूल तांत्रिक व मांत्रिक प्रभावों को नष्ट करता है।

237 B

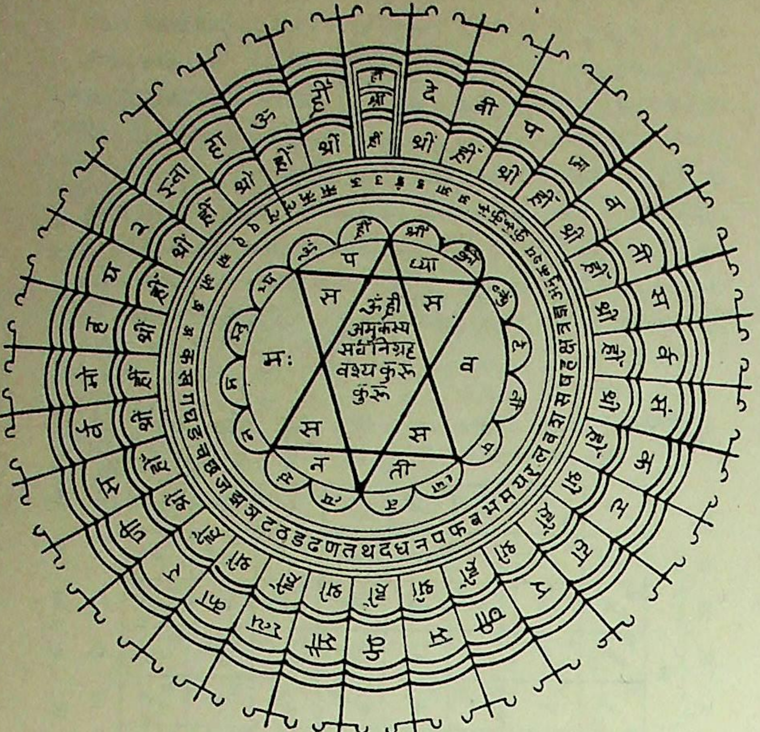
महाप्रभावक उवसग्गहर यंत्र



विधि—यह उवसग्गहर यंत्र पांच गाथा का सर्व प्रचलित यंत्र है। इसे रवि पुष्य, गुरु पुष्य, रविहस्त नक्षत्र या दीवाली अथवा शुभ मुहूर्त में सफेद कपड़े पहन, पूर्व की ओर मुंह करके अष्टगंध से भोजपत्र पर सोने, चांदी या अनार की कलम से लिखना चाहिए। धूप, दीप करना चाहिए। सोने की मादलिये में डालकर, धूप खेकर दाहिने हाथ या गले में धारण करने से सर्व प्रकार के भय, दुष्ट ग्रह व रोग शान्त होते हैं। भूत, प्रेत दोष मिटे, लक्ष्मी प्राप्त हो, मान-सम्मान बढ़े, कोर्ट-कचहरी में विजय हो, राज दरबार में सम्मान हो। घर में सोने, चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवा कर रखे तथा प्राण-प्रतिष्ठा करके रोज पूजन करे तो अखूट भंडार रहे और इसको धोकर पानी पीवे तो गुमड़े, फोड़े, भूत-प्रेत भय, चोर भय दूर हो। गर्भवती स्त्री के बिना कष्ट सन्तान हो।

238 A

भगवती पद्मावती महायंत्र



मंत्र —ओं ह्रीं श्रीं पद्मावती सर्व संकट हरणी सर्व सौख्य करणी सर्व मोहय मोहय स्वाहा ।

विधि—यह यंत्र कुंकुम, कपूर, कस्तूरी व गोरोचन से भोजपत्र पर लिखे । जूही के पुष्प पर १००००० जाप करे । फिर दाख १०००, शर्करा १००, खारक खंड १०००, चन्दन खंड १०००, नारिकेल खंड १००० श्वेत वस्त्र पहनकर नव रात्र में द्विप्रहर पर—मध्याह्न-वेला में चावल के साथ हवन करे ।

238 B

विजयराज यंत्र

६४ योगनी की रक्षा — क्रौं क्रौं क्रौं

५२ वीर की रक्षा — क्रौं क्रौं क्रौं

७१	६४	६९	८	१	६	५३	४६	५१
६६	६८	७०	३	५	७	४८	५०	५२
६७	७२	६५	४	९	२	४९	५४	४७
२६	१९	२४	४४	३७	४२	६२	५५	६०
२१	२३	२५	३९	४१	४३	५७	५९	६१
२२	२७	२०	४०	४५	३८	५८	६३	५६
३५	२८	३३	८०	७३	७८	१७	१०	१५
३०	३२	३४	७५	७७	७९	१२	१४	१६
३१	३६	२९	७६	८१	७४	१३	१८	११

क्रौं क्रौं क्रौं — क्रौं क्रौं क्रौं

५२ वीर की रक्षा — क्रौं क्रौं क्रौं

एक लाख अस्सी हजार पीर पैगम्बर की रक्षा

विधि—रवि पुष्य या शुभ मुहूर्त में पूर्व की ओर मुंह करके सफेद वस्त्र पहन कर, सफेद आसन पर बैठकर अनार की कलम से, अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखे अथवा चांदी या तांबे के पत्र पर खुदवाये । रोज दशांग धूप से पूजन करे । लिखने का शुभारम्भ बड़े अक्षरों से यानी ८१-८०-७९-७८ इस तरह कम होते अक्षरों से १ तक लिखे । जिस खाने में जो अक्षर हों वे उसीमें लिखें । यह अत्यन्त शुभप्रद, भाग्योन्नायक तथा लक्ष्मीप्रद यंत्र है । इससे हर प्रकार के भय का नाश होता है । शत्रु से रक्षा होती है । कोर्ट, कचहरी के काम के समय प्रतिदिन सुबह, दोपहर व शाम को एक यंत्र लिखे व गिरा दे तो मुकदमे में जीत हो । जब तक कोर्ट में सफल न हो तब तक रोज लिखे ।

॥ श्री श्री यन्त्रम ॥

॥ श्री श्री ललिता महा त्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्म्यै महायन्त्रम ॥

पश्चिम

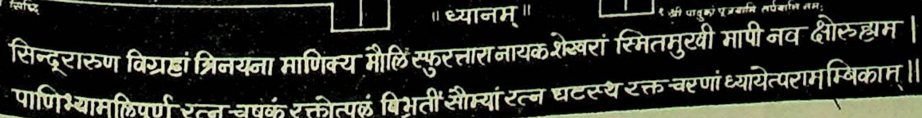
दक्षिण

उत्तर

चतुर्भिः शिव चक्रैश्च शक्ति चक्रैश्च पञ्चभिः ।
नव चक्रैश्च संसिद्धं श्री चक्रम शिवयोर्वपुः ॥

पूर्व

॥ ध्यानम् ॥



सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्य मौलिं स्फुरत्तारा नायकशेखरां स्मितमुखी मापी नव क्षोरुहाम ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण रत्न चषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्न घटस्थ रक्त चरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

80,00,00,000 (अस्सी करोड़) भारतीय तथा समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी

★ गायत्री मन्त्र और उसका महत्व ★

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

गायत्री मन्त्र में 1 ॐ, 2 भूः, 3 भुवः, 4 स्वः, 5 तत्, 6 सवितुः 7 वरेण्यम्, 8 भर्गो, 9 देवस्य यह नौ नाम हैं। इन नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है। 'धीमहि' उपासना है। 'धियो यो नः प्रचोदयत्' यह प्रार्थना है। इसमें पांच अवसान हैं। "ओ ्म्" यहां प्रथम अवसान है। 'भूर्भुवः स्वः' दूसरा, 'ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्' तीसरा, 'भर्गो देवस्य धीमहि' चौथा, 'धियो यो नः प्रचोदयत् ॐ' यहां पांचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहरना चाहिये। ओं=सर्वव्यापक रक्षा करने वाला; भूः=सत्य स्वरूप; भुवः=चैतन्य स्वरूप, ज्ञान स्वरूप; स्वः=सुख स्वरूप; तत्=वह अनन्त परमात्मा; सवितुः= सबको उत्पन्न करने वाला; वरेण्यम्=ग्रहण करने योग्य, तारीफ के लायक; भर्गो=सब पापों को भर्जन नाश करने वाला, शुद्ध तेजः स्वरूप; देवस्य=प्रकाश और आनन्द के देनेवाले दिव्य स्वरूप ऐसे परमात्मा का; धीमहि=हम सब ध्यान करते हैं; धियः=बुद्धियों को, यः=वह परमात्मा; नः=हमारी; प्रचोदयात्=धर्मार्थ काम मोक्ष में प्रेरणा करे, संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगाये और शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है, अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग (इस्तेमाल) है।

यह गायत्री मन्त्र आदिमन्त्र है। अन्य मतों की तो बात ही क्या है वेद में भी इसके अतिरिक्त ऐसा कोई मन्त्र नहीं है जिसमें एक ही मन्त्र में भगवान् की स्तुति उपासना और प्रार्थना तीनों बातें हों। भगवान के भजन में पहिले भगवान् की स्तुति की जाती है, फिर उपासना ध्यान किया जाता है और पश्चात् भगवान् से प्रार्थना की जाती है। गायत्री मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों हैं। गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो हिन्दू मात्र के लिए एक मन्त्र हो सकता है। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं "समानो मन्त्रः" 'कि तुम्हारा मन्त्र एक हो' अतः हिन्दू मात्र का एक गायत्री मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गुह्योपनिषदोमतः।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तथा ॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है।

एवं यस्तु विजानाति गायत्री ब्राह्मणस्तु सः।
अन्यथा शूद्रधर्मा स्याद् वेदानामपि पारगः ॥

इस प्रकार से जो गायत्री को जानता है वह ही ब्राह्मण है और जो नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों न हो, शूद्र है।

या सन्ध्या सैव गायत्री द्विधा भूता व्यवस्थिता।
सन्ध्या उपासिता येन विष्णुस्तेन उपासितः ॥

जो गायत्री है वही सन्ध्या है और जो सन्ध्या है वही गायत्री है। जिसने गायत्री की उपासना करली उसने विष्णु भगवान् की उपासना कर ली। गोभिल ऋषि कहते हैं—

सन्ध्या येन न विज्ञाता सन्ध्या नैवाप्युपासिता।
जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते ॥

जिसने गायत्री को नहीं जाना और उपासना नहीं की वह जीता हुआ शूद्र है और मर कर कुत्ते की योनि को प्राप्त होगा।

गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः ॥

इसका नाम गायत्री इसीलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

गायत्री वेद की माता है, गायत्री पाप नष्ट करने वाली है। गायत्री के अतिरिक्त भूलोक में तथा स्वर्गलोक में पवित्र करने वाला और नहीं है।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दश गुणा फलदायक है, इसमें भी जिसमें होठ ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्र गुण फल देता है। लेटा-लेटा, बैठा-बैठा, डोलता-फिरता जिस भी अवस्था में हो, मनुष्य गायत्री का मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी विधि निषेध नहीं है। इसके जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्गधाम पाकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र से प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल और अर्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये। नौ नामों से भगवान् की स्तुति करे फिर "धीमहि" से भगवान् का इस प्रकार ध्यान करे।

"योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं खं ब्रह्म"

सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का जो प्रकाश स्वरूप पुरुष है, वह मैं हूँ। फिर 'धियो यो नः प्रचोदयात्' से प्रार्थना करे। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार बार जपो वह भी कल्याण देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञान का प्रकाश होता है।

नवरत्नः—

(१) माणिक, (२) मोती, (३) मूङ्गा, (४) पन्ना, (५) पुखराज, (६) हीरा, (७) नीलम, (८) गोमेद, (९) लहसुनिया—यह ९ रत्न नवरत्न कहलाते हैं। इनके धारण से ग्रहों की पीड़ा शान्त होती है। पाप और दुर्भाग्य से भी शान्ति मिलती है। ग्रहों पर इनके असर निम्न प्रकार के हैं :—

(१) *माणिक—*

इसे चुन्नी और लाल भी कहते हैं। इसका रंग लाल होता है। इसके धारण से सूर्य की पीड़ा शान्त होती है।

(२) *मोती—*

इसे मुक्ता भी कहते हैं। असली सफेद, गुलाबी और निर्मल मोती धारण करने योग्य है। इसके धारण से चन्द्रमा की पीड़ा शान्त होती है। मन प्रसन्न रहता है।

(३) *मूङ्गा—*

इसे प्रवाल और लतामणि भी कहते हैं। इसका रंग कुछ फीका लाल होता है। गोल, चिकना, चमकदार असली मूङ्गा धारण करने से मंगल की पीड़ा शान्त होती है।

(४) *पन्ना—*

इसे मरकत मणि, हरित मणि और बुध-रत्न भी कहते हैं। इसका रंग तोते (सुग्गे) के परों की तरह होता है। बालू के कणों की तरह कुछ चिह्न इसमें रहते हैं। इसके धारण से बुध की पीड़ा शान्त होती है।

(५) *पुखराज—*

इसे पुष्पराज, गुरुरत्न और पीतमणि भी कहते हैं। इसका रंग पीला होता है। सुवर्ण की सी झलकवाला पीला पुखराज बृहस्पति की पीड़ा शान्त करता है।

(६) *हीरा—*

चार तरह का होता है। सफेद, लाल, पीला और काला। सफेद हीरा सर्वसिद्धियों का दाता समझा जाता है। बेदाग स्वच्छ हीरा शुक्र की पीड़ा शान्त करता है।

(७) *नीलम—*

इसका नाम इन्द्रनील, नीलमणि भी है। इसका रंग नीला तथा आसमानी होता है। शुद्ध नीलम के धारण करने से शनि की पीड़ा शान्त होती है। अशुभ नीलम का फल अशुभ होता है।

(८) *गोमेद—*

किसी कदर पीलाई और ललाई लिये हुए गोमेद के धारण करने से राहु की पीड़ा शान्त होती है।

(९) *लहसुनिया—*

इसे वैदूर्यमणि भी कहते हैं। बिल्ली की आँखों जैसी इसमें लकीरें होती हैं। यह लकीरें हाथ के हिलाने से हिलती हुई सी दीखती हैं। कभी अढ़ाई लकीरें भी दीखती हैं। जिस वैदूर्य्य में अढ़ाई लकीरें दिखाई पड़ती हों और उसका रंग कुछ पीला-सा हो ऐसा वैदूर्य्य अति उत्तम कोटि का समझा जाता है। इसके धारण से केतु की पीड़ा शान्त होती है। उत्साह बढ़ता है।

भारतवर्ष में इन रत्नों के धारण करने की प्रथा बहुत पुरानी है।

अनिष्ट ग्रहों के शान्त्यर्थ दान-वस्तुएँ

१—सूर्यदान :

माणिक्य, गोधूम, गुड़, सवत्सा गौ, कमल पुष्प, नूतन गृह, रक्त चन्दन, रक्त वस्त्र, सुवर्ण, ताम्र, केशर, मूँगा, वर्ण दक्षिणा ।

२—चन्द्रदान :

वंशपात्र, श्वेत चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, रजत, वृषभ, शंख, दधि, मोती, कपूर, वर्ण दक्षिणा ।

३—भौमदान :

विद्रुम, पृथ्वी, मसूर, द्विदल, गोधूम, रक्त वृषभ, गुड़, रक्त चन्दन, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, सुवर्ण, ताम्र, केशर, कस्तूरी, वर्ण दक्षिणा ।

४—बुधदान :

कांस्य पात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त, घृत, मुद्ग, पन्ना, सुवर्ण, दासी, सर्व पुष्प, रत्न, कपूर, शंख, अनेक फल, षटरस भोजन, वर्ण दक्षिणा ।

५—गुरुदान :

पीत धान्य, पीत वस्त्र, सुवर्ण, घृत, पीत पुष्प, पीत फल, पुखराज, हरिद्रा, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र, वर्ण दक्षिणा ।

६—शुक्रदान :

श्वेत चावल, श्वेत चन्दन, श्वेत चित्र, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, रजत, हीरा, घृत, सुवर्ण, श्वेताश्व, दधि, सुगन्ध द्रव्य, शर्करा, गोधूम, वर्ण दक्षिणा ।

७—शनिदान :

माष, तैल, नीलम, तिल, कृष्ण वस्त्र, कुरथी, लोहा, महिषी,

८—राहुदान :

माष, हेमनाग, सप्तधान्य*, नील वस्त्र, गोमेद, कृष्ण पुष्प, खड्ग, तिल, तैल, लोहा, शूर्प, कम्बल, सतिल ताम्रपात्र, सुवर्ण, रत्न, वर्ण दक्षिणा ।

९—केतुदान :

माष, कम्बल, कस्तूरी, वैदूर्य्यमणि, कृष्ण पुष्प, तिल, तैल, रत्न, सुवर्ण, लोहा, बकरा, शस्त्र, सप्तधान्य*, वर्ण दक्षिणा ।

१०—मुन्थादान :

तण्डुल, सुवर्ण, कांस्यपात्र, श्वेत वस्त्र, वर्ण दक्षिणा ।

---

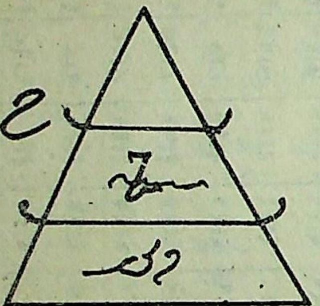
* *सप्तधान्य*—१—सांवा २—जौ ३—गेहूँ ४—मूँग ५—उर्द ६—कंगनी ७—धान (चावल) यह सात नाज, सतनजा कहलाता है ।

ग्रह-शान्ति के लिए जप-मन्त्र तथा संख्या

	तन्त्रोक्त ग्रह मन्त्र	जप संख्या
सूर्य—	ॐ घृणि आदित्याय नमः	७,०००
चन्द्र—	ॐ सों सोमाय नमः	११,०००
मंगल—	ॐ अं अंगारकाय नमः	११,०००
बुध—	ॐ बुं बुधाय नमः	९,०००
बृहस्पति—	ॐ बृं बृहस्पतये नमः	१९,०००
शुक्र—	ॐ शुं शुक्रायनमः	१६,०००
शनि—	ॐ शं शनैश्चराय नमः	२३,०००
राहु—	ॐ रां राहवे नमः	२३,०००
केतु—	ॐ कें केतवे नमः	१८,०००
	सब के लिये गायत्री मन्त्र—	१,२५,०००

नक्श बराये इज्जत व आबरू
बरोज पन्ज शम्बा

इस नक्श को अपने पास रखें हर एक इज्जत करेगा !



बरोज यक शम्बा एक कोने में आबे तुख्म अज खुद बैरून लाये और उसमें लौंग व सुपारी डालें और २१ बार यह अमल पढ़कर पान में खिलावें ! लाग, लाग, खलाई को लाग !

३२४	२३३०	२३३०७	२२१९८
२२१०९	२२१९४	२२३०३	२२३०८
२२१५१	२३२१४	२२३०५	२२३०२
२२३१०	२२४११	२२२७	२२२११

नक्श बराये इज्जत व मुहब्बत

४	९	१
२	५	७
८	या बद्दाव	६

२३	२६	२९	१६
२८	१७	२२	२७
१०	३१	२४	२१
२५	२०	१९	२०

मास तारीख का वेलांतर मिनट सेकेण्ड

तारीख	जनवरी मि. से.	फरवरी मि. से.	मार्च मि. से.	अप्रेल मि. से.	मई मि. से.	जून मि. से.	जुलाई मि. से.	अगस्त मि. से.	सितंबर मि. से.	अक्टोबर मि. से.	नवम्बर मि. से.	दिसम्बर मि. से.
	+	+	+	+	−	−	+	+	+	−	−	−
१	३।३४	१३।३८	१२।३५	४।७	२।५२	२।२५	३।३३	६।१५	०।९	१०।७	१६।२१	११।३
२	३।५२	१३।४६	१२।२३	३।४९	३।०	२।१६	३।४५	६।११	−०।१०	१०।२७	१६।२३	१०।४१
३	४।२०	१३।५४	१२।११	३।३२	३।७	२।७	३।५६	६।७	०।२९	१०।४६	१६।२४	१०।१८
४	४।५८	१४।०	११।५९	३।१४	३।१३	१।५७	४।८	६।२	०।४८	११।५	१६।२४	९।५३
५	५।१६	१४।६	११।४६	२।५६	३।१९	१।४७	४।१८	५।५७	१।८	११।२३	१६।२३	९।२८
६	५।४२	१४।१०	११।३२	२।३९	३।२४	१।३६	४।२८	५।५१	१।२८	११।४१	१६।२१	९।३
७	६।९	१४।१४	११।१८	२।२२	३।२९	१।२५	४।३८	५।४४	१।४८	११।५९	१६।१७	८।३७
८	६।३५	१४।१७	११।४२	२।५	३।३३	१।१४	४।४८	५।३७	२।९	१२।१६	१६।१४	८।११
९	७।०	१४।२०	१०।४९	१।४८	३।३६	१।३	४।५८	५।२९	२।२९	१२।३३	१६।९	७।४५
१०	७।२५	१४।४१	१०।३४	१।३१	३।३९	०।५२	५।७	५।२१	२।५०	१२।४९	१६।४	७।१८
११	७।४९	१४।२२	१०।१८	१।१५	३।४२	०।४०	५।१५	५।१२	३।११	१३।५	१५।५८	६।५१
१२	८।१३	१४।२२	१०।२	+०।५९	३।४४	०।२८	५।२३	५।३	३।३२	१३।२१	१५।५२	६।२३
१३	८।१६	१४।२१	९।४६	०।४३	३।४५	०।११	५।३०	४।५३	३।५३	१३।३६	१५।४३	५।५५
१४	८।५८	१४।१९	९।२९	०।२७	३।४६	−०।३	५।३७	४।४२	४।१४	१३।५०	१५।३४	५।२७
१५	९।२०	१४।१७	९।१२	+०।१२	३।४६	+०।९	५।४४	४।३१	४।३६	१४।४	१५।२५	४।५८
१६	९।४१	१४।१४	८।५५	−०।३	३।४६	०।२२	५।५०	४।२०	४।५७	१४।१७	१५।१५	४।२९
१७	१०।१	१४।१०	८।३८	०।१७	३।४५	०।३५	५।५६	४।८	५।१८	१४।३०	१५।४	४।०
१८	१०।२१	१४।६	८।२१	०।३१	३।४३	०।४८	६।१	३।५५	५।४०	१४।४२	१४।५२	३।३१
१९	१०।४०	१४।१	८।३	०।४५	३।४१	१।१	६।६	३।४२	६।१	१४।५३	१४।३९	३।२
२०	१०।५८	१३।५१	७।४५	०।५७	३।३८	१।१४	६।१०	३।२८	६।२२	१५।४	१४।२५	२।३२
२१	११।१५	१३।४८	७।२८	१।११	३।२५	१।२७	६।१३	३।१४	६।४३	१५।१४	१४।१०	२।२
२२	११।३२	१३।४१	७।१०	१।२३	३।३१	१।४०	६।१६	२।५९	७।४	१५।२४	१३।५५	१।३२
२३	११।४९	१३।३४	६।५१	१।३५	३।२७	१।५३	६।१९	२।४४	७।२५	१५।३३	१३।३९	१।२
२४	१२।४	१३।२४	६।३३	१।४६	३।२२	२।६	६।२१	२।३०	७।४६	१५।४१	१३।२२	०।३२
२५	१२।१९	१३।१७	६।१५	१।५७	३।१७	२।१९	६।२३	२।१३	८।७	१५।४९	१३।४	−०।२
२६	१२।३२	१३।७	५।५७	२।८	३।११	२।३२	६।२३	१।५६	८।२७	१५।५६	१२।४६	+०।२८
२७	१२।४५	१२।५७	५।३८	२।१८	३।५	२।४४	६।२३	१।३९	८।४८	१६।२	१२।२७	०।५८
२८	१२।५८	१२।४६	५।२०	२।२७	२।५८	२।५७	६।२३	१।२२	९।८	१६।७	१२।७	१।२८
२९	१३।९	..	५।२	२।३६	२।५०	३।९	६।२२	१।४	९।२८	१६।१२	११।४६	१।५८
३०	१३।२०	..	४।४४	२।४४	२।४२	३।२१	६।२०	०।४६	९।४७	१६।१६	११।२५	२।२७
३१	१३।२९	..	४।२५	..	२।३४	..	६।१८	०।२८	..	१६।१९	०	२।५६
	+	+	+	−	−	+	+	+	−	−	−	+

+ = पूर्व   देशान्तर सारिणी   − = पश्चिम

नाम नगर	अक्षांश उत्तर	पलभा	ग्रीन्वीच पू. रेखा	उज्जै. रे. पल	रेल्वे अं. मि.	नाम नगर	अक्षांश उत्तर	पलभा	ग्रीन्वीच पू. रेखा	उज्जै. रे. पल	रेल्वे अं. मि.	नाम नगर	अक्षांश उत्तर	पलभा	ग्रीन्वीच पू. रेखा	उज्जै. रे. पल	रेल्वे अं. मि.
अयोध्या	२६।४८	६।४	८२।१४	+६५	−१०	कांकरोली	२५।२	५।३७	७३।५४	−१८	−३४	जाजू	२७।४६	६।२०	७३।००	−२७	−३८
अजमेर	२६।२८	५।५८	७४।४०	−१०	−३१	काश्मीर	३४।६	८।७	७४।५४	−८	−३०	जामनगर	२२।२७	४।५७	७०।७	−५६	−५०
अमृतसर	३१।३७	७।२३	७४।५५	−८	−३०	कांची	९।५६	२।६	७६।१२	+५	−२५	जीन्द	२९।१९	६।४४	७६।२३	+७	−२४
अकलकोट	१७।३२	३।४८	७६।१३	+५	−२५	कुमारी	८।६	१।४१	७७।३०	+१८	−२०	जूनागढ़	२१।३१	४।४४	७०।३६	−५१	−४८
अहमदाबाद	२३।२	५।६	७२।३८	−३१	−३९	कुम्भकोणं	१०।५८	२।२०	७९।२३	+३७	−१२	जैसलमेर	२६।५५	६।५	७०।५४	−४८	−४६
अलीगढ़	२७।५४	६।२१	७८।६	+२३	−१८	कोकनाडा	१६।५९	३।३८	८२।१३	+६५	−१	जोधपुर	२६।१८	५।५६	७३।४	−२६	−३८
अगरतल्ला	२३।५२	५।२१	९१।१६	+१५६	+३५	कोल्हापुर	१६।४२	३।३६	७४।१६	−१४	−३३	झांसी	२५।३७	५।४४	७८।३७	+२९	−१६
अलीबाग	१८।३९	४।३	७२।५४	−२८	−३८	कोचीन	९।५८	२।२	७६।१७	+६	−२५	झालरापाटन	२४।३२	५।२९	७६।१२	+५	−२५
अनन्तपुर	१४।४०	३।८	७७।३५	+१८	−२०	कोटा	२५।१०	५।३९	७५।५२	+२	−२९	झरिया	२३।४५	५।१७	८६।२४	+१०७	+१६
अहमदनगर	१९।५	४।१०	७४।४४	−१०	−३१	कोटकपुरा	३०।३७	७।९	७४।५०	−८	−३१	झूंझनू	२८।८	६।२६	७५।२४	−२	−२८
अलवर	२७।३४	६।१६	७६।३८	+१०	−२३	खरीयार रोड	२०।५४	४।३५	८२।३०	+६८	०।०	ट्रावनकोर	९।०	१।५०	७७।०	+१३	−२२
आगरा	२७।१०	६।१०	७८।२	+२३	−१८	गया	२४।४९	५।३२	८५।१	+९४	+१०	टोंक	२६।११	५।५४	७५।५०	+१	−२७
आजमगढ़	२६।४	५।५०	८३।१२	+७५	+३	गणदेवी	२०।४९	४।३३	७३।००	−२७	−३८	तंजोर	१०।४७	२।१७	७९।८	+३४	−१३
आबू	२४।४०	५।३१	७२।४५	−३१	−३९	गढ़वाल	३०।१५	७।०	७९।३०	+३८	−१२	तेजपुर	२६।३८	६।०	९२।५२	+१७१	+४१
आंकोला	२०।४३	४।३२	७७।०	+१३	−२२	गिलगिट	३५।२५	८।३१	७४।२२	−१३	−३३	त्रिवेन्द्रम	८।३०	१।४७	७६।५७	+१२	−२२
इटावा	२६।४७	५।१	७९।२	+३३	−१४	ग्वालियर	२६।१४	५।५४	७८।१०	+२४	−१७	त्रिपती	१३।०	२।४६	७८।३६	+२९	−१६
इम्फाल	२४।४४	६।४	९३।५८	+४८	−४६	गोरखपुर	२६।४५	६।३	८३।२४	+७७	+४	डिबरुगढ़	२७।२९	६।१५	९४।५६	+१९२	+५०
इन्दौर	२२।४४	५।१	७५।५०	+१	−२७	गोआ	१५।२५	३।१६	७३।४७	−१९	−३५	दरभंगा	२६।१०	५।५२	८५।५७	+१०२	+१४
इटारसी	२२।३७	५।२	७७।४६	+२०	−१९	गोहाटी	२६।११	५।५२	९१।४७	+१६१	+३७	दिल्ली	२८।३८	६।३२	७७।१२	+१५	−२१
उज्जैन	२३।९	५।८	७५।४३	००	−२७	गोलाघाट	२६।३०	५।५९	९४।०	+१८३	+४६	धवलपुर	२६।४२	६।२	७७।५४	+२२	−१[illegible]
उदयपुर	२४।३५	५।३०	७३।४२	−३०	−३५	चंडीगढ़	३०।४०	७।७	७६।५२	+११	−२२	नागपुर	२१।९	४।४१	७९।६	+३४	−१३
उटकमंड	११।१७	२।२३	७६।४४	+१०	−२३	चिडावा	२८।१३	६।२७	७५।३९	−१	−२७	नागोर	२७।११	६।११	७३।४२	−२०	−३५
एलिचपुर	२१।१८	४।४०	७७।३०	+१७	−२०	चूरू	२८।१७	६।२८	७४।५८	−७	−३०	नासिक	२०।०	४।२२	७३।४७	−२०	−३५
ओरंगाबाद	१९।५३	४।२०	७५।१९	−३	−२९	चेरापूंजी	२५।१७	५।४१	९१।४७	+१६१	+३७	नैनीताल	२९।२५	६।४७	७९।२७	+२५	−१२
ओंकारेश्वर	२१।१३	४।५४	७६।६	+३	−२६	छपरा	२५।४७	५।४६	८४।४७	+९१	+९	पटना	२५।३७	५।४५	८५।१३	+९५	+११
कटक	२०।२८	४।२९	८५।५४	+१०२	+१४	जलपाईगुड़ी	२६।३२	५।५९	८८।४६	+१३०	+२५	पठानकोट	३२।१५	७।३४	७५।४२	−००	−२७
कटिहार	२५।३०	५।४४	८७।४०	+११९	+२१	जम्बू	३२।४४	७।४३	७४।५४	−८	−३०	प्रयाग	२५।२४	५।४२	८१।५३	+६२	−३
कलकत्ता	२२।३४	४।५९	८८।२८	+१२७	+२४	जगदीशपुरी	१९।४८	४।१९	८५।५०	+१०१	+१३	पूना	१८।३०	४।०	७३।५२	−१८	−३४
करौली	२६।३०	४।११	७७।४	+१३	−२२	जबलपुर	२३।१०	५।८	७९।५८	+४२	−१०	बड़ोदा	२२।१६	४।५५	७३।१६	−२४	−३७
कल्याण	१९।१४	४।११	७३।८	−२६	−३७	जलगांव	२१।१	६।३६	७५।३४	−१	−२८	बम्बई	१८।५८	४।७	७२।४८	−२९	−३९
काशी	२५।१९	५।४१	८३।०	+७३	+२	जयपुर	२६।५६	६।६	७५।५०	+१	−२७	बागलकोट	१६।१२	३।२९	७५।४२	−००	−२७
कानपुर	२६।२७	५।५८	८०।२१	+४६	−९	जालंधर	३१।१९	७।१८	७५।१८	−४	−२९	बीकानेर	२८।१	६।२३	७३।१८	−	−३७

अथ सन्मुखचन्द्रदिशामाति ॥

मेषेचसिंहेधनुपूर्वभागे वृषेचकन्यामकरे च याम्ये ॥ तुलेचकुंभे मिथुनेप्रतीच्यांक र्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम् १॥ फलम् । सम्मुखे अर्थलाभायदक्षिणे सुखसंपदः॥ पृष्ठतः प्राणनाशायवामेचंद्रेधनक्षयः २॥ मेष. सिं. ध. पूर्वे वृ. क. म. दक्षिणे तु. कुं. मि. पश्चिमे कर्क वृश्चिक मीन उत्तरे.

अथगुरुशुक्रा॰तेवर्जितकर्माणि ॥

वापीकूपतडागयज्ञगमनंक्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानंगुरोः सेवन म् ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनंमंत्रोप- देशे शुभं दूरेणैवजिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥ १ ॥

अथसूतिकास्नानसूर्यपूजनमुहूर्तः ॥

रेव.उ.३मृ.ह.स्वा.अश्वि.अनु.नक्षत्र ।सू. मं. गु. ग्रहण करना। तिथि ८।६।१२।४ ९।१४ नहीं हो। किसी २ के मतसे सोम तथा शुक्रवारकाभी ग्रहण है। बुध तथा श.ये ग्रह नपुंसक हैं, इस कारण इनका ग्रहण इस विषयमें नहीं है.

अथ योगिनीचक्रम् ॥

ईशान्य.	पूर्व.	अग्नि.
३०।८	१।९	३।११

उत्तर ० योगिनीसुखदावामपृष्ठेवां ५।१३ दक्षिण छितदायिनी॥दक्षिणेधन हंत्रीचसन्मुखेमरणप्रदा ॥१॥

७।१५	४।१२	६।१४
वायु.	पश्चिम.	नैर्ऋत्य.

अथप्रथमवधूप्रवेशमुकलावामुहूर्तः

हस्तद्वयेश्रवणयुगेमघायांपुष्येधनिष्ठाश्रव- णोत्तरेषु ॥ मूलानुराधाहयरेवतीषुस्थिरेषु लग्नेषुवधूप्रवेशः ॥ १ ॥ ये नक्षत्रशुभ चं.बृ.गु.एते वा.शु. २।५।८।११ ये लग्न श्रेष्ठ. चंद्रबलदेखना. १।३।५ ये वर्षश्रेष्ठ.

अथ तृणकाष्ठादिसंग्रहकरणम् ॥

वासवोत्तरदलादिपंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम् ॥ प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहंश य्यकावितरणंचवर्जयेत् ॥ १ ॥ अर्थ धनिष्ठा को उत्तरदल. शत.पू.भा.उ.भा. रेवती इन नक्षत्रोंमें दक्षिणगमन, गृहछा वणो. प्रेतदाह, माचो बनानो, तृणकाष्ठा- दिसंग्रह करणो नहीं ॥

अथ कालराहुचक्रम ॥

ईशान्य.	पूर्व.	अग्नि.
	शनि.	शुक्र.

अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमे भौमेप्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच याम्येगुरौवह्निदिशांचशु क्रमंदेचपूर्वेप्रवदंतिकालम् ॥१॥

उत्तर रवि ... दक्षिण गुरु

सोम.	मंगल.	बुध.
वायव्य.	पश्चिम.	नैर्ऋत्य.

अथ जलपूजामुहूर्त ॥

जलपूजाचनारीणांमृगेमूलेपुनर्वसौ।पुष्य- श्रवणहस्तेषुबुधजीवकवींदुषु ॥ १ ॥ मृग. मू.पुन.पुष्य. श्र.हस्त बुध गुरु शुक्र सोम जलपूजामें ग्रहण करना ॥

अथ गांधर्वविवाह (नातरो) मु॰ ॥

इंद्ररुद्रादितिश्लेषा आग्नेयं वरुणस्तथा ॥ अश्विनीवसुदेवत्यंराहुकालेशुभंस्मृतम् १ ज्ये. आ. आश्ले. कृ. श. धनि. अश्वि. पुन. एते नक्षत्र शुभ. और गुरु शुक्र अस्तोदय दोष नहीं.

अथ दिशाशूलचक्रम् ॥

पूर्व.

चंद्र, शनि.

उत्तर बुध, मंगल, दिशाशूललेजावोवामे,राहु योगिनीपूट॥सन्मुख लेवे चंद्रमा त्यावेलक्ष्मीलूट२ दक्षिणे गुरु.

रवि, शुक्र.

पश्चिम.

अथ कूपारंभमुहूर्तः ॥

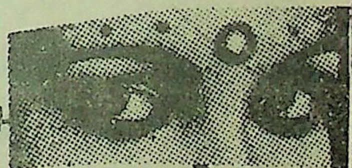
हस्तस्तिस्रोवासववारुणंचशैवंपित्र्यंत्री- णि चैवोत्तराणि ॥ प्राजापत्यंचापिनक्षत्र- माहुः कूपारंभेश्रेष्ठमाद्यं मुनींद्राः ॥१॥ हस्त. चित्रा. स्वा. ध. श. अ. म. उत्तरा. ३ रोहिणी ये कूपारंभमें शुभ हैं.

अथ दत्तकपुत्र ग्रहणमुहूर्तः ॥

हस्तादिपंचकभिषग्वसुपुष्यभेषुसूर्यक्षमा जगुरुभार्गववासरेषु॥ रिक्ताविवर्जिततति थिष्वलिकुंभलग्ने सिंहेवृषेभवतिदत्तपरि- ग्रहोयम् ॥ ह. चि. स्वा. वि. अनु.अश्वि. ध. पु. रे. र. मं गु. शु. वृश्चिके कुंभे सिंह वृषलग्ने शुभम् और रिक्ता तिथि अशुभ

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम

श्रीगणेशाय नमः । श्री नर्मदादेव्यै नमः । ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरंदर ऋषिः । अनुष्टुप् छंदः । इन्द्राक्षी देवता । महालक्ष्मी बीजम् । भुवनेश्वरी शक्तिः । भवानीति कीलकम् । मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे श्री इन्द्राक्षी वरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ अथ न्यासः । इन्द्राक्षीअंगुष्ठाभ्यां नमः । महालक्ष्मी तर्जनीभ्यां नमः । माहेश्वरी मध्यमाभ्यां नमः । अंबुजाक्षी अनामिकाभ्यां नमः । कात्यायनी कनिष्ठिकाभ्यां नमः । कौमारी करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादिः । इन्द्राक्षी हृदयाय नमः । महालक्ष्मी शिरसे स्वाहा । माहेश्वरी शिखायै वषट् । अंबुजाक्षी कवचाय हुम् । कात्यायनी नेत्रत्रयाय वौषट् । कौमारी अस्त्राय फट् । ॐ ह्रां हृदयाय नमः । ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रूं शिखायै वषट् । ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अस्त्राय फट् । अथ दिग्बंधः । प्राच्यै दिशे नमः । इंद्राय नमः । आग्नेय्यै दिशे नमः । अग्नये नमः । याम्यायै दिशे नमः । यमाय नमः । नैर्ऋत्यै दिशे नमः । नैर्ऋत्याय नमः । प्रतीच्यै दिशे नमः । वरुणाय नमः । वायव्यै दिशे नमः । वायवे नमः । उदीच्यै दिशे नमः कुबेराय नमः । ईशान्यै दिशे नमः । ईश्वराय नमः । ऊर्ध्वायै दिशे नमः । ब्रह्मणे नमः । अधरायै दिशे नमः । अनन्ताय नमः । ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वरोमिति दिग्बन्धनम् । अथ ध्यानम् । इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवी पीतवस्त्रद्वयान्विताम् । वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणेन वरप्रदाम् ॥ इन्द्राक्षी सहस्त्र युवतींनानालङ्कारभूषिताम् । प्रस नवदनां भोजामप्सरोगणसेविताम् ॥ अथमन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं इन्द्राक्षी क्लीं श्री ह्रीं ऐं ॐ स्वाहा अष्टोत्तरशतं जप्त्वा सर्वसिद्धिप्रदायकम् इन्द्र उवाच इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा, सावित्री सा च गायत्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी । नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपास्विनी । मेघश्यामा सहस्राक्षी मुक्तकेशा जलोदरी । महादेवी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला । अजिता भद्रदा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी । सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी, इन्द्राक्षी इंद्ररूपा च इन्द्रशक्तिः परायणा । महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता, वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी । श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती, अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकाऽपराजिता । भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्याम्बिका शिवा, एतैर्नामशतैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता । आयुरारोग्यमैश्वर्यं वित्तं ज्ञानं यशो बलम्, नाभिमात्रे जले स्नात्वा सहस्रपरिसंख्या । जपेत्स्तोत्रमिमं मन्त्रं वाचां सिद्धिर्भवेत्ततः, अनेन विधिना भक्त्या मन्त्रीसिद्धिश्च जायते । सन्तुष्टा च भवेद्देवी प्रत्यक्षा सम्प्रजायते । शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते नात्र संशयः । आवर्तनसहस्रेण लभ्यते वांछितं फलम्, सायं शतं पठेन्नित्यं षण्मासात्सिद्धिरुच्यते । चोरव्याधिभयस्थाने मनसा ह्यनुचिन्तयन् । संवत्सरमुपाश्रित्य सर्वकामार्थसिद्धये । राजानं वश्यप्नोति षण्मासान्नात्र संशयः । इति श्री 'युगल' कृत इन्द्राक्षीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।



 ॥अथ नेत्रोपनिषत्प्रारम्भः॥

अथातः–चाक्षुष्मतींविद्याम्पठितसिद्धां चक्षूरोगहरा व्याख्यास्यामि, यथा चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चक्षुषो दीप्तिर्भवति । तस्याः चाक्षुष्मतींविद्यायां अहिर्बुध्न्य ऋषये नमः शिरसि गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे । ओ३म् श्रीसूर्य देवतायै नमो हृदये । ओं स्वचक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ॥ ओं चक्षुश्चक्षुस्तेजःस्थिरीभव । मा याहि मा याहि । त्वरितं चक्षूरोगान् शमय शमय । मम

जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय : यथाहमन्धो न स्याम् तथा कृपय कृपय। कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः-प्रतिरोधकानि दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय । ओं नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्यभास्कराय । ओं नमः करुणाकरायामृताय । ओं नमः श्री सूर्याय ओं नमो भगवते सूर्य्याय अक्षय्यतेजसे नमः । खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय। ओं सूर्य्य उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् हंसरूपः। य इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति । न तस्य कुलेऽन्धो भवति । अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भविष्यति, ओं नमो विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं देवं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपंतपन्तं सहस्ररश्मिभिः शतधा वर्तमानः प्राणः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ओं नमो भगवते आदित्याय अहोवाहनाय स्वाहा ।

आदर्श-ध्यानयोग

चित्त स्थिर करनेका एक उपाय

अनेक ग्रन्थकारोंने आदर्श-ध्यानयोग इस प्रकार बतलाया है—

अपने सामने एक आदर्श या आईना रक्खे और घीका दीया इस तरह उसके सामने रक्खे कि उसकी ज्योति दर्पणके मध्यभागपर प्रतिबिम्बित हो। दर्पणके मध्यभागमें सुगन्धित तेलका एक बूँद डाल दे। अनन्तर दर्पणके मध्यभागमें जहाँ ज्योति दिख रही हो, वहाँ उस ज्योतिकी शङ्खाकृतिपर दृष्टि स्थिर करनेका अभ्यास करे। इस अभ्यासके समय मौन रहे, मनमें कोई विचार न आने दे और बाहरसे आनेवाले शब्दोंकी ओर जिसमें ध्यान न जाय, इसके लिये आगे लिखे अनुसार कर्णमुद्राका उपयोग करे। केसर, इलायची और जायफल समभाग लेकर उसे कूटकर चूर्ण करे, और उसे वस्त्रसे छानकर किसी रेशमी कपड़ेके टुकड़ेमें रखकर उसकी पोटली बनाकर इस तरह उसे सीये कि कानमें उसका डाट दिया जा सके। डाट देकर उसपर मोम लगा दे। यह कर्णमुद्रा कानमें लगाकर तब दर्पणमें ज्योतिके प्रतिबिम्बकी शङ्खाकृतिपर दृष्टि स्थिर करे। शुरू-शुरूमें उष्णताके कारण आँखोंसे गरम पानी जायगा, उसे जाने दे, बंद न करे। लगभग एक सप्ताहके अंदर ही पानीका जाना बंद हो जायगा। पानीसे यदि आँखें बीचहीमें बंद हो जायँ तो कोई हर्ज नहीं। आँखें पोंछकर फिरसे अभ्यास आरम्भ करे। चित्तवृत्तिको स्थिर करके, बिना पलक गिराये जितनी ही अधिक देरतक अभ्यास किया जा सके उतना ही अधिक लाभप्रद है। पहले प्रतिदिन दस-ही-पंद्रह मिनट अभ्यास करे, पीछे धीरे-धीरे घंटे-सवा-घंटेतक बढ़ा ले जाय। जब आध घंटेतक चित्तको स्थिर रखकर बिना पलक गिराये एकाग्र दृष्टिसे देखनेका अभ्यास हो जाता है तब इष्टदेवताके दर्शन होते हैं, उनसे सम्भाषण होता है और भूत, भविष्य, वर्तमानका ज्ञान आदि अनेकविध चमत्कार देख पड़ते हैं। परन्तु इन चमत्कारोंमें न फँसकर साधक भगवत्स्वरूपकी भावनाको दृढ रखकर उसका प्रत्यक्ष होते ही उससे तन्मय हो जाय और इस तरह कृतार्थता लाभ करे।

मन्त्रानुष्ठान

'मन्त्र' शब्दका अर्थ है गुप्त परामर्श। वह श्रीगुरुदेवकी ही कृपासे प्राप्त होता है। मन्त्र प्राप्त होनेपर भी यदि उसका अनुष्ठान न किया जाय, सविधि पुरश्चरण करके उसे सिद्ध न कर लिया जाय तो उससे उतना लाभ नहीं होता जितना होना चाहिये। श्रद्धा, भक्तिभाव और विधिके संयोगसे जब मन्त्रोंके अक्षर अन्तर्देशमें प्रवेश करके एक दिव्य आहिण्डन करने लगते हैं तो उस सङ्घर्षसे जन्म-जन्मान्तरीय पाप-तापोंके संस्कार धुल जाते हैं। जीवकी प्रसुप्त चेतनता जीवन्त, ज्वलन्त एवं जागरितरूपमें चमक उठती है। मन्त्रार्थके साक्षात्कारसे वह कृतकृत्य हो जाता है। जबतक दीर्घकालतक निरन्तर श्रद्धाभावसे मन्त्रका अनुष्ठान नहीं किया जायगा, तबतक प्रेम अथवा ज्ञानके उदयकी कोई सम्भावना ही नहीं है। इस अनुष्ठानमें कुछ नियमोंकी आवश्यकता होती है। यम और नियम ही आन्तरिक एवं बाह्य शान्तिके मूल हैं। इन्हींकी नीवपर अनुष्ठानका प्रासाद प्रतिष्ठित है। इसलिये अनुष्ठान करनेके पूर्व उन्हें जान लेना आवश्यक है। यहाँ संक्षेपमें उनका दिग्दर्शन कराया जाता है।

मन्त्रानुष्ठानके योग्य स्थान

मन्त्रानुष्ठान स्वयं ही करना चाहिये। यह सर्वोत्तम कल्प है। यदि श्रीगुरुदेव ही कृपा करके कर दें तब तो पूछना ही क्या। यदि ये दोनों सम्भव न हों तो परोपकारी, प्रेमी, शास्त्रवेत्ता, सदाचारी ब्राह्मणके द्वारा भी कराया जा सकता है। कहीं-कहीं अपनी धर्मपत्नीसे भी अनुष्ठान करानेकी आज्ञा है; परन्तु ऐसा उसी स्थितिमें करना चाहिये, जब उसे पुत्र हो। अनुष्ठानका स्थान निम्नलिखित स्थानोंमेंसे कोई होना

चाहिये। सिद्धपीठ, पुण्यक्षेत्र, नदीतट, गुहा, पर्वतशिखर, तीर्थ, सङ्गम, पवित्र जङ्गल, एकान्त उद्यान, बिल्ववृक्ष, पर्वतकी तराई, तुलसीकानन, गोशाला (जिसमें बैल न हों), देवालय, पीपल या आँवलेके नीचे, पानीमें अथवा अपने घरमें मन्त्रका अनुष्ठान शीघ्र फलप्रद होता है। सूर्य, अग्नि, गुरु, चन्द्रमा, दीपक, जल, ब्राह्मण और गौओंके सामने बैठकर जप करना उत्तम माना गया है। यह नियम सार्वत्रिक नहीं है। मुख्य बात यह है कि जहाँ बैठकर जप करनेसे चित्तकी ग्लानि मिटे और प्रसन्नता बढ़े, वही स्थान सर्वश्रेष्ठ है। घरसे दसगुना गोष्ठ, सौगुना जंगल, हजारगुना तालाब, लाखगुंना नदीतट, करोड़गुना पर्वत, अरबों गुना शिवालय और अनन्तगुना गुरुका सन्निधान है। जिस स्थानपर स्थिरतासे बैठनेमें किसी प्रकारकी आशङ्का अथवा आतङ्क न हो, म्लेच्छ, दुष्ट, बाघ, साँप आदि किसी प्रकारका विघ्न न डाल सकते हों, जहाँके लोग अनुष्ठानके विरोधी न हों, जिस देशमें सदाचारी और भक्त निवास करते हों, किसी प्रकारका उपद्रव अथवा दुर्भिक्ष न हो, गुरुजनोंकी सन्निधि और चित्तकी एकाग्रता सहजभावसे ही रहती हो, वही स्थान जप करनेके लिये उत्तम माना गया है। यदि किसी साधारण गाँव अथवा घरमें अनुष्ठान करना हो तो पहले कूर्म भगवान्‌का चिन्तन करना चाहिये। जैसे कूर्म भगवान्‌की पीठपर स्थित मन्दराचलके द्वारा समुद्रमन्थन किया गया था, वैसे ही मैं कूर्माकार भूमिप्रदेशमें स्थित होकर उन्हींके आश्रयसे अमृतत्वकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न कर रहा हूँ। ऐसी भावना करनी चाहिये।

भोजनकी पवित्रता

मन्त्रके साधकको अपने भोजनके सम्बन्धमें पहलेसे ही विचार कर लेना चाहिये; क्योंकि भोजनके रससे ही शरीर, प्राण और मनका निर्माण होता है। जो अशुद्ध भोजन करते हैं, उनके शरीरमें रोग, प्राणोंमें क्षोभ और चित्तमें ग्लानिकी वृद्धि होती है। ग्लान चित्तमें देवता और मन्त्रके प्रसादका उदय नहीं होता। इसके विपरीत जो शुद्ध अन्नका भोजन करते हैं, उनके चित्तके मल और विक्षेप शीघ्र ही निवृत्त हो जाते हैं। अन्नका सबसे बड़ा दोष है न्यायोपार्जित न होना। जो अन्यायसे, बेईमानी, चोरी, डकैती आदि करके अपने शरीरका पालन-पोषण करते हैं, उनकी उस क्रियाके मूलमें ही अशुद्ध मनोवृत्ति रहनेके कारण वह अन्न सर्वथा दूषित रहता है और उसके द्वारा शुद्ध चित्तका निर्माण असम्भवप्राय है। जो लोग अन्याय तो नहीं करते, परन्तु संन्यासी अथवा ब्रह्मचारी न होनेपर भी बिना परिश्रम किये ही दूसरोंका अन्न खाते हैं, उनमें तमोगुणकी वृद्धि होती है; वे अधिकांश आलस्य और प्रमादमें पड़े रहते हैं। उनके चित्तका मल दूर होना भी बड़ा कठिन है। अपनी कमाईके अन्नमें भी जिससे दूसरोंका चित्त दुखता है, उस अन्नसे चित्तकी शुद्धि सम्भव नहीं है। जिस गौका बछड़ा अलग छटपटा रहा है, पेटभर भोजन न मिलनेके कारण जिस गौकी आँखोंसे आँसू गिर रहे हों, उसका न्यायोपार्जित दूध भी चित्तको प्रसन्न कर सकेगा—इसमें सन्देह है। इसलिये भोजनमें सबसे पहले यह बात देखनी चाहिये कि यह वर्णाश्रमोचित परिश्रमसे प्राप्त किया हुआ है या नहीं? इसके उपयोगसे किसीका हक तो नहीं मारा गया है? इसको स्वीकार करनेसे किसीको कष्ट तो नहीं हुआ है? कहीं इसके मूलमें विषादका बीज तो नहीं है? इन बातोंको ध्यानमें रखकर ही भोजनकी व्यवस्था करनी चाहिये।

भोजनमें तीन प्रकारके दोष और माने गये हैं—जातिदोष, आश्रयदोष और निमित्तदोष। जातिदोष वह है, जो स्वभावसे ही कई पदार्थोंमें रहता है। इसके उदाहरणमें प्याज, लहसुन और सलगमको रख सकते हैं। जातिदोष न होनेपर भी स्थानके कारण बहुत-सी वस्तुएँ अपवित्र हो जाती हैं। शुद्ध दूध भी यदि शराबखानेमें रख दिया जाय तो वह अपवित्र हो जाता है। यही आश्रयदोष है। शुद्ध स्थानमें रक्खी हुई शुद्ध वस्तु भी कुत्ते आदिके स्पर्शसे अशुद्ध हो जाती है। इस प्रकारके दोषका नाम निमित्तदोष है।

साधकका भोजन अवश्य ही इन तीन दोषोंसे रहित होना चाहिये। गौके दही, दूध, घी, श्वेत तिल, मूँग, कन्द, केला, आम, नारियल, आँवला, जड़हन धान, जौ, जीरा, नारंगी आदि हविष्यान्न जो विभिन्न व्रतोंमें उपादेय माने गये हैं, तथा जिस देशमें जिनकी पवित्रता शिष्टसंमत है उस देशमें वहाँके निवासी वही भोजन कर सकते हैं। मधु, खारी नमक, तेल, पान, गाजर, उड़द, अरहर, मसूर, कोदो, चना, बासी अन्न, रूखा अन्न और वह अन्न, जिसमें कीड़े पड़ गये हों, नहीं खाना चाहिये। काँसेके बर्तनमें भी न खाना चाहिये।

भोजनके सम्बन्धमें एक बात और भी ध्यानमें रखनी चाहिये। जितने भोजनकी आवश्यकता हो, उससे कम ही खाया जाय। भोज्य अन्न खूब पका हुआ हो, थोड़ा गरम हो,

हृदयदाही न हो। जिससे इन्द्रियोंको अधिक बल और उत्तेजना मिले, पेट बढ़े एवं निद्रा, आलस्य आवें, वह सर्वथा वर्जित है। भगवान् शङ्करने एक स्थानपर पार्वतीसे कहा है कि—जिनकी जिह्वा परान्नसे जल गयी है, जिनके हाथ प्रतिग्रहसे जले हुए हैं और जिनका मन परस्त्रीके चिन्तनसे जलता रहता है, उन्हें भला मन्त्रसिद्धि कैसे प्राप्त हो सकती है! जिन्हें भिक्षा लेनेका अधिकार है, उन संन्यासी आदिकोंके लिये भिक्षा परान्न नहीं है। परन्तु वैदिक, सदाचारी, पवित्र एवं कुलीन ब्राह्मणोंसे ही भिक्षा लेनी चाहिये। एक ग्रन्थमें ऐसा उल्लेख मिलता है कि सर्वोत्तम बात तो यही है कि अग्निके अतिरिक्त और कोई भी वस्तु किसीसे न ली जाय। यदि ऐसा सम्भव न हो तो तीर्थके बाहर जाकर पर्वोंको छोड़कर न्यायोपार्जित अन्नकी भिक्षा लेनी चाहिये, सो भी एक दिन खानेभर। जो रागवश इससे अधिक भिक्षा ग्रहण करता है, उसे मन्त्रसिद्धि नहीं प्राप्त हो सकती।

कुछ आवश्यक बातें

स्त्रीसंसर्ग, उनकी चर्चा, तथा जहाँ वे रहती हों वह स्थान छोड़ देना चाहिये। ऋतुकालके अतिरिक्त अपनी स्त्रीका भी स्पर्श करना निषिद्ध है। स्त्री-साधिकाओंके लिये पुरुषोंके सम्बन्धमें भी यही बात समझनी चाहिये। कुटिलता, क्षौर, उबटन, विना भोग लगाये भोजन और विना संकल्पके कर्म नहीं करने चाहिये। केवल आँवलेसे अथवा पञ्चगव्यसे शास्त्रोक्त विधिसे स्नान करना चाहिये। स्नान, आचमन, भोजन आदि मन्त्रोच्चारणके साथ ही हों। यथाशक्ति तीनों समय, दो समय अथवा एक समय स्नान, सन्ध्या और इष्टदेवकी पूजा भी अवश्य करनी चाहिये। स्नान-तर्पण किये विना, अपवित्र हाथसे, नग्न-अवस्थामें अथवा सिरपर वस्त्र रखकर जप करना निषिद्ध है। जपके समय माला पूरी हुए विना बातचीत नहीं करनी चाहिये। आवश्यक हो तो जप समाप्त करने और प्रारम्भ करनेके पूर्व आचमन कर लेना चाहिये।

यदि जप करते समय एक शब्दका उच्चारण हो जाय तो एक बार प्रणवका उच्चारण कर लेना चाहिये। यदि वह शब्द कठोर हो तो प्राणायाम भी आवश्यक हो जाता है। यदि कहीं बहुत बात कर जाय, तो आचमन, अङ्गन्यास करके पुनः माला प्रारम्भ करनी चाहिये। छींक और अस्पृश्य स्थानोंका स्पर्श हो जानेपर भी यही विधान है। जप करते समय यदि शौच, लघुशङ्का आदिका वेग हो तो उसका निरोध नहीं करना चाहिये; क्योंकि ऐसी अवस्थामें मन्त्र और इष्टका चिन्तन तो होता नहीं, मल-मूत्रका ही चिन्तन होने लगता है। ऐसे समयका जप-पूजनादि अपवित्र होता है। मलिन वस्त्र, केश और मुखसे जप करना शास्त्रविरुद्ध है। जप करते समय इतने कर्म निषिद्ध हैं—आलस्य, जँभाई, नींद, छींक, थूकना, डरना, अपवित्र अङ्गोंका स्पर्श और क्रोध।

जपमें न बहुत जल्दी करनी चाहिये और न बहुत विलम्ब। गाकर जपना, सिर हिलाना, लिखा हुआ पढ़ना, अर्थ न जानना और बीच-बीचमें भूल जाना—ये सब मन्त्रसिद्धिके प्रतिबन्धक हैं। जपके समय यह चिन्तन रहना चाहिये कि इष्टदेवता, मन्त्र और गुरु एक ही हैं।

जबतक जप किया जाय, यही बात मनमें रहे। पहले दिन जितने जपका सङ्कल्प किया जाय, उतना ही जप प्रति-दिन होना चाहिये। उसे घटाना-बढ़ाना ठीक नहीं। मन्त्र-सिद्धिके लिये बारह नियम हैं—१—भूमिशयन, २—ब्रह्मचर्य, ३—मौन, ४—गुरुसेवन, ५—त्रिकालस्नान, ६—पापकर्म-परित्याग, ७—नित्य पूजा, ८—नित्य दान, ९—देवताकी स्तुति एवं कीर्तन, १०—नैमित्तिक पूजा, ११—इष्टदेव और गुरुमें विश्वास, १२—जपनिष्ठा। जो इन नियमोंका पालन करता है, उसका मन्त्र सिद्ध ही समझना चाहिये।

स्त्री, शूद्र, पतित, व्रात्य, नास्तिक आदिके साथ सम्भाषण, उच्छिष्ट मुखसे वार्तालाप, असत्यभाषण और कुटिलभाषण छोड़ देना चाहिये। किसी भी अनुष्ठानके समय शपथ लेनेसे सब निरर्थक हो जाता है। अनुष्ठान आरम्भ कर देनेपर यदि मरणाशौच या जननाशौच पड़ जाय तो भी अनुष्ठान नहीं छोड़ना चाहिये। अपने आसन, शय्या, वस्त्र आदिको शुद्ध एवं स्वच्छ रखना चाहिये। किसीका गाना, बजाना, नाचना न सुनना चाहिये और न देखना। उबटन, इत्र, फूल-मालाका उपयोग और गरम जलसे स्नान नहीं करना चाहिये। एक वस्त्र पहनकर अथवा बहुत वस्त्र पहनकर एवं पहननेका वस्त्र ओढ़कर और ओढ़नेका वस्त्र पहनकर जप नहीं करना चाहिये। सोकर, विना आसनके, चलते या खाते समय, विना माला ढके और सिर ढककर जो जप किया जाता है, अनुष्ठानके जपमें उसकी गिनती नहीं होती। जिसके चित्तमें व्याकुलता, क्षोभ, भ्रान्ति हो, भूख लगी हो, शरीरमें पीड़ा हो, स्थान अशुद्ध एवं अन्धकाराच्छन्न हो, उसे वहाँ जप नहीं करना चाहिये। जूता पहने हुए

अथवा पैर फैलाकर जप करना निषिद्ध है। और भी बहुत-से नियम हैं, उन्हें जानकर यथाशक्ति उनका पालन करना चाहिये। ये सब नियम मानस जपके लिये नहीं हैं। शास्त्रकारोंने कहा है—

> अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि।
> मन्त्रैकशरणो विद्वान् मनसैव सदाभ्यसेत्॥
> न दोषो मानसे जाप्ये सर्वदेशेऽपि सर्वदा।

अर्थात् 'मन्त्रके रहस्यको जाननेवाला जो साधक एकमात्र मन्त्रकी ही शरण हो गया है, वह चाहे पवित्र हो या अपवित्र, सब समय चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते, मन्त्रका अभ्यास कर सकता है। मानस जपमें किसी भी समय और स्थानको दोषयुक्त नहीं समझा जाता।' कुछ मन्त्रोंके सम्बन्धमें अवश्य ही विभिन्न विधान हैं। उनके प्रसंगमें वे नियम स्पष्ट कर दिये जायँगे।

'माला और उसके संस्कार' शीर्षक लेखमें संक्षेपमें इस बातका निर्देश किया गया है कि जप किस प्रकार सुषुप्त चेतनाको जागरित करके परम तत्त्वसे एक कर देता है। यहाँ उसकी पुनरुक्ति आवश्यक नहीं है। जो लोग आधिदैविक जगत्का रहस्य जानते हैं, वे भलीभाँति इस तत्त्वसे अवगत हैं कि स्थूल जगत्की एक-एक वस्तुके पृथक्-पृथक् अधिष्ठातृ देवता होते हैं और वे जगा लिये जानेपर अनेक प्रकारकी सिद्धियाँ दे सकते हैं। केवल परमार्थ ही नहीं, इनके द्वारा स्वार्थ भी सिद्ध होता है। इन देवताओंमें अनेकों प्रकारके चमत्कारकी शक्ति रहती है और इनकी सहायतासे अर्थप्राप्ति, धर्मपालन एवं कामोपभोग पूर्णरूपसे किये जा सकते हैं। प्राचीन भारतीयोंके सम्बन्धमें जो बहुत-सी बातें सुनी जाती हैं वे किंवदन्तीमात्र नहीं हैं, पूर्ण सत्य हैं। चाहे अर्वाचीन लोग इसे न मानें, परन्तु वे ही सिद्धियाँ आज भी सम्भव हैं। इन मन्त्रोंमें ऐसी ही शक्ति है, चाहे जो इनका जप करके प्रत्यक्ष फल प्राप्त कर सकता है।

जपकी महिमा और भेद

शास्त्रोंमें जपकी बड़ी महिमा गायी गयी है, सब यज्ञोंकी अपेक्षा जप-यज्ञको श्रेष्ठ बतलाया गया है। जप-यज्ञमें किसी भी बाह्य सामग्री अथवा हिंसा आदिकी आवश्यकता नहीं होती। पद्म एवं नारदीय पुराणमें कहा गया है कि और समस्त यज्ञ वाचिक जपकी तुलनामें सोलहवें हिस्सेके बराबर भी नहीं हैं। वाचिक जपसे सौगुना उपांशु और सहस्रगुना मानस जपका फल होता है। मानस जप वह है, जिसमें अर्थका चिन्तन करते हुए मनसे ही मन्त्रके वर्ण, स्वर और पदोंकी बार-बार आवृत्ति की जाती है। उपांशु जपमें कुछ-कुछ जीभ और होंठ चलते हैं, अपने कानोंतक ही उनकी ध्वनि सीमित रहती है, दूसरा कोई नहीं सुन सकता। वाचिक जप वाणीके द्वारा उच्चारण है। तीनों ही प्रकारके जपोंमें मनके द्वारा इष्टका चिन्तन होना चाहिये। मानसिक स्तोत्र-पाठ और जोर-जोरसे उच्चारण करके मन्त्र-जप, दोनों ही निष्फल हैं। गौतमीय तन्त्रमें कहा गया है कि केवल वर्णोंके रूपमें जो मन्त्रकी स्थिति है, वह तो उसकी जडता अथवा पशुता है। सुषुम्णाके द्वारा उच्चारित होनेपर उसमें शक्तिसञ्चार होता है। पहले ऐसी भावना करनी चाहिये कि मन्त्रका एक-एक अक्षर चिच्छक्तिसे ओतप्रोत है और परम अमृतस्वरूप चिदाकाशमें उसकी स्थिति है। ऐसी भावना करते हुए जप करनेसे पूजा, होम आदिके विना ही मन्त्र अपनी शक्ति प्रकाशित कर देते हैं। मन्त्रजप करनेकी यही विधि है कि प्राणबुद्धिसे सुषुम्णाके मूलदेशमें स्थित जीवरूपसे मन्त्रका चिन्तन करके मन्त्रार्थ और मन्त्रचैतन्यके ज्ञानपूर्वक उनका जप किया जाय। कुलार्णवतन्त्रमें भगवान् शङ्करने कहा है कि मन एक जगह, शिव दूसरी जगह, शक्ति तीसरी जगह और प्राण चौथी जगह—ऐसी स्थितिमें मन्त्रसिद्धिकी क्या सम्भावना है। इसलिये इन सबको एकत्र चिन्तन करते हुए ही जप करना चाहिये।

मन्त्रमें सूतक और मन्त्रसिद्धिके साधन

मन्त्रमें दो प्रकारके सूतक होते हैं—एक जात-सूतक और दूसरा मृत-सूतक। इन दोनों अशौचोंका भङ्ग किये विना मन्त्र सिद्ध नहीं होते। इसके भङ्ग करनेकी विधि यह है कि जपके प्रारम्भमें एक सौ आठ बार अथवा असमर्थ होनेपर सात बार ओंकारसे पुटित करके अपने इष्ट मन्त्रका जप कर लेना चाहिये। मन्त्रार्थ और मन्त्रचैतन्यका उल्लेख किया जा चुका है। उनके साथ ही योनिमुद्राका अनुष्ठान करना भी आवश्यक होता है। उसके विकल्पमें भूत-लिपिका विधान होता है, उससे अनुलोम-विलोम पुटित करके मन्त्र-जप करनेसे बहुत ही शीघ्र मन्त्र सिद्ध होता है। भूत-लिपिका क्रम निम्नलिखित है—

अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ह य र व ल ङ क ख घ ग ञ च छ झ ज ण ट ठ ढ ड न त थ ध द म प फ भ ब श ष स (इसके बाद इष्टमन्त्र; फिर)

स प श ब भ फ प म द ध थ त न ड ढ ठ ट ण ज झ छ च ञ ग घ ख क ङ ल व र य ह औ ओ ऐ ए ऌ ॠ उ इ अ ।

इस प्रकार एक महीनेतक एक हजार जप करना चाहिये । ऐसा करनेसे मन्त्र जागरित हो जाता है । तीन प्राणायाम पहले और तीन पीछे कर लेने चाहिये । प्राणायामकी साधारण विधि यह है कि चार मन्त्रसे पूरक, सोलह मन्त्रसे कुम्भक और आठ मन्त्रसे रेचक करना चाहिये । जप पूरा हो जानेपर उसको तेजःस्वरूप ध्यान करके इष्ट देवताके दाहिने हाथमें समर्पित कर देना चाहिये । यदि देवीका मन्त्र हो तो बायें हाथमें समर्पण करना चाहिये । प्रतिदिन अथवा अनुष्ठानके अन्तमें जपका दशांश हवन, हवनका दशांश तर्पण, तर्पणका दशांश अभिषेक और यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन कराना चाहिये ।

होम, तर्पण आदिमेंसे जो अंग पूरा न किया जा सके, उसके लिये और भी जप करना चाहिये । होम न कर सकनेपर ब्राह्मणोंके लिये होमकी संख्यासे चौगुना, क्षत्रियोंके लिये छगुना, वैश्योंके लिये आठगुना जप करनेका विधान है ।

स्त्रियोंके लिये वैश्योंके समान ही समझना चाहिये । शूद्र यदि किसी वर्णका आश्रित हो, तब तो उसके लिये अपने आश्रयकी संख्या ही समझनी चाहिये । यदि वह स्वतन्त्र हो तो उसे होमकी संख्यासे दसगुना जप करना चाहिये । अर्थात् एक लाखका अनुष्ठान हो तो होमके लिये भी एक लाख जप करना चाहिये । 'योगिनीहृदय'में यह संख्या कुछ कम करके लिखी है । ब्राह्मणोंके लिये होम-संख्याका दुगुना, क्षत्रियोंके लिये तिगुना, वैश्योंके लिये चौगुना और शूद्रोंके लिये पाँचगुना है । अनुष्ठानके पाँच अङ्ग हैं—जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मणभोजन । यदि होम, तर्पण और अभिषेक न हो सकें तो केवल ब्राह्मणोंके आशीर्वादसे भी काम चल जाता है । स्त्रियोंके लिये तो ब्राह्मणभोजनकी भी उतनी आवश्यकता नहीं है । उन्हें न्यास, ध्यान और पूजाकी भी छूट है, केवल जपमात्रसे ही उनके मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं । अनुष्ठानमें दीक्षासम्पन्न ब्राह्मणोंको ही खिलाना चाहिये ।

अनुष्ठान पूरा हो जानेपर गुरु, गुरुपुत्र, गुरुपत्नी अथवा उनके वंशजोंको दक्षिणा देनी चाहिये । वास्तवमें यह सब उनकी प्रसन्नताके लिये ही है । जबतक वे प्रसन्न न हों, तबतक परम रहस्यमय ज्ञानकी उपलब्धि नहीं हो सकती । अपने प्रयत्न एवं विचारसे चाहे कोई कितना ही ऊपर क्यों न उठ जाय, वह पूर्णरूपसे सन्देहरहित नहीं हो सकता । इसलिये विशेष करके उपासनाके सम्बन्धमें गुरुके अतिरिक्त और कोई गति ही नहीं है । उनके बिना वह रहस्य और कौन बता सकता है, जिसमें गुरु और शिष्य एक हैं । शिष्य स्वयं गुरुका अस्तित्व कभी मिटा नहीं सकता । केवल गुरु ही अपने गुरुत्वको मिटाकर शिष्यको उसके वास्तविक स्वरूपमें प्रतिष्ठित करते हैं । यह एक ऐसा रहस्य है, जिसे निगुरे नहीं जान सकते । अतः समझना चाहिये कि अनुष्ठानकी पूर्णता गुरुकी प्रसन्नतामें है । एक बार एक मन्त्र सिद्ध हो जानेपर दूसरे मन्त्रोंकी सिद्धिमें किसी प्रकारका विलम्ब नहीं होता, वे निर्विघ्न सिद्ध हो जाते हैं ।

इस प्रकार विधि-निषेध आदि जानकर गुरुदेवके आश्रयमें रहते हुए, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक मन्त्रानुष्ठान करनेसे अवश्यमेव मन्त्रसिद्धि होती है—इसमें कोई सन्देह नहीं है । शा०

मन्त्र-साधन

मन्त्र और सिद्धादिशोधन

'ते यथा तत्र वर्त्तेरंस्त्वं तथा तत्र वर्तेथाः ।'

जैसे विवाह-सम्बन्ध निश्चित होनेके पूर्व नाड़ी, भकूट आदिका ज्यौतिष शास्त्रके अनुसार विचार किया जाता है, वैसे ही मन्त्र-दीक्षा-निर्णयके पूर्व साधक और मन्त्रके सम्बन्धका विचार भी मन्त्रशास्त्रके अनुसार किया जाता है । इसका विस्तार बहुत है, परन्तु संक्षेपमें कुछ आवश्यक चक्रोंका वर्णन कर दिया जाता है । पहले कुलाकुल चक्रका विचार होता है । पचास वर्णोंको पञ्चभूतोंके अन्तर्गत करके साधकके नामके साथ विचार किया जाता है और यदि मन्त्रका आदि अक्षर साधकके नामके आदि अक्षरवाली पंक्तिमें ही आता है तो वह मन्त्र और साधक एकदैवत हैं, ऐसा समझना चाहिये । चक्र निम्नलिखित है—

कुलाकुल-चक्र

वायु	अग्नि	भूमि	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	ल	स	ह

यह चक्र पाँच कोष्ठोंमें विभक्त है । ऊपर पाँच तत्त्वोंके नाम लिखे हुए हैं । एक भूतके नीचे जो अक्षर लिखे हुए हैं, वे एकदैवत हैं । साधकके नामका आदि अक्षर और मन्त्रका आदि अक्षर यदि एक ही कोष्ठकमें पड़ते हों तो वह अपने कुलका मन्त्र है और उसे ग्रहण करना चाहिये । यदि एक कोष्ठकमें न पड़ें तो अपने मित्रके कोष्ठकका मन्त्र लिया जा सकता है । जलवर्ण भूमिवर्णका और वायुवर्ण अग्निवर्णका मित्र है । वायुवर्ण भूमिवर्णका एवं अग्निवर्ण जल और भूमिवर्णका शत्रु है । आकाशवर्ण सभी भूतोंका मित्र है । जिन मन्त्रोंके आदि अक्षर शत्रुतत्त्वके वर्णके हों, उन्हें नहीं ग्रहण करना चाहिये ।

अब राशि-चक्रका विचार लिखा जाता है । उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

राशिचक्र

वृष उ ऊ ऋ / मिथुन ॠ ऌ ॡ	मेष अ आ इ ई	मीन य र ल व / कुम्भ प फ ब भ म
कर्क ए ऐ		मकर त थ द ध न
सिंह ओ औ / कन्या अं अः श ष स ह ळ क्ष	तुला क ख ग घ ङ	धनु ट ठ ड ढ ण / वृश्चिक च छ ज झ ञ

राशि-चक्रमें उल्लिखित अक्षरोंके द्वारा अपनी और मन्त्रकी राशि निश्चित करनी चाहिये। फिर अपनी राशिसे मन्त्रकी राशितक गिनकर उसका फलाफल निश्चित करना चाहिये। यदि छठा, आठवाँ अथवा बारहवाँ पड़े तो मन्त्र श्रेष्ठ नहीं है। एक, पाँच और नौं मित्र हैं; दो, छः, दस हितकारी हैं; तीन, सात, ग्यारह पुष्टिकर हैं; चार, आठ, बारह घातक हैं।

इसके पश्चात् नक्षत्र-चक्रका विचार करना चाहिये। उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

नक्षत्र-चक्र

अश्विनी अ आ देव	भरणी इ नर	कृत्तिका ई उ ऊ राक्षस	रोहिणी ऋ ॠ ऌ ॡ नर	मृगशिरा ए देव	आर्द्रा ऐ नर	पुनर्वसु ओ औ देव	पुष्य क देव	आश्लेषा ख ग राक्षस
मघा घ ङ राक्षस	पू०फाल्गुनी च नर	उ०फाल्गुनी छ ज नर	हस्ता झ ञ देव	चित्रा ट ठ राक्षस	स्वाती ड देव	विशाखा ढ ण राक्षस	अनुराधा त थ द देव	ज्येष्ठा ध राक्षस
मूल न प फ राक्षस	पूर्वाषाढ़ा ब नर	उत्तराषाढ़ा भ नर	श्रवणा म देव	धनिष्ठा य र राक्षस	शतभिषा ल राक्षस	पू०भाद्रपद व श नर	उ०भाद्रपद ष स ह नर	रेवती ळ क्ष अं अः देव

इस चक्रके अनुसार अपना और मन्त्रका गण निश्चित कीजिये। यदि आप मनुष्यगण हैं तो मनुष्यगणका मन्त्र ही आपके लिये श्रेष्ठ है। देवगणका भी उत्तम है, किन्तु राक्षसगणका घातक है। देवगणके लिये मनुष्यगणका मन्त्र मध्यम है और राक्षसगणका शत्रु है। राक्षसगणके लिये केवल राक्षसगणका मन्त्र ही उपयोगी है। इसी चक्रके अनुसार अपना और मन्त्रका नक्षत्र निश्चित करके अपने नक्षत्रसे मन्त्रका नक्षत्र गिने। क्रमशः जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र और परम मित्र समझना चाहिये। यदि मन्त्र इतनी संख्याके अंदर न आवे तो इनको दुबारा और तिबारा गिन लेना चाहिये।

इसके पश्चात् अकडम-चक्रका विचार करना चाहिये। यह चक्र अ, क, ड, म, इन अक्षरोंसे प्रारम्भ होता है; इसलिये इसका वही नाम है। इसका स्वरूप निम्नलिखित है—

अकडम-चक्र

साधकके नामका पहला अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, उससे गिनना प्रारम्भ कीजिये। मन्त्रका पहला अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, वहाँतक गिनते चलिये। यह गणना दक्षिणावर्त होनी चाहिये। मन्त्रका पहला अक्षर पहले प्रकोष्ठमें ही हो तो सिद्ध, दूसरेमें हो तो साध्य, तीसरेमें हो तो सुसिद्ध, चौथेमें हो तो अरि—ऐसा समझना चाहिये। मान लीजिये कि साधकका नाम 'श्याम' है और 'ऐम्' मन्त्रका विचार करना है। जिस प्रकोष्ठमें 'श' है, उससे ग्यारहवें प्रकोष्ठमें 'ऐ' पड़ता है। श्यामके लिये 'ऐम्' सुसिद्ध मन्त्र है। अरि मन्त्र त्याज्य है, साध्य मन्त्र मध्यम है, सिद्ध और सुसिद्ध उत्तम हैं।

इसी प्रकार एक अकथह-चक्र है। उसमें भी सिद्ध, साध्य आदिका ही विचार होता है। चक्र निम्नलिखित है—

अकथह-चक्र

१ अ क थ ह	२ उ ङ प	३ आ ख द	४ ऊ च फ
५ ओ ड व	६ ऌ झ म	७ औ ढ श	८ ॡ ञ य
९ ई घ न	१० ऋ ज भ	११ इ ग ध	१२ ॠ छ व
१३ अः त स	१४ ऐ ठ ल	१५ अं ण ष	१६ ए ट र

साधकके नामका आदि अक्षर जिस प्रकोष्ठमें हो, उससे मन्त्रके आदि अक्षरवाले प्रकोष्ठतक गिनते चलिये। पहले प्रकोष्ठमें मन्त्राक्षर हो तो सिद्ध, दूसरेमें हो तो साध्य, तीसरेमें हो तो सुसिद्ध और चौथेमें हो तो अरि। इस प्रकार जबतक मन्त्राक्षर न मिले, गिनते जाना चाहिये। इसकी गिनती क्रमशः दाहिनी ओर चलती है।

एक ऋणि-धनि-चक्र है। उससे भी ग्राह्य मन्त्रका विचार होता है। उसका स्वरूप निम्नलिखित है—

ऋणि-धनि-चक्र

६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

रुद्रयामलमें लिखी हुई प्रक्रियासे यह चक्र अङ्कित किया गया है। ऊपर मन्त्र-वर्णोंके अङ्क हैं और नीचे साधक-वर्णोंके अङ्क हैं। मन्त्र और साधकके स्वर और वर्ण अलग-अलग करके प्रत्येकके अङ्क पृथक्-पृथक् जोड़ लेने चाहिये। दोनोंमें अलग-अलग आठका भाग देना चाहिये। शेषमें मन्त्रका अङ्क अधिक होनेपर वह ऋणी होता है और कम होनेपर धनी। ऋणी मन्त्रसे बहुत शीघ्र सिद्धि मिलती है, बराबर होनेपर भी उत्तम होता है, धनी होनेपर विलम्ब होता है और यदि शेष शून्य हो तब तो मृत्युकारक है। मान लीजिये साधकका नाम 'राम' है। इसके नाममें चार अक्षर हैं--र्, आ, म् और अ। इनके अङ्क हुए क्रमशः ०, २, ५ और २। इनका योग हुआ ९। ८ का भाग देनेपर १ शेष बचा। अब इसको 'ऐम्' मन्त्रकी साधना करनी है। इसमें दो अक्षर हैं, ऐ और म्। इनके अङ्क हुए क्रमशः ४ और ६। योग हुआ १०। और ८ का भाग देनेपर बचा २। साधककी अपेक्षा मन्त्रके अङ्क अधिक हैं, इसलिये 'राम' के लिये 'ऐम्' मन्त्र ऋणी हुआ। इसलिये वह उत्तम है।

इस प्रकारके और भी कई चक्र हैं। विस्तारभयसे उनका उल्लेख नहीं किया जाता। इन सब चक्रोंके अनुसार शुभ होनेपर ही मन्त्र ग्रहण करना चाहिये। कुछ मन्त्रोंमें इसका अपवाद भी है। जैसे—

स्वप्नलब्धे स्त्रिया दत्ते मालामन्त्रे च त्र्यक्षरे।
वैदिकेषु च सर्वेषु सिद्धादीन्नैव शोधयेत्॥
हंसस्याष्टाक्षरस्यापि तथा पञ्चाक्षरस्य च।
एकद्वित्र्यादिबीजस्य सिद्धादीन्नैव शोधयेत्॥

'जो मन्त्र स्वप्नमें प्राप्त हुआ हो, स्त्री-गुरुने जिसकी दीक्षा दी हो, जो मन्त्र बीस अक्षरसे अधिकका हो, जिसमें तीन ही अक्षर हों और जितने भी वैदिक मन्त्र हैं, उनमें सिद्धादि-शोधनकी आवश्यकता नहीं। हंसमन्त्र, अष्टाक्षरमन्त्र, पञ्चाक्षरमन्त्र, एक, दो, तीन आदि बीजरूप मन्त्र—इनमें भी सिद्धादिशोधनकी आवश्यकता नहीं।'

समस्त ऐश्वर्य और ज्ञानके एकमात्र आश्रय परमानन्द-स्वरूप भगवान् श्रीकृष्णके मन्त्रोंमें भी सिद्धादिशोधनकी आवश्यकता नहीं है। त्रैलोक्य-सम्मोहनतन्त्रमें गोपाल-मन्त्रको लक्ष्य करके कहा गया है—

न चात्र शात्रवा दोषा नर्णस्वादिविचारणा।
ऋक्षराशिविचारो वा न कर्तव्यो मनौ प्रिये॥

अर्थात् 'गोपालमन्त्रमें अरि आदि दोष नहीं हैं, ऋणी-धनीका विचार भी नहीं है। इस मन्त्रमें नक्षत्र और राशिका विचार भी नहीं करना चाहिये।' बृहद्गौतमीयमें सामान्यतः समस्त श्रीकृष्ण-मन्त्रोंमें सिद्धादि-विचारकी अनावश्यकता बतलायी है।

नात्र चिन्त्योऽरिशुद्ध्यादिर्नारिमित्रादिलक्षणम्।
न वा प्रयासबाहुल्यं साधने न परिश्रमः॥
सिद्धसाध्यसुसिद्धारिरूपा नात्र विचारणा।

अर्थात् 'श्रीकृष्ण-मन्त्रमें सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि आदिका विचार नहीं करना चाहिये।'

इसी प्रकार दश महाविद्या, सिद्धविद्या आदिके सम्बन्धमें भी वचन मिलते हैं। परन्तु इस विषयमें निबन्धकारोंने ऐसा निर्णय किया है कि मन्त्रोंके विचारका प्रकरण दूसरा है और उनकी प्रशंसाका प्रकरण दूसरा है। उनके विचारका जहाँ प्रकरण है, वहाँ विचार करना चाहिये और उनकी महिमा और प्रशंसाके प्रकरणमें उनके प्रति श्रद्धाभावकी अभिवृद्धि करनी चाहिये। तात्पर्य यह कि साधारणतः इनका विचार करना ही चाहिये। जहाँ अनन्य श्रद्धाका विषय हो, वहाँ ये बातें लागू नहीं होतीं।

यह चक्रोंका विषय एक प्रकारसे तन्त्रज्यौतिषका विषय है; इसलिये इस प्रसङ्गमें यदि मन्त्रग्रहणके मास, पक्ष, तिथि आदिका निर्णय कर लिया जाय तो अनुपयुक्त न होगा। मासनिर्णयमें ऐसा समझना चाहिये कि वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मन्त्र-ग्रहणमें उत्तम हैं। चैत्रमें केवल गोपाल-मन्त्र लिया जा सकता है। आषाढ़में केवल श्रीविद्याका ग्रहण ही वर्जित है; और मन्त्र ले सकते हैं। मलमास सर्वथा निषिद्ध है। उपर्युक्त उत्तम मासोंमेंसे किसीके भी शुक्ल या कृष्णपक्षमें दीक्षा ले सकते हैं। शुक्लपक्ष उत्तम है। कोई-कोई कृष्णपक्षकी पञ्चमीतक ग्राह्य मानते हैं। कालोत्तर-तन्त्रके अनुसार सम्पत्ति चाहनेवालेको शुक्लपक्षमें और मोक्ष चाहनेवालेको कृष्णपक्षमें ग्रहण करना चाहिये। मन्त्रग्रहणमें द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी और पूर्णिमा ग्राह्य हैं; शेष निषिद्ध। कुछ महीनोंकी विशेष तिथियाँ भी अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं—जैसे अक्षयतृतीया, नागपञ्चमी आदि। सौर गणनासे मास और चान्द्र गणनासे तिथियोंका विचार करना चाहिये। शनि और मङ्गलको छोड़कर शेष दिन दीक्षाग्रहणमें उपयोगी हैं। नक्षत्रोंमें अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनीसे स्वातीतक, अनुराधा, मूल, पूर्वोत्तराषाढा, शतभिषा, पूर्वोत्तरभाद्रपद, रेवती—ये नक्षत्र उत्तम हैं। शुभ, सिद्ध, आयुष्मान् आदि उत्तम योग और बव, बालव आदि उत्तम करणोंका भी विचार कर लेना चाहिये। इस प्रकार नक्षत्र, चन्द्र, तारा आदिकी शुद्धि देखकर लग्नका विचार करना चाहिये। वृष, सिंह, कन्या, धनुष् और मीन—ये लग्न उत्तम हैं। विष्णुमन्त्र लेनेमें स्थिर लग्न, शिवमन्त्र लेनेमें चर लग्न और शक्तिमन्त्र लेनेमें स्थिर-चर लग्न उत्तम कहे गये हैं। लग्ननिर्णयमें ग्रहविचारकी भी आवश्यकता होती है। लग्नसे तीसरे, छठे और ग्यारहवें स्थानमें पापग्रह तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) और त्रिकोण (९, ५) में शुभ ग्रह हों तो उत्तम हैं। ये सब विचार करके ही मन्त्र-ग्रहणका दिन रखना चाहिये। सूर्य और चन्द्रमाके ग्रहण आदि अवसरोंपर विशेष मुहूर्तकी अपेक्षा नहीं होती।

इन सब विचारोंमें साधककी उपादानगत विशेषता, मन्त्रकी विशेष शक्ति और ज्योतिश्चक्रका स्थूल-सूक्ष्म सृष्टि-पर प्रभाव—इन सबका सम्बन्ध आ जाता है। किस तिथिको साधकका ब्रह्माण्डके साथ कैसा सम्बन्ध रहता है और उसके अन्तःकरणके द्रव्य किस प्रकार प्रभावित रहते हैं और कैसी स्थितिमें कौन-सा मन्त्र उसके हृदयका स्पर्श करेगा, किस शक्तिके साथ उसकी एकता हो सकेगी—इन बातोंको ध्यानमें रखकर ही दीक्षाके मुहूर्तका निर्णय किया गया है।

सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् श्रीगुरुदेवकी दृष्टिसे ये बातें छिपी नहीं रहतीं। इसीसे दीक्षाके सम्बन्धमें पूर्णतः उन्हींपर निर्भर रहना चाहिये। वे जिस दिन, जिस अवस्थामें शिष्यपर कृपा कर देते हैं, चाहे जो मन्त्र दे देते हैं, विधिपूर्वक या अविधि-पूर्वक—सब ज्यों-का-त्यों शास्त्रसम्मत है। वही शुभ मुहूर्त है, जब श्रीगुरुदेवकी कृपा हो; वही शुभ मन्त्र है, जो वे दे दें। उसमें किसी प्रकारके सन्देह या विचारके लिये स्थान नहीं है। वे अनधिकारीको अधिकारी बना सकते हैं। एक-दो-की तो बात ही क्या, सारे संसारका उद्धार कर सकते हैं। तत्त्वसारमें क्या ही सुन्दर कहा है—

यः समः सर्वभूतेषु विरागो वीतमत्सरः।
कर्मणा मनसा वाचा भीते चाभयदः सदा॥
समबुद्धिपदं प्राप्तस्तत्रापि भगवन्मयः।
पञ्चकालपरश्चैव पाञ्चरात्रार्थवित्तथा॥

विष्णुतत्त्वं परिज्ञाय एकं चानेकभेदगम् ।
दीक्षयेन्मेदिनीं सर्वां किं पुनश्चोपसन्नतान् ॥

'जो समस्त प्राणियोंमें सम हैं, राग-द्वेषहीन हैं, कर्म, मन और वाणीसे आर्तत्राणपरायण हैं, जिन्हें समत्वकी प्राप्ति हो गयी है और जो भगवन्मय हो गये हैं, जो नित्यकर्मका पालन करते हैं और वैष्णवशास्त्रका रहस्य जानते हैं—वे एक ही विष्णुतत्त्वको अनेक रूपोंमें जानकर सारी पृथिवीको दीक्षित कर सकते हैं; फिर शरणमें आये हुए अधिकारियोंकी तो बात ही क्या है ।'

श्रीगुरुदेवकी ऐसी ही महिमा है । ये विधि-विधान भी उनकी लीला और उनकी प्रसन्नताके साधन ही हैं ।

मन्त्र-चैतन्य

साधारणतः लोगोंकी ऐसी धारणा है कि शब्दोंके तीन ही प्रकार हो सकते हैं—एक तो आकाशके कारण तन्मात्राके रूपमें शब्द, दूसरा आकाशरूप शब्द और तीसरा आकाशके गुण अथवा कार्यके रूपमें शब्द । पाश्चात्त्य वैज्ञानिकोंने तो वायुके गुणके रूपमें ही शब्दोंको स्वीकार किया है । परन्तु ये सब दृष्टियाँ बहुत ही स्थूल हैं । आध्यात्मिक जगत्में शब्द-तत्त्वकी बड़ी ही सुन्दर विवेचना हुई है । शब्द दो प्रकारके हैं—एक तो किसी अर्थके अवगत हो जानेपर उसको व्यक्त करनेके लिये मनःप्रेरित वायुके आघातसे कण्ठ, तालु आदि विशेष स्थानोंसे उच्चारित होनेवाला शब्द और दूसरा अन्तःकरणमें अर्थको उद्भासित करनेवाला चैतन्य शब्द, जिसको वैयाकरणोंने 'स्फोट' अथवा 'शब्द-ब्रह्म' कहा है । 'स्फोट' शब्दका अर्थ ही यह है—जिससे अर्थ स्फुटित हो । अर्थका स्फुरण स्पन्दन अथवा कम्पनसे होता है और कम्पन नादसहकारी है । अतः कम्पन शब्दरूप ही है । यह चैतन्य-स्पन्दन, जिससे कि समस्त सूक्ष्म अर्थ, शब्दतन्मात्रा, आकाश, स्थूल शब्द और स्थूल सृष्टिकी अभिव्यक्ति हुई है, शब्द-ब्रह्म अथवा सगुण ब्रह्म ही है । यही मन्त्रका मूल स्वरूप है और इसी अर्थमें मन्त्र, देवता और गुरुका ऐक्य है । यही कारण है कि मन्त्रशास्त्रमें मन्त्रोंको साधारण शब्दोंकी भाँति किसी सामान्य अर्थका बोधक नहीं माना है—जिसके समझ लेनेपर मन्त्रका काम समाप्त हो जाय—बल्कि मन्त्रको समस्त सृष्टिका मूल एवं चैतन्यस्वरूप परमात्मा ही माना है । इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि साधकके चित्तमें अपने मन्त्रके प्रति साधारण शब्द-भाव न रहे, ब्रह्म-भाव जाग्रत् हो जाय, मन्त्र चैतन्यके रूपमें स्फुरित होने लगे और वह उसीमें तल्लीन एवं तन्मय हो जाय ।

इस मन्त्र-चैतन्यकी प्रक्रिया अनेक प्रकारसे शास्त्रोंमें वर्णित हुई है । उन प्रक्रियाओंमेंसे कुछ यहाँ लिखी जाती हैं ।

१. जिन्हें षट्चक्रकी प्रक्रिया ज्ञात है, वे जानते हैं कि षट्चक्रोंके कमल एक प्रकारसे वर्णरूप ही हैं । ये वर्ण सृष्टिक्रमसे समस्त कमलदलोंपर आते हैं और संहारक्रमसे कुण्डलिनी शक्तिके द्वारा अपने मूलस्थानमें विलीन कर दिये जाते हैं । पुनः दिव्यरूपमें उनकी सृष्टि होती है । इसी प्रकार अपने मन्त्रको, जो कि चिच्छक्ति अथवा कुण्डलिनी शक्तिसे ही ध्वनित हो रहा है, वर्णभावसे परे चैतन्यरूपमें स्थित अनुभव करना, षट्चक्रोंका भेदन करके सनातन शब्दरूपमें अर्थात् नाद-विन्दुसंयुक्त चैतन्यसे एक कर देना और पुनः उन्हीं देदीप्यमान, जीवन्त, ज्वलन्त और जाग्रत् चैतन्य वर्णोंकी समष्टिसे निर्मित मन्त्रका साक्षात् करना—यह एक प्रकारका मन्त्र-चैतन्य है ।

२. ऐसा ध्यान करना चाहिये कि मेरे हृदयमें अनाहत चक्रपर मेरे मन्त्रके सब वर्ण स्थित हैं । मूलाधारसे जाग्रत् होकर कुण्डलिनी सुषुम्णा मार्गसे आती है । और मेरे मन्त्रको कण्ठस्थित विशुद्ध चक्रका भेदन करके सहस्रारमें ले जाती है । वहाँ सहस्रदलकमलकी कर्णिकापर नाद-विन्दुसंयुक्त मन्त्रके सम्पूर्ण अक्षर स्थित हैं और चैतन्यरूप मन्त्र-शक्ति स्फुरित हो रही है । मन्त्रका प्रत्येक अक्षर चैतन्य-शक्तिसे ही निर्मित एवं ग्रथित है, ऐसी भावना करके मन्त्र-वर्णोंको नाभिस्थित मणिपूर चक्रमें ले आवे । और वहाँसे वे वाणीमें आते हैं, ऐसा जानकर चिद्रूपसे ही उनका जप करे । यह दूसरे प्रकारका मन्त्र-चैतन्य है ।

३. मन्त्रके पूर्व कामबीज, श्रीबीज और शक्तिबीज तथा अकारसे लेकर क्षकारपर्यन्त समस्त स्वर-वर्णोंको बोले । फिर मन्त्रका उच्चारण करके पीछे भी उन्हीं बीजों और अक्षरोंका उच्चारण करे । इस प्रकार इस मूलविद्याका १०८ बार जप करे । इस प्रयोगसे मन्त्र-चैतन्य हो जाता है । मान लीजिये मन्त्र है 'ऐं', इसको चैतन्य करना है, तो पहले पूर्वोक्त तीनों बीजोंका उच्चारण करना चाहिये—'ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं' और इसके पश्चात् कं खं गं घं ङं चं छं—इस प्रकार क्षं पर्यन्त उच्चारण करना चाहिये । इसके पश्चात् उसी 'ऐं' मन्त्र और पुनः उन्हीं बीज तथा अक्षरोंका १०८ बार जप करनेसे

मन्त्र-चैतन्य हो जाता है एवं जपका फल कोटि-कोटि-गुणित होता है।

४. सूर्यमण्डलमें—बहिःस्थित अथवा अन्तःस्थित द्वादशकलात्मक सूर्यमें अपने मन्त्रका चिन्तन करे और १०८ बार जप करे। सूर्यमण्डलमें अपने सनातन शिवस्वरूप गुरु एवं ब्रह्मरूपा उनकी शक्तिका भी ध्यान करे। इस प्रकार श्रीगुरुदेव, उनकी शक्ति और मन्त्रका चिन्तन करता हुआ जो साधक १०८ बार अपने मन्त्रका जप करता है, उसका मन्त्र-चैतन्य हो जाता है।

५. वरदातन्त्रमें ऐसा उल्लेख मिलता है कि यदि मन्त्रको 'ईं' से सम्पुटित करके जप किया जाय तो स्वयं ही मन्त्र-चैतन्य हो जाता है।

उपर्युक्त भावनाओं, क्रियाओं अथवा तत्त्वज्ञानसे मन्त्र-चैतन्य अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिये। विना मन्त्र-चैतन्यके मन्त्र-सिद्धि होनी बहुत ही कठिन है। इसलिये जपके पूर्व मन्त्र-चैतन्यकी क्रिया कर लेनी चाहिये।

मन्त्रार्थ

मन्त्र साधारण शब्दमात्र नहीं है, उसकी शक्ति दिव्य है; तथापि उसका एक अर्थ तो होता ही है। वह इष्टदेवतासे अभिन्न होनेपर भी देवताके स्वरूपका बोध कराता है, इसलिये इष्टदेवका अनुग्रहविशेष ही मन्त्र है। मन्त्र जिस वस्तुका सङ्केत करता है, साधकको जहाँ ले जाना चाहता है, यदि साधकको भी उस लक्ष्यका पता हो तो यात्रामें—साधनामें और भी सुविधा हो जाती है। यही कारण है कि शास्त्रोंमें मन्त्र-जपके साथ उसके अर्थ-ज्ञानकी भी आवश्यकता बतलायी गयी है और योगदर्शनमें तो मन्त्रार्थभावनाको ही जप कहा गया है। 'मन्त्र' शब्दका धातुगत अर्थ है गुप्त परिभाषण। परन्तु साधकके लिये वह गुप्त नहीं, प्रकट होना चाहिये। श्रीगुरुदेवकी कृपासे कुछ बीज-मन्त्रोंके अर्थ यहाँ प्रकट किये जाते हैं।

हौं—इसको प्रसादबीज कहते हैं। इसमें हकारका अर्थ है 'शिव', औकारका अर्थ है 'सदाशिव' और विन्दु दुःख-हरणके अर्थमें है। इसलिये इस बीजका अर्थ है—शिव और सदाशिवकी कृपा और प्रसादसे मेरे समस्त दुःख नष्ट हो जायँ।

दूं—'द' का अर्थ है दुर्गा, ऊकारका अर्थ है रक्षा और विन्दुका अर्थ है करो। इस प्रकार दुर्गा-बीज अर्थात् 'दूं' का अर्थ हुआ—'हे मा दुर्गे, मेरी रक्षा करो।'

क्रीं-क का अर्थ है काली, 'र'का अर्थ है ब्रह्म, ईकारका अर्थ है महामाया, नादका अर्थ है विश्वमाता और विन्दुका अर्थ है दुःखहरण। इस कालीबीज अथवा कर्पूरबीज 'क्रीं' का अर्थ है—'ब्रह्मशक्तिस्वरूपिणी महामाया कालीमाता मेरे दुःखोंका नाश करें।'

ह्रीं—ह=शिव; र=प्रकृति; ई=महामाया; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। इस शक्तिबीज अथवा मायाबीजका अर्थ है—शिवयुक्त विश्वमाता महामाया शक्ति मेरे दुःखोंका नाश करें।

श्रीं—श=महालक्ष्मी; र=धन-सम्पत्ति; ई=तुष्टि; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। इस लक्ष्मीबीज अथवा श्रीबीजका अर्थ है—धन-सम्पत्ति, तुष्टि-पुष्टिकी अधिष्ठात्री माता महालक्ष्मी मेरे दुःखोंका नाश करें।

ऐं—ऐ=सरस्वती और विन्दु=दुःखहरण। देवी सरस्वती मेरे दुःखोंका नाश करें। यह सरस्वतीबीज है।

क्लीं—क=कृष्ण अथवा काम; ल=इन्द्र; ई=तुष्टि और विन्दु=सुखकर। सर्वश्रेष्ठ मन्मथमन्मथ भगवान् श्रीकृष्ण मुझे सुख और शान्ति दें। यह कृष्णबीज अथवा कामबीज है।

हूं—ह=शिव; ऊ=भैरव; नाद=सर्वोत्कृष्ट और विन्दु=दुःखहरण। सर्वश्रेष्ठ असुर-भयङ्कर भगवान् शिव मेरे दुःखोंका नाश करें। इसको वर्मबीज अथवा कूर्चबीज कहते हैं।

गं—ग=गणेश और विन्दु=दुःखहरण। इस गणेश-बीजका यही अर्थ है कि गणेश भगवान् मेरे दुःखोंको दूर करें।

ग्लौं—ग=गणेश; ल=व्यापक; औ=तेज और विन्दु=दुःखहरण। परम व्यापक ज्योतिर्मय भगवान् गणेश मेरे दुःखोंका नाश करें। यह भी गणेशबीज है।

क्ष्रौं—क्ष=नृसिंह; र=ब्रह्म; औ=ऊर्ध्वदन्त और विन्दु=दुःखहरण। यह नृसिंहबीज है। ब्रह्मस्वरूप ऊर्ध्वदन्त भगवान् नृसिंह दुःखोंसे मेरी रक्षा करें।

स्त्रीं—स=दुर्गोत्तारण; त=तारक; र=मुक्ति; ई=महामाया; नाद=विश्वमाता और विन्दु=दुःखहरण। दुर्गोत्तारिणी,

तारिणी, मुक्तिस्वरूपा, विश्वमाता भगवती महामाया दुःखोंसे मेरी रक्षा करें। यह वधू-बीज है।

इसी प्रकार और भी अनेकों बीज हैं—जैसे आकाशका 'हं', वायुका 'यं', अग्निका 'रं', जलका अथवा अमृतका 'वं', पृथिवीका 'लं' आदि। उन्हें एकाक्षरी कोषसे देख लेना चाहिये। ऐसा कोई अक्षर नहीं है, जो मन्त्र न हो। केवल उनका ठीक-ठीक प्रयोग करनेकी विधि जाननी चाहिये।

परन्तु यह अर्थ तो साधकके लिये भावनाविशेष है। मन्त्रका वास्तविक अर्थ तो मन्त्रप्रतिपादित देवताका साक्षात्कार होनेपर ही मालूम होता है। इसीसे सरस्वतीतन्त्रमें मन्त्रार्थका ज्ञान और साक्षात्कार प्राप्त करनेकी एक विधि बतलायी गयी है। उसमें कहा गया है कि मूलाधारचक्रमें शुद्ध स्फटिकके समान स्वच्छ इष्टदेवता और मन्त्ररूप इष्टविद्याका चिन्तन करना चाहिये। आधे मुहूर्ततक ध्यान करके फिर नाभिचक्रमें इष्टदेवता और इष्टमन्त्रका चिन्तन करना चाहिये। वहाँ उनका वर्ण रक्त होगा। फिर हृदयमें मरकत मणिके समान दोनोंका ध्यान होगा और विशुद्धादि चक्रोंके क्रमसे सहस्रारमें जाकर ब्रह्मस्वरूपमें दोनों एक हो जायँगे, इस स्थितिका अनुभव किया जायगा। इस प्रकार ध्यान करते-करते जब साधक इतना तन्मय हो जायगा कि वह स्वयं मन्त्रदेवतात्मक ब्रह्मसे पृथक् नहीं रह जायगा, तब कहीं इस स्थितिके फलस्वरूप मन्त्रका वास्तविक अर्थ अर्थात् लक्ष्यार्थ प्रकट होगा। वास्तवमें वही मन्त्रार्थ है। परन्तु एकाएक वह बुद्धिगम्य नहीं हो सकता, इसलिये उस तत्त्वतक पहुँचनेकी दृष्टिसे इस प्रकारके अर्थ कहे जाते हैं। भगवान् शंकरके वचन हैं—

ध्यानेन परमेशानि यद्रूपं समुपस्थितम्।
तदेव परमेशानि मन्त्रार्थं विद्धि पार्वति॥

'सहस्रारमें पहुँचकर ब्रह्मस्वरूपका ध्यान करते-करते जो स्वरूप स्वयं प्रकट होता है, वही मन्त्रका अर्थ है। उसी मन्त्रार्थको प्राप्त करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।'

मन्त्रोंकी कुल्लुका

सरस्वती-तन्त्रमें कहा गया है कि मन्त्रोंके जपके पूर्व उसकी कुल्लुकाका ज्ञान भी आवश्यक है। जप प्रारम्भ करनेके समय जिस मन्त्रका जप करना हो, उसकी कुल्लुका सिरपर स्थापित कर लेनी चाहिये अर्थात् मूर्द्धामें उसका न्यास कर लेना चाहिये। कुछ मन्त्रोंकी कुल्लुका यहाँ लिख दी जाती है—

तारा	मन्त्रकी	कुल्लुका—	ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं।
काली	,,	,,	,, क्रीं हूं स्त्रीं ह्रीं फट्।
छिन्नमस्ता	,,	,,	,, श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।
वज्रवैरोचनी	,,	,,	,, श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं ह्रीं स्वाहा हूं।
भैरवी	,,	,,	,, ह स रैं।
त्रिपुरसुन्दरी	,,	,,	,, ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा अथवा क्लीं।
मञ्जुघोषा	,,	,,	ॐ अ र व च ल धीं।
भुवनेश्वरी	,,	,,	,, ह्रीं।
विष्णु	,,	,,	,, नमो नारायणाय।
मातङ्गी	,,	,,	,, ॐ।
धूमावती	,,	,,	,, ह्रीं।
षोडशी	,,	,,	,, स्त्रीं।
लक्ष्मी	,,	,,	,, श्रीं।
सरस्वती	,,	,,	,, ऐं।
अन्नपूर्णा	,,	,,	,, क्लीं।
शिव	,,	,,	,, हौं।

दूसरे देवताओंके अपने-अपने मन्त्र ही कुल्लुका हैं।

मन्त्रसेतु

प्रधानतः मन्त्रोंका सेतु प्रणव ही है। ब्राह्मण और क्षत्रियोंके लिये प्रणव, वैश्योंके लिये फट् और शूद्रोंके लिये ह्रीं सेतु है। जप प्रारम्भ करनेके पूर्व हृदयमें इसका जप कर लेना चाहिये।

महासेतु

जपके पहले महासेतुका जप किया जाता है। इसके जपसे सभी समय और सभी अवस्थाओंमें जप करनेका अधिकार प्राप्त हो जाता है। त्रिपुरसुन्दरीका महासेतु 'ह्रीं', कालिकाका 'क्रीं' तथा ताराका 'हूं' है। अन्य सब देवताओंका महासेतु 'स्त्रीं' है। इसका जप कण्ठदेशस्थित विशुद्धचक्रमें करना चाहिये।

निर्वाण

पहले प्रणव और उसके पश्चात् 'अ' इत्यादि समस्त स्वर-वर्णोंका उच्चारण करके अपना मन्त्र पढ़े। तत्पश्चात् 'ऐं' तथा समस्त स्वर-वर्णोंका और अन्तमें प्रणवका जप करे। इस

प्रकार सम्पुट करके मणिपूरकचक्रमें जप करना चाहिये। इसका नाम निर्वाण है।

मुखशोधन

मन्त्रशास्त्र जाननेवालोंका कहना है कि मन्त्र-जपके पूर्व मुखशोधन अवश्य कर लेना चाहिये। क्योंकि अशुद्ध जिह्वासे जप करनेसे सिद्धिके बदले हानि होती है। जिह्वापर अनेकों प्रकारके मल निवास करते हैं—भोजनका मल, झूठ बोलनेका मल और कलहका मल। इनके शोधनके विना जिह्वा मन्त्रोच्चारणके योग्य नहीं होती। इसलिये शास्त्रोंमें जिह्वाशोधनकी विधि बतलायी है। जिस देवताका मन्त्र जपना हो, उसके अनुसार मुखशोधन-मन्त्रका पहले दस बार जप कर लेना चाहिये। मन्त्र निम्नलिखित हैं—

त्रिपुरसुन्दरी = श्रीं ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ।
श्यामा = क्रीं क्रीं क्रीं ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं।
तारा = ह्रीं ह्रूं ह्रीं।
दुर्गा = ऐं ऐं ऐं।
बगलामुखी = ऐं ह्रीं ऐं।
मातङ्गी = ॐ ऐं ॐ।
लक्ष्मी = श्रीं।
धूमावती = ॐ।
धनदा = ॐ धूं ॐ।
गणेश = ॐ गं।
विष्णु = ॐ हं।

अन्य देवताओंका केवल ॐकार ही मुखशोधनका मन्त्र है। मन्त्र-जपके पहले दस बार इसका जप कर लेना चाहिये।

प्राणयोग

जैसे प्राणयुक्त शरीर ही सचेष्ट होता है, वैसे ही प्राणयुक्त मन्त्र ही सिद्ध होता है। इसकी-विधि केवल इतनी ही है कि माया-बीज अर्थात् 'ह्रीं' से पुटित करके अपने मन्त्रका सात बार जप कर लेना चाहिये।

दीपनी

जैसे दीपकसे घरका अन्धकार दूर होकर उसकी सारी चीजें दीखने लगती हैं, वैसे ही दीपनी क्रियासे मन्त्र प्रकाशमें आ जाता है। यह दीपनी क्रिया केवल इतनी ही है कि मन्त्र-जप प्रारम्भ करनेके पहले मन्त्रको प्रणवसे पुटित करके सात बार जप लेना चाहिये।

मन्त्रके आठ दोष

हरितत्त्वदीधितिमें मन्त्रके आठ दोष गिनाये गये हैं। वे क्रमशः ये हैं—अभक्ति, अक्षरभ्रान्ति, लुप्त, छिन्न, ह्रस्व, दीर्घ, कथन और स्वप्नकथन।

१–मन्त्रको अक्षर और वर्णोंकी समष्टिमात्र समझना अभक्ति है। जैसा कि सिद्धान्तदृष्टिसे है—मन्त्र देवतास्वरूप है, ऐसा अनुभव करके एक-एक मन्त्रके उच्चारणमें परमानन्दका अनुभव करते हुए जो जप करते हैं, उन्हें बहुत ही शीघ्र सिद्धि मिलती है। परन्तु जो मन्त्रको केवल अक्षर-वर्णमात्र समझते हैं अथवा दूसरे मन्त्रको अपने मन्त्रसे श्रेष्ठ समझकर अपने मन्त्रको हीन समझते हैं, उन्हें सिद्धि तो मिलती ही नहीं, विपरीत फल भी मिलता है। इस अभक्तिको दूर करनेके लिये उस मन्त्रका बहुत-बहुत जप करना चाहिये। जप, हवन और तपस्यासे जब मन्त्रकी अधिष्ठात्री देवता प्रसन्न होती है, तब उसमें भक्तिका उदय होता है और भक्तिका उदय होनेपर सिद्धिलाभमें विलम्ब नहीं होता।

२–गुरु अथवा शिष्यके भ्रम-प्रमादसे मन्त्रके अक्षरोंमें उलट-फेर हो जाना अथवा एक-आध अक्षर बढ़ जाना—यह अक्षरभ्रान्ति है। ऐसा हो जानेपर गुरुसे, उनकी अनुपस्थितिमें उनके पुत्रसे अथवा और किसी साधकसे पुनः मन्त्र ग्रहण करना चाहिये।

३–मन्त्रमें किसी वर्णकी न्यूनता 'लुप्त' दोष है। इसके लिये भी पुनः मन्त्रग्रहणकी आवश्यकता है।

४–'छिन्न' दोष उसको कहते हैं जिसमें संयुक्त वर्णोंमेंसे कोई अंश छूट जाता है। यह दोष भी उपर्युक्त पद्धतिसे ही दूर होता है।

५–दीर्घ वर्णके स्थानमें ह्रस्व वर्णका उच्चारण ह्रस्व नामक दोष है।

६–ह्रस्व वर्णके स्थानपर दीर्घ वर्णका उच्चारण करना दीर्घ नामक दोष है।

७–जाग्रत् अवस्थामें अपना मन्त्र किसीको कह देना कथन नामका दोष है।

८–स्वप्नमें अपना मन्त्र किसीको बतला देना स्वप्नकथन नामका दोष है।

५ और ६ दोषका निराकरण तो पूर्वोक्त पद्धतिसे ही होता है, परन्तु ७ और ८ दोष श्रीगुरुदेवके चरणोंमें निवेदन

करनेपर वे जिस प्रायश्चित्तकी व्यवस्था करें, उसके अनुष्ठानसे होता है। इन आठ प्रकारके दोषोंसे बचकर ही मन्त्रजप करना चाहिये, तभी सिद्धि होती है।

मन्त्रसिद्धिके उपाय

श्रद्धा और विधिके साथ मन्त्रानुष्ठान करनेपर भी यदि सिद्धि-लाभ न हो तो पुनः-पुनः उसका अनुष्ठान करना चाहिये। तीन बारके अनुष्ठानसे भी यदि मन्त्र सिद्ध न हो तो निम्नलिखित सात उपाय करने चाहिये। एक साथ ही इन सबको करनेकी आवश्यकता नहीं। एक करनेपर मन्त्र सिद्ध न हो, तब दूसरा करना चाहिये। इनके द्वारा अवश्य ही मन्त्रसिद्धि प्राप्त होती है। वे उपाय निम्नलिखित हैं— १. भ्रामण, २. रोधन, ३. वश्य, ४. पीडन, ५. पोषण, ६. शोषण और ७. दाहन।

१. भ्रामण उसको कहते हैं जिसमें वायु-बीज 'यं' द्वारा मन्त्रको ग्रथित किया जाता है। यन्त्रपर एक वायुबीज और एक मन्त्राक्षर, इस क्रमसे मन्त्रके सम्पूर्ण अक्षरोंको सम्पुटित करना चाहिये। तत्पश्चात् शिलारस, कर्पूर, कुङ्कुम, खस और चन्दनको मिलाकर उसीसे यन्त्रपर पूरा मन्त्र लिखे। लिखित मन्त्रको दूध, घी, मधु और जलमें छोड़कर पूजा, जप और होम करे। ऐसा करके अनुष्ठान करनेसे मन्त्र शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है।

२. वाग्-बीज 'ऐं' के द्वारा मन्त्रको पुटित करके यथासाध्य जप करनेसे रोधन-क्रिया सम्पन्न होती है।

३. अलक्तक, रक्तचन्दन, कुट, धतूरेका बीज और मैनसिल—इन सबको एकमें मिलाकर इसीसे भोजपत्रपर अपना मन्त्र लिखे और उसे गलेमें धारण करे। इसी क्रियाका नाम वश्य अथवा वशीकरण है।

४. अधरोत्तर-योगसे मन्त्रका जप करते हुए अधरोत्तर-स्वरूपिणी देवताकी पूजा करे। इसके पश्चात् अकवनके दूधसे मन्त्र लिखकर पैरसे दबाकर हवन करे। इसका नाम पीडन-क्रिया है।

५. मन्त्रके आदि और अन्तमें 'स्त्रीं' जोड़कर जप करे और गायके दूधसे मन्त्र लिखकर हाथमें पहने। इस क्रियाका नाम पोषण है।

६. वायुबीज 'यं' द्वारा मन्त्रको पुटित करके जप करे और यज्ञिय भस्मसे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें धारण करे। इस क्रियाका नाम शोषण है।

७. मन्त्रके प्रत्येक स्वर-वर्णके साथ अग्निबीज 'रं' जोड़कर जप करे और पलास बीजके तेलसे मन्त्र लिखकर कंधेपर धारण करे। इस प्रक्रियाका नाम दाहन है।

ये सातों प्रयोग एक साथ करनेके लिये नहीं हैं। एकसे मन्त्र सिद्ध न हो तो दूसरा करना चाहिये। इनके अनुष्ठानसे अवश्य ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है। शा०

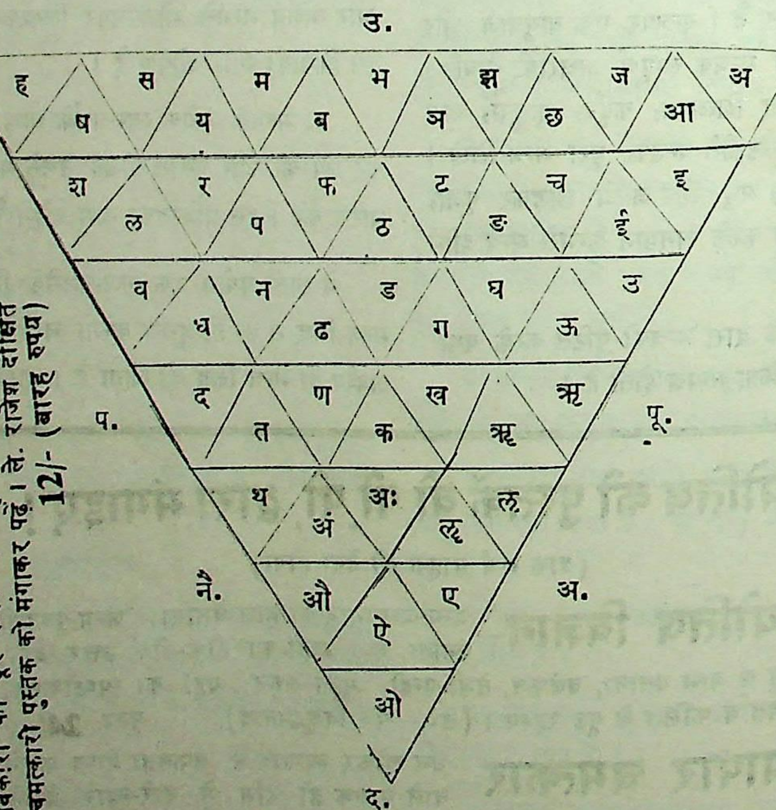
मन्त्रोंके दस संस्कार

कोई भी मन्त्र छिन्न, रुद्ध, शक्तिहीन, पराङ्मुख आदि पचास दोषोंसे बच नहीं सकता। सप्तकोटि मन्त्र हैं, सभी इन दोषोंमें किसी-न-किसी दोषसे दुष्ट पाये जाते हैं। इन दोषोंकी निवृत्तिके लिये मन्त्रके निम्नलिखित दस संस्कार करने चाहिये।

दोषानिमानविज्ञाय यो मन्त्रान् भजते जडः।
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि॥

जनन, दीपन, बोधन, ताडन, अभिषेक, विमलीकरण, जीवन, तर्पण, गोपन और आप्यायन—ये दस संस्कार हैं।

१. भोजपत्रपर गोरोचन, कुङ्कुम, चन्दनादिसे आत्माभिमुख त्रिकोण लिखे, फिर तीनों कोणोंमें छः-छः समान रेखा खींचे। ऐसा करनेपर ४९ त्रिकोण कोष्ठ बनेंगे, उनमें ईशानकोणसे मातृकावर्ण लिखकर देवताका आवाहन-पूजन करके मन्त्रका एक-एक वर्ण उद्धार करके अलग पत्रपर लिखे। ऐसा करनेपर 'जनन' नामका प्रथम संस्कार होगा।



मन्त्रोद्धारके अनन्तर यन्त्रको धोकर शुद्ध जलमें डाल दे।

२. हंसमन्त्रका सम्पुट करनेसे एक हजार जपद्वारा मन्त्रका दूसरा 'दीपन'-संस्कार होता है । यथा—हंसः रामाय नमः सोऽहम् ।

३. हूँ-बीज-सम्पुटित मन्त्रका पाँच हजार जप करनेसे 'बोधन' नामक तीसरा संस्कार होता है । यथा—हूँ रामाय नमः हूँ ।

४. फट्-सम्पुटित मन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'ताड़न' नामक चतुर्थ संस्कार होता है । यथा—फट् रामाय नमः फट् ।

५. भूर्जपत्रपर मन्त्र लिखकर 'रों हंसः ओं' इस मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे और एक हजार बार जपे हुए जलसे अश्वत्थपत्रादिद्वारा मन्त्रका अभिषेक करे । ऐसा करनेपर 'अभिषेक' नामक पाँचवाँ संस्कार होता है ।

६. 'ओं त्रों वषट्' इन वर्णोंसे सम्पुटित मन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'विमलीकरण' नामक छठा संस्कार होता है । यथा—ओं त्रों वषट् रामाय नमः वषट् त्रों ओं ।

७. स्वधा-वषट्-सम्पुटित मूलमन्त्रका एक हजार जप करनेसे 'जीवन' नामक सातवाँ संस्कार होता है । यथा—स्वधा वषट् रामाय नमः वषट् स्वधा ।

८. दुग्ध, जल, घृतसे मूलमन्त्रसे सौ बार तर्पण करना ही 'तर्पण' संस्कार है ।

९. ह्रीं-बीज-सम्पुटित एक हजार जप करनेसे 'गोपन' नामक नवम संस्कार होता है । यथा—ह्रीं रामाय नमः ह्रीं ।

१०. ह्रौं-बीज-सम्पुटित एक हजार जप करनेसे 'आप्यायन' नामक दसवाँ संस्कार होता है । यथा—ह्रौं रामाय नमः ह्रौं १००० ।

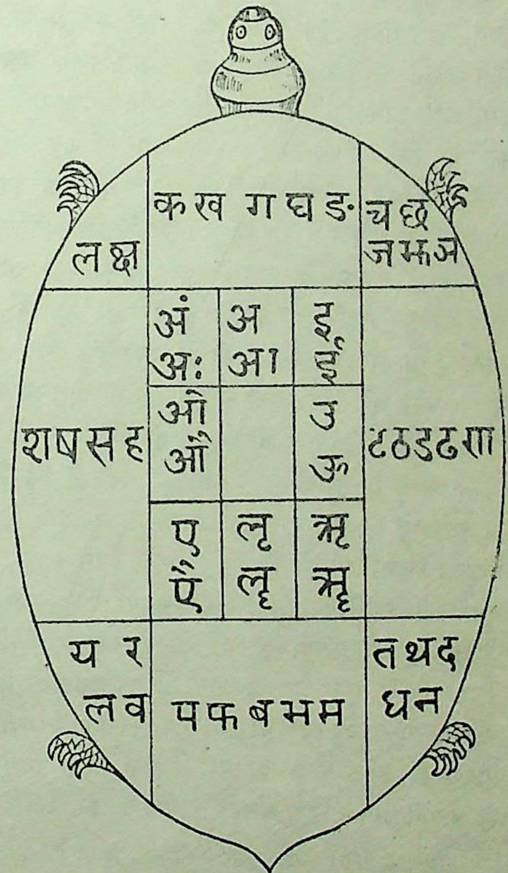
इस प्रकार संस्कृत किया हुआ मन्त्र शीघ्र सिद्धिप्रद होता है ।

प्रसङ्गवशात् दीपस्थान (कूर्मचक्र) का भी निर्णय लिखते हैं । ऐसा कहा गया है—

'दीपस्थानं समाश्रित्य कृतं कर्म फलप्रदम् ।'

जिस स्थानमें, क्षेत्रमें, नगरमें वा गृहमें पुरश्चरण करना हो उसके नौ समान भाग कल्पना करके मध्यभागमें स्वर लिखे और पूर्वादि क्रमसे कवर्गादि लिखे; ईशानकोणमें ल, क्ष लिखे, यथा—

कूर्मचक्र



जिस कोष्ठमें क्षेत्रका पहला अक्षर हो, उस कोष्ठको मुख समझना चाहिये । उसके दोनों ओरके दो कोष्ठ भुजा, फिर दोनों ओरके दो कोष्ठ कुक्षि, फिर दोनों ओरके दो कोष्ठ पैर, शेष कोष्ठ पुच्छ समझने चाहिये । मुखस्थानमें जप करनेसे सिद्धि प्राप्त होती है, भुजामें स्वल्पजीवन, कुक्षिमें उदासीनता, पैरोंमें दुःख और पुच्छमें वध-बन्धनादि पीड़ा होती है ।

माला और उसके संस्कार

साधकोंके लिये माला बड़े महत्त्वकी वस्तु है। माला भगवान्‌के स्मरण और नामजपमें बड़ी ही सहायक होती है, इसलिये साधक उसे अपने प्राणोंके समान प्रिय समझते हैं और उसे गुप्त धनकी भाँति सुरक्षित रखते हैं। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि जपकी संख्या अवश्य होनी चाहिये। इससे उतनी संख्या पूर्ण करनेके लिये सब समय प्रेरणा प्राप्त होती रहती है एवं उत्साह तथा लगनमें किसी प्रकारकी कमी नहीं आने पाती। जो लोग विना संख्याके जप करते हैं, उन्हें इस बातका अनुभव होगा कि जब कभी जप करते-करते मन अन्यत्र चला जाता है, तब मालूम ही नहीं होता कि जप हो रहा था या नहीं या कितने समयतक जप बंद रहा। यह प्रमाद हाथमें माला रहनेपर या संख्यासे जप करनेपर नहीं होता। यदि कभी कहीं मन चला भी जाता है तो मालाका चलना बंद हो जाता है, संख्या आगे नहीं बढ़ती, और यदि माला चलती रही तो जीभ भी अवश्य ही चलती रहेगी और ये दोनों कुछ ही समयमें मनको खींच लानेमें समर्थ हो सकेंगी। जो लोग यह कहते हैं कि मैं जप तो करता हूँ पर मेरा मन कहीं अन्यत्र रहता है, उन्हें यह विश्वास रखना चाहिये कि यदि जीभ और माला दोनों घूमती रहीं—क्योंकि विना कुछ-न-कुछ मन रहे ये घूम नहीं सकतीं तो बाहर घूमनेवाला मन कहीं भी आश्रय न पाकर अपने उसी स्थिर अंशके पास लौट आवेगा, जो मूर्च्छितरूपसे मालाकी गतिमें कारण हो रहा है। मालाके फिरनेमें जो श्रद्धा और विश्वासकी शक्ति काम कर रही है, वह एक दिन व्यक्त हो जायगी और सम्पूर्ण मनको आत्मसात् कर लेगी।

मालाके द्वारा जब इतना काम हो सकता है, तब आदर-पूर्वक उसका विचार न करके यों ही साधारण-सी वस्तु समझ लेना भूल नहीं तो और क्या है? उसे केवल गिननेकी एक तरकीब समझकर अशुद्ध अवस्थामें भी पास रखना, बायें हाथसे गिन लेना, लोगोंको दिखाते फिरना, पैरतक लटकाये रहना, जहाँ कहीं रख देना, जिस किसी चीज़से बना लेना तथा चाहे जिस प्रकार गूँथ लेना सर्वथा वर्जित है। ऐसी बातें समझदारी और श्रद्धाकी कमीसे ही होती हैं, विशेषकर उन लोगोंसे, जिन्होंने किसी गुरुसे विधिपूर्वक दीक्षा न लेकर मालाके विधि-विधानपर विचार ही नहीं किया है। शास्त्रोंमें मालाके सम्बन्धमें बहुत विचार किया गया है। यहाँ संक्षेपसे उसका कुछ थोड़ा-सा दिग्दर्शन कराया जाता है।

माला प्रायः तीन प्रकारकी होती है—करमाला, वर्णमाला और मणिमाला। अँगुलियोंपर जो जप किया जाता है, वह करमालाका जप है। यह दो प्रकारसे होता है—एक तो अँगुलियोंसे ही गिनना और दूसरा अँगुलियोंके पर्वोंपर गिनना। शास्त्रतः दूसरा प्रकार ही स्वीकृत है। इसका नियम यह है कि अनामिकाके मध्यभागसे नीचेकी ओर चले, फिर कनिष्ठाके मूलसे अग्रभागतक; और फिर अनामिका और मध्यमाके अग्रभागपर होकर तर्जनीके मूलतक जाय; इस क्रमसे अनामिकाके दो, कनिष्ठाके तीन, पुनः अनामिका-का एक, मध्यमाका एक और तर्जनीके तीन पर्व—कुल दस संख्या होती है। मध्यमाके दो पर्व सुमेरुके रूपमें छूट जाते हैं। साधारणतः करमालाका यही क्रम है, परन्तु अनुष्ठानभेदसे इसमें अन्तर भी पड़ता है। जैसे शक्तिके अनुष्ठानमें अनामिकाके दो पर्व, कनिष्ठाके तीन, पुनः अनामिकाका अग्रभाग एक, मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका एक मूलपर्व—इस प्रकार दस संख्या पूरी होती है। श्रीविद्यामें इससे भिन्न नियम है। मध्यमाका मूल एक, अनामिकाका मूल एक, कनिष्ठाके तीन, अनामिका और मध्यमाके अग्रभाग एक-एक और तर्जनीके तीन—इस प्रकार दस संख्या पूरी होती है। करमालासे जप करते समय अँगुलियाँ अलग-अलग नहीं होनी चाहिये। थोड़ी-सी हथेली मुड़ी रहनी चाहिये। मेरुका उल्लङ्घन और पर्वोंकी सन्धि (गाँठ) का स्पर्श निषिद्ध है। यह निश्चित है कि जो इतनी सावधानी रखकर जप करेगा, उसका मन अधिकांश अन्यत्र नहीं जायगा। हाथको हृदयके सामने लाकर, अँगुलियोंको कुछ टेढ़ी करके वस्त्रसे उसे ढककर दाहिने हाथसे ही जप करना चाहिये। जप अधिक संख्यामें करना हो तो इन दशकोंको स्मरण नहीं रक्खा जा सकता। इसलिये उसको स्मरण करनेके लिये एक प्रकारकी गोली बनानी चाहिये। लाक्षा, रक्तचन्दन, सिन्दूर और गौके सूखे कंडेको चूर्ण करके सबके मिश्रणसे वह गोली तैयार करनी चाहिये। अक्षत, अँगुली, अन्न, पुष्प, चन्दन अथवा मिट्टीसे उन दशकोंका स्मरण रखना निषिद्ध है। मालाकी गिनती भी इनके द्वारा नहीं करनी चाहिये।

वर्णमालाका अर्थ है—अक्षरोंके द्वारा संख्या करना। यह प्रायः अन्तर्जपमें काममें आती है, परन्तु बहिर्जपमें

भी इसका निषेध नहीं है। वर्णमालाके द्वारा जप करनेका प्रकार यह है कि पहले वर्णमालाका एक अक्षर विन्दु लगाकर उच्चारण कीजिये और फिर मन्त्रका—इस क्रमसे अवर्गके सोलह, कवर्गसे पवर्गतकके पचीस और यवर्गके हकारतक आठ और पुनः एक लकार—इस प्रकार पचासतक गिनते जाइये; फिर लकारसे लौटकर अकारतक आ जाइये—सौकी संख्या पूरी हो जायगी। क्षको सुमेरु मानते हैं। उसका उल्लङ्घन नहीं होना चाहिये। संस्कृतमें त्र और ज्ञ स्वतन्त्र अक्षर नहीं, संयुक्ताक्षर माने जाते हैं। इसलिये उनकी गणना नहीं होती। वर्ग भी सात नहीं, आठ माने जाते हैं। आठवाँ शकारसे प्रारम्भ होता है। इनके द्वारा 'अं कं चं टं तं पं यं शं' यह गणना करके आठ बार और जपना चाहिये—ऐसा करनेसे जपकी संख्या १०८ हो जाती है। ये अक्षर तो मालाके मणि हैं। इनका सूत्र है कुण्डलिनी शक्ति। वह मूलाधारसे आज्ञाचक्र-पर्यन्त सूत्ररूपसे विद्यमान है। उसीमें ये सब स्वर-वर्ण मणिरूपसे गुथे हुए हैं। इन्हींके द्वारा आरोह और अवरोह क्रमसे अर्थात् नीचेसे ऊपर और ऊपरसे नीचे जप करना चाहिये। इस प्रकार जो जप होता है, वह सद्यः सिद्धिप्रद होता है।

जिन्हें अधिक संख्यामें जप करना हो, उन्हें तो मणि-माला रखना अनिवार्य है। मणि (मनिया) पिरोये होनेके कारण इसे मणिमाला कहते हैं। यह माला अनेक वस्तुओंकी होती है। रुद्राक्ष, तुलसी, शङ्ख, पद्मबीज, जीवपुत्रक, मोती, स्फटिक, मणि, रत्न, सुवर्ण, मूँगा, चाँदी, चन्दन और कुशमूल—इन सभीके मनियोंसे माला तैयार की जा सकती है। इनमें वैष्णवोंके लिये तुलसी और स्मार्त, शैव, शाक्त आदिकोंके लिये रुद्राक्ष सर्वोत्तम माना गया है। माला बनानेमें इतना ध्यान रखना चाहिये कि एक चीजकी मालामें दूसरी चीज न लगायी जाय। विभिन्न कामनाओंके अनुसार भी मालाओंमें भेद होता है और देवताओंके अनुसार भी। उनका विचार कर लेना चाहिये। मालाके मणि (दाने) छोटे-बड़े न हों। एक सौ आठ दानोंकी माला सब प्रकारके जपोंमें काम आती है। ब्राह्मण-कन्याओंके द्वारा निर्मित सूतसे माला बनायी जाय तो सर्वोत्तम है। शान्तिकर्ममें श्वेत, वशीकरणमें रक्त, अभिचारमें कृष्ण और मोक्ष तथा ऐश्वर्यके लिये रेशमी सूतकी माला विशेष उपयुक्त है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंके लिये क्रमशः श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्णके सूत्र श्रेष्ठ हैं। रक्त वर्णका प्रयोग सब वर्णोंके लोग सब प्रकारके अनुष्ठानोंमें कर सकते हैं। सूतको तिगुना करके फिरसे तिगुना कर देना चाहिये। प्रत्येक मणिको गूँथते समय प्रणवके साथ एक-एक अक्षरका उच्चारण करते जाना चाहिये—जैसे 'ॐ अं' कहकर प्रथम मणि तो 'ॐ आं' कहकर दूसरी मणि। बीचमें जो गाँठ देते हैं, उसके सम्बन्धमें विकल्प है। चाहे तो गाँठ दें और चाहे तो न दें। दोनों ही बातें ठीक हैं। माला गूँथनेका मन्त्र अपना इष्टमन्त्र भी है। अन्तमें ब्रह्मग्रन्थि देकर सुमेरु गूँथे और पुनः ग्रन्थि लगावे। स्वर्ण आदिके सूत्रमें भी माला पिरोई जा सकती है। रुद्राक्षके दानोंमें मुख और पुच्छका भेद भी होता है। मुख कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ नीचा। पोहनेके समय यह ध्यान रखना चाहिये कि दानोंका मुख परस्परमें मिलता जाय अथवा पुच्छ। गाँठ देनी हो तो तीन फेरेकी अथवा ढाई फेरेकी लगानी चाहिये। ब्रह्मग्रन्थि भी लगा सकते हैं। इस प्रकार मालाका निर्माण करके उसका संस्कार करना चाहिये।

पीपलके नौ पत्ते लाकर एकको बीचमें और आठको अगल-बगल इस ढंगसे रक्खे कि वह अष्टदल कमल-सा मालूम हो। बीचवाले पत्तेपर माला रक्खे और 'ॐ अं आं' इत्यादिसे लेकर 'हं क्षं' पर्यन्त समस्त स्वर-वर्णोंका उच्चारण करके पञ्चगव्यके द्वारा उसका क्षालन करे और फिर 'सद्योजात' मन्त्र पढ़कर पवित्र जलसे उसको धो डाले। 'सद्योजात' मन्त्र यह है—

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।

इसके पश्चात् वामदेवमन्त्रसे चन्दन, अगर, गन्ध आदिके द्वारा घर्षण करे। वामदेवमन्त्र निम्नलिखित है—

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः।

बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।

तत्पश्चात् अघोरमन्त्रसे धूपदान करे।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।

यह अघोरमन्त्र है। तदनन्तर तत्पुरुषमन्त्रसे लेपन करे।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

इसके पश्चात् एक-एक दानेपर एक-एक बार अथवा सौ-सौ बार ईशानमन्त्रका जप करना चाहिये। ईशानमन्त्र यह है—

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

फिर मालामें अपने इष्टदेवताकी प्राण-प्रतिष्ठा करे। प्राण-प्रतिष्ठाकी विधि पूजाके प्रकरणमें देखनी चाहिये। तदनन्तर इष्टमन्त्रसे सविधि पूजा करके प्रार्थना करनी चाहिये—

माले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

यदि मालामें शक्तिकी प्रतिष्ठा की हो तो इस प्रार्थनाके पहले 'ह्रीं' जोड़ लेना चाहिये। और रक्तवर्णके पुष्पसे पूजा करनी चाहिये। वैष्णवोंके लिये माला-पूजाका मन्त्र है—

'ॐ ऐं श्रीं अक्षमालायै नमः।'

अकारादि क्षकारान्त प्रत्येक वर्णसे पृथक्-पृथक् पुटित करके अपने इष्टमन्त्रका एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। इसके पश्चात् एक सौ आठ आहुति हवन करे अथवा दो सौ सोलह बार इष्टमन्त्रका जप कर ले। उस मालापर दूसरे मन्त्रका जप न करे। स्वयं हिले नहीं और मालाको हिलावे नहीं। आवाज़ नहीं होनी चाहिये और हाथसे छूटकर गिरनी नहीं चाहिये। मालाका टूटना मृत्यु ही है—ऐसा समझकर निरन्तर सावधान रहना चाहिये। उसे बड़े आदरसे पवित्र स्थानमें रखना चाहिये और प्रार्थना करनी चाहिये—

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते॥

ऐसी प्रार्थना करके मालाको गुप्त रखना चाहिये। अङ्गुष्ठ और मध्यमाके द्वारा जप करना चाहिये और तर्जनीसे मालाका कभी स्पर्श नहीं करना चाहिये। सूत पुराना हो जाय तो फिर गूँथकर सौ बार जप करना चाहिये। प्रमादवश हाथसे गिर पड़े अथवा निषिद्ध स्पर्श हो जाय तो भी सौ बार जप करना चाहिये। टूट जानेपर फिर गूँथकर पूर्ववत् सौ बार जप करना चाहिये। मालाके इन नियमोंमें सावधानी बर्तनेसे शीघ्र ही सिद्धि-लाभ होगा, इसमें सन्देह नहीं।

मालाके संस्कारकी एक और प्रक्रिया है जिसका, आगमकल्पद्रुममें उल्लेख हुआ है। भूतशुद्धि आदि करके मालामें विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य और गणेशका आवाहन करके पूजा करनी चाहिये। फिर मालाको पञ्चगव्यमें डालकर 'ॐ हे सौः' इस मन्त्रसे निकालकर उसको सोनेके पात्रमें रक्खे। उसके ऊपर पञ्चामृतके नियमसे दूध, दही, घी, मधु और शीतल जलसे स्नान करावे। इसके पश्चात् चन्दन, कस्तूरी और कुङ्कुम आदि सुगन्धद्रव्यसे मालाको लिप्त करे और 'हे सौः' इस मन्त्रका एक सौ आठ बार जप करे। इसके पश्चात् मालामें नवग्रह, दिक्पाल और गुरुदेवकी पूजा करके उस मालाको ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकारकी माला ही प्रत्येक क्षण भगवान्का स्मरण दिलाती रहती है। साधकको मालाकी आवश्यकता, उसके भेद, निर्माणपद्धति, संस्कार और प्रायश्चित्त जानकर उनके अनुसार अनुष्ठान करना चाहिये।

पूजाके विविध उपचार

संक्षेप और विस्तारके भेदसे अनेकों प्रकारके उपचार हैं—चौंसठ, अठारह, सोलह, दस और पाँच।

६४ उपचार

देवीकी पूजाके चौंसठ उपचार यहाँ लिखे जाते हैं। इष्टमन्त्रसे इनका समर्पण होता है। मानस-पूजामें इनकी भावना होती है। वाग्बीज, मायाबीज और लक्ष्मीबीजके साथ भी इनका समर्पण होता है—जैसे पाद्यके समय 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पाद्यं कल्पयामि नमः'। प्रत्येक उपचारका नाम जोड़कर यही मन्त्र बोल सकते हैं। उपचारोंके नाम ये हैं—१. पाद्यम्, २. अर्घ्यम्, ३. आसनम्, ४. सुगन्धितैलाभ्यङ्गम्, ५. मज्जनशालाप्रवेशनम्, ६. मज्जनमणिपीठोपवेशनम्, ७. दिव्यस्नानीयम्, ८. उद्वर्तनम्, ९. उष्णोदकस्नानम्, १०. कनककलशस्थितसर्वतीर्थाभिषेकम्, ११. धौतवस्त्रपरिमार्जनम्, १२. अरुणदुकूलपरिधानम्, १३. अरुणदुकूलोत्तरीयम्, १४. आलेपमण्डपप्रवेशनम्, १५. आलेपमणिपीठोपवेशनम्, १६. चन्दनागुरुकुङ्कुममृगमदकर्पूरकस्तूरीरोचनादिव्यगन्धसर्वाङ्गानुलेपनम्, १७. केशभारस्य कालागुरुधूपमल्लिकामालतीजातीचम्पकाशोकशतपत्रपूगकुहरीपुन्नागकह्लारयूथीसर्वर्तुकुसुममालाभूषणम्, १८. भूषणमण्डपप्रवेशनम्, १९. भूषणमणिपीठोपवेशनम्, २०. नवरत्नमुकुटम्, २१. चन्द्रशकलम्, २२. सीमन्तसिन्दूरम्, २३. तिलकरत्नम्, २४. कालाञ्जनम्, २५. कर्णपालीयुगलम्, २६. नासाभरणम्, २७. अधरयावकम्, २८. ग्रथनभूषणम्, २९. कनकचित्रपदकम्, ३०. महापदकम्, ३१. मुक्तावलीम्, ३२. एकावलीम्, ३३. देवच्छन्दकम्, ३४. केयूरयुगलचतुष्कम्, ३५. वलयावलीम्, ३६. ऊर्मिकावलीम्, ३७. काञ्चीदामकटिसूत्रम्, ३८. शोभाख्याभरणम्, ३९. पादकटकयुगलम्, ४०. रत्ननूपुरम्, ४१. पादाङ्गुलीयकम्, ४२. एककरे पाशम्, ४३. अन्यकरे अङ्कुशम्, ४४. इतरकरेषु पुण्ड्रेक्षुचापम्, ४५. अपरकरे पुष्पबाणान्, ४६. श्रीमन्माणिक्यपादुकाम्, ४७. स्वसमानवेशाष्टावरणदेवताभिः सह सिंहासनारोहणम्, ४८. कामेश्वरपर्यङ्कोपवेशनम्, ४९. अमृताशनम्, ५०. आचमनीयम्, ५१. कर्पूरवटिकाम्, ५२. आनन्दोल्लासविलासहासम्, ५३. मङ्गलारात्रिकम्, ५४. श्वेतच्छत्रम्, ५५. चामरयुगलम्, ५६. दर्पणम्, ५७. तालवृन्तम्, ५८. गन्धम्, ५९. पुष्पम्, ६०. धूपम्, ६१. दीपम्, ६२. नैवेद्यम्, ६३. पानम्, ६४. पुनराचमनीयम्; इसके पश्चात् ताम्बूलम्, नमस्कारम्—इत्यादि; इन सबके साथ पूर्वोक्त बीज पहले जोड़कर पीछे 'कल्पयामि नमः' कहना चाहिये। मानस पूजामें तो ये उपचार ही पूरा ध्यान करा देते हैं। बाह्य-पूजामें उपचारोंका अभाव होनेपर भी स्थिरभावसे इन मन्त्रोंका पाठ कर लेनेपर पूजाका ही फल मिलता है।

१८ उपचार

अष्टादशोपचार ये हैं—१. आसन, २. स्वागत, ३. पाद्य, ४. अर्घ्य, ५. आचमनीय, ६. स्नानीय, ७. वस्त्र, ८. यज्ञोपवीत, ९. भूषण, १०. गन्ध, ११. पुष्प, १२. धूप, १३. दीप, १४. अन्न, १५. दर्पण, १६. माल्य, १७. अनुलेपन और १८. नमस्कार।

१६ उपचार

षोडशोपचार ये हैं—१. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमनीय, ४. स्नानीय, ५. वस्त्र, ६. आभूषण, ७. गन्ध, ८. पुष्प, ९. धूप, १०. दीप, ११. नैवेद्य, १२. आचमनीय, १३. ताम्बूल, १४. स्तवपाठ, १५. तर्पण और १६. नमस्कार।

१० उपचार

दशोपचार ये हैं—१. पाद्य, २. अर्घ्य, ३. आचमनीय, ४. मधुपर्क, ५. आचमनीय, ६. गन्ध, ७. पुष्प, ८. धूप, ९. दीप और १०. नैवेद्य।

५ उपचार

पञ्चोपचार ये हैं—१. गन्ध, २. पुष्प, ३. धूप, ४. दीप और ५. नैवेद्य।

आवश्यक बातें

आसन-समर्पणमें आसनके ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिये। छः पुष्पोंसे स्वागत करना चाहिये। पाद्यमें चार पल जल और उसमें श्यामा घास, दूब, कमल और अपराजिता देनी चाहिये। अर्घ्यमें चार पल जल और गन्ध, पुष्प, अक्षत, यव, दूब, चार तिल, कुशाका अग्रभाग तथा श्वेत सरसो देना चाहिये। आचमनीयमें छः पल जल और उसमें जायफल, लवङ्ग और कङ्कोलका चूर्ण देना चाहिये। मधुपर्कमें कांस्य-

पात्रस्थित घृत, मधु और दधि देना चाहिये। मधुपर्कके पश्चात्वाले आचमनमें केवल एक पल विशुद्ध जल ही आवश्यक होता है। स्नानके लिये पचास पल जलका विधान है। वस्त्र बारह अङ्गुलसे ज्यादा, नवीन और जोड़ा होना चाहिये। आभरण स्वर्णनिर्मित हों और उनमें मोती आदि जड़े हों। गन्ध-द्रव्यमें चन्दन, अगर, कर्पूर आदि एकमें मिला लिये गये हों, एक पलके लगभग उनका परिमाण कहा गया है। पुष्प पचाससे अधिक हों, अनेक रङ्गके हों। धूप गुग्गुलका हो और कांस्यपात्रमें निवेदन किया जाय। नैवेद्यमें एक पुरुषके भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिये। चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय—चारों प्रकारकी सामग्री हो। दीप कपासकी वत्तीसे कर्पूर आदि मिलाकर बनाया जाय। बत्तीकी लंबाई चार अङ्गुलके लगभग हो और दृढ़ हो। दीपकके साथ शिलापिष्टका भी उपयोग करना चाहिये। इसीको श्री अथवा आक कहते हैं, जो आरतीके समय सात बार घुमाया जाता है। दूर्वा और अक्षतकी संख्या सौसे अधिक समझनी चाहिये। एक-एक सामग्री अलग-अलग पात्रोंमें रक्खी जाय; वे पात्र सोने, चाँदी, ताँबे, पीतल या मिट्टीके हों। अपनी शक्तिके अनुसार ही करना चाहिये। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिये चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति-सामर्थ्य-के अनुसार जो मिल सकते हों, उनके प्रयोगमें आलस्य, प्रमाद और सङ्कीर्णता नहीं करनी चाहिये।

पूजाके मन्त्र

भगवान् विष्णु, कृष्ण आदिकी पूजामें जिन मन्त्रोंका उपयोग होता है, वे लिखे जाते हैं—

आसन

सर्वान्तर्यामिणे देव सर्वबीजमयं ततः।
आत्मस्थाय परं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम्॥

'हे देव, आप सबके अन्तर्यामी और आत्मरूपसे स्थित हैं; इसलिये आपको मैं सर्वबीजस्वरूप उत्तम और शुद्ध आसन समर्पित कर रहा हूँ।'

स्वागत

यस्य दर्शनमिच्छन्ति देवा ब्रह्महरादयः।
कृपया देवदेवेश मदग्रे सन्निधीभव॥
तस्य ते परमेशान स्वागतं स्वागतं प्रभो।

'ब्रह्मा, शिव आदि जिसके दर्शनके लिये लालायित रहते हैं, हे देवदेवेश, वे ही सबके आराध्य आप दया करके मेरे सम्मुख आवें। परमेश्वर, प्रभो, आपका स्वागत है, स्वागत है।'

आवाहन

कृतार्थोऽनुगृहीतोऽस्मि सफलं जीवितं तु मे।
यदागतोऽसि देवेश चिदानन्दमयाव्यय॥
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा वैकल्यात् साधनस्य च।
यदपूर्णं भवेत् कृत्यं तथाप्यभिमुखो भव॥

'हे विज्ञानानन्दघन, हे अविनाशी, हे देवेश, आपने जो पदार्पण किया, इससे मैं कृतार्थ हो गया; बड़ा अनुग्रह किया आपने। मेरा जीवन सफल हो गया। अज्ञान, असावधानी और साधनोंकी कमीके कारण मैं आपकी पूजा पूर्णतः नहीं कर सकता तथापि आप कृपा करके मेरे सामने रहें।'

पाद्य

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः।
तस्मै ते परमेशान पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

'जिनकी विन्दुमात्र भक्तिका संस्पर्श हो जानेसे हृदय परमानन्द-धाराका उद्गम बन जाता है, हे परमेश्वर! आपके उसी विशुद्ध स्वरूपको मैं पाद्य समर्पित कर रहा हूँ।'

आचमनीय

देवानामपि देवाय देवानां देवतात्मने।
आचामं कल्पयामीश सुधायाः स्रुतिहेतवे॥

'हे ईश, आप समस्त देवताओंके भी देवता—आराध्य-देव हैं। और तो क्या, स्वयं आप ही देवताओंमें देवत्वरूपसे प्रकट हैं। आप सुधाके मूलस्रोत हैं, अतः आपसे सुधाक्षरणके लिये मैं आचमनीय समर्पित कर रहा हूँ।'

अर्घ्य

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
तापत्रयविमोक्षाय तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

'हे प्रभो! आपका अर्घ्य तीनों तापोंको हरनेवाला, दिव्य एवं परमानन्दस्वरूप है; इसलिये तीनों तापोंसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिये मैं आपको अर्घ्य समर्पित करता हूँ।'

मधुपर्क

सर्वकल्मषहीनाय परिपूर्णसुधात्मकम् ।
मधुपर्कमिमं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥

'हे देव, आप समस्त पापों और उनके कारणोंसे मुक्त हैं; आपके लिये मैं यह परिपूर्णसुधात्मक मधुपर्क समर्पित करता हूँ । आप अनुग्रह करके इसे स्वीकार करें ।'

पुनराचमनीय

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ।
शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥

'जिसके स्मरण करनेमात्रसे उच्छिष्ट अथवा अपवित्र भी पवित्र हो जाता है, वही आप हैं । आपके लिये मैं आचमन समर्पित करता हूँ ।'

स्नान

परमानन्दबोधाब्धिनिमग्ननिजमूर्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते ॥

'हे ईश, आप अपने परमानन्दस्वरूप ज्ञान-समुद्रमें स्वयं निमग्न हैं; आपके लिये साङ्गोपाङ्ग स्नानार्थ जल मैं समर्पित करता हूँ ।'

वस्त्र

मायाचित्रपटाच्छन्ननिजगुह्योरुतेजसे ।
निरावरणविज्ञान वासस्ते कल्पयाम्यहम् ॥

'आपने अपना परमज्योतिर्मय स्वरूप मायाके विचित्र वस्त्रसे ढक रक्खा है, वास्तवमें आप आवरणरहित विज्ञान-स्वरूप हैं । ऐसे आपके लिये, हे देव, मैं वस्त्र समर्पित कर रहा हूँ ।'

उत्तरीय

यमाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा ।
तस्मै ते परमेशाय कल्पयाम्युत्तरीयकम् ॥

'जिसका आश्रय करके महामाया जगत्को मोहित करती है, आप वे ही परमेश्वर हैं । आपके लिये मैं उत्तरीय समर्पित करता हूँ ।'

यज्ञोपवीत

यस्य शक्तित्रयेणेदं सम्प्रोतमखिलं जगत् ।
यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ॥

'जिसकी सृष्टि, स्थिति और प्रलयरूप तीन शक्तियोंके द्वारा यह जगत् गुँथा हुआ है, जो स्वयं यज्ञसूत्र हैं, उन्हींके लिये मैं यज्ञोपवीत समर्पित कर रहा हूँ ।'

आभूषण

स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते ।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥

'हे सुरपूजित, आपका एक-एक अङ्ग स्वभावसे ही परम सुन्दर, परम मनोहर है, आप स्वयं समस्त शक्तियोंके आश्रय हैं । आपके लिये मैं विचित्र भूषण समर्पित करता हूँ ।'

जल

समस्तदेवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अखण्डानन्दसम्पूर्ण गृहाण जलमुत्तमम् ॥

'हे देवदेवेश्वर, हे अनन्त आनन्दसे परिपूर्ण, आपके लिये मैं सबको तृप्ति देनेवाला यह उत्तम जल समर्पित करता हूँ, कृपया इसे स्वीकार करें ।'

गन्ध

परमानन्दसौरभ्यपरिपूर्णदिगन्तरम् ।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वर ॥

'हे परमेश्वर, जिसकी परमानन्दमय सुरभिसे दिग्-दिगन्त परिपूर्ण हो रहे हैं—आपके लिये वही परम गन्ध मैं समर्पित करता हूँ । आप कृपा करके स्वीकार करें ।'

पुष्प

तुरीयं गुणसम्पन्नं नानागुणमनोहरम् ।
आनन्दसौरभं पुष्पं गृह्यतामिदमुत्तमम् ॥

'त्रिगुणातीत, गुणयुक्त, अनेक गुणोंसे मनोहर, आनन्दसौरभसम्पन्न, यह उत्तम पुष्प मैं आपको समर्पित करता हूँ; इसे स्वीकार करें ।'

धूप

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यः सुमनोहरः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

'वनस्पतियोंके रससे संगृहीत, दिव्य, सुगन्धपूर्ण, निखिल देवताओंके आघ्राण करने योग्य यह सुमनोहर धूप मैं आपको समर्पित करता हूँ; कृपया स्वीकार करें ।'

दीप

सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

'परम तेजसे सम्पन्न, भीतर और बाहर ज्योतिर्मय, सब ओरसे अन्धकारको दूर करनेवाला जो उत्तम आलोकमय दीपक है, वह आप स्वीकार करें ।'

नैवेद्य

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेकभक्षणम् ।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥

'हे देवेश, पवित्र पात्रमें बनाये हुए, अनेक प्रकारकी खाद्य-सामग्रियोंसे युक्त यह उत्तम नैवेद्य अनुचरोंके सहित आपकी सेवामें समर्पित करता हूँ; आप कृपा करके इसे स्वीकार करें ।'

भोजनके पश्चात् जल आदि पूर्वोक्त मन्त्रोंसे ही देने चाहिये। आगेकी विधि मन्त्रपुरश्चरणके प्रसङ्गमें देखनी चाहिये ।

पूजाके पाँच प्रकार

शास्त्रोंमें पूजाके पाँच प्रकार बताये गये हैं—अभिगमन, उपादान, योग, स्वाध्याय और इज्या । देवताके स्थानको साफ करना, लीपना, निर्माल्य हटाना—ये सब कर्म अभिगमनके अन्तर्गत हैं । गन्ध, पुष्प आदि पूजा-सामग्रीका संग्रह उपादान है । इष्टदेवकी आत्मरूपसे भावना करना योग है । मन्त्रार्थका अनुसन्धान करते हुए जप करना, सूक्त, स्तोत्र आदिका पाठ करना, गुण, नाम, लीला आदिका कीर्तन करना, वेदान्तशास्त्र आदिका अभ्यास करना—ये सब स्वाध्याय हैं । उपचारोंके द्वारा अपने आराध्यदेवकी पूजा इज्या है । ये पाँच प्रकारकी पूजाएँ क्रमशः सार्ष्टि, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य और सारूप्य मुक्तिको देनेवाली हैं ।

नवग्रहोंकी उपासना

हिंदूजातिमें प्राचीन कालसे जो अनेकों प्रकारकी धारणाएँ या प्रथाएँ प्रचलित हैं; उनमें नवग्रहोंकी उपासना भी है। यह केवल रूढिमात्र अथवा प्रथामात्र नहीं है, इसके मूलमें हमलोगोंके शरीरसे नवग्रहोंका सम्बन्ध और ज्यौतिष-की दृष्टिसे सुपुष्ट विचार भी है। यह उक्ति प्रायः सर्वत्र प्रसिद्ध है कि 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे।' अर्थात् जो कुछ एक शरीरमें है, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें है और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें है, वह एक शरीरमें भी है। हिंदू-शास्त्रोंके अनुसार यह सृष्टि केवल उतनी ही नहीं है, जितनी हमलोग देखते हैं। इन्द्रियोंसे जो कुछ देखा या सुना जाता है, वह तो बहुत ही स्थूल है। यन्त्रोंका तत्त्वविश्लेषण केवल जडतत्त्वोंतक ही सीमित है, वह कभी चेतनाका साक्षात्कार नहीं कर सकता। क्योंकि वे यन्त्र स्वयं जड हैं। प्रत्येक स्थूल वस्तुके एक-एक अधिष्ठातृदेवता हैं, यह बात युक्ति, अनुभव और शास्त्रसे सिद्ध है। जैसे स्थूल नेत्रगोलक, जिन्हें हम देखते हैं, नेत्रके अधिभूत रूप हैं। नेत्र-इन्द्रिय अध्यात्म है, जो कि इस स्थूल गोलकके द्वारा देखती है। इस दर्शनक्रियाका सहायक जो सूर्य है, वह नेत्रका अधिदैव रूप है। नेत्र-इन्द्रिय नेत्रगोलकके द्वारा स्थूल रूपको देखे, यह सूर्यकी शक्तिकी सहायता लिये बिना असम्भव है। इसलिये नेत्रके अधिष्ठातृदेवता सूर्य हैं। सूर्यके भी तीन रूप हैं। जिस सूर्यको हमलोग देखते हैं, वह सूर्यका स्थूल अथवा अधिभूत रूप है। दृश्यमान सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका नाम सूर्य देवता है। उन्हींका रथ सात घोड़ोंका है और अरुण सारथि हैं। शनैश्चर, यमराज आदि उनकी सन्तान हैं। और भी देवताके रूपमें सूर्यका जितना वर्णन आता है, वह सब इस दृश्यमान सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका ही है। सूर्यका अध्यात्म रूप है, समष्टिका नेत्र होना। इन तीन रूपोंको ध्यानमें रखनेसे ही शास्त्रोंमें जो सूर्यका वर्णन हुआ है, वह समझमें आ सकता है। यह बात सभी देवताओंके सम्बन्धमें समझ लेनी चाहिये।

अब यह बात सिद्धान्तरूपसे मान ली गयी है कि यह सम्पूर्ण स्थूल जगत् सूक्ष्म जगत्का ही प्रकाशमात्र है। समष्टिके मनमें जो दर्शनकी इच्छा है, वही सूर्यके रूपमें प्रकट हुई है। जीवके मनमें जो दर्शनकी इच्छा है, वह नेत्र-इन्द्रियके रूपमें प्रकट हुई है। इन दोनोंके अभिमानी देवता हैं सूर्य, इसलिये नेत्र-इन्द्रियका सीधा सम्बन्ध सूर्यसे है। सूर्यकी प्रत्येक स्थितिका प्रभाव इस पृथ्वीपर और इसपर रहनेवाले प्राणियोंपर पड़ता है। जैसे यह स्थूल शरीर ही जीव नहीं है, उससे भिन्न है, वैसे ही यह दृश्यमान पृथ्वी ही पृथ्वी देवता नहीं है, यह तो पृथ्वी देवताका शरीर है। इन सब स्थूलताओंका निर्माण सूक्ष्म जगत्की दृष्टिसे ही हुआ है। सूक्ष्म ही स्थूल बना है; इसलिये जो लोग सूक्ष्म जगत्पर विचार नहीं करते, केवल स्थूल जगत्में ही अपनी दृष्टिको आबद्ध रखते हैं, वे ठीक-ठीक इसका मर्म नहीं समझ पाते। जैसे पृथ्वी, समुद्र, चन्द्रमण्डल, विद्युत्, उष्णता आदिसे सूर्यका साक्षात् सम्बन्ध है, वैसे ही उन पदार्थोंसे बने हुए मानव-शरीरके साथ भी है। प्रत्येक शरीरकी उत्पत्तिके समय, चाहे वह गर्भाधानका हो या भूमिष्ठ होनेका हो, सूर्य और इतर ग्रहोंका पृथ्वीके साथ जैसा सम्बन्ध होता है और ग्रहचार-पद्धतिके अनुसार उस प्रदेशमें, उस प्रकृतिके शरीरपर उनका प्रभाव पड़ता है, वह जीवनभर किसी-न-किसी रूपमें चलता ही रहता है। ग्रहमण्डलकी स्थिति, देशविशेषपर उनका विशेष प्रभाव और देहगत उपादानोंकी विभिन्नताके कारण प्रत्येक शरीरका ग्रहोंके साथ भिन्न सम्बन्ध होता है और उसीके अनुसार फल भी होता है। प्रत्येक ग्रहके साथ पृथ्वीका और उसपर रहनेवाली वस्तुओंका जो महान् आकर्षण-विकर्षण चल रहा है; उसके प्रभावसे कोई बच नहीं सकता और जगत्के परिवर्तनोंमें, अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियोंमें, सुख-दुःखके निमित्तोंमें यह महान् शक्ति भी एक कारण है—इस सत्यको अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसीसे योग-सम्पन्न महर्षियोंने अपनी अन्तर्दृष्टिसे इस तत्त्वका साक्षात्कार करके जीवोंके हितार्थ इस ज्योतिर्विद्याको प्रकट किया है।

संसारमें जो घटनाएँ घटती हैं, उनके अनेकों कारण बतलाये जाते हैं—जीवका प्रारब्ध अथवा पुरुषार्थ, समष्टि-कर्ता ईश्वरकी इच्छा अथवा प्रकृतिका नियमित प्रवाह। इन घटनाओंके साथ ग्रहोंके आकर्षण-विकर्षणका क्या सम्बन्ध है? उपर्युक्त बलवान् कारणोंके रहते हुए जगत्के कार्योंमें वे क्या नवीनता ला सकते हैं? यह प्रश्न उठानेके पहले उन सबके एकत्वका विचार कर लेना चाहिये।

समष्टिकर्ताकी इच्छा ही प्रकृतिका प्रवाह है। प्रकृतिके सात्त्विक, राजसिक और तामसिक प्रवाहोंके अनुसार ही

ग्रहोंकी निश्चित गति और जीवोंका प्रारब्ध है। इन गति और प्रारब्धोंके अनुसार ही पुरुषार्थ और फल होते हैं। शरीरकी उत्पत्ति प्रारब्धके अनुसार होती है; जिसका जैसा कर्म, उसका वैसा शरीर। जिस शरीरमें प्रारब्धके अनुसार जैसी कर्मवासनाएँ रहती हैं, उस जीवनमें जैसी घटनाएँ घटनेवाली होती हैं, उसीके अनुसार उस शरीरके जन्मके समय वैसी ही ग्रहस्थिति रहती है। यों भी कह सकते हैं कि वैसी ग्रहस्थितिमें ही उसका जन्म होता है अथवा ग्रहोंकी एक स्थितिमें रहनेपर भी भिन्न-भिन्न देश और शरीरके भेदसे उनका भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है इसीसे ज्यौतिष-शास्त्रमें कहा गया है कि ग्रह किसी नवीन फलका विधान नहीं करते, बल्कि प्रारब्धके अनुसार घटनेवाली घटनाको पहले ही सूचित कर देते हैं—'ग्रहा वै कर्मसूचकाः।' ग्रहोंकी स्थिति, गति, वक्रता, अतिचार आदिको जाननेवाला ज्यौतिषी किसी भी व्यक्तिके जन्म-समयको ठीक-ठीक जानकर बतला सकता है कि इसके भविष्य जीवनमें कौन-कौन-सी घटनाएँ घटित होनेवाली हैं। स्थूल कर्मचक्रके अनुसार केवल इतनी ही बात है, गणितकी सत्यताको इस-रूपमें पाश्चात्य वैज्ञानिकोंने भी स्वीकार कर लिया है। पाश्चात्य देशोंमें ग्रहोंकी स्थितिका अध्ययन करके गणितके आधारपर फलित ज्यौतिष उसी प्रकार प्रतिष्ठित किया गया है, जैसे हिंदूशास्त्रोंमें। परन्तु यह बात इतनेसे ही समाप्त नहीं हो जाती, इसके आगे और भी कुछ है।

हिंदुओंका देवता-विज्ञान इन स्थूल कार्यकारण-परम्परा और सम्बन्धोंसे और भी ऊपर जाता है। मानस-शास्त्रके वेत्ताओंने एक स्वरसे यह बात स्वीकार की है कि शुद्ध, परिपुष्ट एवं बलिष्ठ मनके द्वारा स्थूल जगत्में अघटित घटना भी घटित की जा सकती है। यदि हम उन सूक्ष्मताओंके भी अन्तस्तलमें स्थित हो जायँ, जो स्थूल घटनाओंकी कारण हैं, तो हम न केवल स्थूल जगत्में, बल्कि सूक्ष्म जगत्में भी परिवर्तन कर सकते हैं। इस मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे विचार करनेपर यह सिद्ध होता है कि ग्रहोंके द्वारा भावी घटनाओंका ज्ञान हो जानेपर मानसिक साधनाके द्वारा उन्हें रोका भी जा सकता है। प्राचीन ऋषियों, योगियों और सिद्ध पुरुषोंके द्वारा ऐसा किया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि मन ऐसी स्थितिमें भी जा सकता है, जहाँसे वह घटनाओंका विधान और अवरोध कर सकता है। परन्तु सर्वसाधारणके पक्षमें यह बात दुःसाध्य है। इसलिये उन्हें ग्रहमण्डलाधिष्ठातृदेवताकी शरण लेनी पड़ती है। जिसके शरीरपर सूर्यग्रहका दुष्प्रभाव पड़ रहा है या पड़नेवाला है, वह यदि सूर्यमण्डलके अभिमानी देवताका आश्रय ले और पूजा, पाठ, जप आदिके द्वारा यह अनुभव कर सके कि सूर्यदेवता मुझपर प्रसन्न हैं, मेरा कल्याण कर रहे हैं और मुझे जीवनदान दे रहे हैं, तो बहुत अंशमें उसका अरिष्ट शान्त हो जायगा और वह अपनेको सूर्यग्रहजन्य पीड़ासे बचा सकेगा। ग्रहशान्तिकी ये दोनों प्रणालियाँ शास्त्रीय हैं—पहलीका नाम अहंग्रह-उपासना और दूसरीका प्रतीक-उपासना है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यह सूर्यदेवता केवल उपासनाके लिये ही हैं। वास्तवमें समस्त देवताओंका अलग-अलग अस्तित्व है और सबके लोक, शक्ति, वाहन, क्रिया आदि अलग-अलग बँटे हुए हैं। जबतक विभिन्न शरीर, वस्तु, लोक और नक्षत्रमण्डल आदि पृथक्-पृथक् प्रतीत हो रहे हैं, इनके द्वारा पृथ्वीमण्डल प्रभावित हो रहा है, तबतक इनमें रहनेवाले देवताओंको अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

वर्तमानकालमें सम्पूर्ण संसार राष्ट्रविप्लव, पारस्परिक द्रोह, पारिवारिक वैमनस्य, ईर्ष्या-द्वेष, रोग-शोक और उद्वेग-अशान्तिसे सर्वथा उपद्रुत हो रहा है। इसके अनेक कारणोंमें देवताओंकी उपेक्षा और उनसे प्राप्त होनेवाली सहायताको अस्वीकार कर देना भी है। अन्तर्जगत्के नियमानुसार देवताओंको जागतिक पदार्थोंके उत्पादन, विनिमय और वितरणका अधिकार प्राप्त है। मनुष्य देवताओंको सन्तुष्ट करें और देवता मनुष्योंको समृद्धि एवं अभिवृद्धिसे सम्पन्न करें। परन्तु मनुष्योंने अपनी बुद्धि और पुरुषार्थका मिथ्या आश्रय लेकर स्वयं ही आत्मवञ्चना कर ली है, जिसका यह सब, जो दुःख-दारिद्र्यके रूपमें दीख रहा है, फल है। वेदोंने और तदनुयायी शास्त्रोंने एक स्वरसे ग्रहशान्तिकी आवश्यकता स्वीकार की है। अथर्ववेदमें सब देवताओंकी पूजाके साथ-साथ ग्रह-शान्तिका भी वर्णन आता है—

शन्नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्याश्च राहुणा।–इत्यादि।

प्राचीन आर्योंमें इस वैदिक मर्यादाका पूर्णरूपसे पालन होता था, इसीसे वे सुखी थे। आज भी जहाँ प्राचीन प्रथाओंका पालन होता है, वहाँ प्रत्येक शान्तिक और पौष्टिक कर्मोंमें पहले नवग्रहकी पूजा होती है। यह ध्यान रखना चाहिये कि इस पूजाका सम्बन्ध उन-उन मण्डलोंमें रहनेवाले देवताओंसे है। यहाँ संक्षेपसे नवग्रहोंके ध्यान और

मन्त्रका उल्लेख कर दिया जाता है। पूजा-पद्धतिके अनुसार उनका अनुष्ठान करना चाहिये।

सूर्य

सूर्य ग्रहोंके राजा हैं। ये कश्यप गोत्रके क्षत्रिय एवं कलिङ्गदेशके स्वामी हैं। जपाकुसुमके समान इनका रक्त-वर्ण है। दोनों हाथोंमें कमल लिये हुए हैं, सिन्दूरके समान वस्त्र, आभूषण और माला धारण किये हुए हैं। जगमगाते हुए हीरे, चन्द्रमा और अग्निको प्रकाशित करनेवाला तेज, त्रिलोकीका अन्धकार दूर करनेवाला प्रकाश। सात घोड़ोंके एकचक्र रथपर आरूढ़ होकर सुमेरुकी प्रदक्षिणा करते हुए, प्रकाशके समुद्र भगवान् सूर्यका ध्यान करना चाहिये। इनके अधिदेवता शिव हैं और प्रत्यधिदेवता अग्नि। इस प्रकार ध्यान करके मानस पूजा और बाह्य पूजाके अनन्तर मन्त्रजप करना चाहिये। सूर्यके अनेक मन्त्रोंमेंसे एक मन्त्र है 'ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः'।

चन्द्रमा

भगवान् चन्द्रमा अत्रिगोत्र हैं। यामुन देशके स्वामी हैं। इनका शरीर अमृतमय है। दो हाथ हैं—एकमें वर-मुद्रा है, दूसरेमें गदा। दूधके समान श्वेत शरीरपर श्वेत वस्त्र, माला और अनुलेपन धारण किये हुए हैं। मोतीका हार है। अपनी सुधामयी किरणोंसे तीनों लोकोंको सींच रहे हैं। दस घोड़ोंके त्रिचक्र रथपर आरूढ़ होकर सुमेरुकी प्रदक्षिणा कर रहे हैं। इनके अधिदेवता हैं उमादेवी और प्रत्यधिदेवता जल हैं। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।'

मङ्गल

मङ्गल भरद्वाज गोत्रके क्षत्रिय हैं। ये अवन्तिके स्वामी हैं। इनका आकार अग्निके समान रक्तवर्ण है, इनका वाहन मेष है, रक्तवस्त्र और माला धारण किये हुए हैं। हाथोंमें शक्ति, वर अभय और गदा धारण किये हुए हैं। इनके अङ्ग-अङ्गसे कान्तिकी धारा छलक रही है। मेषके रथपर सुमेरुकी प्रदक्षिणा करते हुए अपने अधिदेवता स्कन्द और प्रत्यधिदेवता पृथ्वीके साथ सूर्यके अभिमुख जा रहे हैं। मङ्गलका मन्त्र है 'ॐ हूं श्रीं मङ्गलाय नमः'।

बुध

बुध अत्रिगोत्र एवं मगधदेशके स्वामी हैं। इनके शरीरका वर्ण पीला है। चार हाथोंमें ढाल, गदा, वर और खड्ग है। पीला वस्त्र धारण किये हुए हैं, बड़ी ही सौम्य-मूर्ति है, सिंहपर सवार हैं। इनके अधिदेवता हैं नारायण और प्रत्यधिदेवता हैं विष्णु। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः'।

बृहस्पति

बृहस्पति अङ्गिरा गोत्रके ब्राह्मण हैं। सिन्धुदेशके अधिपति हैं। इनका वर्ण पीत है, पीताम्बर धारण किये हुए हैं, कमलपर बैठे हैं। चार हाथोंमें रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड धारण किये हुए हैं। इनके अधिदेवता ब्रह्मा हैं और प्रत्यधिदेवता इन्द्र। इनका मन्त्र है 'ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः'।

शुक्र

शुक्र भृगु गोत्रके ब्राह्मण हैं। भोजकट देशके अधिपति हैं। कमलपर बैठे हुए हैं। श्वेत वर्ण है, चार हाथोंमें रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड हैं। श्वेत वस्त्र धारण किये हुए हैं। इनके अधिदेवता इन्द्र हैं और प्रत्यधिदेवता चन्द्रमा हैं। इनका मन्त्र है—'ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।'

शनि

ये कश्यप गोत्रके शूद्र हैं। सौराष्ट्रप्रदेशके अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण है, कृष्ण वस्त्र धारण किये हुए हैं। चार हाथोंमें बाण, वर, शूल और धनुष हैं। इनका वाहन गीध है। इनके अधिदेवता यमराज और प्रत्यधिदेवता प्रजापति हैं। इनका मन्त्र है–'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः'।

राहु

राहु पैठीनस गोत्रके शूद्र हैं। मलय देशके अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण है और वस्त्र भी कृष्ण ही हैं। इनका वाहन है सिंह। चार हाथोंमें खड्ग, वर, शूल और ढाल लिये हुए हैं। इनके अधिदेवता काल हैं और प्रत्यधिदेवता सर्प हैं। इनका मन्त्र है–'ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः'।

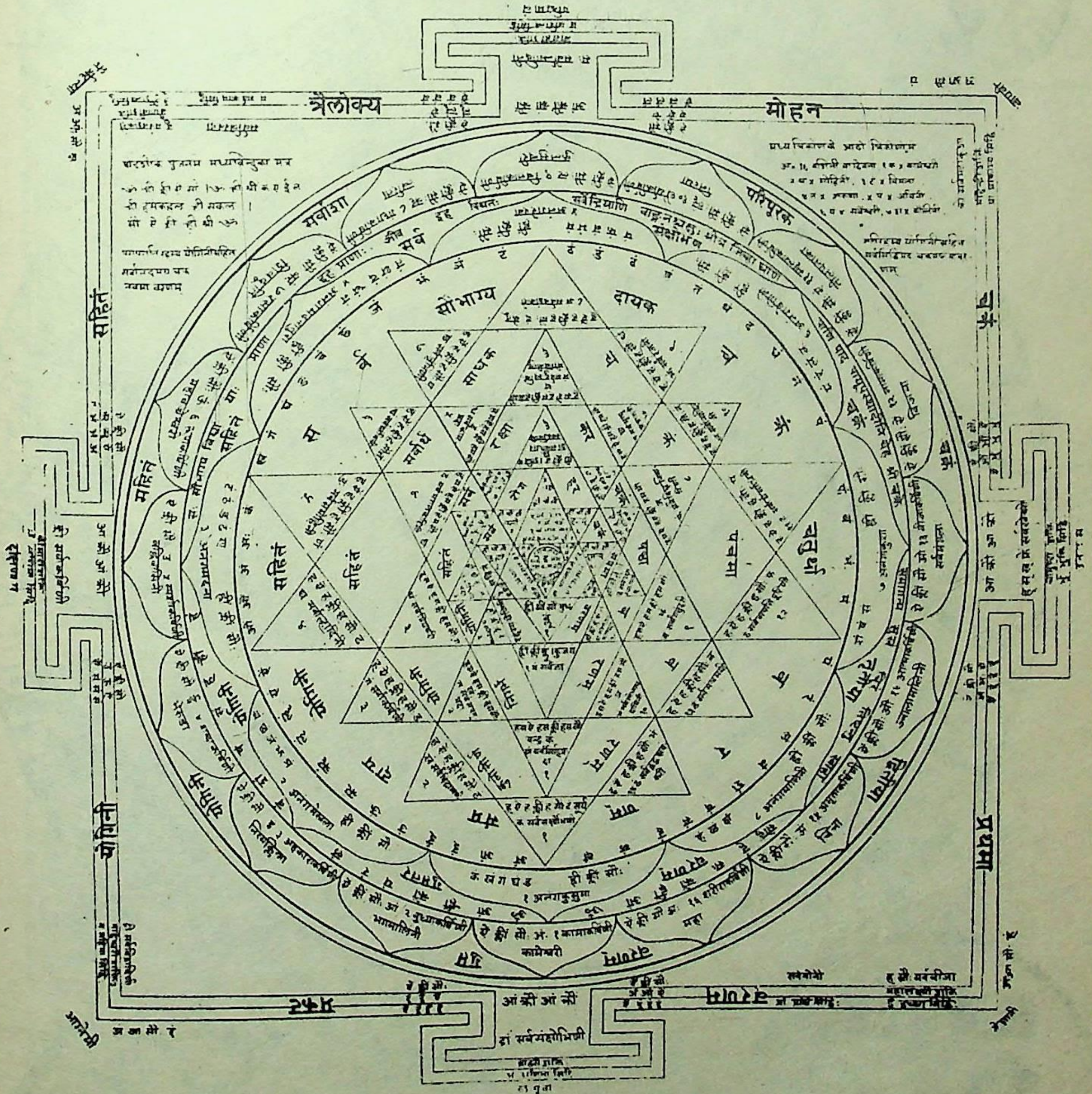
केतु

ये जैमिनि गोत्रके शूद्र हैं। कुशद्वीपके अधिपति हैं। इनका वर्ण धुएँका-सा है और वैसा ही वस्त्र भी धारण किये हुए हैं। मुख विकृत है, गीध वाहन है। दो हाथोंमें वरमुद्रा तथा गदा हैं। इनके अधिदेवता हैं चित्रगुप्त तथा प्रत्यधि-देवता हैं ब्रह्मा। इनका मन्त्र है–'ॐ ह्रीं केतवे नमः।'

देवता	मन्त्र	जप-संख्या	फल
श्रीमहागणेश	ॐ ह्रीं गं ह्रीं महागणपतये स्वाहा।	१ लाख	सर्वकामनापूर्ति
श्रीसूर्यनारायण	ॐ नमो नारायणाय	१६ लाख	,, ,, ,,
श्रीविष्णु (लक्ष्मी-भूमिसहित)	ॐ नमो नारायणाय	१६ लाख	,, ,, ,,
श्रीराम	ॐ रां रामाय नमः	६ लाख	ज्ञान और ऐश्वर्यकी प्राप्ति
श्रीकृष्ण	ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा	१० ,,	भक्ति, ज्ञान और ऐश्वर्य-प्राप्ति
श्रीबालगोपाल	ॐ क्लीं कृष्णाय नमः	१ ,,	,, ,, ,,
श्रीराधाजी	ॐ ह्रीं श्रीं राधिकायै नमः	१६ ,,	सर्वार्थप्राप्ति
श्रीराधाकृष्ण	ॐ नमो गोपीजनवल्लभाभ्याम्	१० ,,	,, ,, ,,
श्रीकृष्ण	ॐ क्लीं गोपीजनवल्लभाय स्वाहा अथवा ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा	१॥ ,,	बृहस्पतिके समान त्रिकाल-ज्ञताप्राप्ति
,,	,,	१ ,,	शत्रुभय आदि विपत्तियोंसे रक्षा
,,	,,	१ लाख	सर्वकार्यसिद्धि
,,	,,	१ ,,	संसारसागरसे सद्योमुक्ति
,,	,,	१ ,,	किन्नरोंके साथ गायन
,,	,,	१ ,,	विज्ञता ज्वर-अपस्मार
,,	,,	१०८	आदि रोगोंका नाश
,,	,,	१ लाख	वेदार्थ-पारदर्शिता और ज्ञान
,,	,,	१ ,,	शत्रु-पराजय
,,	,,	१ ,,	ऐश्वर्य और पशुलाभ
,,	,,	२४०००० (एक मासतक ८ हज़ार प्रति-दिन)	सर्वगुणसम्पन्न कन्यासे विवाह
,,	,,	१ लाख	मेधाशक्ति और कवित्वकी प्राप्ति
श्रीनृसिंहदेव	ॐ आं ह्रीं क्ष्रौं क्रों हुं फट्	६ लाख	सर्वकामनापूर्ति

इसके अतिरिक्त और बहुतसे मन्त्र तथा ध्यान हैं। कामनाओंके अनुसार उनके प्रयोग होते हैं। इन मन्त्रोंके प्रयोगमें भी इनकी पूजा-पद्धति, न्यास तथा हवन आदिके जो पृथक्-पृथक् विधान हैं, उन्हें जान लेना चाहिये। विधि, श्रद्धा और एकाग्रताके साथ करनेपर सभी मन्त्र शास्त्रोक्त फल देते हैं। यदि इन्हीं मन्त्रोंका अनुष्ठान निष्कामभावसे किया जाय, तो अन्तःकरणकी शुद्धि होकर परमात्माकी प्राप्ति होती है। स्थानाभावके कारण यहाँ उन विशेष विधि-विधान नहीं लिखे गये। मन्त्रानुष्ठान-प्रेमियोंको मन्त्र जाननेवाले विद्वानोंसे जान लेना चाहिये।

॥ हादिविद्यायुतं श्रीचक्रम् ॥



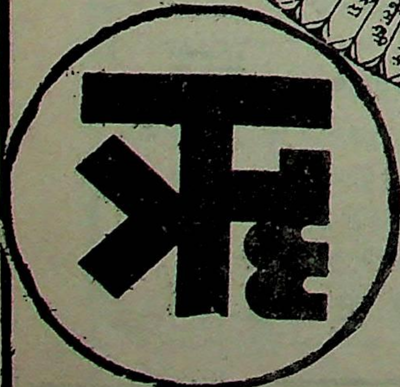
असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाग्रन्थ

सकल पदारथ हैं जगमाँहीं । भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।।

दक्षिणा 501/- रु० सिर्फ



माया
तत्त्वमसि
अयमात्मा ब्रह्म
ब्रह्म
जीव
जल
नभ
वायु
तेज
भूमि
श्रीकंठ शंकराचार्य
जगद्गुरु
कर्ता श्रीगोविंदानंद परमहंस



ॐकार-महिमा



त्रिकोण

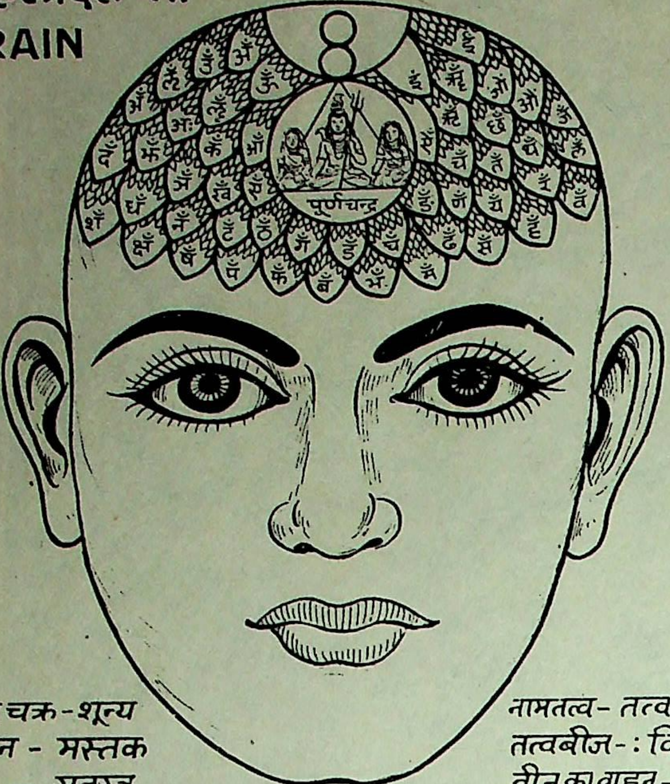

अर्धनारी नटेश्वर म्हणजे - आर्धांगी स्त्री धारण करणारा किंवा मोठा नट शक्तियुक्त शिव किंवा प्रकृति पुरुष
- पचकर्णीचे अनुभव घेऊन प्राणायाम करण्याची रीत खालीदारचविल्या प्रमाणे आनुभव आपल्या गुरू जवळ घेणे
प्राणायाम.
निनाप
अध्यात्मिक
आधिभौतिक आधिदैविक

शून्य चक्र

विसर्ग परम शिव

सहस्त्रदल पद्म

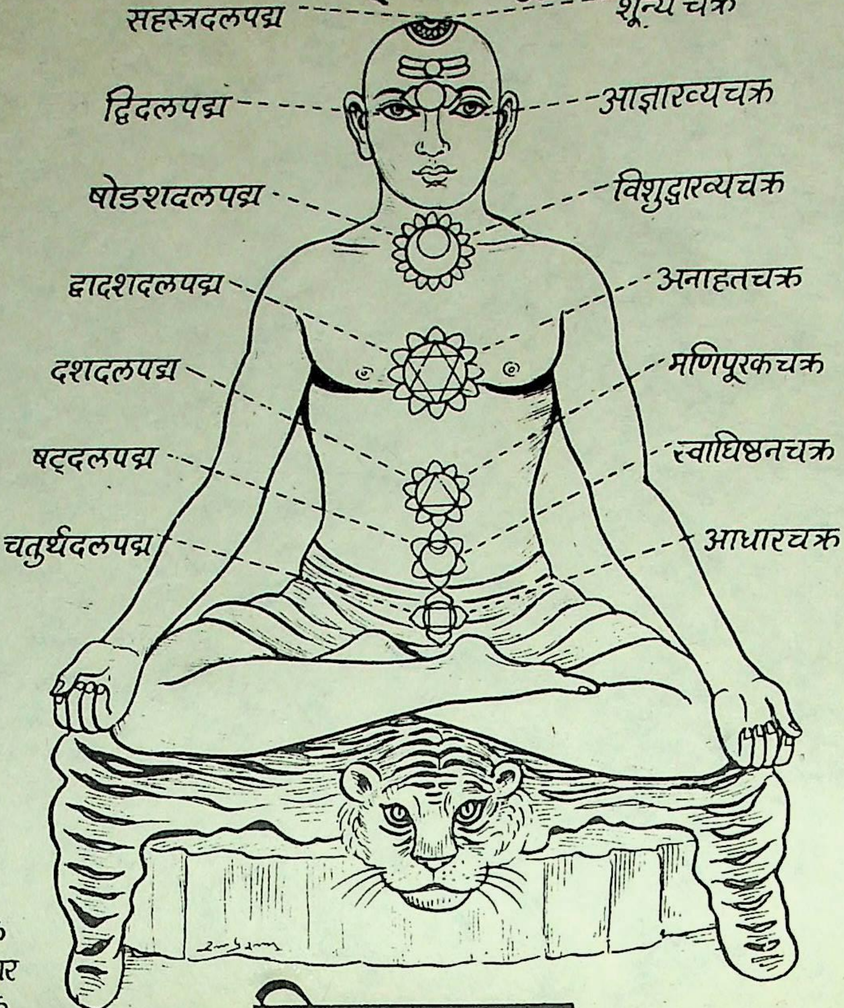
BRAIN



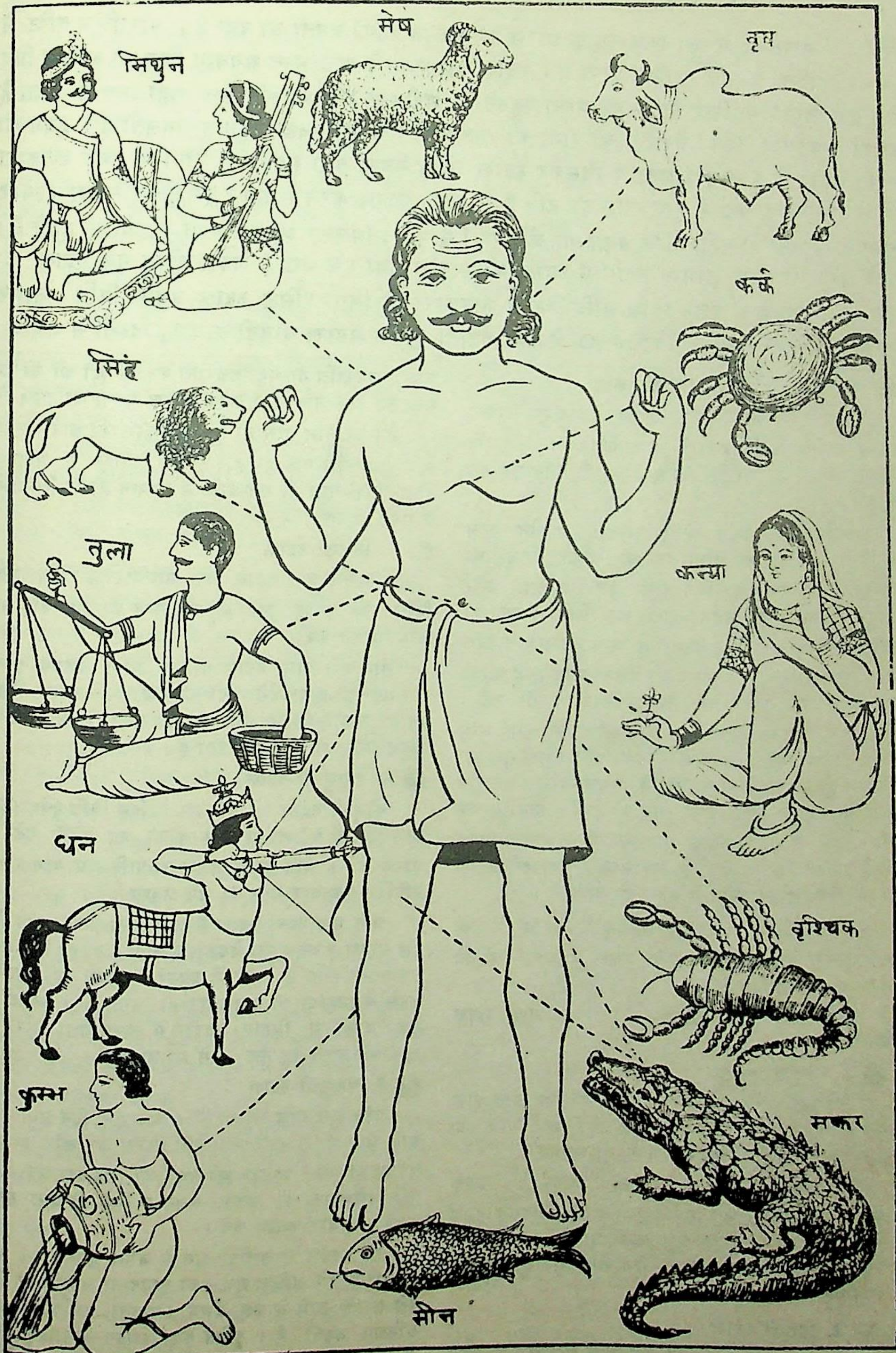
नाम चक्र - शून्य
स्थान - मस्तक
दल - सहस्त्र
दलों के अक्षर - अँ से क्षँ तक
लोक - सत्यः

नामतत्व - तत्वातीत
तत्वबीज - : विसर्ग
वीज का वाहन - विन्दु
देव - परब्रम्ह
देवशक्ति - महाशक्ति
यन्त्र - पूर्णचन्द्र निराकार
ध्यान प.ऊ.-अमर- मुक्त
उत्पत्ति पालन में समर्थ आकाश गामी और समाधि युक्त होता है।

षट्चक्र मूर्ति



सिद्धासनम्


मेष
वृष
मिथुन
कर्क
सिंह
कन्या
तुला
वृश्चिक
धन
मकर
कुम्भ
मीन

सिद्ध रुद्राक्ष धारण फल

भारतवर्ष में आजकल रुद्राक्ष धारण का प्रचलन काफी बढ़ता जा रहा है। पौराणिक दृष्टि से उसको पर्याप्त धार्मिक मान्यता प्राप्त है। रुद्राक्ष धारण करने वाले भक्त भगवान शिव को अत्यन्त प्रिय होते हैं। यथायोग्य सिद्ध रुद्राक्ष की माला पहनने से शरीर में रक्त का संचालन सही रूप में होता है अर्थात् रक्तचाप (ब्लंड प्रेशर) को रोगी का रक्त कंट्रोल करने में बड़ी सहायता मिलती है। हृदय को शक्ति मिलने के साथ-साथ शहद में घिसकर रुद्राक्ष देने से मूर्च्छा तथा मृगी जैसे रोगों से भी छुटकारा मिल जाता है। पेट के रोग इससे दूर होते हैं। रुद्राक्ष धारण करने से सकट दूर होकर सर्वदा कल्याण होता है। इतना ही नहीं, बल्कि ब्रह्महत्या जैसे पापों से मुक्ति मिलकर अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहाँ पर पाठकों के लाभार्थ संक्षेप में रुद्राक्ष की उत्पत्ति तथा एक मुख से लेकर चौदह मुख रुद्राक्ष का फल दिया गया है। पूजन विधि आदि विस्तृत जानकारी के लिए **"सिद्ध रुद्राक्ष प्रयोग विधि"** नामक पुस्तक 21/- (इक्कीस रु०) का M. O. भेजकर देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, दिल्ली से मंगायें।

पौराणिक रुद्राक्ष उत्पत्ति की कथा

स्कन्द ने शिवजी से पूछा—हे देव, महान् गुण सम्पन्न रुद्राक्ष का निर्माण कैसे हुआ? रुद्राक्ष के कितने मुख होते हैं और उनकी धारणा विधि व मन्त्र क्या हैं? विस्तृत रूप से कहिए।

भगवान् शंकर कहने लगे, हे स्कन्द! प्राचीन काल में त्रिपुर नाम का एक अजेय दैत्य था। ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्रादि देवता उससे पराजित होकर मेरे पास आये और त्रिपुर को मारने की प्रार्थना की। तब जिसे देखने का सामर्थ्य न कर सके, ऐसा कालाग्नि नाम का अघोर शस्त्र मैंने धारण किया। उस शस्त्र को देखने मात्र से देवताओं की आंखें एक हजार वर्ष तक उन्मीलन करती रहीं। तेज प्रकाश की व्याकुलता से उनकी आँखों से जो आंसू गिरे, उनसे मनुष्य लोक में आरोग्यदायी रुद्राक्ष वृक्ष का निर्माण हुआ। इसकी माला पहनने, जपजाप्य से सौ करोड़ गुणा पुण्य प्राप्त होता है। साथ ही हाथ, कान, मस्तक तथा गले में सच्चा रुद्राक्ष धारण करने से अत्यन्त दुर्लभ मृत्युंजय पद मिलता है। हे महाभाग! रुद्राक्ष धारण करने वाला समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

स्कन्द ने प्रश्न किया—हे भगवन्! रुद्राक्ष में जो एक मुख से लेकर चौदह मुख के प्रकार हैं उनके गुणों का वर्णन क्रमशः कीजिए।

भगवान शंकर ने कहा, हे स्कन्द! एक मुखी रुद्राक्ष का फल सुनो—

1. एकमुखी रुद्राक्ष

एकमुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन प्रातःकाल यथाविधि न्यासादि करके **'ॐ एं हं औं एं ॐ'** मन्त्र का 108 बार जप करके धारण करना चाहिए।

एकमुखी रुद्राक्ष शिव स्वरूप माना जाता है। इसके धारण से ब्रह्महत्या जैसे पाप दूर हो जाते हैं। इसके पूजन से लक्ष्मी का वास होता है। इसे धारण करने वाला चिन्तामुक्त होकर निर्भय रहता है। कोई भी शत्रु उसे हानि नहीं पहुँचा सकता।

2. द्विमुखी रुद्राक्ष

दो मुख वाले रुद्राक्ष को यथाविधि सोमवार को प्रातः काल, शिवरात्रि या महाशिवरात्रि को 'ॐ ह्रीं क्षौं व्रीं ॐ' मन्त्र का 108 बार जाप करके धारण करना चाहिए।

देव-देव नाम वाले दो मुख के रुद्राक्ष को धारण करने से गोहत्या जैसे पाप दूर होकर स्वर्ग प्राप्ति में सहायक होता है। साथ ही धन-धान्य से सम्पन्न होकर चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है।

3. त्रिमुखी रुद्राक्ष

तीन मुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन यथा विधि 'ॐ रं हें ह्रीं हुं औं' मन्त्र का 108 बार जप करके धारण करें।

तीन मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् अग्नि स्वरूप होता है। यह स्त्री-हत्या जैसे पापों को नष्ट करने वाला, विद्या प्रदाता, शत्रु नाश, पेट की व्याधि तथा अपघात जैसी अशुभ घटनाओं से रक्षा करता है।

4. चतुर्मुखी रुद्राक्ष

चौमुखी रुद्राक्ष को सोमवार के दिन विधि पूर्वक प्रातः काल **'ॐ वां क्रां त्तां हां इं'** मन्त्र का जप करके गले में धारण करें। यदि इच्छा न हो तो पाकिट में साथ रखें। प्रतिदिन एक बार मन्त्र का जप अवश्य करें।

चार मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् 'ब्रह्मा' कहा गया है। इसे धारण करने वाला वेदशास्त्र ज्ञाता, सबका प्रिय तथा धन-संपन्न होता है। किसी प्रकार की कमी नहीं रहती। इससे आत्महत्या का पातक दूर हो जाता है। आंखों में तेज, वाणी में मिठास, शरीर से स्वस्थ तथा दूसरों को आकर्षित करने का गुण उसमें आ जाता है।

5. पंचमुखी रुद्राक्ष

पाँच मुख वाले रुद्राक्ष को सोमवार के दिन प्रातःकाल काले धागे में गूंथकर यथाविधि धारण करें और **'ॐ ह्रां क्रां वां हां'** मन्त्र या **'ॐ ह्रीं नमः'** का 108 बार जप करें। यदि सोमवार को इतना समय न मिले तो प्रातः स्नान करके एक बार अवश्य जपें।

यह रुद्राक्ष 'कालाग्नि' नाम से जाना जाता है। सब रुद्राक्षों में इसे अधिक शुभ तथा पुण्यदाता माना गया है। इसे धारण करने से यश, वैभव, संपन्नता, सुख-शांति तथा प्रतिष्ठा बढ़ती है। दूषित तथा अभक्ष्य अन्नादिक सेवन से उत्पन्न विकार तथा बाधाओं का शमन हो जाता है।

6. षट्मुखी रुद्राक्ष

छह मुख वाले रुद्राक्ष की 'कार्तिकेय' संज्ञा है। सोमवार को प्रातःकाल काले धागे में गूँथकर पहने। फिर यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं' मन्त्र जप करे अथवा स्नानादि करके प्रतिदिन 'ॐ ह्रीं हुं नमः' पढ़े।

इस रुद्राक्ष को धारण करने वाला शुभ लक्षणों से युक्त, सद्गुणी तथा धैर्यवान हो जाता है। सभा-सम्मेलनों में बोलने की शक्ति प्राप्त होती है। उस पर पार्वती देवी की विशेष कृपादृष्टि रहती है।

7. सप्तमुखी रुद्राक्ष

सात मुख वाले रुद्राक्ष का नाम 'अनन्त' है। इसे सोमवार के दिन काले धागे में गूँथकर धारण करे। विधिपूर्वक करन्यास, अंगन्यास तथा ध्यान करके 'ॐ हं क्रीं ह्रीं सौं' मन्त्र का जाप करे। प्रतिदिन इस मन्त्र अथवा 'ॐ हुं नमः' का पाठ करे।

इस रुद्राक्षधारी को विष बाधा नहीं सताती। सभी पाप व शोक नष्ट होकर सुख, शान्ति तथा लाभ प्राप्त होता है। स्त्री वशीकरण, गुप्त धन तथा कीर्ति प्राप्त कर निरंतर तरक्की करता जाता है।

8. अष्टमुखी रुद्राक्ष

आठ मुख वाले रुद्राक्ष को प्रत्यक्ष 'गणेश' का अवतार माना गया है। सोमवार के दिन काले धागे में गूँथकर इस रुद्राक्ष को धारण करे। यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं' मन्त्र का पहले दिन जप करे। इसके बाद प्रतिदिन उपरोक्त मन्त्र अथवा 'ॐ हुं नमः' का पाठ करे।

इसे धारण करने वाले को जीवनभर अपयश का मुँह नहीं देखना पड़ता। विद्या प्राप्त होना इसकी सर्वश्रेष्ठता है।

9. नवमुखी रुद्राक्ष

नौ मुख वाला रुद्राक्ष 'भैरव' नाम से प्रसिद्ध है। सोमवार के दिन भगवान के सामने यथाविधि पूजन करके काले धागे में बांधकर गले में बांधे और 'ॐ ह्रीं वं यं रं लं' मन्त्र का जप करे। इसके पश्चात् भगवान शंकर का चित्र सामने रखकर प्रतिदिन उपर्युक्त मन्त्र अथवा 'ॐ ह्रीं हुं नमः' का पाठ करे।

इस रुद्राक्षधारी, शिव का अत्यन्त प्रिय होने से स्वर्ग में इन्द्र के समान पूजा जाता है। मृत्यु लोक में धन संपत्ति, ऐश्वर्य तथा मान-प्रतिष्ठा की कमी नहीं रहती।

10. दशमुखी रुद्राक्ष

दस मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् जनार्दन विष्णु भगवान का रूप माना गया है। सोमवार को प्रातः स्नान करके भगवान के सामने यथाविधि पूजन व न्यासादि करके काले धागे में बांधकर पहने तथा ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ' मन्त्र जपे।

इस रुद्राक्ष को धारण करने से सर्पादि का भय नहीं होता। भूत, प्रेत, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि बाधाएँ नहीं सतातीं। यह रुद्राक्ष अत्यन्त शक्तिशाली होता है।

11. एकादशमुखी रुद्राक्ष

ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष रुद्रस्वरूप माना गया है। सोमवार को प्रातः स्नान करके भगवान के सामने चौरंग रख, उस पर आसन बिछा रुद्राक्ष रखें। फिर परमेश्वर का ध्यान कर अनन्य भाव से रुद्राक्ष को नमस्कार कर यथाविधि न्यासादि करके पूजन व 'ॐ रूं मूं औं' मन्त्र का जप करे। बाद में रुद्राक्ष को काले धागे में गूंथ कर गले में पहने। अन्य दिन ऊपर कहे गये मन्त्र अथवा 'ॐ ह्रीं हुं नमः' को प्रातःकाल पढ़े।

यह रुद्राक्ष धारण करने से चन्द्र ग्रहण में किये गये दान तथा वाजपेय यज्ञ से भी हजार गुना पुण्य फल मिलता है। यश, वैभव तथा पर्याप्त प्रसिद्धि मिलती है।

12. द्वादशमुखी रुद्राक्ष

बारह मुख वाला रुद्राक्ष आदित्य स्वरूप अर्थात् सूर्य के समान तेजस्वी माना गया है। सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय होते ही नारायण को नमस्कार करे। फिर रुद्राक्ष हाथ में लेकर सूर्य की किरणों का स्नान करावे। तदनन्तर घर के पवित्र स्थान में भगवान् के समीप चौरंग (चौकी) बिछा, उस पर रखे। फिर काले धागे में गूंथ कर यथाविधि न्यासादि करके 'ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं' मन्त्रोच्चारण के साथ गले में धारण करे। अन्य दिन स्नानादि करके उपर्युक्त मन्त्र या 'ॐ क्रों क्षौं रौं नमः' सूर्य दर्शन करके केवल एक बार पढ़े।

इसे धारण करने से चोर, अग्नि, दारिद्रय तथा व्याधियों से मुक्ति मिलती है। कुछ ही समय में धन पुत्रादि से भरा-पूरा हो जाता है। जंगली विषैले जीव-जन्तु, दुःख तथा निराशा उसे छू भी नहीं सकती।

13. त्रयोदशमुख रुद्राक्ष

तेरह मुख वाले रुद्राक्ष की 'इन्द्र' संज्ञा मानी गई है। इस रुद्राक्ष को सोमवार के दिन भगवान् के सामने आसन पर विराजमान करें। फिर यथाविधि न्यासादि करें। 'ॐ ईं यां आप औं' मन्त्र पाठ करके काले धागे में गूँथ कर गले में पहन लो। नित्यप्रति भगवान का दर्शन और रुद्राक्ष स्पर्श कर उपरोक्त मन्त्र या 'ॐ ह्रीं नमः' कहे।

इसे धारण करने वाले की सभी कामनायें पूर्ण होती हैं। ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होकर पापों से मुक्त हो जाता है।

14. चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष

चौदह मुख वाला रुद्राक्ष हनुमान का स्वरूप माना गया है। सोमवार के दिन प्रातःकाल स्नानादि करके भगवान के सामने चौकी पर आसन बिछा रुद्राक्ष को विराजमान कर नमस्कार करे। विधिपूर्वक पूजन करे। 'ॐ ह स्फें खफ्रें हस्रौं हसफ्रें' मन्त्र जपे। अन्त में रुद्राक्ष काले धागे में गूंथकर गले में धारण करें। अन्य दिन प्रातः भगवान के सामने रुद्राक्ष का स्पर्श कर उपर्युक्त मन्त्र या 'ॐ नमः' मन्त्र पढ़ें।

यह बलशाली रुद्राक्ष हनुमान का प्रतीक होने से भूत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि तथा अन्य संकटों से रक्षा कर, बल एवं साहस प्रदान करता है।

कन्या के लिए योग्य वर न मिलने से क्या आप परेशान हैं ? अथवा आपके लड़के के लिए मनपसन्द वधू नहीं मिल रही ?

भारतीय समाज के हिन्दू परिवारों में अपनी कन्या के लिए योग्य वर ढूंढना एक समस्या है। इसमें दहेज की बाधा तो होती ही है, वर पक्ष वाले कन्या में सभी अलौकिक गुणों की अपेक्षा रखते हैं। उनका लड़का चाहे कम पढ़ा-लिखा हो, मामूली सर्विस करता हो, साधारण रूप गुण वाला हो, परन्तु कन्या का सर्वगुण सम्पन्न, अपूर्व सुन्दरी होना आवश्यक है। कन्या के माता-पिता व अभिभावकों को पूरा दहेज देने के साथ-साथ वर-पक्ष के सभी नाज-नखरे भी उठाने पड़ते हैं। मेरे पास विवाह-योग्य कन्याओं के ऐसे अभिभावक आते ही रहते हैं और अपनी परेशानी बताने पर मैं उनको निम्नलिखित तन्त्र बता दिया करता हूँ। गुरु प्रदत्त एवं अनुभव सिद्ध इस तन्त्र से 80-90 प्रतिशत लोगों को तुरन्त सफलता मिल चुकी है। इसकी सहायता से अनेक कन्याओं को मनचाहा वर प्राप्त हुआ है तथा उनके अभिभावकों की मानसिक परेशानी दूर हुई है।

● कन्या के लिए योग्य वर प्राप्ति

जिस प्रकार बिना श्रद्धा के ईश्वर का साक्षात्कार नहीं हो सकता, उसी प्रकार श्रद्धा और विश्वास के बिना यन्त्र-मन्त्र व तन्त्र भी फलदायी सिद्ध नहीं होते। मन में किसी प्रकार की शंका व सन्देह नहीं रखना चाहिए। कुछ लोग तन्त्रों को जादू-टोना (टोटका) समझ कर अकारण ही भयभीत होने लगते हैं। इसलिए तन्त्र प्रयोग में सबसे पहले यह विश्वास दिलाना आवश्यक है कि यह शुद्ध वैष्णव तन्त्र है। इससे किसी प्रकार की हानि नहीं होती। माता पार्वती के इस तन्त्र का प्रयोग पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा के साथ किया जाए तो निश्चित सफलता मिलती है। दूसरी खास बात यह है कि इसको गुप्त रखा जाए अर्थात् क्रिया करते समय किसी के द्वारा टोका-टाकी नहीं होनी चाहिए। नीचे लिखी वस्तुओं को एकत्रित करें। ऐसा करते समय किसी को यह अवसर न दो कि वह आपसे पूछे कि यह क्या है, क्यों कर रहे हो, कहाँ जा रहे हो? इन चीजों को लाते समय यदि इस प्रकार की टोका-टाकी हो भी जाए तो उस कार्य को दोबारा बिना टोके प्रयोग में लाना चाहिए। घर के खास आदमियों (माता, पिता, कन्या, अभिभावक) के अतिरिक्त किसी अन्य को अपना अभिप्राय नहीं बताना चाहिए।

(1) छोटी या बड़ी सात साबुत सुपारी, (2) हल्दी की साबुत छोटी या बड़ी सात गाँठें, (3) गुड़ की छोटी-छोटी सात डली, (4) हल्दी या केसर से पीले रंगे जनेऊ के सात जोड़े, (5) पीले रंग के सात फूल ताजा उसी दिन के लाए हुए, (6) चने की दाल सत्तर ग्राम, (7) पीले रंग का कपड़ा सत्तर सेंटीमीटर (यदि सफेद रंग का कपड़ा मिले तो उसे पीला रंग लें), (8) पीले रंग के सात सिक्के (आजकल दस या बीस पैसे के सिक्के पीले रंग के मिल जाते हैं। यदि न मिलें तो पीतल के सात गोल टुकड़े कटवा लें), (9) अष्टगंध से अनार की कलम द्वारा भोज-पत्र पर 15 का यन्त्र लिखकर उस पर माता पार्वती का बीजमन्त्र, कन्या का नाम तथा मनचाहे वर की प्राप्ति की प्रार्थना लिखकर रख लें। यदि चाहें तो ऐसा बना बनाया यन्त्र हमारे यहाँ से केवल 31/- (इक्कतीस रुपए) M.O. द्वारा भेजकर मंगा सकते हैं।

जब उपर्युक्त वस्तुएँ इकट्ठी हो जाएँ तो बृहस्पतिवार को प्रातःकाल कन्या स्नान कर माता पार्वती का ध्यान करके शंकर-पार्वती या दुर्गा देवी की मूर्ति या चित्र के सामने मन-ही मन प्रार्थना करे कि उसे मनचाहा वर प्राप्त हो। कन्या स्वयं अथवा उसके माता-पिता या अभिभावक कुछ मनौती मानें कि माँ की कृपा से मनोकामना पूरी होने पर इतनी रकम धर्मार्थ दान करेंगे। इसके पश्चात् सभी वस्तुओं को पीले कपड़े में बांधकर घर के किसी ऐसे सुरक्षित कोने में उठाकर रख दें, जहाँ किसी बाहरी व्यक्ति की दृष्टि न पड़े। ये सभी वस्तुएँ कन्या के हाथ से ही उठवाकर रखी जायें। भगवती की कृपा से 40 दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है या उसके होने के आसार नज़र आने लगते हैं। मेरे यजमानों तथा ग्राहकों में सैकड़ों परिवार ऐसे हैं जिनका कार्य सिद्ध हुआ है। हाँ, कुछ केसों में आजकल की मॉडर्न कहलाने वाली लड़कियों ने शंका (सन्देह) करके इसे ढकोसलापन मानकर सच्चे मन से तन्त्र का प्रयोग नहीं किया, उन्हें सफलता नहीं मिली, परन्तु जब दुबारा श्रद्धापूर्वक तन्त्र प्रयोग किया तो उन्हें भी सफलता प्राप्त हुई है।

जब कार्य सिद्ध हो जाए तो तन्त्र की मनौती की रकम किसी विद्वान ब्राह्मण को, माता के मन्दिर में या अन्य किसी धार्मिक संस्था को दान कर देनी चाहिए। यदि यन्त्र हमसे मंगाया हो और हमारे लिए कुछ मनौती बोली हो तो उसे हमारे यहाँ भेज दें।

कन्या को देखने के लिए वर पक्ष के लोग कन्यापक्ष के घर या अन्य किसी उपयुक्त स्थान पर आते हैं। उनमें

सभी प्रकार की मनोवृत्ति के लोग होते हैं। कन्यापक्ष की ओर से उनके आतिथ्य सत्कार का प्रबन्ध किया जाता है और उसमें चाय, शर्बत, मिष्ठान या अन्य खाद्य-पदार्थ पेश किए जाते हैं। यदि उन पेय खाद्य-पदार्थों में कोई अभिमन्त्रित वस्तु मिला दी जाए तो वरपक्ष के लोगों पर मनोवैज्ञानिक अनुकूल प्रभाव होता है। थोड़ी चीनी, इलायची या मिसरी आदि लेकर उस पर मन्त्र पढ़कर उसे चाय, शर्बत या मसाले आदि में मिला देने से वर पक्ष का निर्णय अनुकूल होता देखा गया है। इन वस्तुओं को यदि उनके साथ बैठकर कन्या पक्ष वाले भी खा लें तो भी कोई निषेध नहीं है। हाँ, इसमें कोई बाहरी अखाद्य वस्तु नहीं मिलानी चाहिए, जो कि किसी के स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद हो। वर पक्ष में सभी प्रकार की मनोवृत्ति के लोग होने से उनमें दुष्ट प्रकृति के, अकारण मीन-मेष निकालने या विघ्न-बाधा डालने वाले कुटिल वृत्ति के भी कुछ लोग हो सकते हैं। अभिमन्त्रित पदार्थ उन पर अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने में सफल होता है।

अभिमन्त्रित पदार्थ की विधि यह है कि कोई शुद्ध हृदयी, सदाचारी, धार्मिक पूजा-पाठ करने वाला पुरुष या स्त्री स्नान करके, साफ कपड़े पहन, नंगे पैर थोड़ी चीनी, छोटी या बड़ी इलायची अथवा मिसरी कोई सी एक वस्तु लेकर भगवती माँ की मूर्ति या चित्र के सामने खड़े होकर या बैठकर नीचे लिखा गया सिद्ध मन्त्र कम से कम सात बार या अधिक से अधिक 21 बार पढ़े। हर बार मन्त्र पढ़कर उस वस्तु पर फूँक मारता जाए। इस प्रकार वह पदार्थ अभिमन्त्रित हो जाता है। कोई भी अधिकारी व्यक्ति अथवा माता का उपासक इस मन्त्र को सवा लाख की संख्या में जप करके सिद्ध कर सकता है। सिद्ध मन्त्र का प्रभाव अधिक होता है। समय का अभाव हो और कोई सिद्ध मन्त्रवेत्ता न मिले तो आप ऐसा पदार्थ हमारे यहाँ से भी मंगा कर रख सकते हैं।

मन्त्र इस प्रकार है—"ॐ क्लीं क्लीं ·· ···(वर पक्ष का नाम)····· ···(कन्या का नाम) वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।" यदि निर्णय वर पक्ष के हाथ में हो तो वर पक्ष के स्थान पर (खाली स्थान पर) वर का नाम, अन्यथा उसके माता-पिता या जिसके हाथ में निर्णय है उसका नाम लो और उसके साथ खाली स्थान पर कन्या का नाम लेकर मन्त्र बोलना चाहिए। (मान लो वर का नाम श्यामलाल और कन्या का नाम शीला है तो पूरा मन्त्र इस प्रकार बनेगा—"ॐ क्लीं क्लीं श्यामलालं शीला वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

यदि कन्या पढ़ी-लिखी तथा धार्मिक वृत्ति की है तो उसे तुलसीकृत रामायण के बालकाण्ड की **"जय-जय गिरिराज किशोरी"** से आरम्भ करके **"बाम अंग फरकन लागे"** तक की चौपाई, दोहा तथा सोरठा का 40 दिन प्रातः स्नान करके नित्य पाठ कर सके तो और भी अच्छा है।

● वर के लिए मनचाही धर्मपत्नी की प्राप्ति

अच्छे घरानों के लड़कों के विवाह में प्रायः कोई दिक्कत नहीं आती। कदाचित किसी को मनचाही पत्नी की प्राप्ति में देर अथवा कोई बाधा हो तो नित्य स्नान करके स्वच्छ वस्त्र पहन कर भगवती माँ की मूर्ति या चित्र के सामने बैठकर दुर्गा सप्तशती के अर्गला स्तोत्र में वर्णित 24वें श्लोक **"पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भवाम्॥"** का 40 दिन तक श्रद्धापूर्वक पाठ करने से शीघ्र मनोकामना पूरी होती है। जो लोग पाठ नहीं कर सकते अथवा चाहें तो पाठ के साथ-साथ नीचे बताए गए तन्त्र को उपरोक्त कन्या तन्त्र के नियमों के अनुसार ही शुक्रवार को प्रातःकाल उठाकर रख दें। (1) सफेद रंग के चांदी के सिक्के, यदि सिक्के न हों तो चांदी के सात गोल टुकड़े कटवा लें, (2) सफेद चावल 70 ग्राम, (3) मिसरी की डली छोटी सात, (4) सफेद रंग का कपड़ा 70 सेंटीमीटर, (5) सफेद रंग के फूल 7, (6) सफेद चन्दन के छोटे-छोटे सात टुकड़े, (7) यज्ञोपवीत (जनेऊ) के सात जोड़े, (8) सफेद रंग की सात इलायची (हरी न हों), (9) भोजपत्र पर अनार की कलम से अष्टगन्ध द्वारा शुक्रवार को लिखा गया 'शुक्र' का यन्त्र, जिसमें वर का नाम तथा उपरोक्त श्लोक लिखा हो, इन सब वस्तुओं को शुक्रवार को प्रातःकाल विवाह का इच्छुक पुरुष स्नान करके भगवती माँ के सामने प्रार्थना करके मनौती मानकर उठाकर रख दे तो 40 दिन में कार्य सिद्ध हो जाता है।

पांडित्य संबंधी कोई बात पूछनी हो तो जवाबी कार्ड भेजकर मालूम कर सकते हैं। हमारा पता है—पं मुकट बिहारी लाल शर्मा, मु० व पोस्ट पैंगाँव, जिला मथुरा (उत्तर प्रदेश)।

सिद्धअङ्क शलाका प्रश्न

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९

जिस कार्य के लिए प्रश्न करना हो पहले 'जयगजानन' कहकर श्री गजानन का ध्यान करके ऊपर के किसी खाने में महीन तिनका रखें। तिनका के नीचे जो अङ्क होगा उसका फल निम्नलिखित है, वही आपके प्रश्न का उत्तर है।

१—अनायास कार्य सिद्ध होगा।

२—ईश्वराराधन पूर्वक प्रयत्न करें, सिद्धि निश्चित मिलेगी।

३—कार्य का परिणाम अच्छा नहीं है। इस कार्य के पीछे मत पड़ो।

४—विलम्ब से कार्य सिद्धि, परन्तु काम करने का तरीका बदलना होगा तब कार्य सिद्ध होगा।

५—कार्य होने से प्रसन्नता न मनावें, व कार्य बिगड़ने से दुखी भी न हों।

६—कार्य सिद्ध हो सकता है प्रयत्न करो।

७—विघ्न, बाधा हटते हुए कार्य सिद्ध होगा।

८—कार्य सिद्ध होने में बहुत विघ्न आवेंगे।

९—यह कार्य तो सिद्ध होगा ही, जो सोच रहे हो वे भी कार्य सिद्ध होंगे।

ये आठ चिरञ्जीवि (अमर पुरुष)

निम्न आठ व्यक्ति अमर पुरुष हैं जिनकी मृत्यु न कभी हुई और न कभी होगी :—

१—अश्वत्थामा
२—बलि
३—व्यास
४—हनुमान
५—विभीषण
६—कृपाचार्य
७—परशुराम
८—मार्कण्डेय

इन आठ अमर पुरुषों का जो नित्य शुद्ध हृदय से स्मरण करता है वह दीर्घायु होता है।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः॥
सप्तैतान् स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधि विवर्जितः॥

नवग्रह की शान्ति के लिए हवन में प्रयोगार्थ नव समिधाएँ (लकड़ियाँ)

१—सूर्य ... अर्क (मदार)
२—चन्द्र ... पलाश (ढाक)
३—मंगल ... खदिर (खैर)
४—बुध ... अपामार्ग (चिड़चिड़ा)
५—बृहस्पति ... पीपल
६—शुक्र ... गूलर
७—शनि ... शमी
८—राहु ... दूर्वा (दूब घास)
९—केतु ... कुश

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के चमत्कार 15 का अद्भुत यन्त्र

● पन्द्रह का योग चारों वर्णों के लिए पृथक्-पृथक् रूप में लिखा जाता है, परन्तु मंत्र सब वर्णों के लिए एक ही होता है। नीचे चारों वर्णों के यन्त्र व मन्त्र दिये गये हैं।

मिथुन, तुला, कुम्भ के लिए वैश्य वर्ण बादी यन्त्र 15

६	७	२
१	५	९
८	३	४

कर्क, मीन, वृश्चिक राशि के लिए ब्राह्मण वर्ण का आबी यंत्र 15

२	७	६
९	५	१
४	३	८

मकर, वृष, कन्या राशि के लिए शूद्र वर्ण खाकी यन्त्र 15

८	१	६
३	५	७
४	९	२

मेष, सिंह, धनु राशि के लिए क्षत्रिय वर्ण आतशी यन्त्र 15

४	९	२
३	५	७
८	१	६

किसी भी राशि व किसी भी वर्ण के लिए यन्त्र

१	२	३
४	५	६
७	८	९

● मन्त्र—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

● अगर ब्राह्मण की राशि मेष है और यन्त्र क्षत्री वर्ण का है तो अपना वर्ण छोड़कर केवल राशि पर लेवें। अगर जन्म राशि पता हो तो अच्छा है, नहीं तो चालू नाम की ही राशि लेवें तो भी ठीक रहेगा।

● स्याही—केसर, सिंदूर, लौंग, इलायची, पान का पत्ता, लाल चन्दन, मुश्क कपूर—यह चीजें पीसकर गंगा जल में इसकी स्याही बनावें। गुरु-पुष्य योग में या शुक्ल पक्ष की अष्टमी या नवमी को प्रातः ब्रह्म-मुहूर्त में पूर्व दिशा को मुँह करके शुरू करें।

● कम्बल या कुशा का आसन, लाल धोती, लाल रूमाल सिर पर लेवें। धूप, ज्योति, अगरबत्ती, लाल फूल आदि जला लें। जहां बैठना है अलग कमरा गाय के गोबर से लेपन कर लेवें। सफेद कागज या भोज-पत्र पर लिखें, साथ में मंत्र पढ़ते जावें। 108 बार नित्य लिखना और मंत्र पढ़ना चाहिए। जो पहले दिन पहला मंत्र लिखा है उसे अपने पास रख लें। वह सामने रखकर मंत्र पढ़ें तथा यंत्र लिखें। जो यंत्र आपने लिखे हैं उनको आटे में मिलाकर शक्कर डालकर गोली बना लें। फिर शाम को वह गोलियाँ मछलियों को या नहर में मंत्र पढ़ते हुए रोज डाल आवें। यह कार्य सवा महीना तक प्रतिदिन करें।

नोट : इस यंत्र के अंक देवनागरी लिपि में ही लिखें।

सवा महीने के बाद वह यंत्र जो पहला था, उसमें तुलसी का पत्ता डाल कर चांदी के ताबीज में, बाजू या गले में धारण करें। मन का सोचा हुआ कार्य 15 दिन के अन्दर-अन्दर बनेगा, यह अनुभव-सिद्ध है।

● आज के युग में रोजगार, नौकरी, पास-फेल, इंटरव्यू या किसी भी किस्म का कार्य जो रोजगार से सम्बन्धित हो, नं० 5 वाला यंत्र-मंत्र के साथ सिद्ध कर लें, कामयाबी होगी।

● तन्त्र—इसके साथ लाल रंग का राजभोग (प्रशाद) बांटें तथा मीठी रोटी एक गाय को, दूसरी कुत्ते को, तीसरी कौवे को, अपनी रोटी खाने से पहले रोज देवें। इस पाठ के दौरान किसी के घर का खाना न खाएं। शराब, मांस का सेवन वर्जित है। प्याज व लहसुन भी नहीं खाना चाहिए।

● 15 के यन्त्र के फल

1. शादी-विवाह के लिए 8 से शुरू करें। 2. औलाद व कारोबार एवं नौकरी में तरक्की के लिए एक से शुरू करें। 3. वशीकरण अथवा मिलन के लिए 6 से शुरू करें। 4. गंदे कार्य के लिए 4 से शुरू करें। 5. गए हुए की वापसी हेतु 5 से शुरू करें। 6. लड़ाई-युद्ध के लिए अंक 6 से शुरू करें। 7. सरस्वती व लक्ष्मी सिद्धि के लिए अंक 7 से शुरू करें। 8. औजार, मशीनरी इत्यादि के लिए अंक 3 से शुरू करें। 9. मकान, किला, बाग, कुआं अथवा तबादला इत्यादि के लिए 2 से शुरू करें।

● कलम—मुहब्बत, शुभ कार्य के लिए अनार की कलम। लाभादि के लिए आम की कलम। देवी-देवता की प्रसन्नता के लिए चमेली की लेखनी। बीमारी दूर करने के लिए नीम की कलम। बुरे कार्य हेतु लोहे की लेखनी। लड़ाई के लिए काली स्याही के काने की कलम और आंवले की लेखनी भूत-प्रेत को भगाने के लिए प्रयोग में लानी चाहिए।

विशेष सूचना—यन्त्र एवं मन्त्र के अंकों व अक्षरों की भाषा हिंदी व लिपि देवनागरी ही होनी चाहिए, तभी लाभ होगा। यन्त्र-तन्त्र-मन्त्रों की विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहां से असली प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र शिरोमणि नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़ें। मूल्य 321/- रु०, तथा डाक खर्च 15/- रु० अलग। परन्तु नीचे दिया गया कूपन भरकर भेजने पर 35/- की रियायत अर्थात् 301/- (तीन सौ एक) रुपये की वी० पी० पी० की जायेगी। **यह सुविधा स्टॉक रहने तक मिलेगी।**

ॐ एवं 'स्वस्तिक' का रहस्य

स्वस्तिक भारतीयों में, चाहे वे वैदिक मतावलम्बी हों, सनातनी हों या जैन मतावलम्बी ; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी मांगलिक कृत्यों (विवाह आदि षोडश संस्कार, चूल्हा-चक्की, मकान, दुकान, बही-खाता, तराजू-बांट आदि के मुहूर्त) में तीन परिपाटियां प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं। कुछ लोग 'ॐ' (ओ३म्) लिखकर कार्यारम्भ करते हैं और कुछ स्वस्तिक (卐) अंकित कर कार्य का 'श्रीगणेश' करते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दोनों का प्रयोग करते हैं। वे 'ॐ' भी लिखते हैं और 'स्वस्तिक' भी अंकित करते हैं। ग्रामीण अनपढ़ स्त्रियां भी बड़े ही भावपूर्ण ढंग से इनको अपनाती हैं।

जैनियों के आगमों में 'ॐ' और 'स्वस्तिक' को प्रमुख स्थान दिया गया है। वेदों में भी ॐकार को 'प्रणव' माना गया है अतएव प्रत्येक वेदमन्त्र का उच्चारण ॐकार से प्रारम्भ होता है। 'स्वस्ति' शब्द भी वेदों में अनेक बार आता है जैसे—'स्वस्ति न इन्द्रः' इत्यादि।

स्वस्तिक का जहां भारत में इतना अधिक प्रचार है, वहां विदेशों में मुख्यतः जर्मन देश भी इससे वंचित नहीं है। वहां 'स्वस्तिक' चिह्न को राजकीय सम्मान प्राप्त है। गहराई से खोज की जाय तो अंग्रेजों के 'क्रास' चिह्न में भी इसकी झलक मिल सकती है। संभव है ईसा मसीह को फांसी देने के बाद चिह्न का नामान्तर या भावान्तर कर दिया गया हो।

'ॐ' के सम्बन्ध में विविध मतावलम्बी विविध विचार प्रस्तुत करते हैं यथा 'ॐ' परमात्मावाचक है, 'मंगलस्वरूप है' इत्यादि। जैनियों की दृष्टि से 'ॐ' पंच परमेष्ठी-वाचक एक लघु संकेत है। इसे पंच परमेष्ठी का प्रतिनिधित्व प्राप्त है। इस प्रकार जिन शासन में णमोकार मन्त्र की अपार महिमा है।

यदि ॐकार को सर्वगुण सम्पन्न रखते हुए एकाक्षर में उच्चारण करना हो तो 'ॐ' मात्र कह देने से निर्वाह हो जाता है, क्योंकि 'ॐ' को बीजाक्षर माना गया है। जिस प्रकार छोटे से बीज में वृक्षरूप होने की सामर्थ्य है, उसी प्रकार 'ॐ' में ॐकार मन्त्र की पूर्ण सामर्थ्य है। पंच परमेष्ठियों के आद्यक्षरों से निष्पन्न 'ॐ' की महिमा इस प्रकार है—

ॐकार बिन्दु-संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥

बिन्दु सहित ॐकार का योगीजन नित्य ध्यान करते हैं। यह ॐकार इच्छित पदार्थ-दाता और मोक्षदाता है उस ॐकार को नमस्कार हो।

उपनिषद्‌कार के शब्दों में—ॐकारे परमात्मप्रतीके दृढ़ामैकाग्र्यलक्षणां मति सन्तनुयात्। (छांदोग्योपनिषद् शांकर भाष्य १, १, १)

इसे 'प्रणव' नाम से भी सम्बोधित किया जाता है, क्योंकि यह कभी भी जीर्ण नहीं होता। इसमें प्रतिक्षण नवीनता का संचार होता है और यह प्राणों को पवित्र और सन्तुष्ट करता है। 'प्राणान् सर्वान् परमात्मनिप्रणामयतीत्येतस्मात् प्रणवः।'

उक्त विवरण के प्रकाश में, मंगल कार्यों में 'ॐ' का प्रयोग किया जाता है, जो उचित है। परन्तु 'स्वस्तिक' के सम्बन्ध में अभी तक पूर्ण निर्णय नहीं हो पाया है। कोई इसे चतुर्गति भ्रमण और मुक्ति का प्रतीक मानता चला आ रहा है तो कोई ब्राह्मी लिपि के 'ऋ' वर्ण के समाकार मानकर ऋषभदेव का प्रतीक सिद्ध करने के प्रयत्न में है।

स्वस्ति, स्वस्तिक या सांथिया

'स्वस्तिक' संस्कृत भाषा का अव्ययपद है। पाणिनीय व्याकरण के अनुसार, इसे वैयाकरण कौमुदी में ५४वें क्रम पर अव्यय पदों में गिनाया गया है। यह 'स्वस्तिक' पद 'सु' उपसर्ग तथा 'अस्ति' अव्यय (क्रम ६१) के संयोग से बना है, यथा—सु+अस्ति=स्वस्ति। इसमें 'इकोयणचि' सूत्र से उकार के स्थान में वकार हुआ है।

'स्वस्ति' में भी 'अस्ति' को अव्यय माना गया है और 'स्वस्ति' अव्यय पद का अर्थ कल्याण, मंगल, शुभ आदि के रूप में किया गया है। जब 'स्वस्ति' अव्यय से स्वार्थ में 'क' प्रत्यय हो जाता है, तब यही 'स्वस्ति' 'स्वस्तिक' नाम पा जाता है, परन्तु अर्थ में कोई भेद नहीं होता।

सारांश यह है कि 'ॐ' और 'स्वस्तिक' दोनों ही मंगल, क्षेम, कल्याण रूप परमात्मा वाचक हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है

संतुलित भोजन, कैलोरी और स्वास्थ्य

अधिकांश किशोर व किशोरियों को चटपटे, तेल-मसालेदार, तले हुए, स्टार्चयुक्त एवं नमकीन तीखे खाद्य पदार्थ काफी पसंद आते हैं। लेकिन जायकेदार लगने वाले ये खाद्य-पदार्थ कभी-कभी उनके रूप, सौन्दर्य और शरीर के लिए अत्यन्त हानिप्रद हो सकते हैं।

कैलोरी किसे कहते हैं ? भोजन से जो शक्ति उत्पन्न होती है, उसकी माप को कैलोरी कहते हैं; इसलिए जिस भी भोजन में कैलोरी अधिक होती है, वह अधिक शक्तिवर्धक माना जाता है और जिस भोजन में कम कैलोरीज होती हैं, वे कम। हमारा शरीर अपनी शारीरिक क्षमता बनाये रखने के लिए इस शक्ति का प्रयोग करता है। यदि हम भोजन द्वारा अधिक कैलोरीज का इस्तेमाल कर अधिक शक्ति का संचय करते हैं और हमारा शरीर इस उत्पादित शक्ति का पूरा-पूरा प्रयोग नहीं कर पाता तब यह अधिक मात्रा में प्रयोग की गयी कैलोरी हमारे शरीर में इकट्ठा होती रहती है, जिससे हमारा वज़न बढ़ता जाता है। इसमें तो कोई शक नहीं कि अधिक खाने से वज़न बढ़ता है; लेकिन आप शायद यह नहीं जानती होंगी कि थोड़ी-सी कैलोरी की अधिकता से कितना वजन बढ़ सकता है।

एक पौंड अधिक वजन का मतलब हुआ—3,500 कैलोरी। इसका अर्थ यह हुआ, यदि आपका वजन 11 पौंड अधिक है तो आपने 3,500 × 11 = 38,500 कैलोरी अपने शरीर की आवश्यकता से अधिक उपयोग की है। उदाहरणस्वरूप यदि आपका वजन 121 पौंड (जो होना चाहिए) की जगह 132 पौंड है तो इसका मतलब यह हुआ कि आप प्रतिदिन 150 कैलोरी आवश्यकता से अधिक उपयोग कर रही हैं—कॉफी, केक का एक टुकड़ा, मूंगफली के 30 दाने, एक समोसा और इसी तरह की और कई वस्तुओं के प्रयोग से 150 कैलोरी प्रतिदिन आपकी शारीरिक आवश्यकता से अधिक उपयोग हों, तो अनजाने ही 39 सप्ताह में आपका वजन ग्यारह पौंड बढ़ जायेगा। अपने सही वजन की जानकारी के लिए वजन चार्ट 'अ' देखें। इससे आपको पता चलेगा कि आपका वज़न ज़रूरत से कितना अधिक है। इसे आप 3,500 से गुणा करें तो आप जान जायेंगी कि आपको कितनी कैलरी कम करनी है। उदाहरण के लिए आपका वजन 128 पौंड होना चाहिए; लेकिन 143 पौंड है तो इसका यह मतलब हुआ कि 143 − 128 = 15 पौंड वजन जरूरत से अधिक है और 3,500 × 15 = 52,500 कैलोरी आपको अपने भोजन में कम करनी है। कैलोरी के दैनंदिन उपयोग रख-रखाव चार्ट (चार्ट 'ब') देखने से आपको पता चलेगा कि 143 पौंड वजन के लिए आप प्रतिदिन 2,300 कैलोरी का उपयोग कर रही हैं; इसलिए यदि आप 1,000 कैलोरीज का प्रयोग करें तो प्रतिदिन आप 2,300 — 1,000 = 1,300 कैलोरी कम लेंगी। इसका मतलब यह हुआ कि इस तरह आपने 30 दिनों में 1,300 × 30 = 39,000 कैलोरी कम लीं। इस तरह 1,000 कैलोरी वाले पथ्य लेने से 14-15 दिन में आपका वज़न सामान्य हो जायेगा।

30 दिनों तक कैलोरी के नियमित उपयोग का रोजनामचा रखने के बाद आपको अपने लिए उचित आहार की सही मात्रा का पता चल जायेगा। और कितने समय तक ऐसे आहार का प्रयोग करना चाहिए, यह भी आप निर्धारित कर सकेंगी। लेख के अंत में प्रकाशित, उचित आहार एवं उचित वजन बनाये रखने की सबसे उत्तम पद्धति के लिए, कैलोरी काउंटर से कैलोरी गिनें।

खाना खाने के पश्चात् कैलोरी गिनें। जो भी चीजें खायें, सभी का हिसाब लिखें। खाते ही हिसाब लिखें, नहीं तो भूलने का अंदेशा रहता है। यदि आप को बाहरी मोटी चीजें खाने की आदत हो तो उन्हें भी उसी वक्त अपने चार्ट में दर्ज कर लिया करें और अपने आपको धोखा न दें, नहीं तो चाहने पर भी आप अपने शरीर को आकर्षक एवं सुडौल नहीं बना पायेंगी।

अपेंडिक्स 'अ'

महिलाएँ

कद	वजन	कद	वजन
4 फीट 10 इंच	96-107 (पौंड)	5 फीट 4 इंच	113-126 (पौंड)
4 फीट 11 इंच	98-110 (पौंड)	5 फीट 5 इंच	116-130 (पौंड)
5 फीट	101-113 (पौंड)	5 फीट 6 इंच	120-135 (पौंड)
5 फीट 1 इंच	104-116 (पौंड)	5 फीट 7 इंच	124-139 (पौंड)
5 फीट 2 इंच	107-119 (पौंड)	5 फीट 8 इंच	128-143 (पौंड)
5 फीट 3 इंच	110-122 (पौंड)	18-25 वर्ष की लड़कियों के लिए-1 पौंड प्रतिवर्ष कम	

पुरुष

5 फीट 1 इंच	115-126 (पौंड)		5 फीट 9 इंच	142-156 (पौंड)
5 फीट 2 इंच	118-129 (पौंड)		5 फीट 10 इंच	146-160 (पौंड)
5 फीट 3 इंच	121-133 (पौंड)		6 फीट 11 इंच	150-165 (पौंड)
5 फीट 4 इंच	124-136 (पौंड)		6 फीट	154-170 (पौंड)
5 फीट 5 इंच	127-139 (पौंड)		6 फीट 1 इंच	158-175 (पौंड)
5 फीट 6 इंच	130-143 (पौंड)		6 फीट 2 इंच	162-180 (पौंड)
5 फीट 7 इंच	134-147 (पौंड)		6 फीट 3 इंच	167-185 (पौंड)
5 फीट 8 इंच	138-152 (पौंड)		6 फीट 4 इंच	172-190 (पौंड)

दैनिक कैलोरी चार्ट

अपेंडिक्स 'ब'

उचित वजन बनाये रखने के लिए कैलोरी की मात्रा

महिलाएँ कैलोरी का दैनिक उपभोग

उचित वजन	18-35 वर्ष	35-55 वर्ष	55-75 वर्ष	उचित वजन	18-25 वर्ष	35-55 वर्ष	55-75 वर्ष
99	1700	1500	1300	132	2150	1950	1650
110	1850	1650	1400	143	2300	2050	1800
121	2000	1750	1550	154	2400	2150	1850
128	2100	1900	1600	165	2500	2300	1950

पुरुष कैलोरी का दैनिक उपभोग

उचित वजन							
				143	2700	2400	2050
				154	2900	2600	2200
110	2200	1950	1650	165	3100	2800	2400
121	2400	2150	1850	176	3250	2950	2500
132	2550	2300	1950	187	3300	3100	2600

कैलोरी की मात्रा

कच्ची सब्जियाँ

परमल	1 कप	20	प्याज	1 कप	60
मेथी की सब्जी	1 कप	25	चुकंदर	1 कप	55
शकरकंदी	1 कप	120	भिंडी	1 कप	30
फ्रेंच बींज	1 कप	25	बैंगन	1 कप	20
शिमला मिर्च	1 कप	30	फूल गोभी	1 कप	30
मटर	1 कप	100	आलू	1 कप	105
खीरा	1 कप	15	बंदगोभी	1 कप	20
टमाटर	1 कप	20	फलियाँ	1 कप	30
सलाद के पत्ते	1 कप	12	मीताफल,भोपला	1 कप	10
पालक	1 कप	25	कद्दू	1 कप	25
मूली	1 कप	15	टिंडा	1 कप	30
गाजर	1 कप	60	करेला	1 कप	25

दूध के साथ

दूध	1 कप	140	लस्सी	1 कप	90
दूध (स्किम्ड)	1 कप	90	दही	1 कप	110
आइसक्रीम	1 कप	193	पनीर	1 कप	330

फल

सेव	½ कप गूदा	100	केला	¾ कप	100
खुरबानी	½ कप	100	चीकू	¾ कप	100
चकोतरा	2 कप	100	ग्लास	¼ कप	100
अमरूद	½ कप	100	लीची	½ कप	100
अंगूर	⅓ कप	100	आडू	½ कप	100
अनानास	2 कप	100	अलूचा	½ कप	100
पपीता	3 कप	100	संतरा	½ कप	100
आम	1 कप	100	मोसमी	1½ कप	100
खरबूजा	3 कप	100	स्ट्रावरी	1½ कप	100
रसभरी	¼ कप	100	गन्ने का रस	1 कप	100
तरबूज	3 कप	100	नारियल का पानी	1 कप	100

गोश्त-मांस (उबला हुआ)

मछली	1 कप	110	मटन चाप	1 कप	100
बकरे का गोश्त	1 कप	250	(सूअर का गोश्त)	1 पतला	100
मुर्गी	1 कप	220	हैम	स्लाइस	

अनाज

सफेद रोटी-मैदे की ½" जाड़ा		60	भुना पापड़	8" व्यास वाला	30
रोटी	स्लाइस		दाल	1 बड़ा चम्मच	50
कार्न फ्लैक	1½ कप	100	चना	1 बड़ा चम्मच	50

मेरी बिस्कुट	1	30	गेहूं का आटा	1 कप	340
चावल	1 कप	400	चीज	1 कतरा	100

अंडे

तले हुए	1	100	पोच और उबला हुआ	1	80
आमलेट	1	110			

पेय

कोला	1 बोतल	95	जिंजर ऐल	1 बोतल	75
नींबू का शर्बत	2 बड़ा चम्मच	35			

मादक पेय

बिअर	1 ग्लास	100	विस्की	1½ औंस	75
ड्राई वाइन	1 वाइन ग्लास	75	रम	1½ औंस	125
शैमपेन	1 ग्लास	115			

मिष्टान

खीर	1 कप	600	पुडिंग	½ कप	100
सिवैया	1 कप	650	कस्टर्ड	⅓ कप	100
सूजी की खीर	1 कप	600	आइसक्रीम	1 भाग	193
रबड़ी	½ कप	490	हलवा	1 कप	770
कुल्फी	½ कप	500	चॉकलेट	6-7 टुकड़े	500
श्रीखंड	1 कप	250			

अन्य

मुरब्बा	1 बड़ा चम्मच	40	वनस्पति तेल	1 बड़ा चम्मच	130
संतरे का मुरब्बा	1 बड़ा चम्मच	40	सलाद का तेल	1 बड़ा चम्मच	125
शहद	1 बड़ा चम्मच	40	घी	1 बड़ा चम्मच	140
मैयोनीज सॉस	1 बड़ा चम्मच	110	शक्कर	1 बड़ा चम्मच	60
मक्खन	1 बड़ा चम्मच	120			

भारतीय-व्यंजन

दाल	1 बड़ा चम्मच कच्ची	50	या मछली	1 कप	110
दही	½ कप	55	तेलों से बना	1 बड़ा चम्मच (तेल)	130
सलाद	1 कप	35	प्याज टमाटर और मसालों से बना		20
चपाती	2	200	या मुर्गी	1 कप	220
चावल	1½ कप	200			
सब्जी तेल में बनी	1 बड़ा चम्मच	100	तेल में बना	1 बड़ा चम्मच (तेल)	130
प्याज टमाटर और मसालों से बनी		130	प्याज, टमाटर और मसालों		20
या गोश्त		20	तथा फल के साथ	1 कप	100
तेल में बना	1 कप	150			
प्याज, टमाटर और मसालों से बना	1 बड़ा चम्मच (मसाले)	130			
		20			

भारतीय-व्यंजन

लड्डू	40 ग्राम	250	समोसा	70 ग्राम	150
बालूशाही	40 ग्राम	250	दही बड़ा	1 प्लेट	150
इमरती	40 ग्राम	250	डोसा	1	100
पतीसा	40 ग्राम	250	इडली	1½	100
मेसू	40 ग्राम	250	मसाला डोसा	1	250
रसमलाई	40 ग्राम	250	रसम	1½	100
सोहन हलवा	40 ग्राम	250	छोटी पूरी	1	250
मालपुआ	40 ग्राम	250	भेलपूरी	कप	280
पकौड़ा	1 कप	250	पापड़ी	1 प्लेट	25
कचौड़ी	40 ग्राम	250	पानी पूरी	1 प्लेट	125
पेठा	40 ग्राम	200	ढोकला	1 कप	280
बादाम बर्फी	30 ग्राम	200	तंदूरी मुर्गी	2 टुकड़े	350
पिस्ता बर्फी	30 ग्राम	200	मछली के टुकड़े	3	162
जलेबी	40 ग्राम	200	सीख-कबाब	2	200
गुलाब जामुन	40 ग्राम	200	काला चना		206
काजू बर्फी	30 ग्राम	200	चना दाल		212
नारियल की बर्फी	30 ग्राम	200	उड़द		198
रसगुल्ला	40 ग्राम	150	लोबिया		186
मठरी	30 ग्राम	150	राजमा		196
भटूरा	40 ग्राम	150	मसूर		186
आलू की टिक्की	60 ग्राम	150	अरहर		190
चना	30 ग्राम	150			

अपने बदन को सुडौल बनाने के लिए और वजन कमकरने के लिए कैलोरीज गिनकर आहार करने का तरीका सबसे उपयुक्त हैं। नियमित रूप से वजन कम करने के लिए 800—1000 कैलोरी वाला भोजन करें। यदि आपका वजन सही है तो उसे बनाये रखने के लिए उतना ही कैलोरी वाला भोजन करें जितनी कि आपके शरीर को आवश्यकता है। वजन कम करने के लिए भी

ऐसा पथ्य लें, जिससे शारीरिक बल बना रहे। यदि आप काम पर जाती हैं और शारीरिक रूप से व्यस्त जीवन व्यतीत करती हैं तो 800 से कम कैलोरी वाला भोजन न लें। यदि विदेशों में वजन कम करने के लिए 500 कैलोरी का भोजन लिया जाता है तो उन लोगों द्वारा, जो डॉक्टरी देख-रेख में होते हैं।

संतुलित भोजन में दूध, थोड़ी-सी मछली, गोश्त, पनीर या अंडे, हरी सब्जियाँ या फल और एक टुकड़ा डबल रोटी या एक फुलका होना चाहिए।

● मोटापा कम कैसे करें

इस आहार पद्धति से प्रतिदिन एक पौंड वजन कम होता है; लेकिन प्रयोग करने वालों के अनुसार इसमें हेर-फेर भी किया जा सकता है :

1. पहला दिन :

नाश्ता : 1-2 उबले हुए या न चिपकने वाले वर्तन में बिना घी से बने अंडे, एक चकोतरा (यदि न मिले तो एक मौसमी फल) बिना शक्कर और दूध के चाय, काफी।

दोपहर का भोजन : दो उबले हुए या बिना तेल के बने कटलेट। टमाटर और खीरा के कुछ स्लाइस।

रात का भोजन : $\frac{3}{4}$ कप पनीर (नमक, काली मिर्च और नींबू के साथ) एक स्लाइस गेहूं की डबल रोटी, एक मौसमी फल, चाय या काफी बिना दूध और शक्कर के।

2. दूसरा दिन :

नाश्ता : एक चकोतरा या मौसमी फल, एक स्लाइस सिंकी हुई डबल रोटी बिना कुछ लगाये। दूध और शक्कर के बिना चाय और कॉफी।

दोपहर का भोजन : भुनी हुई मुर्गी, लाल और हरी सब्जियों से तैयार किया गया सलाद, चाय या कॉफी।

रात का भोजन : 1-2 अंडों का आमलेट (नॉनस्टिक पैन में बना हुआ) टमाटर, खीरा और सलाद के पत्ते।

3. तीसरा दिन :

नाश्ता : 1-2 उबले हुए या नॉनस्टिक पैन में बना हुआ या आमलेट, एक चकोतरा या मौसमी फल।

दोपहर का भोजन : भुने हुए बकरे के गोश्त का एक स्लाइस (पूरी तरह चर्बी उतारकर), सलाद के पत्ते, टमाटर और खीरा। नींबू और सिरके के साथ।

रात का भोजन : उबली या सिंकी हुई मछली, मौसमी फल।

4. चौथा दिन :

नाश्ता : 1-2 उबले हुए, भाप में बने या नॉनस्टिक पैन में बने अंडे, एक चकोतरा या मौसमी फल, बिना शक्कर और दूध के एक प्याला चाय या कॉफी।

दोपहर का भोजन : ताजे फल और सब्जियों से बना सलाद, जितना चाहें ले सकती हैं।

रात का भोजन : नरम, उबला हुआ गोश्त जितना चाहें, साथ में पालक और शिमला मिर्च।

5. पाँचवाँ दिन :

नाश्ता : एक चकोतरा या मौसमी फल, एक स्लाइस डबल रोटी, सिंकी हुई, बिना कुछ लगाये, एक प्याला चाय या कॉफी दूध और चीनी के बिना।

दोपहर का भोजन : ठंडी उबली हुई मुर्गी, कच्चे टमाटर और गाजर, उबली हुई फूलगोभी या बंदगोभी।

रात का भोजन : 2 अंडों का आमलेट या उबले हुए अंडे, टमाटर और गाजर।

6. छठा दिन :

नाश्ता : 1-2 उबले हुए या नॉनस्टिक पैन में बने हुए अंडे, चकोतरा या एक मौसमी फल, बिना दूध और शक्कर के एक प्याला चाय या कॉफी।

दोपहर का भोजन : नमक, काली मिर्च और नींबू लगा हुआ पनीर और उबली हुई पालक का साग जितना चाहें।

रात का भोजन : 2 हैमबर्गर कटलेट, पकायी हुई बंदगोभी, फूलगोभी और गाजर, एक स्लाइस सफेद सिंकी हुई डबलरोटी।

7. सातवाँ दिन :

नाश्ता : 1-2 उबले हुए या नॉनस्टिक पैन में बने हुए अंडे, चकोतरा या मौसमी फल, बिना दूध और शक्कर के चाय या कॉफी।

दोपहर का भोजन : भुनी हुई मुर्गी, टमाटर, गाजर और खीरा।

रात का भोजन : उबला हुआ या भाप में पका कीमा जितना चाहें, सलाद के पत्ते, टमाटर और उबली हुई फूलगोभी।

यही आहार अगले सप्ताह भी दोहरायें।

यह आवश्यक नहीं है कि जितनी चीजें बतलायी गयी हैं, वे सभी खायी जायें; लेकिन इसकी जगह कोई और दूसरी चीज न खायें। बतलाये गये ढंग से भोजन करें। चाय में नींबू या पानी में नींबू और पुदीना लें। इसका स्वाद अच्छा होता है। दोपहर और रात के भोजन के बीच यदि चाहें तो गाजर खा सकती हैं।

विशेष सिद्ध मन्त्र

कलियुग में निम्नलिखित देवताओं के मन्त्र सिद्धिप्रद बताये गए हैं। गणपति, नृसिंह, सूर्यनारायण, लक्ष्मीनारायण, रामचन्द्र, सुदर्शन, अघोर, दक्षिणामूर्ति, पशुपति, गोपाल, भैरव, क्षेत्रपाल, यक्षनायक, चेटक, चतुष्षष्ठी, यक्षिणी, हयग्रीव, वराह, उमा, महेश्वर, चिंतामणि, अग्नि, प्रणव, अग्निशास्त्र, कर्णपिशाचनी। महाविद्या, मातंगी, सुन्दरी, श्यामा, तारा, काली, त्रिपुरा, कालरात्रि, नीलसरस्वती, छिन्नमस्ता और भुवनेश्वरी, चारों वर्णों के लिए सिद्धिप्रद कही गई हैं। विधिपूर्वक, उपासना करने पर इनके मन्त्र अवश्य फल देते हैं। मन्त्र सिद्धि करने के लिए शुभ मुहूर्त, योगादि देखकर ही आरम्भ करना चाहिए। प्रस्तुत लेख में इन्हीं में से प्रमुख-प्रमुख देवताओं के अनुभूत मन्त्रों का संकलन दिया गया है। साथ ही नवग्रह उपासना और उन के मन्त्रों का विधान तथा राशिपरक मन्त्रों का विधान तथा राशिपरक तन्त्रों का विधान भी संग्रहीत है। जिसकी जो राशि हो उसके मन्त्र की उपासना कर वह इष्ट कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है।

गणेश गायत्री मन्त्र—'ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ती प्रचोदयात्'।

गणेश के प्रत्येक मन्त्र के जप से पूर्व इस गणेश गायत्री का जप अवश्य करना चाहिए।

(1) **गणपति मन्त्र**—'ॐ श्रीं ह्रीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा'।

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सर्वविघ्न दूर हो जाते हैं और सर्वविध मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

(2) **विनायक मन्त्र**—'ॐ वक्रतुण्डाय हुं'।

इस मन्त्र का छ: मास तक छ: लाख जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

(3) **उच्छिष्ट गणपति मन्त्र**—'ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा'।

लाल चन्दन या सफेद आक की जड़ से अंगुष्ठ प्रमाण गणेश मूर्ति बनवा, उसका पूजन कर इस मन्त्र का एक लाख जप करने से सर्वविध मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

(4) **उच्छिष्ट विनायक मन्त्र**—'ॐ नमः उच्छिष्टगणेशाय हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा'।

(5) **धनधान्यप्रद उच्छिष्ट-गणेश मन्त्र**—'ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टमहात्मने आं क्रों ह्रीं गं घें घें स्वाहा।'

गणपति की स्थापना कर इस मन्त्र का कृष्णाष्टमी से प्रतिदिन 4 हजार जप करें और भाद्र शुक्ल चतुर्थी की रात्रि को पूर्ण कर नीम की समिधा से धतूरे के पुष्प तथा घृत द्वारा हवन करें। इससे इष्टकार्य सिद्ध होता है।

(6) **शक्ति विनायक मन्त्र**—'ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं।'

इस मन्त्र के जप से शरीर में शक्ति प्राप्त होती है।

(7) **लक्ष्मी-गणेश मन्त्र**—'ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।'

इस मन्त्र से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

(8) **त्रैलोक्य-मोहन गणेश मन्त्र**—'ॐ वक्रतुण्डैकदंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।'

यह मन्त्र मोहन प्रयोग में काम करता और सिद्धि देता है।

(9) **हरिद्रा-गणेश मन्त्र**—'ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजनं हृदयं स्तंभय स्तंभय स्वाहा।'

इस मंत्र के जप द्वारा दूसरे के हृदय की बात जानी जा सकती है।

नवग्रह आदि के मन्त्र

सूर्य ध्यान :

प्रत्यक्षदेवं विशद सहस्रमरीचिभिः शोभितभूमिदेशम्। सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे॥

सूर्य गायत्री : 'ॐ आदित्याय विद्महे, मार्तण्डाय धीमहि, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्'।

सूर्य-उपासना मंत्र—'ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः'

उपासना मंत्र से उस देवता का पूजन, व्रत आदि किया जाता है। इस मंत्र का सदैव जप करते रहना चाहिए। उस-उस देवता के जप-मंत्र के साथ उपासना मंत्र का भी सतत अनुष्ठान करते रहने से अनिष्ट निवृत्त हो, फल शीघ्र मिलता है। जहां उपासना-मंत्र न लिखा हो, वहां मूल मंत्र से ही जप किया जाय।

(10) **सूर्य मन्त्र**—'ॐ ह्रीं श्रीं आं ग्रहाधिराजाय आदित्याय स्वाहा'।

इस मंत्र का 24 हजार जप करने पर सूर्य का अरिष्ट दूर होकर वे प्रसन्न हो शुभप्रद हो जाते हैं।

(11) **दारिद्र्यनाशन सूर्य मंत्र**—'ॐ ह्रौं घृणि सूर्य आदित्य श्रीं ॐ।'

इस मंत्र का 1 लाख जप करने पर दारिद्र्य नष्ट हो जाता है।

चन्द्र-ध्यान :

शङ्खप्रभं वेणुप्रियं शशांकमीशानमौलिस्थितमङ्ग्यरूपम्। तमीपतिं चामृतसिक्तगात्रं ध्यायेद् हृदब्जे शशिमं ग्रहेन्द्रं॥

चन्द्र उपासना मन्त्र—'ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।'

(12) **चन्द्र-मंत्र**—'ॐ श्रीं क्रीं चं चन्द्राय नमः'।

इस मन्त्र से चालीस हजार जप, हवन पूजन करने पर चन्द्र का अनिष्ट दूर होता है।

मंगल ध्यान :

प्रतप्तगांगेयनिभं ग्रहेशं सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम्। सुरासुरैः पूजितपादयुग्मं भौमं दयालुं हृदये स्मरामि॥

मंगल गायत्री—'ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्' ।

मंगल उपासना मंत्र—'ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः' ।

(13) भौम-मंत्र—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं प्रां कं ग्रहाधिपतये भौमाय स्वाहा' ।

इस मंत्र का 28 हजार जप करने पर मंगल का अरिष्ट दूर होकर राजकार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है ।

(14) सुत-धनप्रद मंगलमंत्र—'ॐ हां हंसः खं खंः' ।

इस मन्त्र को छः लाख जप करने से सुत और धन प्राप्त होता है ।

(15) भूमि-निमन्त्रण मंत्र—'ॐ पवित्र वज्रभूमे हुं स्वाहा'

(16) विघ्ननिवारण मंत्र—'ॐ भक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा' ।

उपर्युक्त दोनों मन्त्रों का जप करने से जमीन-जायदाद के विघ्न दूर हो जाते हैं । मंगल भूमिपुत्र होने से उसी के प्रसंग में उसकी माता के अरिष्ट निवारक ये मंत्र दिए गए हैं ।

बुध-ध्यान :

सोमात्मजं हंसगतं द्विबाहुं शंखेन्दुरूपं ह्यसिपाशहस्तम् । दयानिधिं भूषणभूषितांगं बुधं स्मरे मानसपंकजेऽहम् ॥

बुध—(विष्णु)-गायत्री—'ॐ त्रैलोक्यमोहनाय विद्महे स्मरजनकाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्' ।

बुध उपासना मंत्र—'ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः' ।

(17) बुध-मंत्र—'ॐ ह्रां क्रों डं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा'

इस मंत्र के 68 हजार जप, हवन-पूजन से बुध का अरिष्ट दूर हो जाता है ।

गुरु ध्यान :

'तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रसेवितपादपद्मम्' मेधानिधिं जानुगतद्विबाहुं गुरुं स्मरे मानसपंकजेऽहम् ॥

गुरु गायत्री—'ॐ गुरुदेवाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्' ।

गुरु उपासना मंत्र—'ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः' ।

(18) गुरु मंत्र—'ॐ बृं बृहस्पतये नमः' ।

(19) गुरु-जप मंत्र—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं ग्रहाधिपतये बृहस्पतये वीं ठः श्रीं ठः ऐं ठः स्वाहा' ।

उपर्युक्त गुरु मंत्रों का 48 हजार जप करने पर गुरुकृत सब अरिष्ट दूर होते तथा विवाहादि कार्यों में वह शुभप्रद होता है ।

शुक्र-ध्यान :

संतप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीतांबरं धृतसरोरुह द्वंद्वशूलम् । क्रौञ्चासनं चासुरसेव्यपादं शुक्रं स्मरे त्रिनयनं हृदयाम्बुजेऽहम् ॥

शुक्र उपासना मंत्र—'ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः' ।

(20) शुक्र मंत्र—'ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय नमः' ।

इस मंत्र का आठ हजार जपकर हवन करें, तो धातुविकारादि रोग दूर होकर वस्त्रादि लाभ होता है ।

(21) शुक्र मंत्र—'ॐ ऐं जं गं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः' ।

इस मंत्र का 80 हजार जप करने से शुक्रग्रहकृत अरिष्ट दूर होकर यात्रा शुभ होती है ।

शनि ध्यान :

नीलांजलाभं मिहिरेष्टपुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम् । सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं स्मरे शनिं मानसपंकजेऽहम् ॥

शनि उपासना मन्त्र—'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः' ।

(22) शनि मंत्र—'ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहचक्रवर्तिने शनैश्चराय क्लीं ऐं सः स्वाहा' ।

इस मंत्र का 76 हजार जप और हवन करने से शनिकृत अरिष्ट की शान्ति होती है ।

राहु ध्यान :

शीतांशुमित्रान्तकमीड्यरूपं घोरं च वैडूर्यनिभं द्विबाहुम् । त्रैलोक्यरक्षाप्रदमिष्टदं तं राहुग्रहेन्द्रं हृदये भजेऽहम् ॥

राहु-उपासना मन्त्र—'ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः' ।

(23) राहु मंत्र—'ॐ क्रों क्रीं हुं हुं टं टंकधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं मैं स्वाहा' ।

इस मंत्र का 72 हजार जप करने पर राहुग्रह का अरिष्ट दूर होता है ।

केतु ध्यान :

लांगुलयुक्तं भयदं जनानां कृष्णाम्बुभृत्संनिभमेकवीरम् । कृष्णाम्बरं शक्तित्रिशूलहस्तं केतुं भजे मानसपंकजेऽहम् ॥

(24) केतु मन्त्र—'ॐ ह्रीं क्रूं क्रूररूपिणे केतवे ऐं सौं स्वाहा' ।

उपर्युक्त मन्त्र का 28 हजार जप करने पर केतु ग्रह का अरिष्ट दूर होता है ।

द्वादश राशियों के मन्त्र

जिनकी जन्म राशि अज्ञात हो, उनकी नाम राशि पर ही उस राशि मंत्र का जप करने से शांति होती है । अपनी-अपनी जन्म राशि के मंत्र का नित्य एक माला जप करने से आरोग्य प्राप्त होता है और चित्त प्रसन्न रहता है । नित्य प्रातःकाल मन्त्र जप करने के बाद ही दूसरा कार्य करना चाहिए ।

(25) मेष राशि मन्त्र—'ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीनारायणाय नमः' ।

(26) वृषभ राशि मन्त्र—'ॐ गोपालाय उत्तर ध्वजाय नमः' ।

(27) मिथुन राशि मन्त्र—'ॐ क्लीं कृष्णाय नमः' ।

(28) कर्क राशि मन्त्र—'ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः' ।

(29) सिंह राशि मन्त्र—ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः' ।

(30) कन्या राशि मन्त्र—ॐ नमो प्रीं पीतांबरायनमः' ।

(31) तुला राशि मन्त्र—'ॐ तत्वनिरंजनाय तारक रामाय नमः' ।

(32) वृश्चिक राशि मन्त्र—'ॐ नारायणाय सुरसिंहाय नमः' ।

(33) धन राशि मन्त्र—'ॐ श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्वपंताय नमः' ।

(34) मकर राशि मन्त्र—'ॐ श्रीं वत्सलाय नमः' ।

(35) कुम्भ राशि मन्त्र—'ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः' ।

(36) मीन राशि मन्त्र—ॐ क्लौं उद्धृताय उद्धारिणे नमः' ।

मंत्र जाप संख्या 108 का रहस्य

भारतीय दर्शन में हमारे ऋषि-मुनियों ने मन्त्रों की जाप-संख्या 108 (एक सौ आठ) ही क्यों बताई है ? मन्त्र और संख्या के बीच क्या सम्बन्ध है तथा इसका वैज्ञानिक आधार क्या है ? ऐसी ही अनेक जिज्ञासाओं का समाधान पाठकों के सामने प्रस्तुत है।

● मन्त्र जाप संख्या 108 ही क्यों ?

क्या आपने कभी यह सोचा है कि हम जो मंत्र-जाप करते हैं, या गुरु द्वारा मंत्र प्रदान किये जाने पर यह आदेश मिलता है कि इस मंत्र का नियम से नित्य 108 जाप करना है तो इस 108 संख्या का हमारे मंत्र-जाप से क्या संबंध है ? यह संख्या पूरी 100 क्यों नहीं बतायी गयी ? यह कोई और संख्या भी तो हो सकती है। इस गूढ़ रहस्य का भेदन करने पर जो परिणाम अध्ययन-मनन व चिंतन द्वारा प्राप्त हुआ, वह पूर्णरूप से वैज्ञानिक है। हमें अपने प्राचीन ऋषियों के चिंतन व अगाध-ज्ञान पर श्रद्धा से नतमस्तक होना पड़ता है।

इस जगत में हम जो कुछ भी देखते हैं, उन सबमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—ये पंच तत्व हैं। इनकी उत्पत्ति का स्रोत आकाश है—आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी का गुण गंध, जल का रस, अग्नि का तेज, वायु का स्पर्श और आकाश का शब्द है। इस प्रकार संसार के सभी पदार्थों का मूल गुण आकाश तत्व है—जैसे संसार के सभी पदार्थों मूल गुण शब्द है, इसी कारण शब्द को 'शब्द-ब्रह्म' या 'परमात्मा' का प्रतीक कहा गया है।

● शब्द और संख्या का अंत: संबंध

यों तो संपूर्ण शब्द ब्रह्म के ही रूप हैं, परंतु भिन्न-भिन्न शब्दों का गुण और प्रभाव भी भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए प्रत्येक शब्द को अंक या संख्या में परिवर्तित कर उसकी माप कर ली जाती है। विभिन्न प्रयोजनों की पूर्ति के लिए विभिन्न मंत्रों की जाप-संख्या भी हजार, ग्यारह सौ, लाख, सवा लाख आदि हुआ करती है। संख्या और शब्द के संबंध से हमारे ऋषि पूर्णरूप से परिचित थे। यही वजह है कि किसी मंत्र में सौ अक्षर हैं, तो किसी में 22 अक्षर हैं, आदि-आदि। शब्द और संख्या का घनिष्ठ संबंध है।

इसी प्रकार संख्या और क्रिया (जाप) का भी घनिष्ठ संबंध है। मंत्र और प्रयोजन के अनुसार मालाएं भी भिन्न-भिन्न हुआ करती हैं, उदाहरण के लिए 25 मणियों की माला, 27 मणियों की माला, 30 मणियों की माला आदि, किंतु रुद्राक्ष की 108 मणियों की माला सर्व-सिद्धिदायक मानी गयी है। 108 संख्या जाप के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानी गयी गयी है। 108 की संख्या का जितना महत्त्व है, उतना ही इस संख्या में निहित रहस्य भी महत्वपूर्ण है।

● संख्या की व्याख्या

108 संख्या में 1,0,8 तीन अंक हैं। इन तीनों अंकों के गूढ़-रहस्य यह हैं—

अंक-1 व्यापक, एक ब्रह्म का बोधक है, जब वह अद्वैत रूप से रहता है। तात्पर्य यह है कि शब्द और संख्या में संबंध होने के कारण समस्त पदार्थों के मूल में जैसे शब्द हैं—वैसे ही अंक भी।

० — शब्द के मूल—आकाश को शून्य कहते हैं, और अंक के मूल को भी शून्य, शून्य से ही शब्द, और अंक की उत्पत्ति होती है।

ॐ पूर्णमदः पूर्ण मिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

अंक-8 माया का द्योतक है, यदि आप आठ के पहाड़े को गुणा करें, तो गुणनफल जोड़ने पर योग घटता-बढ़ता जाता है, यही हाल माया का है। वह निरंतर घटती-बढ़ती रहती है, किंतु जब ब्रह्म रूप अंक एक और पूर्णता का प्रतीक शून्य आया, वहीं माया तिरोहित हो जाती है, उदाहरण स्वरूप—

$8 \times 1 = 8$
$8 \times 2 = 16 = 1 + 6 = 7$
$8 \times 3 = 24 = 2 + 4 = 6$
$8 \times 4 = 32 = 3 + 2 = 5$
$8 \times 5 = 40 = 4 + 0 = 4$
$8 \times 6 = 48 = 4 + 8 = 12 = 1 + 2 = 3$
$8 \times 7 = 56 = 5 + 6 = 11 = 1 + 1 = 2$
$8 \times 8 = 64 = 6 + 4 = 10 = 1 + 0 = 1$
$8 \times 9 = 72 = 7 + 2 = 9$
$8 \times 10 = 80 = 8 + 0 = 8$

● अंक ज्योतिष का आधार

इसी तरह यदि 108 संख्या को जोड़ा जाए, तब $1 + 0 + 8 = 9$ परिणाम आता है और यदि 9 के पहाड़े का गुणनफल जोड़ा जाए, तो परिणाम 9 ही रहेगा। इसी प्रकार ब्रह्म न घटता है, और न ही बढ़ता है। आद्या शक्ति एवं ब्रह्म—'सीताराम', 'राधाकृष्ण' नाम का मूल्यांकन अंक-ज्योतिष के नियम से करें, तो परिणाम 108 ही आएगा। सीता और राधा नाम शक्ति-स्वरूप हैं और राम तथा कृष्ण ब्रह्मरूप हैं। सीताराम व राधाकृष्ण का वर्णक्रम से मूल्यांकन निकाला जाए, तो परिणाम 108 ही निकलता है, जैसे—

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	ऋ	लृ	अं	अः
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
प	फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
ष	स	ह	क्ष	त्र	श				
31	32	33	34	35	36				

इस वर्णक्रम के अनुसार सीताराम, राधाकृष्ण के वर्णों का मान निकाल कर देखें—

सीता स+ई+त+आ
32+4+16+2=54
राम र+आ+म
27+2+25=54 } 54+54=108

राधा र+आ+ध+आ
27+2+19+2=50
कृष्ण क+ऋ+ष+ण
1+11+31+15=58 } 50+58=108

उपर्युक्त उदाहरण अंक-ज्योतिष के आधार पर थे। अब नीचे ज्योतिष-विद्या का आधार प्रस्तुत है—

● ज्योतिष का आधार

ज्योतिष-विद्या के अनुसार सूर्य जब संपूर्ण 12 राशियों पर एक पूरा चक्र (चक्कर) लगा लेता है, तब एक वृत्त पूरा होता है। एक वृत्त में 360 अंश होते हैं। इस प्रकार सूर्य की एक प्रदक्षिणा के अंशों की कला बनाएं, तब 360×60=21,6000 कला हुई। यह सर्व विदित है कि सूर्य 6 मास उत्तरायण तथा 6 मास दक्षिणायन रहता है। इस प्रकार 21,600 को दो भागों में विभक्त करने से 10,800 संख्या प्राप्त हुई।

प्रत्येक दिन सूर्योदय से लेकर दूसरे दिन के सूर्योदय तक का 'काल' का माप 60 घड़ी माना गया है। एक घड़ी=60 पल और एक पल = 60 विपल। इस प्रकार एक अहोरात्र (दिन × रात) 60×60×60=21,600 विपल हुए। इसके आधे दिन में 10,800 और इतने ही विपल रात्रि में हुए।

हमारे महर्षियों ने हजारों-लाखों वर्ष पूर्व आजकल की वैज्ञानिक प्रणाली जैसी दशमलव प्रणाली के सदृश काल और संख्या का समन्वय किया था। इसी के अनुसार 10,800 की उपलब्ध संख्या अंक के दो शून्य छोड़ देने पर 108 की संख्या प्राप्त हुई। हमारे महर्षियों ने शब्द, काल, संख्या आदि का पूर्णरूप से सामंजस्य कर दिया था, तभी तो 108 मनकों की माला से मन्त्र-जप का विधान है। 108 जप संख्या आदि-[illegible] और ब्रह्म का बोध कराती है।

लक्ष्मीप्रद मन्त्र

लक्ष्मी मन्त्रों के दो भेद हैं: लक्ष्मी और रुक्मणि। इन मन्त्रों की सिद्धि तीन वर्षों में होती है। नीचे मन्त्रों के अलग-अलग प्रयोग लिखे जाते हैं।

लक्ष्मी ध्यान :

लक्ष्मी पद्मासनगतकटि सूर्यशीतांशुनेत्रा-
मुद्यद्मुतस्वकरवयरुचि पद्मशंखासिपाणिम्।
नानामुक्तामणिसुशकलाभूषितांगां द्विहस्ता
नित्यं लोकत्रियफलदां नौम्यहं भक्तिपूर्वम्'॥

लक्ष्मी स्तोत्र :

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया संपदुच्चैः श्री पद्माधारिणी॥
द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं संपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदाराविभिः सह॥

इस स्तोत्र के पाठ से घर में लक्ष्मी स्थिर होती है।

लक्ष्मी गायत्री : **ओ३म्महालक्ष्मै च विद्महे, महाश्रियं च धीमहि, तन्नो श्रीः प्रचोदयात्'।**

मंत्र सिद्ध करने के पूर्व इस गायत्री मंत्र का एक हजार जप करना चाहिए।

'सदा लक्ष्मी मन्त्र—**ओ३म् नमो धनदायै स्वाहा'।**

इस मंत्र के एक लाख जप करने से धन प्राप्त होता है। इस मंत्र से अभिमन्त्रित [illegible] अंजन भी बनता है, जिससे नेत्रज्योति बढ़ती है। उसकी विधि यह है कि आश्लेषा नक्षत्र और रविवार को सायंकाल दाडिम (अनार) बीज का रस लेकर और अष्टमी मंगलवार को कमल की जड़ एवं शतावरी का रस लेकर उसे मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। फिर शुद्ध काजल लेकर इन रसों में उसे घोंट अंजन तैयार करें। इस अंजन को तेत्र में लगायें।

ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्र—**ओ३म् ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठलक्ष्मी स्वयं भुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः'।**

सवा लाख जप से यह मन्त्र सिद्ध होता है।

सिद्ध लक्ष्मी मन्त्र—**ओ३म् ऐं, क्लीं सौं ऐं ह्रीं श्रीं ओम् नमो भगवति मातंगीश्वरी सर्वजनमनोहारिणी सर्वजनमनोहारिणि सर्वमुखरंजिनि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सर्वदुष्टमृगवशंकरि सर्वलोकवशंकरि ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ओम्॥**

इस मन्त्र का दस हजार जप करने पर उस मनुष्य से जो भी प्रश्न किया जाय वह पूर्ण सफल होगा।



सन् 1984 की ग्रह स्थिति का विश्व पर प्रभाव

(लेखक—विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य, सम्पादक विज्ञान ज्योति: मासिक पत्र खुर्जा (उ० प्र०)

यह सर्व विदित विषय है कि विश्व का घटना चक्र रात-दिन ग्रहों नक्षत्रों के प्रभाव में बंधा हुआ चलता रहता है। सौर जगत के ग्रहों की परिषद् में प्रति वर्ष संसार को संचालित परिवर्तित करने के वास्ते एक प्रभावशाली परिवर्तन भी होता रहता है। इस ग्रहों की परिषद् में निर्वाचित शुभाशुभ एवं बलाबल योग से प्रकृति के अनुकूल विश्व में उथल-पुथल, उलट-पलट एवं विशेष घटनायें घटती हुई देखी जाती हैं। सन् १९८४ ई० में आकाशी कौंसिल दश पदाधिकारी ग्रहों में पाँच पदों का अधिकार शुभ ग्रहों को प्राप्त हुआ है तथा पांच पदों का अधिकार पाप ग्रहों को प्राप्त है। यह सम्वत्सर विक्रमी सम्वत्सर में २०४१ का रहेगा, इस सम्वत्सर का नाम ब्रह्म विंशतिका में ईश्वर नाम का सम्वत्सर गणना में आता है। मेरे द्वारा लिखित व्यापार विज्ञान द्वितीय भाग में इन सम्वत्सरों के फलादेश विवेचन में इस प्रकार फला देश विवेचन मैंने किया है।

धात्रीव-धारयति- तत्र धनं धरित्री।
भूम्यां, भवं, सकल, धान्यथापि सरयम्॥
जन्तून- तथाखिल-जनान् सततं वहन्ती।
प्राप्ते तथेश्वर -मिते-भुवि वत्सरेऽपि॥

अर्थ स्पष्ट है कि ईश्वर नाम के सम्वत्सर में भूमि, धन तथा धान्य को उत्तम रूप से धारण करती है। व्यापारिक जिन्सों के मार्केट भी काफी मन्दी तेजी में जाते हैं। परिणाम अन्त में सुभिक्षकारी होता है। समस्त जीव-जन्तुओं का भार वहन करने की क्षमता, भूमि में होती है। यह ईश्वर नाम का सम्वत्सर सुभिक्ष का वर्ष कहलाता है। जबकि इस वर्ष का राजा चन्द्रमा तथा मंत्री का अधिकार भी शुभ ग्रह शुक्र को प्राप्त हुआ है। शनि ग्रह तुला में चल रहा है। धान्येश का अधिकार इसको है। दक्षिणी गोलार्द्ध में इसका वर्चस्व ज्यादा रहेगा। बृहस्पति ग्रह धन राशि में अपना अधिकार रखता है।

जगल्लग्न कुण्डली

(१) विश्व भर के सभी देशों पर ग्रह चक्र का अपना अपना प्रभाव शुभ शुभा-शुभ दृष्टि से भिन्न भी होता ही है तथा पिजगल्लग्न को ध्यान में रखते हुए ग्रहों का प्रभाव प्रायः सामान्य से अच्छा ही रहेगा। सिंह लग्न विश्व का जगल्लग्न है जहां चन्द्रमा बैठा है, जो बृहस्पति के कन्ट्रोल में है। साथ-साथ उच्च राशि के सूर्य पर भी बृहस्पति ग्रह का कन्ट्रोल बना हुआ है। सुख भाव में मंगल अपने घर का तथा हर्ष स्थान में शनि उच्च का यह ग्रह स्थिति विश्व की दृष्टि से बहुत श्रेष्ठ ज्ञात होती है। शुक्र ग्रह भी अष्टम भाव में उच्च राशि का है। अतः ज्ञात होता है कि विश्व भर का वातावरण खराबी में जाने से बचेगा। संसार की प्रधान शक्तियाँ अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन, ब्रिटेन परस्पर स्पर्धा में अवश्य बढ़ना चाहेंगी, मगर विश्व के जगल्लग्न में चन्द्रमा पर बृहस्पति का कन्ट्रोल कोई खराबी अथवा विशेष दोषकारक घटना चक्र होने नहीं देगा। यद्यपि यूरोप के देशों में शनि तथा राहु के प्रभाव से फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, रूस, जर्मनी, हालैण्ड, पोलैंड आदि में तथा मुस्लिम देशों में मिश्र, ईरान, ईराक आदि देशों में अशान्ति का वातावरण काफी उग्र होगा। पूंजीवाद तथा साम्यवाद की प्रति स्पर्धा बड़े राष्ट्रों में विषम स्थिति पैदा करेगी। परस्पर विरोधी भाव बढ़ेगा परन्तु हानि की संभावना ज्ञात नहीं होती है, क्योंकि विश्व जगल्लग्न की कुण्डली की ग्रह स्थिति बहुत अच्छी पोजीशन में सिंह लग्न में आई हुई है।

(२) मध्यपूर्वीय अरब तथा ईज़राइल की समस्याएँ काफी समय से विफल होती आ रही हैं। तुला राशि के शनि में अब धीरे-धीरे समस्याऐं शिथिल हो जायेंगी, सम्बंधों में भी सुधार बनना संभव होगा। ईरान, ईराक का सम्बन्ध इसी प्रकार सुधार में जाना जाता है। अरब राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य रहते हुए भी रूस आदि प्रधान शक्ति के सम्पर्क से अरब देश हित में आवेंगे। मिश्र भी अरब देशों से सहानुभूति रखेगा। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, पुर्तगाल ईरान, मिश्र आदि देशों में क्रान्ति के योग संभव होंगे। आन्तरिक संघर्ष जनधन की हानि, अशान्ति का होना पाया जाता है। दक्षिणी देशों में भी अशान्तियां बनेंगी।

सन् 1984 ई० में व्यापार जगत् में ग्रहों के प्रभाव से कुछ अचूक चांस

लेखक - विशुद्धानन्द गौड ज्योतिषाचार्य,विज्ञान ज्योतिः कार्यालय, खुर्जा (उ० प्र०)

(१) प्रस्तुत लेख से हम सन् १९८४ ई० के अन्दर होने वाले ग्रहों के संचार एवं अतिचार संयोग-वियोग प्रभाव से व्यापार जगत् में व्यापारिक विभिन्न कुछ जिन्सों के अचूक चांसों का संकेत दे रहे हैं अतः १ जनवरी सन् १९८४ ई० से लेकर सं० २०४१ विक्रमी पौष शुक्ला नवमी सोमवार दिनांक ३१ दिसम्बर सन् १९८४ ई० तक की ग्रह संचार व्यवस्था के प्रभाव का व्यापार में होने वाली घटा-बढ़ी का उल्लेख यहाँ हम कर रहे हैं। जनवरी सन् १९८४ ई० के प्रथम सप्ताह में धनराशि की संक्रान्ति की गोचर स्थिति इस प्रकार की है। मिति पौषवदी अमावस्या मंगलवार सं० २०४० विक्रमी की ग्रह (दिनांक ३ जनवरी सन् १९८४ ई० की स्थिति) सन् १९८४ के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति गोचर की प्रायः व्यापार जगत् में तेजी का संकेत देती है। यहां शनि, मंगल दोनों ही पाप ग्रहों का योग तुला राशि में चल रहा है। गुरु ग्रह धनराशि में उदय हो गया है, यह भी तेजी करता है। बुध ग्रह वक्री है, व्यापारिक जिन्सों में तेजी करता है। शास्त्र में लिखा है कि "भूमि पुत्रस्तुते यातः सर्वधान्य महर्धता", माषा मुद्रा स्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः" अर्थ स्पष्ट है कि सभी प्रकार का गल्ला, धान्य, उड़द, मूंग, मसूर, सरसों, अलसी, अरण्डी, पाट, बारदाना, रुई, कपास, सोना, चांदी मूल धातुएँ तेजी में जायेंगी। इस लेख में वर्ष भर की लाईनों के हिसाब से भी व्यापारिक जिन्सों में रुई, कपास, पाट, बारदाना, सोना, चांदी, सरसों, अलसी, अरण्डी, गल्ला आदि प्रमुख वस्तुओं की मन्दी-तेजी की लाईन का भी उल्लेख मिलेगा।

(२) मन्दगति ग्रहों में शनि-बृहस्पति, राहु-केतु मुख्य ग्रह हैं। आधुनिक अंग्रेजी के विद्वान पच्यून, हर्षाभ आदि ग्रहों के प्रभाव को भी गणित द्वारा अपनाते हैं। परन्तु हम प्राचीन गणित ज्योतिष के उपयुक्त मन्दगति ग्रहों का प्रभाव ही ज्यादातर मानते हैं। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ग्रहों का प्रभाव संयोग-वियोग, उदय-अस्त का भी मन्दगति ग्रहों के दृष्टि एवं वेध द्वारा प्रभाव बनता है।

रुई, कपास, पाट, बारदाने मार्केट का 1984 का वार्षिक भविष्य

(३) यह जंत्री सन् १९८४ ई० की है और मई ७ ता० के आस-पास में सन् १९८३ ई० में ही लिखी जा रही है। ग्रह चाल की भावी गतिविधि जो सन् १९८४ ई० में चलती है उसका विवेचन ६ मास पूर्व ही हम कर रहे हैं। दिनांक ७ मई सन् १९८३ के आस-पास के समय में बम्बई में रुई बाजार में प्रतिखण्डी गुजरात रुई (७९७) ३७५० रु० से ३८५० रु० भाव है, सौराष्ट्र सी.ओं, ४००० रु० से ४२०० रु० तक, महाराष्ट्र ४८५० रु० से ४९०० रु०, महाराष्ट्र एच (४) ५१५० रु० से ५२०० रुपये तक, पंजाब जे (३४) ५५०० रुपये से ५७५० रु० तक, गुजरात एस ४, एस ओ सी ५६५० रु० से ५८२५ रु० तक भाव तैयार माल में हैं। मध्यप्रदेश में वायदा भी ४००० रु० से ४२४० रु० तक भाव है। यद्यपि रुई, कपास की उत्पत्ति, खपत एवं विश्व भर की रुई बाजार की स्थिति को भी ध्यान में रखते हुए, अमेरिका काफी रुई उत्पादक देश है। बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि भारत भी रुई का निर्यात करने के भी स्थल में आ गया है। भावी सन् १९८४ ई० में आरम्भ में ही बृहस्पति ग्रह का संचार धनराशि में गतिशील रहेगा सूर्य, बुध साथ में आरम्भ में रहते हैं। शनि ग्रह की दृष्टि भी वर्ष भर तक बृहस्पति ग्रह पर बनी रहनी है, गोया शनि का वेध चालू रहेगा। मेरे द्वारा लिखित व्यापार विज्ञान प्रथम भाग में धनराशि के बृहस्पति में अनेक व्यापारिक जिन्सों में तेजी के योग लिखे हैं फलतः रुई, कपास, पाट, बारदाना, सूत के भावों में भी तेजियां बनेंगी। व्यापार विज्ञान प्रथम भाग ६६ पेज पर स्पष्ट लिखा है।

धनगते च गुरोहि महर्घता।
कस कपास शणान्न स्वर्ण के॥
घृत; गुडं, तिल, तेल समर्घकम्।
भवति माष तिलादि समन्वितम्॥१॥

अर्थ स्पष्ट है कि धनराशि में बृहस्पति ग्रह रुई, कपास, शण, अन्न-धान्य, स्वर्ण आदि वस्तुओं में तेजी कारक होता है। बृहस्पति उदय काल में मन्दी का रियेक्शन लाया करता है। मन्दी के रियेक्शन में माल तैयार रुई, कपास, सूत, पाट, बारदाना का खरीद करना अच्छा है जो आरम्भ जनवरी प्रथम सप्ताह में ही तैयार माल खरीद

करना उत्तम रहेगा। अवश्य यह योग लाभकारी रुई, कपास, पाट, बारदाने में रहेगा। दिसम्बर सन् १९८३ ई० का अन्तिम सप्ताह भी खरीदने का समय है। जनवरी सन् १९८४ ई० का प्रथम सप्ताह तो है ही। मेरे द्वारा लिखित व्यापार विज्ञान प्रथम भाग २२३ पृष्ठ पर स्पष्ट लिखा है:।

शुभ: कोऽपिखेटो वली यत्रराशी।
वलीभिश्च दृष्टो यदा पाप खेटै: ॥
तदा मन्दतायां भवेद् वा महर्घम्।
शुभै: दृष्टि योगात् सदा मन्द तैव ॥२॥

आरम्भ मास में बलवान धनराशि का बृहस्पति, शनि पाप ग्रह मंगल दोनों के योग से देखा जा रहा है तो यह यहां मन्दे भावों में तुरन्त ही तेजी का चांस बनाने ही वाला है। जनवरी तथा फरवरी मास दोनों ही मासों में रुई, कपास, सूत के भाव तेजी में बने रहेंगे। ख्याल है कि आजकल जो भाव तैयार माल में ऊपर जो दिखाये गये हैं ऊंचे तेजी के भाव हैं अभी सन् १९८३ के अन्त में धीरे धीरे मन्दे भाव होंगे। काफी मार्किटों में मन्दियां दिसम्बर सन् १९८३ तक आ जायेंगी, जबकि मन्दे बने भावों में स्टाक करना तैयारी माल का अच्छा रहेगा। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि सन् १९८४ ई० के फरवरी के अन्त तक तथा मार्च के प्रथम सप्ताह तक अच्छी तेजियां बन सकती हैं। भावों का स्तर फिर इसी लेविल में आ जाना सम्भव पाया जाता है, जो ऊपर भाव हैं।

(४) अप्रैल सन् १९८४ ई० के प्रथम सप्ताह में सम्वत् २०४१ विक्रमी के लगने पर शनि, मंगल की चाल वक्र गति में जायेगी। उसका प्रभाव धनराशि के बृहस्पति पर विपरीत पड़ेगा। भावों में मन्दापन चलेगा। यहां पाट, बारदाना, बोरा, शण तो तेजी में शनि मंगल की वक्री चाल से प्रभावित होगा, महंगा ही होगा मगर रुई, कपास, सूत, में यह धन के गुरु में मन्दापन आयेगा। यह मन्दापन रियेक्शन के रूप में २५।२६ अप्रैल तक ही रहेगा।

(५) २८ ता० अप्रैल के आस-पास के समय में बृहस्पति ग्रह वक्री हो जायेगा जो धनराशि में वक्री होगा, धीरे-धीरे तेजियां मार्किटों में रुई, सूत, बोरा, सन आदि में चलेंगी, २७।२८ जुलाई तक घटा-बढ़ी के साथ तेजियों का प्रभाव चलेगा।

(६) अगस्त, सितम्बर तथा अक्टूबर तीनों मासों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ मार्केट मन्दी का रुख अपनायेगा, जबकि अक्टूबर मास के अन्त तक तथा नवम्बर प्रथम सप्ताह तक पुनः हर घटे भाव रुई, कपास, पाट, बारदाना, सूत का स्टाक करना अच्छा है। नवम्बर, दिसम्बर में ग्रह चाल तेजी की रहेगी, लाभ खरीदे माल में मिलेगा, खरीद कर माल बेचना अच्छा है। आगे का हाल सन् १९८५ ई० की जंत्री बतायेगी।

नोट—व्यापारी बन्धुओं को ग्रह चाल के प्रभाव से हम यह स्पष्ट करा देना चाहते हैं कि पिछले समय में जो भाव ५५०० रु० खण्डी के आस-पास रुई के ऊंचे हो गये थे, वे मन्दी स्थिति में अब उपर्युक्त दशा में भावों तक आ गये हैं, हो सकता है मूल मन्दी में सन् १९८४ ई० लगने से पूर्व ३१०० रु० तथा ३२०० रुपया खण्डी तक भाव जा सकते हैं जबकि यहां पुनः स्टाक करने तथा माल पकड़ने का अवसर व्यापारियों के वास्ते अच्छा होगा, लाईन का उल्लेख ऊपर कर दिया गया है। सन् १९८४ में भाव फिर तेजी में जायेंगे। मार्च तक मार्केट में अच्छी तेजियां पुनः प्राप्त हो जायेंगी।

जूट, पाट, बारदाना, विट्विल सन् १९८४ का भविष्यफल

(१) जूट, पाट, बारदाना, विट्विल का व्यापार कलकत्ता, कानपुर, दिल्ली में विशेष रूप से होता है। पश्चिमी बंगाल में जूट की पैदावार ज्यादा है बारदाना बनाने के कारखाने भी अधिकांश में पश्चिमी बंगाल में ही हैं, बृहस्पति, शुक्र, शनि, मंगल के प्रभाव में ज्यादातर इस जूट, सन, बारदाना पर तेजी मन्दी चलती है।

ता० ७ मई कलकता विट्विल मई वायदा ५१३ खुला/नीचे में ५१२ रु० ७० पैसे गया, बंद ५१३ रु० ७५ हुआ। अगस्त वायदा ५६४ रु० ७५ पैसे खुला/बंद ५६५ रु० हुआ। वर्तमान भावों की स्थिति को ध्यान में रखते हुये भविष्य की ग्रह दशा के संचार को देखते हुये पाट, बारदाने, विट्विल का व्यापार अब लाभ का ही ज्ञात होता है।

(२) दिनांक १ जनवरी सन् १९८४ ई० में आरम्भ में राहु वृष राशि पर रहेगा जैसा कि गोचर कुण्डली में शनि, मंगल का योग आरम्भ में तुला में है। यह ग्रह स्थिति तेजीकारक ही है। बृहस्पति ग्रह की वृष राशि के राहु पर कोई दृष्टि नहीं है, अतः सन् १९८३ ई० के दिसम्बर मास में अथवा आरम्भ जनवरी सन् १९८४ ई० में बोरा-पाट, विट्विल की खरीद बाजार भाव अच्छी रहेगी। मार्च के प्रथम सप्ताह तक रुई, कपास की तेजी के साथ पाट, बारदाना में भी तेजियों का योग रहेगा, परन्तु मार्च प्रथम सप्ताह से अप्रैल प्रथम सप्ताह तक एक मास में पाट, बारदाना, विट्विल

में अच्छी मन्दी होगी। रुई, कपास में कम मन्दी रहेगी। जब यहां एक अच्छी मन्दी बोरा पाट, बारदाना, बिट्विल में आवे, बाजार भाव तैयारी माल का स्टाक करना अच्छा है तथा भावी अगस्त वायदा विट्विल की खरीद बहुत ही अच्छी रहेगी। इस वास्ते अप्रैल प्रथम सप्ताह से मार्केट में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी का दौर चलेगा। यह तेजी का समय पाट, बारदाने में प्रायः १८, १६ जून तक बराबर बना रहेगा।

(३) १६, २० जून के बाद आषाढ़ शुक्ल पक्ष में धीरे-धीरे मन्दियां बनेंगी। दुतर्फा घटा-बढ़ी यहां ज्यादा रहेगी। मन्दी का रुख रहेगा वर्षा की कमी का अनुभव होगा। यहां मंगल की ग्रह चाल मिथुन राशि में ही सूर्य से आगे चल रही है, आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे, ओस समान। यहां २ जुलाई व्यास पूजा पर पूर्णिमा के दिन वायु परीक्षा भी करनी अच्छी है। बृहस्पति तथा शनि दोनों ही वक्री चाल में हैं, घटा-बढ़ी के साथ रुख तेजी का बनेगा। घटा-बढ़ी के साथ तेजी का रुख दिनांक ३१ अगस्त तक बना रहेगा।

(४) सितम्बर तथा अक्टूबर मासों में रुख घटा-बढ़ी के साथ मन्दी का जायेगा। १५ नवम्बर के आसपास के समय से दिसम्बर के अन्त तक अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बनेंगी। यहाँ तेजी से लाभ उठाना चाहिये।

सोना चांदी धातुबाने पर वार्षिक भविष्य सन् 1984

(१) ता० ७ मई सन् १९८३ ई० को यह रिपोर्ट लिखते समय बम्बई सर्राफा बाजार में भाव चांदी ९९६ (प्रति किलो) खुली ३४६५, बंद ३४७५ रु०, सोना स्टेण्डर्ड (प्रति दस ग्राम) १८७५ रु० खुला, बंद १८७५। सोना २२ कैरेट (प्रति दस ग्राम) १७१६ खुला, बंद भी १७१६ हुआ। यह भविष्य की लाईन सोना, चांदी, धातुबाने में सन् १९८४ के वास्ते ग्रह चाल के आधार पर दी जा रही है। सन् १९८४ ई० के समस्त वर्ष में भावों का अनुमान यद्यपि सोना, चांदी, धातुबाने में कोई खास विशेष मन्दे भाव जाने का नहीं है तथा इस जंत्री में भी सोने, चांदी के विषय में कुछ संकेत दिये गये हैं। इस लेख में हम व्यापारी बन्धुओं का ध्यान सोने, चांदी के विषय में पिछले समय जब सन् १९८० ई० के प्रथम सप्ताह में चांदी ६८०० रु० तक तथा सोना २२०० रु० से २५५० रु० तक पहुंच गया था तथा तुरन्त ही मन्दी के योग बनने पर दो हजार से नीचे भाव चला गया था। यह तो वहां १०, १२ दिन में ही काफी मन्दी आ गई थी। इस समय रिपोर्ट लिखते समय सोना, चांदी के भाव, मई सन् १९८३ के हमने दर्शाये हैं। व्यापारी बन्धु ध्यान रख लें, इस समय बृहस्पति ग्रह वृश्चिक राशि में चल रहा है। जो भाव ऊपर के हैं, मौजूदा हैं। जनवरी सन् १९८४ ई० में बृहस्पति ग्रह धन का रहेगा, जबकि मंगल, शनि तुला में अपना संचार उस समय रखता है।

(२) हम यहां भावी ग्रह दशा सन् ८४ को ध्यान में रखते हुये व्यापारियों का ध्यान सन् १९८४ ई० के साल के भावों की स्थिति की समीक्षा करने से पूर्व इस तरफ भी आकर्षित कर देना चाहते हैं कि इस वर्ष सन् १९८३ के अन्त तक उतार चढ़ाव में चांदी तेजाबी में भाव २५०० रु० अथवा २४७५ रु० तक नीचे में ९९९, चांदी २५०० रु० तक जा सकती है। सोना बिठूर भी १६०० रु० तक नीचे में जा सकता है। इस सन् १९८३ के अन्त में दिसम्बर मास में २१, २२ तारीख में बृहस्पति धन राशि में जाने से पूर्व दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में यह वृश्चिक राशि में रहते हुये अस्त होगा और दिसम्बर के अन्त में २७, २८ ता० में उदय होगा। यहां एक मन्दी का अच्छा योग बन जाना पाया जाता है। मन्दे भावों में सोना, चांदी, धातुबाने का माल व्यापारी बन्धु खरीद कर सकते हैं। यद्यपि धीरे-धीरे नया वर्ष सन् १९८४ ई० तेजी का वर्ष धातुबाने में बनेगा।

(३) ग्रह चाल द्वारा जनवरी सन् १९८४ ई० के प्रथम सप्ताह में ही तुला राशि में मंगल के साथ शनि का योग सोने, चांदी में तेजी के संयोग बनाता है। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिये कि मंगल के साथ शनि का योग सोने चांदी में तेजी के संयोग बनता है। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिये कि मंगल ग्रह दिनांक ७ मार्च को वृश्चिक राशि में जायेगा। शनि का साथ छोड़ देगा, अपने घर को हो जायेगा। इसी मास में ३० मार्च तक वृश्चिक में चलता हुआ वक्री चाल बना लेगा। ३ मई को वक्री चाल से फिर तुला में ही शनि के साथ योग करेगा। १६ जून को तुला में मार्गी होगा। ता० ३ अगस्त को पुनः वृश्चिक में आयेगा, जो मंगल ग्रह १॥ (डेढ़ मास) तक केवल एक राशि पर चलता है कभी-कभी वह अंशुमुखी सी चाल भी अखतियार कर वक्री मार्गी होता हुआ लम्बा समय विभिन्न राशियों में ले लेता है। इस प्रकार के योग में मूल धातुओं में तथा रसादि पदार्थों में, व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटा-बढ़ी होती है। मेरे द्वारा लिखित व्यापार विज्ञान प्रथम भाग में अंशुक योग में मंगल की चाल का विवेचन २३४ पृष्ठ पर किया गया है। अंशुक योग में अंशुमुखी सी चाल होने से बड़ी जबरदस्त घटा-बढ़ी होती है। यहां यद्यपि हमारा ख्याल जनवरी, फरवरी तथा, मार्च तक अच्छी घटा-बढ़ी के साथ सोना, चांदी में तेजी का रुख रहना चाहिये और ७ मार्च से ३० मार्च तक एक मन्दी का साधारण रियेक्शन के रूप में योग आ जायेगा। ३० मार्च के बाद धीरे-धीरे तेजी वक्री चाल में बनेगी। १६ जून को तुला में मार्गी होने तक तेजियां बनी रहेंगी। तुला में मार्गी चाल घटा-बढ़ी के साथ मन्दा

लावेगी। यह मन्दी की चाल ज्यादा मन्दा इस वास्ते नहीं लायेगी कि मंगल का शनि के साथ योग तेजी को वढ़ावा देती रहती है। दुतर्फा घटा-वढ़ी के साथ मार्केट का रुख तेजी के स्तर का बना रहेगा।

(४) दिनांक ३ अगस्त के आसपास के समय से सोना, चांदी, धातुवाने में अगस्त के अन्त तक मार्केट का रुख तेजी का उछाला लेते हुये मन्दी की तरफ जायेगा। ३० अगस्त को गुरु मार्गी होगा। अन्य ग्रहों की चाल भी मन्दी का संयोग देगी। यह मन्दी की लाईन घटा-बढ़ी में १५ अक्टूबर तक रहेगी। शनि सूर्य का योग १५ ता० से २८ अक्टूबर तक दुतर्फा ही घटा-वढ़ी करेगा, कारण दिनांक १ अक्टूबर से ६ अक्टूबर तक सोना, चांदी धातुवाने में तेजी, १० से २३, २४ ता० तक फिर मन्दा। यहां तुला में सूर्य, शनि का योग फिर तेजी करेगा, जो धीरे-धीरे वर्षान्त तक जायेगी।

गुड़, खांड, देशी शक्कर, चीनी बाजार का भविष्य 1984

(१) यह रिपोर्ट सन् १९८४ ई० के वास्ते मई १० ता० सन् १९८३ में लिखी जा रही है, इस समय हापुड़ मण्डी में हाजिर गुड़ बढ़िया पटवार २१२ रु० से २१६ रु० तक, बालटी २२७ रु० से २३७ रु० तक, खाण्डसारी क्रेशर ३८० रु० से ४२५ रु० तक, बढ़िया सल्फर ४४५ रु० से ४६७ रु० तक, चीनी बी ३०, ५२५ रु० से ५३० रु० तक, चीनीसी३०, ५१५ रु० से ५२० रु० तक भाव है। गुड़, खाण्ड, चीनी बाजारों का भविष्य गन्ने की खेती उपज से सम्बन्धित है। भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश तथा बिहार, दक्षिणी भारत में गन्ने की उपज प्रायः अधिक होती है तथा ये वस्तु रसादि पदार्थों में आती हैं। जलचर राशियों मीन, कर्क, वृश्चिक से विशेष सम्बन्धित है वैसे सभी ग्रहों के योगायोग से भी भावी मन्दे - तेजी का ज्ञान हो जाता है। पाप ग्रहों का राशि संचार गन्ने की उपज पर तेजी का प्रभाव डालता है। शुभ ग्रहों का प्रभाव मन्दी कारक होता है। नक्षत्र संचार में श्लेषा, रोहिणी, मघा, ज्येष्ठा, उतराभाद्रपद का विशेष प्रभाव चलता है क्योंकि ग्रहों की संचार प्रणाली राशियों पर आधारित है। शासकीय प्रबन्ध प्रणाली पर भी ध्यान रखना पड़ता है। शासन का भी नियंत्रण चलता है। शहरों में, कस्बों में राशन कार्ड के आधार पर भी चीनी का वितरण शासकीय व्यवस्था में चलता है।

(२) यद्यपि चीनी मिलों में चीनी का उत्पादन काफी ज्यादा हो रहा है जो रिकार्ड उत्पादन कहा जा सकता है, क्रेशर वालों को भी पिछले ही दिनों जाड़ों में सन् १९८३ के आरम्भ में ही सब जिन्से तेज रही, मगर गुड़, खाण्ड, देशी शक्कर के भावों में मन्दापन रहा था। किसानों को भी, व्यापारियों को भी यहां हानि स्थल बना था। बृहस्पति ग्रह वृश्चिक में शनि उच्च तुला के नवांश में वहां गतिशील था, फलतः मार्केट में "द्विर्द्वादश" राशि कूट योग के कारण मन्दा आया। होली बाद धीरे-धीरे उच्च नवांश से शनि आगे बढ़ा तेजियां चली। प्रस्तुत में सन् १९८३ ई० में प्रायः भाव सुधरे हुये ही बने रहेंगे।

(३) सन् १९८४ ई० में शनि, मंगल का तुला राशि में इत्थशाल योग रहता है। धन राशि के बृहस्पति से यहां भी "द्विर्द्वादश" राशि कूट बना हुआ रहेगा। इस स्थल में किसानों को भी मार्जन मिलेगा तथा व्यापारियों को भी लाभ के स्थल प्राप्त होंगे। दिनांक १६, १७ मार्च सन् १९८४ तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, देशी खाण्डसारी चीनी का व्यापार उतार चढ़ाव में उतना चलता रहेगा, जो लोट पलट में मार्जन मिलता ही रहेगा। शनि ग्रह-चाल वक्री रहेगी। नया सम्वत्सर २०४१ के आरम्भिक काल से ग्रह चाल का प्रभाव तेजी में जायेगा। सभी रसादि पदार्थ ग्रह चाल से तेजी पकड़ेंगे फलतः गुड़, शक्कर, चीनी, खाण्डसारी का होली से पूर्व किया हुआ स्टाक बराबर लाभकारी रहेगा।

(४) १ जुलाई से २१, २२ जुलाई तक सामान्य मन्दे का रियेक्शन आकर दिनांक २२, २३ अक्टूबर तक उपर्युक्त जिन्सों में बराबर तेजियाँ बनी रहेंगी, अच्छा मार्जन प्राप्त होगा। २४, २५ अक्टूबर से नई फसल का प्रभाव प्रभावित होगा, जो नवम्बर, दिसम्बर तक फसल में काफी उत्पत्ति की संभावना है। धन राशि का बृहस्पति रहते दिसम्बर सन् १९८४ तक मार्केटों में अच्छा पक्का माल स्टाक करने वालों को लाभ प्राप्त होगा। सन् १९८५ की जंत्री में जिसका फल विवेचन किया जायेगा।

गेहूँ, चना, जौ, मटर, बाजरा तथा चावल आदि धान्यों का भविष्य 1984

(१) हमारे देश में गेहूं, चना, जौ, मटर, बेझड़, मक्का और चावल आदि खाद्यान्नों की पैदावारी काफी अच्छी होती है। देश अब खाद्यान्नों के विषय में काफी आत्म-निर्भर हो गया है। खाद्यान्नों के विषय में वर्षा तथा पैदावार एवं आयात-निर्यात तथा सरकारी नीति आदि का ध्यान रखते हुए तथा ग्रहों के प्रभाव का भी सुभिक्ष दुर्भिक्ष का भी ख्याल रखते हुए, तेजी मन्दी की कल्पना की जाती है। ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार भावी सन् १९८४ में दशपदाधिकारियों में भले ही राजा चन्द्रमा तथा मन्त्री शुक्र ग्रह अपने प्रभाव से सुभिक्ष का संचार करने में अपना महत्वपूर्ण

सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुभिक्ष का संचार बढ़ायेंगे परन्तु वर्ष के दशपदाधिकारियों में धान्येश ग्रह का अधिकार शनि को ही प्राप्त हुआ है। अपने स्वभाव तथा गुण के अनुसार यह दुर्भिक्ष पैदा कराता है। तेजी गल्ले तथा धान्यों में अधिकतया लायेगा। धान्यों की क्षति भी होगी फलतः तेजी का ही प्रभाव चालू रहेगा।

(२) हापुड़ मण्डी दिनांक ९ मई सन् १९८३ ई० में रिपोर्ट लिखते समय गेहूं बढ़िया औसत में १५५ रु० से १५६ रु० क्विटल का भाव है, दड़ा गेहूं, १४५ रु० से १५३ रु० तक, फार्म १६० रु० से १६५ रु० तक, चावल मैनपुरी सेला ३५२ रु० से ३५५ रु० तक, गरडा २९० रु० से २९५ रु० तक, बासमती सेला ४०० रु० के आस-पास, चना २५० से २५५ रु० तक, उड़द ४१० रु० से ४२५ रु० तक, मूंग ४०० रु० से ४२० रु० तक के भाव हैं। इन धान्यों के भावों के अन्दाजा से तथा उत्पत्ति पैदावारी में भी देश में प्रायः बिना विघ्न बाधा के फसल का माल सिकर कर घरों में आ गया है, आ रहा है, इस समय का सन् १९८३ ई० का काफी बाकी है जो सुभिक्ष कारी है। सन् १९८४ में भी अप्रैल मास तक आगामी फसल आने तक यह चालू शनि की तुला राशि की संचार व्यवस्था एवं धन राशि के बृहस्पति की संचार व्यवस्था का प्रभाव कार्य करेगा।

(३) खाद्यान्नों के विषय में सन् १९८४ ई० का वर्ष हमें संतोषजनक ही बनता नजर आता है। मूंग, उड़द, मोठ, मसूर, अरहर आदि दालों के भावों में भी पैदावारी तथा खपत के लिहाज से देश में काफी आत्म निर्भरता रहेगी परन्तु शनि ग्रह के धान्यधिपति होने के कारण तथा तुला राशि में शनि के संचार प्रभाव से सभी प्रकार के धान्यों में, दालों में तेजी के योगों के बनते रहने के कारण व्यापारियों एवं किसानों को काफी मार्जन सन् १९८४ ई० में प्राप्त होंगे।

(४) आरम्भ सन् १९८४ ई० के जनवरी मास से लेकर अप्रैल २ ता० सन् १९८४ तक ३ मासों में मार्केटों में घटा-बढ़ी के साथ परिणाम तेजी का रहेगा। पिछला स्टाक बेचने में ही लाभ रहेगा। २ अप्रैल सन् १९८४ के बाद नया सम्वत्सर २०४१ विक्रमी में ही शनि धान्येश का प्रभाव रहेगा। कुछ क्षति फसल में भी होगी जो सन् १९८३ के अन्त में तथा सन् १९८४ के मार्च मास में भी अनुभव में आयेगी। मगर फिर राजा तथा मन्त्री के शुभ ग्रहों के अधिकार में देश में सुभिक्ष का संचार व्यापक रहेगा। स्टाकिस्टों को स्टाक में भी लाभ के योग प्राप्त होंगे।

(५) जून के अन्त तक फसल व्यापक रूप से सिकर जायेगी। वर्ष नाम आषाढ़ मेघ आवर्त, रोहिणी निवास समुद्र में है। ये सब संयोग ग्रह चाल के अच्छे तथा शुभ है। वर्षा ऋतु में वर्षा सामान्य से अच्छी होगी, सुभिक्ष का संचार रहेगा। मन्दी जिन्सें खरीदें।

(६) नवम्बर. दिसम्बर में धान्यों में फिर तेजी आयेगी, नफा व्यापारियों को भी प्राप्त होगा।

सरसों, अलसी, अण्डी, तिलहन तेलों का भविष्य सन् 1984

(१) रिपोर्ट लिखते समय १० मई सन् १९८३ के आस पास के समय में तिलहन मार्केट में दिल्ली सरस का भाव ४३० रु० से ४७० रु० तक है। मूंगफली ३७० रु० से ३८० रु० तक है। तारा मीरा ३८० रु० से ३८५ रु० तक है तथा टीनों में वनस्पति (१६½ किलो प्रति) २३५ से २४४ रु० तक, मूंगफली मिल डिलिवरी १५६० रु० मूंगफली साल्वेन्ट रिफाईण्ड (प्रति टीन) २४८ रु० से २६०. रु० तक भाव है। सरसों पक्की घानी (प्रतिटीन) १९० रु० से १९४ रु० तक, सरसों कच्ची घानी (प्रतिटीन) १९८ रु० से २१३ रु० तक, अलसी तेल १०९५ रु०, अण्डी ९५५ रु० से ९७० रु० तक, इन उपयुक्त भावों की मौजूदा स्थिति को ध्यान में रखते हुए तथा सन् १९८४ की भावी ग्रह चाल को भी ध्यान में रखते हुए, हम यहां ग्रह चाल द्वारा तिलहन तथा उनके तेलों के विषय में लम्बी मन्दी तेजी की लाईनों का उल्लेख कर रहे हैं।

(२) तेल तथा तिलहनों के बाजारों में दिनांक १ जनवरी सन् १९८४ ई० से लेकर अप्रैल सन् १९८४ ई० के अन्त तक के समय के बीच की ग्रह दशा तथा उनका प्रभाव तिलहन तथा तेल के मार्केटों पर कैसा पड़ेगा यह विषय स्पष्ट करते हैं। जनवरी तथा फरवरी मासों में बुद्ध तथा बृहस्पति ग्रहों का योग रहता है, बुद्ध व्यापार प्रधान ग्रह है। शनि ग्रह से यह योग यहां वेध प्राप्त कर रहा है। फलतः सरसों, अलसी, अण्डी तथा तेल आदि जिन्सों के भावों में काफी उतार-चढ़ाव, मन्दी तेजियां इन दोनों ही मासों में आती हैं। यद्यपि धन राशि में बृहस्पति, बुद्ध, सूर्य का योग दिनांक १४ जनवरी सन् ८४ ई० तक ही रहता है। यहाँ यह समय विशेष तेजियाँ लावेगा। यहाँ हर चढ़े भाव माल बेचना अच्छा है। १४ जनवरी बाद भी फरवरी के अन्त तक दुतर्फा घटा-बढ़ी रहते मार्केटों का रुख मन्दी की तरफ झुकेगा। मेरे द्वारा लिखित व्यापार विज्ञान प्रथम भाग में यह योग स्पष्ट दिया है। जो प्रकृति ने धन के बृहस्पति के होते ही आगे की फसल को उत्तम उपज में लाने में ग्रहचाल मददगार है। यह योग इस प्रकार जानोः

गुरोः स्थानतः केन्द्रगे सूर्य शुक्रे। तृतीय शनि लाभगे विद्यमानः ॥
तदा — स्यान्यहर्घं तैलादिकेषु । तथा सर्षपादौ गुरौ स्वोदये.ऽप ॥१॥
बुधेवक्रगे भौमयुक्ते शनौ वा। शनौ वास्तगे शुक्र भौमार्कि योगे ॥
मह धत्समर्घं च तैलादि केषु । तदा सर्षपादौ घृतादौ विचिन्त्या ॥२॥

इस योग की स्थिति ग्रह दशा जनवरी ४ ता० तक तो सूर्य, बुध, गुरु की युति पर शनि की दृष्टि है। १४ ता० को सूर्य मकर राशि में चला जायेगा। बुध गुरु का योग चलेगा। बुद्ध वक्री भी वहां है। बृहस्पति उदय भी यहां हो रहा है। जिसका प्रभाव जनवरी तथा फरवरी मासों में सन् ८४ ई० में ग्रह योग से प्रभावित होगा। मार्केटों में रसादि पदार्थों में तथा सरसों, अलसी, अण्डी, तारामीरा तथा इनके तेलों में तेजियां आरम्भ में बनेंगी। २४, २५ ता० जनवरी सन् १९८४ से घटा-बढी के साथ एक मन्दी का योग गुड़, खाण्ड, चीनी तथा तेल, घृत, वेजिटेबिल आयल, सरसों, अलसी, अण्डी, तिलहनों में आवेगा। मन्दी आने पर तुरन्त स्टाक देशी घृत, वेजिटेबिल आयल, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि जिन्सों का कर लेना व्यापारियों के हित में होगा।

(३) बसंत पञ्चमी के आस-पास के समय में दिनांक २ फरवरी से ता०१६ फरवरी तक जो भी जितनी मन्दियां जिन-जिन जिन्सों में आवें, स्टाक करना अच्छा है। २४/२५ फरवरी के आस-पास के समय में शनि की वक्री चाल तेल, तिलहनों के रसादि पदार्थों के मार्केटों में तेजी का प्रोत्साहन देगी। पिछले दिनों किये हुए स्टाकों में यहां से धीरे-धीरे मार्जन तथा लाभ होना आरम्भ होगा, फसल के मौके पर भी तैयारी तिलहन के भावों में तेजियां सम्भव हो जायेंगी। फिर भी फसल में भी उत्तम क्वालिटी के माल को भी खरीद करना चाहिए। सम्वत् २०४१ विक्रमी में अच्छे अवसर तिलहन के मार्केटों में लाभ के व्यापारियों को प्राप्त होंगे। दो तीन अवसर तेजी के योगों के सन् ८४ में अप्रैल बाद दिसम्बर तक प्राप्त होंगे।

(४) स्मरण रखना चाहिए कि मंगल ग्रह अतिचारी शनि के साथ काफी तेजियों के मौके ला देता है। ता० ३ अगस्त के आस-पास में शनि मंगल का योग हटेगा, अतिचार भी समाप्त होगा। इसका मन्दी के रियेक्शन के रूप में दिनांक १६ अगस्त तक ही जो प्रभाव होना है, हो जायेगा। १६ अगस्त के बाद अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजी के योग पुनः चालू हो जाते हैं। सितम्बर १ या दो तारीख तक कुछ तेजी का उछाला आकर १ मास का समय दिनांक १५ नवम्बर तक मन्दी का रहेगा।

(५) १५ नवम्बर से दिसम्बर के अन्त तक समस्त तिलहनों के मार्केटों में अच्छी घटा-बढ़ी के साथ तेजियां बन जायेंगी, इस प्रकार का भविष्य तिलहन तथा तेलों का पाया जाता है।

नोट—सरसों, अलसी, अण्डी, तिल, तेल, घृत, रसादि पदार्थों में यह सन् १९८४ ई० का समय काफी उतार चढ़ाव का है तथा स्टाकिस्टों को लगभग किन भावों में स्टाक करना चाहिए, किन भावों में बेचना चाहिये। स्पेशल चांसों की जानकारी हेतु हमारे विज्ञान ज्योतिः कार्यालय खुर्जा, जिला बुलन्दशहर को ५० रु० का मनीआर्डर भेज कर १ वस्तु का स्पेशल चांस आप मंगा सकते हैं। एक से अधिक वस्तुओं के चांस एक साथ मंगाने में ३ रुपये फी चांस का कंशेशन भी कर दिया जाता है। व्यापारिक वस्तु में तैयारी माल की खरीद करने तथा बाद में बेचने के समय का स्पष्ट उल्लेख चाँस में रहता है। वायदा बाजारों की जिन्सों को तेजी के योग के वास्ते खरीद कर माल बेचने का समय स्पष्ट लिखा जाता है। छोटे व्यापारियों को तेजी अथवा मन्दी लगाने, फालतू वायदा बेचने, नजराना लगाने का भी उल्लेख कर दिया जाता है। ग्रह चाल द्वारा तेजी मन्दी का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

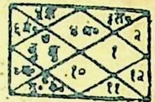
शेयर मार्केट के विषय में सन् 1984 ई० का भविष्य

(१) बड़ी-बड़ी कम्पनियां, विशिष्ट प्रकार की मिलें, जिनमें बड़े उद्योग-धन्धे चलते हैं तथा जिनमें बड़े-बड़े धनिकों की पूंजी लगी रहती है तथा छोटे-छोटे व्यापारियों का भी हिस्सा पूंजी की लागत की दृष्टि से लगा हुआ होता है जिसमें वे बड़ी कम्पनियाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बनाती हैं; उत्पादन करती हैं, जैसे कपड़े की मिलें, लोहे सरिया बड़े-बड़े गाटर तथा ऊनी, सूती मिलें, तेल की मिलें, टाटा, बिरला और छोटे-मोटे व्यापारियों की जूट मिले आदि-आदि कम्पनियाँ व्यापार पर चल रही हैं, उनमें लगे शेयर की मात्रा होती है। इसी मात्रा के अनुसार शेयर की संख्या खरीदी बेची जाती है, । कम्पनी के नफे (लाभांस) शेयर अधिकारियों को अनुपात के आधार पर प्राप्त होता है। इस व्यापार में भी शेयर मार्केट की घटी-बढ़ी तेजी मन्दी की कल्पना ज्योतिष शास्त्र में विभिन्न वस्तुओं की कम्पनियों पर विभिन्न ग्रहों के अधिकार का सम्पर्क रहने से ग्रहों की चाल तथा परस्पर संयोग-वियोग, योगायोग में मार्केट में घटा-बढ़ी चलती है। यहां पर हम सामूहिक दृष्टि से शेयर मार्केट की लम्बी लाभ-हानि, मन्दी-तेजी का उल्लेख कर रहे हैं। फिर भी व्यापारी बन्धु अपनी कम्पनी के शेयर का विवरण भी हम से भावों के आंकड़ों के आधार पर सूक्ष्म जानकारी भी स्पेशल चांस द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

शंकालु, अविश्वासी तथा नास्तिक-जन इस ग्रन्थ को मंगाने का कष्ट न करें।

संसार के प्रत्येक स्त्री-पुरुषों की जन्मकुण्डली का फलादेश बतलाने वाला





असली, प्राचीन, हस्तलिखित, वृहद् ग्रन्थ

भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य

● भारत की 80,00,00,000 (अस्सी करोड़) जनता ही क्या, विश्व की 5,00,00,00,000 (पांच अरब) जनता में गहरा असन्तोष है, क्योंकि वास्तविक सुख-शांति के कहीं दर्शन नहीं हो रहे हैं। इस कारण मानव-समाज शांति की खोज में भटक रहा है। जन, धन, सुरक्षा, हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष, पारिवारिक कलह, शादी-विवाह की चिन्ता, सन्तान, पति-पत्नी में मनमुटाव, नौकरी प्राप्त करने में अड़चनें, व्यावसायिक असफलता तथा सत्ता प्राप्ति आदि अनेक चिन्ताओं ने किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक मनुष्य को जकड़ा हुआ है। इतना ही नहीं, बड़ी शक्तियों के आपसी टकराव तथा आणविक युद्ध द्वारा महा-विनाश की आशंका से मानवमात्र त्रस्त है।

● यदि मनुष्य को अपने वर्तमान तथा भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाये तो वह आने वाली विपत्तियों से छुटकारा पाने तथा सौभाग्यशाली समय का पूर्ण लाभ उठाने के लिये कटिबद्ध हो सकता है।

● सौभाग्यरूपी समुद्र सबके जीवन में एक बार अवश्य आता है। जिसके पास जितना बड़ा पात्र होता है, उतना उसमें भर लेता है। सौभाग्य-वृद्धि के समय का पूर्व ज्ञान हो तो उसका समुचित लाभ न उठा पाने का दुःख नहीं होता। इसी प्रकार आसन्न-संकट का पहले से पता चल जाये तो उससे मुक्ति पाने के उपाय भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

● जन्मकुण्डली के आधार पर ऐसे सुख-दुःख आदि की सम्यक् जानकारी प्राप्त की जा सकती है और **'भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य'** इसमें सबसे अधिक आपकी सहायता करने में समर्थ है।

● **'भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य'** में संवत् 1965 विक्रमी से 2045 विक्रमी की अवधि में जन्म लेने वाले विश्व के सभी स्त्री-पुरुषों की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली और उसके फलादेश का सरल भाषा में समुचित उल्लेख किया गया है। इस एक ही ग्रन्थ के आधार पर कोई भी स्त्री-पुरुष अपनी जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली के माध्यम से अपने जीवन में घटने वाली घटनाओं की जानकारी स्वयं सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है। न किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता है और न किसी को भेंट-दक्षिणा देने की। ग्रन्थ में अपनी सूर्य-कुण्डली को निकाल कर उसका फलादेश स्वयं पढ़ लीजिए।

● **इस ग्रन्थ के द्वारा आप अपना, अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्री अथवा परिवार के किसी भी सदस्य, मित्र तथा अन्य लोगों की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली का फलादेश सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकते हैं। भृगु ऋषि के सिद्धान्त पर आधारित फलादेश का ऐसा विलक्षण ग्रन्थ इससे पहले कभी प्रकाशित नहीं हुआ।**

● **देहाती पुस्तक भंडार** द्वारा अथक परिश्रम, अनेक वर्षों की खोज, हजारों मील की यात्रा, भृगुसंहिता के मर्मज्ञ पंडितों, सैकड़ों विद्वानों के अध्यवसाय तथा लाखों रुपये व्यय करके, सर्वसाधारण जनता के हित के लिये यह ग्रन्थ सुलभ हो सका है।

● **गारंटी**—यदि संवत् 1965 वि० से 2045 वि० तक की अवधि में जन्मे किसी भी स्त्री-पुरुष की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डली और उसका फलादेश इस ग्रन्थ में उपलब्ध न हो तो खरीददार को (कैशमीमो दिखाने पर उसके द्वारा प्रदत्त ग्रन्थ का पूरा मूल्य (पैकिंग व डाक खर्च काटकर) लौटा देने के लिए प्रकाशक वचनबद्ध है। इससे अधिक गारन्टी और क्या हो सकती है?

● उपर्युक्त अवधि की जन्मकालीन सूर्य-कुण्डलियों के फलादेश के अतिरिक्त किसी भी अवधि में जन्म लेने वाले स्त्री-पुरुष की जन्मकुण्डली का फलादेश, ग्रहों की अन्तर-प्रत्यन्तर एवं सूक्ष्म दशा और उनका फलादेश तथा ज्योतिष सम्बन्धी सैकड़ों अनुभूत योग भी इस ग्रन्थ रत्न में संकलित हैं। इस प्रकार यह ग्रन्थ सैकड़ों ज्योतिष ग्रन्थों की आवश्यकता को अकेला ही पूर्ति कर देता है।

● 20 × 30/6 (पुराण साइज) खुले पत्राकार, हस्तलिखित 2000 पृष्ठ, बढ़िया सफेद कागज पर छपे इस विशाल ग्रन्थ की भेंट केवल 1001/- (एक हजार एक रुपये), सजिल्द (क्लॉथ बाइंडिंग) के 71/- रुपये अधिक अर्थात् 1001 + 71 = 1072/- (एक हजार बहत्तर रु०)। पैकिंग व डाक खर्च 30/- (तीस रु०) पृथक्। Foreign countries (विदेशी सज्जन) £ 220 पौंड या $ 440 डालर एडवान्स भेजें। उनको ग्रन्थ रजिस्ट्री द्वारा भेजा जायगा।

● पंडितों एवं ज्योतिषियों के लिए आवश्यक रूप से संग्रहणीय, प्रत्येक व्यापारी, मिल-मालिक, पूंजीपति, उच्चाधिकारी तथा कर्मचारी के लिए पठनीय; प्रत्येक घर एवं गद्दी के लिए पूजनीय; वर्तमान जीवन से परेशान और भविष्य जानने के इच्छुक सभी मत-मतान्तरों के अनुयायी, ज्योतिष में श्रद्धा एवं विश्वास रखने वाले आस्तिकजनों तथा सर्व-साधारण जनता के लिए समान रूप से उपयोगी यह ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है। अतः जो सज्जन 101/- रु० पेशगी (एडवांस) अथवा पूरी रकम **'देहाती पुस्तक भंडार, दिल्ली-6'** के नाम M.O. या बैंक ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेज देंगे, उन्हें ग्रन्थ सबसे पहले क्रमशः शीघ्र सप्लाई किया जायगा। (First come, First Serve our Motto)

● आर्डर देते समय स्पष्ट लिखें कि ग्रन्थ खुले पत्राकार भेजा जाय अथवा सजिल्द। एडवांस आये बिना ग्रन्थ भेजने का नियम नहीं है। जो सज्जन 101/- रु० पेशगी भेजेंगे उन्हें बाकी के 900/- रु० में खुले पत्राकार तथा 971/- रुपये में सजिल्द ग्रन्थ वी. पी. पी. द्वारा घर बैठे प्राप्त हो सकेगा। इस विज्ञापन की कटिंग भेजने वालों को 30/- (डाक खर्च) की स्पेशल रियायत दी जायगी।

Your Prosperity-Our Aim

● **इस घोर कलिकाल में भाग्यवान ही इस ग्रन्थ को श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक प्राप्त कर सकेंगे।**



DEHATI PUSTAK BHANDAR

(Publisher of Technical, Industrial, Religious and General Books)

CHAWRI BAZAR, DELHI-110006 (INDIA) फोन-261030

श्री बापू मशहूर राष्ट्रीय जन्त्री सन् 1984 का यह Second Latest Revised Enlarged Edition है।